लड़कियों को दहेज़ में देने के लिये एक प्यारी किताब

वैवाहिक जीवन को मधुर और सफल बनाने वाली एक बेहतरीन किताब

तोहफ़ा -ए- दुल्हन

लेखक : मौलाना मुहम्मद हनीफ़ अ़ब्दुल मजीद

संयोजक : नासिर ख़ान

लड़कियों को दहेज में देने के लिये एक प्यारी किताब

वैवाहिक जीवन को मधुर और सफल बनाने वाली एक बेहतरीन किताब

लेखकः मौलाना मुहम्मद हनीफ़ अ़ब्दुल-मजीद

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज

नई देहली-110002

तोहफ़ा-ए-दुल्हन

लेखक
मौलाना मुहम्मद हनीफ़ अब्दुल मजीद साहब

हिन्दी अनुवाद
मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक
(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Tohfa-e-Dulhan

Author:
Maulana Muhammad Haneef Abdul Majeed

Translated by:
Muhammad Imran Qasmi

Edition: **2016**

Pages: **696**

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Ph.: 011-23289786, 23289159 Fax: 011-23279998
E-mail: faridexport@gmail.com ; Website: faridexport.com

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय सूची

क्या?	कहाँ?
रुख़सत होने वाली बेटी को नेक बाप की नसीहत	66
शौहर की इताअ़त करने वाली एक नेक बीवी	66
वफ़ात	69
दुआ़	71
सलाम हो हम सबकी तरफ़ से	72

हज़रत सौदा बिन्ते ज़म्अ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा "उम्मुल-मोमिनीन"

हज़रत ज़ैनब बिन्ते मुहम्मद सल्ल० बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि०

क्या?	कहाँ?
नेक माँ का असर बेटी पर	102

हज़रत रुक़ैया बिन्ते रसूलुल्लाह सल्ल०

हज़रत उम्मे हकीम बिन्ते हारिस रज़ि०

क्या?	कहाँ?
हज़रत ख़ौला बिन्ते मालिक बिन सालबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा	

किताब से पहले............

अल्लाह का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि उसने एक अहम दीनी ख़िदमत की तौफ़ीक़ बख़्शी। हिन्दी ज़ुबान में मोतबर आलिमों की बहुत कमी है। फ़रीद बुक डिपो दिल्ली ने इस मैदान में बहुत काम किया है। हिन्दी जानने वालों के लिये इस इदारे की तरफ़ से बहुत सी अहम दीनी किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस सिलसिले की कई किताबों को उर्दू ज़बान से हिन्दी ज़बान का लिबास पहनाने की इस नाचीज़ को तौफ़ीक़ मिली है। इससे पहले हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद आशिक़ इलाही साहिब रह० की किताब "तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन" हिन्दी में शाया हो चुकी है। बहिश्ती ज़ेवर के बाद यह किताब औरतों के लिये बहुत ही मुफ़ीद मानी गयी है।

अब यह किताब "तोहफ़ा-ए-दुल्हन" प्रस्तुत की जा रही है जो यक़ीनन् औरतों की घरेलू ज़िन्दगी को मधुर बनाने और उनको दोनों जहां की कामयाबी दिलाने के लिये एक बेहतरीन किताब है।

मर्दों के लिये इन्शा-अल्लाह जल्द ही "तोहफ़ा-ए-दूल्हा" के नाम से एक शानदार और निहायत मुफ़ीद किताब जल्द ही पेश की जायेगी।

उम्मीद है कि मेरी यह पेशकश पाठकों को पसन्द आयेगी। हम पढ़ने वालों से दरख़्वास्त करते हैं कि वे किताब के लेखक, अनुवादक और प्रकाशक को अपनी दुआओं में याद रखें। वस्सलाम

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी
(हिन्दी अनुवादक)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आप इस किताब को कैसे पढ़ें?

चूँकि यह किताब ख़ानदानी ज़िन्दगी के लिये बहुत अहमियत रखती है और ख़ानदान सही हो तो समाज बनता है। यानी अगर घर की ज़िन्दगी सही कर ली तो बाहर की ज़िन्दगी भी सही हो सकती है। इसलिये हमारी गुज़ारिश यह है कि इस किताब में दर्ज हिदायात और इस्लाही बातों को इन्तिहाई सन्जीदगी से पढ़ा जाये और जिन कोताहियों से बचने की तरफ़ तवज्जोह दिलाई गई है (और वो ऐसी कोताहियाँ हैं कि औरतें ला-इल्मी यानी जानकारी न होने या ना तर्जुबेकारी की बिना पर उनको कर बैठती हैं और फिर बहुत नुक़सान उठाती हैं)।

इसे वाक़ई इस नीयत से पढ़ा जाये कि मुझे अपनी इस्लाह (सुधार) पर तवज्जोह देनी है और आईन्दा के लिये इन ग़लतियों के करने से बचना और बचाना है। उम्मीद है कि हमारी इन गुज़ारिशों को सामने रखकर इस किताब को पढ़ा जायेगा।

1. किताब पढ़ने से पहले यह दुआ कर लें कि या अल्लाह! इस किताब को मेरी हिदायत का ज़रिया बना दे और मुझे अपने शौहर की निगाह में आँखों की ठंडक और दुनिया की चीज़ों में सब से बेहतर चीज़ और दौलत बना दे।

2. किताब पढ़ने के लिये वक़्त ऐसा निकाला जाये जो उलझनों या परेशानियों से घिरा हुआ न हो। क्योंकि इससे आशंका भी है कि उलझन ज़ेहन पर सवार थी किसी और वजह से और चुभन महसूस हुई किताब के मज़मून की वजह से।

3. एक अहम गुज़ारिश यह है कि किताब को शुरू से आख़िर तक मुकम्मल तरीक़े पर तरतीब वार पढ़ें, चाहे इसमें महीना भर लग जाये, बल्कि इससे भी ज्यादा लग जाये, तब भी कुछ ग़म नहीं, मगर पढ़ें

मुकम्मल तौर पर। और सूरत इसकी यह है कि कुल पेजों की तायदाद का अन्दाज़ा करके रोज़ाना कुछ पेज (पृष्ठ) पढ़ना मुतैयन कर लें, और जहाँ पहुँचकर रुक जायें वहाँ कोई निशानी लगा दें।

4. एक अहम गुज़ारिश यह है कि किताब के मुताले के वक़्त एक क़लम साथ रखें और जिन बातों के समझने में खुद कोई दिक़्क़त महसूस करें या पूरी तरह समझ में न आयें उनपर निशान लगा लें और उनको बार-बार पढ़ें और उनकी इस्लाह के लिये ख़ूब दुआयें माँगें। अगर उनमें कोई बात पूछने की है तो दीन के किसी आ़लिम से उनको पूछ लें।

इस क़लम को साथ में रखने का दूसरा फ़ायदा यह होगा कि जहाँ भी कोई बात आपको ऐसी महसूस हो कि वह अगर किताब के मज़ामीन का हिस्सा होती तो पढ़ने वाले की कमी को दूर करने का ज़रिया बन सकती थी या मुसलमान औ़रत होने की हैसियत से या बीवी होने की हैसियत से, या माँ होने की हैसियत से कोई अहम ज़िम्मेदारी की बात जो इस किताब में हो तो मुसलमान बहनों के लिये मुफीद हो सके और घरों में लड़ाई-झगड़े की फ़िज़ा ख़त्म की जा सके, इसके लिये कोई मुफ़ीद मश्विरा और तदबीर आपके ज़ेहन में आये और वह इस किताब में नहीं है तो किसी अलग कापी में पेज और पंक्ति के हवाले के साथ वह भी "वज़ाहत" के तहत लिखें और किसी तरह किताब के लेखक तक या प्रकाशक तक पहुँचा दें।

किताब पढ़ते हुए दुनिया के सारे मुसलमान शादीशुदा जोड़ों के लिये दुआयें करें कि अल्लाह तआ़ला उनमें मुहब्बत व उलफ़त अ़ता फ़रमाये, उनको नेक सालेह औलाद के दुनिया में आने का सबब बनाये। ख़ूब-ख़ूब खुशियाँ दिखलाये। रोज़ाना दुआ़ करें कि आजके दिन जहाँ भी शादियाँ हुई उनमें मियाँ-बीवी में मुहब्बत पैदा फ़रमाये।

यह किताब पढ़ने की दूसरी मुसलमान औ़रतों को भी दावत दें और इस किताब में जो ईमानी तरक़्क़ी और अख़्लाक़ी बेहतरी से मुताल्लिक़

बात मिले उन ख़ूबियों और सिफ़ात की तरफ़ दूसरी ख़्वातीन को भी तवज्जोह दिलायें।

आख़िर में गुज़ारिश है कि किताब के लेखक और जिन बुज़ुर्गों की किताबों से इस किताब के लिखने में फ़ायदा उठाया गया है या किताब की तैयारी के दौरान जिन बुज़ुर्गों या उलेमा हज़रात से रहनुमाई ली गयी है, यानी इस किताब की तैयारी के मुख़्तलिफ़ मराहिल में किसी भी तरह शरीक हैं, तमाम सहयोगियों और मददगारों के लिये ख़ुसूसी तौर पर दुआओं का एहतिमाम फ़रमायें। इस दुआ करने से आपको भी फ़ायदा होगा। लिहाज़ा अपनी दुआओं में हमें न भूलें। अल्लाह तआला आपको बेहतरीन बदला अता फ़रमाये।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अपनी बात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ. حَامِدًا وَّمُصَلِّيًا وَّمُسَلِّمًا.

अमा बाद! ये चन्द पन्ने मुसलमान बहनों की ख़िदमत में पेश करने के लिये जमा किये गये हैं, जिनमें नबी पाक के ज़माने की छह मिसाली औरतों के बीवी होने और एक जाँनिसार जीवन-साथी होने की हैसियत से बेहतरीन किरदारों का अ़मली ख़ाका नमूने और मिसाल के लिये बयान किया गया है।

चूँकि वैवाहिक ज़िन्दगी के मुताल्लिक़ इस्लाम ने जो हमारी रहनुमाई की थी, दीन और शरीअ़त ने इसके मुताल्लिक़ हमें जो तालीम दी थी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा व सहाबियात रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जो हमारे लिये बेहतरीन और मुबारक नमूना छोड़कर गये थे, वह हमारे भाई-बहनों की नज़रों से ओझल हो गया, जिसकी बिना पर आजकी शादी ख़ाना-आबादी, अच्छी ज़िन्दगी, साज़गार, बार-आवार और कामयाब होने के बजाय दिनों दिन बढ़ती ख़ाना-बर्बादी, ना-खुशगवार, नाखुशी, ज़िन्दगी का बोझ और नाकाम होती जा रही है।

मियाँ-बीवी के झगड़े बखेड़े क़दम-क़दम पर धरे हुए, कभी सास व बहू के झगड़े, भाभी व नन्द के गिले-शिकवे, देवरानी-जेठानी का हसद व बुग़ज़। शौहर को न बीवी के हुक़ूक़ का लिहाज़ न मियाँ-बीवी को अपने ख़ुसूसी ताल्लुक़ात की ख़बर। नतीजा यह कि सिर्फ़ इन दोनों की नहीं बल्कि पूरे ख़ानदान व क़बीले की ज़िन्दगी तल्ख़ बन जाती है।

अल्हम्दु लिल्लाह हज़रत मुफ़्ती अहमदुर्रहमान साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के इशारे पर बन्दे को दारुल-इफ़्ता जामियतुल-उलूम इस्लामिया में जो वक़्त गुज़ारने का सौभाग्य मयस्सर हुआ उसमें यह बात सामने आई कि अक्सर मियाँ-बीवी के झगड़े आपस की ना-इत्तिफ़ाक़ियों और तलाक़ व खुला (मियाँ-बीवी के अलग होने) के असबाब में से अहम असबाब

यह हैं:

सास, नन्द, देवरानी, जेठानी की शिकायात। सास की तरफ़ से जुल्म, नन्द के वो ताने जो पत्थर के जिगर में भी ज़ख़्म डाल दें। बदमिज़ाज शौहर की वे सख़्त ज़्यादतियाँ और बुरा रवैया जो शादाब से शादाब फूल को दम भर में सूखा काँटा बनाकर रख दें और आपस की तू-तू मैं-मैं के जरासीम मियाँ-बीवी की ज़िन्दगी को ग़म व परेशानी फ़ुर्क़त व जुदाई तक पहुँचा देते हैं।

और इसमें बीवी की नासमझी, बद-ज़बानी, कड़वा रवैया, बेढंगे पन को भी बहुत बड़ा दख़ल है। और उसकी अपनी माँ और दीगर औरतों की तरफ़ से पढ़ाया गया बेतुका सबक़ इस झगड़े की आग को बुझाने के बजाय और भड़का देता है, और सास-बहू का देवरानी-जेठानी का इक्ट्ठा रहना ही इसकी असल जड़ और फ़साद का सबब बन जाता है।

इसलिये काफ़ी समय से ख़्याल था कि मुसलमान नेक बीवी के लिये इस्लाम की दी हुई तालीमात में से कुछ ऐसी बातें जमा कर दी जायें जिन पर अ़मल करने से मियाँ-बीवी में झगड़े की नौबत ही न आये, और ख़ुदा न करे अगर यह आग लग भी जाये तो किसी बाग़ को उजाड़े बग़ैर, किसी गुलशन को झुलसाये बग़ैर ही बुझ जाये।

अल्लाह का शुक्र है कि इसी दौरान शैख़ मुहम्मद इब्राहीम सलीम की अ़रबी भाषा में लिखी गयी किताब नज़र से गुज़री जिसमें नेक बीवी की सिफ़ात और एक मुस्लिम ख़नदान की बेहतरी पर आधारित उम्दा बातों और ख़ूबियों को बेहतरीन तरीक़े पर बयान किया गया था।

ख़्याल आया कि इसी तर्ज़ पर हमारे समाज की रियायत रखते हुए इन छह मुबारक औरतों के सिर्फ़ वो हालात जो बीवी होने की हैसियत से एक मुसलमान बीवी के लिये नमूना बन सकें, जमा किये जायें, और इसके साथ-साथ हमारे बुज़ुर्गों ने जो तर्जुबात की रोशनी में मुसलमान बीवी के लिये हिदायात बयान फ़रमाई हैं, ख़ासकर हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने मुख़्तलिफ़ मवाइज़ (दीनी बयानों) में जो क़ीमती बातें इरशाद फ़रमायी हैं, हमारी बहनों के

सामने आ जायें, और औरतें उस पर अमल करके अपने घर को जन्नत का नमूना बना सकें।

चूँकि इसमें औरतों की मौजूदा सामाजिक ज़िन्दगी को सामने रखते हुए किताब लिखने या बयान व तक़रीर के रिवाजी तौर-तरीक़ों का ख़्याल नहीं रखा गया बल्कि इस्लाही मज़ामीन मुख़्तलिफ़ किताबों से दावत व तर्ग़ीब की शक्ल में जमा किये गये हैं। लिहाज़ा अहले-इल्म व अहले-क़लम इसे अपने मेयार पर न जाँचें। लेकिन अगर किसी क़िस्म की कोई ग़लती, कोताही नज़र आये तो उससे अवगत करायें, बन्दे पर उनका बड़ा एहसान होगा।

अपनी बे-हिम्मती और इल्मी व अमली कमज़ोरी के एतिराफ़ के साथ यह किताब पाठकों की ख़िदमत में पेश है। इसमें जो ग़लतियाँ क़ारिईन (पढ़ने वालों) के सामने आयें, इस्लाही या कोई मज़मून जो औरतों के लिये ज़रूरी हो तो उस पर तवज्जोह दिलाकर अज्र व सवाब में शरीक हों। इन्शा-अल्लाह तआला अगले प्रकाशन में इस्लाह कर ली जायेगी। और जिन साहिबान को इनसे फ़ायदा हो वे हम सबको भी अपनी दुआओं में ज़रूर याद रखें।

अल्लाह तआला से हाथ फैलाकर आजिज़ाना दुआ है कि हम सबके लिये और हर मियाँ-बीवी के लिये इस मामूली सी कोशिश को दुनिया में राहत का सबब और आख़िरत में निजात का ज़रिया बना दे। और हर घर से मियाँ-बीवी के झगड़े ख़त्म फ़रमा दे कि दीन व दुनिया की कामयाबी व कामरानी का भी यही राज़ है कि मियाँ-बीवी आपस में मुहब्बत से रहें। ताकि आने वाली नस्लें माँ-बाप के लहलहाते हुए साये में इत्मीनान से परवान चढ़ें और ख़ुद भी सुकून से इज़्ज़त वाली और ख़ुशहाल ज़िन्दगी गुज़ारें। आमीन

आख़िर में हम अल्लाह की तारीफ़ और उसके प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पेश करते हुए इस मज़मून को ख़त्म करते हैं।

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

नबी-ए-करीम सल्ल० की बारगाह में औरतों का शुक्रिये का हदिया

हम आप पर दुरूद व सलाम भेजते हैं या रसूलल्लाह! ऐसे तब्क़े का दुरूद व सलाम जिस पर आपका बड़ा एहसान है। आपने हमको ख़ुदा की मदद से जाहिलीयत की बेड़ियों और बन्दिशों, जाहिली आदात और रिवायात, सोसाईटी के जुल्म और मर्दों की ज़ोर-ज़बरदस्ती और ज़्यादती से निजात दिलवाई। लड़कियों के ज़िन्दा दफ़न कर दिये जाने के रिवाज को ख़त्म किया। माओं की नाफ़रमानियों पर वईद सुनाई। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है।

आपने विरासत में हमको शरीक किया और उसमें माँ, बहन, बेटी और बीवी की हैसियत से हमको हिस्सा दिलाया।

अ़रफ़ा के दिन के मशहूर तारीख़ी ख़ुतबे में आपने हमें नहीं भुलाया और कहा कि:

"औरतों के बारे में अल्लाह से डरो, इसलिये कि तुमने उनको अल्लाह के नाम के वास्ते से हासिल किया है"।

इसके अ़लावा अनेक मौक़ों पर आपने मर्दों को औरतों के साथ अच्छे सुलूक, हुक़ूक़ के अदा करने और उनके साथ अच्छा बर्ताव करने की तर्ग़ीब दी।

अल्लाह तआ़ला आपको हमारे तब्क़े की तरफ़ से वह बेहतर से बेहतर जज़ा (बदला) दे जो अम्बिया व मुर्सलीन अ़लैहिमुस्सलाम और अल्लाह के नेक और सालेह बन्दों को दी जा सकती है। (कारवाने मदीना)

मौलाना सैयद अबुल हसन नदवी रह०

दुनिया का सबसे क़ीमती सरमाया नेक बीवी है। (हदीस पाक)

छह मिसाली बीवियाँ

1. उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा बिन्ते खुवैलद रज़ियल्लाहु अन्हा
2. उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा
3. ज़ैनब बिन्ते मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हा
4. रुकैया बिन्ते मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हा
5. उम्मे हकीम बिन्ते अल्-हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा
6. ख़ौला बिन्ते मालिक बिन सालबा रज़ियल्लाहु अन्हा

अल्लाह तआ़ला बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमाये हर मुसलमान बहन को जो इस किताब को खुद भी पढ़े और पढ़ने के बाद दूसरी बहनों को भी इसके पढ़ने की तरफ़ तवज्जोह दिलाये।

बीवी की पैदाईश का मक़सद

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जन्नत में तशरीफ़ लाते हैं। बाग़े-जन्नत का चप्पा-चप्पा अनवारे-इलाही से रोशन, अल्लाह की मेहरबानियों का क़दम-क़दम पर ज़ुहूर, हर तरफ़ नेमतों की बारिश, हर तरफ़ नूर की चमक, इस पर भी अपने दिल का एक कोना ख़ाली पाते हैं। किसी चीज़ की कमी महसूस करते हैं। लेकिन नवाज़िशों और बख़्शिशों की पूर्ती तब ही जाकर हुई। आदम अ़लैहिस्सलाम के हक़ में जन्नत तब ही हक़ीक़ी मायने में जन्नत साबित हुई जब मर्द के लिए औ़रत की पैदाईश हुई और शौहर के लिए बीवी की हस्ती सामने आई।

एक ख़ूबसूरत महकने वाले फूल को देखकर तबीयत में तरावट और ताज़गी पैदा होती है। कलियों के तबस्सुम और चंबेली की महक हंस-मुख मोतिया और रात की रानी के बाग़ीचों की महकती ख़ुशबू से तबीयत झूम उठती है। गुलाब की ख़ुशबू और ख़ुशनुमाई, लाला की रंगीनी, शबनम की ठंडक, शफ़क़ की सुर्ख़ी, कोयल की कूक, परिन्दों के नग़मे, मैना का चहचहाना, तितलियों का अलबेलापन। ग़र्ज़ ये सारे क़ुदरती मनाज़िर दिलों को लुभाते और मुर्दा दिलों में ज़िन्दगी की उमंगें पैदा कर देते हैं।

मगर फ़ितरत की ये सारी रंगीनियाँ, क़ुदरत की ये सारी चमक-दमक और बाग़ीचों का यह सारा हुस्न व निखार एक वजूद के बिना नाक़िस और अधूरा है। वह क़ीमती वजूद या क़ुदरत का शाहकार क्या है? वह है बीवी की हस्ती, जिसमें फ़ितरत की उपरोक्त सारी दिलकशी पूरी तरह समो दी गई हैं।

औ़रत के वजूद के बिना क़ुदरत की ये सारी गुलकारियाँ और उसके सारे नग़मे सूने-सूने हैं। औ़रत के बिना ज़िन्दगी वीरान और बेमज़ा है। दुनिया की सारी रंगीनी और दिलचस्पी औ़रत ही के दम से है।

औ़रत ज़िन्दगी में क़िस्म-क़िस्म के रंग भरने वाली, और ज़िन्दगी को

रंगीन व मुसर्रत-बख़्श बनाने वाली है। औरत इस कायनात का असली हुस्न है। मर्द के लिए सुकून का सामान और सरमाया-ए-राहत है। कायनात की इस महफ़िल की शमा औरत ही के दम से रोशन है। अगर औरत न हो तो इस कायनात का पूरा कारख़ाना उजड़ कर रह जाए। औरत इनसानी सभ्यता का केन्द्र, मेहवर और इनसानियत के बाग़ की ज़ीनत है। इसके बिना मर्द की ज़िन्दगी बिल्कुल सूनी-सूनी और बेमज़ा सी है। अगर औरत न हो तो फिर सारा समाज और सारी इनसानी तहज़ीब बिखरी हुई और परागंदा हो जाएगी। पूरी इनसानी तहज़ीब उजड़ कर रह जाएगी।

औरत ही के दम से ज़िन्दगी की गाड़ी रवाँ-दवाँ (यानी दौड़ रही) है। औरत ही के दम से ज़िन्दगी की बहार है। औरत ही के वजूद से ज़िन्दगी के ख़ूबसूरत नग़मे फूटते हैं और मुर्दा दिलों में ज़िन्दगी के नये वलवले जागते हैं। औरत ही की बदौलत मर्द हर आन और हर लम्हे मसरूफ़ रहता है। जिसकी वजह से तहज़ीब व संस्कृति के नये-नये मैदान खुलते हैं और नई-नई मन्ज़िलें सामने आती हैं।

औरत ही के दम से ज़िन्दगी की बहार है। औरत ही मर्द की ज़िन्दगी निखारने वाली और उसकी ज़िन्दगी में गहमा-गहमी करने वाली है। अल्लाह तआला ने औरत को हुस्न व जमाल (सुन्दरता) और सोज़ व गुदाज़ से नवाज़ा है, जो मर्द के लिए दिली सुकून का ज़रिया और उसकी तन्हाईयों को दूर करके रूहानी सुकून का ज़रिया है। यही उसका दिल लुभाकर उसे सुकून व ताज़गी बख़्शती है। ताकि वह बराबर कोशिश में लगा रहे और अपने जीवन की ज़िम्मेदारियों से उकता न जाए। वरना इनसानी सभ्यता और संस्कृति की गाड़ी आगे बढ़ने के बजाय बिल्कुल ठप्प होकर रह जाएगी।

ऐ पर्दे वाली औरत! तू एक गुलाब का फूल है। चम्पा की एक नाज़ुक कली है। नीलोफ़र की नाज़ुक पत्ती है। तू शबनम का क़तरा है। नदी की एक लहर है। फ़ितरत की मस्त अंगड़ाई है। तू मुरली की मधुर

आवाज़ है। बाँसुरी का एक दिलकश राग है। सितार की काँपती हुई मधुर आवाज़ है। इन्द्र-धनुष का रंगीन दुपट्टा है। तू कोयल की कूक है। तू बुलबुल का मधुर अलाप है। घूंघरू की झनकार है। घंटी की थिरकती हुई आवाज़ है।

ऐ अच्छी औ़रत! तू चमकता-दमकता सितारा है। चौदहवीं का चाँद है। तू बहती हुई नदी है। तू रंग-बिरंगे फूलों का महकता हुआ बाग़ है। तू कायनात का हुस्न है। तू क़ुदरते-इलाही की कारीगरी का बेमिसाल नमूना है। तू दृश्य है। तू हसीन रंग है। तू मुहब्बत है। तू मस्ती है। तू वफ़ा की देवी है। तू क़ुर्बानी की निशानी है। तू शायर की शे'र व नज़्म है। तू कलाकार की कला की मुकम्मल तस्वीर है।

ऐ नेक औ़रत! जहाँ-जहाँ तेरे क़दम पड़ते हैं वहाँ तू रोशनी फैलाती है। तू ख़ुद सुख से रहती है और दूसरों को भी सुख व चैन देती है। तू हर चीज़ को दिलकश, हर काम को दिलचस्प और हर जगह को गुले-गुलज़ार बना देती है।

तू जंगल को भी मंगल बना देती है। जंगल को भी महलों से ज़्यादा हुस्न बख़्शती है। तू काँटेदार पेड़ों को भी फूलों से बदल देती है। तू ग़रीब से ग़रीब घराने को भी जन्नत-नुमा बना देती है। तू एक हक़ीक़ी बिजली है। तू वाक़ई जादू की जादूगरी की बेहतरीनें मिसाल है। तूने ही इस दुनिया को जन्नत-नुमा बना दिया है।

ऐ औ़रत ज़ात। तू मर्दों को रास्ता बताने वाली एक देवी है। मर्द का सुख तेरे क़दमों में है। तू ही उसे गुनाहों की तरफ़ माईल करके तबाही में डुबोती है, और तू ही उसकी कश्ती किनारे लगा सकती है। तेरे बिना मर्द की ज़िन्दगी का फूल बेख़ुशबू है। जब दुख और तकलीफ़ से उसका दिल डूब जाता है तो तू ही रहमत का फ़रिश्ता बनकर उसकी मदद को आ पहुँचती है।

ऐ शौहर की सख़्तियों पर सब्र करने वाली औ़रत! तू दोज़ख़ जैसे घर को जन्नत में बदल सकती है। तू चाहे तो फ़क़ीर को एक दौलतमन्द

और अमीर को एक मुफ़लिस बना दे। मग़रूर (घमंडी) लोगों की गर्दनों को बिल्कुल ही झुका देने की तुझमें ताक़त है। तू मर्द का आधा हिस्सा है। उसकी सुख-दुख की शरीक है। तू आधा ईमान है। तू ही उसकी इज़्ज़त और वक़ार है।

ऐ औ़रत! सारे धार्मिक इनसान, औलिया, बुद्धिजीवी, बादशाह, यहाँ तक कि खुदा के पैग़म्बर (उन पर अल्लाह का सलाम हो) तुझे माँ कहते हैं और तेरी ही गोद में पलते हैं। तूने ही उनको लाड-प्यार दिया है। इसी लिए तो खुदा के सम्मानित और बुलन्द मक़ाम वाले नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तुझे यह तमग़ा (पदक) दिया है कि "माँ के पैरों तले जन्नत है"।

दुनिया की इन्तिहा (हद और सीमा) अपना घर, और घर की इन्तिहा औ़रत! जिस घर में नेक बीवी हो उस घर में चार चाँद लग जाते हैं। नेक बीवी वाला घर खुशी क़हक़हों से हमेशा भरा रहता है। जिस तरह इनसानों के बिना दुनिया बेकार है इसी तरह नेक औ़रत के बिना घर बेकार और मुसीबत खाना है।

नेक बेटी! तू घर की रानी होकर जा। तू अपने इस हुकूमती तख़्त पर महारानी होकर बिराजमान हो और मर्द को हुक्म दे कि वह दीन की रियायत रखते हुए तेरी हर बात माने।

लेकिन अभी रुक जा!

इस हुकूमत और सत्ता की बाग-डोर अपने हाथ में लेने से पहले तुझे कुछ कुर्बानियाँ देनी होंगी। ताज बहुत हसीन गुलाब की तरह है लेकिन उस गुलाब को हासिल करने के लिए तुझे काँटों का मज़ा भी चखना होगा। पहले अपने अन्दर उसकी सलाहियत और क़ाबलियत पैदा करनी पड़ेगी। घर की रानी बनने से पहले तुझे घर की बाँदी बनना होगा और उस गुलाबी ताज को पहनने से पहले तुझे घर में काँटों का ताज पहनना पड़ेगा। यही कुदरत का क़ानून और दुनिया का दस्तूर है।

सुर्ख़-रू होता है इनसाँ ठोकरें खाने के बाद
रंग लाती है हिना पत्थर पें घिस जाने के बाद

सुर्मे ने कहा मुझ पर इतना जुल्म क्यों करते हो? इतना ज़्यादा पीसते हो?

पीसने वाले ने जवाब दिया! तुझे इसलिए ज़्यादा पीस रहा हूँ कि अशरफुल्-मख़्लूक़ात (दुनिया में तमाम मख़्लूक़ात से बेहतर यानी इनसान) के सब से बेहतरीन अंग यानी तू इनसान की आँख में जगह पाने के क़ाबिल हो जाए।

नेक बीवी! तू इस इनसानियत के लिए उम्मीद की एक किरन है। तू अपने आपको दीनदार, पर्दे वाली, पाँच वक़्त की नमाज़ का एहतिमाम करने वाली बना। अपने मौहल्ले की औरतों को दीन पर अमल करने और दीन को पूरी दुनिया में फैलाने वाली बना। अल्लाह तुझे नेक बनाए हर शौहर के लिए दुनिया व आख़िरत में आँखों की ठंडक बनाए। आमीन। (तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन। **लेखकः मौलाना अहमद मुहम्मद साहिब गुजराती रह०**)

क़ुरआने करीम की गवाही

क़ुरआन करीम ने एक मुख़्तसर मगर बहुत गहरे जुमले में शौहर के लिए बीवी की पैदाईश का मक़सद बयान फ़रमाया। अगर शादी के बाद औरत इस मक़सद पर पूरा उतरती है, तो यह शौहर दुनिया का सबसे ज़्यादा ख़ुश-क़िस्मत इनसान है, वरना उसकी ज़िन्दगी जहन्नम का एक नमूना बनकर रह जाएगी और ऐसी बीवी हदीस के अनुसार बुढ़ापे की उम्र से पहले ही बूढ़ा कर देने वाली है। चुनाँचे क़ुरआन मजीद में औरत की पैदाईश का बुनियादी मक़सद यही बताया गया है।

خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا. الآية (سورة النساء)

तर्जुमाः और उसी से पैदा किया उसका जोड़ा।

दूसरी आयत में इरशाद है:

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً.

तर्जुमाः और अल्लाह की निशानियों में से है यह बात कि उसने तुम्हारे लिए तुम ही में से बीवियाँ बनाईं ताकि तुम उनसे सुकून हासिल कर सको। और उसी ने तुम्हारे बीच आपस में मुहब्बत और मेहरबानी भी रख दी (ताकि तुम अपनी ज़िन्दगी को सुख भरी बना सको)।

(सूरः रूम 21)

यही वह दिली सुकून और आपसी मुहब्बत है जिसकी वजह से न सिर्फ़ एक ख़ानदान की बुनियाद पड़ती है बल्कि इनसानी तहज़ीब की गाड़ी भी रवाँ-दवाँ (चलती) रहती है।

मालूम हुआ कि बीवी राहत व सुकून का वह गहवारा है जहाँ उसके शौहर को मुहब्बत की पाकीज़ा छाया में उसकी ख़्वाहिशों को सुकून मिलता है। दिल हराम-कारी से बचता है। जिस्म के एक-एक अंग को ज़िल्लत और गंदगी से निजात मिलती है, और इस तरह पूरा बदन तबाही और हलाकत के गढ़े से निकल आता है।

नेक बीवी अल्लाह तआला की बहुत ही बड़ी नेमत है। मर्द के लिए बीवी कुदरत का सबसे ज़्यादा क़ीमती अतीया (तोहफ़ा और उपहार) है। दुनिया को बनाने वाले का सबसे ज़्यादा क़ीमती और नादिर व नायाब गिफ़्ट है। जो प्यार व मुहब्बत और ग़मख़्वारी के लिए भेजा गया है। दिन भर की मेहनत व कोशिश और ख़ून-पसीना एक करने के बाद एक थका हुआ व्यक्ति जब शाम को घर लौटता है तो एक वफ़ा की देवी, समझदार, खुशमिज़ाज, मीठी ज़बान वाली बीवी अपनी मुस्कान से उसका स्वागत करके उसकी सारी थकावट और ग़मों को दूर कर देती है।

तबीयत में खुशी और ताज़गी महसूस करता है। नेक बीवी उसे एक रूहानी सुकून और ताज़गी बख़्शती है। नेक बीवी के मुँह से निकले हुए दो फूल कौसर व तस्नीम से धुले हुए दो बोल उसके लिए गुलोकोज़,

विटामिन डी और सर बेक्स टी से ज़्यादा कुव्वत व ताक़त बख़्श साबित होते हैं। और दोनों आपसी हमदर्दी व ग़मख़्वारी का प्रदर्शन करते हुए एक दूसरे के दुखों को समझने और उन्हें अच्छे ढंग से दूर करके अपनी ज़िन्दगी को खुशगवार बनाने की कोशिश करते हैं। अल्लाह तआ़ला हर दुल्हन को अपने शौहर के लिए सच्ची राहत व हक़ीक़ी मुहब्बत व दिली सुकून का ज़रिया बनाए। आमीन

रहमान के बन्दों की दुआ़

अल्लाह तआ़ला रहमान व रहीम ने अपने नेक बन्दों की सिफ़ात में एक यह सिफ़त बयान फ़रमाई कि वे हमेशा अपने लिए अल्लाह तआ़ला से नेक-सीरत (अच्छी आ़दतों और अच्छे अख़्लाक़ वाली) बीवियाँ और नेक औलाद माँगते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا○

तर्जुमाः और रहमान के बन्दे वे हैं जो कहते हैं ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक अ़ता फ़रमा और हमें परहेज़गार लोगों का इमाम बना। (सूरः फ़ुरक़ान 74)

गोया मुसलमान को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक तलक़ीन (हिदायत और इशारा) है कि वह हमेशा अपनी बीवी के चुनाव में इस पहलू को ज़रूर सामने रखें।

ज़ाहिर है कि नेक-सीरती ही की बिना पर मियाँ-बीवी खुश और सुकून से रह सकते हैं। जब तक नेक नहीं होंगे उस समय तक एक कैसे हो सकते हैं।

यही वह सच्ची और हक़ीक़ी खुशी व मुसर्रत है जो आँखों की ठंडक बन सकती है। इसलिए वह व्यक्ति बड़ा ही ख़ुश-क़िस्मत (भाग्यवान) है जिसको एक अच्छे अख़्लाक़ वाली और हमदर्द व ग़मख़्वार समझदार जीवन-साथी मिल जाए। इन्शा-अल्लाह उम्मीद है, अगर

दुल्हन, बीवी इस किताब में लिखी हिदायतों पर अमल करने और अपने सुधार की नीयत से पढ़ेगी तो बहुत जल्द और बहुत अच्छे तरीक़े से मियाँ-बीवी दोनों एक दूसरे के लिए आँखों की ठंडक बन सकते हैं।

अगर औरतें अपने अन्दर वे सिफ़तें पैदा कर लें जो इस्लाम ने उनको तालीम दी हैं तो वें शौहर का दिल जीत सकती हैं। अपनी मुहब्बत का सिक्का उसके दिल व दिमाग़ पर जमा सकती हैं। और फिर शौहर भी ऐसी सिफ़तों वाली बीवी के लिए जिससे उसको दिली सुकून मयस्सर हो, आपसी उलफ़त हासिल हो, हर क़िस्म की क़ुर्बानी देने के लिए तैयार होता है। उसकी हर जायज़ हाजत व ज़रूरत को पूरा करने के लिए तैयार होता है। बल्कि वह उसके दिली सुकून की ख़ातिर आसमान के तारे तक तोड़ लाने और उन्हें अपनी शरीके-हयात (जीवन-साथी यानी बीवी) के क़दमों में निछावर करने पर भी तैयार हो जाता है।

नोटः हर मुसलमान मर्द औरत को चाहिए कि वे चाहे उम्र की किसी भी मन्ज़िल में हों, यह दुआ हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद अल्लाह तआला से ख़ूब आजिज़ी के साथ और गिड़गिड़ा कर माँगे। खुसूसन बच्चों-बच्चियों को बालिग़ हो जाने के बाद इस दुआ के माँगने का एहतिमाम करवाना चाहिए। (1)

(1) यहाँ दुआ से मुराद क़ुरआन पाक की वही आयत है जिसका तर्जुमा ऊपर लिखा गया है। हम पढ़ने वालों की सहूलियत के लिये यहाँ उसका उच्चारण हिन्दी में लिखते हैं।

रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र-त अअ्युनिंव्-व ज-अ़ल्ना लिल्-मुत्तक़ी-न इमामा। (मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

नेक बीवी

दुनिया की बेहतरीन दौलत नेक बीवी

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जब पहली बार वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) नाज़िल हुई तो आपके मुबारक दिल पर उस वक़्त कुदरती बेचैनी थी। चूँकि पहली वह्य का पहला तजुर्बा और फ़रिश्ते से पहली बार साबक़ा था। उस वक़्त आपको तस्कीन व तशफ़्फ़ी देने वाली, मुहब्बत भरे सुनहरे अल्फ़ाज़ के साथ पेशानी मुबारक से डर व घबराहट का पसीना पौंछने वाली, रिसालत पर सबसे पहले ईमान लाने वाली, आपको याद है कि वह कौनसी हस्ती थी?

किसी दोस्त व अ़ज़ीज़ की नहीं...... ज़िन्दगी की साथी, ख़ुशी व ग़म की शरीक, राहत व तकलीफ़ की साथी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की हस्ती थी। इसी तरह जिस वक़्त रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया से तशरीफ़ लेजा रहे हैं। इस दुनिया में आपके जमाल का चिराग़ हमेशा के लिए गुल होने को है, उम्मत पर इससे बढ़कर क़ियामत ढाने वाली घड़ी, क़ियामत तक और कौनसी आ सकती है?

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम एक से एक बढ़कर एक शैदा-ए-रसूल सैकड़ों की तायदाद में मौजूद, लेकिन तारीख़ व सीरत की ज़बान से शहादत लीजिए कि ऐन उस वक़्त जबकि रूह मुबारक (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) किसी के दीदार के लिए बेचैन इस ज़ाहिरी जिस्म से हमेशा के लिए जुदा हो रही थी, तो ऐन उस वक़्त आपका मुबारक सर किसकी गोद में था?

अल्लाह तआ़ला से ऐन मुलाक़ात के वक़्त किस ख़ुशनसीब के लिए मुक़द्दर था कि आपके मुबारक जिस्म के लिए सहारे और तकिये का काम दे? अ़ज़ीज़ों और रफ़ीक़ों में से किसी मर्द के लिये नहीं।

न अबू बक्र के, न उमर के, न उस्मान के, न अ़ली के (रज़ियल्लाहु

अ़न्हुम), न जाँबाज़ रफ़ीक़ों के, न महबूब अ़ज़ीज़ों के, बल्कि शरीके-हयात, पाक बीवियों की सरदार हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के यह चमकते नसीब थे।

यह है बीवी का रुतबे और मर्तबे से मुताल्लिक़ दुनिया के सबसे बड़े सुधारक, मुअ़ल्लिम व हादी की ज़िन्दगी से मिलने वाला सबक़। यह है इस्लाम में बीवी का मक़ाम। औ़रत की क़द्र इस्लाम में आपने देखी? बीवी का मर्तबा रसूल के ज़रिये आपने पहचाना? है कोई इसके मुक़ाबिल की चीज़ औ़रत के लफ़्ज़ी हमदर्दों के दफ़्तरे अ़मल में? औ़रतों के लिये नाम की हमदर्दी जताने और ख़्वाह-मख़्वाह की आवाज़ उठाने वालों बेमौक़ा नारे लगाने वालों के यहाँ? नई तहज़ीब के दावेदारों के फ़ल्सफ़ों में? कन्धे से कन्धा मिलाकर बराबरी का पाठ पढ़ाने वाले दावेदारों की अ़मली ज़िन्दगी में?

अब हम आपके सामने कुछ ऐसी बीवियों का ज़िक्र करेंगे कि उन्होंने यह रुतबा और मक़ाम कैसे पाया। इस दर्जे तक कैसे पहुँचीं। शौहर के दिल में अपनी मुहब्बत और इताअ़त के न मिटने वाले नुक़ूश कैसे जमाए? कौनसे अख़्लाक़ और कैसी सिफ़ात से उन्होंने अपने आपको संवारा? कौनसे तरीक़ों और सलीक़ों से उन्होंने शौहर को सर का ताज और जन्नत में जाने का ज़रिया बनाया?

अपने छोटे से घर को जन्नत का नमूना, अपने बच्चों को गिलमान (जन्नत के ख़ादिमों) और बच्चियों को जन्नत की हूरों का नमूना बनाया? अगर आप भी अपने अन्दर ये सिफ़तें पैदा कर लें तो आप भी "आँखों की ठंडक" और "दुनिया की बेहतरीन दौलत" बन सकती हैं। आप भी घर की मलिका, क़ाबिले शफ़क़त हस्ती, तन्हाई और मजमे की साथी बन सकती हैं।

इस्लाम में अच्छी बीवी का मेयार क्या है?

इस्लाम में अच्छी बीवी का मेयार यह नहीं है कि कालेज से ऐसी

डिग्रियाँ और डिप्लोमा लेकर निकले, जो ख़ुद मर्दों के हक़ में भी अब बेकार हो चुके हैं। इरशाद फ़रमाया उसी ज़बान ने जो हमेशा सच पर खुलती है, हमारे और सब के हादी (रास्ता दिखाने वाले) व आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने, जिन पर अल्लाह की अनगिनत रहमतें नाज़िल हों। फ़रमायाः

لو كنتُ آمرًا احدًا ان يسجد لاحد لأمرت المرأة أنْ تَسْجُدَ لِزَوْجِهَا.

तर्जुमाः अगर मैं किसी को इसका हुक्म देता कि वह किसी को सज्दा करे तो यक़ीनन हुक्म देता औ़रत को कि सज्दा करे अपने शौहर को।

इसलिए अच्छी बीवी वह होगी जो इस हदीस का मतलब समझ कर ख़ुद को मिटा दे शौहर की इताअ़त में, ख़त्म कर दे अपनी मर्ज़ी को शौहर की मर्ज़ी में। अपने दिल के वलवले, हौसले, अपनी आरज़ूएँ, उमंगें, अपना चैन, अपना आराम सब निसार कर दे। बीवी बनकर आए बाँदी बनाकर अपने को रखे। जो ज़िल्लतें हों उन्हें इज़्ज़त समझे, काँटों का बिस्तर मिले उसको फूलों की सेज ख़्याल करे। बस समर्पित कर दे पहली रात से अपनी ज़िन्दगी को शौहर की ख़िदमत के लिए, इताअ़त के लिए और आज़माईशों पर सब्र के लिए।

ऐ नेक बीवी! ज़हर में चीनी का मज़ा हासिल करना सीख, सूखी रोटी के टुकड़े मिलें तो जन्नत के पकवान समझ। फटे-पुराने कपड़े पहनने में आएँ तो हीरे-मोती ख़्याल कर। ज़बान-दराज़ियाँ हों तो अपने कानों को बहरा बना ले। आवाज़ें कसी जाएँ तो अपनी ज़बान पर मोहर लगा ले। कलेजे में नश्तर बनकर चुभने वाली हर तकलीफ़ में अपने मुक़द्दर की मुस्कुराहट का जलवा देख।

सारी की सारी ज़िन्दगी सब्र व बरदाश्त के साथ शुक्र व इत्मीनान के साथ गुज़ार दे और दुनिया को दिखा जा कि अपने बड़ों के नाम की लाज रखने वालियाँ, शरीफ़ों की लाडलियाँ, एक ख़ुदा की बन्दियाँ, रसूले-बरहक़ की बाँदियाँ, आ़यशा व ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के इशारों पर

निसार हो जाने वालियाँ इस चौदवहीं शताब्दी में भी पैदा हो सकती हैं। दीनदारी व खुदा के डर के साथ शौहर की इताअ़त व मुहब्बत दोनों नेकियाँ अपने आँचल में कैसे समेट कर इस दुनिया से चली जाती हैं।

अब हम दुआ़ करते हैं कि आने वाले इन वाक़िआ़त को पढ़ने से अल्लाह तआ़ला आपको और हम सब को हिदायत अ़ता फ़रमाएँ। इन पर अ़मल करने की हिम्मत दें और ज़िन्दगी भर अपनी रिज़ा के मुताबिक़ चलने वाला बनाएँ। नाराज़गी वाली चीज़ों से बचाएँ और हर मुसलमान औ़रत को "दुनिया की बेहतरीन दौलत" और हर मुसलमान मर्द को "अपनी औ़रतों के हक़ में बेहतर सुलूक करने वाला" मर्द बनाएँ। आमीन

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का नसब

नामे नामीः ख़दीज़ा। **कुन्नियतः** उम्मे हिन्द। **लक़बः** ताहिरा

सिलसिला-ए-नसब यूँ हैः ख़दीजा बिन्ते खुवैलद बिन असद बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ बिन क़ुसई। क़ुसई पर पहुँचकर उनका ख़ानदान रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ख़ानदान से मिल जाता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब मक्का वालों से तकलीफ़ें और मुसीबतें पहुँचीं तो उस वक़्त आपका साथ देने वाली और हर क़िस्म की मदद करने वाली दो औ़रतें थीं- एक ख़दीजा बिन्ते खुवैलद और दूसरी फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहु अ़न्हा। इस बिना पर ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का शुमार दुनिया की बेहतरीन औ़रतों में से होता है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनकी वफ़ादारी व जाँनिसारी का ज़िक्र इन अलफ़ाज़ से फ़रमायाः

امنتْ بی اذ کفرنی الناس. وصدقتنی اذ کذبنی الناس. وواستنی بمالِھااذ حرمنی الناس.

तर्जुमाः मुझ पर ईमान लाई जब लोगों ने मेरा इनकार किया। और मुझे सच्चा माना जब लोगों ने मुझे झुटलाया। और मेरी माली मदद की

जबकि लोगों ने मुझे मेहरूम रखा।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा वह वफ़ादार बीवी थीं कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नुबुव्वत का ऐलान फ़रमाया तो पूरी दुनिया से एक आवाज़ भी आपकी ताईद में न उठी, पूरा अ़रब ख़ामोश था, लेकिन इस विश्व-व्यापी ख़ामोशी में सिर्फ़ एक आवाज़ थी जो मक्के की फ़िज़ाओं में गूँज रही थी। यह आवाज हज़रत ख़दीजा ताहिरा के मुबारक दिल से उठी थी। जो इस अंधेर नगरी और कुफ़्र व गुमराही के गढ़े में अनवारे-इलाही की गोया तजल्ली (रोशनी) थी, और उन्होंने नुबुव्वत की आवाज़ पर सबसे पहले लब्बैक कहा:

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए तसल्ली व तशफ़्फ़ी का सबब

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुश्रिकीन की जानिब से किसी भी क़िस्म की कोई तकलीफ़ पहुँचती थी, या कोई झुठलाता था, या कोई ग़म की बात पेश आती थी, तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा उस ग़म को दूर करने का सबब बनती थीं। ऐसी तसल्ली देती थीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक सीना ठंडा हो जाता, बोझ व ग़म हल्का हो जाता, हैरानी व परेशानी ख़त्म हो जाती।

पहली बार जब वह्य (अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते के ज़रिये पैग़ाम) नाज़िल हुई तो स्वभाविक तौर पर उस वक़्त आपके मुबारक दिल पर बेचैनी थी, और पहली वह्य का पहला तजुर्बा, और फ़रिश्ते से पहला साबक़ा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घबरा कर परेशानहाल घर तशरीफ़ लाए। डर की शिद्दत से आपके मुबारक कन्धे पर कपकपी तारी थी। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मुहब्बत भरे ऐसे सुनहरे अलफ़ाज़ से तसल्ली देकर डर व घबराहट का पसीना

पौंछा कि दुनिया की हर औरत अपने शौहर को उसकी घबराहट के मौक़े पर अगर इसी तरह तसल्ली देकर उसके ग़म को हलका करने की कोशिश करे तो शौहर को जहाँ एक तरफ़ अपनी बीवी के ऐसे अलफ़ाज़ से दिली सुकून मिलेगा दूसरी तरफ़ वह अपने दिल की गहराईयों से उसको अपनी हमदर्द और ग़मख़्वार समझेगा और आईन्दा भी कभी पेश आने वाली ऐसी हैरानी और परेशानी की बात अपनी बीवी को बताकर अपना ग़म और बोझ हल्का करेगा, और यह एक मुसलमान बीवी के लिए बहुत बड़े सम्मान और इ़ज़्ज़त की बात है।

अब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के वे मुबारक अलफ़ाज़ पढ़िए। फ़रमायाः

كلا والله لا يخزيك الله ابدًا، انك لتصل الرحم، وتحمل الكل وتكسب المعدوم، وتقرى الضيف، وتعين على نوائب الحق.

तर्जुमाः हरगिज़ नहीं! ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला आपको कभी ज़लील व रुस्वा न करेगा। आप परेशान न हों अल्लाह आपका साथ न छोड़ेगा। आप तो सिला-रहमी करते हैं। लोगों की मदद करते हैं। आप कुंबा-परवर हैं। बेकसों और फ़क़ीरों के मददगार रहते हैं, मोहताजों का सहारा हैं, मेहमानों को खाना खिलाते हैं, राहे-हक़ के मुसीबत-ज़दों के काम आते हैं।

जो व्यक्ति ऐसे अख़्लाक़ और ऐसी सीरत और ऐसी आला व पाकीज़ा आ़दतों वाला हो, उस पर किसी शैतान या जिन्न और आसेब का असर हरगिज़ नहीं हो सकता। यह बात अल्लाह तआ़ला की रहमत व शफ़क़त से दूर और उसकी रहमत के विरुद्ध है। उन्होंने बड़े यक़ीन व एतिमाद के अन्दाज़ में और पूरी ताक़त के साथ तसल्ली दी।

नोटः ये हैं उन ख़ातूने-जन्नत के मुबारक अलफ़ाज़। यह है उनके जज़्बात की तर्जुमानी। यह है शौहर की सच्ची मुहब्बत, सच्ची वफ़ादारी। ये अलफ़ाज़ उसी को सिखलाए जाते हैं, उसी के दिल में डाले जाते हैं

उसी को समझाए जाते हैं जो शौहर की सच्ची मुहब्बत दिल व दिमाग़ में पैदा करे। सच्ची वफ़ादारी को अपनी पहचान बनाए। उसका ग़म अपना ग़म हो, उसकी ख़ुशी अपनी ख़ुशी हो, उसका दर्द अपना दर्द हो, उसका रोग अपना रोग हो, उसकी सेहत अपनी सेहत हो।

ग़र्ज़ यह कि उसे हर मामले में अपना ही समझे। अपने दिल के किसी गोशे और कोने में उसकी बुराई को जगह न दे। बल्कि उसकी अच्छी सिफ़ात ढूँढ़े और फिर उन ख़ूबियों की बिना पर अपने दिल में उसकी अ़ज़मत व मुहब्बत बिठाए।

ग़ौर कीजिए! हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने किस प्यारे व समझदारी के अन्दाज़ से अपने शौहर के ग़म को हल्का किया। अपने शौहर की सिफ़ात को कैसे पहचाना?

ज़रा तसव्वुर की दुनिया में चौदह सौ साल पीछे चले जाईये। मक्का के पहाड़ों, अ़रब के रेगिस्तानों में पलने-बढ़ने वाली एक औ़रत, जहाँ न कोई मदरसा है न युनिवर्सिटी, जहाँ आज जैसी कोई ज़ाहिरी नाम-निहाद तहज़ीब व तरक़्क़ी वाली कोई बला या वबा नहीं, लेकिन इसके बावजूद किस तरह हकीमाना व आ़लिमाना अन्दाज़ से और कितने प्यारे अलफ़ाज़ से अपने जज़्बात की तर्जुमानी की, और शौहर को ऐन परेशानी व बेचैनी के वक़्त तसल्ली व तशफ़्फ़ी दी। अगर समझदार औ़रत इन्हीं अलफ़ाज़ पर ग़ौर कर ले तो शायद पूरी ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा इन्हीं अलफ़ाज़ से समझ में आ जाए।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है जिसने "एक नेक नमूने" के तौर पर उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की घरेलू ज़िन्दगी को दुनिया की सभी औ़रतों के लिए नमूना बना दिया। अगरचे औ़रत को नुबुव्वत नहीं मिलती और औ़रत नबी नहीं हो सकती लेकिन अगर औ़रत यह चाहे कि मैं औ़रत होते हुए किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारूँ और मेरे लिए औ़रत ही किस तरह नमूना हो तो ख़ुदा तआ़ला ने इसका भी इन्तिज़ाम फ़रमा दिया। नबी करीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के घर में

रहने वालियों, और नबी करीम की पाक बीवियों उम्महातुल्-मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न) की ज़िन्दगियों को रहती दुनिया की औ़रतों के लिए नमूना बना दिया, कि मुसलमान औ़रतें इन पाक व मुबारक बीवियों की ज़िन्दगियों से सबक़ सीखें, और अपनी ज़िन्दगी को उनकी ज़िन्दगी की तरह बनाने की कोशिश करें। चौबीस घन्टे की ज़िन्दगी के हर काम में यह सोचें कि सहाबियात रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न ने इस काम को किस तरह किया। उनके मकानात कैसे थे? उनका खाना-पीना कैसा था? उनका शौहर के साथ हुस्ने-सुलूक (व्यवहार) कैसा था? वग़ैरह-वग़ैरह।

एक बार फिर इन अलफ़ाज़ को देखिए फिर ग़ौर कीजिए "ख़ुदा हरगिज़ आपका साथ न छोड़ेगा" "आप रिश्तेदारों से मिलाप रखते हैं" "बेकस व बेसहारा लोगों की मदद करते हैं" "फ़क़ीरों व ग़रीबों के ख़ैरख़्वाह हैं" "मेहमान-नवाज़ी करते हैं" "मुसीबतज़दा लोगों की मदद करते हैं"। ये सिफ़तें अल्लाह को पसन्द हैं ऐसी सिफ़तों वालों को अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला कैसे छोड़ सकते हैं?

दूसरे लिहाज़ से आप ग़ौर करें तो एक औ़रत भी अपने शौहर में ये सिफ़तें आसानी से पैदा कर सकती है। अगर औ़रत अपने रिश्तेदारों के ऐब शौहर को न बताए ख़ास तौर पर शौहर के रिश्तेदारों के ऐब, जैसे यह कि मेरी नन्द, सास, देवरानी, जेठानी ने मेरे साथ यह किया, वह किया। मेरे बच्चों के साथ उनके बच्चों ने यह किया, यह कहा। और उनकी ख़ुशी व ग़मी के मौक़े पर शौहर को उभारे कि तुम जाओ उनका साथ दो। अगर उनकी तरफ़ से कोई तकलीफ़ देने वाली बात पहुँचती है तो माफ़ कर दो, अगर तुम्हारे ज़रिये तकलीफ़ पहुँचती है तो उनसे माफ़ करवा आओ।

इस तरह पहली सिफ़त (रिश्तेदारों से मिलाप पैदा करने की) इस पर आप अ़मल करवा सकती हैं अपने शौहर से। किसी तरह समझा-बुझाकर झगड़ों और विवादों को दूर करवा सकती हैं। दिलों का मैल और आपस का कीना व रंजिश दूर करने का साबुन अल्लाह ने आपको

दिया है, इस साबुन के ज़रिये से आप यह मैल शौहर के दिल से धो सकती हैं और इस मैल के दूर करने पर आपस के झगड़े मिटाने पर अल्लाह तआला आपको दुनिया व आख़िरत में अनगिनत इनामात से ज़रूर नवाज़ेंगे। इस काम पर आपस में मुहब्बत से रहन-सहन और खुसूसन रिश्तेदारों के साथ मुहब्बत पर दुनिया ही में इनामात और रहमतों की बारिशें बरसती हैं।

ऐ प्यारे शौहर! अगर तुम ही अपने भाई-बहनों से मिलाप नहीं रखोगे, तो तुम्हारा क्या गुमान है कि हमारे अपने बच्चे किस तरह मिलाप से रह सकेंगे। बल्कि यूँ समझाएँ कि अगर तुम बड़े भाई हो तो तुम्हें औरतों की तरह छोटी-छोटी बातों पर नाराज़ नहीं होना चाहिए। तुम रुतबे में गोया बाप ही के बराबर हो। अगर आज तुम्हारे बाप ज़िन्दा होते तो उनको तुम्हारे इस काम से कितनी तकलीफ़ पहुँचती।

और अगर तुम छोटे हो तो कोई बात नहीं तुम माफ़ कर दो। छोटे तो बड़ों की सुन ही लिया करते हैं। अगर आज तुम उन बड़ों की सुन लोगे और उनकी कड़वी-कसीली को बरदाश्त कर लोगे, तो कल तुम्हारे अपने बच्चे भी तुम्हारी सुन लेंगे, बरदाश्त कर लेंगे। मख़लूक़ की तकलीफ़ पर सब्र करने से अल्लाह तआला बहुत बड़ा इनाम देते हैं। यह कोई बात है कि बाप का छोड़ा हुआ माल बड़े भाई ने मुझे नहीं दिया, या बाप की दुकान पर क़ब्ज़ा कर लिया, या जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लिया, इस वजह से मैं मिलना बन्द कर दूँ ताल्लुक़ात ख़त्म कर दूँ? नहीं! हरगिज़ नहीं! यह दुनिया तो फ़ानी है। कोई बात नहीं, अगर उन्हों ने हमारा जायज़ हक़ नहीं दिया तो अल्लाह तआला उन्हें माफ़ करे उन्हें मुबारक करे, हमारे मुक़द्दर में होगा तो अल्लाह तआला हमें दूसरे रास्तों से दे देगा। उसके पास किसी चीज़ की कमी नहीं। सातों आसमानों और ज़मीनों के ख़ज़ाने उसके हाथ में हैं। जिसको जो कुछ मिला है वह उसी की तरफ़ से दिया गया है। अगर हमारे लिए उसमें बेहतरी होगी तो हमें भी वह दे देगा वरना आख़िरत में उसके बदले हमें बहुत मिलेगा।

एक मुसलमान के लिये यह अच्छा नहीं कि वह इस फ़ानी और ख़त्म होने वाली दुनिया के लिए किसी आम मुसलमान से झगड़ा करे। समबन्धों को ख़त्म कर दे और ख़ासकर अपने सगे रिश्तेदारों से, भाई बहनों से झगड़ा करे, बुरा भला कहे, उनकी ग़लतियों को माफ़ न करे, उनसे मिलाप न रखे, कितनी बुरी बात है।

इसी तरह आप अपने शौहर के ज़रिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी सुन्नतें भी ज़िन्दा करवा सकती हैं। वह इस तरह कि अपने घर का ख़र्चा कम से कम करके पहले जो रिश्ते के ग़रीब लोग हैं उनकी मदद करवा कर सवाब हासिल कर सकती हैं। फिर जो भी मुसलमान ग़रीब मोहताज हैं, बेवा, यतीम, मिस्कीन हैं उनकी मदद करवा सकती हैं।

जो लोग बेरोज़गार हैं, अपने शौहर को इसपर-आमादा करके उनके ज़रिये उन बेरोज़गारों को रोज़गार दिलवा सकती हैं। अपने शौहर को कितने नेक कामों पर आप उभार सकती हैं। अपनी ज़ात पर पैसा कम से कम ख़र्च करके अल्लाह के बन्दे-बन्दियों पर, नेक कामों पर पैसा लगवा सकती हैं।

इसी तरह मेहमान-नवाज़ी भी आप करवा सकती हैं। ख़ुसूसन आपके घर में जो भी मेहमान औरत आए ख़ाली हाथ न भेजें। कम से कम ख़ाली पानी का सादा गिलास ही पिला दीजिए। मुस्कुराते चेहरे से उसका स्वागत ही कर लीजिए। उसे कोई न कोई दीन की बात सिखा दीजिए। उसे दीन पर चलने और उसको फैलाने पर आमादा ही कर लीजिए।

अगर शौहर और उनके मेहमान आएँ उनकी मेहमानदारी अपनी ताक़त के अनुसार बहुत ही दिल खोल कर, फ़राख़ी और ईसार से करनी चाहिए। मेहमान की ख़ातिर अपने मामूली खाने के मुक़ाबले में तकल्लुफ़ भी जायज़ है। जो फ़ुज़ूलख़र्ची तक न पहुँचे। अगर मेहमान कोई मुत्तक़ी ख़ुदा के नेक बन्दों में से हो, तो उसकी मेहमानी को ख़ैर व

बरकत का ज़रिया समझना चाहिए। और यूँ तो किसी मेहमान से भी तंग-दिल न होना चाहिए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तो काफ़िर को भी मेहमान बनाया है।

मेहमान के साथ जो अच्छा सुलूक और उसकी ख़ातिर की जाये उसको हरगिज़ अपनी तरफ़ से एहसान मत समझिए बल्कि उसने आप पर एहसान किया कि अपने मुक़द्दर का रिज़्क़ आपके यहाँ खाया, और आपको सवाब में दाख़िल किया।

शुक्र बजा आँकि मेहमाने तू
रोज़ी-ए-ख़ुद मी ख़ुरद् अज़ ख़्वाने तू

तर्जुमाः शुक्र अदा कर कि तेरा मेहमान अपनी रोज़ी तेरे दस्तरख़्वान से खाता है।

मेहमानों को मुसीबत न समझें अगरचे छोटे बच्चों को संभालना, घर की सफ़ाई-सुथराई करना, और फिर मेहमानों के लिए पकाना उनकी ख़ातिर-तवाज़ो करना यह काम मुश्किल तो हैं लेकिन सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए उनकी ख़िदमत करें तो इसका बहुत बड़ा अज्र व सवाब है और माल में बरकत भी होती है। मेहमान और वह भी ख़ास तौर से मुसाफ़िर हो तो दिली दुआ़एँ भी मिलती हैं। बल्कि अगर शौहर की आ़दत नहीं तो उनको आमादा करें कि वक़्त-वक़्त पर अपनी गुन्जाईश के हिसाब से नेक लोगों को अल्लाह के रास्ते में फिरने वाले अल्लाह के बन्दों को, घर पर बुला कर खाना खिलाएँ और खाने में ऐसा तकल्लुफ़ न करें बल्कि ऐसा खाना खिलाएँ जो सदा निभा सकें। जिसमें ख़ुद आपको और घर वालों को बिना वजह परेशानी में न पड़ना पड़े। बल्कि जो भी हाज़िर हो आसानी से उस वक़्त मिल सके, वह खिला दें।

मेहमान के लिए यह बात बुरी है कि वह यह सोचे कि ख़ाली दाल-चावल ही खिलाए। इसी तरह मेज़बान के लिए यह बात बहुत ही बुरी है कि वह यह सोचे कि जो कुछ समय पर मौजूद है पेश कर दूँगी

तो बुरा लगेगा, यह तो हमें दिल से निकालना ही होगा कि लोग क्या कहेंगे। बल्कि अल्लाह को राज़ी करने का जज़्बा हर समय दिल में बेदार रखना होगा और हर काम अल्लाह को राज़ी करने के लिए पेश कर देंगे चाहे अच्छा लगे या बुरा लगे। अब दुआ माँगें खुदा करे यह हरे-भरे बाग़े-मुहम्मदी और हरे-भरे गुलशने-अहमदी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के महकने वाले फूल और खिलने वाले हंस-मुख गुनचे जो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के तुफ़ैल आपको मिले, आपकी ज़िन्दगी में और आपके ज़रिये आपके घर में और आपकी आने वाली नस्लों की ज़िन्दगियों में भी इन्हीं फूलों की बहार आए। आमीन सुम्म आमीन।

शौहर पर अपने माल को कुर्बान करना

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और सिफ़त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की यह बयान फ़रमाई:

وواستنی بمالها اذحرمنی الناس.

तर्जुमा: उस समय मेरी माल के साथ ख़ैरख़्वाही की जब लोगों ने मुझे मेहरूम रखा था।

यानी उस समय मेरी मदद की जबकि लोगों में मेरा कोई मददगार न था। इनसान को सबसे ज़्यादा मुहब्बत अपने माल से होती है और माल जिस पर ख़र्च किया जाता है वह माल से भी ज़्यादा महबूब होता है। अगर आपके माल की आपके शौहर को दीन के किसी तक़ाज़े के लिए ज़रूरत पड़े या दुनियावी किसी जायज़ ज़रूरत के लिए ज़रूरत पड़े तो आप उस माल को शौहर पर ख़र्च करने की सआदत को फ़ख़्र समझिए। इसमें बिल्कुल कन्जूसी न कीजिए। बल्कि जो आपका माल और सोना-ज़ेवर आपका आपके शौहर पर ख़र्च हो गया वह आपकी निगाह में बहुत अज़ीज़ व मोहतरम हो, उसके मुक़ाबले में जो आपकी अलमारी में महफ़ूज़ रहे और आप सिर्फ़ देख ही देखकर खुश होती रहें और आपकी मौत के बाद किसी और के पास चला जाए।

चूँकि आपने अपने पैदा करने वाले और मालिक अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त को राज़ी करने के लिए शौहर पर ख़र्च किया इसलिये उसका पूरा-पूरा अज्र (बदला) क़ियामत के दिन आपको मिलेगा। चाहे वह दुनिया की किसी जायज़ ज़रूरत के लिए हो, लेकिन अगर वह माल आपके शौहर को दीन के फैलाने के लिए काफ़िरों को इस्लाम में लाने के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़ों को दुनिया में रिवाज डालने के लिए, ग़रीबों और मिस्कीनों की मदद करने के लिए लग गया और आपने इसमें ख़र्च कर दिया तो आपको यह सआदत मिली कि आप भी इस निस्बत में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ शामिल हो गईं। और कल क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला उन सभी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की बीवियों को अज्र (बदला) देंगे जिन्होंने नबियों को दीन फैलाने में, कुफ़्र व शिर्क मिटाने में, इनसानों के दिलों में अल्लाह तआला के एक और अकेले होने के यक़ीन को बिठाने में साथ दिया, जान और माल, अ़क्ल और सलाहियतें लगाईं, शौहरों की हिम्मतें बंधाईं, दीन को फैलाने पर जो परेशानियाँ आईं उनपर सब्र किया तो आपको भी अपने शौहर के दीनी कामों में साथ देने और माल ख़र्च करने की निस्बत की वजह से उन्हीं की तरह सवाब मिलेगा और आपको भी उन ख़ुशनसीब औरतों के झण्डे तले कहीं न कहीं जगह मिल जाएगी, अगर दूसरे गुनाहों से बचने का एहतिमाम किया। इन्शा-अल्लाह तआला।

इसी तरह अपने शौहर पर जान-माल के साथ फ़िदा होना, सलाहियत जज़्बात के साथ फ़ना होना। इसकी दूसरी मिसाल हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने इस तरह क़ायम फ़रमाई कि निकाह के समय हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बाप राज़ी न हुए कि मैं अबू तालिब के यतीम भतीजे से अपनी बच्ची की शादी करूँ।

लेकिन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने दो 'औक़िया' चाँदी या सोना हुज़ूरे अकरम के पास भेजा और अ़र्ज़ किया कि एक जोड़ा ख़रीद

कर मुझे हदिया कर दें और एक मेंढा और फुलाँ-फुलाँ चीज़ें ख़रीद कर दे दें। और फिर यह सब बाप को बतलाया कि होने वाले शौहर ने मुझे हदिया दिया है। अपने शौहर की ग़रीबी को इस तरह छुपाया, अपना ही माल उनको दिया और उन्हीं की तरफ़ निस्बत करके बाप को ख़ुश किया, और रहती दुनिया तक की औरतों के लिए एक मिसाल क़ायम फ़रमा दी कि शौहर के मर्तबे के सामने दुनिया की दौलत और माल कोई हैसियत नहीं रखता। (सियरुस्सहाबियात)

बहरहाल! आज भी मुसलमान बीवी अपने शौहर पर इसी तरह फ़िदा हो, अपनी जान और अपने माल से, अख़्लाक़ व आमाल से, मुहब्बत व ख़िदमत से, ईसार व ख़ुलूस से, गुफ़्तार व किरदार से, और ज़बाने-हाल से यूँ कहे:

ऐ दोस्त अगर जाँ तल्बी जाँ बतू बख़्शम
व ज़-जाँ चे अज़ीज़ अस्त बगो आँ बतू बख़्शम

तर्जुमाः मेरे प्यारे शौहर! अगर तुम मेरी जान माँगो तो वह हाज़िर है। और इस जान से भी ज़्यादा प्यारी चीज़ कोई और तुम्हारे ख़्याल में हो तो मुझे बता दो, मैं उसे भी तुम पर कुर्बान करने को तैयार हूँ।

आप शौहर पर मरना तो सीखिए आप उनको मुहब्बत और इताअत तो दीजिए। आप अपने दिल में उनकी क़द्र तो पैदा कीजिए। उनकी चाहत व मिज़ाज को समझने की कोशिश तो कीजिए। हर समय उनसे चीज़ों की फ़रमाईश के बजाय उनकी मुहब्बत भरी निगाह की तमन्ना भी तो कीजिए। उनके इस सवाल पर कि सफ़र से वापसी पर तुम्हारे लिए क्या लाऊँ? कहिए कि आप ही को अल्लाह तआला सलामती से लाएँ आप ख़ैर से तशरीफ़ ले आईए यह मेरे लिए दुनिया व आख़िरत की सबसे बड़ी नेमत होगी। आप ही तो इस घर के दूल्हा हैं। आपके बिना ये सारी चीज़ें बेकार हैं।

फिर कैसा भी बद-मिज़ाज शौहर हो, बद-चलन हो, आपके किसी

काम की क़द्र न करता हो, लेकिन आपके इस अख़्लाक़ व मुहब्बत और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद की दुआओं से वह ज़रूर और ज़रूर आपकी तरफ़ मुतवज्जह होगा। आपके एहसान की क़द्र करेगा बल्कि अपनी पिछली ग़लतियों पर शर्मिन्दा होगा। पिछली नामुनासिब हरकतों पर पशेमान व शर्मिन्दा होगा और न सिर्फ़ यह कि ज़िन्दगी में बल्कि आपकी मौत के बाद आपके दुनिया से रुख़्सत होने के बाद भी आपकी इन ख़ूबियों की यादें हमेशा उसको रुलाएँगी। फिर शौहर ज़बाने-हाल से यूँ कहेगाः

ऐ मेरी क़िन्दीले इज़्ज़त ऐ चिराग़े आरज़ू
जब से तुम ख़ामोश हो तारीकियाँ हैं चार सू
मेरा यह हाल है आँसू जो निकले पौंछ लेता हूँ
मशिय्यत है कि कश्ती सब्र की ख़ुश्की में धकेलता हूँ
जो आँखें डुबडुबा आती हैं बच्चे घेर लेते हैं
हमें इस तरह तकते हैं कि हम मुँह फेर लेते हैं
पड़ा है आज तक उलझा हुआ बिस्तर मसेहरी पर
गुज़र जाती है सारी रात इन बच्चों को समझा कर
तुम्हारे बाद अब मुझको तुम्हारी क़द्र होती है
लहू के आँसुओं से फूटी हुई तक़दीर रोती है
चलो एक बार घर कि घर मेरा आबाद हो जाए
जो तुम चाहो तो फिर दिलशाद यह नाशाद हो जाए

शौहर को सही मश्विरा देना

यह भी एक मुसलमान औरत की ज़िम्मेदारी है कि घर वालों का मिज़ाज ऐसा बनाए कि हर काम मश्विरे से हो। चाहे दीन का काम हो या दुनिया ही का कोई जायज़ काम, मुसलमान का तो दुनिया का काम भी दीन ही के लिए होना चाहिए कि बज़ाहिर दुनिया का काम है लेकिन

मक़सद उससे अल्लाह तआ़ला को राज़ी करना और दीन पर अ़मल करना और उसको फैलाने में मदद लेना है। इसी वजह से क़ुदरत की चाहत यह है कि सारे काम आपसी मश्विरे से तय किये जाएँ और इस तरह के जो काम अन्जाम पाएँ वे आपसी रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी से अन्जाम पाएँ। यह न हो कि शौहर यह समझे कि मैं घर का हाकिम और सरदार हूँ। घर का मालिक हूँ। सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरी ही चलेगी।

इसी लिए कुरआन करीम ने जहाँ यह क़ानून बयान किया कि माँयें अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएँ और बच्चे के बाप पर दूध पिलाने वाली का खाना कपड़ा है, उस जगह पर यह बयान करते हुए फ़रमाया कि अगर तुम (किसी शरई तौर पर मोतबर ज़रूरत की वजह से) दूध छुड़ाना चाहो तो मियाँ-बीवी आपसी मश्विरे और रज़ामन्दी से ऐसा करें।

فَإِنْ أَرَادَ فِصَالاً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا (سورہ بقرہ:۲۳۳)

तर्जुमाः फिर अगर माँ-बाप चाहें कि दूध छुड़ा लें यानी दो वर्ष के अन्दर ही अपनी रज़ामन्दी और मश्विरे से तो उनपर कुछ गुनाह नहीं।

(मआ़रिफुल-कुरआन पेज ५७६ जिल्द १)

इस आयत से यह भी मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी यह है कि घर में जो भी काम अन्जाम पाए जहाँ तक हो सके (पूरी कोशिश हो) कि आपसी मश्विरे से अन्जाम पाए। और मोमिनों की भी यही शान बयान फ़रमाई गई कि आपस के मश्विरे से काम करना मोमिनों की सिफ़ात में से है। और इस ख़ास सिफ़त को कुरआन पाक में भी नमाज़ और ज़कात के तज़किरे के बीच में ज़िक्र करके बयान किया गया है। तो ऐसे काम की कितनी अहमियत होगी। फ़रमायाः

وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ (سورۃ شوریٰ:٤)

तर्जुमाः और नमाज़ें क़ायम करते हैं और आपस के मश्विरों से काम करते हैं और जो कुछ हमने उनको अ़ता किया है उसमें से वे ख़र्च

करते हैं।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

آمروا النسآء فی بناتھن (رواہ احمد وابوداود ص:۲۸۵)

तर्जुमाः औ़रतों से उनकी बच्चियों के बारे में मश्विरा कर लिया करो।

इसका मतलब यह है कि लड़कियों की शादी से पहले उनकी माँओं से मश्विरे कर लिया करो।

इब्ने-हिशाम में है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की एक सिफ़त यह भी थी।

وكانت له وزير صدق على الاسلام.

तर्जुमाः वह इस्लाम के मुतालि्लक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सच्ची सलाहकार थीं।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा समझ-बूझ, अख़्लाक़े-करीमाना की मालिक होने के साथ सही अ़क्ल और सही फ़ितरत वाली भी थीं। और अपनी ज़िन्दगी के तजुर्बों और लोगों से जानकारी की बिना पर बड़ी सही राय रखने वाली औ़रतों में उनकी गिनती होती थी। अम्बिया की नुबुव्वत और फ़रिश्तों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ऐसे सही मश्विरे दिया करती थीं कि हर मौक़े पर आपकी पुश्त-पनाही और हिमायत हो जाती। मुश्किलात में दिलजोई हो जाती। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जो लोगों से तकलीफ़ें पहुँचती थीं वह इस ग़म को हमेशा हल्का करने की कोशिश करतीं और आपकी हिम्मत बंधातीं। इसी तरह उनको अपने मश्विरों से भी दीन और आपकी ख़िदमत व साथ और आपकी मदद व सहयोग का ख़ूब मौक़ा मिला। सब मुसलमान औ़रतें ऐसा करके यह सवाब हासिल कर सकती हैं।

अपने शौहर को हर मौक़े पर सही मश्विरे दें। जब वे किसी काम

में परेशान हों या आप से मश्विरा माँगे तो ख़ूब सोच-समझकर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ माँग कर मश्विरा दें कि यूँ कर लें या यूँ कर लें।

लेकिम अगर मामला अहम और बड़ा हो, जहाँ अपनी सोच-विचार ज़ेहन व समझ की पहुँच न हो सकती हो तो और इत्मीनान के लिए अपने ख़ानदान ही के नेक समझदार लोग या कोई भी उस लाईन के जो दीनदार और समझदार हों जो दीन और दुनिया के कामों को समझते हों, उनकी तरफ़ शौहर की रहनुमाई कर दें कि आप उनसे जाकर मश्विरा कर लें। जैसे हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आख़िर में अपने चचा के लड़के वर्क़ा बिन नौफ़ल जो आ़लिम व फ़ाज़िल थे, उनके पास ले गईं कि उनसे मश्विरे के ज़रिये मदद हासिल करें। जितना खुद मश्विरा दे सकती थीं दे दिया, और बाक़ी के लिए अपने समझदार और बड़े के पास ले गईं।

इसी तरह सुलह-हुदैबिया के मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब सर मुंडवाने का हुक्म दिया तो कोई सहाबी घबराहट की बिना पर तैयार ही न हुआ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मे-सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मश्विरा किया तो उन्होंने फ़रमाया आप खुद हल्लाक़ (बाल काटने वाले) को बुलाकर अपने बाल मुंडवाने शुरू करवा दीजिए। सहाबा हज़रात भी इसी तरह करने लग जाएँगे।

चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के मश्विरे पर अ़मल किया, और फिर ऐसा ही हुआ, और उम्मत एक औ़रत के मश्विरे के ज़रिये बहुत बड़े हादसे से बच गई। औ़रतों की तारीख़ में यह मश्विरा एक यादगार बाब बन गया।

इसलिए आज की मुसलमान औ़रतों को भी चाहिए कि जिस तरह पिछले ज़माने की दीनदार औ़रतों ने अपने शौहरों को दीन के फैलाने के लिए वक़्त-वक़्त पर मश्विरे दिये, वैसे ही आप भी अपने शौहरों को दीन के दुनिया में रिवाज पाने और उसके फैलने व फलने-फूलने के लिए ख़ूब सोच-समझकर सही मश्विरे दें कि किस तरह हमारे मौहल्ले में फिर

हमारे मुल्क में और दुनिया भर में मर्दों और औरतों में पूरा-पूरा दीन आ जाए। इसके साथ-साथ दुनियावी मामलात में भी मश्विरे से हर काम करने की आदत बनवाईये।

कुछ लोग कहते हैं कि औरतों से मश्विरे नहीं लेना चाहिए या उनके मश्विरे पर अमल नहीं करना चाहिए। हालाँकि अगर दीनदार अक़्लमन्द और समझदार औरत हो और सही अक़्ल और सही फ़ितरत की मालिक हो तो लाज़िमी तौर पर उसके मश्विरे पर अमल करना चाहिए। इन दोनों मिसालों के अलावा तारीख़े-इस्लाम में कई मिसालें मिलती हैं जिनमें औरतों के मश्विरे ने मुसलमानों को बड़ी-बड़ी कामयाबियाँ दिलवाईं, और बड़ी-बड़ी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रखा। अलबत्ता यह ज़रूरी नहीं कि मश्विरा लेकर अमल भी किया जाए बल्कि यह फ़ैसला तो अमीर या हाकिम या शौहर का होगा, लेकिन राय ज़रूर लें, उसमें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भलाई डाल दी जाएगी।

शौहर के साथ तकलीफ़ व परेशानी बरदाश्त करना

अगर किसी वजह से घर में कोई तकलीफ़ आ जाए या परेशानी आ जाए तो बीवी को चाहिए कि शौहर के साथ ख़ुद भी सब्र करते हुए उस परेशानी और ग़म को झेले, बरदाश्त करे। यह न हो कि नेमतों में उसके साथ हो और मुसीबत व परेशानी के समय उससे अलग हो जाए। किसी अक़्लमन्द के कहने के अनुसार "मीठा-मीठा हप-हप और कड़वा-कड़वा थू-थू"।

और इस तरह न कहे कि तुमने ऐसा किया तो ऐसा हुआ। अगर मेरी बात मान लेते तो ऐसा न होता। मैंने तो तुम्हें पहले से कह दिया था, क्यों सफ़र में गए? यहाँ क्यों मकान लिया? उसके साथ क्यों कारोबार किया? पहले से सोचते नहीं, अब रोते फिर रहे हो?।

ये बातें तो किसी काफ़िर औरत के लिए भी मुनासिब नहीं, कहाँ एक मुसलमान औरत के लिए जो इस पर यक़ीन रखती है कि जो कुछ

होता है अल्लाह के हुक्म से होता है। मुसीबत भी राहत भी उसी के हुक्म से आती है। नफ़ा और नुक़सान उसी अल्लाह के हुक्म से होता है। जो मुसीबत मुक़द्दर में है वह कभी टल नहीं सकती, और जो नेमत मुक़द्दर में है वह कभी रुक नहीं सकती। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है इसको याद कर लें:

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَاكَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰنَا، وَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (الاية)

तर्जुमाः आप कह दीजिए हरगिज़ हमको कोई मुसीबत नहीं पहुँचती मगर जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी। वही है हमारा काम बनाने वाला। और अल्लाह ही पर चाहिए कि भरोसा करें मुसलमान।

(मआरिफुल कुरआन पेज २८५)

तो जब अल्लाह के हुक्म से यह हुआ है। बह सब कुछ जानने वाला है, वह जानता है वह हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है। वह मुसीबत भेजने के बाद भी बाख़बर है और वह लतीफ है। वह मुसीबत भेजने के बाद भी हमें नहीं छोड़ेगा, लुत्फ़ व मेहरबानी वाला मामला करेगा। हम उससे माँगें वह देगा।

ख़ास तौर से अगर शौहर दीन के कामों में मशग़ूल है, उसकी तन्ख़्वाह कम है या दीन के लिए सफ़र में गया है और उसकी ग़ैर–मौजूदगी में कुछ नुक़सान हो गया, या हलाल काम की वजह से आमदनी कम हो रही है, या किसी वजह से कोई तकलीफ़ है तो बीवी को चाहिए कि उफ़ तक ज़बान से न निकाले। किसी ग़ैर से उसकी शिकायत न करे और हर हाल में सब्र करती रहे। शोर मचाने से शौहर को कोसने और ताना देने से मुसीबतें दूर नहीं होंगी। बल्कि उससे और बढ़ती ही रहेंगी। और अल्लाह मियाँ भी नाराज़ होंगे। इसलिए ख़ुद भी दुआएँ माँगें, बच्चों से भी दुआएँ मंगवाकर वह मुसीबत अल्लाह मियाँ से दूर करवाएँ।

सन् सात नब्वी में जब कुरैश (मक्का के लोगों) ने इस्लाम को ख़त्म करने का फ़ैसला किया तो यह तदबीर सोची कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उनके ख़ानदान को एक घाटी में क़ैद किया जाए। चुनाँचे अबू तालिब ने मजबूर होकर सभी ख़ानदान के साथ 'शअ़बे अबी तालिब' में पनाह ली। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा भी साथ आईं सीरत की किताब इब्ने हिशाम में लिखा है:

وهى عند رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه فى الشعب

तर्जुमा और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ शअ़बे-अबी तालिब में थीं।

यह ज़माना ऐसा सख़्त था कि बबूल के पत्ते खा-खाकर गुज़ारा किया। बच्चे भूख से रोते और बिलबिलाते थे, बच्चों के रोने की आवाज़ें दूर-दूर तक जाती थीं फिर भी उस ज़माने में भी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के असर व रुसूख़ की वजह से कभी-कभी खाना पहुँच जाता था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस हाल में भी अपनी क़ौम में तब्लीग़ व दावत का फ़रीज़ा दिन-रात छुपे व खुले हर तरीक़े से अन्जाम देते और बनू हाशिम और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा सब्र और अज्र की उम्मीद के साथ इन सभी तकलीफ़ों को बरदाश्त करतीं। कभी ज़बान से उफ़ तक न कहा और न यह कहा कि आपकी तब्लीग़ की वजह से यह मुसीबत आई है, हम कैसे सब्र करें? कैसे बरदाश्त करें? एक महीने दो महीने नहीं बल्कि शौहर के साथ तक़रीबन तीन साल का ज़माना इसी तरह गुज़ार लिया।

अल्लाह तआ़ला हम सबकी तरफ़ से हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को इस पर बहुत बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाए कि उन्होंने दीन फैलाने और हम तक इस्लाम पहुँचाने की ख़ातिर अपने शौहर मुहम्मद रसूलुलाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ उन तकलीफ़ों को बरदाश्त किया और उनपर सब्र फ़रमाया।

इसलिए एक मुसलमान औरत को चाहिए कि अपने शौहर को पहले तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नायब व उम्मती समझकर उसको काफ़िरों में इस्लाम फैलाने और मुसलमानों को पूरे इस्लाम पर अमल करवाने के लिए मेहनत करने और हर क़िस्म की कुर्बानी देने पर आमादा करे। और फिर इस कुर्बानी में खुद भी शरीक होकर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरह पूरा-पूरा सवाब हासिल करे।

शौहर की ख़िदमत

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा कुरैश की बहुत असर व रुसूख़ वाली ख़ातून होने के साथ-साथ माल और दौलत के एतिबार से भी मशहूर थीं, लेकिन इसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत खुद करती थीं।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और फ़रमायाः हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा बरतन में कुछ ला रही हैं, आप उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से सलाम पहुँचा दीजिए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

يا خديجة هذا جبريل يقرئك السلام من ربك.

तर्जुमाः ऐ ख़दीजा! यह जिब्राईल हैं तुम्हें सलाम पहुँचा रहे हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दियाः

لِلّٰه السلام ومنه السلام وعلى جبريل السلام

तर्जुमाः अल्लाह ही के लिये सलाम है, वह खुद ही सलाम है और उन्हीं की तरफ़ से सलामती मिलती है। और जिब्राईल पर भी सलामती हो।

यह वह शर्फ़ है कि अल्लाह जो खुद सलाम है उसकी तरफ़ से एक बन्दी को सलाम आए कितना बड़ा मक़ाम है कि ख़ालिक़ और मालिक

अहकमुल्-हाकमीन रब्बुल्-आलमीन की तरफ़ से सलाम मिलता है ख़ुदा की एक बन्दी को। और दूसरी रिवायत में ये अलफ़ाज़ भी हैं:

وبشرها ببيت الجنة من قصب لاصخب فيه ولانصب.

तर्जुमाः उनको जन्नत में ऐसे घर की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए जो मोती का होगा। और जिसमें शोर व गुल और मेहनत व मशक़्क़त न होगी।

इसी ख़िदमत व रिफ़ाक़त, मदद व सहयोग का अल्लाह की तरफ़ से यह सिला मिला।

خير نسائها مريم بنت عمران وخديجة بنت خويلد

तर्जुमाः दुनिया में सबसे बेहतर औरत मरियम बिन्ते इमरान और ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद हैं।

नबी करीम की पाक बीवियाँ किस तरह आपकी ख़िदमत करती थीं, हमारी मुसलमान बहनों के सामने यह नक़्शा भी आ जाए ताकि हमारी बहनें भी अपने शौहरों की ख़िदमत करने का जज़्बा दिल में बैठा सकें। और उस पर अज्र व सवाब की उम्मीद रखें और उसको दीन समझकर करें। इसके लिए अ़ल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की किताब "सीरते आ़यशा" से यह मज़मून नक़ल करते हैं। यह तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की ख़िदमत का ज़िक्र था, इसी तरह अज़्वाजे मुतह्हरात (यानी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवियों) में यह सिफ़त "शौहर की ख़िदमत" ख़ास तौर से दिखती थी। फ़रमाते हैं:

"घर में अगरचे नौकरानी मौजूद थी लेकिन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का काम ख़ुद अपने हाथ से अन्जाम देती थीं। आटा ख़ुद पीसती थीं, खाना ख़ुद पकाती थीं, बिस्तर अपने हाथ से बिछाती थीं, वुज़ू का पानी ख़ुद लाकर रखती थीं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ुर्बानी के लिए जो ऊँट भेजते थे उसके लिए ख़ुद क़लादा बटती थीं। आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम के सर में अपने हाथ से कंघा करती थीं। जिस्मे मुबारक पर इत्र मल देती थीं। आपके कपड़े अपने हाथ से धोया करती थीं।

सोते समय मिस्वाक (दातून) और पानी सिरहाने रखती थीं। दातून को सफ़ाई की ग़र्ज़ से धोया करती थीं। घर में कोई मेहमान आता तो मेहमान की ख़िदमत करती थीं। चुनाँचे हज़रत कैस गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु जो सुफ़्फ़ा वालों में से थे, कहते हैं कि एक दिन आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों से फ़रमाया: चलो आयशा के घर चलो। जब कमरे में पहुँचे तो फ़रमाया: आयशा! हम लोगों को खाना खिलाओ। वह पका हुआ खाना लाईं, आपने खाने की कोई और चीज़ माँगी तो छुवारे का हरीरा पेश किया। फिर पीने की चीज़ माँगी तो एक बड़े प्याले में दूध हाज़िर किया। उसके बाद एक और छोटे प्याले में पानी लाईं।"

यह है एक मिसाली बीवी की ज़िम्मेदारी कि घर के काम खुद करे और शौहर की ख़िद्मत को अपनी सआदत (सौभाग्य) समझे और उसमें यह नीयत करे कि शौहर की ख़िदमत से शौहर का हक़ अदा होगा और अल्लाह मियाँ उससे राज़ी हो जाएँगे। तो यह भी दीन और इबादत बन जाएगा। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि शौहर और बच्चों की ख़िदमत में इस तरह लगें जैसे आजकल कई बार हमारी औरतें करती हैं, ख़ास तौर से रमज़ान मुबारक वग़ैरह में दसियों तरह के खाने, शर्बत, कष्टर्ड, समोसे, पकौड़े वग़ैरह बनाने में उन्हें इतना समय लग जाता है कि न नफ़्लें, न तस्बीहात और न ही उन्हें ज़िक्र व इबादत का समय मिलता है, बल्कि बहुत सी बार तो फ़राईज़ में भी ग़फ़लत हो जाती है और बहुत देर से ये औरतें फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ती हैं, और तिलावत के लिए तहज्जुद की नमाज़ के लिए भी बड़ी ही मुश्किल से उन्हें वक़्त मिलता है। पूरा दिन पकाने में किचन हीं की भेंट हो जाता है, और दिमाग़ की सारी सलाहियतें मुख़्तलिफ़ पकवानों को तैयार करने और उनको सजाकर दस्तरख़्वान की ज़ीनत बनाने में लग जाती हैं।

रमज़ान मुबारक के मुबारक लम्हात व साआत ख़त्म होने वाले और बेवजह के तकल्लुफ़ात में लगाकर आख़िरत की कमाईयों की इतनी क़ीमती घड़ियाँ और रब्बुल्-आलमीन की तरफ़ से अताओं व इनामात की जो मूसलाधार बारिशें बरस रही होती हैं, उनसे उन्हें मेहरूमी हो जाती है। इसलिए मर्दों की भी यह ज़िम्मेदारी है और घर की बड़ी बूढ़ियों की भी कि बहू-बेटियों को समझाएँ कि हम दुनिया में सिर्फ़ खाना पकाने और खाने के लिए, घर बनाने या घर को सजाने के लिए नहीं भेजे गए। बल्कि हमें अल्लाह तआला ने बहुत बड़े मक़सद के लिए भेजा है। हमारा हर लम्हा आख़िरत को बना रहा है या बिगाड़ रहा है। एक लम्हा भी हमने बेकार कर दिया तो हमें अफ़सोस होगा। हदीस में आता है कि जन्नत में जाने के बाद जन्नतियों को एक ही चीज़ का अफ़सोस होगा कि जो घड़ी दुनिया में बिना ज़िक्रुल्लाह के गुज़र गई।

इसलिए पकाने को बहुत थोड़ा सा वक़्त दें और बाक़ी वक़्त दीन को सीखने, तिलावत व ज़िक्र करने, और दीन को दुनिया में फैलाने और दीन औरतों को सिखाने पर लगाएँ ताकि हमारा मालिक हम से खुश हो जाए।

शौहर की पूरी इत्तिबा

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने शौहर की इस क़द्र इत्तिबा करने वाली थीं कि इब्ने सअद कहते हैं कि जब तक पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ न थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नवाफ़िल पढ़ा करते थे, तो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा भी आपके साथ नवाफ़िल में शिर्कत करती थीं।

مكث رسول الله صلى الله عليه وسلم وخديجة يصليان سرًّا ماشاء الله

तर्जुमा: एक ज़माने तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा चुपके-चुपके नमाज़ पढ़ते रहे।

अपने आपको शौहर के रंग में ऐसा ढाला था कि मुस्नदे अहमद

की रिवायत के मुवाफ़िक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबुव्वत मिलने से पहले ही उन्होंने बुत-परस्ती छोड़ दी थी। यह है शौहर की सच्ची इत्तिबा। अगर शौहर हक़ पर है तो जैसा उसका मिज़ाज है वैसा ही ताबेदार बीवी अपना मिज़ाज बनाए। जैसे शौहर की मन्शा हो वैसे रहे। शरई क़ानून के तहत शौहर उस बीवी को जैसा देखना चाहता है वैसी ही बनकर रहे। यही नसीहत है सब लड़कियों को पहली मुसलमान ख़ातून की, मुसलमानों की पहली माँ की, नबी-ए-अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पहली बीवी की।

ऐ मेरी प्यारी बहन! अगर आप भी अपनी सीरत हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के तर्ज़ पर ढालोगी, कामिल मुकम्मल इताअत शौहर की (हक़ बातों में) जिसकी शरीअत ने अनुमति दी है करोगी, तो फिर देखना अल्लाह तआला आप से राज़ी हो जाएँगे और जब अल्लाह मियाँ राज़ी हो गए तो दुनिया की सारी बिगड़ियाँ बन जाएँगी, सारी परेशानियाँ ख़त्म हो जाएँगी। इन्शा-अल्लाह तआला।

याद रखिए! निकाह के दो बोल बोलने के बाद अब न अपने लिए खाना, न सोना, न अपने लिए पहनना, सब कुछ अपने अमीर के लिए अपने मुख़्लिस दोस्त के लिए अपने सर के ताज के लिए, अपने महबूब के लिए है। तो फिर जैसे ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को सातों आसमानों के ऊपर से अर्श के मालिक की तरफ़ से सलाम आया तो आपके घर में भी इन्शा-अल्लाह तआला ज़रूर रब्बुल्-आलमीन की तरफ़ से सलामती, बरकतें और रहमतें नाज़िल होंगी और आपके बच्चे उसकी बरकत से आपस में मिलजुल कर होंगे, मुहब्बतों की फ़िज़ा क़ायम होगी, और यह घर भी जन्नत का नमूना बन जाएगा।

मिसाल के तौर पर अगर आपके शौहर भी अल्हम्दु लिल्लाह तहज्जुद, अव्वाबीन के आदी हैं तो आप भी ज़रूर तहज्जुद में उठें उनके नवाफ़िल के साथ आप भी नवाफ़िल पढ़ें, उनकी तिलावत के साथ आप भी वक़्त निकाल कर तिलावत करें। यह न समझें कि मेरा काम सिर्फ़

पकाना और घर की सफ़ाई और बच्चों की तरबीयत (पालन-पोषण) है। नहीं, बिल्कुल नहीं।

आप ज़रूर वक़्त निकालें। इरादा कीजिए वक़्त निकालने का और जितना हो सकता है वक़्त निकाल कर बच्चों को बैठाकर एक वक़्त ज़रूर तस्बीहात पढ़िए। बच्चों को भी तस्बीह सिखाईए अल्लाह को प्यारे नामों से याद करना सिखाईए। रोज़ाना तिलावत का मामूल बनाईए दुआ का मामूल बनाईए।

अगर बद-क़िस्मती से आपके शौहर की यह आदत नहीं तो आपकी कोशिश से, दुआओं से, दीनदार बड़ों के मश्विरे से उनको दीन पर लाने की कोशिश कीजिए। सबसे पहले फ़र्ज़ नमाज़ों पर उनको तैयार कीजिए। फिर नवाफ़िल व तस्बीहात पर, फिर उनको अल्लाह के रास्ते में निकलने पर आमादा कीजिए। इन्शा-अल्लाह तआला आपकी फ़िक्र और दुआ से उनको ज़रूर हिदायत मिलेगी।

शौहर की फ़रमाँबरदारी और हुक़ूक़ के बारे में कुछ हदीसें

शौहर की इताअत कितनी अहम और ज़रूरी है इसका अन्दाज़ा आप हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन इरशादात से लगाएँ। ख़ूब ग़ौर से इनको पढ़िए और पढ़ने में मामूलात (यानी अमल करने) में इज़ाफ़े की नीयत से पढ़ें। और अल्लाह तआला से दुआ भी माँग लें कि ऐ अल्लाह इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो औरत पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ती रहे और रमज़ान के रोज़े रखे और अपनी इज़्ज़त व आबरू बचाए यानी पाकदामन रहे, और अपने शौहर की ताबेदारी और फ़रमाँबरदारी करती रहे तो उसको इख़्तियार है कि जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में घुस जाए। (मिश्कात पेज 281)

ग़ौर कीजिए मुसलमान औरत जन्नत कितने तरीक़ों से ले सकती है।

शौहर की इताअ़त करने से और सभी उन कामों में उसकी बात मानने से (जहाँ अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी न हो) उस औ़रत की दुनिया भी बनेगी, घर भी खुशहाल होगा और आख़िरत में हमेशा-हमेशा खुदा के मेहमानख़ाने, नेमतों व रहमतों के ठिकाने यानी जन्नत में उस औ़रत का महल बनेगा। और यह औ़रत चाहे कैसी ही साँवली या काली हो, लेकिन इन आमाल की वजह से (यानी नमाज़ की पाबन्दी, रोज़ों का एहतिमाम और पाकदामनी यानी हर नामेहरम मर्द से पर्दे का एहतिमाम और शौहर की हर जायज़ काम में इताअ़त व फ़रमाँबरदारी (यानी हर काम में जी हाँ! जी हाँ! कहने की रट लगी हुई हो) ऐसी औ़रत हूरों से भी ज़्यादा हसीन कर दी जाएगी।

दुनिया की औ़रत जन्नत में हूरों से ज़्यादा हसीन कर दी जाएगी। अ़ल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने तफ़सीर रूहुल्-मआ़नी में पारा नम्बर 27 सूरः रहमान की तफ़सीर के तहत में एक रिवायत नक़ल की है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछाः या रसूलल्लाह! जन्नत में हूरें ज़्यादा हसीन होंगी या मुसलमान बीवियाँ?

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऐ उम्मे सलमा! जन्नत में मुसलमान औ़रतें हूरों से भी ज़्यादा हसीन कर दी जाएँगी। पूछाः ऐसा क्यों होगा? यानी कौन-कौनसे आमाल करने की वजह से ऐसे इनामात मिलेंगे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

بصلاتهن وصيامهن وعبادتهن البس الله وجوههن النور

(روح المعانی ص ۱۲۶ ج ۲۷)

तर्जुमाः उनकी नमाज़ों, रोज़ों और उनकी इबादत की वजह से उनके चेहरों पर अल्लाह तआ़ला अपना नूर डाल देगा।

(माख़ूज़ अज़ वअ़ज़ मौलाना हकीम अख़्तर साहिब दामत बरकातुहुम)

अल्लाह जिस पर अपना नूर डाल दे उसकी ख़ूबसूरती का क्या

आलम होगा। यह नूर हूरों में नहीं होगा, यह इज़ाफ़ी नूर होगा जो नेक मोमिन औरतों के लिए होगा।

इसी तरह इमाम तबरानी रहमतुल्लाहि अलैहि रिवायत नक़ल करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक बार कुछ औरतें इकट्ठी हुईं और उन्होंने अपनी तरफ़ से एक औरत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा ताकि वह आप से अर्ज़ करे कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं औरतों की तरफ़ से आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुई हूँ। पूछना यह है कि अल्लाह तआला ने मर्दों पर जिहाद फ़र्ज़ किया है, अगर उनमें कोई कामयाब हो जाएँ या उनको कोई तकलीफ़ पहुँचे तो उन्हें अज्र व सवाब मिलता है, और अगर वे शहीद हो जाएँ तो वे अल्लाह तआला के यहाँ एक ख़ास शान से ज़िन्दा सलामत रहते हैं और उन्हें रोज़ी मिलती रहती है। और हम औरतें जो उनकी ख़िदमत करती हैं। बतलाईए हमें उस अज्र व सवाब में से क्या मिलेगा?

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इन अलफ़ाज़ में जवाब दिया:

اَبلغي مَن لَقِيت من النساء أن طَاعة الزوج واعترافًا بحقه يعدل ذٰلك وقليل منكُن من يفعله. (الجامع الكبير ج۲ ص۳۶۳، الترغيب والترهيب۳، ۱۲۱)

तर्जुमाः जिन औरतों से तुम्हारी मुलाक़ात हो उनको मेरी तरफ़ से यह पैग़ाम पहुँचा दो कि शौहर की फ़रमाँबरदारी और उसके हक़ को मानना उस (अल्लाह के रास्ते में जिहाद के अज्र व सवाब) के बराबर है और तुम में से बहुत कम ऐसी औरतें हैं जो ऐसा करती होंगी।

अब ग़ौर कीजिए! अगर औरत मर्द की इताअत करने लग जाए, उसकी हर बात में जी हाँ! कहना सीख ले (शरीअत की शर्तों के साथ) उसके हर काम पर लब्बैक कहना सीख ले, तो यह औरत घर बैठे अल्लाह के रास्ते में भूख, सर्दी, गर्मी, बीमारी, ज़ख़्मी होना या शहीद

[illegible] तक की सारी मन्ज़िलें जो जिहाद की हैं, उसमें बराबर की [illegible] होकर जन्नत के दर्जात हासिल कर सकती है, और अपने घर के बिस्तर पर मौत के फ़रिश्ते को लब्बैक कहकर मैदाने-जिहाद के शहीदों का रुतबा हासिल कर सकती है।

और बिला शुब्हा जब औरत अपने शौहर की इताअत करेगी तो ख़ानदान का महल गिरने और बरबाद होने से महफ़ूज़ हो जाएगा, और उसकी वजह से शौहर के दिल में बीवी की दिली मुहब्बत हो जाएगी। और उस लड़ाई-झगड़े, नाराज़गी, दूरी, तल्ख़ी, कड़वाहट का हमेशा के लिए ख़ात्मा हो जाएगा जो अच्छे-भले घरों के चैन व सुकून को बरबाद कर देता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिस औरत की मौत इस हालत में आए कि उसका शौहर उससे राज़ी हो तो वह जन्नती है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ पेज 219 जिल्द 1)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं किसी को इजाज़त देता कि ख़ुदा के सिवा किसी और को सज्दा करे तो औरत को ज़रूर हुक्म देता कि अपने मियाँ को सज्दा करे। अगर मर्द अपनी बीवी को हुक्म दे कि इस पहाड़ के पत्थर उठाकर उस पहाड़ तक ले जाए और उस पहाड़ के पत्थर उठाकर तीसरे पहाड़ पर ले जाए तो उसको यही करना चाहिए। (मिश्कात पेज 281, इब्ने माजा)

और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब मर्द अपनी बीवी को अपने काम के लिए बुलाए तो उसके पास ज़रूर आ जाए अगरचे चूल्हे पर बैठी हो तब भी चली आए।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ पेज 219 जिल्द 1)

मतलब यह है कि चाहे जितने ज़रूरी काम पर बैठी हो सब छोड़-छाड़कर चली आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब किसी मर्द ने अपने पास अपनी औरत को लेटने के लिए बुलाया और वह न आई। फिर वह उसी तरह गुस्से में लेटा रहा तो सुबह तक

सारे फ़रिश्ते उस औरत पर लानत करते रहते हैं। (मुस्लिम शरीफ़ 1059)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में जब कोई औरत अपने मियाँ को सताती है तो जो हूर क़ियामत में उसके शौहर की बीवी बनेगी, वह यूँ कहती है कि ख़ुदा तेरा नास करे, तू उसको मत सता। यह तो तेरे पास मेहमान है, थोड़े ही दिनों में तुझको छोड़कर हमारे पास चला आयेगा। (इब्ने माजा 649/1 अहमद 242/5)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तीन तरह के आदमी ऐसे हैं जिनकी न तो नमाज़ क़बूल होती है न कोई और नेकी मन्ज़ूर होती है। एक तो वह बाँदी या ग़ुलाम जो अपने मालिक से भाग जाए। दूसरी वह औरत जिसका शौहर उससे नाख़ुश हो। तीसरे वह शख़्स जो नशे में मस्त हो, जब तक कि वह होश में न आ जाए।

(फ़तहुल-बारी 294/9)

किसी ने पूछा या रसूलल्लाह! सबसे अच्छी औरत कौन है? आपने फ़रमाया: वह औरत कि जब उसका मियाँ उसकी तरफ़ देखे तो यह उसे ख़ुश कर दे। और जब कुछ कहे तो उसकी बात माने और जान व माल में कुछ उसके ख़िलाफ़ न करे, जो उसको नागवार हो।

रुख़्सत होने वाली बेटी को नेक बाप की नसीहत

यह है इस्लाम में अच्छी बीवी का मेयार। इन इरशादात के क्या मायने हुए? कि बीवी ख़ुद को शौहर की इताअत में मिटा दे, फ़ना कर दे अपनी मर्ज़ी को शौहर की मर्ज़ी में। अपने दिल के वलवले, हौसले, अपनी आरज़ूएँ, उमंगें, अपना चैन, अपना आराम, सब निसार कर दे बस एक की पलकों पर बीवी बनकर आए, बाँदी बना कर अपने को रखे, ज़िल्लतें हों उन्हें इज़्ज़त समझे, काँटों को बिस्तर मिलें उनको फूलों की सेज ख़्याल करे।

बस सुन ले इस वक़्त की मासूम लड़की! और कुछ मिनट में बन जाने वाली बहू! कि ज़िन्दगी का नया दौर शुरू होने वाला है। अब तक

खेला और खाया, बेफ़िक्री की नींद सोई, सुख की हंसी हंसी, कल से नई पाबन्दी होगी और नई महकूमी। अब तक ज़िन्दगी अपने वास्ते थी क़ल से दूसरे की ख़िदमत के लिए है।

अल्लाह की शान! अब तक जो दूसरों की आँखों की पुतलियों में रही, आरज़ूओं और अरमानों के गहवारों में पली और बढ़ी, कल से वह ख़ुद दूसरे की ख़िदमत गुज़ारी के लिए वक़्फ़ (समर्पित) होगी।

अब बुरी-भली जो कुछ भी हुई सब इसी दिन के लिए थी। अब दिल क़दम-क़दम पर मारना होगा और तबीयत को बात-बात पर रोकना होगा। मन्ज़िल बिला शुब्हा सख़्त है और ज़िम्मेदारियाँ कड़ी, लेकिन ऐ मुसलमान लड़की! तू यह भी सुन ले कि इनाम भी कैसे और ख़ुशख़बरी भी क्या-क्या हैं?

हज़रत उम्मे-सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि और उसकी ज़बान से सुनकर कहती हैं जो दुनिया में हर कमज़ोर का सहारा और बेकस का आसरा बनाकर भेजा गया था (यानी पाक) कि "जो औरत ज़िन्दगी की मन्ज़िलें तय करती हुई आख़िरी मन्ज़िल में इस हालत में पहुँचती है कि उसका शौहर उससे ख़ुश है तो बस जन्नत उसकी है। गोया जन्नत और उसके बीच कोई रोक नहीं है"।

प्यारी बेटी! दुनिया की बड़ी से बड़ी तकलीफ़ें आरज़ी (वक़्ती और अस्थाई) और फ़ानी हैं। और यहाँ की सख़्त से सख़्त तल्ख़ियाँ वक़्ती और हंगामी हैं। मुसलमान लड़की! इस आख़िरी मन्ज़िल को सामने रख ले तो इन्शा-अल्लाह तआला राह का हर काँटा फूल और हर पत्थर पानी बन जाएगा। (हदिया-ए-ज़ौजैन पेज 41)

शौहर की इताअत करने वाली एक नेक बीवी

हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से सब ही वाक़िफ़ हैं। ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के बाद उन्हीं का शुमार है। उनकी बीवी फ़ातिमा बिन्ते अब्दुल-मलिक फ़रमाती हैं कि उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से ज़्यादा वुज़ू

और नमाज़ में मशगूल होने वाले तो और भी होंगे मगर उनसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला मैंने नहीं देखा।

इशा की नमाज़ के बाद मुसल्ले पर बैठ जाते और दुआ के वास्ते हाथ उठाते और रोते रहते, यहाँ तक कि उसमें नींद का ग़लबा होता तो आँख लग जाती। फिर जब आँख खुल जाती तो इसी तरह रोते रहते और दुआ में लगे रहते।

उनकी बीवी बादशाह अब्दुल-मलिक की बेटी थी। बाप ने बहुत से ज़ेवरात व जवाहिरात दिये थे और एक ऐसा हीरा दिया था जिसके जैसा कोई दूसरा हीरा नहीं था। आपने बीवी से फ़रमाया दो बातों में एक इख़्तियार कर लो- या तो यह ज़ेवर अल्लाह के रास्ते दे दो कि मैं इसको बैतुलमाल में दाख़िल कर दूँ या मुझसे अलग हो जाओ? मुझे यह चीज़ पसन्द नहीं है कि मैं और माल एक घर में जमा रहें।

बीवी ने अर्ज़ किया! यह माल क्या चीज़ है? उस सोने के टुकड़े से ज़्यादा (और सोने-चाँदी के जवाहिरात) पर भी आपको नहीं छोड़ सकती। यह कहकर सब माल बैतुलमाल में दाख़िल करवा दिया।

तारीख़ (इतिहास) में एक ही औरत गुज़री है जिसका बाप भी बादशाह, दादा भी बादशाह, भाई भी बादशाह, शौहर भी बादशाह। इन सबके बावजूद शौहर की मंशा, शौहर के मिज़ाज और उनकी तबीयत पर अपने आपको ऐसा ख़त्म किया कि तारीख़ आज तक अपने पन्नों के नुकूश पर याद रखती है और स्त्री-इतिहास के आसमान पर उनका सूरज हमेशा चमकता रहेगा। और उनके ईसार की मिसाल मुसलमान बच्चियों के लिए हमेशा रास्ते की मशाल साबित होगी, कि शौहर वाक़ई ऐसा फूल है कि एक चमन नहीं हज़ारों चमन और उनकी हज़ारों बहारें उस पर कुर्बान कर दी जाएँ। और कुर्बान करने वाली भी कोई मामूली औरत न हो बल्कि रानी, शहज़ादी, मलिका होते हुए भी शौहर की रिज़ा पर अपनी अना को फ़ना कर दिया, यह है अन्दर का जज़्बा और ईसार।

इनके शौहर के मरने के बाद जब अ़ब्दुल-मलिक का बेटा यज़ीद बादशाह बना तो उसने बहन से पूछा- अगर तुम चाहो तो तुम्हारा ज़ेवर तुमको वापस दे दिया जाए? फ़रमाने लगीं कि:

"जब मैं उनकी ज़िन्दगी में उससे खुश न हुई तो उनके मरने के बाद उससे क्या खुश हूँगी"।

यह थी वफ़ादार बीवी फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल-मलिक! कि ज़िन्दगी में तो निभाया ही लेकिन वफ़ात के बाद भी कोई ऐसा काम न किया जो शौहर की ज़िन्दगी में पसन्द न था।

जिस शौहर के लिए उसकी ज़िन्दगी ही में अपने अरमान ठंडे कर लिए, उसके मरने के बाद भी दोबारा उन अरमानों को परवान नहीं चढ़ाया। खुदा हमारी मुसलमान बहनों, बच्चियों को शौहर की हर जायज़ बात मानना और वफ़ादारी करना सिखा दे। आमीन!

सुन लो ऐ लख़्ते जाँ		कहती है जो नशाद माँ
हो नक़्शे दिल पे जाविदाँ		इसको बना लो हिर्ज़े जाँ
कहते हैं हम ख़िदमत जिसे		है हमदर्दी-ए-उल्फ़त जिसे
यही है हासिले इनसानित		यही है ज़ेवरे निस्वानियत
इसका हमेशा पास हो		इस फ़र्ज़ का एहसास हो

है जो रफ़ीक़े ज़िन्दगी और हम-तरीक़े ज़िन्दगी
लाज़िम है अब उसकी रिज़ा बाद अज़ रज़ाहा-ए-खुदा

वफ़ात

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से निकाह के बाद पच्चीस साल ज़िन्दा रहीं और 11 रमज़ान मुबारक सन् 10 नब्वी (हिजरत से तीन साल पहले) इस दारे-फ़ानी से रुख़्सत हुई। उस वक़्त उनकी उम्र 64 साल छह माह की थी। चूँकि नमाज़े-जनाज़ा उस वक़्त तक मशरूअ़ नहीं हुई थी। इसलिए उनकी लाश

मुबारक इसी तरह दफ़न कर दी गई। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद क़ब्र में उतरे और अपनी सबसे बड़ी ग़मगुसार, सलाहकार, वज़ीर, इस्लाम को फैलाने के लिए हर क़िस्म की क़ुर्बानी बरदाश्त करने वाली, दीन को फैलाने के लिए हर क़िस्म की मदद करने वाली को अपने हाथों से ख़ाक के सुपुर्द कर दिया।

हाय वह क्या वक़्त होगा? किसका दिल इस कैफ़ियत की तर्जुमानी करे? कितने एहसानात हम सब पर क़ियामत तक आने वाली इनसानियत पर उमूमन मुसलमानों पर ख़ुसूसन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के हैं। ज़रा तसव्वुर कीजिये! इतना बड़ा काम जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लिया गया, उसमें उनकी कितनी बड़ी मदद व सहयोग शामिल है। उनके मश्विरे, उनकी फ़िक्र, उनकी तसल्ली, उनकी तशफ़्फ़ी, उनकी क़ुर्बानी, उनकी जाँनिसारी, उनकी वफ़ादारी, उनकी ग़मख़्वारी, उनकी दिलसोज़ी, उनकी रहमदिली को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़म हलका करने में ख़ुदा ने कैसा ज़रिया बनाया।

हाय अल्लाह! पहाड़ी ग़ारों में पत्थर के टुकड़ों और संगरेज़ों की बेशुमार तायदाद पड़ी हुई है, जिन्हें इनसान और जानवर हर वक़्त पामाल करते रहते हैं, लेकिन उन्हीं में कोई संगरेज़ा लाल व याक़ूत बनकर निकल आता है। जिसकी क़ीमत पूरी एक बादशाहत की आमदनी के बराबर होती है। उसको अगर कोई तोड़ डाले तो दिल पर क्या गुज़रेगी?

समन्दर में बारिश की बहुत सारी बूँदें हर साल गिरती ही रहती हैं जो किसी हिसाब में नहीं आतीं। लेकिन उन्हीं में कुछ क़तरे वे भी होते हैं जो सीप में जाकर मोती बन जाते हैं और शाही ताज का ज़ेवर बनते हैं। उनको अगर कोई समन्दर में फेंक दे तो दिल को क्योंकर सब्र आएगा?

जंगल में अपने आप उगने वाली बेल और पत्ते-पौधे, बूटियाँ और पत्तियाँ हज़ारों क़िस्म की होती हैं, जो जानवरों के खाने का काम देती

हैं। लेकिन गुलाब की ताज़ा व शादाब कली इस कायनात को महकाने के लिए होती है, यह कली अगर फूल बनने के साथ ही ख़िज़ाँ के हाथों बरबाद हो जाए तो दिल को क्या कहकर समझाया और क़ाबू में रखा जा सकता है।

इल्मे रूहानी में ज़माने का शुमार इनसान की बनाई हुई जंत्री और सूरज की गर्दिश से नहीं होता बल्कि रूह के लिए वापसी का वक़्त तय वही है जब वह अपनी तरतीब को पूरा करे। उसी तय वक़्त पर उसका अपनी असल की तरफ़ जाना ज़रूरी था, जिस पर हैरत करना और बेवजह अफ़सोस करना भी बेकार है।

सच कहने वाले ने सच कहा है कि हम सब "उसी" के हैं और "उसी" की तरफ़ जाने वाले हैं।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मासूम ज़बान ने इस साल को जिसमें उनकी वफ़ात हुई आ़मुल-हुज़्न (ग़म का साल) फ़रमाया है।

मौलाना सैयद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि शायर न थे, लेकिन शे'र भी अच्छे कह लेते थे। अपनी दूसरी बीवी के साथ कमाल की उलफ़त रखते थे। वफ़ात पर मर्सिया कहा, उस मर्सिये के इस शे'र में शायरी नहीं की बल्कि हक़ीक़त की तर्जुमानी की है:

तेरे जाने से गुमाँ बहमी-ए-दहर का था
तू गया और बपा दहर में महशर न हुआ!

दुआ़

ऐ अल्लाह! आप हमारी बच्चियों और बहनों पर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की सीरत व आ़दत का, अख़्लाक़ व फ़ितरत का, तहारत व पाकीज़गी का, इताअ़त व मुहब्बत का, ग़ैब पर ईमान लाने और फ़िक्रे-आख़िरत का, तक़्वा और वफ़ादारी का साया डाल दीजिए। आमीन।

ऐ अल्लाह! हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की सीरत व अख़्लाक़

और मुबारक आदतों को हमारी नई नस्ल में आम फ़रमा। उनको इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। और ऐ अल्लाह! हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के ठिकाने (यानी जहाँ वह आख़िरत में मौजूद हैं) को अन्वारात के फूलों से भर दे और उनके दरजात ख़ूब से ख़ूब बुलन्द फ़रमा। क़ियामत तक हम सब की तरफ़ से उनको बेहतरीन बदला अता फ़रमा। आमीन

अल्लाह तआला उनको और तमाम सहाबा-ए-किराम को अपनी रिज़ा से मालामाल फ़रमाये।

सलाम हो हम सबकी तरफ़ से

सलाम हो हम सबकी तरफ़ से मुसलमानों की माँ, नबी-ए-उम्मी अरबी की पाक बीवी, क़बीला क़ुरैश की शहज़ादी, तय्यिब व ताहिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की माँ, सबसे पहली मोमिना, महबूबे ख़ुदा की आँखों की ठंडक, दुनिया में जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनने वाली, औरतों में सबसे अफ़ज़ल होने का ख़िताब नबी की ज़बान से पाने वाली, इस दुनिया ही में अर्शे-अज़ीम से रब्बुल-आलमीन का सलाम पाने वाली पहली औरत, जन्नत के महलों की ख़ुशख़बरी सुनने वाली, क़ुरआन करीम में जिन एक ही सहाबी हज़रत ज़ैद का नाम है उनको आज़ाद करने वाली, सच्चे और आख़िरी नबी की पहली जीवन-साथी, फ़ातिमा बिन्ते ज़ाहिदा (हज़रत ख़दीजा की माँ) की नूरे नज़र व लख़्ते-जिगर, ख़ुवैलद (हज़रत ख़दीजा के बाप) का सुकूने जिगर व नूरे-नज़र हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा पर, कि मुसलमान बीवियों के लिए अपनी ज़िन्दगी के हर लम्हे और हर मामले से ऐसा सबक़ देकर गईं कि:

हर मुसलमान बीवी उसको अपनाकर अपने शौहर के लिए 'आँखों की ठंडक' 'दुनिया की सबसे बेहतरीन चीज़' 'नेक बीवी' मर्द के लिए आराम और सुकून का सामान, हर ग़मे दुनिया की तसल्ली व तशफ़्फ़ी की जगह, दुनिया की जन्नत, हमेशा ख़ुशी व शफ़क़त, हद दर्जे की

मुहब्बत व प्यार करने वाली बन सकती है। अगर ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इत्तिबा (पैरवी) करे, उनके हर वाक़िए से सबक़ हासिल करे, उनकी इत्तिबा की पूरी-पूरी कोशिश करे और तहज्जुद के वक़्त और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद रब्बे-करीम से माँगे:

ऐ अल्लाह! वह अख़्लाक़, वह समझ, वह इताअ़त, वह ईसार व क़ुर्बानी वाले जज़्बात जो आपने अपने फ़ज़्ल व करम से हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को अ़ता फ़रमाए थे, मुझे भी और मेरी बच्चियों, बहनों और सभी मुसलमान बीवियों को अपने फ़ज़्ल व करम से अ़ता फ़रमा। आमीन या रब्बल्-आ़लमीन।

एक-दो बार नहीं हर वक़्त बार-बार माँगती रहे। अगर ख़ूब कोशिश और ख़ूब दुआ़ओं से किसी औ़रत को यह सआ़दत हासिल हो गयी, तो यह दुनिया व आख़िरत की बहुत ही बड़ी नेमत व सआ़दत है। मुसलमानों की माँ हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं, और उसकी ज़बान से सुनकर कहती हैं जो मर्दों और औ़रतों सबकी रहनुमाई के लिए आया, जिसने हर एक को उसका फ़र्ज़ याद दिलाया, हर एक को हुक़ूक़ की अदायगी का सबक़ सिखलाया। उस पर ख़ुदा की बेहिसाब रहमत के अन्वार की बारिश बरसे। सल्लू अ़लैहि व आलिही।

इरशाद है:

عن ام سلمة رضی اللہ تعالیٰ عنها تقول سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم: یقول ایما امرأة ماتت و زوجها عنها راض دخلت الجنة.

(ترمذی ص ۲۱۹ ج ۱ کتاب الرضاع)

यानी जो औ़रत ज़िन्दगी की मन्ज़िलें तय करती हुई आख़िरी मन्ज़िल पर इस हालत में पहुँचती है कि उसका शौहर उससे ख़ुश है तो बस जन्नत और उसके बीच कोई रोक नहीं। (सीधी जन्नत में दाख़िल होगी)।

ऐ दीन व दुनिया की शहज़ादी! ऐ मोमिन बीवी! ऐ किसी मोमिन की

ज़िन्दगी की साथी! क्या किसी मुसलमान औरत के लिए इसके अलावा कोई तमन्ना, कोई आरज़ू हो सकती है कि उसका रब उसे अपने मेहमान-ख़ाने यानी जन्नत में हमेशा-हमेशा के लिए ठिकाना अता फ़रमाए?

बस यही हक़ीक़ी कामयाबी है। इसी का आसमानों, ज़मीनों के पैदा करने वाले इलाहुल्-आलमीन, सारी इज़्ज़तों व बड़ाईयों के मालिक ने अपनी आख़िरी किताब में अपने नबी की ज़बान से ऐलान करवाया:

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ (پ ٤)

तर्जुमा: जो जहन्नम की आग से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो वह कामयाब हो गया।

अगर आपके सामने यह आयत और हदीस होगी, इसके मज़मून को सोचेंगी, इसको आप सुबह व शाम सोचेंगी, तो शौहर व ससुराल के घर की हर ज़िम्मेदारी निभाना आसान हो जायेगा। हर मुश्किल व सब्र-आज़मा घड़ी ख़ुदा-ए-मेहरबान आसान कर देंगे। बेशक आप यह कहने में बजा होंगी कि तुम एक तरफ़ ही की बात करते हो। मुझे इसका एतिराफ़ है, मैं आपकी मुकम्मल हिमायत करता हूँ। लेकिन चूँकि इस वक़्त हमारी मुख़ातब आप हैं। हव्वा की बेटी! इसलिए आपके बारे में जो अहकामात हैं उनको बयान करेंगे। मर्दों के लिए अलग अहकामात हैं। जो आपकी ज़िम्मेदारी है वह आप अदा कर लें तो जो उनकी ज़िम्मेदारी है अल्लाह तआला उनको भी तौफ़ीक़ दे देंगे और इन्शा-अल्लाह आपकी दुआओं से बहुत जल्द "तोहफ़ा-ए-दूल्हा" किताब भी छपकर मुसलमान मर्दों के लिए आ जाएगी।

ससुराल की ज़िन्दगी यक़ीनन सख़्त और ससुराल वालों की इताअत की मन्ज़िल बिला शुब्हा कठिन है, इसकी ज़िम्मेदारी बड़ी सख़्त है। सास का ताना तो वह चीज़ है कि पत्थर के जिगर में भी ज़ख़्म डाल दे। घर में छोटी नन्द की निगरानी की ज़िम्मेदारी तो ऐसी कठिन है जैसे चींटी के बाल गिनना। बड़ी नन्द का आना तो मौत के फ़रिश्ते की याद दिला

दे। शौहर बीवी के लिए अगर मीठा पान भी अलग से ले आए तो उसके पेट में दर्द उठे और अगर सिर्फ बीवी के लिए कपड़े ले आए तो दिल में दर्द उठ जाए। अब तो मियाँ-बीवी का जीना दूभर हो जाए। और ख़ुद बद-मिज़ाज शौहर की सख़्तियाँ तो वह अ़ज़ाब हैं कि शादाब से शादाब तरो-ताज़ा फूल को दम भर में मुर्झाकर रख दें।

लेकिन कुर्बान जाईए खुदा के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर कि नुबुव्वत व हिक्मत की ज़बान से चौदह सौ साल पहले आदम व हव्वा की हर बेटी के लिए ख़दीजा व आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के नामों की लाज रखने वाली हर औ़रत के लिए यह ख़ुशख़बरी सुना दी:

"अगर शौहर का दिल हाथ में रखा, उसको राज़ी करके दुनिया से रुख़्सत हुई तो तुम्हारे और जन्नत के बीच कोई रुकावट नहीं।"

पस अगर अपनी माँ ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के अ़मल को हमेशा याद रखोगी और इस हदीस की अ़मली व्याख्या अपनी पेशानी पर सजाओगी। हर सुबह उठकर अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस फ़रमान को अपने दिमाग़ के ख़ानों में ताज़ा करोगी और अपनी आँखों का सुर्मा बनाओगी तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला कड़वे अ़र्क़ का हर क़तरा शर्बत का घूँट और ससुराल की ज़िन्दगी का हर काँटा फूल, और राह का हर पत्थर पानी हो जाएगा। ख़ुदा तुम्हारा हामी व मददगार हो। ख़ुदा हमारी, सारी मुसलमान बहनों की ज़ालिम व जाबिर शौहर, और सख़्त-दिल सास ज़ालिम सुसर और फ़सादी नन्द से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

अब हम आपके सामने एक और मिसाली बीवी हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के वाक़िआ़त पेश करते हैं। उनके मुताले (अध्ययन) से पहले आप भी अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त से हिदायत की दुआ़ माँगिए कि उनकी मिसाली ज़िन्दगी की हमें भी इत्तिबा (पैरवी) नसीब हो। आमीन

हज़रत सौदा बिन्ते ज़म्आ रज़ियल्लाहु अन्हा

"उम्मुल-मोमिनीन"

इस्लाम कबूल करना

नुबुव्वत के शुरूआती दौर में इस्लाम लाईं। इस बिना पर उनको क़दीमुल-इस्लाम (पहले इस्लाम लाने वाले लोगों में शामिल) होने का शर्फ़ (गौरव) हासिल है।

अपने शौहर के साथ हबशा हिजरत करके गईं। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निहायत परेशान व ग़मगीन थे। यह हालत देखकर ख़ौला बिन्ते हकीम (उस्मान बिन मज़ऊन) की बीवी ने कहाः आपको एक जीवन-साथी और रफ़ीक़ा की ज़रूरत है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ! घर-बार बच्चों का इन्तिज़ाम सब ख़दीजा से संबन्धित था। तो उन्होंने आपके इरशाद पर ऐसी उम्र-रसीदा तजुर्बेकार औरत का चुनाव किया जो छोटी बच्चियों को भी संभाल ले और घर के सभी मामलात का ख़्याल कर सके। वह कौन थीं? वह सौदा बिन्ते ज़म्आ थीं। जो मदीने के बनू नज्जार ख़ानदान से थीं। उनका निकाह रमज़ान मुबारक सन् दस नबवी में हुआ। और दस हिजरी में जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज किया तो हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा भी साथ-साथ थीं। चूँकि यह बदन में भारी हो चुकी थीं इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको मुज़्दलिफ़ा रवाना होने से पहले ही भेज दिया कि उनको भीड़-भाड़ में चलने से तकलीफ़ होगी।

शौहर की ख़ुशी की ख़ातिर अपनी बारी अपनी सौतन को दे देना

ईसार करना यानी दूसरों को अपने ऊपर तरजीह देना, एक यह है कि अपना हक़ खुद ले लेना, दूसरे का हक़ उसको दे देना, और दूसरे के हक़ से कुछ न लेना। और एक यह है कि अपने हक़ में से भी दूसरी मुसलमान बहनों को देना। चूँकि उनकी उम्र ज़्यादा थी इसलिए उन्होंने अपनी बारी का हक़ हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दिया कि इसमें उन्हें (यानी हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा को) शौहर की खुशी भी मिल गई। उसके साथ-साथ नबी पाक के साथ रहने के शर्फ़ (गौरव) से मेहरूम होने के ख़ौफ़ से भी बच गई।

फ़ायदा: हम यह क़िस्सा उन सभी औरतों की भेंट करते हैं जिनके शौहरों ने दूसरी शादी की हो और उनकी कोई सौतन हो, कि इसमें परेशान होने और अफ़सोस करने, ग़म खाने की कोई बात नहीं। जो इनामात जो अतिय्यात जो माल आपके मुक़द्दर का होगा वह आपको मिलकर रहेगा चाहे आपकी कोई सौतन भी मौजूद हो। और जो मुक़द्दर में नहीं है वह कभी भी नहीं मिलेगा चाहे कोई सौतन न भी हो।

हाँ अगर शौहर एक से ज़्यादा बीवियों में ना-इन्साफ़ी करे तो उसको गुनाह होगा। यह शौहर अल्लाह तआला को नाराज़ करने वाला होगा, उसके लिए हदीसों में सख़्त से सख़्त वईद (सज़ा और अज़ाब की धकमी) आई है।

हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब देखा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से दिली मुहब्बत है तो उन्होंने अपनी बारी भी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दी। अपने शौहर की रिज़ा (खुशी और पसन्द) को समझते हुए और इसलिए भी कि यह खुद कहीं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत से मेहरूम न हो जाएँ, इस बिना पर इतना बड़ा

ईसार कर दिया। लेकिन न अपनी सौतन को नाराज़ किया न ही अपने शौहर को। और दुनिया से जाते हुए इस खुशख़बरी की हक़दार हुईं कि जो औरत दुनिया से इस हाल में जाए कि उसका शौहर उससे राज़ी हो तो सीधी जन्नत में दाख़िल होगी।

शौहर की सच्ची इताअ़त

दूसरी सिफ़त उनमें इताअ़त की थी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी पाक बीवियों से हज्जतुल्-विदा (आख़िरी हज) के मौके पर फ़रमायाः

"मेरे बाद घर में बैठना"

चुनाँचे हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने इस हुक्म पर इस सख़्ती से अ़मल किया कि फिर कभी हज के लिए भी न निकलीं। फ़रमाती थीं कि मैं हज और उमरा दोनों कर चुकी हूँ और अब अल्लाह के नबी के हुक्म के मुताबिक़ घर में बैठूँगी। (तबक़ात इब्ने सअ़द जिल्द 8 पेज 37)

हज और उमरा इतनी बड़ी इबादत! इसके बावजूद इस बिना पर कि शौहर ने मना कर दिया है, ज़िन्दगी भर दोबारा नहीं गईं। मुसलमान बहनें इस वाक़िए को पढ़कर ठंडे दिल से ग़ौर करें कि यह तो सिर्फ जायज़ ही नहीं बल्कि पवित्र इबादत थी, फिर भी चूँकि इसमें बाहर जाना था इसलिए नहीं गईं।

लेकिन! आपको अगर आपके शौहर किसी नाजायज़ और हराम जगह जाने से मना करें, उन शादियों या दूसरी तक़रीबात में जहाँ अल्लाह के हुक्म टूटते हैं, जैसे ना-मेहरम मर्दों से मिलना-जुलना होता हो, या फ़ोटो खिंचवाई जा रही हों, या वह तक़रीब और महफ़िल ही गुनाह की हो, या किसी भी ऐसी जगह पर जाने से मना करें जहाँ शरई क़ायदों की रू से शिर्कत करना मना है, तो आप ज़रूर उनकी इताअ़त करें (यानी उनका हुक्म मानें) और यक़ीन रखिए कि उनकी बात को मानने में ऐसा ही सवाब मिलेगा जैसे इबादत करने में सवाब मिलता है।

जैसे तहज्जुद पढ़ने में या सदक़ा देने में सवाब मिलता है। बल्कि उससे भी ज़्यादा, क्योंकि हराम से बचना कलिमे के इख़्लास की निशानी है। जब यह सोचकर आप शौहर की हर बात मानेंगी तो हर हुक्म पर अ़मल करना आ़सान होगा और दुनिया और आख़िरत में आपको इस पर बे-इन्तिहा अज्र मिलेगा।

अगर वे आपको आपकी किसी जायज़ ख़्वाहिश पर अ़मल करने से मना करें तो नमाज़ पढ़कर अल्लाह तआ़ला से माँगिए।

ऐ अल्लाह! तमाम ज़रूरतों और हाजतों को पूरा करने वाले आप ही हैं। मेरी इस हाजत को पूरा फ़रमा दीजिए। और मेरे शौहर को इसका ज़रिया बना दीजिए और उनकी ना को हाँ से बदलवा दीजिए।

ऐ दिलों के फेरने वाले! आपकी बारगाह में कोई चीज़ मुश्किल नहीं। फिर उस वक़्त जब शौहर ने ना कह दिया था "उस वक़्त सब्र करें, उनकी ना को उसी वक़्त हाँ में बदलने के लिए बहस-मुबाहसा न कीजिए बल्कि किसी दूसरे वक़्त मिज़ाज को देखकर दोबारा कहिए इन्शा-अल्लाह तआ़ला अगर आपके लिए ख़ैर होगी तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर शौहर के दिल को नरम फ़रमाकर आपकी ज़रूरत को पूरा फ़रमा देंगे वरना आपको दूसरे हाल में ख़ुश कर देंगे।

जिस औ़रत ने इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) का ज़ेवर पहन लिया, शौहर की हर हाल में और हर जायज़ काम में मानना सीख लिया, उसने अपने दुनिया के ग़रीबख़ाने को जन्नत बनाना सीख लिया। उसने अपने जीवन-साथी यानी शौहर को आधी बादशाहत का हाकिम बना दिया। आप इस पर यक़ीन कीजिए या न कीजिए लेकिन आपका अ़मली तजुर्बा आपको यक़ीन करवा देगा।

काश औ़रतें इसको समझ लें कि छोटी सी कोठरी और झोंपड़ी में रहने वाला आदमी जिस सख़्त गर्मी में घर में दाख़िल होता है, और नेक और फ़रमाँबरदार बीवी पर उसकी निगाह पड़ती है, तो बिना एयर कंडीशनर कमरे के और बिना आईस-क्रीम खाए वह अपने कलेजे में

एक ऐसी फ़ितरी ठंडक महसूस करता है जिसकी क़ीमत एयर कंडीशनर और आईस-क्रीम तो क्या इस दुनिया के तख़्त व ताज भी नहीं बन सकते।

इसी तरह सख़्त सर्दी में नेक और फ़रमाँबरदार बीवी की मुहब्बत भरी एक निगाह बिना क़ालीन, हीटर और गीज़र के, बिना कॉफ़ी और ओवलटेन के और बिना दुनिया की सारी माद्दी चीज़ों के, वह एक निगाह जो सबसे निराली है, और सबसे अनोखी और सबसे अलबेली है, उसकी सोचों की दुनिया की काया पलट देती है, और उसकी दुश्वारियों की गुत्थी सुलझा देती है। उसको अपनी छोटी सी दुनिया में बिना तख़्त व ताज का बादशाह और दुनिया का सबसे ज़्यादा अमीर शख़्स और सबसे ज़्यादा राहत व इत्मीनान में रहने वाला शख़्स बना देती है। ऐसी ही बीवी के लिए मौलाना सैयद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने मर्सिये में कहा था।

तेरे जाने से गुमाँ बर्हमी-ए-दहर का था
तू गया और बपा दहर में मह्शर न हुआ!

इसी तरह शैख़ सअदी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा थाः

ज़ने ख़ूब व फ़रमा बरू पारसा
कुनद् मर्दे दर्वेश रा बादशाह

बीवी फ़रमाँबरदार हो, शौहर की हाँ में हाँ करने वाली हो तो यह बीवी शौहर और बच्चों को छोटी सी झोंपड़ी में कोठी और महल, दाल और रोटी में मुर्ग़ी और बिरयानी, बिना सवारी के मर्सडीज़ और बी, एम डब्लयू का और बिना असबाब राहत और चैन के सुकून का मज़ा दिलवा सकती है।

कुर्बान हों मेरे माँ-बाप कायनात के मुअल्लिम व हादी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कि नेक औरत की सिफ़ात में पहली

सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि "अगर शौहर बीवी को हुक्म दे तो वह बीवी उसके हुक्म को पूरा करे।"

लेकिन अल्लाह करे यह बात औरतों के दिल व दिमाग़ में बैठ जाए और अल्लाह पाक सभी बच्चियों और बहनों को अपने शौहर की बात मानने वाला बना दे, ताकि हर मुसलमान दुनिया व आख़िरत दोनों में जन्नत हासिल करने वाला बन जाए। आमीन या रब्बल्-आलमीन।

सख़ावत व दरिया-दिली

यूँ तो उस ज़माने की सभी औरतों में इस दुनिया की फ़ानी चीज़ों को जोड़-जोड़कर और गिन-गिनकर जमा करके रखने का दस्तूर व रिवाज न था। और इस दुनिया और इसकी चीज़ों के फ़ानी और ख़त्म होने का तसव्वुर हमेशा आँखों के सामने रहता था, लेकिन कुछ औरतें अपनी तबई दरिया-दिली और सख़ावत की बिना पर इसमें ख़ास दर्जा रखती थीं। एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इनकी ख़िदमत में एक थैली भेजी, लाने वाले से पूछा! इसमें क्या है? वह बोले दिर्हम (यानी रुपये) हैं। बोलीं खजूर की तरह थैली में दिर्हम भेजे जाते हैं। यह कहकर उसी वक़्त सबको बाँट दिया। तायफ़ से आई हुई खालें खुद बनाती थीं और उससे जो आमदनी होती थी उसको बहुत आज़ादी के साथ नेक कामों में ख़र्च करती थीं। (इसाबा जिल्द 8 पेज 918)

अब ग़ौर कीजिए! दिल में ज़्यादा से ज़्यादा आख़िरत की फ़िक्र होगी तब ही यह ख़र्च करना आसान होगा। अपने आपको इस पर तैयार करें और सोचें कि एक दिन मुझे जाना है, अगर मैंने ये चीज़ें अलमारी में जमा करके रखीं तो इनका मुझे हिसाब देना होगा। और मेरी मौत के बाद दूसरों के काम आएँगी। अगर आज मैं अल्लाह तआला के बन्दों पर, अल्लाह तआला के दीन पर ख़र्च कर दूँगी तो कल आख़िरत में मुझे इसका बदला मिलेगा और मेरा मालिक मुझसे खुश हो जाएगा। ये फ़ानी चीज़ें भी एक दिन ख़त्म हो जाएँगी। अगर मैंने इन्हें अल्लाह की

राह में दे दिया तो हमेशा के लिए मुझे इसका अज्र मिलेगा।

सख़ी बनने की आसान तरकीब

इसलिए औरतें पहले तो यह ग़ौर कर लें कि घर में किस-किस चीज़ की वे खुद मालिक हैं और कौनसी चीज़ का शौहर मालिक है। छोटे से बरतन से लेकर (मसेहरियाँ पलंग) कुर्सियाँ मेज़ वग़ैरह तक का जायज़ा ले लें कि कौनसी चीज़ किसकी है। यही शरीअत का मिज़ाज है कि सभी चीज़ों की मिल्कियत का इल्म हो। और इसमें बहुत ही फ़ायदा है जो भी चीज़ घर में आए चाहे चार प्याले ही आएँ उसकी जानकारी हो कि शौहर ने लाकर बीवी को हदिया कर दिया है या शौहर के अपने हैं? और उसी की मिल्कियत में रहेंगे।

अब उसके बाद हर महीने अलमारी साफ़ करने की आदत बना लें। जो चीज़ इस वक़्त अपनी ज़रूरत की नहीं है एक छोटा सी आशंका है कि शायद कभी काम आ जाए उसको फ़ौरन किसी को दे दें। उसका मुस्तहिक़ ढूँढें कोशिश करें कि यह चीज़ किसी मुसलमान के काम आ जाए। मुझे तो यक़ीन नहीं कि यह मेरे काम आएगीं या नहीं, और फिर जब मुझे ज़रूरत पड़ेगी तो दो रकअत नफ़िल पढ़कर अल्लाह तआला से माँग लूँगी, अल्लाह तआला मेरी ज़रूरत पूरी फ़रमा देंगे।

सौतन की गवाही

हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की फ़ैयाज़ी (सख़ावत और दरिया-दिली) के बारे में जो वाक़िआत गुज़रे उन्हीं सिफ़ात की बिना पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा इस बात की तमन्ना फ़रमाती थीं:

ما من الناس امرأة احب الیّ ان اکون فی مسلاخها من سودة.

तर्जुमाः सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा किसी औरत को देखकर मुझे ख़्याल नहीं हुआ कि उसके जिस्म में मेरी रूह होती।

दुआ कीजिए कि अल्लाह तआल आप में और मुसलमानों की सभी

बीवियों में ये सिफ़तें पैदा फ़रमाए। आमीन

किसी औरत के अख़्लाक़ के ऊँचे मेयार की शहादत के लिए यह भी बड़ी दलील है कि खुद उसकी सौतन उसके फ़ज़्ल व कमाल की गवाही दे। आप भी दुनिया में ऐसे अख़्लाक़ बरत कर जाएँ कि लोग भी आपसे ख़ुश हों और अगर किसी की सौतन भी हो तो वह भी उसके कमाल की गवाही दे।

वफ़ात

हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत उमर के अख़ीर ज़माने में वफ़ात पाई। तक़रीबन सन् 32 हिजरी में, यही रिवायत सबसे ज़्यादा सही है। एक बार नबी पाक की तमाम बीवियाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थीं। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह! हम में सबसे पहले किस की मौत होगी? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

اسرعکن لحوقا بی اطولکن یداً۔

तर्जुमा: तुम में सबसे पहले वह मुझसे मिलेगी जिसका हाथ सबसे लम्बा होगा।

उनहोंने ज़ाहिरी हाथ की लम्बाई समझा, हाथ नापे गए तो सबसे बड़ा हाथ हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का था। लेकिन जब सबसे पहले हज़रत जैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल हुआ तो मालूम हुआ कि हाथ की लम्बाई से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़सूद सख़ावत और फ़ैयाज़ी था।

हज़रत ज़ैनब बिन्ते मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि०

"वफ़ादार बीवी"

ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा को दुनिया से गुज़रे हुए 15 सदियाँ गुज़र गईं लेकिन आज भी उनका नाम रोशन और याद है। उनकी अपने शौहर और रफ़ीक़े-हयात के साथ वफ़ादारी, और सिर्फ़ मुहब्बत और सच्चे ईमान की आज भी याद ज़िन्दा है।

उनका शौहर के साथ बर्ताव और अख़ीर तक जाँनिसारी एहसान-शनासी और वफ़ादारी का नमूना व मिसाल क़ियामत तक की मुसलमान औ़रतों के लिए एक बेहतरीन नमूना है।

और अपनी ज़िन्दगी के कारनामों, अख़्लाक़ की अ़मली मिसालों और ख़ुदा-परस्ती के नमूनों से अपने बाद वालियों के लिए कामिल और मुकम्मल इस्लामी ज़िन्दगी छोड़ी है। यह वह ज़ैनब हैं जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सबसे बड़ी साहिबज़ादी हैं। नुबुव्वत मिलने से दस साल पहले जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्र 30 साल की थी, पैदा हुईं। अपनी ख़ाला के बेटे अबुल-आ़स से निकाह हुआ। माँ ने एक हार अपने जिगर के टुकड़े के गले में डालकर रुख़्सत कर दिया।

दोनों मुहब्बत से ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। लेकिन जब कुफ़्र व शिर्क की अन्धेरियों से भरी हुई ज़मीन पर इस्लाम का नूर फैला तो हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा ईमान लाईं। ख़ुदा के एक होने, उसी के हाथ में सब कुछ होने का, वही नफ़ा व नुक़सान का मालिक है, वही इ़ज़्ज़त और ज़िल्लत का मालिक है, वह अकेला क़ुदरत वाला है, जो किसी का मोहताज नहीं, न वह किसी से पैदा हुआ न उससे कोई पैदा हुआ, इसका इक़रार किया। अपने अब्बू जान के आख़िरी व सच्चे रसूल होने का इक़रार किया और इस्लाम में दाख़िल हुईं मगर उनके शौहर अबुल-आ़स इस्लाम न लाए।

उन्होंने अपने शौहर को इस्लाम क़बूल करने की दावत दी, और साथ ही ऐलान भी कर दिया कि अगर तुम ईमान नहीं लाए तो (बावजूद तुम्हारी मुहब्बत के तुम्हारे साथ वफ़ादारी के) तुम्हारा और मेरा रास्ता अलग-अलग होगा। तुम मेरे लिए हलाल नहीं हो सकते। ईमान मेरी निगाह में तुमसे ज़्यादा क़ीमती है। तुम्हारी जुदाई बरदाश्त करने और जुदाई के बाद जो तकलीफ़ें आएँ मैं उन सबको बरदाश्त करने के लिए तैयार हूँ लेकिन यह नहीं हो सकता कि जिस ख़ालिक़ ने मुझे और सारी चीज़ों को पैदा किया, जो सब चीज़ों का रब है, सबको पालने वाला है, उसी ने तुम्हारे जैसा शौहर मुझे अ़ता फ़रमाया, उसकी वह्दानियत, उसके अकेले होने का तुम इक़रार न करो, और उसके भेजे हुए नबी की नुबुव्वत न मानो, और मैं तुम्हारे साथ रहूँ। यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता।

रहती दुनिया के लिए इन सुनहरे अलफ़ाज़ में अपने शौहर से ख़िताब किया और इस्लाम व ईमान की ख़ातिर शौहर से जुदाई इख़्तियार कर ली और रहती दुनिया तक के लोगों के लिए अपने अ़मल से यह ज़ाब्ता वाज़ेह कर दिया कि ईमान के तक़ाज़े क्या होते हैं।

शौहर से जुदाई

قليلا يا صاحبی لست حلالك، فاسلمنی الی ابی، اواسلم معی، لن تکون زینب لك بعد الیوم الا ان تؤمن مما امنتُ.

मतलबः ऐ मेरे ज़िन्दगी के साथी!

थोड़ी देर ठहर कर सोचो! तुम अपने शिर्क पर क़ायम रहो और मैं तुम्हारी बीवी रहूँ यह नहीं हो सकता। या तो तुम मुझे मेरे वालिद के हवाले कर दो या मेरे साथ चलो और इस्लाम क़बूल कर लो। नहीं तो याद रखो ज़ैनब आज के बाद से हरगिज़ तुम्हारी नहीं। जब तक तुम भी उस पर ईमान न लाओ जिस पर ज़ैनब ईमान लाई।

यह तो थी इस्लाम की सच्ची मुहब्बत व अ़ज़मत, कि इसके

मुक़ाबले में सहाबी औरतों ने किसी चीज़ की परवाह न की। लेकिन उसके साथ ही उनमें शौहर की मुहब्बत, वफ़ादारी और एहसान-शनासी की सिफ़त थी कि हर वक़्त फ़िक्र में रहती थीं कि कैसे वह इस्लाम लाएँ। और इसी मुहब्बत, और फ़िक्र की वजह से अल्लाह तआ़ला ने उनकी आख़िर उम्र में दोबारा दोनों को मिला दिया।

जब बदर की लड़ाई में वह क़ैद हो गए तो मक्का से क़ैदियों को छुड़ाने के लिए वफ़्द गया और सामान और चीज़ें भी गईं तो उसमें उन्होंने अपना वह यादगार हार जो रुख़्सती के वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने दिया था, वह भेजकर न सिर्फ़ शौहर की मुहब्बत का हक़ अदा कर दिया बल्कि उन पर अपना एहसान भी कर दिया। चूँकि यह माना हुआ उसूल है कि "इंनसान एहसान का गुलाम है" जस पर एहसान कर दिया गया गोया वह उसका ख़ादिम हो गया जिसने एहसान किया है। इस एहसान के ज़रिये अपने लिए हिजरत करने और बाप से मिलने का रास्ता खुलवा लिया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के मश्विरे से हार भी वापस कर दिया और इस शर्त पर उनके शौहर को छोड़ा कि ज़ैनब को मदीना भेज देंगे।

अब अबुल आ़स मक्का वापस लौटे और अपनी बीवी की मुहब्बत उसकी सच्ची वफ़ादारी का इक़रार करते हुए यह ऐलान कियाः

عودی الی ابیك یا زینب.

तर्जुमाः ऐ ज़ैनब! अपने बाप के पास चली जाओ।

अगरचे इस बुलन्द अख़्लाक़ से उनको उस वक़्त इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ न हुई लेकिन ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपने अख़्लाक़ से उनके दिल में इस्लाम की मुहब्बत पैदा कर दी। अबुल आ़स ने अपने भाई कनाना से कहाः तुम इसको मक्का से बाहर छोड़ आओ। वहाँ दो-तीन मुसलमान इन्तिज़ार कर रहे होंगे वे इनको मदीना ले जाएँगे। मेरे अन्दर इतनी हिम्मत नहीं कि मैं ऐसी नेक बीवी को छोड़ दूँ। जैसा

कि तुम जानते हो मैं यह पसंन्द नहीं करता कि इनके बदले में मुझे कुरैश की कोई और औरत मिल जाए।

और इस बात का ख़्याल रखना कि अगर तुम्हें इनकी सुरक्षा में अपने सारे तीर इस्तेमाल करने पड़ें तो कर लेना, किसी को अपने नज़दीक न आने देना। मगर इस बार तो कुरैश के पीछा करने की वजह से वह न जा सकीं। फिर रात के वक़्त कनाना उनको ले गए। ज़ैद बिन हारिसा और उनके साथी इन्तिज़ार कर रहे थे, वे उन्हें लेकर मदीना चले गए।

शौहर के साथ वफ़ादारी

अब यह मदीना में रहने लगीं और कुछ अर्सा गुज़रा कि ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का के एक क़ाफ़िले पर हमला किया। 'ईस' के मक़ाम से कुछ लोग माल और असबाब के साथ गिरफ़्तार होकर मदीना लाए गए उनमें अबुल-आस भी क़ैद होकर आ गए थे। सेहरी के वक़्त यह क़ाफ़िला पहुँचा। यह दोबारा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गए और उनसे अमन की दरख़्वास्त की। इस नेक बीवी ने फ़ौरन दरख़्वास्त को क़बूल किया और दीवार के पीछे से यह ऐलान फ़रमाया:

ايها الناس! انى قد اجرت العاص بن الربيع فهو فى حمايتى و امنى.

तर्जुमा: ऐ लोगो! मैंने पनाह दी आस बिन रबी को, यह मेरी हिमायत और अमन में हैं। कोई इनको नुक़सान न पहुँचाए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस अमन की ताईद की और अपनी बेटी को इन अलफ़ाज़ के साथ वसीयत फ़रमाई:

اى بنية اكرمى مثواه، ولا يخلص اليه فانك لا تحلين له مادام مشركًا.

तर्जुमा: ऐ बेटी! अपने मेहमान का इकराम ज़रूर करना लेकिन शौहर-बीवी वाला ताल्लुक़ मत क़ायम करना, इसलिए कि यह जब तक

मुश्रिक है तुम उसके लिए हलाल नहीं हो।

सहाबा-ए-किराम ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा के सम्मान में उनको सारा माल लौटा कर वापस भेज दिया। इसी बीच एक सहाबी ने कहा:

ऐ अबुल-आ़स! अगर तुम इस्लाम ले आओ तो यह माल अगर मुश्रिकीन का है तो तुम्हारे लिए हलाल होगा, तुम लेकर यहाँ ही रह जाओ, इस पर अबुल-आ़स ने कहा:

بئس مابدابه اسلامی ان اخون امانتی.

तर्जुमा: कितनी बुरी बात होगी कि मैं अपने इस्लाम की शुरूआ़त ही लोगों के मालों की ख़ियानत के साथ करूँ।

चूँकि यह माल कुरैशे मक्का की अमानत थी, उन्होंने तिजारत के लिए दिया था, इसलिए अबुल-आ़स सारे माल को लेकर मक्का मुकर्रमा आए और सब की अमानतें वापस कीं और यह ऐलान किया:

يا معشر قريش! هل بقي لاحد منكم عندى مال؟ قالوا لا، فجزاك الله خيرا، وقد وجدناك وفيا كريما قال: فانا أشهد أن لااله الا الله وأن محمدًا عبده ورسولهٗ.

तर्जुमा: ऐ कुरैश की जमाअ़त! क्या मेरे पास तुम्हारा कुछ माल बाक़ी रह गया है? उन्होंने कहा नहीं। अल्लाह तुमको इसका बेहतर बदला अ़ता फ़रमाए तुमने हमारी सारी अमानतें अच्छी तरह अदा कर दीं और हमने तुम्हें वफ़ादार और अच्छे लोगों में पाया। इसके बाद अबुल-आ़स ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।

फिर फ़रमाया मुझे इस्लाम के क़बूल करने से सिर्फ़ यही बात रोकती थी कि मैं अगर मदीने में इस्लाम क़बूल कर लेता तो लोग यह समझते कि मेरा मक़सद तुम्हारा माल लेना था, लेकिन अब जब अल्लाह ने

तुम्हारा हक़ अदा करवा दिया अब मैं इस्लाम क़बूल करता हूँ।

उसके बाद मदीना आए और नये निकाह के साथ दोबारा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा उनकी बीवी हो गईं। लेकिन यह नबी पाक की बेटी, शौहर की वफ़ादारी व मुहब्बत का हक़ अदा करने के बाद अब मदीना मुनव्वरा में ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात गुज़ारते हुए अपने ख़ालिके हक़ीक़ी से मुलाक़ात की तैयारी में लगी हुई थीं कि अल्लाह तआला ने उनकी यह ख़्वाहिश भी पूरी फ़रमा दी की मेरे शौहर भी इस्लाम क़बूल कर लें और वह भी जहन्नम की आग से बच जाएँ और हमेशा-हमेशा की जन्नत में जाने वाले बन जाएँ।

इस नये निकाह के बाद थोड़ें ही अर्से बाद उनका इन्तिक़ाल सन् आठ हिजरी में हो गया। उम्मे ऐमन, सौदा, उम्मे सलमा, उम्मे अतीया रज़ियल्लाहु अन्हुन्-न ने ग़ुस्ल दिया, जिसका तरीक़ा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद बतलाया था और आपने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, ख़ुद क़ब्र में उतरें और अपनी नूरें-नज़र को ख़ाक के हवाले कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त बहुत ग़मगीन थे। (तबक़ात इब्ने सअद जिल्द 8 पेज 24)

फ़ायदा: आज मुसलमान औरतें भी ये दो सिफ़तें अपने अन्दर पैदा कर लें तो दुनिया के कई घरानें आज भी जन्नत का नमूना बन सकते हैं। पहले शौहर से आशिक़ाना मुहब्बत जैसा कि इस वाक़िए से पता चलता है कि उन्होंने अपना सब कुछ शौहर पर लुटा दिया, क़ीमती यादगार हार जो माँ अपनी बेटी के लिए रखती है और माँ को भी अपनी माँ की तरफ़ से मिला हो, वह भी शौहर को आज़ाद कराने के लिए फ़िदये में दे दिया। सालों गुज़रने के बाद जिस शौहर के इस्लाम क़बूल न करने ही की वजह से यह मुसीबत आई वह शौहर दोबारा गिरफ़्तार होकर एहसान व करम की दरख़्वास्त करता है तो फ़ौरन उसको अमन देती हैं। इसी मुहब्बत का नतीजा था कि अपने भाई को अबुल-आस यह कहने पर मजबूर हो गए।

فـمـا احـب ان لي بها امرأة من قريش، وانك تعلم ان لا طاقة لي بان افارقها.

तर्जुमाः मुझे यह पसन्द नहीं कि ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के बदले मुझे कुरैश की कोई दूसरी औरत मिल जाए। और मेरे अन्दर इस बात की ताक़त नहीं कि मैं ज़ैनब की जुदाई बरदाश्त कर सकूँ।

इसलिए तुम उनको मक्का के बाहर मदीना जाने के लिए छोड़ आओ। चूँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वायदा कर चुके थे और अरब लोगों में वायदा तोड़ना काफ़िरों के यहाँ भी बुरा समझा जाता था। अल्लाह तआला हम में और हमारे बच्चों में भी वायदा निभाने की अहमियत पैदा फ़रमा दे। आमीन

शौहर की गवाही

एक मुहब्बत करने वाली बीवी के मक़ाम का इन्तिहाई मेयार यह होता है कि शौहर इस बात की गवाही दे दे कि अगर वफ़ादारी और मुहब्बत का चिराग़ लेकर पूरे ख़ानदान और क़बीले में इस तरह की बीवी ढूँढूँ तो मुझे नहीं मिल सकती। यह है एक मुसलमान औरत के लिए नमूना कि अपने मुश्रिक शौहर के साथ किस तरह बर्ताव किया? किस तरह उनको शिर्क से निकाला? किस तरह उनके दिल में इस्लाम की मुहब्बत बैठाई? किस तरह उनको काफ़िरों के माहौल से निकाल कर मुसलमानों के माहौल में लाई?

अपने अख़्लाक़ व मुहब्बत की तलवार से किस तरह ऐसे शौहरों को भी ऐसी औरतों ने इस्लाम लाने पर तैयार किया, जिन्होंने ख़ुदकुशी की क़सम खाई थी और समन्दर में डूबना गवारा किया था, लेकिन इस्लाम को क़बूल करना किसी हाल में गवारा न किया था, वह भी इस्लाम ले आए।

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का मामला दुनिया की सभी मुसलमान औरतों के लिए सबक़ है कि शौहर के साथ बेइन्तिहा मुहब्बत

का बर्ताव करें। उस पर सब कुछ कुर्बान करना सीखें। उससे जो मिले उस पर शुक्र करें जो न मिल सके उस पर सब्र करें। उसके साथ वफ़ादारी वाला मामला करें। उसको जहन्नम की आग से बचाने की फ़िक्र करें। जन्नत वाले आमाल पर लाने की तर्ग़ीब दें। इस बात की फ़िक्र में रहें कि मेरी वजह से मेरे शौहर और बच्चों की आख़िरत का कोई नुक़सान न हो जाए।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के इस सवाल पर कि अगर हमें मालूम हो जाता कि कौनसा माल अच्छा है जिसे हम हासिल करें तो अच्छा होता, इस पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

افضله لسان ذاكر، قلب شاكر وزوجة مومنة تعينه على ايمانه.

यानी सबसे अच्छा माल ज़िक्र करने वाली ज़बान, और शुक्र करने वाला दिल है, और वह मोमिन बीवी है जो शौहर की मदद करे उसके ईमान पर।

मालूम हुआ कि सिर्फ़ मकान, दुकान, रुपया-पैसा ही दुनिया की क़ीमती चीज़ें नहीं हैं बल्कि हक़ीक़त में ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और ऐसी मोमिन बीवी जो शौहर की मदद करे उसके ईमान पर, यह असल क़ीमती सामान है।

यानी बीवी की यह ज़िम्मेदारी भी है कि वह अपने ज़ाहिरी बातिनी सुधार के साथ अपने शौहर का भी ईमान ताज़ा करने की फ़िक्र करती रहे। रोज़-ब-रोज़ अल्लाह के ख़ज़ानों पर उसके ग़ैबी निज़ाम पर उसके हर चीज़ को जानने वाला और हर काम को करने वाला होने पर यक़ीन बढ़ाती रहे। और बीवी इसमें शौहर की हर क़िस्म की मदद करे। उसको ऐसे बुज़ुर्गों के पास और ऐसे नेक माहौल में भेजे जहाँ ईमान ताज़ा होता हो। क़ब्र, आख़िरत की याद ताज़ा होती हो और ख़ुद भी शौहर के साथ शरई हदों की रियायत रखते हुए जाए और अपने ईमान को ताज़ा करे। और यही कहे और कहलवाए, यक़ीन करे और करवाए कि जो कुछ

हुआ अल्लाह तआ़ला ही के हुक्म से हुआ। इसी तरह होना था और जो कुछ हो रहा है अल्लाह ही के हुक्म से हो रहा है। और जो आईन्दा होगा अल्लाह ही के हुक्म से होगा।

घर में अगर एक छोटा सा गिलास भी टूट जाए या कारोबार में अल्लाह न करे कोई नुक़सान हो जाए तो फ़ौरनः

انا لله وانا اليه راجعون اجرنی فی مصیبتی واخلف لی خیرا منها.

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाहुम्-म अजिर्नी फी मुसीबती व अख़्लिफ् ली ख़ैरम्-मिन्हा

पढ़ें। दुआ माँगें और इसके मायनों पर ख़ूब ग़ौर करें और अपने आपको शौहर और बच्चों को तसल्ली दें।

तर्जुमाः बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं, और हमें अल्लाह ही की तरफ़ लौटकर जाना है। ऐ अल्लाह! मेरी मुसीबत में मुझे सवाब दे और इससे बेहतर मुझे इसका बदल इनायत फ़रमा।

इसी तरह शौहर की दीनदारी की फ़िक्र करें, टाईम-टाईम पर उसे नमाज़ और रोज़ा याद दिलाती रहें। ज़िक्र और तिलावत की रोज़ाना तर्ग़ीब (प्रेरणा) देती रहें। कुरआन पाक अगर सही नहीं पढ़ा तो उसको सही पढ़ने की तर्ग़ीब दें, शौक़ दिलवाएँ, बहुत ही हकीमाना और प्यारे अन्दाज़ से धीरे-धीरे तरतीब के साथ वक़्त और मौक़े को देखते हुए दीन से नज़दीक लाने, रसूले-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतें अपनाने की तरफ़ माईल करती रहें कि यह आपका अपने शौहर और बच्चों पर बहुत बड़ा एहसान होगा।

इस बात की कोशिश करें कि रोज़ाना 24 घँटों में से कुछ वक़्त निकाल कर शौहर और बच्चों को बैठाकर हदीस की तालीम करें। फ़ज़ाईले आमाल फ़ज़ाईले सदक़ात बहुत अच्छी किताबें हैं, इसको सब मिलकर पढ़ें और सुनें। खुद अपनी बच्चियों को भी बहिश्ती ज़ेवर पढ़ाती और पढ़ती रहें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसी औरत को दुआ दी है।

अन्दाज़ा कीजिए कि जिसको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़ मिल गई वह कितनी ख़ुश-क़िस्मत औरत होगी। लोग बुज़ुर्गों से दुआ़ करवाते हैं, वलियों से दुआ़ करवाते हैं, ये अल्लाह के महबूब बन्दे होते हैं और हमारे नबी तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम के सरदार हैं। तो अल्लाह के प्यारों के सरदार की जिसको दुआ़ मिल गई वह औ़रत बहुत ही ज़्यादा सआ़दत्मन्द (नेकबख़्त) है। वह दुआ़ यह है।

"अल्लाह रहम करे ऐसी औ़रत पर जो रात को (तहज्जुद के लिये) खड़ी हो और नमाज़ पढ़े और अपने शौहर को भी जगाए और वह भी नमाज़ पढ़ ले, लेकिन अगर वह उठने से इनकार कर दे तो उसके चेहरे पर पानी का छींटा मार दे"।

बताईए! अगर आप जैसी नेक बीवी किसी को मिल गई जो शौहर को तहज्जुद में भी उठाए, फ़राईज़ पर आमादा करे, सुन्नतों का शौक़ दिलवाए तो ऐसा शौहर बिना तख़्त व ताज के क्यों न अपने आपको आधी बादशाहत का हाकिम समझे?

शौहर की मुहब्बत

मियाँ-बीवी के मिज़ाज में मुवाफ़क़त और एकता हो तब ही वैवाहिक जीवन का सही मायनों में सुकून और चैन नसीब हो सकता है, वरना ज़िन्दगी बे-लुत्फ़ और बेमज़ा बन जाती है। औ़रत कितनी ही पढ़ी-लिखी और ख़ूबसूरत क्यों न हो, अगर उसे शौहर को ताबे करने की तदबीर नहीं आती तो वह कभी भी शौहर का असल प्यार और मुहब्बत हासिल नहीं कर सकती। शौहर को ताबे बनाने और ताबे करने की सबसे बड़ी तदबीर यह है कि उससे सही मायनों में पुरख़ुलूस तरीक़े पर मुहब्बत की जाये। उसके हुक्मों की ताबेदारी की जाये, दिल व जान से उसकी ख़िदमत की जाये।

जिन घरानों में औ़रतें अपने शौहरों से सच्ची मुहब्बत करती हैं,

उसकी फ़रमाँबरदारी करती हैं, ऐसे घराने हमेशा लड़ाई-झगड़ों और फ़ितना व फ़साद से पाक-साफ़ रहते हैं, और मियाँ-बीवी का जोड़ा सुख-चैन और इत्मीनान से ज़िन्दगी बसर करता है।

लेकिन जिन घरानों में औरतें अपने शौहरों की नाफ़रमानी करती हैं, शौहर की हर बात का जवाब कड़वे-कसीले अन्दाज़ और सख़्ती से देती हैं, बात-बात में झगड़ा करती हैं, ऐसे घराने बहुत जल्द जहन्नम का नमूना बन जाते हैं और बरकत व भलाई वहाँ से रुख़्सत हो जाती है।

याद रखिए! उसके बाद आप ही की मुहब्बत उस शौहर के लिए ज़िन्दगी का सरमाया है। सेहत का मदार है, जवानी की बक़ा है, उसके ईमान की तकमील है, उसके दीन की ताक़त है, उसकी बीमारियों की शिफ़ा है, उसकी जन्नत है।

ग़ौर कीजिए! आख़िर जन्नत में जब कायनात की जान, जन्नत के दूल्हा हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाते हैं तो किस चीज़ की जन्नत में कमी हो सकती है? हर तरफ़ नेमतों की बारिश, हर तरफ़ अनवार की चमक, जन्नत का चप्पा-चप्पा अल्लाह के नूर से मुनव्वर, अल्लाह की मेहरबानियों का क़दम-क़दम पर ज़ुहूर, पवित्र फ़रिश्तों की चहल-पहल, जन्नत अपनी तमाम नेमतों के साथ अपनी तरफ़ मुतवज्जह कर रही है। अब किस लुत्फ़ और ख़ुशी की कमी? किस माल व दौलत, दबदबे और सम्मान की कमी? लेकिन इस सब के बावजूद अपने दिल का एक कोना हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ख़ाली पाते हैं। दिल को सुकून पहुँचाने वाली दवा की अब तक कमी पाते हैं।

सोचिए और फिर सोचिए! जन्नत में कमी किस चीज़ की हो सकती थी? हर मुम्किन लज़्ज़त ख़िदमत को हाज़िर, हर मुम्किन मुसर्रत सेवा के लिये तैयार। अगर कमी थी तो वह आपकी कमी थी। अगर दिल का कोई किनारा ख़ाली था तो वह आपकी मुहब्बत का मुन्तज़िर था। अगर रोग के लिए कोई दवा बाक़ी थी तो वह आपकी पाक ज़ात थी जिसको क़ुरआन करीम ने इन शब्दों में बयान किया है "कि हमने उससे उसका

जोड़ पैदा किया'' फिर यह न हुआ कि जन्नत की माद्दी लज़्ज़त में कुछ बढ़ा दिया जाए। रूहानी खुशी के सामान में कुछ इज़ाफ़ा कर दिया जाए। बल्कि तख़्लीक़ होती है (यानी पैदा किया जाता है) आदम ही से मिलती-जुलती। लेकिन फिर भी उससे ज़रा अलग एक और मख़्लूक़ की। क्यों? 'ताकि उसके ज़रिये सुकून हासिल किया जाये'।

क़ुर्बान जाईए क़ुरआन करीम के इन बलीग़ व मुख़्तसर दो लफ़्ज़ों पर कि सब कुछ इसमें सुमो दिया। मुहब्बत भी राहत भी, सुकून भी शिफ़ा भी, दिलों का सुरूर भी, आँखों की ठंडक भी, परेशानियों और ग़मों का इलाज भी। बीमारियों की दवा भी और सेहत व तन्दुरुस्ती भी। बूढ़ों और कमज़ोरों की ताक़त भी और क़ुव्वत भी।

आदम का दिल अब जाकर तस्कीन पाता है। अब अपने वजूद की तकमील महसूस करता है। नवाज़िशों और बख़्शिशों की तकमील तभी जाकर होती है। आदम के हक़ में जन्नत तब ही हक़ीक़ी मायनों में जन्नत साबित होती है, जब मर्द के लिए औरत, शौहर के लिए बीवी, दूल्हा के लिए दुल्हन, मुसाफ़िर के लिए सफ़र की साथी वजूद में आती है। इल्म व हिक्मत की इसी खान ने जिसका नाम हदीसे-नबवी है, इन मायनों को इन अलफ़ाज़ में ढाला है:

لم یر للمتحابین مثل النکاح (ابن ماجه ص ۱۳۳ مطبوعه قدیمی)

तर्जुमा: दो मुहब्बत करने वालों के लिए निकाह से बढ़कर कोई चीज़ नहीं देखी गई।

इसी लिए किसी शायर ने कहा है-

अज़ाँ दर ज़िन्दा ज़न शुद नीम अव्वल
कि बे-ज़न ज़िन्दगी बाशद मुअत्तल

कि ज़िन्दगी या ज़िन्दा रहने में पहला लफ़्ज़ 'ज़न' (यानी औरत) है, तो ज़िन्दगी का पहला आधा औरत है यानी बिना औरत के ज़िन्दगी बेकार है।

वह आदम-ज़ाद आज भी आप ही के दिल के आईने के अन्दर अपनी मुहब्बत देखना चाहता है। आप ही की ज़बान से उसका इज़हार चाहता है। आप ही की मुस्कुराहट से मुहब्बत की दलील चाहता है। उसकी तरफ़ से कड़वी बात हो जाए तो आपकी तरफ़ से सब्र वाला तर्ज़े-अ़मल (व्यवहार) चाहता है। आपके मुँह से खिले हुए फूल कौसर व तस्नीम से धुले हुए दो मीठे बोलों से अपनी हर बीमारी की शिफ़ा चाहता है।

आपकी इताअ़त व ख़िदमत से अपनी जवानी की बक़ा चाहता है। आपकी मामूली सी तवज्जोह से अपनी थकावट की दूरी चाहता है। दुनिया के हर ग़म व परेशानी में आपके मश्विरे से तसल्ली और तशफ़्फ़ी चाहता है। अपनी मेहनत व मशक़्क़त और इबादत के बाद आपकी मुहब्बत से भरी हुई मुस्कुराहट व खिले चेहरे वाली ज़ियारत से आँखों का नूर चाहता है।

आपकी नमाज़ों और ज़िक्र व तिलावत की पाबन्दी से आँखों की ठंडक चाहता है। आपके अच्छे अख़्लाक़ से अपने बच्चों की तरबियत चाहता है। आपके अच्छे व्यवहार से अपने माँ-बाप रिश्तेदारों की दुआ चाहता है। अपने दोस्तों की बीवियों का इकराम और पड़ोसियों की औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करने से समाज में अपना मक़ाम और रुतबा चाहता है। आपकी क़नाअ़त और दुनिया की थोड़ी सी चीज़ों पर राज़ी रहने से ज़्यादा कमाई के झमेलों से आज़ादी चाहता है। आपके साफ़-सुथरा रहने, चुस्त, चाक़ व चौबन्द रहने और साफ़ लिबास ओढ़ने और पहनने से अपनी आँखों की ख़ियानत यानी (ना-मेहरमों पर निगाह पड़ने) से सुरक्षित रहना चाहता है।

आपका अपने आपको ज़ीनत करने संवारने और निखारने से अपने दिल को सुरूर और अपनी इज़्ज़त की सुरक्षा चाहता है। आपकी आँखों में पर्दे के सुर्मे और काजल से (यानी किसी ना-मेहरम मर्द की निगाह आपके ऊपर न पड़ने पाए) अपना भरोसा चाहता है। आपके कानों में

इताअ़त की बालियों से अपनी क़सम में बरी होना चाहता है। आपके गले में अमानत के हार से अपने ग़ायब होने के ज़माने में आपके जिस्म की दूसरे से हिफ़ाज़त चाहता है। आपकी मुस्कुराहट बिखेरने वाली मीठी ज़बान के प्यार व मुहब्बत वाले दो बोलों से कौसर व तस्नीम से धुले हुए दो फूलों से अपने बच्चों के अख़्लाक़ की तरबियत चाहता है।

अगर आप में ये सिफ़ात हैं या आप इनकी कोशिशों में लगी हुई हैं तो आप ज़रूर आज भी आदम अ़लैहिस्सलाम के उस बेटे के लिए हव्वा अ़लैहस्सलाम की बेटी हैं। उसके लिए "नेक बीवी" हैं। उसके लिए आँखों की ठंडक, दिल की राहत, उसकी ज़ीनत, सेहत का सरमाया, ज़िन्दगी की शरीक, बीमारियों की शिफ़ा, सुकून पाने की चीज़, ईमान की हिफ़ाज़त करने वाली हैं। आधा ईमान, जन्नत की हूरों की सरदार हैं। जलवत और तन्हाई की साथी, दुख और दर्द की साझी, उसके सर का ताज, उसका लिबास, उसकी हमराज़, उसकी मुख़्लिस दोस्त आप ही हैं। यक़ीन कीजिये आप ही हैं।

आप अपनी क़ब्र और ख़ुदा के सामने खड़े होने की फ़िक्र करने और दूसरी औरतों और बच्चों में भी दीन फैलाने और ईमान और इस्लाम को दुनिया में ज़िन्दा करने की भी फ़िक्र से जन्नत में आपका साथ चाहता है।

इसी लिए अक़्लमन्द लोगों ने यह कहा है:

"लोगों में सबसे ज़्यादा बदनसीब वह शख़्स है जो अपने घर में अपनी बीवी-बच्चों के साथ अपने आपको बदनसीब महसूस करे। और लोगों में ख़ुशबख़्त और सबसे भाग्यशाली आदमी वह है जो अपने घर में अपने बीवी-बच्चों के बीच ख़ुश व प्रसन्न और नेक हो। अल्लाह हर मुसलमान को ख़ुश व ख़ुर्रम और नेक रखे। वरना ख़ुदा न करे ख़ुदा न करे अगर किसी औरत में इन सिफ़ात की झलक नहीं तो वह जो पूरी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजे गए थे उन्होंने पनाह माँगी है, ख़ुदा की हिफ़ाज़त चाही है हव्वा की ऐसी बेटी से, इन सुनहरे मुबारक

अलफ़ाज़ में:

वक़्त से पहले बूढ़ा कर देने वाली बीवी से पनाह

اللّٰھم انی اعوذبک من امرأۃ تشیبنی قبل المشیب۔

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आपकी पनाह चाहता हूँ ऐसी बीवी से जो मुझे बुढ़ापे की उम्र तक पहुँचने से पहले ही बूढ़ा कर दे।

ख़ुदा आपकी और मुसलमानों की बच्चियों की ऐसी आ़दतों और ख़सलतों से हिफ़ाज़त फ़रमाए जिसके ज़रिये वे किसी शौहर की जवानी बरबाद करें। और उसकी जवानी को बुढ़ापे से बदल दें। वक़्त से पहले ही उसको बूढ़ा बना दें। और हर मुसलमान की हिफ़ाज़त करे कि उसके मुक़द्दर में ऐसी औ़रत आ जाए जिससे कायनात् के मुअ़ल्लिम व हादी, तमाम नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पनाह चाही। ऐ अल्लाह! आप ही मुसलमान मर्द को ऐसी औ़रत से पनाह दे दीजिए।

हमारे दादा अब्बा हाजी अय्यूब वेचार रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि गुजराती ज़बान में मिसाल दी जाती है कि अगर किसी का दोपहर् या रात का सालन जल जाए तो एक वक़्त उसके घर के लिए फ़ाक़ा या परेशानी का कारण होगा, लेकिन अगर किसी के घर की औ़रत मिज़ाज के ख़िलाफ़ हुई, शौहर की नाफ़रमान हुई, दीनदार न हुई तो उसकी पूरी ज़िन्दगी ही परेशानी व ग़मी में गुज़रती है। तबाही व बरबादी के किनारों को छूने लगती है। अल्लाह तआ़ला हर मुस्लिम मर्द और मुस्लिम औ़रत की ऐसे रिश्तों से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

हमारे एक दोस्त हाफ़िज़ यूसूफ़ साहिब जो दारुल-उलूम न्यू कासिल में उस्ताद हैं। ऐसी ही एक बीवी का वाक़िआ़ सुनाते थे कि उनके दोस्त हबीब हमेशा अपनी बीवी से कहते कि मेरे इन्तिक़ाल के बाद तुम दूसरी शादी कर लेना। वह कभी कहती क्यों? तो फ़रमाते कि दूसरे शौहर को मालूम हो जाएगा कि हबीब का इतनी जल्दी क्यों इन्तिक़ाल हो गया था।

इसी तरह एक लतीफ़ा लिखा है कि एक साहिब के होंठ काले हो

रहे थे, किसी ने वजह पूछी तो कहाः बेगम साहिबा लाहौर जा रही थीं तो खुशी के मारे उनके जाने की खुशी में जज़्बात में बेक़ाबू होकर मैंने ट्रेन के डिब्बे को चूमा।

इसी तरह मियाँ-बीवी क़ा झगड़ा हो रहा था, शीशा टूटने की आवाज़ आई तो अम्मी कमरे में आ गईं कि यह इतना महंगा शीशा किसने तोड़ा?

बेटाः अम्मी आपकी इस नालायक़ बहू ने।

बीवीः हाँ-हाँ! इल्ज़ाम लगा दो, जब मैंने गुलदान से तुम्हारा निशाना बनाया था तो तुम सामने से हट क्यों गए?

ऐसी ही बीवी को तलाक़ देने के बाद एक शायर ने जिस्मानी व दिली राहत हासिल करने के बाद कहा था।

ونجوت من غُلِّ الوثاق		ظعنت اِمامة با لطلاق
ولم تدمع ما قی		بانت فلم یالم لها قلبی
النفس تعجیل الفراق		ودواء ما لا تشتهیه
بین اثنین فی غیر اتفاق		والعیش لیس بطیب
لأرحت نفسی بالاباق		لو لم أرح بفراقها

तर्जुमाः उमामा तलाक़ लेकर चली गई और सच पूछो तो मैंने ऐसी कैद से छुटकारा पा लिया जिसका फंदा गर्दन में फंसा हुआ था।

मुझसे जुदा तो हो गई लेकिन उसकी जुदाई पर न मेरा दिल ग़मगीन हुआ, न मेरे आँसू बहे।

उसकी (बुरी आदतों शौहर की नाफ़रमानी और सामने जवाब देना वग़ैरह) बीमारी की दवा तलाक़ थी, जिसको कोई इनसान नहीं चाहता। यानी कि जल्द से जल्द बीवी को तलाक़ दी जाए। और (मेरा तजुर्बा है) ऐसी ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी ही नहीं कि दो इनसान आपस में रहें और दोनों में इत्तिफ़ाक़ और मिज़ाज का मिलाप न हो।

अगर मैं उसको अलग करके आराम न पाता तो मैं ज़रूर इस घर से भागकर दुनिया में किसी और जगह जाकर अराम पा लेता।

(मिसाली औ़रत (अ़रबी) पेज 37)

ऐसी ही औ़रत के लिए किसी मिस्कीन अ़रब शायर ने बद्दुआ़ दी थी जिसकी ज़बान क़ैंची की तरह चलती रहती हो। उसके दो बोल शौहर के जिगर के टुकड़े-टुकड़े करने के लिए काफ़ी हों। उसका गुस्सा बिच्छू के डसने की तरह हो। उसकी आवाज़ पड़ोसियों को जगा देने के लिए काफ़ी हो। उसका घर में गन्दे और मैले कपड़ों के साथ रहना शौहर के लिए मुसीबत बन चुका हो। शौहर के सामने मुस्कुराना और साफ़-सुथरा रहना जानती ही न हो। नमाज़ों को क़ज़ा कर देती हो, ख़ालाज़ाद, मामूँज़ाद चचाज़ाद, नामेहरमों, ड्राईवर, नौकर से पुर्दा न करती हो। ग़र्ज़ यह कि उसमें सारी ऐसी बुरी आ़दतें हों जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नाराज़ करें, और शौहर की भी दुनिया बरबाद करें, तो उसके लिए शौहर ने इन अलफ़ाज़ से बद्दुआ़ दी।

أراح الله منك العالمينا		تنحي، فاجلسي مني بعيدًا
وموتك قد يسر الصالحينا		حياتك ماعلمت حياة سوء

तर्जु॰ : तुम मुझसे दूर होकर बैठो! अल्लाह ही राहत दे तुमसे सारे आ़लम के शौहरों को। तुम मेरे पास से हट जाओ और तुम्हारी ज़िन्दगी जहाँ तक मैं जानता हूँ बहुत ही बुरी ज़िन्दगी है कि अल्लाह और उसके बन्दे को तुम नाराज़ करती हो। हाँ! तुम्हारा दुनिया से चला जाना ही नेक लोगों के लिए आराम व सुकून और खुशी का सबब होगा।

इसी तरह शैख़ आ़यद अ़तीया ने अपनी किताब "मिन् अज्मलि मा क़रअ्तु" में लिखा है कि एक औ़रत अ़दालत में रो रही थी। हाकिम ने पूछा क्यों रोती हो? कहने लगी तुमने सिर्फ़ मेरे शौहर को एक ही वर्ष की सज़ा दी है, तो हाकिम ने कहा, चलो हम तीन साल कर देते हैं। अब उसका रोना बन्द हुआ। ऐसी ही बीवी से तंग आकर किसी शायर

ने बद्दुआ दी थी।

कहते हैं कि कोई शख़्स दिल्ली के किसी शायर के पास गया कि मुझे शायर बनना है तुम मुझे शे'र सिखाओ। तो शायर ने कहा भाई शे'र सिखाए नहीं जाते यह तो खुद ही आदमी अपनी तबीयत से कहता है। और शायर बना नहीं जाता बल्कि आदमी पर जब कोई हादसा मुसीबत आती है या किसी के इश्क़ में गिरफ़्तार होता है तो शे'र कह देता है। यह दो हाल आदमी पर जब आते हैं तब वह बिना बनाए शायर बन जाता है।

शायद अक्सर बीवियों की तकलीफ़ों ही की बिना पर लोग शायर बने होंगे इसलिए एक शायर कहता है कि ऐसी बीवी मनोवैज्ञानिक तौर पर जल्दी मरती भी नहीं है इसलिए वह दुआ माँग रहा है।

لقد كنت محتاجًا الى موت زوجتى		ولكن قرين السوء باقى معمر
فياليتها صارت الى القبر عاجلا		وعذبها فيه نكير ومنكر

तर्जुमाः मैं अपनी बीवी की मौत की बहुत दिनों से तमन्ना कर रहा हूँ। लेकिन मुसीबत यह है कि बुरा साथी बहुत लम्बी उम्र पाने के बाद मरता है।

काश मेरी बीवी जल्द से जल्द क़ब्र की तरफ़ चली जाए ताकि मुन्कर-नकीर उसे सज़ा दें।

इसी लिए बुज़ुर्गों का क़ौल है:

المرأة السوء غل يلقيه الله تعالى فى عنق من يشآء من عباده.

"बुरी बीवी गले का तौक़ है, अल्लाह तआ़ला जिसकी गर्दन में डालना चाहता है अपने बन्दों में से उसकी गर्दन में डाल देता है"।

(मिसाली औरत-अरबी)

अल्लाह तआ़ला हर मोमिन की हिफ़ाज़त फ़रमाए।

'नेक माँ का असर बेटी पर

अब आपने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ादारी व मुहब्बत और ख़ुलूस का कुछ हिस्सा पढ़ लिया और उनका ऐसा सुलूक शौहर के साथ क्यों न होता कि उनकी माँ हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने भी अपने शौहर नबियों के सरदार हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ऐसी ही वफ़ादारी व इताअत और जाँनिसारी का सुबूत दिया।

और बच्चियाँ अपनी माँ ही से सब बातें सीखती हैं इसलिए बुज़ुर्गों का कहना है कि जब अपनी बहू ढूँढ़ने जाओ तो उस लड़की के माँ-बाप का आपस में ताल्लुक़ ज़रूर देख लो, और ख़ास तौर से उसकी माँ की आदतें ज़रूर उनके रिश्तेदारों से पूछो क्योंकि ज़्यादातर बच्ची अपनी माँ के साये में पलती और परवान चढ़ती और उसके रंग ही में रंगती हैं। हाँ अगर अल्लाह ही चाहे तो ऐसा नहीं होता।

यहाँ तक कि हमारे बुज़ुर्ग बच्ची को ज़ोर से बोलने पर भी ख़बरदार करते हैं कि बच्ची के लिए हमेशा नर्म लहजा, नर्म बात-चीत ही मुनासिब है। बच्ची के लिए बचपन में भी ज़ोर से बोलना किसी हाल में मुनासिब नहीं। इसलिए माँ को चाहिए कि बच्ची ज़ोर से बोले तो सर पर हाथ रखकर समझाएँ कि बेटी धीरे बोलो! इसी का यह नतीजा निकला कि नानी अम्माँ की तरबियत की वजह से उमामा जो ज़ैनब की बेटी हैं, वह भी इन्हीं सिफ़ात वाली बनीं।

इसलिए याद रखिए! आप अपने शौहर के साथ अच्छा सुलूक करेंगी तो न सिर्फ़ यह कि आपकी अपनी बेटी बल्कि आपकी पूरी नस्लें आपकी नवासियों की नवासियाँ भी मुसलमान शौहरों के घरों के लिए जन्नत की हूरें साबित होंगी और वे मुसलमान शौहर जिनके मुक़द्दर में आपकी बेटियाँ आई होंगी, वे आपको और आपके माँ-बाप को, आपकी नानी और परनानियों तक को दुआएँ देंगे। जबकि आप क़ब्रों में होंगी। जैसे अबुल-आस शिर्क की हालत में भी मुल्क शाम के सफ़रों में ज़ैनब की

याद करके यह दुआ़ देते थेः

بنت الامين جزاها الله صالة ، كل بعل سيثنى بالذى علما.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा अमीन (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की नेक वफ़ादार बेटी को। और यह दुआ़ दुनिया के हर शौहर की है जिसको उस बीवी की सिफ़ात का इल्म हो।

वरना बिल्कुल इसके उलट मामला होगा। अगर आपने शौहर के सामने अपनी ज़बान-दराज़ी बन्द न की, अपनी ग़लती न मानी, हर वक़्त नाशुक्री करती रहीं, उनके ग़ुस्से के वक़्त चुप न हुईं, उनकी इ़ज़्ज़त व एहतिराम का दिल से ख़्याल न किया तो आपकी परनवासियों की नवासियों में भी इसका असर जा सकता है, और उनके शौहर कभी अच्छे कलिमात से याद नहीं कर सकेंगे।

अब दुआ़ कर लीजिए उस रहमत के सदके जो सबसे ज़्यादा रहम करने वाले, सदा ज़िन्दा रहने वाले मेहरबान ख़ुदा ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा के मुबारक दिल में डाली थी कि उसका साया हम पर और हमारी बच्चियों पर भी डाल दे।

शौहर का वह दर्जा जो तेरी निगाह में है, उसको हमारे दिलों के चिराग़ में रोशन करके, दिल का वह ख़ाना जो शौहर की मुहब्बत का है उसमें शौहर की मुहब्बत भर दे। आमीन या रब्बल्-आ़लमीन।

आईए! अब हम आपको ख़ातूने-जन्नत हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की दूसरी शहज़ादी और रसूले-अ़रबी की दूसरी बेटी के कुछ हालात बताएँ।

दो हिजरतों वाली

हज़रत रुकैया बिन्ते रसूलुल्लाह सल्ल०

'हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी साहिबा'

"दो नूर वाले" का ख़िताब पाने वाले सहाबी की पहली बीवी, रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी साहिबज़ादी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की तीसरी शहज़ादी, फ़ातिमा व उम्मे कुलसूम की बड़ी बहन, इकलौते अब्दुल्लाह की माँ, उम्मते मुहम्मदिया में पहली औरत जिसने अपने शौहर के साथ अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए दूर-दराज़ परदेसी मुल्क में हिजरत करके घर, रिश्तेदार, वतन, माँ-बाप, भाई-बहन, क़ौम व क़बीला सबकी जुदाई बरदाश्त करके अपने दीन और शौहर की वफ़ादारी का सबक़ अपनी आने वाली मुसलमान बहनों के लिए तारीख़ के सदाबहार रहने वाले पत्तों और टेहनियों पर इस तरह लिख दिया कि उसकी कलियाँ और उसके फूल हर ज़माने में दुनिया की औरतों के दिमाग़ों को खुशबुओं से मुसर्रत व सुरूर बख़्श कर महकाते रहेंगे।

और जहाँ एक तरफ़ उन औरतों की रात की रानियों और चंबेलियों की तरह महकती हुई सीरतें सारे जहाँ की औरतों को अपनी तरफ़ माईल कर रही हैं यहाँ उनके मर्द भी दिन के राजा और गुलाब की-सी महक वाले किरदारों से सारे जहाँ के मर्दों के लिए इसी तरह का चमन आबाद करने और सारी दुनिया को महकाने के लिए अमली दावत दें। खुदा करे ये मियाँ-बीवी दोनों मिलकर इस नन्हे-मुन्ने घर को जन्नतुल-फ़िरदौस व जन्नतुन्-नईम का नक़्शा बनाएँ। इस घर के बच्चे जन्नत के ग़िलमान (जन्नत के ख़ूबसूरत ख़ादिमों और लड़कों) की याद ताज़ा करें और उसकी बच्चियाँ हूरों की याद ताज़ा करें।

हज़रत रुकैया रज़ियल्लाहु अन्हा की पहली शादी अबू लहब के बेटे

उतबा से हुई। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नुबुव्वत का ऐलान फ़रमाया तो उनके शौहर ने अपने बाप की बात मानते हुए उन्हें तलाक़ दे दी। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान से उनका निकाह कर दिया।

नुबुव्वत के पाँचवें वर्ष अपने शौहर के साथ हबशा की तरफ़ हिजरत की। जब मुद्दत हुई और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उनके हालात की कुछ ख़बर न हुई कुछ ज़माने बाद फिर कुरैश की एक औ़रत ने ख़बर दी कि वह ख़ैरियत से हैं और मैंने उन्हें देखा था तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ दी (जो हर माँ-बाप को अपनी औलाद को देनी चाहिए। ख़ास तौर से औलाद के सफ़र के मर्हले पर या सफ़र में) "अल्लाह तुम दोनों का साथी हो"।

اِن عثمان اول من ھاجر باھلہ بعد لوط.

तर्जुमाः हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के बाद पहले शख़्स उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं जिन्होंने अपने घर वालों के साथ हिजरत की।

फिर रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा हबशा से वापस मक्का मुकर्रमा घर आईं तो मुहब्बत व ममता से भरी हुई हस्ती, दुआ़ओं का दरवाज़ा, जन्नत का साया, शफ़ीक़ माँ दुनिया से रुख़्सत हो चुकी थीं। इस पर रुक़ैया ने सब्र किया।

दूसरी हिजरत

फिर वह वक़्त आ गया कि मक्का मुकर्रमा के सारे मुसलमानों को मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिजरत करने का हुक्म हो गया कि एक ऐसी जगह जो मुकम्मल अपनी हो वहाँ इस्लामी अहकाम को ज़िन्दा किया जाए और दीन को दुनिया भर में फैलाने के लिए वहाँ से लोग अल्लाह के रास्ते में जाएँ। मर्द और औ़रतें दोनों मिलकर इस दीन पर ख़ुद भी अ़मल करने और उसको दुनिया में फैलाने की मेहनत करें और सारी कायनात के लोगों को जहन्नम की आग से बचाकर जन्नत के

रास्ते पर डालने की फ़िक्र करें और कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन को समझाएँ और उनकी तरफ़ से मिलने वाली तकलीफ़ों पर सब्र करें। और अगर वे इस्लाम की दावत फैलने के बाद भी इस्लाम क़बूल न करें तो फिर मुसलमान उनको ज़िज़या (यानी इस्लामी हुकूमत में रहने और मुसलमानों के ज़रिये उनकी हिफ़ाज़त के बदले में एक रक़म) देने पर तैयार करें। ताकि वे इस बीच मुसलमानों के साथ रहें और उनके अख़्लाक़ व मामलात, ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा और उनका रहन-सहन देखें। अ़मली तौर से उन चीज़ों का मुआ़यना करें, ताकि उनके दिलों में इस्लाम की मुहब्बत उसकी सच्चाई बैठ जाए। और ये लोग भी कुफ़्र व जहन्नम वाली ज़िन्दगी से बचकर जन्नत वाली ज़िन्दगी अपनाने वाले बन जाएँ।

इस पर भी वे इस्लाम क़बूल न करें तो फिर मुसलमान मजबूर होकर ख़ुदा की ज़मीन को इन नापाक लोगों से साफ़ करने के लिए जिहाद करें और जो लोग मुसलमान हो जाएँ वे इस शहर में कुछ दिन आकर ठहर कर इस दीन को सीखें और फिर वे भी वापस अपने इलाक़ों में जाकर दूसरों को इस्लाम सिखाएँ।

ग़र्ज़ यह कि मदीना मुनव्वरा इस्लाम फैलाने का मर्कज़ (केन्द्र) और नौमुस्लिमों के लिए अ़मली तौर पर और इल्मी एतिबार से इस्लाम सीखने का एक मदरसा बन गया था, और इस दीन इस्लाम के फैलाने, इसके नूर से सारी दुनिया को रोशन करने के लिए मर्द और औरत पूरे के पूरे तौर से इसमें शरीक थे।

जैसा कि आपने पढ़ा, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हिजरत की। घर, क़ौम, क़बीला, वतन की कुर्बानी और उनकी जुदाई बरदाश्त की। इसी तरह हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा औरत होते हुए घर से बेघर हो गईं। माँ के साये से मेहरूम हुईं। बाप की शफ़क़तों से दूर हुईं। बहनों व सहेलियों की अ़लैहदगी बरदाश्त की। क्यों? ताकि ख़ुदा के दीन का बोल-बाला हो। इस्लाम का कलिमा ज़िन्दा हो। इनसानियत कुफ़्र व शिर्क से बच जाए और हमेशा-हमेशा की जहन्नम से बच जाए और

जन्नत में दाख़िल होने वाली बन जाए।

सारी दुनिया के इनसान चाहे वे हिजाज़ के अ़रबी या फ़ारिस के अ़जमी हों। अफ़्रीक़ा के हबशी या एशिया के हिन्दी हों। यूरोप के रूमी या ख़ैबर के यहूदी हों। ग़तफ़ान के ईसाई या ईरान के मजूसी हों। एक अल्लाह की वह्दानियत (एक होने) को मान लें। अपने दिलों से शिर्क की गंदगी निकाल कर तौहीद की पाकी बैठाएँ और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रिसालत व ख़त्मे-नुबूव्वत पर ईमान लाने वाले हों, और ख़त्मे-नुबुव्वत की बरकत से जो ज़िम्मेदारी मर्दों, औ़रतों पर है उसको लेकर पूरी दुनिया में फैलाने वाले हों।

बहरहाल! हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा दोबारा अपने शौहर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ मदीना मुनव्वरा हिजरत के लिए रवाना हुई और शुरू में जाकर औस बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु के घर ठहरे।

अब वक़्त आया कि सफ़र व परदेस की तकलीफ़ें दूर हों। शफ़ीक़ व रहीम बाप के साये तले बेटी परवान चढ़े। सर के ताज व बच्चों के बाप उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे ग़नी शौहर की मुहब्बत व मेहरबानी में कुछ वक़्त गुज़ारे। बाप अपने अरमान पूरे करे। नवासे नवासियों के हंसमुख ग़ुंनचों की महकती ख़ुशबुओं के फूल खिलें। इस महकते हुए चमन और हरे-भरे गुलशन में नई बहार आए।

लेकिन कुदरत वाले रब्बे-ज़ुल्जलाल को अब यह मन्ज़ूर था कि उस बन्दी को जिसने अपनी ज़िन्दगी ऐसी गुज़ारी जैसा उसका मालिक चाहता है, अपने दीन की हिफ़ाज़त व शौहर की वफ़ा में सफ़र की तकलीफ़ें बरदाश्त कीं, परदेस की ज़िन्दगी अपनाई, दो हिजरतें कीं, माँ की जुदाई बरदाश्त की, पहले शौहर से इस्लाम की ख़ातिर तलाक़ लेना गवारा किया, अब उसको अज्र दिया जाए और जन्नत जो उसका इन्तिज़ार कर रही है उसको अपने ठिकाने पर पहुँचाया जाए।

वफ़ात

सन् 2 हिजरी में रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा के दाने निकले और बहुत ही सख़्त तकलीफ़ हुई, लेकिन अल्लाह की इस बन्दी ने सब्र किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त जंगे-बद्र की तैयारी फ़रमा रहे थे और रवानगी के वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को तीमारदारी के लिए छोड़कर रवाना हुए।

ऐन उसी वक़्त जब ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़तह की खुशख़बरी सुनाई, यह माँ-बाप की आँखों का तारा, घर भर की उम्मीदों का केन्द्र, अब्दुल्लाह की प्यारी माँ, दुनिया से रुख़सत होकर जा रही हैं। और इस तरह नहीं जिस तरह अपने वतन से हबशा या मक्का से मदीना रुख़सत होकर जा रही थीं, बल्कि वहाँ जा रही थीं, जहाँ जाकर फिर कोई वापस नहीं आता।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वा (यानी बद्र की जंग में होने) की वजह से उनके जनाज़े में शरीक न हो सके, लेकिन जब वापस आए और इस वाक़िये की ख़बर हुई तो बहुत ग़मगीन होकर क़ब्र पर तशरीफ़ लाए। हाय किस क़लम के बस में है कि बाप के रंज की तर्जुमानी कर सके। हाय अब कौन है जो अब्दुल्लाह के सर पर हाथ फेरे। वह मासूम माँ से जुदाई के ग़म में कैसा बिलक रहा होगा। क्या उसके सर पर अब वही हाथ फेरेगा जो यतीमों और ग़मज़दों बेकसों और बेवारिसों सबका हक़ीक़ी वाली और वारिस है।

हाय ऐ रुक़ैया! क्या अब्दुल्लाह की मासूम हरकतें देखने का अरमान और हौसला क़ब्र ही में ले गईं? अब कौन है जो छोटी बहन ख़ातूने-जन्नत फ़ातिमा बतूल के आँसू पौंछे। हाय अब उम्मे-कुलसूम के ज़ख़्मी दिल पर कौन मर्हम रखेगा? अभी अपने हाथों से नन्हे मासूम बच्चों की परवरिश भी न करने पाई थीं कि मौत के फ़रिश्ते ने ज़िन्दगी के ख़ात्मे का पैग़ाम सुना दिया।

सलामती हो ऐ उस्मान! आपके सब्र पर कि आपने इस दीन को सारी दुनिया में फैलाने की ख़ातिर जिस नई-नवेली दुल्हन को उसके माँ-बाप से छुड़ा कर वतन से बेवतन करके, उसके बचपन की सहेलियों से अलग करके, उसकी डोली बड़े शौक़ व अरमान से अपने यहाँ लाकर उतारी थी और जिसका शादी का लिबास अभी मैला नहीं होने पाया था और उसे अपने नूरे-नज़र लख़्ते-जिगर के अरमानों व हसरतों को अपने साथ ले जाना मुक़द्दर था, और अख़ीर वक़्त में कुछ ठंडे साँस सुकून से लेने का मौक़ा मिला, तो हमेशा के लिए रुख़्सत होकर चली गई। और आपने सब्र किया।

ऐ रुक़ैया! ऐ ख़ातूने जन्नत! आप सलाम क़बूल कर लीजिए हम बाद में आने वाली अपनी बहनों और अपने भाईयों क़ी तरफ़ से सलामे रहमत। और मग़फ़िरत व रहमत की दिल से निकली हुई अनगिनत दुआओं का हक़ीर हदिया क़बूल कीजिए।

ख़ुदा करे आपकी आ़दतों का साया हमारी बच्चियों बहनों पर भी पड़े और क़ियामत के दिन आपकी सफ़ में हमारी बहनों बच्चियों को भी जगह मिल जाए। आमीन सुम्म आमीन या रब्बल्-आ़लमीन

हज़रत उम्मे हकीम बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा

"अल्लाह के रास्ते की मुजाहिदा"

यह उम्मे हकीम रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी बहादुर-दिल मुजाहिदा औरतों में से थीं। और इसके साथ-साथ अपने शौहर से सच्ची मुहब्बत करने वाली थीं। इस्लाम लाने से पहले अपने शौहर के साथ उहुद की लड़ाई में काफ़िरों की तरफ़ से शरीक हुईं।

लेकिन मक्का के फ़तह होने के वक़्त अल्लाह ने इस्लाम की हक़्क़ानियत दिल में डाल दी, अपनी तबीयत की सलामती की बिना पर इस्लाम क़बूल करने में बहुत जल्दी की और मुसलमान हो गईं, मगर शौहर ने बात न मानी और जान बचाकर यमन भाग गये और इस्लाम न लाए।

शौहर को जहन्नम की आग से बचाने की फ़िक्र

चूँकि उनको शौहर से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी जैसा कि एक सच्ची वफ़ादार बीवी को अपने शौहर से होनी चाहिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उन्होंने अपने शौहर के लिए अमन चाहा तो रहमते-आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी रहम-दिली और माफ़ करने की आदत के सबब जो सबके लिए आम थी (यहाँ तक कि अपने जानी दुश्मनों और ख़ून के प्यासों के लिए भी यह माफ़ी का दस्तरख़्वान बिछा हुआ था) अमन दे दिया। और यह अपने शौहर को जहन्नम की आग से बचाने और हमेशा-हमेशा की नाकामी व रुस्वाई और ज़िल्लत से बचाने के लिए ढूँढ़ते-ढूँढ़ते यमन पहुँचीं। उनको समन्दर के किनारे पर पाया। जब वह नाव में सवार होने के लिए तैयार हो चुके थे। उनको आवाज़ देकर रोका और अजीब मुहब्बत भरे अलफ़ाज़ में उनको ख़िताब फ़रमाकर दीने इस्लाम क़बूल करने की दावत दी।

इस औरत का हकीमाना अन्दाज़ देखिए! वाक़ई बड़ी अक़्लमन्द थीं।

सबसे पहले उनको अपने ख़ूनी रिश्ते से मुख़ातब करके अपने क़रीब किया और कहा:

"ऐ मेरे चचा के बेटे"

और यह फ़ितरी बात है कि ख़ूनी रिश्ते की पुकार मुहब्बत के मुर्दा जज़्बात में नई रूह डालकर उनको ज़िन्दा कर देती है और इनसान मजबूर होकर अपने महबूब की पुकार पर लब्बैक कह देता है।

جئتك من اوصل الناس وابر الناس وخير الناس!

तर्जुमा: मैं आपके पास आई हूँ एक ऐसे रहमदिल आदमी की तरफ़ से जो सब लोगों से मिलाप रखने वाला, सिला-रहमी करने वाला, लोगों में सबसे ज़्यादा नेक और सबसे ज़्यादा अच्छाईयों और भलाईयों का मालिक है।

इसलिए आप अपने आपको हलाक न कीजिए। मेरे साथ चलकर ईमान ले आईए। मैंने आपके लिए उनसे अमन चाहा है और उन्होंने आपको अमन दे भी दिया है।

तो उनके शौहर ने ताज्जुब से पूछा:

أنت فعلتِ ذلك؟

"क्या आपने ऐसा कर लिया है?"

उन्होंने कहा जी हाँ! ऐसा ही हुआ है। यह वापस लौटे और इस्लाम क़बूल किया और फिर अपने सभी गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया और फिर इस्लाम फैलाने में जान-तोड़ कोशिश की। बहुत ही जोश व ख़रोश से इस्लामी लड़ाईयों में शिर्कत की। बड़ी बहादुरी और जाँबाज़ी से इस्लाम के लिए लड़े।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में जो रूमियों से जंग छिड़ी तो उम्मे हकीम अपने शौहर हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मुल्क शाम के किनारे बस्ती यरमूक गईं और वहाँ उनके शौहर शहीद होकर अल्लाह को प्यारे हो गए।

दूसरा निकाह

फिर इद्दत के बाद ख़ालिद बिन सईद से उनका निकाह दमिश्क़ की बस्ती 'मरजुस्सफ़र' में हुआ। शौहर ने सुहागरात की रस्म अदा करने की तैयारी की तो उम्मे हकीम रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा:

"रूमियों के हमला करने का हर वक़्त डर है, इसलिए थोड़ा सा रुक जाओ।"

ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मुझे इस लड़ाई में अपने शहीद होने का यक़ीन है तो वह भी राज़ी हो गईं। वहीं एक पुल के पास जिसको अब (क़न्तरा-ए-उम्मे हकीम) कहते हैं, ख़ेमे में रुख़्सती हुई। ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु मैदाने जंग में गए और शहादत हासिल की। उसके बाद उम्मे हकीम रज़ियल्लाहु अन्हा उठीं और चूँकि यह ख़ालिद बिन वलीद की भानजी थीं उनकी माँ फ़ातिमा बिन्ते वलीद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की बहन थीं, तो भानजी पर भी बहादुरी और हिम्मत और जुर्रत का यह असर था कि यह खुद उठीं और काफ़िरों से मुक़ाबला किया। बहादुरी और दिलेरी के साथ मकान के खूँटे से सात आदमियों को क़त्ल किया।

हज़रत शैख़ुल हदीस साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं:

"हमारे ज़माने की औरत तो दरकिनार मर्द भी ऐसे वक़्त में निकाह करने को तैयार नहीं होता, और अगर निकाह हो भी जाता तो अचानक शहादत पर रोते-रोते न मालूम कितने दिन सोग में गुज़र जाते। अल्लाह की इस बन्दी ने खुद भी जिहाद शुरू कर दिया और औरत होकर सात आदमियों को क़त्ल किया।"

इस वाक़िए से एक और सबक़ यह भी मिला कि बीवी अपने शौहर की आख़िरत संवारने की भी फ़िक्र करे।

शौहर को दीनदार बनाना बीवी की ज़िम्मेदारी है

हकीमुल-उम्मत हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

औरतें दीनी हुकूक़ में एक सुस्ती यह करती हैं कि मर्द को जहन्नम की आग से बचाने की कोशिश नहीं करतीं। यानी इसकी कुछ परवाह नहीं करती हैं कि मर्द हमारे लिए कमाई करने में हराम में मुब्तला है, और कमाने में रिश्वत, झूठ, उधार का वापस न करना, वादा-ख़िलाफ़ी वग़ैरह से नहीं बचता। अगर ऐसा है तो उसको समझाएँ कि तुम हराम व संदिग्ध आमदनी न लाया करो। हम हलाल की चटनी-रोटी पर ही गुज़ारा कर लेंगे।

इसी तरह अगर मर्द नमाज़ न पढ़ता हो तो उसको बिल्कुल नसीहत नहीं करतीं। हालाँकि अपनी ग़र्ज़ और अपने फ़ायदे के लिए उससे सब कुछ करवा लेती हैं। (तोहफ़ा-ए-ज़ौजैन पेज 58)

अगर औरत मर्द को दीनदार बनाना चाहे तो उसको कुछ मुश्किल नहीं। मगर इसके लिए ज़रूरत इसकी है कि पहले तुम ख़ुद दीनदार बनो। नमाज़ और रोज़े की पाबन्दी करो, फिर मर्द को नसीहत करो तो इन्शा-अल्लाह ज़रूर लाभ होगा। सुबह से मुस्तक़िल सिर्फ़ कमाने में शौहर और बच्चों का लगना यह भी मुनासिब नहीं, बल्कि शौहर और लड़कों को समझाएँ कि हम सिर्फ़ कमाने और खाने पीने के लिए ही दुनिया में नहीं आए। कुछ वक़्त दिन में अल्लाह के दीन को भी दो, कुछ वक़्त मस्जिद में बैठो। अल्लाह के रास्ते में निकले हुए मेहमानों की मदद करो। मौहल्ले वालों, रिश्तेदारों, बीमारों की देख-भाल करो। रोज़ाना सूरः यासीन की तिलावत की पाबन्दी करो, अल्लाह का ज़िक्र करो, मौहल्ले के सभी लोग दीनदार बन जाएँ, हर घर में अल्लाह का पूरा दीन ज़िन्दा हो जए, नबी करीम के तरीक़े मर्दों-औरतों में ज़िन्दा हो जाएँ, इस मेहनत के लिए कुछ वक़्त निकालो।

कारोबार की फ़िक्र करना और उसी में दिन-रात के क़ीमती लम्हात

लगा देना सच्चे मुसलमान का शेवा नहीं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी नबी थे। अब उनके बाद नबियों वाला काम अल्लाह तआ़ला ने हम में से हर मर्द व औ़रत के ज़िम्मे लगा दिया है कि जिस तरह अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम इनसानों को जहन्नम की आग से बचाने की फ़िक्र करते थे इसी तरह हम सबको यह फ़िक्र करनी होगी, अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है।

जिस तरह हम कारोबार, नौकर वग़ैरह के लिए वक़्त निकालते हैं इसी तरह दुनिया से कुफ़्र मिट जाए, अल्लाह के अहकामात ज़िन्दा हो जाएँ, हर आदमी अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने वाला बन जाए, इस बात की फ़िक्र और मेहनत के लिए भी हमें वक़्त निकालना होगा। इसी तरीक़े से शौहर को और बेटों को समझाएँ। इसी तरह बेटियों, बहनों को भी समझाएँ। घर में हर आने वाली मेहमान औ़रत को समझाएँ कि हम में से हर मर्द और हर औ़रत की ज़िम्मेदारी है कि हम सब इसके लिए फ़िक्र करें, दुआ़एँ करें कि अल्लाह तआ़ला का पूरा दीन पूरी दुनिया में ज़िन्दा हो जाए।

जिस तरह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ सहाबी औ़रतों ने भी दीन फैलाने के लिए मेहनत की, हर क़िस्म की क़ुर्बानियाँ दीं, बेवा होना बरदाश्त किया, बच्चों का यतीम होना बरदाश्त किया, गर्मी-सर्दी बरदाश्त की, इसलिए ताकि अल्लाह का दीन ज़िन्दा हो जाए, इस्लाम का बोल-बाला हो जाए, दुनिया से कुफ़्र मिट जाए, ईमान ज़िन्दा हो जाए। इसी तरह हमको भी इस दीन के लिए हर क़िस्म की क़ुर्बानी देनी चाहिए। अपने आपको इस दीन पर खपा देना चाहिए। मौहल्ले की सभी औ़रतें सौ फ़ीसद अल्लाह को राज़ी करने वाली बन जाएँ और इस बात की फ़िक्र और मेहनत में लग जाएँ कि दुनिया की सारी औ़रतें किस तरह अल्लाह को राज़ी करने वाली बन जाएँ। इसके लिए हमें सोचना चाहिए। दुआ़एँ माँगनी चाहिएँ।

हर मिलने जुलने वाली औ़रत को इस पर तैयार करना चाहिए कि

वह भी इसकी फ़िक्र करे और इस पर मेहनत करे। अल्लाह तआला हम सब मर्दों औरतों को उस ज़िम्मेदारी को अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए जो ख़त्मे-नुबुव्वत (नबियों के सिलसिले के मुकम्मल होने) की बरकत से हमारे सुपुर्द की गई है और अब तक हम इस ज़िम्मेदारी से जो ग़ाफ़िल रहे इस पर हमें माफ़ फ़रमाए। आमीन

बीवी का शौहर को निकाह के ज़रिये मुसलमान बनाना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू-तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम लाने से पहले (मेरी माँ) हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा को निकाह का पैग़ाम दिया। उन्होंने कहा ऐ अबू-तलहा! क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम जिस खुदा की इबादत करते हो वह तो ज़मीन में उगने वाला पेड़ है? उन्होंने कहा हाँ। उम्मे सुलैम ने कहा पेड़ की इबादत करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। अगर तुम मुसलमान हो जाओ तो मैं तुमसे इस्लाम के अलावा किसी क़िस्म का मेहर नहीं माँगूंगी।

उन्होंने कहा अच्छा मैं ज़रा सोच लूँ और चले गए और थोड़ी देर के बाद आकर कलिमा-ए-शहादतः "अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह" पढ़ लिया तो हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा ऐ अनस! मेरा निकाह अबू-तलहा से कर दो। चुनाँचे हज़रत अनस ने उनका निकाह करवा दिया। (हयातुस्सहाबा)

शौहर को दीनदार बनाने में मुसलमान बीवी का नमूना

हमें हज़रत उम्मे हकीम रज़ियल्लाहु अन्हा के वाक़िए से एक बात यह मालूम हुई कि जब खुद उन्होंने हक़ मज़हब (इस्लाम) क़बूल कर

लिया तो आख़िरकार अपनी कोशिशों और दुआओं से अपने शौहर को भी मुसलमान बना ही लिया। उन्होंने अपने शौहर को इस्लाम में लाने का कितना प्यार और मुहब्बत से भरा हुआ तरीक़ा प्रयोग किया।

उन्हीं के सर पर सेहरा और ताज है उनके शौहर के मुसलमान होने का, कि यही ज़रिया बन गईं अपने शौहर को जहन्नम से बचाने और जन्नत की तरफ़ लाने का। उन्हीं की पेशानी पर इज़्ज़त का निशान है शौहर की मुहब्बत व वफ़ादारी का। उन्हीं की क़िस्मत पे हमेशा की सआदत का साया है एक मुजाहिद को तैयार करने का। उन्हीं के साथ व ख़िदमत और तसल्ली व तशफ़्फ़ी का सिला है अपने शौहर को शहादत का दर्जा दिलवाने का। उन्हीं की दिलेरी व बहादुरी पर असर है अपने मामूँ ख़ालिद बिन वलीद का। उन्हीं पर फ़ख़र है तारीख़ के अनमिट पन्नों को दो शहीद शौहरों की बीवी बनने का। उन्हीं की ज़िन्दगी नमूना है हमारी मुसलमान बहनों के लिए शौहर को दीनदार बनाने का।

अगर आज भी मुसलमान बीवियाँ अपने शौहरों को जो (अल्हम्दु लिल्लाह अगरचे मुसलमान हैं) लेकिन इस्लाम के किसी हुक्म से ग़ाफ़िल हैं, या कोई ऐसा अमल कर रहे हैं, जिसकी वजह से मालिक और आक़ा-ए-रहीम व करीम नाराज़ होंगे, और आख़िरत में उसकी सज़ा भुगतने की वजह से जहन्नम में जाना पड़ेगा, तो उसके लिए इन्हीं सबबों को अपनाएँ। पहले उनसे ख़ूब मुहब्बत करें और मुहब्बत का रास्ता उनकी फ़रमाँबरदारी और उनके हुक्मों को मानना है। इसलिए किसी तरह उनकी नाफ़रमानी करके या उनके सामने ज़बान-दराज़ी करके या अपनी ग़लती का एतिराफ़ व इक़रार न करके, या सख़्ती या गुस्से से बे-अदबी से कोई बात करके, उनको नाराज़ न करें। फिर उनके लिए अल्लाह मियाँ से ख़ूब दुआ माँगें कि ऐ अल्लाह! मेरे शौहर, बेटों, भाईयों को नमाज़ी दीनदार, गुनाहों से बचने वाला, नेकियों से मुहब्बत करने वाला, दीन को दुनिया में फैलाने वाला और दीन की दावत देने वाला बना दीजिए और उनको शहादत का जाम अ़ता फ़रमा दीजिए। उनकी

क़ब्रें दूर से दूर मुल्कों में ख़ुदा के दीन के बाग़ और गुलशने मुहम्मदी के लगाए हुए पौधों की सिंचाई करते हुए बनना मुक़द्दर फ़रमाईए। उनके हाथों से बुज़दिली की चूड़ियाँ और उनके कानों से ख़ौफ़ की बालियाँ उतार दीजिए। उनके दिलों से दुनिया में हमेशा रहने का ख़्याल निकाल दीजिए। अपनी और अपने रसूल की मुहब्बत से उनके दिल व दिमाग़ को हरा-भरा कर दीजिए और इस दीन पर मर-मिटना और जान देना आसान फ़रमा दीजिए। आमीन

और फिर घर में लड़ाई-झगड़े की आग लगाए बिना मुहब्बत व शफ़क़त भरे लहजे में उनको अदब के साथ दावत दें। अगर वे हराम कमाई में लगे हुए हैं, सूद का काम करते हैं, या झूठ बोलकर सौदा बेचते हैं, या हराम चीज़ों का बिज़नेस करते हैं, या रिश्वत की आदत है, या लोगों से उधार लेकर वक़्त पर अदा नहीं करते। अगर ये बुराईयाँ हैं तो इनके सुधार की कोशिश करें। बार-बार उनको समझाईए। अच्छे माहौल में उनको भेजिए। रातों को उठकर आधी रात में आँसुओं वाली दुआ के साथ अल्लाह से उनके लिए हिदायत और तौफ़ीक़ माँगिए।

ये आमाल अगर अबू-जेहल के बेटे का दिल मोम कर सकते हैं और उसको कुफ़्र व शिर्क से इस्लाम की तरफ़ माईल कर सकते हैं तो क्या आपके शौहर, भाई, बेटे, दामाद का दिल नर्म नहीं कर सकते? बिल्कुल कर सकते हैं। करके देखिए। रातों को उठकर और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद रो-रोकर गरम-गरम आँसू बहाकर दुआएँ करें, मुहब्बत व इताअ़त का हर वक़्त सुलूक और नर्मी के साथ दावत और हर तकलीफ़ पर सब्र इन्शा-अल्लाह हर मुश्किल को आसान, हर काँटेदार राह को चमन, हर आतिशे-नमरूद को गुलज़ारे-ख़लील बना देगा। और आपकी मुरादें पूरी कर देगा।

ज़रा सोचें और ग़ौर करें कि हज़रत उम्मे हकीम रज़ियल्लाहु अ़न्हा अपने शौहर को जहन्नम की आग से बचाने के लिए मक्का मुकर्रमा के पहाड़ों से निकल कर उस ज़माने में जब न गाड़ी थी न जहाज़ था,

जंगल व बयाबाने मक्का के पहाड़ों का सफ़र करते हुए अपने महबूब शौहर को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते यमन के समन्दर तक पहुँच गईं। और शौहर को वहाँ पा लिया और आख़िरकार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले आईं।

दूसरी बात यह कि उ़न्होंने शौहर का हक़ अदा करते हुए इस्लाम को फैलाने की ख़ातिर इस्लाम का भी भरपूर हक़ अदा किया और अपने बाद की आनी वाली मुसलमान बहनों को यह सबक़ देकर गईं कि मुसलमान बीवी की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ अपने शौहर और बच्चों तक ही सीमित नहीं बल्कि जिस तरह मर्दों की यह ज़िम्मेदारी है कि इस्लाम को दुनिया में फैलाएँ इसी तरह औ़रतें भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत में हैं और ख़त्मे-नुबुव्वत की बरकत से इन औ़रतों पर भी ज़रूरी है कि इसकी फ़िक्र करें कि दुनिया के सारे मर्द और सारी औ़रतें इस्लाम क़बूल करें और सही मुसलमान हो जाएँ।

इसके लिए अगर शौहर के साथ अपने मुल्क से बाहर भी हिजरत करके जाना पड़े तो इसके लिए भी तैयार रहें जैसा कि उम्मे हकीम रज़ियल्लाहु अ़न्हा मक्का मुकर्रमा से शाम गईं और रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा मक्का मुकर्रमा से हबशा गईं। हज़रत ख़नसा रज़ियल्लाहु अ़न्हा अपने बेटों के साथ इराक़ गईं। उम्मे हराम रज़ियल्लाहु अ़न्हा जज़ीरा क़ब्रस (सालपरस) गईं और वहीं इन्तिक़ाल हुआ, तो लोगों ने उनको वहीं दफ़न कर दिया।

इसी तरह और बहुत सी सहाबी औ़रतें दीन फैलाने के लिए अपने शौहर और अपने मेहरमों के साथ दुनिया में गईं और उन औ़रतों की क़ब्रें भी चूँकि अल्लाह के रास्ते में दीन फैलाते हुए वतन से दूर-दूर शहरों और मुल्कों में बनीं, इसलिये आने वाली मुसलमान बहनों के लिये क़ियामत तक उनकी क़ब्रें भी गवाह हैं कि हम घर से वतन से हिजरत करके अल्लाह के रास्ते में गईं और सफ़र की मशक़्क़तें झेलीं और सर्दियाँ, गर्मियाँ बरदाश्त कीं और आख़िरी साँस तक अल्लाह के नाम को

बुलन्द और ऊँचा करने के लिए मेहनत और कोशिश की। इसी रास्ते के अन्दर जब मौत का वक़्त आया, अल्लाह की तरफ़ से बुलावा आ गया तो हमने सफ़र ही में उसको लब्बैक कहा और वहीं दफ़न की गयीं।

आज की मुसलमान बहनों को भी चाहिए कि अपने दिलों में वलवले और जज़्बे हौसले और हसरतें पैदा करें। अपनी जान व अक़्ल की सलाहियत, माल, सोच और फ़िक्र सब अल्लाह तआ़ला के दीन पर लगाएँ ताकि अल्लाह तआ़ला का दीन हर कच्चे पक्के घर में ज़िन्दा हो जाए। ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े, रहन सहन में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नूरानी तरीक़े ज़िन्दा हो जाएँ। इसी की मेहनत व कोशिश करते-करते हमें भी शहादत नसीब हो और हमारी क़ब्रें भी अल्लाह के रास्ते में बनें। आख़िरी साँस तक हम अल्लाह के दीन को फैलाती रहें। यह तमन्ना हर मुसलमान औ़रत को अपने लिए और बहनों और बेटियों के लिए करनी चाहिए।

बेवा के लिए दूसरा निकाह ऐब नहीं

इस वाक़िए से हमें यह सबक़ भी मिला कि अगर शौहर का इन्तिक़ाल हो जाए या शहीद हो जाए तो यह नहीं कि रोते-रोते ही सोग मनाकर पूरी उम्र या सालों गुज़ार दें, बल्कि शरई तौर पर जो इद्दत है उसको पूरी करें और सब्र करें। और दोबारा दीन के काम में अल्लाह को राज़ी करने में लग जाएँ।

औ़र चूँकि अल्लाह मियाँ का हुक्म निकाह करने का है इसलिए दूसरा निकाह कर लें और इसमें किसी भी क़िस्म की शर्म महसूस न करें। न देर करें। उस हदीस को याद रखिए कि अगर सही रिश्ता आ जाए जिसके दीन और अख़्लाक़ सही हों और फिर भी लोग यानी रिश्तेदार निकाह न कराएँ तो ज़मीन में एक फ़ितना और बहुत बड़ा फ़साद (बिगाड़) पैदा हो जाएगा।

इसी तरह सहाबियात (सहाबी औ़रतें) रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न बेवा

होते ही, इद्दत के गुज़रने के बाद फ़ौरन शादी कर लिया करती थीं ताकि आने वालों के लिए भी एक अच्छा नमूना बाक़ी रहे। इसलिए तारीख़ की किताबों में बहुत सारी सहाबियात के हालात ऐसे मिलेंगे कि जिनकी कई कई शादियाँ हुई हैं। अपने शौहर की वफ़ात या तलाक़ के बाद जैसे- आ़तिका बिन्ते ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल अल्-अ़दविया की शादी सबसे पहले अ़ब्दुल्लाह बिन अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई, फिर जब यह तायफ़ में शहीद हो गए और चूँकि उनको अपने शौहर से बेपनाह मुहब्बत थी, उनके इन्तिक़ाल पर इन्होंने यह शे'र भी कहा:

عليك ولا ينفك جسدى اغبرا		فاليت لاتنفك عينى حزينة

तर्जुमा: मैंने क़सम खा ली है कि आपके शहीद हो जाने के बाद आपके ग़म में मेरी आँख हमेशा पुरनम और जिस्म हमेशा गुबार-आलूद रहेगा।

फिर इन्होंने ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से निकाह किया तो वह भी जंगे-यमामा में शहीद हो गए। फिर इनका निकाह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुआ यहाँ तक कि वह भी शहीद हो गए और अल्लाह ने उनको भी बुला लिया तो इन्हों ने उनकी जुदाई के ग़म में ये अश्आ़र पढ़े:

لا تملى على الامام النجيب		عين جودى بعبرة ونجيب
يوم الهياج والتثويب		فجعتنى المومن بالفارس المعلم
موتوا قد سقة المنون كاس شعوب		قل لاهل الضراء والبوس

तर्जुमा: ऐ आँख! ख़ूब रोकर आँसू बहा, उकता मत जाईयो रोने से ऐसे नेक शरीफ़ इमाम पर। एक ऐसे माहिर शहसवार की मौत ने अचानक मुझे ग़मगीन कर दिया जंग और बदला देने के दिन में। तुम कह दो ग़रीब और मिस्कीन और परेशान-हाल लोगों से कि अब तुम मर जाओ, इसलिए कि मौत ने ऐसे करीम और सख़ी आदमी को हमसे

जुदा कर दिया जो फ़क़ीरों व मिस्कीनों की मदद करने वाला था। परेशान-हाल लोगों का साथी व ग़मख़्वार था।

फिर जुबैर बिन अ़वाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु से उनका निकाह हो गया। यहाँ तक कि जब वह भी शहीद हो गए तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने निकाह का पैग़ाम दिया। इन्होंने माज़िरत कर दी कि मैं आपके लिए बुख़्ल करती हूँ (आप भी जल्द शहीद न हो जाएँ)।

एक और रिवायत में है कि उनके पहले शौहर ने उनके लिए कुछ माल ख़ास (सुरक्षित) कर दिया था कि यह तुम्हारे लिए है, ताकि तुम मेरे मरने के बाद किसी और से निकाह न करो। लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया यह नाजायज़ वसीयत है। जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने हलाल कर रखा है उसको उन्होंने क्यों हराम किया। इसलिए तुम माल शौहर के रिश्तेदारों को लौटा दो और ख़ुद दूसरा निकाह कर लो।

इससे यह बात अच्छी तरह मालूम हो गई कि अगर कोई मर्द किसी औ़रत को यह वसीयत करके जाए कि मेरे बाद निकाह न करना, तो भी इस वसीयत पर अ़मल करना जायज़ नहीं, बल्कि अगर गुनाह का ख़तरा या ग़ालिब गुमान हो जाए तो इस वसीयत पर अ़मल न करना वाजिब व फ़र्ज़ के हुक्म में हो जाता है।

अन्दाज़ा लगाईए! हज़रत आ़तिका का पहला निकाह अ़ब्दुल्लाह बिन अबू-बक्र से, उनके शहीद होने के बाद ज़ैद बिन ख़त्ताब से, उनके शहीद होने के बाद हज़रत उमर से, उनके शहीद होने के बाद जुबैर बिन अ़वाम से हुआ। उनके शहीद होने के बाद हज़रत अ़ली ने पैग़ाम भेजा तो माज़िरत कर दी। (अल-इसाबा पेज 357 जिल्द 4)

इसी तरह दूसरी सहाबी औ़रतों के कई क़िस्से हैं जिन्होंने शौहरों के मरने के बाद या किसी शौहर से शरई तौर पर अलग होने के बाद दूसरा निकाह करने में कोई आ़र, शर्म या झिझक महसूस नहीं की।

हज़रत अस्मा बिन्ते अ़मीस का पहला निकाह हज़रत जाफ़र

रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ, वह ग़ज़वा-ए-मूता में शहीद हो गए तो अस्मा का निकाह अबू बक्र से हुआ। उनकी वफ़ात के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से निकाह हुआ। (अल-इसाबा पेज 231 जिल्द 4)

हज़रत उम्मे-कुलसूम बिन्ते उक़बा रज़ियल्लाहु अन्हु का पहला निकाह ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ, फिर जब वह ग़ज़वा-ए-मूता में शहीद हो गए तो ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में आईं, लेकिन उन्होंने तलाक़ दे दी, तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से निकाह हुआ। उनके मरने के बाद अमर बिन-आ़स से निकाह हुआ। (अल-इअसाबा पेज 491)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा सारी बेवा औरतों से निकाह किया। सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन के ज़माने में तो अगर किसी औरत का शौहर मर जाता, या तलाक़ दे देता तो इद्दत के फ़ौरन बाद वह दूसरा निकाह कर लेती और वहाँ के मर्द भी बेवा औरतों से निकाह करने में कोई शर्म महसूस नहीं करते थे।

इसी का नतीजा था कि न किसी आश्रम की ज़रूरत पड़ती थी न किसी नारी-निकेतन की, न किसी यतीम घर की। न नाईट-क्लबों के होने की सूरत में बेशर्मी को परवान चढ़ने का मौक़ा मिलता था। बल्कि दूसरा शौहर अगर पहले शौहर के रिश्तेदारों में से होता था तो उन बच्चों को अपनी ही तरबियत में ले लेता था। दूसरी सूरत में दधियाल व ननिहाल संभाल लेते थे। और इसका दूसरा नतीजा यह था कि मर्द बुराईयों से बच जाते थे। अगर नफ़्सानी जज़्बात ने मजबूर किया और एक बीवी शरई तौर पर माज़ूर है या किसी वजह से शौहर के लिए मुकम्मल सुकून का सामान नहीं है तो दूसरी या तीसरी बीवी इस कमी को पूरा कर सकती थी। जिसका ज़रूरी नतीजा यह था कि मर्द मुकम्मल सुकून और राहत हासिल कर लेता था जो उसकी फ़ितरी और तबई ज़रूरत है। फिर वह कई घरेलू झगड़ों, जिस्मानी और नफ़्सानी कई

बीमारियों और रूहानी कई गुनाहों और बुराईयों से बच जाता था और इस सब के अलावा अल्लाह के वायदे के अनुसार रोज़ी में भी बढ़ोत्री और बरकत और यतीम और बेवा की किफ़ालत पर रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी नसीब होती थी, जो दोनों जहान में इनामात और रहमतों की मूसलाधार बारिश का सबब बनती थी, वह हासिल हो जाती थी।

और ख़ुद बीवियाँ भी अपने शौहर को दूसरा निकाह करने से बाधा और रुकावट नहीं बनती थीं। अगर हुक़ूक़ की रियायत करते हुए हो, ख़ास तौर से जिनके पास नान-नफ़्क़ा और रहने की जगह व ख़र्चा देने और अलग रखने की वुस्अ़त हो और उनकी नीयत भी बेवाओं, तलाक़-याफ़्ता औ़रतों की हमदर्दी और ग़मख़्वारी व दिलदारी हो और यतीमों की तरबियत व निगरानी मक़सूद हो, तो यह "नूरुन अ़ला नूर" (यानी सोने पर सुहागा) है। यही फ़ितरत का मिज़ाज है, यही रूहानी और जिस्मानी बीमरियों का इलाज है। यही समाज की परेशानियों और मुसीबतों की दवा है और यही शरीअ़त का सबक़ है। यही ख़ुदा के महबूबों की सुन्नत है, इसी में दुनिया और आख़िरत की कामयाबी और फ़लाह की ज़मानत है। इसी में गुनाहों से हिफ़ाज़त है, इसी में तंगदस्ती का ख़ात्मा है। यही ग़नी (हालात के बेहतर होने, कुशादगी) का दरवाज़ा है।

जिसकी बीवी नहीं वह मिस्कीन है

एक बात यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह इरशाद उन मर्दों, औ़रतों की आँखों के सामने हर वक़्त रहता था कि फ़रमाया नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कि वह आदमी मिस्कीन है जिसकी बीवी नहीं है। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया चाहे वह बहुत ज़्यादा माल वाला हो, तब भी? आप सल्ल० ने फ़रमायाः चाहे वह मालदार ही क्यों न हो, अगर बीवी नहीं है तो वह मिस्कीन है।

जिस औ़रत का शौहर नहीं वह मिस्कीना है

फिर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

वह औ़रत मिस्कीना है जिसका शौहर नहीं है। लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! अगरचे उसके पास बहुत कुछ माल हो तब भी मिस्कीना ही है? आपने फ़रमाया हाँ! तब भी वह मिस्कीना है।

(जमउल्-फ़वाइद किताबुन्निकाह जिल्द 1 पेज 216)

इसी तरह एक बार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उकाफ़ बिन बिश्र तमीमी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा ऐ उकाफ़! तुम्हारी बीवी है? जवाब दिया बीवी नहीं है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व स़ल्लम ने पूछा बाँदी है? जवाब दिया नहीं। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया सलाहियत रखते हो और खुशहाल भी हो, फिर भी तुमने शादी नहीं की। "तब तो तुम शैतान के भाईयों में से हो"। (जमउल्-फ़वाइद)

इस्लाम ने इनसानियत के लिए और खुसूसन उसके मानने वाले मर्दों-औ़रतों के लिए (बिना शरई उ़ज़्र के) बिना शादी के रहना किसी हाल में पसन्द नहीं किया। इस पर ग़ैर-मामूली ज़ोर दिया गया और इस क़िस्म की कड़ी वईदों (सज़ा की धमकी) वाले अलफ़ाज़ इस्तेमाल फ़रमाये ताकि फ़ितनों और गुनाहों का जड़ ही से ख़ात्मा हो जाए। और बेहयाई, बद्नज़री, ज़िनाकारी के दरवाज़े बिल्कुल बन्द हो जाएँ।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपना अ़मल पेश फ़रमा कर निकाह से अलग रहने वालों को अपनी जमाअ़त में से न होने की धमकी दी है।

اتزوج، فمن رغب عن سنتی فلیس منی۔

तर्जुमाः मैं शादी करता हूँ। पस मेरे तरीक़े से मुँह फेरने वाला मुझसे नहीं है।

और ऐसे लोगों को शैतान के भाई (उसके सहयोगी व मददगार) फ़रमाया गया। ग़ौर करने की बात है कि इस्लाम ने अ़स्मत व पाकदामनी

के अनमोल सरमाये की हिफ़ाज़त के लिए निकाह की कितनी अहमियत बतलाई, बल्कि उसकी तर्ग़ीब के साथ ग़िना (मालदारी और हालात के बेहतर होने) का वायदा फ़रमाया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ، وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ○

तर्जुमाः अगर वह (मर्द और औरत निकाह करने वाले) मुफ़्लिस होंगे तो अल्लाह उनको मालदार कर देगा अपने फ़ज़्ल से। और अल्लाह तआला वुस्अ़त वाला है और सब का हाल ख़ूब जामने वाला है।

इससे मालूम हुआ कि बेनिकाह रहना उम्र की किसी मन्ज़िल में भी बिल्कुल मुनासिब नहीं। न मर्द के लिए न औरत के लिए।

इसी लिए हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं "अगर मेरी ज़िन्दगी के सिर्फ़ दस दिन बाक़ी रह जाएँ तो भी मैं निकाह करना अच्छा समझूँगा। बिना निकाह की हालत में अल्लाह से मिलना मुझे पसन्द नहीं है।"

हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु की दो बीवियाँ थीं। ताऊन (प्लेग) की वबा में दोनों का इन्तिक़ाल हो गया। ख़ुद भी इस वबाई रोग में मुब्तला थे मगर अपने अ़ज़ीज़ों से कहा कि मेरा निकाह करा दो, मुझे यह अच्छा मालूम नहीं होता कि ख़ुदा तआ़ला के सामने अकेले होने की हालत में यानी इस तरह कि मेरे निकाह में कोई औ़रत न हो, मेरी पेशी हो। (शरह इहया)

हज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रह्मान साहिब गंज-मुरादाबादी ने पहली बीवी के इन्तिक़ाल पर अख़ीर उम्र में दूसरी शादी की थी हालाँकि उस वक़्त मौलाना की उम्र सौ साल से ऊपर थी। सिर्फ़ इस वजह से कि हज़रत को नासूर का रोग हो गया था उसकी देखभाल बीवी के बिना नहीं हो सकती थी। वह बेचारी बराबर अपने हाथ से दिन-रात में कई बार ज़ख़्म धोती थीं, साफ़ करती थीं, बहुत ही ख़ुशी के साथ कोई घिन्न या नफ़रत उनको न होती थी।

दुनिया में कोई इस ताल्लुक़ की नज़ीर नहीं पेश कर सकता। हज़रत

हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने आख़िर उम्र में दूसरा निकाह किया जबकि पहली बीवी साहिबा अन्धी हो गई थीं। यह बीवी हज़रत की भी ख़िदमत करतीं और सौतन साहिबा की भी।

(माख़ूज़ अज़ इस्लामी शादी)

बीवी आती है तो माल भी आता है

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि शादी के ज़रिये गि़ना (मालदारी) तलाश करो। इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

التمسوا الغنٰی فی النکاح (ابن کثیر ج ۳ ص ۲۸۶)

तर्जुमाः गि़ना (माल में वुस्अ़त) निकाह में तलाश करो।

तंगदस्ती को दूर करने का ज़रिया शादी है

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि औ़रतों से शादी करो वे तुम्हारे यहाँ माल और दौलत लाने का ज़रिया साबित होंगी। यानी अल्लाह तआ़ला उसके आने की वजह से रोज़ी में बरकत देगा।

नबी पाक के ज़माने में खुद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने इस तरह के वाकि़आत पेश आए जो बताते हैं कि तंगदस्ती और फ़क्र व फ़ाके के उस आ़लम में शादी की और कराई गई तो अल्लाह तआ़ला ने बरकत दी और रोज़ी का सामान मुहैया फ़रमाया। इस मसले की ग़ैर-मामूली अहमियत का अन्दाज़ा इससे लगाईए कि तंगदस्ती में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को शादी का हुक्म फ़रमाया। हदीस की किताबों में ऐसे बहुत से वाकि़आत ज़िक्र किये गये हैं।

किसी के पास कुछ न था सिर्फ़ लोहे की एक अंगूठी थी और आपने उसे शादी का हुक्म दे दिया। किसी सहाबी की तालीमे कुरआन

पर शादी करा दी जिसके पास इसके अलावा कोई दौलत न थी। कोई नबी पाक की ख़िदमत में आया और शादी की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और उसके पास एक इज़ार (लुंगी) के अलावा कुछ न था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे शादी की अनुमति दे दी। किसी ने अपनी बीवी को सिर्फ़ जूती दी, हद यह है कि कुछ को थोड़े से सत्तू और खजूर पर शादी की अनुमति दे दी। इन वाक़िआत की तफ़सील के लिए हदीस की किताब मिश्कात शरीफ़, बुख़ारी व मुस्लिम को मुलाहज़ा फ़रमायें।

अगर मज़मून के लम्बा होने का डर न होता तो इसको तफ़सील से बयान किया जाता और जो तफ़सील से देखना चाहे तो "इस्लाम का निज़ामे अस्मत व इफ़्फ़त" नामी किताब का मुताला करें, जिसको मौलाना बुरहानुद्दीन संभली साहिब ने लिखा है।

ग़र्ज़ यह कि हमें यहाँ मुसलमान बहनों को बेवा या मुतल्लक़ा औरत को यह बात समझानी है कि वे इद्दत के फ़ौरन बाद दूसरी शादी कर लिया करें। और दूसरी बहनें उनकी मददगार बनें। ख़ास तौर पर पहली बीवी को अपने शौहर के लिए दूसरी शादी करने में रुकावट न बनना चाहिए और ख़ास तौर से अगर शौहर दूसरी शादी किसी बेवा या मुतल्लक़ा (तलाक़ पाई हुई) या किसी ऐसी औरत से जिसकी किसी वजह से शादी न हो सकी हो, कर रहा हो तो उसमें तो ख़ास तौर से बिल्कुल रुकावट न बनें। बहुत सी बार अगर मर्द किसी औरत से यह हमदर्दी और मेहरबानी, ग़मख़्वारी व दिलदारी करना चाहता है और उसके पास साधन भी होते हैं और शरई शर्तों के साथ दो या तीन शादियाँ कर सकता है, तो बजाय यह कि पहली बीवी उसकी मददगार बने, यह उसके लिये रुकावट बन जाती है और रास्ते में बाधायें खड़ी करती है।

ताज्जुब है कि औरत ख़ुद ही किसी मुसलमान बहन की भलाई नहीं चाहती। अगर ग़ौर किया जाए तो औरत ख़ुद औरत के लिए ज़ालिम है। ग़ौर कीजिए इस्लाम ने शादी को इतनी अहमियत क्यों दी? पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों की शादी ऐसी तंगदस्ती में

क्यों कराई? सोचा जाए तो यही मालूम होगा कि सारा एहतिमाम इसलिए अ़मल में आया कि पाकदामनी और आबरू की पाकीज़ा ज़िन्दगी मयस्सर आए। हया व शर्म की समाज में हिफ़ाज़त हो, जायज़ तौर पर बच्चे पैदा हों। जिससे पाकबाज़ी फैले। फिर दुनिया में अख़्लाक़ और इज़्ज़त व आबरू की मिट्टी पलीद न हो सके।

बेवा के लिए निकाह क्यों ज़रूरी है?

हम यहाँ एक वाक़िआ किताब 'मख़्ज़ने अख़्लाक़' से नक़ल करते हैं। मौलाना सुब्हानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि लिखते हैं:

अज़ीमाबाद में एक औ़रत बहुत छोटी उम्र में बेवा (विधवा) हो गई। उसने हमेशा रोज़ा रखना और हर वक़्त इबादत करना अपना मामूल बना लिया। गोया हक़ीक़ी मायनों में "दिन को रोज़ा रखने वाली और रात को इबादत करने वाली बन गयी।"

रोज़ा इफ़्तार करते वक़्त शाम को सूखी रोटी या गेहूँ की भूसी खाना इख़्तियार किया और रात-दिन तिलावते कुरआन मजीद में मशग़ूल रहती। इसी हालत में वह बूढ़ी हो गई। सैकड़ों औ़रतें उसकी नफ़्स-कुशी और सच्ची पारसाई को देखकर उसकी मुरीद हो गईं। मरते वक़्त उसने सब औ़रतों को बुलाकर पूछा कि मैंने कैसी पाकदामनी, पारसाई और इज़्ज़त व आबरू से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी?

औ़रतों ने कहा कि ऐसा होना बहुत मुश्किल बल्कि नामुम्किन है, कि कभी किसी मर्द का मुँह तक न देखा। सारी उम्र रोज़ा रखा, सूखी रोटी खाई या सत्तू पीकर गुज़ारा किया और रात-दिन कुरआन पाक के पढ़ने और इबादत में मसरूफ़ रहीं। वह बोली अब मेरे दिल का हाल सुनो, की जवानी से बुढ़ापे तक रात को कुरआन की तिलावत करते वक़्त कभी मेरे कान में चौकीदार की आवाज़ आती तो दिल चाहता कि किसी तरह उसके पास चली जाऊँ। लेकिन अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ और दुनिया की शर्म से बची रही। अब मेरा आख़िरी वक़्त है। मैं तुम सबको नसहीत करती हूँ कि कभी जवान बेवा (विधवा) औ़रत को बेनिकाह न

रखना।

इससे मालूम हुआ कि औ़रत कैसी ही नेकबख़्त और परहेज़गार हो, और कैसा ही रूखा-सूखा खाना खाए। लेकिन इनसानी और फ़ितरी तक़ाज़े की वजह से मर्द की ख़्वाहिश उसके दिल में ज़रूर होती है। इसी तरह मर्द को भी औ़रत की ज़रूरत व हाजत होती है यहाँ तक कि हैवानात, चरिन्द व परिन्द (यानी पशु और पक्षी) भी इससे बचे नहीं।

इसलिए औ़रत को ख़ास तौर से इसका ख़्याल रखना चाहिए और रिश्तेदारों का उमूमन कि जब लड़का लड़की नौजवान हो जाएँ तो इस आशंका से कि दहेज का चन्दा पहले जमा करें, मेहंदी और महफ़िल जैसी ज़ालिमाना रस्मों के लिए पैसा पहले जमा करें। मेहर का ख़र्चा जमा करें। दावत और वलीमे की फ़िक्र करें। हालाँकि निकाह के लिए इनमें से किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं मेहर के अ़लावा। वह भी थोड़ी सी मात्रा में हो जाता है। इसलिए अच्छा दीनदार रिश्ता मिलने पर देर नहीं करनी चाहिए सादगी से शादी कर लेनी चाहिए।

इसी तरह बेवा और मुतल्लक़ा की शादी करवाने की फ़ौरन कोशिश करनी चाहिए और किसी तरह भी उसमें रुकावट या बाधा न बनना चाहिए। ख़ास तौर से पहली बीवी ख़ुशदिली से शौहर को इजाज़त दे दें कि दोनों का हक़ आप अदा कर सकते हैं तो मेरी तरफ़ से आपको कोई रुकावट नहीं है।

एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा

एक बुज़ुर्ग का वाक़िआ नक़ल करके ख़त्म करता हूँ। हमने एक बुज़ुर्ग के बारे में सुना है कि उनकी बीवी का इन्तिक़ाल हो गया था। उम्र के आख़िरी दौर में उनको एक साथी वुज़ू करवा रहे थे तो वज़ू फ़रमाते हुए दर्द भरे लहजे में अपनी ज़बान में फ़रमायाः

ऐ अल्लाह! अकेले तो आप ही अच्छे लगते हैं।

कितना ही बड़ा फ़लॉसफ़र, शायर, आ़लिम, बुज़ुर्ग हो लेकिन अगर

उसकी बीवी नहीं है तो, उसका हाल मालूम कर लीजिए उसकी ज़िन्दगी नामुकम्मल है। उसका घर बेनूर है। सब कुछ होते हुए भी किसी अज़ीम चीज़ का ख़ला (कमी) बाक़ी है। मर्द के लिए बीवी और औरत के लिए शौहर वह जोहर है कि जिसकी क़ीमत पहचानने और क़द्र करने से इनसानियत को चार चाँद लगते हैं और उसकी बेक़द्री करने से इनसानियत पामाल (बरबाद) हो जाती है।

यह मुहब्बत वाला रिश्ता कायनात का चमन और फ़ितरत का गुलशन और समाज का महकता हुआ गुलदस्ता है। औरत ही के होने से ज़िन्दगी के नग़मे फूटते हैं और मुरझाए हुए दिलों में वलवले और जोश पैदा होते हैं। औरत ही के दम से ज़िन्दगी की बहार है।

जो लोग बीवी के बिना जिन्दगी गुज़ारना चाहते हैं वे फ़ितरत के क़ानून की ख़िलाफ़वर्ज़ी (उल्लंघन) करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और फ़ितरत कभी न कभी उनसे ज़रूर बदला ले लेती है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

हज़रत ख़ौला बिन्ते मालिक बिन सालबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

बड़ी फ़साहत व बलागत वाली (यानी अरबी भाषा व साहित्य की माहिर) औरत थीं। इनका क़िस्सा हम उन औरतों के लिए बयान करते हैं जिनका शौहर से झगड़ा हो जाए। किसी क़िस्म की नाचाक़ी गर्मा-गर्मी हो जाए तो उस वक़्त उनको क्या करना चाहिए।

कहती हैं कि अल्लाह की क़सम! मेरे ही बारे में और औस बिन सामित के बारे में सूरः मुजादला के शुरू का हिस्सा अल्लाह की तरफ़ से उतरा।

वह इस तरह कि मैं उनके पास थी और वह बड़ी उम्र के हो चुके थे। अब मिज़ाज में चिड़चिड़ापन आ गया था। एक दिन किसी बात में मेरी उनसे अन-बन हो गई तो उन्होंने यह कह दिया:

انت علی کظهر امی.

तर्जुमाः तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी माँ की पीठ।

फिर कुछ देर बाद उन्होंने मेरे नज़दीक होना चाहा तो मैंने कहा:

كلا والذی نفسی بیده لا تخلص الیّ.

तर्जुमाः हरगिज़ नहीं! खुदा की क़सम अब तुम मेरे पास नहीं आ सकते।

चूँकि अब तुमने यह बात कह दी है। यानी पहले हम मसला मालूम करेंगे इसलिए पहले हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका फ़ैसला कराएँगे।

कहती हैं कि उन्होंने मुझ पर ग़लबा पाने की बड़ी कोशिश की, लेकिन मैं उन पर ग़ालिब आ गई। जैसे एक औरत बूढ़े मर्द पर ग़ालिब आ जाती है। मैंने उनको अपने से दूर कर दिया। यहाँ तक कि मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और उनकी सारी शिकायतें

बयान करना शुरू कर दीं। और बड़े ही सुलझे हुए अन्दाज़ में शिकायत की जिसको हदीस की किताब इब्ने माजा व हाकिम ने आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से इन अलफ़ाज़ में रिवायत किया है।

يا رسول الله! اكل شبابي ونثرت له بطني، حتى اذا كثرسني، وانقطع ولدي، ظاهرمني اللّهم اني اشكو االيك.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह के रसूल! जवानी अब मेरी बोसीदा हो चुकी है। अपने जिस्म को उसके लिए बिछाए रखा। दिल व जान से उसकी ख़िदमत की। अब मैं उम्र की आख़िरी मन्ज़िलें तय कर रही हूँ और अब मेरे बच्चे मुझसे अलग हो रहे हैं। अब बच्चों को अगर अपने पास रखूँ तो भूखे मरेंगे, उसके पास छोड़ूँ तो यूँ ही बेकसी की हालत में बरबाद हो जाएँगे। फिर अल्लाह तआला से यूँ दुआ शुरू की, ऐ अल्लाह! तू (अपने नबी की ज़बान से) मेरी मुश्किल को हल फ़रमा। ऐ अल्लाह! मैं अपनी तन्हाई और मुसीबत की फ़रियाद तुझ ही से करती हूँ।

यह बात कहती रही यहाँ तक कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ये आयतें लेकर उतरेः

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا، وَتَشْتَكِيْ اِلَى اللّٰهِ، وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا، اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ○ (سورة المجادلة پ ٢٨)

तर्जुमाः सुन ली अल्लाह ने बात उस औरत की जो झगड़ती थी तुझसे अपने शौहर के हक़ में। और शिकवा व ज़ारी (रोना-धोना) करने लगी अल्लाह के आगे। और अल्लाह सुनता था सवाल व जवाब तुम दोनों का। और अल्लाह तआला तो सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (तो उसकी बात को कैसे न सुनता)।

(मआरिफुल्-कुरआन पेज 231 जिल्द 8)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

يا خولة! ابن عمك شيخ كبير فاتقي الله.

तर्जुमाः ऐ ख़ौला! तेरे चचा का बेटा अब कमज़ोर हो चुका है, अब तू अल्लाह से डर (उनके बारे में) उनकी तकलीफ़ों पर सब्र कर।

फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) उतरी और आपने फ़रमाया ऐ ख़ौला? तुम्हारे और तुम्हारे शौहर के बारे में अल्लाह ने अहकामात नाज़िल फ़रमा दिए। अब अपने शौहर को कहो कि अपनी कही हुई बात की तलाफ़ी के तौर पर एक ग़ुलाम या बाँदी आज़ाद करे। वह कहने लगी उसके पास तो आज़ाद करने के लिए कोई ग़ुलाम या बाँदी नहीं।

नबी पाक ने फ़रमाया उससे कहो कि दो महीने के लगातार रोज़े रखे। कहने लगी वह तो बहुत बूढ़े हैं, वह इसे बरदाश्त नहीं कर सकेंगे। तो फ़रमाया साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त पेट भरकर खाना खिलाए। कहने लगी ऐ अल्लाह के रसूल! यह भी उसके पास नहीं। तो फ़रमाया हम खजूर का गुच्छा देकर तेरी मदद करेंगे वह मिस्कीनों को खिला दे। तो कहने लगी कुछ खजूर के गुच्छे में भी देकर अपने शौहर की मदद करूँगी यहाँ तक कि साठ मिस्कीनों के लिए यह मात्रा पूरी हो जाए।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

قد اصبت واحسنت فاذهبى فتصدقى به عنه، ثم استوصى بابن عمك خيراً.

तर्जुमाः तुमने सही किया और अच्छा किया। अब जाओ उसकी तरफ़ से इन चीज़ों का सदक़ा कर दो, और अपने चचा के बेटे (शौहर) के साथ अच्छा बर्ताव करो।

फ़ायदाः आपने पहचाना यह कौन थीं? यह ख़ौला बिन्ते सालबा थीं। इनकी आवाज़ को रब्बुल-आ़लमीन ने अ़र्श पर सुना। यानी उनकी आ़जिज़ी को क़बूल किया और सुनते तो वह सब की हैं। और रहती दुनिया तक के लिए कुरआन पाक के मुबारक अलफ़ाज़ में इनका तज़किरा सारी औरतों के लिए इ़ज़्ज़त व मुसर्रत का सबब रहेगा।

इसी लिए एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जबकि वह गधे की सवारी पर जा रहे थे, आस-पास लोग थे, रास्ते में ख़ौला ने उनको रोका और उनसे कुछ कहना चाहती थीं। आप रुक गए तो इस पर आप से लोगों ने कहा आप एक बुढ़िया की वजह से रास्ते में रुक गए? आपने फ़रमायाः

اَتَــدْ رون من هٰذه العجوز؟ هى خولة بنت ثعلبة، سمع الله قولها من فوق سبع سمٰوٰت، ايسمع رب العالمين قولها ولا يسمعه عمر.

तर्जुमाः क्या तुम जानते हो यह बूढ़ी औरत कौन है? यह ख़ौला बिन्ते सालबा हैं। अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सात आसमानों के ऊपर इनकी बात को सुना। मैं कौन था जो उनकी बात को टालता। क्या रब्बुल-आ़लमीन इस औरत की बात का जवाब दें और उमर इसका जवाब न दे?

यह तो था इस्लाम में मुसलमान बीवी का ईमानी मेयार और अल्लाह की ज़ात पर पूरा भरोसा कि उसको अगर तकलीफ़ पहुँची तो फ़ौरन अल्लाह से फ़रियाद करती जिसने यह मुश्किल भेजी है वही उसका हल भेजेगा। वह हर मुश्किल (तंगी) के बाद आसानी देता है। मुश्किल हालात का ज़ाहिर होना भी उसके हुक्म के ताबे है। उसी के हाथ में उनका हल भी है। वही हंसाता है वही रुलाता है वही ज़िन्दगी देता है वही मारता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى

तर्जुमाः बेशक वही अल्लाह है जो हंसाता है और वही रुलाता है।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيٰى.

और बेशक वही अल्लाह है जो मौत देता है और ज़िन्दा रखता है।

ख़ुशी या ग़म की कैफ़ियतें भेजना, हंसाना, रुलाना, ज़िन्दा करना और किसी को लड़का किसी को लड़की बनाना उसी का काम है, और यह कि उसके ज़िम्मे है दूसरी दफ़ा उठाना।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى.

और उसी ने किसी को ग़नी और किसी को फ़क़ीर बना दिया। दुनिया की सारी उलटफेर, बिगाड़ना व बनाना, ख़ैर व शर सब उसी के हाथ में है।

इसलिए मायूस न हों कैसे ही परेशानी वाले हालात हों अल्लाह से माँगिए। वुज़ू करिये, ध्यान के साथ दो रकअ़त नफ़िल पढ़िए और अल्लाह से अपनी शिकायत को कहिए जैसे हज़रत ख़ौला ने कहा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَشْكُوْ اِلَيْكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तुझ ही से शिकायत करती हूँ। ऐ अल्लाह! मैं अपनी तन्हाई और मुसीबत की फ़रियाद तुझ ही से करती हूँ। ऐ अल्लाह! घर वीरान हो गया, और औलाद परेशान हो गई। ऐ अल्लाह आप ही अपने नबी की ज़बान से मेरी मुश्किल को हल कर दीजिए।

और अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ○

तर्जुमाः ऐ ईमान वालो! अल्लाह ही से मदद तलब करो साथ सब्र के और नमाज़ के, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

इसलिए शौहर के घर की सभी शिकायात व परेशानियाँ अल्लाह ही से कहें और नमाज़ ध्यान के साथ पढ़कर अल्लाह से माँगें। अल्लाह ही से अपनी मुश्किलों का हल चाहें, वही हालात भेजने वाले हैं, वही हालात को सही करने वाले हैं। और अगर कोई ऐसा ग़म और परेशानी वाला हाल हो जो बहुत सताए तो यह भी हमारे प्यारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है कि उसे बयान कर दिया जाए। उसको दिल में छुपाकर न रखें। घर में कोई समझदार हो तो उससे बयान कर दिया जाए। उससे मश्विरा लें या अपने मेहरमों जैसे भाई बाप, चचा वग़ैरह उन लोगों से पूछ लें। इसलिए कि कुदरत ने इनसान के जिस्म में कुछ ऐसी चीज़ें रखी हैं कि अगर ग़मों को बयान नहीं करेगा, मुख़्लिस

दोस्तों से उसका हल नहीं चाहेगा, तो उस ग़म की तकलीफ़ को छुपाना कई तरह की जिस्मानी रूहानी, मनोवैज्ञानिक बीमारियों के पैदा होने या बढ़ने का सबब बन सकता है। समस्सयायों और परेशानियों का हल करने वाला तो अल्लाह ही है लेकिन उसी अल्लाह का हुक्म है, और उसी के नबी का तरीक़ा है कि मश्विरा कर लिया करें। बयान कर दिया करें। दिल में घुटते न रहें। अकेले-अकेले सोचते न रहें।

इसी लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जब पहली बार वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) नाज़िल हुई और पहली बार जिब्राईल अमीन अ़लैहिस्सलाम को देखा तो बहुत घबराए और परेशान हुए और आकर परेशानी को छुपाने के बजाय हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से बयान फ़रमा दिया। उन्होंने बहुत तसल्ली दी और अपने चचा के बेटे के पास ले गईं और उन दोनों के तसल्ली देने से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ग़म हलका हो गया।

और अगर किसी का शौहर या सास बहुत ही गुस्से वाले हैं और चिड़चिड़ापन मिज़ाज में आ चुका हो तो उनके खाने पर या पानी पर सात बार बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम पढ़कर दम करें, और इस तरह दम कर दें कि थूक के मामूली से ज़र्रात भी उसमें जाएँ। इसलिए कि मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने शरह मिश्कात में लिखा है. "दम करते वक़्त थूक के मामूली ज़र्रात भी गिर जाएँ" और बच्चा भी गुस्से वाला हो तो बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम सात बार पढ़कर उसके खाने पीनी की चीज़ों पर दम कर दें, इन्शा-अल्लाह चालीस दिन में इसका फ़ायदा दिखाई देगा, और सब घर वालों का मिज़ाज ठंडा हो जाएगा और सब एक-दूसरे के साथ मुहब्बत से रहेंगे। अल्लाह के पाक नाम में बहुत ही बरकत है।

बुढ़ापे की हालत में

शौहर के बारे में अल्लाह से डरना

हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा के वाक़िए से यह बात भी मालूम हुई कि अगर शौहर की उम्र ज़्यादा हो, या किसी भी वजह से मिज़ाज में चिड़चिड़ापन आ जाए। चाहे बीमार होने की वजह से, तो अब बीवी को उनकी बातों पर सब्र करना चाहिए। अगरचे कभी-कभी इस मर्हले पर बड़ी नागवारी होती है, इसलिए इस वाक़िए में भी यही है कि हज़रत ख़ौला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी शिकायत सुनने के बाद उनको यही नसीहत फ़रमाई कि अब तुम्हारे शौहर कमज़ोर हो चुके हैं, तुम उनके बारे में अल्लाह से डरो। यानी अब तो तुम्हें उनका ज़्यादा ख़्याल रखना चाहिए। अब उनकी कड़वी बातों पर सब्र करोगी तो बहुत सवाब मिलेगा।

जब जवानी होती है, मिज़ाज ठीक होता है, सेहत अच्छी होती है। उस वक़्त तो सब हाज़िर-हाज़िर कहते हैं। लेकिन नेक बीवी का कमाल तो यह है कि जब परेशानी आए तकलीफ़ हो, जब बरदाश्त करना मुश्किल हो, तो अल्लाह से सवाब लेने की उम्मीद में और अल्लाह तआला को राज़ी करने के जज़्बे से अब शौहर की ख़िदमत करें। उनकी हर कड़वी बात को 'जी हाँ' की मीठी गोली समझकर निगल लें। उनकी हर फ़रमाईश को 'जी हाँ-जी हाँ' कहकर पूरी कर दें। उनकी हर ख़्वाहिश और चाहत को समझने की कोशिश करें और उनके कहने से पहले ही उनकी मन-पसन्द चीज़ ख़िदमत में पेश कर दें। जिन कामों से उनको परेशानी होती है वे बिल्कुल न करें। और फिर भी उनको कोई बात बुरी लगे तो फ़ौरन माज़िरत का लहजा इख़्तियार कर लें।

और अगर बीवी को ज़्यादा गुस्सा आए तो यह सोच ले कि अल्लाह के भी हमारे ऊपर हुक़ूक़ हैं और हमसे उनके हुक़ूक़ के अदा करने में

ग़लती और कोताही होती रहती है। जब वह हमें माफ़ करते रहते हैं तो हमको भी चाहिए कि शौहर की ग़लतियों से दरगुज़र करें। इस तरह बरदाश्त करने और सब्र करने से दीन का बड़ा भारी नफ़ा होता है और बहुत अज्र मिलता है।

अगर वाक़ई मर्द की ग़लतियों पर ग़ुस्सा आए तो औरत को क्या करना चाहिए?

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: बीबियो! तुमको मर्द के गुस्से की वजह से गुस्सा आना यह बतलाता है कि तुम अपने आपको मर्द से बड़ा या बराबर दर्जे का समझती हो। क्योंकि गुस्सा हमेशा अपने से छोटे या बराबर वाले पर आया करता है, और आदमी जिसको अपने से बड़ा समझता है उस पर कभी गुस्सा नहीं आता।

चुनाँचे नौकर को आक़ा पर गुस्सा नहीं आ सकता। अगर तुम अपने को मर्द से छोटा और महकमू समझो तो चाहे वह कितना ही गुस्सा करता तुमको हरगिज़ गुस्सा न आता। पस तुम इस ग़लत ख़्याल को दिल से निकाल दो। और जैसा ख़ुदा ने तुमको बनाया है वैसा ही अपने को मर्द से छोटा समझो और मर्द की वाक़ई ग़लती और बेवजह उसका गुस्सा उतर जाए तो उस वक़्त कहो कि मैं उस वक़्त तो बोली न थी, अब बतलाती हूँ कि आपकी फुलाँ बात ग़लत थी, बेजा थी, या ज़्यादती की थी।

आपने आते ही डाँटना शुरू कर दिया। आप मुझसे पूछ तो लेते। पूरी बात समझ लेते। आगे की मेरी बात भी सुन लेते तो अच्छा रहता। इस तरह करने से बात भी न बढ़ेगी और मर्द के दिल में भी आपकी समझदारी व होशियारी व नेकी का न मिटने वाला सिक्का जगह बना लेगा और आपकी और ज़्यादा क़द्र होगी और ज़्यादा इज़्ज़त होगी।

(वअ़ज़ हुक़ूक़ुल-बैत पेज 51)

शौहर बीवी दोनों का कसूर और दोनों को तंबीहात

आपने देखा हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा भी गुस्से में आ गईं। जिसकी बिना पर शौहर ने ऐसे शब्द कह दिये कि तुम तो मुझ पर ऐसी हो जैसे मेरी माँ की पीठ। लेकिन इसमें तो सिर्फ़ 'ज़िहार' हुआ और कफ़्फ़ारा अदा करके दोबारा बीवी बन गई। लेकिन बहुत सी बार बीवी चुप नहीं होती बोलती ही रहती है, मुँहज़ोरी ज़बान-दराज़ी करके अपनी ग़लतियों और कोताहियों की सफ़ाई पेश करती ही रहती है। अपनी ग़लती किसी हाल में मानने के लिए तैयार नहीं होती तो शौहर मार-पीट करने और हाथ उठाने पर तैयार हो जाता है।

इसके बावजूद अगर चुप नहीं होती, माफ़ी का एक लफ़्ज़ ही नहीं बोलती कि ग़लती हो गई आईन्दा ऐसा नहीं होगा, आईन्दा ऐसा नहीं करूँगी, माफ़ कर दीजिए। दिल में न रखिए। भूल जाईए। मैं भूल गई। काम-काज के बोझ की वजह से ग़लती कर बैठी, मेरी अपनी ही कोताही है लेकिन आगे ख़्याल रखूँगी। तो फिर झगड़ा इतना लम्बा हो जाता है कि शौहर के मुँह से तलाक़ के अलफ़ाज़ निकल जाते हैं, जो सिर्फ़ एक घर में नहीं बल्कि कई ख़ानदानों में आग लगा देते हैं। कई ख़ानदानों की इज़्ज़त को ज़िल्लत से बदल देते हैं। औलाद और औलाद की औलाद तक, इसके जरासीम का असर जाता है। भाईयों और बहनों पर इस कीचड़ के छींटे पड़ते हैं। उनके ससुराल वालों को बातें बनाने का मौक़ा मिलता है कि फ़ुलाँ के भाई ने तलाक़ दे दी, फ़ुलाँ की बहन ने तलाक़ ले ली, फ़ुलाँ के चचा ने तलाक़ दे दी, फ़ुलाँ की बेटी घर नहीं चला सकी, फ़ुलाँ की माँ शौहर के साथ निबाह नहीं कर सकी।

इसलिए हज़रत हकीमुल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि औरतें भी इस हुक्म को अच्छी तरह सुन लें, यह भी एक आम रोग है कि औरतों में मिज़ाज पहचानने की

सिफ़त बहुत कम होती है। बहुत सी बार मर्द खुश नहीं होता है और बीवियाँ उसको जवाब दिये चली जाती हैं। बात को दबाती नहीं बल्कि बढ़ाए जाती हैं। लड़ाई झगड़े की आग को बुझाती नहीं बल्कि और भड़काती हैं। अगर बीवी या शौहर चुप हो जाए तो फ़ौरन झगड़ा ख़त्म हो जाएगा। यहाँ तक कि उस वक़्त वह गुस्से में तलाक़ दे बैठता है।

ऐसे वाक़िआत बहुत हुए हैं कि गुस्से में तलाक़ हो गई बाद में दोनों मियाँ-बीवी पछताए। इससे सिर्फ़ उसके घर वालों को ही नहीं बल्कि कई ख़ानदानों को आग लग गई। (आदाबे इनसानियात पेज 213)

और कई औरतें बेहूदा होती हैं कि खड़े-बैठे मर्द से कहती हैं कि तलाक़ दे दे, बस तू और क्या करेगा? औरतें और मर्द सब याद रखें कि तलाक़ का शब्द ही ज़बान पर न आने दें। हंसी में हो या गुस्से में हो। यह लफ़्ज़ ऐसा है जैसे भरी हुई बन्दूक़ को हंसी में दबाओ तब भी गोली लग जाएगी, और गुस्से में दबाओ तब भी गोली लग जाएगी। जब आदमी मर गया तो कहो कि मैंने तो ग़लती से गुस्से में दबा दी थी।

गुस्से में बेक़ाबू हो जाने को शरीअत या कोई क़ानून उज़्र नहीं मानता। अपने गुस्से को क़ाबू में रखे और वह तदबीरें पहले से मालूम कीजिए जो उस वक़्त काम दें, जिनसे गुस्सा ठंडा होता है। शरीअत ने यह तालीमें बेकार नहीं दीं, आप ही के काम के लिए सिखलाई हैं।

अब हम यहाँ आपके सामने दो मुख़्तसर मसले मिसाल के तौर पर मियाँ-बीवी दोनों की ग़लतियाँ बताने के लिए पेश करते हैं। आप ही पढ़कर फ़ैसला कीजिएगा और ऐसी ग़लतियों से बचते रहिएगा।

ऐसे मामलात से मुताल्लिक़ कई मसाईल दारुल-इफ़्ता में रोज़ाना आते हैं, जिनमें दोनों अगर थोड़ी सी एहतियात कर लें तो अच्छा-भला बाग़, हरा-भरा गुलशन झुलसने न पाये। अल्लाह तआ़ला मियाँ-बीवी को तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हर क़िस्म के शैतानी नफ़्सानी हर्बों से और जज़्बाती कड़वाहट, नाराज़गी, बे-ढंगेपन, ज़बान-दराज़ी, अन्जाम से लापरवाही, ताने देने, मलामत व ज़िल्लत के असबाब से हिफ़ाज़त

फ़रमाए। आमीन

अब हम मियाँ-बीवी की मामूली सी छोटी सी ग़लती जो माचिस की तीली के बराबर है, लेकिन पूरे घर को इस तरह आग लगा देती है कि किसी के वहम व गुमान में भी नहीं होता कि इतनी छोटी सी बात बढ़कर ऐसी तबाही मचाएगी। वह हम अब मुकालमे (आपसी गुफ़्तगू) के अन्दाज़ में पेश करते हैं ताकि आप इसमें एहतियात करें और शौहर के सामने ज़बान-दराज़ी या गुस्से का जवाब गुस्से से देना और हर ग़लती का कोई न कोई जवाज़ फ़ौरन पेश कर देना, अपनी ग़लती का इक़रार न करना वग़ैरह आदतों से अपने आपको बचाना होगा। क्योंकि इस क़िस्म की बातें इस रिश्ते के लिए जानलेवा ज़हर है। इसलिए इससे दोनों मियाँ-बीवी को बहुत ज़्यादा बचते रहने का एहतिमाम करना चाहिए।

मुकालमा और मुनाज़रा

1. शौहर थक कर गर्मी बरदाश्त करते हुए परेशान-हाल घर पर आया। घन्टी बजाई, बीवी साहिबा गुस्लख़ाने (बाथरूम) में थीं। दरवाज़ा खोलने में देर लगी। अब जब दरवाज़ा खोला तो अन्दर आकर शौहर ने दरवाज़ा ज़ोर से बन्द किया।

शौहरः अबे जाहिल कहीं की, जंगली तुम्हें ख़्याल नहीं आया कि आधे घन्टे से घन्टी बजा रहा हूँ। धूप से बाहर खड़ा नहीं हुआ जा रहा और तुम्हें परवाह ही नहीं।

बीवीः जंगली तुम हो या मैं! कोई दो मिनट सब्र नहीं कर सकता। मैं बाथरूम में थी। अभी तो मैंने घन्टी की आवाज़ सुनी, और तुमको तो दरवाज़ा बन्द करना नहीं आता, इतने ज़ोर से बन्द करते हैं?

शौहरः अबे नालायक़ तुम्हें पता नहीं यह वक़्त मेरे आने का है। अभी गुस्ल करना ज़रूरी था?

बीवीः तुम्हें क्या पता कि कितने काम होते हैं सुबह से, बच्चे चैन से नहीं रहने देते और फिर तुम आकर एक अलग मुसीबत बनते हो।

ज़रा एक दिन मेरी तरह काम करके तो देखो।

शौहरः अच्छा मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। तुम चली जाओ अपनी अम्मी के घर।

दूसरी मिसाल

2. शौहर ने बीवी से कहाः चाय बना दो। अब चाय बनने के बाद काफ़ी पत्ती प्याली में रह गई, छानने में ख़्याल नहीं रखा गया।

शौहरः नालायक़! चाय पकाना भी तुमने नहीं सीखा, यह भी मैं तुमको सिखाऊँ?

बीवीः क्यों क्या हुआ?

शौहरः यह देखो कितनी सारी पत्ती बची हुई है प्याली में।

बीवीः तो इतना भी तुमसे बरदाश्त नहीं होता, खुद ज़रा पका कर देखो पता चले, आर्डर देना तो बहुत आसान है, तुम्हारा ख़्याल रखूँ बच्चों को जवाब दूँ खाना पकाऊँ क्या-क्या करूँ?

शौहरः अरे बेवक़ूफ़ बदतमीज़! मेरे सामने बोलती हो। शर्म नहीं आती। अब तुम मेरे घर में नहीं रह सकती, निकल जाओ।

इतनी छोटी सी बात पर लम्बा चौड़ा झगड़ा हुआ। अड़ोस-पड़ोस वाले जमा हो गए और ग़ुस्से में मर्द ने बीवी को ऐसे अलफ़ाज़ बोल दिए जो नहीं बोलने चाहिएँ थे, और मियाँ-बीवी में हमेशा के लिए जुदाई हो गई।

अब आप ही इन्साफ़ कीजिए और पूरे वाक़िए पर ग़ौर कीजिए। एक अगर ख़ामोश हो जाता तो बात दूर तक न पहुँचती, फ़ैसला हम आप पर छोड़ते हैं।

अगर आप (पढ़ने वाले) शौहर हैं तो अपने आपको ऐसी ग़लती से बचाईये। और आप (यानी पढ़ने वाली) बीवी हैं तो भी अपनी ग़लती समझकर ऐसी ग़लती से बचिए। अल्लाह तआला आपको और सारी बहनों और भाईयों को ऐसी ग़लती से हिफ़ाज़त फ़रमाए। किसी के घर

लड़ाई-झगड़े की आग न लगे। हमने अपनी अम्मी जान और घर की बड़ी औरतों से यह दुआ़ अक्सर सुनी है।

"अल्लाह तआ़ला दुश्मन के घर में भी मियाँ-बीवी में झगड़े से हिफ़ाज़त फ़रमाए।"

याद रखिए! मियाँ-बीवी में ना-इत्तिफ़ाक़ी व नाचाक़ी से दीन व दुनिया के सारे काम ख़राब हो जाते हैं।

मसलाः उलेमा ने लिखा है कि अच्छा तरीक़ा यह है कि एक बार घन्टी बजाने के बाद इतना इन्तिज़ार करे कि अगर बीवी ने चार रकअ़त की नीयत की होगी तो वह पूरी नमाज़ पढ़कर दरवाज़ा खोलने आ सके। उसके बाद दूसरी बार घंन्टी बजाए। फिर तीसरी बार बजाए। यही हुक्म आ़म मुसलमानों के लिए है। आ़म मुसलमानों के लिए किसी घर में घुसने और इजाज़त माँगने के आदाब अब हम किताब "इस्लाम और तरबियते औलाद" से नक़्ल कर रहे हैं, ताकि घर के बड़े ख़ुद भी उन पर अ़मल करें और बच्चों को भी सिखाएँ।

इजाज़त माँगने के आदाब

(1) पहले सलाम करे फिर इजाज़त माँगे

इसलिए कि इमाम अबू दाऊद रिवायत करते हैं कि बनू-आ़मिर के एक साहिब ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इजाज़त माँगी, आप घर में थे, उन साहिब ने अ़र्ज़ कियाः

"क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने ख़ादिम से इरशाद फ़रमायाः उन साहिब के पास जाकर उनको इजाज़त माँगने का तरीक़ा सिखाओ और उनसे कहो कि वह यूँ कहें: "अस्सलामु अ़लैकुम! क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?"

उन साहिब ने यह बात सुन ली और फ़ौरन अ़र्ज़ कियाः अस्सलामु अ़लैकुम! क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने उनको आने की इजाज़त दे दी और वह अन्दर आ गए।

(2) इजाज़त तलब करते वक़्त अपना नाम या कुन्नियत या लक़ब ज़िक्र करना चाहिए

इसलिए बुख़ारी व मुस्लिम में मेराज से मुताल्लिक़ मशहूर हदीस में यह आता है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः फिर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मुझे आसमाने दुनिया की तरफ़ ले गए और वहाँ जाने की इजाज़त माँगी तो उनसे पूछा गया कि कौन है? तो उन्होंने फ़रमायाः जिब्राईल। पूछा आपके साथ और कौन है? उन्होंने कहाः मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। फिर मुझे दूसरे आसमान पर ले गए और फिर तीसरे पर, और हर आसमान के दरवाज़े पर यही सवाल होता कि कौन है? वह कहतेः जिब्राईल।

और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू-मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक बाग़ के कुएँ पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु तशरीफ़ लाए और इजाज़त माँगी तो हज़रत अबू-मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछा कौन साहिब हैं? उन्होंने फ़रमायाः अबू-बक्र। फिर हज़रत उमर तशरीफ़ लाए और इजाज़त माँगी, तो उन्होंने पूछा कौन हैं? उन्होंने फ़रमायाः उमर। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु तशरीफ़ लाए और उन्होंने भी इसी तरह किया।

और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमायाः मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और दरवाज़ा खटखटाया तो आपने फ़रमायाः कौन है? मैंने अ़र्ज़ कियाः मैं हूँ। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मैं हूँ-मैं हूँ क्या होता है? ऐसा मालूम होता था कि गोया "मैं" बोलना यानी ऐसा नामुकम्मल जवाब देना आपको नापसन्द हुआ।

नोटः इसलिए हमें चाहिए कि नाम बताएँ कि मैं फुलाँ हूँ आप से या फुलाँ से मिलना चाहता हूँ।

(3) तीन बार इजाज़त माँगनी चाहिए

इसलिए कि बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू-मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः इजाज़त तीन बार माँगनी चाहिए। फिर अगर इजाज़त मिल जाए तो बहुत अच्छा वरना वापस हो जाओ।

अच्छा यह है कि पहली बार और दूसरी बार और तीसरी बार इजाज़त माँगने के बीच इतना वक़्फ़ा (अंतराल) होना चाहिए कि जिसमें इनसान चार रक्अ़त पढ़ ले। इसलिए कि हो सकता है कि जिससे इजाज़त तलब की जा रही है वह नमाज़ पढ़ रहा हो, या इनसानी ज़रूरत के पूरा करने (यानी लेट्रीन वग़ैरह) के लिये गया हो।

(4) बहुत ज़ोर से दरवाज़ा नहीं खटखटाना चाहिए

ख़ास तौर पर उस वक़्त जब उस मकान का मालिक इसका बाप हो या उस्ताद हो, या और कोई बुज़ुर्ग हो। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपनी किताब "अल्-अद्बुल् मुफ़रद" में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरवाज़े को उंगलियों से खटखटाया जाता था, और पहले के नेक लोग अपने बुज़ुर्गों के दरवाज़ों को नाख़ुन से खटखटाया करते थे। जिससे यह साफ़ मालूम होता है कि वे कितने अदब वाले थे और दूसरों का किस क़द्र एहतिराम व इज़्ज़त किया करते थे।

यह तरीक़ा उस शख़्स के लिए तो बहुत अच्छा है जिसकी बैठक दरवाज़े के क़रीब ही हो। लेकिन जिसका कमरा वग़ैरह दरवाज़े से दूर हो तो उसका दरवाज़ा इतनी ज़ोर से खटखटाना चाहिए जिससे मक़सद हासिल हो जाए। और घर वाला उसकी आवाज़ सुन ले। और अगर दरवाज़े पर आजकल की तरह घन्टी लगी हो तो उसे आराम से धीरे से

बजाना चाहिए ताकि अन्दर वालों को घन्टी बजाने वाले की नर्म-मिज़ाजी, उम्दा अख़्लाक़ और हुस्ने-मामला का अन्दाज़ा हो जाए।

गुस्सा कम करने की तदबीरें

इसलिए बीवी को चाहिए कि शौहर जब गुस्से में हो तो अपने ऊपर और अपनी औलाद पर रहम खाते हुए अपने ख़ानदान की लाज रखते हुए फ़ौरन माफ़ी माँगकर उसके मिज़ाज को ठण्डा कर दे। अगरचे अपनी ग़लती न हो। उस वक़्त जवाब बिल्कुल न दे, और न बिल्कुल ख़ामोश रहे बल्कि माफ़ी माँगती रहे। अपनी ग़लती का इक़रार करे, इत्मीनान दिलाए कि आगे से ऐसा नहीं होगा और इन तदबीरों पर अ़मल करे।

1. शौहर और बच्चों को घर में घुसने की दुआएँ सिखाए और उस पर अ़मल करवाए कि जब घर में आओ तो:

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ، بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम।

और सूरः इख़्लास (कुल हुवल्लाह......) दुरूद शरीफ़ और दुआ़ पढ़कर (यानी माँगकर) सलाम करके घुसें। दुआ में मायने का ख़्याल करके अल्लाह से माँगे। दुआ़ यह है।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰہِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰہِ خَرَجْنَا وَعَلَی اللّٰہِ رَبِّنَا تَوَکَّلْنَا (ابوداؤد ص۲۳۹ ج۲)

अ़ल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ैरल्-मौलजि व ख़ैरल्-मख़्रजि बिस्मिल्लाहि वलज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अ़लल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं घर में आने और घर से निकलने की बेहतरी व भलाई चाहता हूँ। अल्लाह के नाम के साथ हम अन्दर आए और उसका नाम लेकर हम निकले, और अल्लाह पर जो हमारा परवर्दिगार है हमने भरोसा किया।

याद रखें! दुआएँ सिर्फ़ पढ़ने के लिए नहीं होतीं बल्कि माँगने के लिए होती हैं। दुआएँ मायने और मतलब समझ कर माँगी जाएँ। अगर बच्चे, बड़े घर में दाख़िल हुए और शैतान से पनाह नहीं माँगी, दुआ माँग कर अन्दर न आए तो शैतान घरों में घुस जाते हैं और फिर बच्चों में और मियाँ-बीवी में झगड़ा करवाते हैं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब इनसान अपने घर में घुसे तो अल्लाह का ज़िक्र करे, और खाने के वक़्त भी अल्लाह का ज़िक्र करे, तो शैतान अपने साथियों से यूँ कहता है कि तुम न यहाँ रात को रह सकते हो, न इन लोगों के रात के खाने में से कुछ पा सकते हो।

और अगर घर में घुस्ते वक़्त अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि यहाँ तुम्हें रात को रहने का मौक़ा मिल गया। और अगर खाने के वक़्त (भी) अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं किया तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि यहाँ तुम्हें रात को रहने के साथ साथ खाने को भी मिल गया। (मुस्लिम शरीफ़, अबू दाऊद)

नोटः हर वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र कैसे करें और किन-किन अलफ़ाज़ से करें इसके लिए हर मुसलमान मर्द औरत को चाहिए किः

(1) **मस्नून दुआएँ** ...... मौलाना आशिक़ इलाही साहिब दामत बरकातुहुम

(2) **हिस्ने-हसीन** ...... तर्जुमा व व्याख्या मौलाना आशिक़ इलाही दामत बरकातुहुम

ये दो किताबें अपने पास रखे। खुद भी उनमें से याद करे और बच्चों को भी याद करवाए। इसी तरह उलेमा की तरफ़ से तस्दीक़ शुदा और मोतबर वज़ीफ़ों की कोई किताब अपने पास रखें।

2. जब शौहर गुस्से में हो या खुद को भी ज़्यादा गुस्सा आए तो "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम" पढ़े।

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह चाहती हूँ/चाहता हूँ शैतान मरदूद से। और फ़ौरन पानी पी ले। और अगर शौहर गुस्से में हो तो उसको भी पानी पिलाए।

पहला इलाज

गुस्से का इलाज वुज़ू है

3. हदीस में हुक्म है कि अगर खड़े होने की हालत में गुस्सा आए तो बैठ जाए। बैठा हो तो लेट जाए। इसलिए गुस्से के वक़्त मियाँ-बीवी एक दूसरे को याद दिलाएँ कि आप बैठ जाएँ या लेट जाएँ। पानी पी लें, वुज़ू कर लें, और गुस्सा ख़त्म करने के लिए इन चीज़ों को सोचें और एक दूसरे को वक़्त पर याद दिलाएँ।

गुस्सा अक़्ल को ख़त्म कर देता है। कई क़िस्म की बीमारियाँ पैदा कर देता है। आपस में दुश्मनी पैदा करता है। अगर गुस्से को पी लें तो बहुत बड़ा सवाब है। इसको दबा लें तो इसका बहुत बड़ा अज्र है। अगर गुस्से में शौहर बेक़ाबू हो जाए तो शौहर उस वक़्त सुधारक होने के बजाए खुद ही मुजरिम बन जाते हैं। इसलिए शौहर के सामने बीवी का कितना ही बड़ा जुर्म आए अपनी अक़्ल व तवाज़ुन (मिज़ाज के सन्तुलन) में फ़र्क़ न आने दें। अगर आप माँ हैं, बच्चों की मुअ़ल्लिमा (टीचर) हैं, तो यही हिदायात आपके लिए भी हैं।

कुरआन हकीम की हिदायत के मुताबिक़ दूसरा फ़र्ज़ यह है कि किसी बेसोची-समझी हरकत के बजाए ग़ौर और फ़िक्र से काम लिया जाए और इस्लाही नुक़्ता-ए-नज़र को सामने रखकर ऐसा रास्ता इख़्तियार किया जाए जो सबसे बेहतर और सबसे ज़्यादा असरदार हो। यानी जिसका नतीजा यह हो कि एक तरफ़ बीवी या बच्चे शागिर्द या मुलाज़िम में शर्मिन्दगी और ग़लती पर एहसास पैदा होने लगे और दूसरी तरफ़ शौहर और बाप और उस्ताद की तरफ़ से ग़म और गुस्से के बजाए मुहब्बत और शफ़क़त पैदा हो। बीवी और बच्चे, आपसे नफ़रत

करने के बजाए पहले से ज़्यादा आपके गिर्वीदा हो जाएँगे। कुरआन हकीम की यह तालीम हमेशा याद रखनी चाहिए।

बुराई को ऐसी सूरत में जो बहुत ही हसीन हो दूर करो। अगर तुमने बुराई दूर करने के लिए सोच-समझकर ऐसी सूरत इख़्तियार की जो सबसे ज़्यादा अच्छी और उम्दा है तो नतीजा यह होगा कि जिसको तुमसे दुश्मनी थी वह ऐसा हो जाएगा जैसे कोई बहुत गहरा मुख़्लिस दोस्त।

दूसरा इलाज

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

من كظم غيظًا وهو يستطيع ان ينفذه دعاه اللّٰه يوم القيامة على

رؤوس الخلائق حتى يخيره فى اىّ الحور العين شاء. (ترمذی ص۲۲ ج۲)

तर्जुमा: जो शख़्स अपने गुस्से को नाफ़िज़ कर सकता हो लेकिन उसे पी जाए तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन सब मख़्लूक के सामने उसको बुलायेंगे। यहाँ तक कि उसे इख़्तियार देंगे कि जिस बड़ी आँखों वाली हूर को चाहे पसन्द कर ले।

ग़ौर कीजिए! कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है उसके लिये। सोचिए और गुस्से के वक़्त इसको ख़्याल में ले आईये कि इस गुस्से के घूँट को पी लूँगा तो जन्नत में हूरे-ऐन मिलेगी।

और अल्लाह तआ़ला मोमिन बन्दों के बारे में फ़रमाते हैं:

وَاِذَا مَاغَضِبُوْاهُمْ يَغْفِرُوْنَ (سورۃ شوریٰ پ۲۵)

तर्जुमा: जब उन्हें गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं।

और इसी तरह अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी, परहेज़गार लोगों की सिफ़ात बयान करते हुए फ़रमाते हैं:

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ، وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ

النَّاسِ، وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (پ۴ سورۃ آلِ عمران)

तर्जुमाः अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं: वह जन्नत जिसका फैलाव सारे आसमान और ज़मीन हैं। जो तैयार की गई हैं ऐसे मुत्तक़ी लोगों के लिए जो कि (नेक कामों में) ख़र्च करते हैं (हर हाल में) फ़राग़त में (भी) और तंगी में (भी) और ग़ुस्से पर क़ाबू करने वाले, और लोगों (की ग़लतियों) को माफ़ करने वाले हैं। और अल्लाह तआ़ला महबूब रखते हैं एहसान करने वालों को।

फ़ज़ाइले-सदक़ात में हज़रत शैख़ुल्-हदीस साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि लिखते हैं कि इस आयते शरीफ़ा में मोमिनों की एक ख़ास तारीफ़ यह भी ज़िक्र फ़रमाई कि ग़ुस्से को पीने वाले और लोगों को माफ़ करने वाले हैं, और मोमिनों की यह बड़ी ऊँची और ख़ास सिफ़त है।

उलेमा ने लिखा है कि जब तेरे भाई या बहन, बीवी या शौहर से ग़लती हो जाए तो उसके लिए सत्तर उ़ज़्र पैदा कर और फिर अपने दिल को समझा कि उसके पास इतने उ़ज़्र हैं और जब तेरा दिल उनको क़बूल न करे तो बजाय उस शख़्स के, तू अपने दिल को मलामत कर कि तुझमें किस क़द्र सख़्ती और बेरहमी है कि तेरा भाई, बहन, बीवी, या शौहर सत्तर उ़ज़्र पेश कर रहा है और तू उनको क़बूल नहीं करता?

और अगर तेरा भाई कोई उ़ज़्र करे तो उसको क़बूल कर, इसलिए कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि जिस शख़्स के पास कोई उ़ज़्र पेश करे और वह क़बूल न करे तो उस पर इतना गुनाह होता है जितना चुंगी के लिखने वाले को।

एक और हदीस में है कि आदमी ग़ुस्से का घूँट पी ले इससे ज़्यादा कोई घूँट अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा नहीं है।

तीसरा इलाज

इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अ़लैहि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमायाः

اذا غضب احدکم فلیسکت

तर्जुमाः जब तुम में से किसी शख़्स को गुस्सा आ जाए तो उसे चाहिए कि ख़ामोश हो जाए।

इसलिए गुस्से के वक़्त बीवी शौहर को ख़ामोश होने की तर्ग़ीब दे और याद दिलाए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म है कि गुस्से के वक़्त ख़ामोश हो जाए और हम और आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात मानेंगे इसी में हमारी कामयाबी है। ख़ुदा के वास्ते आप चुप हो जाईए। मुझे माफ़ कर दीजिए। अब आगे से आपके मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं होगा, अब ख़ामोश हो जाईए। किसी और काम में लग जाईए। इसको भूल जाएँ वक़्त वक़्त पर एक दूसरे को याद दिलाएँ कि गुस्सा बुरी चीज़ है यह तो आग है इसलिए गुस्से के वक़्त बिलकुल ख़ामोश हो जाईए।

चौथा इलाज

थोड़ी देर के लिए घर के बाहर चक्कर लगा लिया कीजिए। शौहर मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नफ़िल पढ़कर आ जाए। कुरआन पढ़ने लग जाए। उस जगह से हट जाए।

इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अ़लैहि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमायाः

الا ان الغضب جمرة تتوقد فی قلب ابن آدم، الا ترون الی انتفاخ

اوداجه واحمرار عينيه، ومن احس من ذلك شيئا فالارض الارض.

तर्जुमाः सुन लो, गुस्सा एक अंगारा है जो इनसान के दिल में सुलगता है। क्या तुम गुस्सा होने वाले शख़्स की रगों के फूलने, और उसकी आँखों के लाल होने को नहीं देखते हो? पस जो शख़्स इसमें से कोई चीज़ महसूस करे तो उसे चाहिए कि ज़मीन को लाज़िम पकड़े, ज़मीन को लाज़िम पकड़े। यानी ज़मीन पर लेट जाए और क़ब्र को सोचे, ताकि अपनी असलियत व हक़ीक़त मालूम हो जाए।

(इस्लाम और तरबियते-औलाद पे 59 जिल्द 1)

पाँचवाँ इलाज

जिसको गुस्सा ज़्यादा आता हो उसका इलाज यह है कि एक काग़ज़ पर यह इबारत लिखकर ऐसी जगह लगा दे कि उस पर आते-जाते नज़र पड़ती रहे। वह इबारत यह है:

"अल्लाह तआला को तुझ पर इससे ज़्यादा ताक़त है कि जितनी तुझको इस पर है।"

यानी तुझको बीवी पर, या बच्चों पर, या मुलाज़िमों पर, या शागिर्दों पर, या अपने नीचे वालों पर, जितनी कुदरत है, अल्लाह तआला को तुझपर उससे ज़्यादा कुदरत है। इसलिए ऐसा न हो कि सज़ा जुर्म से ज़्यादा दे दी। इस पर दुनिया औरं आख़िरत दोनों में पकड़ होगी। क़ियामत के दिन जुर्म और सज़ा को तौला जाएगा अगर बराबर-बराबर हुए तो छूट गए वरना पकड़ होगी।

गुस्सा उसी पर आता है जिसको अपने से कमज़ोर पाता है। और जब दूसरा ज़बरदस्त हो तो गुस्सा नहीं आता। बल्कि अगर तीसरा भी कोई ज़बरदस्त और बड़ा मौजूद हो तो उसके सामने भी गुस्सा नहीं आता। इसलिए जब इस लिखी हुई इबारत (मज़मून) को बार-बार देखेगा तो दिल व दिमाग़ में अल्लाह की बड़ाई का ध्यान बराबर रहेगा, तो फिर गुस्सा कहाँ आएगा।

छठा इलाज

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तुम में से जब किसी को गुस्सा आए, वह अगर खड़ा है तो बैठ जाए और अगर इससे गुस्सा न जाए तो लेट जाए। (अबू दाऊद पेज 303 जिल्द 2)

पूरा-पूरा यक़ीन है कि इससे आगे किसी तदबीर की ज़रूरत न होगी। क्योंकि जब आदमी खड़ा होता है तो ज़मीन से उसके जिस्म को दूरी होती है और बैठने में ज़मीन से निकटता हो जाती है, और लेटने में इससे भी ज़्यादा ज़मीन से मिल जाता है। और ज़मीन की तबीयत में

हक़ तआला ने इन्किसारी (आजिज़ी) रखी है। और वह इन्किसारी आदमी पर असर कर जाती है। और इन्किसारी गुस्से और तकब्बुर की ज़िद (यानी इनके विपरीत) है। तो गोया यह इलाज ज़िद से इलाज हुआ।

तजुर्बे से साबित है कि गुस्से में बेइख़्तियार जी यह चाहता है कि ऐसी शक्ल बनाए कि मारना पकड़ना कूटना आसान हो जाए। जैसे अगर लेटे हुए को गुस्सा आए तो बेइख़्तियार उठकर बैठ जाता है। और अगर इससे भी ज़्यादा गुस्सा हो तो खड़ा हो जाता है। तो गुस्से का तबई तक़ाज़ा यह है कि (आदमी लेटा हो तो बैठ जाए और बैठा हो तो खड़ा हो जाए) तो बैठने को गुस्से की असली शक्ल से कुछ दूरी है और लेटने को बहुत ज़्यादा दूरी है। तो यह तालीम ऐन फ़ितरी तालीम हुई कि गुस्से में अगर खड़े हो तो बैठ जाओ। और अगर बैठे हो तो लेट जाओ। (तोहफ़ा-ए-ज़ौजैन पेज 162)

बहरहाल! इन तदबीरों के ज़रिये गुस्से पर क़ाबू पाने की कोशिश करे, कि गुस्से की बुरी बला ने बहुत से ख़ानदान उजाड़ डाले। बहुत सों की रातों की नींद ख़राब की। बहुत सों के दिन के उजालों को बेनूर किया। बहुत सों की खुशियों पर पानी फेर दिया। बहुत सों की चूड़ियाँ तुड़वा दीं। बहुत सों के सर से साया हटा दिया। बहुत सों को मुहब्बत व शफ़क़त से मेहरूम कर दिया। बहुत सों के घर के चिराग़ बुझा दिये। बहुत सों के घर की मेनाओं को गूँगा कर दिया।

और इसमें सिर्फ़ शौहर के गुस्से को नहीं बल्कि शौहर के गुस्से के साथ बीवी का ज़बान-दराज़ होना, और गुस्से का जवाब गुस्से से देना, बुराई का जवाब बुराई से देना, डाँट का जवाब डाँट से देना, सेर का मुक़ाबला सवा-सेर से करना भी घर उजाड़ने के असबाब हैं। अल्लाह तआला हमारे मर्दों औरतों की इन सभी रूहानी बीमारियों से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

किसी का घर न उजड़े, किसी के घर में गुस्से व नाराज़गी में बरतन न टूटें, किसी के मासूम खिलौने न टूटें, किसी के घर की मेना

गूँगी न बने, किसी का तोता बे-ज़बान न बने। किसी का सुहाग उससे अलग न हो।

इन तदाबीर के अ़लावा झगड़ा ख़त्म ही न हो तो उलेमा और अपने बड़ों से ज़रूर मश्विरा कर लें।

बीवी में ज़बान-दराज़ी या बद्ज़बानी की बीमारी घातक ज़हर है

हज़रत हकीमुल-उम्मत रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हमारी औ़रतों में एक थोड़ी सी कसर है। अगर वह दूर हो जाए तो ये सच-मुच की हूरें बन जाएँगी। वह कसर यह है कि इनकी ज़बान बहुत ख़राब है। इनकी ज़बान वह असर रखती है जैसे कि बिच्छू के डंक की ज़रा सी हरकत में आदमी बिलबिला जाता है।

मर्द के साथ जब उनकी गुफ़्तगू होती है तो वह बेचारा उससे रंज ही उठाता है। वह क़ायदे के मुवाफ़िक़ गुफ़्तगू करता है और ये उलटी-सीधी हाँके चली जाती हैं। बस ज़बान चलाए जाएँगी चाहे एक बात भी मौक़े की न हो। अगर सिर्फ़ बोलने बक-बक (बकवास) करने का नाम मुनाज़रा है तो गधा बड़ा मुनाज़िर है। (इस्लाहे-ख़्वातीन पेज 183)

दुनिया की औ़रतें सच-मुच की हूरें बन सकती हैं: अगर............

अगर गुस्से में शौहर तुमको बुरा-भला कहे तो तुम बरदाश्त करो और बिल्कुल जवाब न दो। चाहे वह कुछ कहे तुम चुप बैठी रहो। देखना गुस्सा उतरने के बाद ख़ुद शर्मिन्दा होगा, और फिर कभी इन्शा-अल्लाह तआ़ला तुम पर गुस्सा न होगा। और अगर तुम बोल उठीं तो बात बढ़ जायेगी फिर न मालूम नौबत कहाँ तक पहुँचे। (बहिश्ती ज़ेवर पेज 41)

दर असल बात यही है कि औ़रतों की बद्ज़बानी बिगाड़ की जड़

है। यह ऐब औ़रतों से निकल जाए तो ये सच-मुच हूरें बन जाएँ

(वअ़ज़ किसाउन्निसा पेज 86 जिल्द 7)

यह दुनिया के बहुत बड़े इमाम, वक़्त के मुजद्दिद, हज़ारों किताबों के लेखक, इस दौर की औ़रतों की मनोवैज्ञानिक स्तिथि और उसके इलाज से अच्छी तरह वाक़िफ़, क़ुरआन व हदीस के उलूम के माहिर हज़रत हकीमुल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की नसीहत है। ख़ुदा करे औ़रतें इस पर अ़मल करके अपने घर को जन्नत बना लें

इसलिए कि यह ज़बान-दराज़ी (मौक़ा-बे-मौक़ा ज़बान चलाना) ऐसी बीमारी है जिसकी बिना पर सैकड़ों मर्द, औ़रतों की ज़बान-दराज़ी से तंग आकर ग़लत राह पर चल पड़े। बेवक़ूफ़ औ़रतें सिर्फ़ अपनी बद्ज़बानी से मेहरबान शौहरों को नामेहरबान बना देती हैं। शरीफ़ और हमदर्द शौहर का दिल बीवी की तरफ़ से सिर्फ़ इसलिए खट्टा हो जाता है, कि बीवी बक-बक करके हमेशा उसको परेशान और तंग करती रहती है। याद रखना चाहिए कि कोई भी शौहर अपनी बीवी की कड़वी बात बरदाश्त नहीं कर सकता। बीवी को ऐसी उम्मीद हरगिज़ नहीं रखनी चाहिए कि शौहर उसकी बद्कलामी को शर्बत का घूँट समझकर पी जाएगा।

औ़रत की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वह मीठी ज़बान बोलने वाली हो। ज़बान में मिठास एक ऐसा आकर्षक वस्फ़ और एक ऐसी दिलकश ख़ूबी है कि इससे अच्छे से अच्छे और बड़े से बड़े लोग भी ताबे हो जाते हैं। कहावत मशहूर है कि "ज़बान शीरीं तो मुल्क गीरी"। मीठी और शीरीं ज़बान से तो इनसान हाथी को भी एक बाल से बाँध सकता है। शीरीं-ज़बानी से इनसान जो चाहे कर सकता है। शीरीं-ज़बान (अच्छे लहजे और नर्म अन्दाज़ में बात करने वाली) औ़रत के ऐबों को भी लोग भूल जाते हैं। एक औ़रत में दुनिया भर की ख़ूबियाँ हों लेकिन अगर वह बद्ज़बान हो तो उसकी सारी ख़ूबियों पर पानी फिर जाता है। अगर

औरत चाहे तो शीरीं-ज़बानी (अपने मीठे बोलों) के जादू से नामेहरबान शौहर को भी मेहरबान बना सकती है।

शौहर के आराम का ख़्याल रखो

बीवी को चाहिए कि अपने शौहर का हर वक़्त ख़्याल रखे। उसके लिबास, ख़ुराक, आराम और तन्दुरुस्ती व सफ़ाई की तरफ़ से ग़ाफ़िल न रहे। शौहर की ख़ुशी को अपनी ख़ुशी और उसके ग़म को अपना ग़म समझे। बीवी को सबसे पहले यह जान लेना चाहिए कि शौहर का मिज़ाज कैसा है। वह किस बात से ख़ुश होता है। शौहर का हुक्म मानना उसका पहला और अहम फ़रीज़ा है और बीवी को चाहिए कि अपने शौहर की सारी ज़रूरतों की तरफ़ पूरी तवज्जोह दे। अक़्लमन्द औरतें ख़िदमत करके ही अपने शौहर को मुतास्सिर कर सकती हैं। ऐसा शौहर अपनी बीवी की हर ख़्वाहिश की क़द्र करता है और उसके किसी मुतालबे को रदद् नहीं करता। ऐसी ही औरतें सुख की ज़िन्दगी बसर करती हैं।

जो औरतें यह समझती हैं कि हम अपने हुस्न व जमाल (सुन्दरता) से ही अपने शौहर पर हुकूमत कर सकती हैं तो यह उनकी सख़्त ग़लत-फ़हमी और धोखा है। याद रखना चाहिए कि शौहर ख़ूबसूरत औरत का ग़ुलाम नहीं बनता बल्कि ख़िदमत का जज़्बा रखने वाली औरत का ग़ुलाम होता है। दिन भर का थका-मांदा शौहर जब शाम को घर आता है तो अपनी ख़िदमत-गुज़ार बीवी को देखकर सारी थकान ख़त्म हो जाती है।

शौहर को दोस्त बनाओ

वैवाहिक ज़िन्दगी का सही सुकून हासिल करना हो तो शौहर को अपना दोस्त बनाओ। औरत का अगर कोई सच्चा दोस्त हो सकता है तो वह उसका शौहर ही है। जो औरतें अपने शौहर को दोस्त नहीं समझतीं वे बड़ी ग़लती कर रही हैं। जब तक शौहर को दोस्त और

ख़ैरख़्वाह (भला चाहने वाला) न समझा जाए उस वक़्त तक दोनों के दिल एक नहीं हो सकते। जब एक दूसरे को दोस्त के रूप में देखते हैं तब उन दोनों में ख़ूब मुहब्बत पैदा होती है और ज़िन्दगी पुरसुकून और आसान हो जाती है।

शौहर को अपना दोस्त किस तरह बनाएँ?

औरत अपने शौहर को सच्चा दोस्त किस तरह बना सकती है, इसका जानना भी ज़रूरी है। इसके लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है:

1. बीवी को यक़ीन होना चाहिए कि शौहर से बढ़कर उसके लिए कोई सच्चा दोस्त नहीं बन सकता।

2. शौहर से कभी बे-एतिमाद न हो, बल्कि उस पर पूरा भरोसा करे।

3. शौहर के साथ झूठा बर्ताव न करे। उससे झूठ न बोले। कोई भी बात हो उसके सामने ज़ाहिर कर दे।

4. शौहर की अनुपस्तिथी में उसकी किसी भी बात की चर्चा न करे।

5. ऐसी कोशिश करे कि शौहर की इज़्ज़त व वक़ार में इज़ाफ़ा हो। इसलिए शरीअत की तालीम के मुताबिक़ उसकी तारीफ़ दूसरों के सामने करे।

6. शौहर की तकलीफ़ और दुख में तन, मन, धन से मदद करनी चाहिए और नाज़ुक हालात में अपनी ज़ात को उसके लिए फ़ना कर दे। शौहर की मुहब्बत और उसका एतिमाद हासिल करने के लिए यह वक़्त बहुत ही नाज़ुक और आज़माईश का होता है।

7. शौहर के सुख में सुखी और उसके दुख में दुखी होना चाहिए।

8. शौहर अगर उदास हो या किसी फ़िक्र में मुब्तला हो तो बीवी को उसकी वह फ़िक्र और मायूसी दूर करने के लिए हद से ज़्यादा

कोशिश करनी चाहिए। शौहर को ख़ुश करने के लिए दिल बहलाने वाली बातें भी करनी चाहिएँ।

9. शौहर की तकलीफ़ें दूर करे और उसको आराम पहुँचाने का हमेशा ख़्याल रखे।

10. शौहर की उलझनों को अपनी उलझन तसव्वुर करे, वह जो कुछ रुपये-पैसे दे, उनको बेजा ख़र्च न करे, और उसी में मुत्मईन होकर ज़िन्दगी गुज़ारे।

11. ख़ूबसूरत लिबास और अपनी ज़ाती ज़रूरत के ग़ैर-ज़रूरी सामान के लिए शौहर पर बोझ न डाले। वह जो कुछ दे उसमें इत्मीनान कर ले।

शौहर को माईल करने वाली ख़ूबियाँ

शौहर को अपनी तरफ़ माईल और मुतवज्जह करने के लिए निम्नलिखित सिफ़तें व ख़ूबियाँ अहम हैं:

1. हर क़िस्म के छोटे-बड़े गुनाह से बचना, कोई गुनाह हो जाए तो फ़ौरन तौबा कर लेना।

2. शौहर के मिज़ाज के मुताबिक़ बर्ताव।

3. जैसी औरत वह पसन्द करे (शरई हदों में रहते हुए) वैसी बनने की कोशिश करना।

4. सब्र व बरदाश्त की आदत बनाना।

5. मीठे अन्दाज़ में बोलना और हंसमुख होना।

6. अपनी ख़ूबसूरती और अच्छी आदतों से उसके दिल को जीतना और उसका पसन्दीदा बनाव-सिंगार करना।

बीवी, शौहर को कमतर और हक़ीर न समझे

याद रखो! अपनी ज़ात के एतिबार से वह कैसा ही क्यों न हो, लेकिन तुम्हें उसकी इताअत (फ़रमाँबरदारी) ही ज़रूरी है। इसलिए कि वह तुम्हारा शौहर और हाकिम है। और हाकिम अगर फ़ासिक़ (गुनाहगार

और बुराईयों में मुब्तला) भी हो तो रिआया, अवाम पर उसकी बात मानना फ़र्ज़ है। अगर यज़ीद जैसा हाकिम भी हो और उसकी ख़िलाफ़त (बादशाहत) शरई क़ायदे से साबित हो जाये तो उसकी भी इताअ़त (हुक्मों का पालन) ज़रूरी है।

पस तुम्हारा शौहर यज़ीद से तो ज़्यादा बुरा नहीं। जब यज़ीद की इताअ़त वाजिब है तो शौहर की क्यों न हुई? इसलिए कि शौहर का हाकिम होना कुरआन से, हदीस से साबित है। उसके हाकिम होने में शुब्हा नहीं। उसके निकाह के गवाह मौजूद हैं। उसका शौहर होना मालूम है। फिर क्या वजह है कि तुम उसकी बात मानने में कोताही करो।

ग़र्ज़ ज़ौजियत (यानी बीवी होना) इताअ़त का सबब है। वह यज़ीद सही, मगर तुम्हारा तो वह बा-यज़ीद (बहुत बड़े वलियुल्लाह बुज़ुर्ग का नाम, बा-यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि) है। तुमको नाफ़रमानी का क्या हक़ है।

हाँ अगर वह नमाज़ रोज़ा (फ़र्ज़) और शरई पर्दे से मना करे तो उसमें उसकी बात न मानो अलबत्ता नफ़िल नमाज़, नफ़िल रोज़ा, तस्बीहात की अदायगी वाले मामले में उसकी इताअ़त मुक़द्दम (पहले) है। बल्कि फ़राईज़ के मुताल्लिक भी अगर वह कहे कि ज़रा ठहर कर पढ़ लो और वक़्त में गुंजाईश हो तो देर कर देना चाहिए।

हाँ मगर वक़्त मक्रूह होने लगे, तो उस वक़्त उसका कहना न माने। अलबत्ता अगर वह खुल्लम-खुल्ला कुफ़्र व शिर्क करे या करने का हुक्म दे तो उस वक़्त किसी मोतबर आ़लिम से फ़तवा लेकर उससे जुदा हो जाए। रही गुनाह की बात तो जब तक कि वह तुमको गुनाह का हुक्म न करे, उसकी इताअ़त करो यहाँ तक कि अगर वह कहे कि वज़ीफ़ा छोड़कर मेरी ख़िदमत करो तो वज़ीफ़ा तस्बीहात छोड़ दो, मगर तुम तो समझती होगी कि इससे बुज़ुर्गी में फ़र्क़ आ जाएगा।

ऐ औरतो! तुमको बुज़ुर्ग यानी अल्लाह की वलीया बनना भी न आया। बुज़ुर्गी तो शरीअ़त की इत्तिबा (शरीअ़त के हुक्मों को मानने) का

नाम है। राय की इत्तिबा को बुज़ुर्गी नहीं कहते। जब तुमको शौहर की इताअ़त का शरीअ़त ने हुक्म दिया है तो बस बुज़ुर्गी 'यानी अल्लाह की रिज़ा इसी में है कि उनकी इताअ़त करो। (इस्लाहे ख़्वातीन अज़ इफ़ादात हकीमुल-उम्मत मौलाना थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि)

नोटः कभी-कभी ऐसा होता है कि औ़रत मर्द से ज़्यादा पढ़ी-लिखी होती है ख़ासकर दीन के एतिबार से, अगर वह किसी मदरसे से मुकम्मल इल्मे दीन हासिल कर चुकी हो और शौहर हाफ़िज़ या आ़लिम न हो या दुनियावी एतिबार से शौहर से ज़्यादा पढ़ी-लिखी हो, इसके बावजूद अदब व एहतिराम में कमी नहीं करनी चाहिए। हर बात में बहस-मुबाहसा न करे।

औ़रतों में दो बुरी आ़दतें और उनका इलाज

औ़रतों की एक बुरी आ़दत यह भी है कि एक ज़रा-सा बहाना मिल जाए उसको मुद्दतों तक न भूलेंगी और उसकी शाख़ में से शाख़ निकालती चली जाएँगी। उसकी टहनियों की टहनियाँ बनाती ज़ाएँगी। बाल की खाल निकालती जाएँगी। उनकी लड़ाईयाँ ज़्यादा सख़्त तो नहीं होतीं, मगर लम्बी ज़रूर चलती हैं। उनका कीना किसी तरह निकलता ही नहीं।

क़ोई घर ऐसा नहीं जिसकी औ़रतें इसमें मुब्तला न हों। माँ-बेटी आपस में लड़ती हैं, सास-बहू आपस में लड़ती हैं और देवरानी-जेठानी तो पैदा ही शायद इसलिए हुई हैं कि लड़ाई करें। इन सब की बुनियाद वहम-परसती है। और इसका इलाज यह है कि सुनी-सुनाई बातों पर एतिबार न करें। एक भाभी आती है कि ऐ फ़ुलानी! तमको पता है बड़ी भाभी तुम्हारे बारे में क्या कह रही थी? यह-यह कह रही थी। और मिर्च मसाला लागा कर चार बातें और चढ़ाकर कहती है और यह बेवकूफ़ भाभी दिल व दिमाग़ में कीना की कैसिट लगाकर ख़ूब उसको सुरक्षित कर लेती है। और हमारी औ़रतों के दिमाग़ों में जो हिन्दुस्तानी कैसिट है

वह फ़ितरती तौर से चार बातों को बढ़ाकर उसमें मिलाकर पेश करती है और उसको ये औरतें झूठ भी नहीं समझतीं और फिर फ़तवा भी अपने दिमाग़ के उसी ख़ाने से, जिसमें हसद-बुग़्ज़ भरा हुआ है, उससे ले लेती हैं कि इस कहने का यह मक़सद था और वह सही था।

फिर घर की मासी आती है, भाभी आज आपने चावल जो पकाए थे तो छोटी भाभी कह रही थीं कि आपके भाई (यानी छोटे देवर) कह रहे थे कि इतनी उम्र गुज़र गई भाभी को अब तक चावल पकाने नहीं आते! सब मेहमानों के सामने बदनामी करवाई। और यह और वह, और इन्होंने फ़ौरन यक़ीन कर लिया।

अब यह भाभी सास के पास गई और उनको सारा माजरा छोटी भाभी का सुनाया और उसके साथ चन्द बातें और भी मिला लीं, और उसके साथ दो आँसू टपका दिए कि अब उसके सच होने में कोई शक बाक़ी न रहे। सास ने अपने दिमाग़ के ख़ानों में एक नई स्कीम बनाई। चूँकि कुछ सासों को और कोई काम तो होता नहीं, इसलिए ऐसी वाहियात हरकतों में टाईम खपाती हैं।

अब दिमाग़ में स्कीमें तैयार हो रही हैं। उन स्कीमों को सच्चा बनाने के लिए सास के दिमाग़ का जज फ़ौरन पुराने वाक़िआत को गवाह बनाता है और घर की मासी को उस पर वकील और भावज को मुद्दई, अब मुक़दमा वकील और गवाहों की झूठी गवाहियों के साथ मुकम्मल तैयार हो गया। अब हाईकोर्ट में छोटी नन्द के दावे पर मुक़दमे की दरख़्वास्त दे दी गई और उसके लिए फ़ाईनल फ़ैसला सुप्रीम कोर्ट में मंझली नन्द के आने पर छोड़ दिया।

अब जब छोटी भाभी के पकाने की बारी आई और बद्क़िस्मती से चावल में पानी ज़्यादा पड़ गया या सालन में नमक ज़्यादा पड़ गया तो सारे घर की औरतें गोया बाक़ायदा मन्सूबे के तहत सबने मिलकर हाईकोर्ट का फ़ैसला लेकर उस पर हमला कर दिया कि तुम ख़ुद को तो देखो, ऐसी-ऐसी बातें हमारी पीठ पीछे करती हो, क्या हमें पता नहीं

चलता, क्या दीवारों के कान नहीं? क्या तुम हमको बच्ची समझती हो क्या हमको बेवकूफ़ समझती हो क्या हमें अन्दर की कोई ख़बर नहीं है?

अब वह छोटी बहू कहती है कि यह बात तो मैंने कही नहीं, मेरे फ़रिश्तों को भी इस बात का पता नहीं। वह कहती है भाभी आपको मेरे हवाले से किसने कहा, यह तो बता दो? तो यह दूसरी औ़रतें कहती हैं: नहीं! सुनने वाली झूठ नहीं बोल सकती, बड़ी ईमानदार औ़रत है। बिना सुने उसने क़भी नहीं कहा होगा, हमारे यहाँ दस साल से वह काम करती है। वह झूठ कैसे बोल सकती है।

गोया दस साल से काम करना उसकी बुज़ुर्गी का मेयार है, और अब वह कभी झूठ बोल ही नहीं सकती, तुम भी ऐसी तुम्हारा शौहर भी ऐसा, तुम्हारी माँ भी ऐसी। ये सारी घरेलू लड़ाईयाँ सुनी सुनाई बातों, वहम-परसती की वजह से होती हैं। खुदा की किसी बन्दी को यह तौफ़ीक़ नहीं होती कि अव्वल तो यह शिकायत सुने ही नहीं, मासी या घरों में काम करने वाली औ़रतों से या भाभियों से, और जब शिकायत सुन ली, तो उस बीच के वास्ते को ख़त्म करके खुद इस शिकायत करने वाली से पूछ लें कि क्या तूने मेरी शिकायत की है?

सुन्नत तरीक़ा भी यही है कि अग़र किसी से कुछ शिकायत दिल में हो तो फ़ौरन उस शख़्स से ज़ाहिर कर दे अगर ज़ाहिर नहीं करेगी तो दिल में कीना दुश्मनी गुस्सा के जज़्बात का पौधा उग जाएगा। और जूँ-जूँ वक़्त गुज़रता जाएगा यह पौधा बड़ा पेड़ बन जाएगा, और उसकी जड़ें दिलों में इतनी मज़बूत हो जाएँगी कि फिर निकालना मुश्किल होगा। इसलिए अगर शिकायत सही थी तो फ़ौरन शिकायत दूर करके एक-दूसरे से माफ़ी तलाफ़ी कर लें। और अगर ग़लत थी तो हमेशा के लिए उसका दरवाज़ा ही बन्द हो जाएगा और यह बीच वाला वास्ता शर्मिन्दा होगा और सब को मासी का हाल मालूम हो जाएगा कि यह मासी ही फ़साद की जड़ है। या फुलाँ देवरानी या फुलाँ जेठानी फ़साद की जड़ है।

औरतों के वायदों से संबन्धित चुटकुला

किताब "ज़हरात मिनर्-रौज़िल् मर्अतिल्-मुस्लिमति" में लिखा है कि एक भेड़िया सुबह को अपने और घर वालों के लिये खाने की कोई चीज़ तलाश करने निकला। अपने और अपने घर वालों के लिए तो एक घर से आवाज़ आई। माँ, बेटे को तंबीह करते हुए कह रही थी:

माँः बेटा! अगर तुम अपना सबक़ याद नहीं करोगे तो हम तुम्हारी बकरी भेड़िए को दे देंगे, वह उसे खा जाएगा।

भेड़िए ने जब यह सुना तो इतना ख़ुश हुआ और इन्तिज़ार करता रहा कि अब बकरी आएगी, अब आएगी, यहाँ तक कि शाम हो गई, तो आवाज़ आई।

माँः बेटा! तुम बहुत अच्छे बच्चे हो, माशा-अल्लाह तुमने सबक़ याद कर लिया होगा। अब अगर भेड़िया तुम्हारी बकरी लेने आएगा तो हम भेड़िये को क़त्ल कर देंगे।

भेड़िए ने जब यह सुना तो तेज़ी से भूखा अपने घर की तरफ़ वापस लौटा। उसकी मादा ने पूछा कि क्या बिना खाना लाए वापस लौट आए?

उसने जवाब दिया: यह हादसा आज मेरे मुक़द्दर में इसलिए वाक़े हुआ कि मैंने एक औरत की बात को सच समझ लिया। (पेज 126)

इस वाक़िए में हर मुसलमान मर्द के लिए भी इब्रत और सबक़ है, और ख़ुद औरतों के लिए भी, कि वे दूसरी औरतों की सुनी-सुनाई बातों पर बिल्कुल यक़ीन न करें। जैसे घर की मासी या भाभी किसी की ग़ीबत करें कि फ़ुलानी आपके बारे में यह कह रही थी, तो सख़्ती से इनकार कर दें और उसकी बात पर बिल्कुल यक़ीन न करें कि ऐसी औरतों की देखी हुई बात भी सही नहीं होती कहाँ यह कि सुनी हुई बातें।

औ़रतों को यह दुआ ज़्यादा से ज़्यादा माँगनी चाहिए

याद रखिए कीना सिर्फ़ एक गुनाह नहीं बल्कि यह गुनाहों का दरवाज़ा है और मीठा गुस्सा है। इसका खुमार दिल में भरा रहता है और रंजिशें दिन-ब-दिन बढ़ती चली जाती हैं। ऐसी औ़रतों को खुसूसन चलते-फिरते और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद भी यह दुआ माँगते रहना चाहिए:

(رَبَّنَا) لَا تَجْعَلْ فِىْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌo

'रब्बना' ला तज्अ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल्-लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना इन्न-क रऊफ़ुर्-रहीम।

तर्जुमाः ऐ हमारे रब! न रख हमारे दिलों में बुग़्ज़ कीना ईमान वालों के लिए। ऐ रब तू ही नर्मी वाला मेहरबान है।

और यह भी याद रखिए! कीने से दिल साफ़ हो जाना बहुत ही बड़ी अल्लाह तआ़ला की नेमत है। इसको ख़ूब रो-रोकर अल्लाह तआ़ला से माँगिए। आप अपने दिल में किसी के लिए बुरा न चाहें, हर एक के लिए भलाई चाहें, हर एक की बुराई पर पर्दा डालना सीखें। हर एक की ख़ूबियाँ देखने की आ़दत डालिए। दिल से कीने का साफ़ हो जाना इतनी बड़ी नेमत है कि जन्नत की नेमतों में से जो एक बड़ी नेमत मिलेगी वह यह है:

وَنَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَo

तर्जुमाः और (दुनिया में तबई तक़ाज़े से) उनके दिलों में जो कीना था, हम वह सब (उनके दिलों में से जन्नत में घुसने से पहले ही) दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह (प्यार व मुहब्बत से) रहेंगे, तख़्तों पर आमने-सामने बैठा करेंगे।

औ़रतों की दूसरी बुरी आ़दत

औ़रतों की दूसरी बुरी आ़दत यह होती है कि जब किसी बात पर लड़ाई हो गई तो पहले पुराने मुर्दे उखेड़े जाते हैं, मर्दों में यह रोग कम

है, मगर औरतें जिन बातों की सफ़ाई कर चुकती हैं, एक-दूसरे को माफ़ कर चुकी हैं, दोबारा लड़ाई के मौक़े पर पहली बातों को फिर दोहराती हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि उस वक़्त का मामला अगरचे हल्का भी हो तो पहली बातों की याददेहानी से संगीन और ख़तरनाक हो जाता है। ख़ास कर जब याददेहानी भी दिल को छीलने वाले अलफ़ाज़ में हो, जिसमें औरतों को ख़ास महारत हासिल है। औरतों ने और ख़ास तौर से हमारे हिन्दुस्तान की औरतों ने इसमें पी. एच. डी. किया हुआ है। और अगर दो आँसू के क़तरे टपका दे तो 'करेला और नीम चढ़ा' की मिसाल फिट हो जाएगी। गोया डिप्लोमा और डिग्री रखने के साथ अब लेक्चरर और प्रोफ़ेसर का दर्जा भी हासिल कर लिया।

इसलिए औरतों को चाहिए कि फ़ौरन पुरानी बातों को भुला दें। पुराने मुर्दे दोबारा ज़िन्दा न करें। ग़ीबत बिल्कुल न सुनें। अगर कोई औरत आपके पास आए कि फ़ुलाँ औरत तुम्हारे बारे में यह कह रही थी, तो उसी को डाँटें कि क्या वह इसलिए कह रही थी कि तुम मुझे आकर कहो? और अब जो मैं कहूँगी वह तुम उसको कहोगी। दो मुसलमान बहनों में तुम झगड़ा करवाने आई हो। ख़ुदा से डरो। बिल्कुल ऐसी कोई बात मेरे पास आकर नहीं करना वरना आगे से मेरे घर मत आना और अभी मैं भी उसको कह देती हूँ कि फ़ुलानी तुम्हारी तरफ़ से ऐसी बात नक़ल कर रही थी, इसलिए फ़ुलानी को तुम भी मत आने दो।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह० फ़रमाते हैं:

"औरतें इसकी तलाश में रहती हैं कि कोई औरत बाहर से आई और पूछना शुरू किया कि फ़ुलाँ मुझको क्या कहती थी, गोया इन्तिज़ार ही कर रही थीं।"

आने वाली ने कुछ कह दिया कि यूँ-यूँ कहती थी और अगर उसने चाट-मसाला छिड़क दिया तो बस फिर तो पुल बाँध लिया और उस पर फ़ौरन इमारत खड़ी हो गई और एक दूसरे को टेलीफ़ोन शुरू हो गए। अब उस इमारत पर फ़िनिशिंग रंग और रोग़न का काम टेलीफ़ोन के

ज़रिये दूसरी औरतों ने किया। गुस्से और कीने ने इस इमारत में फ़र्नीचर लगाया और मुसलमानों के दो घरानों में इन औरतों ने फूट पैदा करके अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला के ग़ज़ब और ग़ुस्से को दावत दी।

याद रखिए मुसलमान बहनो! अल्लाह तआ़ला के यहाँ दो मुसलमानों के दिलों में फूट पैदा करना बहुत बड़ा गुनाह है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब शबे-क़द्र की रात बतलाने आए कि कौनसी रात है तो दो मुसलमान झगड़ा कर रहे थे, तो उनके झगड़े की वजह से 'शबे-क़द्र' का निर्धारण यानी वह किस रात में है, उसके मुतैयन होने का इल्म उठा लिया गया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं इसलिए आया था कि तुम्हें शबे-क़द्र की ख़बर दूँ मगर फुलाँ-फुलाँ शख़्सों में झगड़ा हो रहा था जिसकी वजह से उसका मुक़र्ररा वक़्त का इल्म उठा लिया गया। क्या बईद है कि यह उठा लेना अल्लाह के इल्म में बेहतर हो। (मिश्कात, बुख़ारी किताबुलईमान न. 47)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि तुम्हें नमाज़, रोज़ा, सदक़ा वग़ैरह सबसे अफ़ज़ल चीज़ बतलाऊँ? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया ज़रूर। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आपस का सुलूक सबसे अफ़ज़ल है और आपस की लड़ाई दीन को मूंडने वाली है, यानी जैसे उस्तरे से सर के बाल एक दम साफ़ हो जाते हैं आपस की लड़ाई से दीन भी इसी तरह साफ़ हो जाता है। (फ़ज़ाइले आमाल पेज 605)

इसलिए मेरी बहनो! ख़ुदा के वास्ते ग़ीबतों से बचो। टेलीफ़ोन पर एक दूसरे की बुरी ख़बरें सुनने से बचो। अरे फुलानी के बच्चे की मंगनी टूट गई? क्यों टूटी? ओहो फुलानी बच्ची ऐसी है? फ़ुलाने का बच्चा ऐसा है? ग़रज़ यह कि सब इधर-उधर की बातों से बचो। यह आपकी नेकियाँ ख़त्म कर देंगी। दुनिया में भी आप पर मुसीबतें आएँगी और मौत के बाद उस पर बहुत बड़ा अ़ज़ाब होता है।

ख़ूब समझ लो कि ग़ीबत, एक दूसरे की शिकायत पर यक़ीन करना

इससे नाइत्तिफ़ाक़ी हो जाती है, आपस में दुश्मनी हो जाती है। इसके अलावा ग़ीबत करना, सुनना, बदगुमानी करना खुद बड़ा गुनाह है। अल्लाह के कलाम में इसकी बड़ी बुराई आई है। (हुकूके ज़ौजैन पेज 324)

औरतों की वजह से मर्दों की आपस में लड़ाईयाँ

अगर औरत अपनी भाभियों या सास-नन्द की शिकायतें मर्द से करती है और बेवकूफ़ नादान मर्द उसको कान लगाकर ध्यान से सुनता है। फुलानी ने मुझे यूँ कहा, और तुम्हारे बारे में यूँ कहा। या फुलानी के बच्चे ने हमारे बच्चे को इस तरह मारा, डाँटा, उसकी साईकिल पर बैठने नहीं दिया, उसके खिलौने छीन लिए या फुलानी ने कहा कि हमारा बच्चा गोरा नहीं है वग़ैरह।

फिर यह नादान औरत अपना फ़ैसला भी सुनाती है। आप तो कुछ करते नहीं, अपने भाई को समझाईए ना! क्या मैं ही सब करती रहूँ?

अब जो मर्द दिन भर का थका-मांदा गर्मी सर्दी बरदाश्त करके बाहर की फ़िज़ा से आकर ये बातें अपनी ना-समझ और कम-अक़्ल बीवी से सुनता है, मर्दों में गरमी होती है उन पर ऐसी बातों का ज़्यादा असर होता है। फिर यह बात यहीं तक नहीं रहती, बल्कि मर्द फिर हाथ से भी बदला लेते हैं। जिसकी वजह से हाथा-पाई और कभी-कभी तो क़त्ल और ख़ून तक हो जाते हैं, और कुछ नहीं तो दो सगे भाईयों में दुश्मनी पैदा करने का ये औरतें सबब तो बन ही जाती हैं।

याद रखिए और दिलों के कानों से सुनिए कि अगर आज आप ये बातें शौहर को कहती हैं और उनसे छुपाती नहीं और आपको पता है कि इसका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि दो भाई-बहनों में या माँ-बेटे में झगड़ा होगा और फिर भी आप बाज़ नहीं आतीं तो आपके बेटों में इसी तरह आपकी आने वाली बहुएँ झगड़े करवाएँगी, यही कुदरत का उसूल है।

كما تدين تدان

तर्जुमाः जैसा करोगे वैसा पाओगे।

जैसी करनी वैसी भरनी		न माने तो करके देख
जन्नत भी है दोज़ख भी है		न माने तो मर के देख

शौहरों से गुज़ारिश

और मर्दों से भी गुज़ारिश करते हैं कि औ़रतों की ऐसी बातों को बिल्कुल न सुनें। फ़ौरन उनके मुँह पर हाथ रख दें।

औ़रतों की देखी हुई बातें भी इस क़ाबिल नहीं कि उनको सही कहा जाए कहाँ यह कि सुनी हुई बातें। उनकी देखी हुई बातों में भी शक है तो सुनी हुई बातों का क्या हाल होगा।

अगरचे यह ख़ुद नाक़िसुल्-अ़क्ल (कम अ़क्ल वाली) हैं लेकिन बड़े-बड़े फ़न्ने ख़ाँ मर्दों की अ़क्लें उड़ा ले जाती हैं। अ़क्ल मंद, वैज्ञानिक, शायर अ़ल्लामा जो भी इन नादानों की बातों में आएगा वह हमेशा पछताएगा।

अकबर कभी दबे न थे दुश्मन की फ़ौज से
लेकिन शहीद हो गए औ़रत की नोच से

तो उनकी एक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें बिल्कुल न सुनें। और अगर ग़लती से सुन लिया तो उसका कोई असर न लें बल्कि औ़रत को माफ़ी के फ़ायदे और फ़ज़ाईल बतलाएँ कि आज तुम निभाओगी तो कल तुम्हारी आने वाली नस्ल भी निभाएगी। और ये मामूली बातें हैं इनको सोचो नहीं ज़ेहन से निकाल डालो। दुनिया में तो रहना है, ये हालात आते रहते हैं। असल सुकून तो आख़िरत में है, दुनिया तो परेशानियों का नाम है। अरग इसमें थोड़ा सा राहत व सुकून मिल जाए तो यह भी बड़ी नेमत है। निभाना यह कमाल है हम तो तुम को सुकून पहुँचाते हैं अगर उनसे कोई तकलीफ़ वाक़ई पहुँच भी गई है तो सब्र कर लो, दुनिया में मुकम्मल राहत व ख़ैरियत तो मिल ही नहीं सकती।

और अगर भाई-बहनों के बच्चों ने झगड़ा किया तो वह भी हमारे

ही बच्चे हैं, अगर हमारे बच्चों में झगड़ा हो जाए तो हम क्या किसी बच्चे को 'ऐधी हौम' या 'यतीम ख़ाने' में डाल देंगे?

जिस तरह हम अपने बच्चों को समझाएँगे इसी तरह वह भी हमारे ही मासूम नौनिहाल हैं। तुम उनको टॉफ़ी सूईट देकर समझाओ, अल्लाह से दुआ माँगकर उनका नाम लेकर अल्लाह तआला से मनवाओ, उनकी खाने-पीने की चीज़ों पर सात बार बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम पढ़कर दम कर दो, यह बहुत ही आज़माया हुआ नुस्ख़ा है। बच्चा अगर बहुत तेज़ हो, गुस्सा बहुत ज़्यादा आता हो तो बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम पढ़कर सात बार उसके खाने-पीने की चीज़ों पर दम करके पिलाएँ बार-बार उस पर दम करें। इसी तरह **"या लतीफ़ु"** सात बार पढ़कर दम करके पिलाएँ।

और क्या बच्चों की वजह से हम भी बच्चे बन जाएँ? हमें तो समझदारी, होशियारी वाला रास्ता इख़्तियार करना चाहिए। तुम तो बड़ी भाभी हो, तुम्हें तो ज़्यादा ख़्याल रखना चाहिए। तुम तो छोटी भाभियों के साथ माँ की तरह रहो, क्या माँ किसी बच्ची को उसके ग़लत अख़्लाक़ की वजह से फेंक देती है?

और अगर तुम छोटी भाभी हो तो तुम छोटी बहनों की तरह रहो, वे तुम्हारी बड़ी बहनें हैं, क्या छोटी बहन बड़ी बहन का अदब व एहतिराम और सम्मान करके नहीं चलती है? छोटी बहन को बड़ी बहन कोई बात कहे तो क्या वह नहीं मानेगी? इसलिए आपको भी चाहिए कि आप उनके साथ अदब वाला मामला करो, अगर उन्होंने तुम्हें डाँट दिया तो समझो बड़ी बहन ने डाँटा।

और दुनिया के तमाम धर्म इस पर सहमत हैं कि छोटी को मानकर अदब के साथ चलना चाहिए। इसलिए तुम सब्र कर लो और मुहब्बत के साथ रहो, तुम्हें अल्लाह इज़्ज़त देगा। इसके बदले तुम्हारी औलाद नेक बनेगी। बहरहाल! इन तदबीरों से शौहर बीवी को समझाए और उसकी बात सुनकर जज़्बात में बिल्कुल न आए बल्कि हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

"मैं तो कहता हूँ ऐसे मौक़ों पर मर्दों को चाहिए कि औ़रतों को सुना दें कि तुम सच भी कहोगी तब भी हम झूठ समझेंगे। मैं सब मर्दों को नहीं कहता हूँ। बहुत से मर्द ऐसे भी हैं कि वाक़ई मर्द हैं और ऐसे वक़्त पर पूरी अ़क़्ल से काम लेते हैं और उसके साथ रहने को भेड़िये-बकरी का साथ समझते हैं।

जहाँ भेड़िये और बकरी इकट्ठे होंगे वहाँ भेड़िये की तरफ़ से बकरी के साथ तकलीफ़ पहुँचाने का मामला होगा, कभी नहीं कहा जा सकता कि भेड़िया बकरी की तरफ़दारी या उस पर रहम करेगा।"

(तोहफ़ा-ए-ज़ौजैन पेज 82)

औ़रत के कहने से छोटे भाईयों ख़ास तौर से यतीम देवरों को माँ-बहनों को (सास, ससुर, नन्द) को न सताओ, बल्कि समझाने बुझाने से काम नहीं चलता तो माँ को कभी कुछ न कहो, माँ का बहुत अदब करो चाहे माँ की ही ग़लती हो। हाँ बीवी को अलग रख दो, अलग किराये का मकान छोटा सा लेकर दो, ऐसी बीवी को जो उनके साथ निबाह न कर सके उसको साथ रहने पर मजबूर न करो, अलग मकान में रखो, वरना उसी घर में सास-बहू का किचन अलग कर दो।

लेकिन माँ को बिल्कुल कुछ न कहो, माँ माँ है, माँ का बहुत ख़्याल रखो, माँ का बहुत अदब करो। अलबत्ता माँ की वजह से बीवी पर भी ज़ुल्म न करो। इसलिए अगर दोनों का हक़ अदा करना चाहो तो बीवी को अलग रखो, माँ का हक़ यही है कि उसको बहू के साथ रखकर परेशान मत करो।

माँ अगर बहू के साथ रहकर ख़ुश नहीं होती, आए दिन के झगड़े होते हैं और बहू माँ के साथ ख़ुश नहीं रहती तो ख़ुदा के वास्ते अपनी नई नस्ल को उन दोनों के लड़ाई झगड़ों में तबाह व बर्बाद मत करो।

अलग-अलग कर दो इससे सारे झगड़े भी ख़त्म हो जाएँगे और सबको सुकून हो जाएगा। यही शरीअ़त का हुक्म है। इसी में दीनी व दुनियावी बहुत से फ़ायदे हैं।

यतीम देवरों और यतीम नन्दों का ख़्याल रखना

किसी ने ख़ूब कहा। आपके वालिद (बाप) साहिब इन्तिक़ाल कर गए और छोटे भाई-बहन आपके साथ रहते हैं और आपकी बीवी छोटे भाई-बहनों की आप से शिकायतें लगाए तो सोचो कि वे यतीम हैं और यतीम बच्चा ज़िन्दों में गिना ही नहीं जाता, अपने माँ-बाप के साथ वह भी मर गया, फिर मरे हुए को मारना क्या बहादुरी है? अगर हद से ज़्यादा दिलदारी करोगे तब भी उसका दिल ज़िन्दा नहीं हो सकता। यतीम की सूरत पर मुर्दनी छाई हुई होती है।

"दो बच्चों को बराबर बैठाओ जिनमें से एक यतीम हो और दूसरा न हो, और एक चीज़ दोनों के सामने रख दो और कह दो कि जो पहले उठा ले यह चीज़ उसी की है। पूरा यक़ीन है कि यतीम का हाथ नहीं उठेगा, वजह यही है कि उसका दिल मर चुका है।"

(इस्लाहे ख़्वातीन पेज 224)

इसलिए बीवी को चाहिए कि उनका ख़ूब ख़्याल रखे और शौहर को चाहिए कि बीवी की ग़लत नाजायज़ शिकायतों की वजह से उनको न सताए, न मारे, न डाँटे। अगर सही शिकायत हो तो अकेले में समझाए। अल्लाह तआला हम सब को इस पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

मियाँ-बीवी के झगड़ों से छुटकारे के लिए दो उसूल

अगर औरत इन दो बातों को अपना ले तो हम यक़ीन से कह सकते हैं कि मियाँ-बीवी के बहुत से झगड़े ख़त्म हो जाएँ। बहुत सी नाइत्तिफ़ाक़ियाँ, नाचाक़ियाँ, गर्मागर्मियाँ, चिड़चिड़ापन, हर वक़्त की तू-तू मैं-मैं, ज़ुल्म व ज़्यादती, मार-पीट, नाराज़ होकर मैके चली जाना, या मैके भेज देना, मासूम बच्चों पर गुस्सा निकालना, उनको डाँटना, पिटाई करना, कोसना, शौहर से अ़लैहदा होना, तलाक़ का मुतालबा करना,

जुदाई पर आमादा होना, ये सब ख़राबियाँ इन दो उसूलों पर अमल करने से इज़्ज़त व शफ़्क़त, मुहब्बत व मेहरबानी, रहम व मुरव्वत और ख़ैरख़्वाही, रहम-दिली व नर्मी, ईसार व बर्दाश्त, आपस में माफ़ और दरगुज़र करना और एक-दूसरे की ग़लतियों को नज़र-अन्दाज़ करना और उन्हें छुपाना और आपस में मुहब्बत व प्यार और अदब व नर्मी से बदल जाएँगी, इन्शा अल्लाह तआला। और बहुत जल्द दोनों में मुहब्बत हो जाएगी।

पहला उसूल

पहला उसूल यह कि "जी हाँ" यह लफ़्ज़ बोलना सीख ले। हर वक़्त "जी हाँ"! जी हाँ! जी हाँ! जी हाँ! कहे। शौहर दिन को कहे रात है तो भी झगड़े से बचने के लिए कहे जी हाँ। वह रात को कहे दिन है, नज़र भी कह रही है कि रात है लेकिन कहे जी हाँ! जैसे आप कह रहे हैं वही सही है।

शौहर कहे आज यह पकाना है, कहे जी हाँ! वह कहे आज वहाँ जाना है कहे जी हाँ! वह कहे वहाँ तुम नहीं जाओगी, कहिए जी हाँ। फ़ुलाँ की कल दावत में तुमको नहीं जाना है, कहे जी हाँ।

वह कहे आज तुम्हारे सगे भाई के निकाह की जो तक़रीब (मौक़ा और पार्टी) है उसमें तुम नहीं जाओगी। तो कहे जी हाँ! मैं बिल्कुल नहीं जाऊँगी। जैसा आप कहेंगे वैसा ही होगा। सगे भाई से ज़्यादा मुक़द्दम आप हैं। आप मेरे शौहर हैं आपका हक़ ज़्यादा है, आपने मना कर दिया तो कैसे जा सकती हूँ। आप बिल्कुल ग़म न करें, जैसे आप कहेंगे वैसा ही होगा।

अब इस बीच में अल्लाह तआला से माँगे, हो सके तो दो रकअ़त नमाज़ नफ़िल पढ़े और फिर दुआ माँगे। ऐ अल्लाह! सारे इनसानों के दिल आपकी दो उंगलियों में हैं तू जैसे चाहे फेर दे।

ऐ अल्लाह! मेरी यह हाजत पूरी फ़रमाने का आप फ़ैसला फ़रमा दीजिए। जब आप फ़ैसला कर देंगे तो उसको कोई रोक नहीं सकता और

अगर उसमें ख़ैर नहीं तो मेरे दिल से उस हाजत की तलब निकाल दीजिए। फिर जब शौहर का गुस्सा ठंडा हो जाए तो उस वक़्त कहे कि मुनासिब होगा कि आप हमें भाई की शादी में जाने दें। आज उनके घर में खुशी का मौक़ा है, मैं न जाऊँगी तो उनकी ख़ुशी मुकम्मल न होगी। अगर आप इजाज़त दे दें तो आपकी मेहरबानी होगी।

ग़र्ज़ यह कि इस तरह अपनी सारी हाजतों और ज़रूरतों और दिल की चाहतों के लिए अल्लाह तआ़ला से माँग कर अपने शौहर को राज़ी करवाएँ और अगर फिर भी वह राज़ी न हो तो सब्र कर लें और उसकी बात मान लें, कुछ दिनों तक उसकी बात मान लेने से उसको आप पर ऐसा एतिमाद पैदा हो जाएगा फिर इन्शा-अल्लाह तआ़ला वह आपकी बातों को भी रद्द नहीं करेगा, और हर काम में आप से मश्विरा करके चलेगा। बल्कि आपके इशारे के हिसाब से चलेगा।

चूँकि अल्लाह तआ़ला ने मर्द को हाकिम (सरदार और निगराँ) बनाया है तो फ़ितरी तौर पर वह यह चाहता है कि मेरी बात मानी जाए। इसलिए फ़ैसला उसी का मानना होगा। हाँ तुम अपनी राय और मश्विरा दे सकती हो। और इस्लाम ने मर्द को यह हिदायत दे रखी है कि वह जहाँ तक मुम्किन हो तुम्हारी दिलदारी का ख़्याल भी करे, लेकिन फ़ैसला उसी का होगा। इसलिए अगर यह बात ज़ेहन में न हो और बेगम साहिबा यह चाहें कि हर मामले में फ़ैसला मेरा चले और मर्द सरदार और हाकिम न बने, मैं सरदार और हाकिम बन जाऊँ तो यह सूरत फ़ितरत के ख़िलाफ़ है, शरीअ़त के ख़िलाफ़ है, अ़क्ल के ख़िलाफ़ है और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है, और इसका नतीजा घर की बर्बादी के अ़लावा कुछ नहीं होगा।

अब बीवी अगर शौहर को अमीर हाकिम समझकर दिल चाहे या न चाहे, तबीयत आमादा हो या न हो, हर बात पर अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने की ख़ातिर उसकी हर जायज़ बात को मान ले, हर काम पर जी हाँ कहे, जो वह कहे करके दिखा दे, उसको कभी ज़िन्दगी भर यह

मौक़ा न मिले कि वह यह कहे कि तुमने मेरी बात क्यों नहीं मानी, फुलाँ-फुलाँ वक़्त पर तुमने मुझको नाराज़ किया। मैंने कहा यह करना तुमने नहीं किया। मैंने कहा मत करना, तुमने किया।

ऐ मुसलमान बहन! जब आप अपने घर से रुख़्सत होकर किसी की बीवी बनकर आई थीं तो बाप की इस नसीहत को दिमाग़ की नसों में, दिल की रगों में, आँखों की पुतलियों में हमेशा मरते दम तक जमा कर रखना, और इसको मत भूलना हमेशा याद रखना।

ऐ लख़्ते दिल! लख़्ते जिगर, माँ-बाप की तू नूरे नज़र
ऐ मेरे घर की चाँदनी, आँखों की ठंडी रोशनी
नसीहत बाप की यह याद तुम रखो मगर बेटी
अज़ल से शेवा सब्र व रिज़ा बेटी की फ़ितरत है
न टपके आँख से हर चन्द हो ख़ूने जिगर बेटी
जो कुछ ज़िन्दगी में पेश आए उसको सह लेना
रहे पेशे नज़र हर वक़्त हर शै पर मुक़द्दम हो
रिज़ा जोई रफ़ीक़े ज़िन्दगी की उम्र भर बेटी
न आए हर्फ़ कोई बाप के इस नाम पर बेटी
तुम्हारे साथ हैं माँ-बाप की दुआएँ भी
अभी मुबारक हो तुम्हारी ज़िन्दगी का यह सफ़र बेटी

दूसरा उसूल

दूसरा उसूल है "माफ़ करना आगे से ऐसा नहीं होगा" इसको हर वक़्त ज़बान पर रखे। बार-बार इसी को कहे। चूँकि मियाँ-बीवी दोनों आक़िल बालिग़ अपने इरादे और हस्ती के मालिक हैं, निकाह के बाद दोनों का साबक़ा साल के 365 दिनों और दिन के चौबीस घन्टों का है। ज़रूरी है कि नागवारियाँ भी पेश आएँगी और कभी-कभी झगड़ा भी होगा।

कभी नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ेगी, कभी गुस्सा व उत्तेजना की गर्मा-गर्मियाँ अपना ज़ोर दिखाएँगी, कभी दुख कभी सुख, कभी मायूसियाँ, कभी

माज़ूरियाँ, कभी बीमारियों की दुखन, कभी नाकामियों की चुभन, कभी बच्चों का स्कूल में फ़ेल होना कभी किसी का सिर फोड़कर आना, कभी बच्चे का खुद ज़ख़्मी होकर आना, कभी मदरसे का नाग़ा करना, कभी नौकरी ख़त्म हुई कभी कारोबार ठप्प हो गया। कभी सालन जल गया, कभी दोस्तों की मेहमान नवाज़ी ख़राब हुई, और इन सबके ऊपर कभी शौहर की नादानियाँ, ज़्यादतियाँ, नन्द व सास की टिक-टिक देवरानी-जेठानी की कड़-कड़, इन सब छोटी-बड़ी बीमारियों का, नाखुशगवारियों के लम्बे सिलसिले का, वैवाहिक ज़िन्दगी के हर उतार-चढ़ाव का, एक और सिर्फ़ एक ही इलाज है, वह है खुदा कर डर।

मियाँ-बीवी दोनों में जब खुदा कर डर (तक़्वा) होगा, तो एक दूसरे का दिल दुखाने से डरेंगे। क़ियामत के दिन इसका जवाब देना होगा, अल्लाह तआला को मुँह कैसे दिखाएँगे कि मेरे बन्दे को या मेरी बन्दी को क्यों सताया?

जब दोनों नेक होंगे तो इन्शा-अल्लाह तआला एक भी हो जाएँगे, लेकिन बीवी की इसमें यह ज़िम्मेदारी ज़्यादा है कि वह अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए यह जुमला याद कर ले: "ग़लती हो गई आईन्दा ऐसा नहीं होगा"।

किसी बात पर मुँहज़ोरी न करे, बहस-मुबाहसा न करे। इधर-उधर की बातें न बनाए। सौ बातों की एक बात! "माफ़ी चाहती हूँ आईन्दा नहीं करूँगी"।

यह माफ़ी का लफ़्ज़ ऐसा है कि हज्जाज बिन यूसुफ़ जैसे ज़ालिम शख़्स को भी नर्मी पर मजबूर कर देता है।

एक बार हज्जाज ने सफ़र के दौरान किसी देहाती से इम्तिहान के लिए पूछा तुम्हारा बादशाह हज्जाज कैसा है? वह कहने लगा बड़ा ज़ालिम है, अल्लाह तआला उससे बचाए वग़ैरह।

उसने कहा तुम जानते हो मैं कौन हूँ? उसने कहा नहीं। बादशाह ने कहा मैं हज्जाज हूँ। देहाती ने कहा तुम मुझे जानते हो मैं कौन हूँ?

हज्जाज ने कहा नहीं?

उसने कहा मैं फुलाँ शख़्स का गुलाम हूँ और हर महीने में तीन दिन पागल होता हूँ और आज मेरा पागल होने का पहला दिन है, इसलिए माफ़ करना। हज्जाज बिन यूसुफ़ यह सुनकर हंसने लगा और उसको छोड़ दिया।

अब आप अन्दाज़ा लगाएँ कि हर मियाँ-बीवी के छोटे से छोटे झगड़े कैसे बड़े-बड़े मसाईल (समस्सयाएँ) पैदा कर देते हैं।

अगर बीवी उस वक़्त सिर्फ़ यह कह दे कि "माफ़ कीजिएगा अब आगे से ऐसी ग़लती नहीं होगी" आप यक़ीन जानिए आप यक़ीन जानिए! बहुत से झगड़े नाचाक़ियाँ गर्मा-गर्मियाँ चुटकियों में ख़त्म हो सकते हैं। अगर औरत उस देहाती से सबक़ ले ले जिसने हज्जाज के चुंगुल से अपने आपको पागल बनवाकर अपनी निजात का रास्ता बना लिया इसी तरह औरत और हम सब अपने-अपने समाज में इसको ले आएँ तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला बहुत सी मुश्किलें हल हो सकती हैं, हर छोटा अपने बड़े के सामने गुस्से के वक़्त यह कहे "ग़लती हो गई आईन्दा इन्शा-अल्लह ऐसा नहीं होगा" "माफ़ कीजिए अब ख़्याल रखूँगी, आईन्दा आपको शिकायत का मौक़ा नहीं दूँगी" चूँकि हम सब ही ग़लती करते हैं और हर अदालत में इक़रारी मुजरिम माफ़ी माँगने वाला हो तो उसके लिए नर्मी है, मुक़ाबले में उसके जो इनकार करने वाला मुजरिम हो।

नादान बेवक़ूफ़ शौहर

यह क्यों हुआ? यह क्यों तुमने किया? यह कैसे हुआ? तुम देख रही थी और यह हुआ? तुम कहाँ मर गई थी उस वक़्त? तुम क्यों नहीं उठी? तुमने क्यों ख़्याल नहीं किया?

तुम और तुम्हारा ख़ानदान सारा का सारा ऐसा ही है, अगर तुम ध्यान देती तो ऐसा न होता। तुम हो ही नालायक़ तब ही बच्चा फ़ेल

हुआ। तुमने ऐसी बात क्यों कही? सालन कैसे जल गया? तुमने पकाते वक़्त लापरवाही क्यों की? अब तक क्यों नहीं खाना तैयार हुआ? तुमने मेरी माँ को जवाब क्यों दिया? तुम कौन हो और तुम्हारी हैसियत क्या है? यह तो मेरा एहसान है जो तुमको यहाँ ले आया वरना तुमको कौन उठाता? और तुम मेरे आगे ज़बान खोलती हो? मेरी बहन को झिड़क कर तुमने जवाब दिया? मेरी बहन आई तुमने अदब से उसको सलाम नहीं किया? तुम ऐसी झगड़ालू हो और न सिर्फ़ यह कि तुम ऐसी बल्कि तुम्हारा घराना ही ऐसा है।

अब अल्लाह को ख़ुश करने वाली घरों में झगड़ों की आग के अंगारों को बुझाने वाली नेक होशियार बीवी का जवाब सुनिए!

समझदार बीवी

ग़लती हो गई माफ़ करना आईन्दा ऐसा नहीं होगा।

अब शौहर के ये सब ग़लत टेंशन और हाई बल्ड-प्रेशर दस अलग परेशानियों से बने हुए इन सभी सवालात का सिर्फ़ यह एक जवाब 'ग़लती हो गई माफ़ करना' ऐसा काफ़ी और शाफ़ी है और तसल्ली देने वाला है कि उसके बाद शैतान के लिए घर में झगड़े पैदा करवाने का कोई हथियार बाक़ी नहीं रहेगा। और नासमझ, बेवक़ूफ़ बीवी का जवाब यह होता है कि मैं क्या करूँ? आपको तो सिर्फ़ बोलना आता है करके तो देखिए। हर बात पर आप टिक-टिक करते हैं यह मैं ही हूँ जो आपके साथ रहती हूँ वग़ैरह-वग़ैरह। उसके बाद मियाँ-बीवी में जो झगड़ा होता है वह बहुत लम्बा हो जाता है और कई जोड़ों में जुदाई सिर्फ़ इन छोटी-छोटी बातों की वजह से हो जाती है। अल्लाह तआला ऐसे झगड़ों से हर मुसलमान मर्द व औरत की हिफ़ाज़त फ़रमाए आमीन।

शौहर को मेहरबान करने के लिए एक उम्दा तदबीर

ऐ औरत! यही एक ऐसी अक्सीर की पुड़िया है जो हर मुसीबत से बचाएगी। हर ग़लती के वक़्त आड़े आएगी। ज़ालिम शौहर को सच्चा

दोस्त और जान देने वाला बना देगी। बेवकूफ़ शौहर को समझदार बना देगी। ऐसा तावीज़ है जो शौहर को दीनदार बना देगा।

किसी ग़लती की आप तावील न करें (यानी उसकी उलटी-सीधी वजह बयान न करें) कि यह इस वजह से हुआ, इस वजह से हुआ। बल्कि ग़लती को ग़लती मान लें, जो हुआ बस हो गया अभी शौहर का गुस्सा ठंडा करने के लिए झगड़े से बचने के लिए कह दें "ग़लती हो गई दोबारा ऐसा नहीं होगा" चाहे आपकी ग़लती भी न हो, लेकिन फिर किसी वक़्त शौहर को समझा दें कि आपका बार-बार मुझे डाँटना सही नहीं, मेरी ग़लती भी न थी। आप बिना तहक़ीक़ के आते ही मुझे डाँटना शुरू हो गए मैं उस वक़्त न बोली कि बात आगे न बढ़ जाए। अभी आपको बतलाए देती हूँ बात इस तरह थी। अब शौहर ख़ुद शर्मिन्दा होगा और दोबारा ख़्याल रखेगा।

यह (माफ़ करना) जुमला ऐसा है जो हज्जाज जैसे पत्थर दिल को भी नर्म मोम की तरह बना देता है। सख़्त से सख़्त ग़लती को भी छोटा बना देता है। बड़ी से बड़ी गुस्से की आग के लिए पानी का काम देता है, हद से ज़्यादा ज़ालिम को भी रहम पर मजबूर कर देता है। दुश्मन को दोस्त बना देता है।

यह किसी इनसान का किसी आदमी का कहना नहीं बल्कि इनसानों के पैदा करने वाले अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त जिसके हाथ में सारे इनसानों के दिल हैं, उसका इरशाद है:

وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ O (سورہ حم سجدہ پ۲۴)

तर्जुमाः नेकी और बदी बराबर नहीं होती। आप नेक बर्ताव से (बदी को) टाल दिया कीजिए फिर यकायक (आप देखेंगे कि) आप में और जिस शख़्स में दुश्मनी थी वह ऐसा हो जाएगा जैसा कोई दिली दोस्त होता है। (मआरिफुल कुरआन खुलासा-ए-तफ़सीर पेज 649)

यह है कि अगर बुराई का बदला अच्छाई से दिया जाए, गाली का बदला मिठाई से दिया जाए तो जानी दुश्मन भी जान कुरबान करने वाला बन सकता है। बल्कि किसी अक़्लमन्द के कहने के अनुसार कि अगर बिल्कुल गुस्से के वक़्त गुलाब जामुन मुँह में डाल दिया जाए तो गाली भी मीठी मीठी निकले। आप यह नुस्ख़ा आज़माकर देखिए तजुर्बा करके देखिए।

अपनी इज़्ज़त उसे समझिए। अपना लिबास उसे समझिए। दीन व दुनिया की जन्नत उसे समझिए। अपना सिंगार व हुस्न उसे समझिए। अपने सिर का ताज उसे समझिए। अपना अमीर हाकिम और सरदार उसे समझिए। मुख़्लिस दोस्त अपने अच्चों का बाप, अपना राज़दार, अपना मख़्दूम (जिसकी ख़िदमत की जाये) उसे समझिए। मुहब्बत के लायक़ हस्ती, कुछ दिनों का मेहमान, जन्नत में जाने का ज़रिया ही उसे समझ लीजिए। अगर आपका छोटा सा घर, झोंपड़ी, ग़रीब-ख़ाना, जिसमें रोज़ाना मुश्किल से दाल व सब्ज़ी पर गुज़ारा होता हो, बिछाने को चटाई मुश्किल से मिलती हो, ओढ़ने को कम्बल भी न मिलता हो, बैठने को कुर्सियाँ, सोफ़े न हों, वड़े शोकेस और अलमारियाँ न हों, लेकिन यह घर दुनिया की जन्नत का नमूना होगा। यह बीवी उस जन्नत के घर की सरदार रानी और मलिका होगी, बच्चे उस झोंपड़ी के ग़िलमान (जन्नत के ख़ादिम) होंगे और बच्चियाँ हूर व परी होंगी।

घर ता घर फ़िरदौस बने, माँ-बाप हों गर बातों के धनी
लड़कों पे गुमाँ हो ग़िलमाँ का, दुख़्तर जैसे हूर व परी

शैख सअदी के अनुसार:

"ख़ूबसूरत और फ़रमाँबरदार, परहेज़गार बीवी फ़क़ीर मर्द को बादशाह बना देती है।"

यानी अगर किसी को ऐसी बीवी मिल जाए जो परहेज़गार व नेक होने के साथ-साथ ख़ूबसूरत भी हो तो सोने पर सुहागा, लेकिन अगर सिर्फ़ ज़ाहिरी ख़ूबसूरती हो और अख़्लाक़ व सीरत की अच्छी न हो,

दीनदारी और परहेज़गारी न हो, तो ऐसी औरत से पनाह माँगी गई है। अल्लाह तआला सब मुसलमान मर्दों की हिफ़ाज़त फ़रमाए आमीन।

कामयाब नुस्ख़ा

इसी लिए हकीमुल-उम्मत हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक औरत बहुत ज़बान-दराज़ थी। शौहर उसको बहुत मारता था, पिटाई खाते-खाते भी बोलती ही रहती। अब तंग आकर एक बुज़ुर्ग के पास गई कि मुझे ऐसा तावीज़ दे दीजिए कि जिसके असर से मेरा शौहर मुझे मारा न करे। मेरी मानने वाला बन जाए। मेरी बात माने, मुझसे मुहब्बत करे। घर में झगड़ा न हो। वह बुज़ुर्ग समझ गए कि ज़बान-दराज़ी करती होगी इसी लिए पिटती है।

आपने फ़रमाया अच्छा तुम थोड़ा पानी ले आओ, उसे पढ़ दूँगा। चुनाँचे पढ़ दिया और फ़रमाया कि जब शौहर गुस्सा हुआ करे तो इसमें से एक चुल्लू मुँह में घूँट लेकर बैठ जाया करो, इन्शा-अल्लाह फिर नहीं मारेगा।

चुनाँचे वह ऐसा ही करती। जब शौहर गुस्सा होते तो मुँह में घूँट लेकर बैठ जाती। अब बोल तो सकती नहीं, मुहँ को ताला लग गया। आख़िर थोड़े ही दिनों में मियाँ राज़ी हो गया और उसका गुस्सा धीरे-धीरे ख़त्म हो गया। औरत की फ़ितरत, मिज़ाज और तबीयत ही अल्लाह तआला ने ऐसी बनाई है कि उससे कितनी ही बड़ी ग़लती हो जाए और यह नर्मी से माफ़ी माँग ले तो मर्द माफ़ करने पर मजबूर हो जाता है। इसके बग़ैर मर्द के लिए चारा नहीं, उसके माफ़ी कहने के बाद उसके पास कोई दलील और हथियार ही पकड़ करने का नहीं रहता।

इसी वजह से शरीअत ने सिर्फ़ औरतों की गवाही क़बूल नहीं की, कि अगर औरत अपना मुक़द्दिमा रोकर बयान करना चाहे और औरत ख़ुद मुजरिम हो, लेकिन उसके दो आँसू पत्थर-दिल जज को मोम बनाने के लिए काफ़ी हैं। इसलिए अगर सिर्फ़ औरत की गवाही क़बूल कर ली

गई तो फ़ैसले बहुत ही ग़लत और एकतरफ़ा हो जाएँगे। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई उनको कुएँ में फेंक कर खुद अब्बा के पास रोते हुए ही आए थे।

इसलिए औ़रत मियाँ के सामने ग़लती का इक़रार कर ले माफ़ी माँग ले तो मर्द उसको माफ़ करने और उसके साथ ख़ैरख़्वाही नर्मी और दिलजोई करने पर मजबूर हो जाएगा।

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि लिखते हैं कि हक़ीक़त में उन बुज़ुर्ग ने ख़ूब इलाज किया और शौहर के सामने बीवी की ज़बान-दराज़ी बन्द करवा दी, अब शौहर का गुस्सा ख़त्म हो गया।

"गुस्सा तो बढ़ता है ज़बान-दराज़ी मुँह-ज़ोरी इनकारी मुजिरम बनने से। ग़र्ज़ औ़रतों में ज़बान-दराज़ी की बड़ी बीमारी है, और यह सारी ख़राबी घमंड की है। औ़रतें यह चाहती हैं कि हम हारें नहीं ताकि हमारी गर्दन नीची न हो।"

अल्लाह तआ़ला औ़रतों को शौहर के गुस्से के वक़्त ख़ामोश रहने और माफ़ी माँगने और जुर्म का इक़रार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और मर्दों को सलीक़े व समझदारी से घर चलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। सास व नन्द की शिकायतें सुनकर या छोटी-छोटी बातों पर शौहर के लिए मुनासिब नहीं कि उलझे और बार-बार पूछ-गछ करता रहे।

औ़रत शेर को बहला सकती है तो शौहर को क्यों नहीं?

अगर औ़रत अपने फ़रेब और धोखे के ज़रिये शेर पर हमला करना चाहे तो शेर को भी क़ाबू में कर सकती है। मगर शौहर को क़ाबू नहीं करती। कहते हैं कि एक औ़रत का हमेशा शौहर से झगड़ा रहता था। एक बार अपनी किसी सहेली को यह माजरा सुनाया तो सहेली ने कहा किसी ज़हीन तजुर्बेकार आदमी के पास जाओ, वह तुम्हें सही मश्विरा

देगा।

वह एक तजुर्बेकार हकीम के पास गई। रोज़-रोज़ के झगड़ों की शिकायत करने लगी कि हमारे यहाँ पता नहीं जादू है? जिन्नात हैं? हम घर में चैन से बैठ ही नहीं सकते। सफ़र में भी हम दोनों लड़ते ही रहते हैं। बात-बात पर शौहर को गुस्सा आता है, फिर मुझे भी गुस्सा आ जाता है। उस हकीम ने कहा! तुम्हारा इलाज बहुत आसान है लेकिन शर्त यह है कि तुम शेर की गुद्दी से तीन बाल ले आओ।

बीवी वहाँ से गई और सोचती रही कि क्या तरकीब की जाए जिससे शेर के तीन बाल मिल जाएँ। चिड़ियाघर में शेर पिंजरे में बंद था वहाँ गई दूर खड़े-खड़े देखती रहती, हिम्मत न होती, फिर एक दिन गोश्त लेकर गई। पिंजरे में गोश्त फेंका शेर ने खा लिया, अब थोड़ा सा डर ख़त्म हुआ तो रोज़ाना उसी टाईम पर गोश्त लेकर जाती, पहले दूर से फेंकती फिर नज़दीक से यहाँ तक कि जब वह खाता तो पिंजरे में हाथ डालकर उसकी गुद्दी पर प्यार करने की कोशिश करती।

जब शेर काफ़ी मानूस हो गया तो गुद्दी पर हाथ फेरते हुए तीन बाल ज़ोर से खींच लिए और उस ज्ञानी शख़्स के पास ले आई।

जब उस हकीम ने यह दखा कि वाक़ई शेर के बाल लेकर आ गई है तो अपने माथे पर हाथ मारा और कहने लगा:

हाय अफ़सोस! मेरी प्यारी बहन! तू शेर को क़ाबू में कर सकती है उसको मानूस करके उसके तीन बाल ला सकती है तो क्या अपने शौहर को मानूस नहीं कर सकती? किसी भी तदबीर व बहाने के ज़रिये उसको राज़ी नहीं कर सकती? रोज़ाना शेर को खाना मुक़र्रर टाईम पर पहुँचाकर उसको तूने अपने से मानूस कर दिया, इसी तरह शौहर के मिज़ाज की रियायत करके उसको मानूस कर लो। बस यही तुम्हारी सारी बीमारियों की दवा और सारी परेशानियों का इलाज है। तुम्हारा शौहर शेर से तो ज़्यादा दरिन्दा और आदम-ख़ोर नहीं है, फिर क्या वजह है कि तुम उसको क़ाबू में न कर सकों। बहन! हिम्मत करो और आईन्दा

ख़्याल करो।

उस औरत ने खुश होकर अपनी ग़लती समझकर इक़रार किया और आईन्दा शौहर के साथ निभाने का वायदा करके चली गई। अल्लाह करे सारी मुसलमान बहनें इस वाक़िए से सबक़ हासिल करें और शौहर के सामने या सास के सामने, ज़बान चलाने या मुँहज़ोरी, या इनकारी मुजरिम बनने के बजाय ग़लती का इक़रार कर लें, चाहे अपनी ग़लती न हो और दिल से इक़रार कर लें कि आईन्दा ऐसा नहीं होगा माफ़ी चाहती हूँ।

औरतों का मर्दों के साथ बराबरी का दावा ग़लत है

हकीमुल्-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि तुम तो मर्दों के सामने इतनी छोटी हो कि हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि अगर मैं किसी को खुदा के अलावा किसी और के लिए सज्दा करने की इजाज़त देता तो औरत को हुक्म करता कि अपने शौहर को सज्दा करे। कुछ ठिकाना है मर्द की बड़ाई का कि अगर खुदा के बाद किसी के लिए सज्दा जायज़ होता तो औरत को मर्द के सज्दे का हुक्म होता। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

मगर अब औरतें मर्दों की यह क़द्र करती हैं कि उनके साथ ज़बान चलाती और मुक़ाबले से पेश आती हैं। अगर तुम यह कहो कि साहिब मर्द के गुस्से से हमको भी गुस्सा आ जाता है तो समझो कि गुस्सा हमेशा अपने से छोटे या बराबर वाले पर आया करता है। और जिसको आदमी अपने से बड़ा समझा करता है उस पर कभी गुस्सा नहीं आता, बेटे को बाप पर गुस्सा नहीं आ सकता चाहे वह उस पर कितना ही गुस्सा करे, क्योंकि यह उसको अपने से बड़ा समझता है।

पस तुम्हारा यह उज़्र ही खुद एक जुर्म को बतला रहा है। फ़ारसी की एक कहावत है:

"उज़्रे गुनाह बदतर अज़ गुनाह" यानी गुनाह करके कोई बहाना

बनाना यह उस गुनाह से बुरी चीज़ है।

बीबियो! तमको मर्द के गुस्से से गुस्सा आना यह बतलाता है कि तुम अपने आपको मर्द से बड़ा या बराबर के दर्जे का समझती हो, और यह ख़्याल ही सिरे से ग़लत है। अगर तुम अपने को मर्द से छोटा और उसके मातहत समझो तो चाहे वह कितना ही गुस्सा करता तुमको हरगिज़ गुस्सा न आता।

बस तुम ग़लत ख़्याल को अपने दिल से निकाल दो और जैसा ख़ुदा ने तुमको बनाया है वैसा ही अपने को मर्द से छोटा समझो, और उसके गुस्से के वक़्त ज़बान-दराज़ी कभी न करो। उस वक़्त ख़ामोश रहो और जब उसका गुस्सा उतर जाए तो दूसरे वक़्त कहो कि मैं उस वक़्त बोली न थी। उस वक़्त तो मैंने कह दिया था कि "मुझसे ग़लती हो गई माफ़ करना आईन्दा ऐसा नहीं होगा" अब बतलाती हूँ कि तुम्हारी फ़ुलाँ बात बेवजह थी या ज़्यादती की थी। या मैंने ऐसा नहीं किया था, तुमने मुझे जुर्म की सफ़ाई का मौक़ा न दिया, बिना तहक़ीक़ के आप मुझपर गुस्सा हो गए। इस तरह करने से बात भी न बढ़ेगी और मर्द के दिल में तुम्हारी क़द्र और भी बढ़ेगी। (तोहफ़ा-ए-ज़ौजैन पेज 51)

शौहर के दिल में

मुहब्बत पैदा करने के लिए एक अहम उसूल

शाम को जब घर आने का वक़्त हो या बाहर सफ़र से आने का वक़्त हो तो उससे पहले सारे कामों से फ़ारिग़ हो जाएँ। हरगिज़ आप ऐसा न कीजिए कि शौहर घर में आए और आप उनपर कोई तवज्जोह न दें। आप अपने कामों में ऐसी लगी हों कि गोया किसी का आना और न आना आपके लिए बराबर हो जाए। अगरचे आप कितने ही कामों में लगी हुई हों लेकिन आने वाले शौहर के लिए ज़रूर वक़्त निकालें चाहे थोड़ा सा ही हो।

याद रखिए! मुस्कुराहट बिखेरने वाली पेशानी, नर्म आदत और नर्मी से बात करने वाली मीठी ज़बान, दिलजोई और दिलदारी वाले हँसमुख चेहरे से "व अलैकुमुस्सलाम" की आवाज़ और "क्या हाल है" कि निदा शौहर की थकावट और परेशानी के दूर होने का सबब होगी, और नेक बीवी की मीठी ज़बान और अच्छा रवैया शौहर के मुँह और दिल को दुनिया भर की कई मिठाईयों से भी ज़्यादा मीठा कर देगा। इसी लिए ज़्यादातर स्वीट्स को भी उन घरों में ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है जिन घरों में ग़मों और परेशानियों की कड़वाहट को बदलने के लिए नेक बीवी की मुस्कुराहट बिखेरने वाली मीठी ज़बान न हो, और यह स्वीट्स उनका बदल हो जाएँ।

अल्लाह तआ़ला दोनों को रहमत की निगाह से देखते हैं

मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब दामत बरकातुहुम अपने एक प्रकाशित दीनी बयान "शौहर के हुक़ूक़" पेज 38 में फ़रमाते हैं:

एक हदीस जो मैंने ख़ुद तो नहीं देखी अलबत्ता हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की तक़रीरों में यह हदीस पढ़ी है और हज़रत थानवी रह० ने कई जगह इस हदीस का ज़िक्र फ़रमाया। वह हदीस यह है कि शौहर बाहर से घर के अन्दर घुसा और उसने मुहब्बत की निगाह से बीवी को देखा और बीवी ने मुहब्बत की निगाह से शौहर को देखा, तो अल्लाह तआ़ला दोनों को रहमत की निगाह से देखते हैं। इसलिए यह मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ात सिर्फ़ दुनियावी क़िस्सा नहीं है, यह आख़िरत और जन्नत बनाने का रास्ता है।

ज़रा एक लम्हे के लिए सोचिए कि आप जिस खाने-पकाने में या जिस काम में लगी हुई हैं, वह सब उसी शौहर के लिए तो है। वही तो आपकी दुनिया व आख़िरत की जन्नत है, शौहर को बाहर से थके हुए आने पर किसी क़िस्म की तवज्जोह (लिफ़्ट) न देना कितनी बुरी बात है?

बल्कि उनका मुस्कुराहटों के साथ स्वागत करें। जिस चीज़ की ज़रूरत हो उनकी चाहत व मिज़ाज को देखकर फ़ौरन पेश कीजिए। अगर थक कर आए हैं। थोड़ी देर साँस लेने के बाद अगरचे सादा पानी का गिलास ही हो लेकिन मुहब्बत से भरा हुआ नेक सीरत बीवी का दिया हुआ या एक गिलास शौहर के पत्थर दिल को मोम बनाने, जानी दुश्मन को दिली दोस्त बनाने, और दिल की सैंकड़ों बीमारियों के लिए सेहत की दवा, बदन की सैंकड़ों कमज़ोरियों के लिए विटामिन A. B. C. D. साबित होगा और हज़ारों मील के तय किए हुए सफ़र के मुसाफ़िर शौहर की थकन व थकाबट के दूर होने का यह एक सादा पानी का गिलास बिना गुलोकोज़ और बिना रूह-अफ़ज़ा और बिना TANG के बन सकता है, अगर यक़ीन न आए तो तजुर्बा करके देख लें।

आप अपने आपको पहचानिए आप कौन हैं? आपकी हर अदा पर इनसानियत की तामीर होती हे या बर्बादी। तरक़्क़ी होती है या गिरावट।

आप तो वह जौहर हैं कि अगर खुद अपनी क़द्र पहचान लें तो निस्वानियत (स्त्रीपन) को चार चाँद लग जाएँ। इनसानियत के गुलशन में नई बहार आ जाए। समाज के सूखे फूलों में नई ताज़गी और ज़िन्दगी आ जाए।

और इसी तरह उनके आते ही उनको ग़म की कोई ख़बर, किसी बच्चे की शिकायत, टेलीफ़ोन का कोई पैग़ाम, कोई झगड़ा, किसी भी क़िस्म की कोई तकलीफ़ की ख़बर बिल्कुल आते ही न बताईए बल्कि कुछ टंडक के साँस वह ले लें, ज़रूरी तक़ाज़ों से फ़ारिग़ हो जाएँ फिर मौक़े के एतिबार से और मुनासिब मौक़ा देखकर सिर्फ़ जो ज़रूरी बात हो उतनी ही अर्ज़ कर दें। "व अलैकुमुस्सलाम" के गुलाब का फूल पेश करें। "क्या हाल है" की चंबेली की ख़ुशबू से उनके दिमाग़ को महकायें। छोटे से बच्चे या बच्ची को साफ़ करके तैयार करके अब्बू का स्वागत करने के आदाब सिखाईए। अब अब्बू के आने का वक़्त है। नन्ही सी चहचहाती हुई मैना (हफ़्सा या फ़रहाना) और मासूम तोते मुहम्मद या

अ़ब्दुल्लाह की कानों में रस घोलने वाली आवाज़ों से बाप के दिन भर की थकावट दूर करने के लिए रब्बुल-आ़लमीन ने PONSTAN और PANADOL की गोलियों से भी ज़्यादा तासीर रखी है।

काश कि बीवी इस बात को समझ ले, खुद अपने को भी सही कर ले, दुपट्टा सिर पर अच्छी तरह रख ले, चेहरे पर थकावट के निशानों को मुस्कुराहट के साबुन से धो ले। अपने ग़मों या परेशानियों की ख़बरें शौहर को "आईए और तशरीफ़ लाईए" और लब्बैक कहने की आवाज़ों में गुम कर दे। बच्चों के रोने और तंग करने की परेशानियों पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो अज्र व सवाब मिलता है उस सोच का ज़ेवर पेहन कर अपनी हर परेशानी दूर कर ले। सास व नन्द, देवरानी और जेठानी की तरफ़ से दी गई तकलीफ़ों की बिना पर दिल में उठने वाले बदले की भावना की घुटन पर तहम्मुल और बर्दाश्त की कम्पनी के अज्र और सब्र वाले प्रफ़्यूम छिड़क ले और इस सब्र पर जो अज्र मिलेगा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसके तसव्वुर की महक से अपने को मुअ़त्तर (सुगंधित) कर ले। फिर देखिए शौहर आप पर कैसे मेहरबान हो जाता है। आपके दुख-दर्द का साथी आपकी खुशियों का साझी और ग़मों का बासी कैसे बन जाता है। और आप पर जान निछावर करके हर चीज़ आप पर कैसे कुरबान कर देता है।

घर में जो अल्लाह के इनामात हाज़िर हों उनको साफ़-सुथरे दस्तरख़्वान की ज़ीनत (शोभा) बना लें। नमाज़ का वक़्त हो चुका हो या अज़ान हो गई हो तो अदब से नमाज़ को याद करवा दीजिए। वुज़ू कर लें तो तौलिया पेश करें। जूते सीधे कर दीजिए और अगर खाने का वक़्त हो तो फ़ौरन दस्तरख़्वान बिछाकर दे दीजिए। अब इन्शा-अल्लाह तआ़ला आपकी दी हुई चटनी रोटी में उनको बिरयानी का मज़ा आएगा, दाल और चावल में भुने मुर्ग़ और चिकन का मज़ा आएगा। और अगर खाना पकाने में किसी दिन देर हो जाए तो कह दें कि थोड़ी देर इन्तिज़ार की तकलीफ़ के लिए माफ़ी चाहती हूँ। इस तरह अपने शौहर

का रोज़ाना (जब वह शाम को थक कर आएँ तो उनका) स्वागत कीजिए।

मुस्कुराहट ज़िन्दा-दिली का नाम है

कहते हैं कि मुस्कुराहट रूह का दरवाज़ा खोल देती है। रूह का रिशता ज़ेहन से, ज़ेहन का दिमाग़ से और दिमाग़ का दिल से होता है। बीवी ख़ूबसूरत वही होती है चाहे ज़ाहिरी हो या बातनी जो शौहर के दिल में खुशियाँ बिखेरने और दिल्लगी का सबब बने। अगर आप एक हंसते हुए चेहरे को देखें तो खुद-ब-खुद आपके चेहरे पर मुस्कुराहट बिखर जाएगी। उस हंसते हुए चेहरें को देखकर उसकी खिली-खिली बातें सुनकर आपके दिल में खुशी और मुसर्रत का एहसास पैदा होगा और आप उसके क़रीब रहना पसन्द करेंगे।

इसके उलट एक ऐसा चेहरा जिस पर मामूली सी भी मुस्कुराहट का दूर-दूर तक निशान न हो, बात करने का ऐसा अन्दाज़ जो उसके चेहरे पर आड़ी-तिर्छी लकीरें छोड़ जाए, माथे पर शिकनें हों, नाक सुकड़ी हुई हो, बात करते हुए होंट अजीब अन्दाज़ से खुलें तो आपको एक बहुत ही नागवार क़िस्म का एहसास होगा और जल्द ही आप उससे उकता जाएँगे और उससे बचने की तरकीब करेंगे।

एक फ़रांसीसी साहित्यकार "रोकते" ने लिखा है कि:

"दिल सबसे ज़्यादा उस वक़्त ख़ुश होता है जब कोई हंसता मुस्कुराता शख़्स तुम्हारे क़रीब बैठा हो"। आज से अढ़ाईस सौ साल पहले एक पवित्र किताब के ज़रिये यह कहावत हम तक पहुँची कि "दिल की शादमानी और खुशी उम्दा दवा की तरह नफ़ा पहुँचाती है"। डाक्टर ह्यूफ़ लेण्ड कहते हैं "हँसना, मुस्कुराना एक बहुत ही सेहत वर्धक योग है और खाने को हज़म करने में मदद देने वाली चीज़ है"। डाक्टर मार्शल कहते हैं "अगर आप अक़्लमन्द हैं तो ख़ूब मुस्कुराया करें"। डाक्टर शॉर्म फ़ोर्ट कहते हैं "आपकी उम्र के जितने दिन गुज़रे हैं उनमें

सबसे, बुरी तरह बर्बाद होने वाला दिन उसे समझिए जिसमें आप पूरे दिन में एक बार भी न मुस्कुराए हों"।

इसलिए आप ज़रा एहतियात कीजिए और हमेशा मुस्कुरा कर ज़िन्दा-दिली का सुबूत दें और शौहर के आते ही अपने और बच्चों के चेहरों पर मुस्कुराहट का पावडर मल लीजिए और शौहर और बच्चों को भी चाहिए कि वह घर में दाख़िल हों तो मुस्कुराते हुए आएँ और हमेशा मियाँ-बीवी दोनों यह उसूल याद रखें:-

"जो तुम मुस्कुराओ तो सब मुस्कुराएँ"

मियाँ-बीवी में मुहब्बत व ताल्लुक़, इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ पैदा करने का आज़माया हुआ नुस्ख़ा यह है कि दोनों मुस्कुराहटों को ज़िन्दा करें। जो मुस्कुराहट के ख़िलाफ़ बातें हों उनका ज़िक्र न करें। हर वक़्त मुस्कुराता हुआ चेहरा अपनाएँ।

अल्लाह तआ़ला की नेमतों में से एक नेमत यह भी है कि किसी बन्दे या बन्दी को मुस्कुराता हुआ चेहरा अ़ता फ़रमा दें। इसके हासिल करने के लिए किताब "जो तुम मुस्कुराओ तो सब मुस्कुराएँ" का मुताला बहुत लाभदायक होगा। (इस किताब को जनाब शैख़ सैयद रज़ियुद्दीन साहिब ने लिखा है) और इस्लाही ख़ुतबात (1) मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब के दीनी बयानात का ज़रूर मुताला (अध्ययन) करें।

****

(1) यह किताब "इस्लाही ख़ुतबात" हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब के दीनी बयानात पर आधारित है। इसकी उर्दू भाषा में अब तक पंद्रह जिल्दें आ चुकी हैं। **फ़रीद बुक डिपो दिल्ली** को यह गौरव प्राप्त है कि उर्दू के साथ-साथ इस अहम किताब का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित करने का उसको सौभाग्य मिला है। नाचीज़ ने ही "इस्लाही ख़ुतबात" को हिन्दी का रूप देकर हिन्दी पाठकों की ख़िदमत में एक कामयाब दीनी श्रंखला पेश की है। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हा

एक पाकबाज़ सहाबिया

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हा उन ख़ुशनसीब सहाबी औरतों में से हैं जिनके बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नती होने की ख़ुशख़बरी दी थी। उनका नाम रमीसा था और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि नबी पाक ने फ़रमायाः "मैंने अपने आपको जन्नत में जाते हुए देखा तो अचानक मेरी निगाह अबू-तल्हा की बीवी रमीसा पर पड़ी। नबी पाक के ज़माने के उनके कई वाक़िआत ऐसे हैं जिन्होंने उनको सहाबी औरतों में एक अलग जगह दी है। हाफ़िज़ अबू-नुऐम अस्फ़हानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने ये सब वाक़िआत 'हिल्यतुल-औलिया' में एक जगह जमा कर दिए हैं। वहीं से अनुवाद और व्याख्या के साथ आपकी ख़िदमत में पेश हैं।

मुबल्लिग़ा

1. इनके निकाह का वाक़िआ अजीब है। यह अपने निकाह से पहले इस्लाम ला चुकी थीं। हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो बाद में इनके शौहर बने, उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे। हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कुफ़्र ही की हालत में इन्हें शादी का पैग़ाम दिया, उसके जवाब में उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उनसे फ़रमायाः

"अबू-तल्हा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुमने एक ऐसी लकड़ी को अपना माबूद (पूजने की चीज़) बना रखा है जो ज़मीन से उगी है, और उसे फ़ुलाँ क़बीले के एक हब्शी शख़्स ने गढ़ा है।"

"हाँ जानता हूँ" अबू-तल्हा ने कहा।

"क्या तुम्हें ऐसी लकड़ी को माबूद मानते हुए शर्म नहीं आती? तुम जैसे आदमी का पैग़ाम रद्द नहीं किया जा सकता, लेकिन मैं मुसलमान

हो चुकी हूँ और तुम अभी काफ़िर हो। अगर तुम इस्लाम ले आओ तो मुझे इसके अलावा कोई मेहर नहीं चाहिए"। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया।

"लेकिन तुम तो इस रुतबे की औरत हो कि यह तुम्हारा मेहर नहीं बन सकता"। अबू-तल्हा ने कहा।

"फिर मेरा मेहर क्या हो सकता है?" हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने पूछा।

"सोना चाँदी!" अबू-तल्हा ने जवाब दिया।

"लेकिन मुझे न सोना चाहिए न चाँदी, मैं तो तुम से बस इस्लाम चाहती हूँ"। हज़रत उम्मे सुलैम ने फ़रमाया।

यह सुनकर हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में इस्लाम घर कर गया और नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुँचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के बीच तशरीफ़ रखते थे। अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु को आते देखा तो आपने सहाबा (अपने साथियों) से फ़रमाया:

"अबू-तल्हा तुम्हारे पास इस हाल में आए हैं कि उनकी आँखों के बीच इस्लाम का नूर चमक रहा है"।

उसके बाद अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम लाए और उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा उनके साथ निकाह के बंधन में बंध गईं।

मेहनत और मुजाहदा

2. यही उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जिनके बारे में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा-ए-उहुद (उहुद की लड़ाई) के मौक़े पर मैंने हज़रत आयशा और हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को देखा कि उन्होंने अपने पाइंचे चढ़ाए हुए थे, वे अपनी पीठ पर पानी के मश्कीज़े भर-भरकर लातीं और मुजाहिदों को पानी पिलातीं। जब मश्कीज़े ख़ाली हो जाते तो फिर लौटतीं और ताज़ा पानी भरकर

लातीं।" (उस वक़्त तक पर्दे के अहकाम नहीं उतरे थे)।

और ग़ज़वा-ए-हुनैन के मौक़े पर हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी इस पाकबाज़ बीवी को देखा कि एक ख़ंजर लिए खड़ी हैं। अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछाः "उम्मे सुलैम यह क्या है?" उन्होंने जवाब दियाः "यह ख़ंजर है और मैंने इसलिए थाम रखा है कि किसी मुश्रिक (अल्लाह के दुश्मन) ने मेरे क़रीब आने की कोशिश की तो यह उसके पेट में उतार दूँगी"। हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुश होकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनके मुजाहिदाना इरादे व हिम्मत का ज़िक्र किया तो आपने फ़रमायाः

"उम्मे सुलैमः (अब तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं होगी) अल्लाह काफ़ी हो गया है।"

सब्र व अक़्लमन्दी की प्रतीक

3. यही उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा हैं कि एक बार इनके बेटे बीमार हो गए। हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें बीमार छोड़कर काम पर चले गए। उसी बीच बेटे का इन्तिक़ाल हो गया। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने उन पर कपड़ा डाला, जिस कोठरी में इन्तिक़ाल हुआ था लाश उसी में रहने दी और आकर हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए खाना तैयार करने लगीं। हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु रोज़े से थे और उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह पसन्द न किया कि इफ़्तार आने से पहले उन्हें इस हादसे के ग़म में मुब्तला कर दें।

हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु शाम के वक़्त घर आए बच्चे का हाल पूछा और उसे देखने के लिए कोठरी में जाने लगे। लेकिन उम्मे सुलैम ने कहा "वह बहुत अच्छी हालत में है उसे देखने की ज़रूरत नहीं"। हज़रत अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु लौट आए और मुत्मईन होकर इफ़्तार करने लगे। उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने शौहर

के स्वागत के लिए मामूल के अनुसार सिंगार भी किया और घर की फ़िज़ा पर हादसे का मामूली असर भी न होने दिया। रात मामूल के अनुसार हंसते खेलते गुज़री। तहज्जुद के वक़्त उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हज़रत अबू-तल्हा से कहा:

"अबू-तल्हा फुलाँ क़बीले के लोग अ़जीब हैं, उन्होंने अपने पड़ोसियों से कोई चीज़ माँगी, पड़ोसियों ने दे दी, मगर ये उसे अपनी समझ कर बैठ गए अब वे अपनी चीज़ माँगते हैं तो ये उन पर नाराज़ होते हैं।"

अबू-तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा "उन्होंने बड़ा बुरा किया यह तो इन्साफ़ के बिल्कुल ख़िलाफ़ है"।

इस पर उम्मे सुलैम बोलीं: "आपका बेटा भी अल्लाह ने कुछ दिनों के लिये आपको दिया था और अब उसको वापस बुला लिया है, वही उसका मालिक था हमें सब्र के अ़लावा कोई चारा नहीं"।

अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह सुनकर हैरान रह गए और जाकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से शिकायत की कि उम्मे सुलैम ने मेरे साथ ऐसा-ऐसा मामला किया। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया:

يا ابا طلحة بارك الله لكما في ليلتكما.

तर्जुमा: अबू-तल्हा! अल्लाह ने तुम्हारी पिछली रात में तुम पर बड़ी बरकतें उतारी हैं। उसकी बरकत से अ़ब्दुल्लाह और उनसे नौ बेटे पैदा हुए और सबने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ख़ास ताल्लुक़

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी पाक बीवियों (रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्न) के सिवा मदीना तय्यिबा के किसी घर में तशरीफ़ नहीं ले जाते थे, सिर्फ़

एक उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा के यहाँ जाया करते थे। आप से पूछा गया तो आपने फ़रमायाः "मुझे उन पर रहम आता है, उनके भाई मेरे सामने क़त्ल हुए थे"।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ही से रिवायत है कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे घर तशरीफ़ लाए और दोपहर के वक़्त वहीं आराम फ़रमाया। सोते हुए आपके पाक बदन से पसीना बहुत निकला। उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने देखा तो एक शीशी लाकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पसीना उसमें जमा करना शुरू कर दिया। नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जागे और पूछाः "उम्मे सुलैम! यह क्या कर रही हो? हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दियाः यह आपका पसीना है, हम इसे अपनी ख़ुशबू में मिलाएँगे। यह इत्र से ज़्यादा ख़ुशबूदार है।"

(हिल्यतुल्-औलिया, अबू नुऐम पेज 57 ता 61 जिल्द 2)

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० की दीन को फैलाने के लिए क़ुर्बानी और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरी

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दोनों मियाँ-बीवी को दुआ दी थी "अल्लाह तआला तुम दोनों के लिए उस रात में बरकत अता फ़रमाए" उसके बाद यह गर्भवती हुई। जब हमल (गर्भ) की आख़िरी मुद्दत हुई तो अबू-तल्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र पर जाने की तैयारी फ़रमाने लगे। तो उन्होंने कहा कि मैं भी चलूँगी। इतना बड़ा शर्फ़ (सम्मान और गौरव) मिलेगा और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र होगा मैं कैसे रह सकती हूँ।

शौहर को ख़्याल हुआ कि इस आख़िरी वक़्त में इतना तकलीफ़देह सफ़र मुश्किल होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इजाज़त

माँगी, आपने इजाज़त दे दी।

इस सफ़र में साथ हो गईं, मक्का मुकर्रमा की फ़तह के वक़्त भी साथ थीं। ग़ज़्वा-ए-हुनैन में भी साथ रहीं, ऐसे कठिन वक़्त में जिसमें मर्दों के भी होश व हवास ठिकाने लग जाते हैं, मगर यह सच्ची आशिक़ा अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत को दिल में लिए हुए गर्भ के आख़िरी समय में दीन को दुनिया में फैलाने और जो काफ़िर न मानें उनके गन्दे वजूद से अल्लाह की ज़मीन को पाक करने के लिए जिहाद में मशग़ूल हैं। यहाँ तक कि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने फ़तह अ़ता फ़रमाई और यह लश्कर दोबारा मदीना मुनव्वरा लौटा। अख़ीर रास्ते में उनको बच्चे की पैदाईश का का दर्द उठा। उनके शौहर अबू-तल्हा परेशान हुए कि ऐसा न हो कि हम क़ाफ़िले से पीछे रह जाएँ। दुआ़ माँगी:

انك تعلم يا رب أنه يعجبنى أن أخرج مع رسولك اذا خرج وأدخل معه اذا دخل، وقد احتسبت بما ترى.

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! आप जानते हैं कि मुझे पसन्द है कि मैं मदीना से निकलूँ तो आपके रसूल के साथ निकलूँ और दाख़िल होना चाहूँ तो भी आपके रसूल के साथ दाख़िल हूँ। लेकिन अब बीवी के दर्द की वजह से मुझे ठहरना पड़ेगा और मैं आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद मदीना मुनव्वरा में दाख़ि हो सकूँगा।

अल्लाह तआ़ला उन आ़शिक़ों की दुआ़एँ कुछ ऐसे क़बूल करता था कि यूँ माँगा और यूँ पूरी हो गई। और क्यों न होता कि वह दुनिया में आने का मक़सद (अल्लाह और उसके रसूल के दीन को फैलाने के लिए मेहनत करना) पहचान कर उस पर मर-मिटने वाले थे।

यह दुआ़ माँगी थी और उम्मे सुलैम कहने लगीं:

يا اباطلحة، ماأجد الذى كنت أجد انطلق.

तर्जुमाः ऐ अबू-तल्हा! अब मुझे वह दर्द नहीं रहा जो पहले था,

चलो उठो हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ ही मदीना में दाख़िल होते हैं।

यहाँ तक कि जब मदीना पहुँचे, दोबारा दर्द उठा और अल्लाह ने बच्चा अ़ता फ़रमाया तो अपने बड़े बेटे अनस को बुलाकर कहा:

يا أنس! لا يُرْضعه اَحَدٌ حتى تغد و به عَلٰى رسول الله صلى الله عليه وسلم.

तर्जुमा: ऐ अनस! उसको अभी कोई औरत दूध न पिलाए यहाँ तक कि पहले हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में उसे ले जाया जाए।

सुबह लेकर गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखते ही फ़रमाया:

لَعَلَّ اُمَّ سُلَيْمٍ وَلَدَتْ.

तर्जुमा: शायद उम्मे सुलैम ने बच्चे को जन्म दिया है।

मैंने कहा हाँ! फिर मदीना की अ़जवा खजूर मंगवाई और उसको अपने मुँह मुबारक से नरम करके फिर बच्चे के मुँह में डाला, बच्चा उसको चूसने लगा तो फ़रमाया:

انظروا الى حب التمر قال: فمسح وجهه وسماه عبدالله.

तर्जुमा: देखो अन्सार को खजूर कितनी पसन्द है (बच्चे को भी बचपन ही से खजूर पसन्द है) और फिर उसके चेहरे पर हाथ फेरा और उसका नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।

इसी कुर्बानी का नतीजा था कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

دخلت الجنة فسمعت خشفة فقلت: من هذا؟ قالوا: هذه الغميصاء بنت ملحان، اُمّ انس بن مالك. (شخصية المرأة المسلمة ص١٢٧)

तर्जुमा: मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने आहट सुनी, मैंने कहा यह कौन है तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया यह उम्मे सुलैम अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु की माँ हैं।

इस वाक़िये को पढ़कर अल्लाह से बार-बार दुआ माँगिए कि ऐ अल्लाह! जिस तरह आपने उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा को दीन की मेहनत के लिए अपने रास्ते में जिहाद के लिए क़बूल फ़रमाया था, फ़त्हे-मक्का व ग़ज़वा-ए-हुनैन में शरीक हुईं, इसी तरह मुझे अपने शौहर के साथ दीन के लिए मेहनत करने वाली और शौहर को सारे आ़लम में फिरने वाला बनाने के लिए मदद करने वाली बना। आमीन

हमारी भी रहबरी फ़रमा, मदद फ़रमा, हमें भी समझ अ़ता फ़रमा, आपने जैसे सहाबी औरतों से दीन का काम लिया हमसे भी ले लीजिए। हमें भी क़बूल फ़रमा लीजिए। हमारे दिलों से इस फ़ानी दुनिया की मुहब्बत और इसकी चीज़ों के जमा करने का शौक़ निकाल कर अपनी और अपने दीन की मुहब्बत और अपनी मुलाक़ात और अपने दीदार की तड़प अ़ता फ़रमा दीजिए कि हमारे दिन दीने मुहम्मदी को सारी दुनिया में फैलाने और काफ़िरों को इस्लाम में लाने और मुसलमानों को सही मुसलमान बनाने में इस्तेमाल हों। और हमारी रातें दुआ़एँ करते हुए ठंडी-ठंडी आहें भरने और गर्म-गर्म आँसू बहाने में गुज़रें, कि यूँ हम आप से अपने और अपनी औलाद के लिए और आपके सारे बन्दों और बन्दियों के लिए दुआ़एँ करें। आप से माँगकर उनकी हिदायत का हम ज़रिया बन जाएँ। हमारे ज़रिये दुनिया में बहुत से काफ़िर मुसलमान हो जाएँ और सारे मुसलमान अपने दुनिया में आने का मक़सद पहचानें और उस पर अ़मल करने वाले बन जाएँ। आमीन या रब्बल्-आ़लमीन।

हज़रत शैख़ुल-हदीस रहमतुल्लाहि अ़लैहि, हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बच्चे की वफ़ात वाले वाक़िए के मुताल्लिक़ लिखते हैं कि बड़े सब्र और हिम्मत की बात है कि अपना बच्चा मर जाए और इस तरह बर्दाश्त करे कि शौहर को महसूस न होने दे। चूँकि शौहर का रोज़ा था इसलिए ख़्याल हुआ कि ख़बर होने पर खाना भी मुश्किल हो जाएगा (फ़ज़ाइले आमाल पेज 123)

आप इस वाक़िए को पढ़कर ग़ौर करें। आप भी तो कुछ थोड़ा सब्र

कर लिया करें। आने के साथ ही अभी कमरे में दाख़िल हुए और किसी हादसे की किसी फ़ोन की ख़बर दे दी, ऐसा बिल्कुल न करें। सहाबी औरतों रज़ियल्लाहु अन्हुन्-न कितनी अक़्लमन्द थीं। हालाँकि जिसे आज की दुनिया तहज़ीब कहती है इस तहज़ीब से तो वे नावाक़िफ़ थीं लेकिन इनसानियत के मनोवैज्ञानिक और तबई व फ़ितरी पहलुओं से इस तरह वाक़िफ़ थीं कि आज के नफ़्सियात के माहिर को उनके सामने एक छोटे बच्चे की हैसियत ही दी जा सकती है, गोया उंगली कटाकर शहीदों में नाम लिखवाना है। ख़ास तौर से आते के साथ ही (जैसे सास व नन्द की शिकायतें, पड़ोसियों के बच्चों के झगड़ों की शिकायतें अपने बच्चों की शिकायतें, कि आज मुन्ने ने यह तोड़ दिया, मुन्नी ने यह किया, यह किया यह किया, भाभी ने यूँ कहा सास ने यूँ कहा, मासी नहीं आती काम बहुत बाक़ी है, बिजली नहीं है पानी नहीं है) ऐसी बातें न बताएँ।

कोई ऐसी चीज़ जिससे उनके दिल में किसी मुसलमान मर्द या औरत की तरफ़ से मैल आए या किसी का ऐब खुले उससे सख़्त परहेज़ करें, वरना यह याद रखिए कि आप आज शौहर के दिल में उनकी माँ या बहन या भाभी से नफ़रत के जज़्बात पैदा कर रही हैं तो इसी तरह क़ानूने कुदरत के मुवाफ़िक़ आपकी आईन्दा आने वाली बहू आपकी गोद में पलने वाले आपके लाडले चहीते नूरे-नज़र, जिसको आपने ख़ून के क़तरे पिला-पिलाकर पाला है, बाप ने ख़ूब हिला-हिलाकर नाज़ों में पाला, उसी के दिल में आपकी नफ़रत के जज़्बात पैदा करेगी। और इतना आप से दूर करवा देगी कि आपने अपने शौहर (जीवन-साथी) को उसकी माँ से दूर करने का भी शायद उतना तसव्वुर न किया हो, और फिर इस बात के कहने में आप शायद सच्ची हों कि:

"मैं जब बहू थी तो सास अच्छी न मिली, और जब सास बनी तो बहू अच्छी न मिली।"

हाय अल्लाह की बन्दी! अल्लाह तुझ पर रहम करे। तू ही अच्छी न थी। अगर तू ही अपने आपको नेक बनाती, ख़दीजा और फ़ातिमा

(रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की ज़िन्दगी से सबक़ लेती तो अपनी दीनी ज़िन्दगी का अंधेरा दूर करती। ज़ैनब, रुक़ैया व फ़ातिमा की ज़िन्दगी में अपने लिए राह ढूँढ़ती, उनसे वफ़ा सीखती, मुहब्बत सीखती, इताअ़त सीखती, सब्र की मिठास सीखती, शौहर व सास की डाँट सुनते वक़्त ख़ामोश रहने की लज़्ज़त सीखती, बल्कि उनके ग़ुस्से के काँटों का बदला फूल से देना सीखती तो आज यह न होता।

इसलिए इस बात का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखना चाहिए कि शौहर को कहीं से आते ही फ़ौरन ही कोई ख़बर न सुनाए। पहले उनसे हाल पूछ लें वह किस हाल में आए हैं? उनका सफ़र कैसा गुज़रा, उनके साथ तो आज के दिन में कोई हादसा नहीं हुआ, ऐसा तो नहीं कि आते हुए गाड़ी का ख़ुदा न करे एक्सीडेंट हो गया हो और आपने आते ही कोई परेशानी वाली ख़बर सुना दी, जिससे दिल व दिमाग़ की कोई बीमारी बढ़ गई या पैदा हो गई। इसलिए पहले उनसे हालचाल पूछकर ठंडे दिल से मौक़े के मुनासिब ख़ूब सोच समझकर बात करें। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान मर्द और औ़रत को समझ अ़ता फ़रमाएँ। आमीन

औ़रतें भी मुफ़्ती थीं

शैख़ अ़लाउद्दीन समरक़न्दी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक किताब "तोहफ़तुल्-फ़ुक़हा" लिखी है। इस किताब की शरह उनके शागिर्द इमाम अबू बक्र इब्ने मसऊ़द कासानी रह० ने लिखी है। जिसका नाम "बदाए-उस्सनाय" है। अ़ल्लामा शामी के कहने के अनुसार यह किताब फ़िक़्ह (मसाईल के इल्म) में बेजोड़ है। जब शरह मुकम्मल कर चुके तो अपने उस्तादे मोहतरम की ख़िदमत में पेश की, वह शरह को देखकर बेहद ख़ुश हुए और अपनी बेटी मोहतरमा फ़ातिमा का निकाह उनसे कर दिया। यह वही औ़रत हैं कि बादशाहों ने उनके निकाह के लिए पैग़ाम दिया था। लेकिन शैख़ ने उनकी पेशकश को ठुकरा दिया था।

इन ख़ातून को फ़िक़्ह व इफ़्ता (मसाईल की जानकारी और फ़तवे

देने) में इस क़द्र महारत थी कि फ़तवा लखने का काम भी किया करती थीं। चुनाँचे लोग जब दीनी मसाईल के जवाबात उनके घर से लिखा कर ले जाते तो बहुत सी बार यह होता कि जवाब का कुछ हिस्सा इस ख़ातून का लिखा हुआ होता था और कुछ हिस्सा उनके बाप का, और कुछ हिस्सा उनके शौहर का। (शामी पेज 100 जिल्द 1)

नेक औरतों की पाँच सिफ़तें

दुनिया के सबसे बड़े मुअ़ल्लिम और कायनात के हादी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नेक बीवी की चार सिफ़तें बहुत ही मुख़्तसर और जामे जुमलों में बयान फ़रमाईं और पाँचवीं सिफ़त दूसरी हदीस में बयान की गई है। इसके पढ़ने से पहले आप यह नीयत कर लें और दुआ माँग लें कि ऐ रहीम व करीम आक़ा! ये पाँच सिफ़तें मेरे अन्दर और मेरी सारी मुसलमान बहनों में पैदा फ़रमा। फ़रमाया:

ان امرها اطاعته وان نظر اليها سرته وان اقسم عليها ابرته وان غاب عنها نصحته فی نفسها وماله. (ابن ماجہ)

यानी अगर शौहर कोई हुक्म करे (जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो) तो उसकी बात माने, और अगर शौहर उसकी तरफ़ देखे तो शौहर को ख़ुश करे, और अगर शौहर किसी काम पर क़सम खा बैठे कि ज़रूर तुम ऐसा करोगी और वह काम शरई तौर पर जायज़ हो तो उसकी क़सम सच्ची कर दे (यानी उस पर अ़मल करे)। अगर शौहर कहीं चला जाए और वह उसके पीछे घर में रह जाए तो अपनी जान व आबरू और उसके माल के बारे में उसकी ख़ैरख़्वाही करे।

पहली सिफ़त

पहला सबक़ मुसलमान बच्ची को उसके और सारे जहाँ के सबसे बड़े और आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से जो सबके लिए रहमत बनाकर भेजे गए हैं, यह मिलता है कि अगर तुम्हारा

शौहर कोई हुक्म करे तो उसकी इताअ़त करो। इस शर्त के साथ कि उस चीज़ को तुम्हारे और तुम्हारे शौहर के ख़ालिक़ और मालिक (यानी अल्लाह पाक) ने मना न किया हो। अगर उन्होंने मना किया है जैसे नामेहरम मर्दों से मिलना-जुलना, गुनाहों की मज्लिसों में जाना वग़ैरह तो इसमें शौहर की इताअ़त करना (यानी उसका हुक्म मानना) जायज़ नहीं। जो बीवी अपने अल्लाह को राज़ी करने के लिए अपने शौहर की हर जायज़ बात माने, उसकी चाहत के अनुसार चलने की कोशिश करे तो शौहर के दिल में उसकी मुहब्बत ज़रूर पैदा होगी और शौहर उसका सच्चा दोस्त और उस पर जान फ़िदा करने वाला बन जाएगा। लेकिन यह उसी वक़्त होगा जब अपने आपको शौहर की फ़रमाँबरदारी में फ़ना कर दे।

शौहर की इताअ़त (हुक्म मानने) में अपनस चैन व आराम सब कुरबान करना होगा। इताअ़त में जितनी ज़िल्लतें मिलें उन्हें ऐन इज़्ज़तें समझे। काँटों का बिस्तर मिले उसको फूलों की सेज ख़्याल करे। हर बीवी नई दुल्हन इस सिफ़त को अपना ले और निकाह के बाद थोड़े ही ज़माने तक इस पर जम जाए फिर देखे कि मियाँ-बीवी में कैसी मुहब्बत होती है। फिर यह एक जान दो दिल होंगे, एक दिमाग़ दो जिस्म होंगे, एक बातिन दो ज़ाहिर एक मिज़ाज दो रूहें एक बीमार दो ईलाज चाहने वाले, एक परेशानी दो दुआ माँगने वाले, एक ग़म और दो सहने वाले, एक ख़ुशी और दो हंसने वाले, एक फ़िक्र दो सोचने वाले होंगे।

शौहर की इताअ़त और फ़रमाँबरदारी उसकी ख़ुशी और रिज़ा के पाने के लिए दिन-रात प्रयासरत रहिए। अगर ज़रा भी शौहर के चेहरे पर रंज व मलाल, ग़मी व परेशानी के आसार नज़र आएँ तो तुरन्त बेक़रार हो जाईए। उसके ग़म के साथ ग़मगीन हो जाईए। उसके ख़ुश होने के साथ ख़ुश हो जाईए, उसके हंसने के साथ हंसिये, उसके रोने के साथ रोना सीखिए।

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की अपनी बीवी को नसीहत

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी बीवी से कितनी प्यारी बात कही थी। फ़रमायाः तुम जब मुझे नाराज़ देखो तो तुम मुझे मना लेना और अगर मैं तुम्हें नाराज़ देखूँगा तो मैं तुम्हें मनाने की कोशिश करूँगा, वरना हमारी गाड़ी एक साथ नहीं चल सकती। (इस्लाम और शादी)

जो शौहर कहे वह पहनिए जो कहे वह पकाईए। जिस तरह कहे वैसा कीजिए। जब कहे तब कीजिए। बस सुन ले एक दुल्हन इस वक़्त तक की मासूम लड़की और थोड़े समय में बन जाने वाली किसी की बीवी किसी की बहू! अब निकाह के दो बोल बोलने के बाद ज़िन्दगी का नया दौर शुरू होगा, बस एक गोशा-ए-चश्म पर बीवी बनकर आना होगा, अब तक खेला और खाया, बेफ़िक्री की नींद सोई और सुख की हंसी, सहेलियों के साथ खेल खेली, बहनों के साथ हंसी बोली, हमजोलियों के साथ झूला झूली।

कल से नई पाबन्दी होगी, नई ज़िन्दगी और नई महकूमी, इसलिए शरीफ़ बच्चियों को पहला सबक़ इताअत का मिलता है, ख़िदमत गुज़ारी का मिलता है, अपने दिल को मारकर, कुचल कर, दूसरे का जी खुश करने का मिलता है। वक़्फ़ समझ ले आज से अपनी ज़िन्दगी ख़िदमत के लिए, इताअत के लिए, सब्र के लिए। कल से नई पाबन्दी होगी, अब दौर शुरू हुआ नई फ़िक्रों और पाबन्दियों का, नई क़ैदों का और ज़िम्मेदारियों का।

अब तक ज़िन्दगी अपने वास्ते थी, कल से दूसरे की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ होगी। अब न अपने लिए खाना न अपने लिए पहनना, न अपने वक़्त पर सोना, न अपने वक़्त पर जागना। अल्लाह की शान! अब तक जो दूसरों की आँखों की पुतलियों में आरज़ुओं और अरमानों के गहवारों में पली और बढ़ी, कल से वह खुद शौहर की ख़िदमत

गुज़ारी के लिए वक्फ़ होगी। बात-बात पर रोकना होगा, खुद बाद को खाएगी पहले दूसरे को खिलाएगी, बेशक पहनेगी और ओढ़ेगी मगर इसलिए कि शौहर को भली लगे। अपने को संवारेगी निखारेगी मगर इसलिए कि शौहर की नज़र में जचे। और जब माँ बनेगी तो औलाद के आराम की ख़ातिर रातों पर रातें जागेगी, टहल-टहल कर काटेगी, इसलिए कि नई नस्ल की ज़िम्मेदारी उठाए, उसको सेहतमन्द बनाए। दूसरों की सीरत की तश्कील करे उनके उठान की तकमील करे।

बस ऐ मुसलमान बीवी! अपने प्यारे नबी की इस नसीहत को हमेशा याद रखना कि "अगर शौहर उसको किसी जायज़ बात का हुक्म करे तो वह उसकी फ़रमाँबरदारी करे" उसकी बात माने।

मन्ज़िल बेशक कड़ी है और ज़िम्मेदारियाँ सख़्त, लेकिन मुसलमान लड़की यह सुन ले कि इस पर इनाम भी कैसे और खुशख़बरी भी क्या-क्या हैं?

अम्माँ जान (नबी पाक की पाक बीवी) उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं और उसकी ज़बान से सुनकर कहती हैं जो दुनिया में हर कमज़ोर का सहारा और हर बेकस का आसरा बनाकर भेजा गया था (यानी नबी पाक), कि जो औरत ज़िन्दगी की मन्ज़िलें तय करती है और आख़िरी मन्ज़िल में इस हालत में पहुँचती है कि उसका शौहर उससे खुश है तो बस जन्नत उसकी है। गोया जन्नत और उसके बीच कोई रोक नहीं। पस जो खुशनसीब अपने शौहर के साथ ऐसा निबाह करके गई और शौहर का दिल हाथ में लिए दुनिया से उठी, खुशख़बरी है उसके लिए दुनिया के सबसे बड़े सच्चे की ज़बान से, चुनाँचे इरशाद है कि उसके और जन्नत के बीच कोई रोक नहीं।

और यह आवाज़ तो बचपन ही से मुसलमान लड़की के कान में पड़ चुकी है कि सज्दा अगर मख़्लूक़ में किसी के लिए भी जायज़ होता तो शौहर के लिए जायज़ होता।

फ़रमाया दुनिया के सबसे बड़े मुअ़ल्लिम ने जो सबके लिए रहमत

बनाकर भेजे गए थे, सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लमः

عن عـائشة رضى الله عنها ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لـو امـرتُ احـدًا ان يسجد لاحد لامرتُ المرأة ان تسجد لزوجها ولو ان رجلا امـرامـرأته ان تنقل من جبل احمر الٰى جبل اسود، ومن جبل اسود الٰى جبل احمرلكان حق لها ان تفعل. (ابن ماجہ ص ۱۳۳)

तर्जुमाः अम्माँ जान आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता किसी के लिए, तो औ़रत ही को हुक्म देता कि अपने शौहर को सज्दा करे, और मर्द अगर बीवी को हुक्म दे कि पत्थर मुन्तक़िल करे लाल पहाड़ की तरफ़ से काले पहाड़ की तरफ़ और काले पहाड़ी की तरफ़ से लाल पहाड़ की तरफ़ (यह तो सिर्फ़ एक मिसाल है यानी मानो इस क़द्र सख़्त से सख़्त काम ले) जब भी औ़रत पर ज़रूरी है कि उस काम को पूरा करे।

यानी अगर मेरे लिए किसी को यह हुक्म देना जायज़ होता कि एक शख़्स दूसरे को सज्दा करे तो मैं औ़रत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे। लेकिन चूँकि अल्लाह के अ़लावा दूसरे के आगे सज्दा करना जायज़ नहीं, इसलिए मैं यह सज्दा करने का हुक्म नहीं देता।

यह दो दिलों का ताल्लुक़ है

ज़िन्दगी के सफ़र में जहाँ मर्द व औ़रत साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। उसमें अल्लाह तआ़ला ने मर्द को "सरदार और निगराँ" बनाया है। इस "सरदारी" के अ़लावा और जितनी सरदारी और हाकिमियत हैं वे सब वक़्ती और अस्थाई हैं। आज एक आदमी सरदार और हाकिम बन गया, या मुल्क का बादशाह बना दिया गया, लेकिन उसकी हाकिमियत और बादशाहत और सरदारी एक ख़ास वक़्त तक के लिए है, कल तक

हाकिम और सरदार बना हुआ था और आज वह जेलख़ाने में है। कल तक बादशाह बना हुआ था और आज उसे कोई दो कौड़ी के लिए पूछने को तैयार नहीं। इसलिए ये सरदारी और हुकूमतें आनी जानी चीज़ें हैं। आज हैं कल नहीं।

लेकिन मियाँ-बीवी का ताल्लुक़ यह ज़िन्दगी भर का ताल्लुक़ है दम-दम का साथ है, एक-एक लम्हे का साथ है। इसलिए इस ताल्लुक़ के नतीजे में मर्द को जो सरदारी और हुकूमत हासिल होती है, वह मरते दम तक बरक़रार रहती है। या जब तक निकाह का रिश्ता बरक़रार रहता है। इसलिए यह "सरदारी और हुकूमत" आ़म सरदारियों से अलग है। दूसरी सरदारी में हाकिम का महकमू के साथ, हाकिम का रिआ़या के साथ सिर्फ़ एक ज़ाबते का दस्तूरी और क़ानूनी ताल्लुक़ होता है, लेकिन मियाँ-बीवी का ताल्लुक़ सिर्फ़ ज़ाबते, क़ानून और सिर्फ़ ख़ानापुरी का ताल्लुक़ नहीं है बल्कि यह दिलों का जोड़ है, यह दिलों का ताल्लुक़ है, जिसके असरात सारी ज़िन्दगी पर फैले हुए हैं।

इसी वास्ते हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो मैं औ़रत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे क्योंकि वह उसकी ज़िन्दगी भर के सफ़र का सरदार और हाकिम है।

मेरी मोहतरम बहन! दुनिया की बड़ी से बड़ी तकलीफ़ें आ़रज़ी और फ़ानी और यहाँ की सख़्त से सख़्त तल्ख़ियाँ वक़्ती और अस्थाई हैं। मुसलमान लड़की! मौत की आख़िरी मन्ज़िल और उसके बाद के इनामात को सामने रखोगी, मालिक और रब्बुल-आ़लमीन के ख़ुश हो जाने को सामने रखोगी तो राह का हर काँटा फूल, और हर पत्थर पानी बन जाएगा। इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

इसलिए किसी भी हाल में शौहर को नाराज़ मत करना, जब तुम अल्लाह तआ़ला को क़ियामत के दिन मिलो तो इस हाल में मिलो कि तुम ने शौहर का हक़ अदा कर दिया हो, उसको इसलिए ख़ुश किया हो

ताकि अल्लाह तआ़ला ख़ुश हो जाए। उसकी हर जायज़ बात को इसलिए माना हो कि अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी हासिल हो जाए।

ऐ मुसलमान लड़की! अल्लाह तेरा नसीब खोल दे। जिसके साथ उम्र भर निबाह करना है उस दिल पर अल्लाह तुझे हाकिम बन दे। उम्र भर तुझे ख़िदमतगारी नसीब रहे जन्नती औ़रतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की, और ऐ अल्लाह जब वक़्त आए आपके दरबार में इस बन्दी की हाज़िरी का तो इसके नसीब पर साया पड़े ख़ुशनसीब ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के नसीब का, जिनका सोग मनाया तेरे हबीब व महबूब ने, इसके नसीब पर साया डले ख़ुशनसीब आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का कि तेरे बन्दे और हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब दुनिया से सफ़र इख़्तियार फ़रमाया तो सर मुबारक हज़ारों साथियों और जाँनिसारों के मौजूद होने के बावजूद इन्हीं हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की गोद में था। आमीन या रब्बल् आ़लमीन।

औ़रतों का जिहाद

हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद अन्सारी सहाबिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान, मैं औ़रतों की तरफ़ से बतौर क़ासिद के आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुई हूँ। बेशक आपको अल्लाह जल्ल शानुहू ने मर्द और औ़रत दोनों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा। इसलिए हम औ़रतों की जमाअ़त आप पर ईमान लाई और अल्लाह पर ईमान लाई, लेकिन हम औ़रतों की जमाअ़त मकानों में घिरी रहती है, पर्दों में बन्द रहती है। मर्दों के घरों में गड़ी रहती है और मर्दों की ख़्वाहिशें हम से पूरी की जाती हैं। हम उनकी औलाद को पेट में उठाए रहती हैं।

और इन सब बातों के बावजूद मर्द बहुत से सवाब के कामों में

हमसे बढ़े रहते हैं। जुमा में शरीक होते हैं, जमाअ़त की नमाज़ों में शरीक होते हैं, बीमारों की देखभाल करते हैं, जनाज़ों में शिर्कत करते हैं और इस सबसे बढ़कर जिहाद करते रहते हैं। और जब वह हज के लिए या उमरा के लिए या जिहाद के लिए जाते हैं तो हम औ़रतें उनके मालों की हिफ़ाज़त करती हैं, उनके लिए कपड़ा बुनती हैं, उनकी औलाद को पालती हैं। क्या हम सवाब में उनकी शरीक नहीं?

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह सुनकर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तरफ़ मुतवज्जह हुए और इरशाद फ़रमाया कि तुमने दीन के बारे में इस औ़रत से बेहतर पूछने वाली कोई सुनी? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमको ख़्याल भी न था कि औ़रत भी ऐसा सवाल कर सकती है। उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इरशाद फ़रमायाः

"ग़ौर से सुन और समझ और जिन औ़रतें ने तुझको भेजा है उनको बता दे कि औ़रत का अपने शौहर के साथ अच्छा बर्ताव करना और उसकी ख़ुशी को ढूंढ़ना और उस पर अ़मल करना, इन सब चीज़ों के सवाब के बराबर है। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा यह जवाब सुनकर बहुत ख़ुश होती हुई वापस हो गईं।"

फ़ायदाः औ़रतों का अपने शौहरों के साथ अच्छा बर्ताव करना और उनकी इताअ़त व फ़रमाँबरदारी करना बहुत ही क़ीमती चीज़ है, मगर औ़रतें इससे बहुत ही ग़ाफ़िल हैं। (फ़ज़ाइले आमाल हिकायाते सहाबा पेज 126)

दूसरी सिफ़त

ان نظر الیھا سرّته

"(अगर) शौहर उसकी तरफ़ देखे तो उसे ख़ुश कर दे"।

यानी अपने रंग-ढंग शरीअ़त की हदों में रहते हुए शौहर की मर्ज़ी के अनुसार रखे। जब बीवी पर नज़र पड़े तो उसे देखकर उसका दिल

खुश हो। यानी पहनने में, रहने सहने में शौहर का मिज़ाज पहचाने और जिस लिबास में शौहर को ज़्यादा अच्छी या भली मालूम होती हो वह पहने और उसी तरह रहे। इसलिए हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

औ़रतों की ज़बरदस्त ग़लती

"यह अजीब बात यह है कि घर में तो भंगनों और मासियों (नौकरानियों) की तरह रहती हैं और जहाँ कहीं बाहर जाना हो तो बन-संवर कर बेगम साहिबा बन जाएँगी। कोई उनसे पूछे अच्छे कपड़े पहनने की वजह क्या है? क्या सिर्फ़ ग़ैरों को दिखाना है? ताज्जुब है कि जिस शौहर के वास्ते यह कपड़े बने और जिसके घर दुल्हन बनकर आई उसके सामने कभी न पहना जाए और ग़ैरों के सामने पहना जाए।

हैरत है कि शौहर से कभी सीधे मुँह बात न करें। कभी अच्छा कपड़ा उसके सामने न पहनें और दूसरों के घरों में जाएँ तो शीरीं मीठी ज़बान वाली बन जाएँ और कपड़े भी एक से एक अच्छे से अच्छे पहनकर जाएँ। काम आएँ दूसरों के और दाम लगें शौहर के, यानी ख़र्च व हुक़ूक़ माँगें शौहर से, क्या यह इन्साफ़ है? इस बनावट की कोई हद है?" (अत्तबलीग़ व दवाइल-उयूब पेज 91)

घर में सबसे मैले-कुचैले फटे-पुराने कपड़े पहनेंगी जैसे सादगी और दुनिया के फ़ानी होने का तसव्वुर बहुत ग़ालिब है। शौहर ने और सास ने जितने नये कपड़े सिलवा दिए हैं वे न पहनना और बिल्कुल गन्दे कपड़े और गन्दी हालत में शौहर के सामने रहना यह बहुत बुरी बात है। इसलिए हदीस पाक में औ़रत की सिफ़त बयान की गई कि शौहर के सामने इस तरह रहे कि जब शौहर देखे तो देखकर ख़ुश हो जाए। और उसको अपनी बीवी दुनिया की तमाम औ़रतों से ज़्यादा हसीन मालूम हो।

अगर औ़रत अपने शौहर के सामने अच्छे लिबास में साफ़-सुथरी होकर रहे, बालों में तेल आँखों में काजल का एहतिमाम रखे वग़ैरह-

वग़ैरह, तो शौहर की निगाह में यह सबसे ज़्यादा हसीन हो जाए।

तीसरी सिफ़त

तीसरी बात यह फ़रमायी कि अगर शौहर किसी ऐसी बात पर क़सम खा ले जिसका पूरा करना बीवी से संबन्धित हो। जैसे यह कि आज तुम ज़रूर मेरी माँ के पास चलोगी या फुलाँ बच्चे को नहलाओ-धुलाओगी। या जैसे तहज्जुद पढ़ोगी तो उसकी बीवी क़सम में उसको सच्चा कर दिखाए। यानी वह काम कर ले जिस पर शौहर ने क़सम खाई है। इस शर्त के साथ कि वह काम शरई तौर से सही हो।

यह क़सम खा लेना कि तुम ज़रूर यह काम करोगी, बहुत ज़्यादा मुहब्बत व उलफ़त और नाज़ की वजह से होता है। जिससे ख़ास ताल्लुक़ है और जिस पर नाज़ है उसी से कहा जाता है कि ऐसा करो और ऐसे मौक़े में कभी उसे क़सम दे देते हैं। और कभी ख़ुद क़सम खा लेते हैं। जिन औरतों को शौहरों से असली और दिली ताल्लुक़ होता है वे शौहर को राज़ी रखने का ख़ास ख़्याल रखती हैं।

इस तीसरी सिफ़त में जो नेक बीवी की तारीफ़ में ज़िक्र की गई उसी ख़ास उलफ़त और चाह का ज़िक्र फ़रमाया है जो शौहर और बीवी के बीच होना चाहिए। (तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन)

मसलाः वाज़ेह रहे कि किसी दूसरे के क़सम दे देने से क़सम को पूरा करना ज़रूरी नहीं होना। (बहिश्ती ज़ेवर)

चौथी सिफ़त

चौथी सिफ़त यह बयान फ़रमायी कि अगर शौहर कहीं चला जाए और बीवी को घर पर छोड़ जाए जैसा कि ज़्यादातर होता है, तो बीवी का फ़रीज़ा है कि अपनी जान और शौहर के माल के बारे में वही रवैया अपनाए जो उसके सामने रखती थी। ग़ैरत-मन्द शौहर को यह पसन्द नहीं कि उसकी बीवी किसी ग़ैर-मर्द की तरफ़ देखे या ग़ैर-मर्द के सामने आए या उससे आँख मिलाए या दिल लगाए। जब शौहर घर में होता है तो औरत सिर्फ़ उसकी बीवी बनकर रहती है। इसी तरह जब वह कहीं

चला जाए तब भी उसी को शौहर जाने और उसी की बीवी बनी रहे। जब किसी से निकाह हो गया तो इफ़्फ़त व पाकदामनी की हिफ़ाज़त उसी मर्द से जुड़ी होगी। अब अपने जज़्बात को सुकून पहुँचाने का केन्द्र, परेशानियों की तसल्ली का धुहर सिर्फ़ उसी को बनाए रखे।

शौहर की मौजूदगी और ग़ैर-मौजूदगी दोनों में सिर्फ़ उसी से अपना ताल्लुक़ रखे और शौहर के पीछे यानी उसकी ग़ैर-मौजूदगी में उसके माल की भी हिफ़ाज़त करे। ऐसा न करे कि पीठ पीछे उसका माल लुटा दे और बेजा ख़र्च कर डाले, या अपने मैके पहुँचा दे या बिना शौहर की इजाज़त अपने रिश्तेदारों के ख़र्चों में लगा दे।

अगर शौहर के पीछे अपनी जान और उसके माल में उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ किया तो यह ख़ियानत होगी। इसलिए औरतों को चाहिए कि मर्द के मालों को बर्बाद न करें, फ़ुज़ूलख़र्ची न करें। जिस चीज़ की ऐसी ज़रूरत हो कि उसके बिना नुक़सान हो तो वह ख़रीदें, वरना न ख़रीदें। जैसे हमारी अलमारियों में बहुत से ऐसे बरतन हैं जैसे जूस मशीन, गिलास, प्लेटें जिनकी सालों साल में कभी ज़रूरत पड़ती है या सिर्फ़ किसी के घर में देखा कि शोकेस भरा हुआ है, तो ख़ुद भी शौक़ हुआ कि हमारे घर में भी ऐसा होना चाहिए और अब सर में दर्द शुरू हो गया और शौहर के सर में भी दर्द करवा दिया कि जैसा फ़ुलानी के घर में शोकेस है वैसा हमारे घर में भी होना चाहिए जैसा फ़ुलानी के घर में फ़र्नीचर है वैसा हमारे घर में भी होना चाहिए। जैसा फ़ुलानी के घर पर दीवारों का रंग है वैसा ही हमारे घर में होना चाहिए। अब शौहर को मजबूर करना कि यह ला दो यह ला दो, यह सब शौहर के माल में ख़ियानत है, फ़ुज़ूल और बेकार की चीज़ें हैं।

अल्लाह तआला नेक औरतों की सिफ़ात में एक सिफ़त यह बयान फ़रमाते हैं:

حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ

यानी मर्दों के पीठ पीछे भी अल्लाह की हिफ़ाज़त (और उसकी

तौफ़ीक़) से (उसकी आबरू व माल की) हिफ़ाज़त करती है।

यह अल्लाह तआला ने औरत का लाज़िमी वस्फ़ (सिफ़त और ख़ूबी) क़रार दिया। और उसके ज़िम्मे यह फ़रीज़ा आयद किया कि जब शौहर घर में मौजूद न हो तो उस वक़्त वह उसके घर की हिफ़ाज़त करे। घर की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि पहले तो ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त करे की किसी गुनाह में मुब्तला न हो और शौहर का जो माल व असबाब है, उसकी हिफ़ाज़त करे। इसलिए उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी बीवी पर आयद होती है। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि:

المرأة راعية فی بيت زوجها. (صحیح البخاری، باب الجمعة فی القری والمدن)

तर्जुमा: "औरत अपने शौहर के घर की निगहबान है।"

यानी उसके माल व सामान की हिफ़ाज़त औरत की ज़िम्मेदारी है, लेकिन शौहर के घर की हिफ़ाज़त और उसके माल व सामान की इस तरह हिफ़ाज़त करे कि माल बेजा ख़र्च न हो। क़ुरआन करीम ने यह उसकी ज़िम्मेदारी क़रार दी है।

बीवी के दिल में शौहर के पैसे का दर्द हो

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने दीनी बयानों 'मवाईज़' में लिखा है कि औरत के फ़राईज़ में दाख़िल है कि उसके दिल में शौहर के पैसे का दर्द हो। शौहर का पैसा ग़लत जगह पर और कहीं भी बिला वजह ख़र्च न हो और फ़ुज़ूलख़र्ची में उसका पैसा बर्बाद न हो। यह चीज़ औरत के फ़राईज़ (ज़िम्मेदारियों) में दाख़िल है। यह न हो कि शौहर का पैसा दिल खोलकर ख़र्च किया जा रहा है। या घर को नौकरानियों पर छोड़ दिया गया है। वह जिस तरह चाह रही हैं कर रही हैं। अगर कोई औरत ऐसा करती है तो वह अपनी ज़िम्मेदारियों के ख़िलाफ़ कर रही है।

अगर किसी का मकान कपड़ा देखकर अपने दिल में भी ख़्याल आए तो दो चीज़ों को सोचें:

1. मौत को सोचें कि मैं आज दुनिया से चली गई तो जितनी

हलकी हो जाऊँगी, कम सामान होगा, उतना कम हिसाब देना पड़ेगा। जिसके घर में कम से कम चीज़ें होंगी सादा घर होगा उसका हिसाब भी जल्द हो जाएगा। और जितनी चीज़ें ज़्यादा होंगी उसका हिसाब भी देना पड़ेगा।

2. हज़रत ख़दीजा, आयशा, ज़ैनब, फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हुन्-न) उनके घरों में क्या था, जितना हमारा घर आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर की तरह होगा उतना ही हम क़ियामत के दिन उनके नज़दीक होंगे। हमारी रूह उतनी ही आसानी से निकल जाएगी और मौत हमारे लिए प्यारी होगी, हम मौत को ख़ुशी से क़बूल कर लेंगे। और मलकुल-मौत (मौत के फ़रिश्ते) को कहेंगे:

"मुबारक हो तुम आए तुम्हारा ही इन्तिज़ार था"।

मज़े का वक़्त है ऐ मौत इस दम आ तू बेहतर है
कि दिल में मेरे दिलबर और नज़र में मेरे मन्ज़र है

और जो आपके घर में आएगी वह भी सादगी देखकर जाएगी, और जो पैसा उससे बचेगा उसको आख़िरत के बैंक में जमा करा दें वह इस तरह कि अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च कर दें तो उस पर बेइन्तिहा अज्र और बदला भी मिलेगा।

दुनिया में हम अच्छी-अच्छी चीज़ें जमा करने नहीं आए। हम तो अल्लाह को राज़ी करने आए हैं और जितनी घर में, लिबास में, हर चीज़ में सादगी होगी उतना ही अल्लाह तआला ज़्यादा ख़ुश होंगे। अगर हम में से हर एक अपनी ज़रूरत से ज़्यादा सामान को निकाल कर ग़रीबों और मसाकीन को दे दे तो कई ग़रीब मालदार बन जाएँ, कई कुंवारे लड़के-लड़कियों की शादियाँ हो जाएँ। कितनों के दिलों से ऐसी दुआएँ निकलें कि आपकी सारी परेशानियाँ, बीमारियाँ और फ़िक्रें दूर हो जाएँ।

जैसे आप हिसाब लगाएँ कि घर में कितने ऐसे कपड़े, कुर्सियाँ, बरतन, घड़ियाँ, क़ालीन, मसेहरियाँ ज़रूरत से ज़्यादा हैं कि अगर हम

किसी ज़रूरतमन्द को दे दें तो हमें ज़र्रा बराबर तकलीफ़ न हो, और किसी दूसरे इनसान का काम बन जाए।

शादियों में फ़ुज़ूलख़र्ची

इसी तरह शादियों में तो औरतें बहुत फ़ुज़ूलख़र्ची करती हैं। उनमें तो औरतें ही मुफ़्ती-ए-आज़म (सब से बड़ी मुफ़्ती) होती हैं। सारे काम इन्हीं से पूछकर किए जाते हैं। गोया मर्द जानते ही नहीं कि शादियों में कहाँ ख़र्च करने की ज़रूरत है, कहाँ नहीं।

बस जिस जगह औरतें ख़र्च करने का हुक्म देती हैं वहाँ बिना क्यों और कैसे के ख़र्च किया जाता है। और औरतों ने ऐसे बेढंगें ख़र्चे निकाल रखे हैं कि जिनमें फ़ुज़ूल रुपये बर्बाद होते हैं। इन शादियों की बदौलत बहुत से घर तबाह व बर्बाद हो गए। बहुत से माँ-बाप ज़िन्दगी भर के लिए क़र्ज़दार हो गए और उस क़र्ज़ की फ़िक्र ने उनको वक़्त से पहले ही बूढ़ा बना दिया।

शादी के "शीन" के तीन नुक़्ते हटा दें

अगर आप चाहते हैं कि आपके बेटे-बेटी भाई-बहन की शादी में बरकत हो और जिनकी शादी हो रही है उनमें आपस में मुहब्बत हो, नेक औलाद पैदा हो तो इसके लिए अल्लाह के सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस इरशाद पर अ़मल कीजिए:

"वह निकाह बरकत वाला है जिसमें बहुत कम ख़र्च हो"।

तो हमारी शादियों में जितना कम ख़र्चा होगा यक़ीनन उतनी ही बरकत होगी।

हदीस शरीफ़ में आता है:

خیرھن ایسرھن صداقا (ابن حبان حدیث رقم ۱۲۵۵)

तर्जुमाः बेहतरीन औरतें वे हैं जिनके मेहर हलके-फुलके हों।

इसी तरह एक हदीस में है:

من يمن المرأة ان تتيسر خطبتها وان يتيسر صداقها وان يتيسر رحمها (كنز العمال ۴۴۷۵۵۲۱۲_ک۲:۱۸۱)

तर्जुमाः औरत का मुबारक होना यह है कि उसकी मंगनी का पैग़ाम जल्द आ जाये। उसका मेहर कम हो और उसके बच्चा जल्दी हो।

जब मेहर का यह हाल है इस्लामी शरीअत में तो वलीमा, दहेज, मेहंदी की महफ़िल का क्या हुक्म होगा?

इसी वजह से हज़रत सुफ़ियान सौरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब कोई निकाह करने वाला शख़्स यह मालूम करे कि उसकी बीवी क्या लाई है, तो यह समझ लो कि वह शख़्स चोर है, कि माँ-बाप ने अपने जिगर के टुक्ड़े नूरे-नज़र को बीस साल पाल-पोस कर तेरे हवाले कर दिया है अब तू उनका ज़िन्दगी भर इस पर शुक्रगुज़ार रह, न यह कि अब चीज़ों का मुतालबा करे। अगर मर्द अपने ससुराल में कोई गिफ़्ट वग़ैरह भेजे तो यह यह नीयत न करे कि वे लोग भी इसके बदले में कुछ न कुछ भेजेंगे।

इसी तरह बेटी वाले भी यह नीयत न करें, बहुत ही बेग़ैरत और लालची है वह शौहर जो बीवी के घर वालों के माल पर ललचाई हुई निगाहें जमा कर भूखी नज़रों के साथ उम्मीदें रखे। यह भी दहेज में मिलेगा, यह भी दहेज में मिलेगा। आप कहेंगी हम तो औरत हैं हम तो चाहते हैं कि हमारे शौहर और ससुराल वाले हमारे बाप का ख़र्चा कम से कम करवाएँ मगर मजबूरी है, अगर हम बाप के घर से कुछ न ले गए तो सास-नन्द ताना देगी, और आपको पता है नन्दों के ताने पत्थर के जिगर में सुराख़ कर देते हैं, और सास के ताने ज़िन्दगी में जीना ही दूभर कर देते हैं।

मगर याद रखिए! आप भी किसी की नन्द-बन रही हैं, आपकी माँ भी किसी की सास बन रही हैं। आपको अपना बहू बनना याद रहता है नन्द बनते वक़्त आप वही ज़ालिमा बन जाती हैं। आने वाली मुसलमान

बहन/भाभी के लिए आपकी माँ फ़रमाईशों की लिस्ट शौहर की माँ होने के लेटरपैड पर बहू की सास होने के कम्प्यूटर से पिरन्ट करवा कर भेज़ती हैं, कि ये चीज़ें चाहिएँ। इतनी दावतें हों, इतना सोना हो, इतना नक़द हो। मेरे लिए यह हो, दूल्हे के लिए यह हो। दूल्हे के अब्बू के लिए यह हो, दूल्हे की मंझली बहन के लिए यह हो, दूल्हे की बड़ी बहन के लिए यह हो। गर्मी के मौसम में गर्मी के फल, सर्दी के मौसम में सूखे मेवे। आजकल सास अपनी ज़बाने हाल से यह माँगती है तो आप उस वक़्त मेहरबानी करके मुसलमान बहनों पर रहम खाते हुए उनको समझाएँ मना करें, कि माँ यह गुनाह की बात है कि औरत ही औरत के लिए ज़ालिमा बने। हम अल्लाह से लेंगे और अल्लाह से माँगेंगे। अल्लाह तआला ख़ुश होंगे और ख़ूब ज़्यादा देंगे, और इनसानों से भीख माँगेंगे तो अल्लाह तआला नाराज़ होंगे। बेटी के माँ-बाप से नहीं लेंगे, नहीं तो याद रखिएगा फिर आपकी बेटी के ससुराल वाले भी आपकी नाक में दम कर देंगे।

पाँचवीं सिफ़त

हज़राते सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया कि अगर हमें मालूम हो जाए कि कौनसा माल अच्छा और बेहतर है जिसे हम पा लेते तो अच्छा होता। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि:

افضله لسان ذاكر وقلب شاكروزوجة مومنة تعينه على ايمانه.

तर्जुमा: यानी सबसे बेहतर और अच्छा माल ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल है। और वह मोमिना बीवी है जो शौहर की मदद करे उसके ईमान पर।

जिससे काम निकले और ज़रूरत पूरी हो वह माल है। लोग चाँदी, सोना, रुपये-पैसे और मकान व दुकान मवेशी वग़ैरह ही को माल समझते हैं, हालाँकि हदीस शरीफ़ के फ़रमान के अनुसार बेहतरीन माल

ये चीज़ें हैं, जो अभी ऊपर बयान हुईं। इनसे बहुत ज़्यादा नफ़ा हासिल होता है और ख़ूब ज़्यादा बन्दे के काम आती हैं।

ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और ऐसी बीवी जो शौहर की मदद करती हो उसके ईमान पर। ईमान पर मदद करने की व्याख्या करते हुए मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने मिर्क़ात शरह मिश्कात में लिखा है:

यानी ईमान पर मदद करने का मतलब यह है कि शौहर की दीनदारी की फ़िक्र करे और मुक़र्ररा वक़्त में उसे नमाज़ रोज़ा याद दिलाती हो और दूसरी इबादतों पर आमादा करती हो, और ज़िना से और हर क़िस्म के गुनाहों से बाज़ रखती हो।

असल में हमारे बदलते हुए माहौल और बिगड़े हुए समाज को ऐसी नेक औरतों की सख़्त ज़रूरत है जो दीन के अहकाम पर अमल करने वाली हों और शौहर और औलाद को भी दीनदार बनाने की फ़िक्र रखती हों। लेकिन इसके उलट अब तो समाज का यह हाल बना हुआ है कि कोई मर्द नमाज़-रोज़ों और दीनदारी की तरफ़ मुतवज्जह होता है तो जहाँ दूसरे लोग आड़े आने की कोशिश करते हैं और दीन पर चलने से बाज़ रखते हैं वहाँ बीवी भी दीनदार बनने से रोकती है, तरह-तरह के जुमले कसती है।

मुल्ला होने का ताना देती है। दाढ़ी रखने से माना करती है। कुर्ता पायजामा पहने तो बावला बताती है और रिश्वत से बचता है तो उल्टी-सीधी सुनाती है। ऐ अल्लाह! हमें मोमिन बीवियों की ज़रूरत है मर्द व औरत सबके अन्दर ईमान के जज़्बात पैदा फ़रमा। आमीन

(तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन पेज 433)

दूसरी चीज़ जो इस हदीस में सबसे बेहतर बतायी गयी है:

- फ़रमाया "शुक्र करने वाला दिल" हर हाल में शुक्र करें। जिस हाल में अल्लाह मियाँ रखें उस हाल में शुक्र करें। इसी लिए उलेमा-ए-किराम ने फ़रमाया कि अगर औरतें अपने दिलों को शुक्र करने वाला बना लें

तो दुनिया में औरत को यह इनाम मिलेगा कि घर के बहुत से झगड़े ख़त्म हो जाएँगे। शुक्र बहुत बड़ी नेमत है। अक़्लमन्दों का कहना है कि बदबख़्तों की बुरी आदतों में से कोई भी बुरी आदत नेमत की नाशुक्री से बुरी नहीं। यानी बुराईयों में सबसे बुरी चीज़ नेमत की नाशुक्री करना है। और नेकबख़्तों की अच्छी सिफ़तों में नेमत के शुक्र से अच्छी नेकी कोई नहीं, यानी नेकियों में से अच्छी नेकी नेमत का शुक्र अदा करना है।

(मख़्ज़ने अख़्लाक़ पेज 294)

और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ

यानी अगर तुम नेमतों पर शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर-ज़रूर उनको बढ़ाऊँगा।

अल्लाह तआला ताकीद के साथ कहते हैं। यानी ज़रूर-ज़रूर हम नेमतों को बढ़ाएँगे।

दो ऐसे गुर जिनकी वजह से मियाँ-बीवी में कभी झगड़ा न हो

1. औरतें शुरू से अपने आपको शुक्र की आदी बना लें। हर वक़्त हर हाल में जिस अन्दाज़ में भी अल्लाह ने शौहर के घर में रखा उसका शुक्र करें। शौहर के घर की दाल रोटी को क़ोरमा और बिरयानी समझें, और उस पर भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें कि ऐ अल्लाह दाल-रोटी तो आपने दी, मेरी बहुत सारी बहनें है जिनके पास यह भी नहीं है।

मौलवी अब्दुर्रब साहिब एक लतीफ़ा सुनाते थे कि औरतों के पास कितने ही कपड़े हों, जब पूछो कितने कपड़े हैं? तो कहेंगी क्या है चार चीथड़े हैं। कितने ही जोड़े जूते के होंगे मगर पूछने पर यही कहेंगी कि क्या है चार लीतरे हैं। और बरतन कैसे ही उम्दा हों और कितने ही

ज़्यादा हों, क्या हैं चार ठीकरे हैं। और कितना ही उम्दा खाती हों पूछो तो कहेंगी क्या मिलता है चार छीछड़े। यह है नाशुक्रा दिल। हर वक़्त यही चार चीथड़े, चार लीतरे, चार ठीकरे और चार छीछड़े का शिकवा ज़बान पर होता है।

शौहर घर में कैसी भी चीज़ लाए उसका दिल रखने के लिए तकल्लुफ़ ही से सही, कलिमाते शुक्र अदा कीजिए। हर चीज़ को शुक्र के चश्मे लगा कर देखें तो उसकी बुराईयाँ छुप जाएँगी, अच्छाईयाँ आपके सामने आएँगी।

एक समझदार औरत ने अच्छी मिसाल बयान की कि मैं इसलिए रो रही थी कि मेरे पास जूते नहीं थे लेकिन जब मैं घर से बाहर निकली तो देखा एक औरत के पाँव ही नहीं हैं, तो मैंने शुक्र अदा किया कि ऐ अल्लाह! आपने मुझे पाँव तो दिए हैं।

शौहर का, सास और ससुर का शुक्र अदा करती रहे तो अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा हो जाएगा।

घर की हर चीज़ पर हर छोटी से छोटी नेमत पर कहे! "अल्हम्दु लिल्लाह" ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है, ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है। हर वक़्त ज़बान पर यही कलिमा रखे ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है। अगर कोई परेशानी हुई, कोई बीमारी आई, जैसे सर में दर्द है तो कहे ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि हाथ अल्हम्दु लिल्लाह सही है, पाँव अल्हम्दु लिल्लाह ठीक हैं, पेट अल्हम्दु लिल्लाह ठीक है, कमर अल्हम्दु लिल्लाह ठीक है, तो आप तकलीफ़ को भूल जाएँगी और शुक्र ही शुक्र बाक़ी रह जाएगा, और अल्लाह तआला आप से बहुत ही खुश हो जाएँगे।

अल्लाह तआला का वादा है, जब आप शुक्र करेंगी तो अल्लाह तआल नेमतों को बढ़ाएँगे। अल्लाह तआला हम सबकी शुक्र करने वाले बन्दों में गिनती फ़रमा दे। वैसे औरत और क़नाअत (यानी जो कुछ उसके पास हो उस पर सब्र व शुक्र) दो बिलकुल विपरीत चीज़ें हैं, नाशुक्री का रोग इनमें ज़्यादा होता है, नाशुक्री के इस रोग का इलाज

करें तो ख़त्म हो सकता है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि मैंने दोज़ख़ में सबसे ज़्यादा औ़रतों को देखा। वजह पूछी गई तो फ़रमाया "ये शौहरों की नाशुक्री करती हैं"। शौहरों की नाशुक्री करना कितना बड़ा गुनाह है कि जहन्नम में जाने के कारणों में से एक कारण यह भी है।

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवियाँ (रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न) आप और हम सब की माएँ, जिनके बेटे और बेटी कहलाने पर हम सबको गर्व है, उन्होंने कैसी मुश्किलों और तंगदस्ती व फ़ाक़े से ज़िन्दगी बसर की लेकिन फिर भी शिकायत का एक लफ़्ज़ ज़बान पर न लाईं।

उम्दा लिबास, महंगा ज़ेवर, आ़ली शान इमारत, हेंडी क्राफ़्ट फर्नीचर, लज़ीज़ और मज़ेदार नेमत, इनमें से कोई चीज़ शौहर के यहाँ उनको हासिल नहीं हुई। देख रही थीं कि फ़ुतूहात का ख़ज़ाना सैलाब की तरह एक तरफ़ से आता है और दूसरी तरफ़ को निकल जाता है, फिर भी कभी उनमें तलब बल्कि ख़्वाहिश भी पैदा नहीं हुई।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद एक बार अम्माँ जान हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने खाना माँगा, फिर फ़रमाया मैं कभी पेट भरकर नहीं खाती, कि मुझे रोना न आता हो। उनके एक शागिर्द ने पूछा यह क्यों?

फ़रमाया कि मुझे वह हालत याद आती है जिस में नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुनिया को छोड़ा। खुदा की क़सम! दिन में दो बार क़भी पेट भरकर आपने रोटी और गोश्त नहीं खाया।

अब हम और आप ग़ौर करें! हम जिनके नामलेवा हैं उन्होंने इस दुनिया को कभी अपना असली घर नहीं समझा, इसको अपना असली वतन नहीं समझा, इसको हमेशा मुसाफ़िर-ख़ाना समझा। यह एक मुसाफ़िर-ख़ाना है, एक आज़माईश की जगह है। यहाँ रात-दिन चीज़ों में

लगे रहना यहाँ की मिट्टी-गारे के मकान को सजाते रहना उस बेवकूफ़ औरत की तरह है जो सफ़र में हो और वैटिंग रूम के कमरे को सजाती रहे और जब सवारी (मौत का फ़रिश्ता) आ जाए तो पछताए और अफ़सोस करे कि:

अब मुझे मोहलत दे दो, अब मैं नेकी करूँगी। अब घर का सामान कम करूँगी, अब फ़ुज़ूलख़र्ची नहीं करूँगी, अब शादियों में गुनाह नहीं करूँगी, अब बाहर जाकर अल्लाह तआला को नाराज़ न करूँगी। लेकिन मौत के वक़्त पछतावे और अफ़सोस का कोई लाभ न होगा।

इसलिए जूस की मशीनों के लिए हैन्डीक्राफ़्ट और फ़र्नीचर के लिए अच्छे से अच्छे बरतनों के सैट आदि को शोकेस में रखने के लिए मिट्टी-गारे की दीवारों पर अच्छे से अच्छे पर्दे लटकाने के लिए खुदा के लिए अपने और अपने शौहर के क़ीमती पैसों को बेकार न कीजिए। बल्कि उन पैसों को जमा करके अल्लाह तआला के दीन को सारी दुनिया में फैलाने के लिए और उसको दुनिया में रिवाज डालने के लिए ख़र्च कीजिए। पैसा जमा करके अपने शौहर को दीजिए कि जाओ तुम इस पैसे से अल्लाह के रास्ते में दूर से दूर जाओ और दीन को फैलाओ।

किसी ग़रीब, फ़क़ीर, मिस्कीन, यतीम की मदद कीजिए। ग़रीब रिश्तेदार लड़कियों की सादगी के साथ शादी करवा दीजिए। खुदा की राह में किसी मुजाहिद की मदद कीजिए, कोई सफ़ेदपोश लोग हों उनकी इस तरह मदद कीजिए कि दायें हाथ से दें तो बाएँ हाथ को भी पता न चले।

ज़रा सोचिए! आज अल्लाह तआला ने आपको इतनी नेमतें दी हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो दोनों जहान के सरदार थे उनकी लाड़ली बीवी आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर की कुल कायनात क्या थी?

एक चार पाई, एक चटाई, एक बिस्तर, एक तकिया जिसमें छाल भरी हुई थी, आटा और खजूर रखने के एक दो बरतन, पानी का एक

बरतन और पानी पीने के लिये एक प्याले से ज़्यादा न था।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि चालीस-चालीस रातें गुज़र जाती थीं और घर में चिराग़ नहीं जलता था।

(सीरते आयशा पेज 43).

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पहली बीवी का वाक़िआ

अब हम आपके सामने मशहूर किताब "इस्लाम और तरबियते औलाद" से दो बीवियों के वाक़िआत नक़ल करते हैं, जिनमें बताया गया है कि शुक्र करने वाली बीवी की कितनी फ़ज़ीलत है, ताकि आपको भी शुक्र की तौफ़ीक़ हो। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पहली बीवी जिसने अपने घर के फ़क्र व फ़ाक़े (तंगी और ग़रीबी) की शिकायत की और दूसरी बीवी जिसने शिकायत के बजाय शुक्र किया कि अल्लाह तआ़ला ने हमको बहुत अच्छे हाल में रखा है, तो उनको इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ दी कि ऐ अल्लाह! इनके लिए इनके खाने और पीने में बरकत अ़ता फ़रमा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

यह सब कुछ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ की बरकत है।

इससे आप अन्दाज़ा लगाएँ कि अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब बन्दों अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की निगाह में शुक्र करना कितनी बड़ी बात है, और शुक्र न करना शिकायत करते रहना कितनी बुरी बात है। और नतीजा शुक्र करने वाली का कितना अच्छा हुआ कि दुआ भी मिली और नस्लों तक बरकतें चलीं। और जिसने शुक्र नहीं किया और शिकायतें कीं उसको दुआ भी नहीं मिली, ग़रीबी भी दूर नहीं हुई और सज़ा यह मिली कि तुम नबी के घर में नबी की रफ़ीक़ा-ए-हयात (बीवी) बनने और नबी के बच्चों की माँ बनने, नबी की राज़दार बनने के क़ाबिल नहीं हो। अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे और अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दों के

घरों में तुम जैसी शिकायत करने वाली औ़रतें नहीं ठहर सकतीं।

हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की शादी के बाद हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने ख़ानदान वालों को तलाश करते हुए वहाँ पहुँचे लेकिन हज़रत इस्माईल को घर पर मौजूद न पाया तो उनकी बीवी से उनके बारे में पूछा।

बीवीः वह हमारे लिए शिकार करने गए हैं।

फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उस औ़रत से उनकी ज़िन्दगी व हालात के बारे में पूछा।

बीवीः हम बहुत तकलीफ़ में हैं। बहुत बुरी हालत है (और उसने उनसे ख़ूब शिकायत की)।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलामः जब तुम्हारे शौहर आ जाएँ तो उनको सलाम के बाद यह कह देना कि वह अपने घर की चौखट बदल दें। (उनकी मुराद थी कि अपनी बीवी को तलाक़ दे दें)।

हज़रत इस्माईलः क्या तुम्हारे पास कोई आया था?

बीवीः जी हाँ इस-इस हुलिए के एक बड़े मियाँ आए थे और उन्होंने हमसे आपके बारे में पूछा तो हमने बतला दिया।

फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि हमारी ज़िन्दगी कैसी गुज़र रही है, तो मैंने उन्हें बतला दिया कि हम तंगी और परेशानी का शिकार हैं।

हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलामः क्या उन्होंने कोई वसीयत की थी या कोई पैग़ाम छोड़ा है?

बीवीः जी हाँ! उन्होंने मुझे यह हुक्म दिया था कि मैं आपको उनका सलाम पहुँचा कर उनका यह पैग़ाम आपको दे दूँ कि अपने घर की चौखट बदल लें।

हज़रत इस्माईलः वह बुज़ुर्ग तो मेरे वालिद माजिद (पिता) थे और उन्होंने मुझे यह हुक्म दिया है कि तुम्हें छोड़ दूँ इसलिए तुम अपने घर चली जाओ और यह कहकर उन्होंने उस औ़रत को तलाक़ दे दी।

हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की शुक्र अदा करने वाली बीवी का वाक़िआ़

और फिर उस क़ौम की एक और लड़की से हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम ने शादी कर ली। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उनके पास एक ज़माने तक नहीं आए। फिर जब वह उनके घर आए तो वहाँ हज़रत इस्माईल को मौजूद न पाया, उनकी बीवी से उनके बारे में पूछा।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलामः इस्माईल कहाँ है? और तुम लोग कैसे हो।

बीवीः वह हमारे लिए शिकार की तलाश में गए हैं और हम ख़ैरियत से हैं। आप हमारे मेहमान बनिए खाना खाईए।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलामः तुम्हारा खाना पीना क्या है?

बीवीः हमारा खाना गोश्त है और पीना पानी है।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलामः ऐ अल्लाह इनके लिए इनके खाने और पीने में बरकत अ़ता फ़रमा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

यह सब कुछ हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ की बरकत है।

हज़रत इब्राहीमः जब तुम्हारे शौहर आ जाएँ तो उनसे सलाम कह देना और उनको कह देना कि अपने घर की चौखट को मज़बूत रखें।

जब हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम आए तो उन्होंने फ़रमायाः क्या तुम्हारे पास कोई साहिब आए थे?

बीवीः जी हाँ हमारे पास बहुत अच्छी सूरत वाले एक बुजुर्ग आए थे (और बीवी ने उनकी ख़ूब तारीफ़ की) और उन्होंने मुझसे आपके बारे में पूछा, मैंने उनको बतलाया कि हम ख़ैरियत से हैं।

हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलामः क्या उन्होंने तुम्हें कोई पैग़ाम दिया था?

बीवीः जी हाँ! आपको सलाम कह रहे थे और हुक्म दे रहे थे कि

आप अपने घर की चौखट को मज़बूत रखें।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलामः वह मेरे वालिदे मोहतरम (पिता) थे और चौखट से मुराद तुम हो, उन्होंने मुझे यह हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें अपने निकाह में बरक़रार रखूँ।

ग़ौर कीजिए! इस वाक़िए को बार-बार पढ़िए कि शुक्रगुज़ार बीवी अपने शौहर और ससुर की निगाह में कितनी महबूब होती है। इस्माईल अलैहिस्सलाम की इस शुक्रगुज़ार बीवी ने सिर्फ़ ज़मज़म के पानी और कभी गोश्त मिल जाने पर कैसा शुक्र अदा किया। जो परेशानियाँ और तकलीफ़ें थीं, उनको ज़बान पर ही नहीं लाई बल्कि नेमतों को ही याद किया। इसपर इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह के ख़लील कितने ख़ुश हुए और दुआ दी।

और जब इस्माईल अलैहिस्सलाम आए तो उन्होंने हालात बयान किए और उस शैख़ (बुज़ुर्ग) की ख़ूब तारीफ़ की। जब शौहर बीवी के मुँह से अपने वालिद और वालिदा की तारीफ़ सुनेगा उस शौहर का दिल कितना बाग़-बाग़ हो जाएगा। उसकी मुश्किलों और झगड़ों की कितनी गुत्थियाँ इन नरम बातों से सुलझ जाएँगी। बीवी के मुँह से अगर शौहर सास ससुर की तारीफ़ सुन ले तो उसको उस बीवी पर इतना ज़्यादा भरोसा हो जाता है कि वह उसको अपनी ही समझने लग जाता है।

काश! हमारी औरतें इसको समझें इसी तरह जब सास या ससुर अपनी बहू से अपने घर की, माँ अपने बेटे की तारीफ़ सुनेंगे तो वे सास ससुर बहू को और बहू के माँ बाप के कितनी दुआएँ देंगे कि कैसी अच्छी बहू है, कैसे उसके माँ-बाप ने उसकी तरबियत की कि बहू ने हमारा नाम रोशन किया। हमें समाज में इज़्ज़त दिलवाई, हमारी चटनी रोटी को बिरयानी मुर्ग़ी बनाकर पेश किया। अल्लाह इस बहू को बेहतरीन बदला दे और मुसलमान बहनों के नसीब पर इस्माईल अलैहिस्सलाम की शुक्रगुज़ार बीवी का साया डाले और इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की बहू के अख़्लाक़ की तरह हमारी बहुओं

के अख़्लाक़ बना दे। आमीन।

बहरहाल हर वक़्त शुक्र-शुक्र कहने की आदत डाल लीजिए। हर हाल में "अल्हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हाल" हर हाल में इलाही तेरा शुक्र है, इतना शुक्र कीजिए कि आपकी ज़बान और दिल शकर (चीनी) की तरह मीठे हो जाएँ और आपका शौहर से कभी झगड़ा ही न हो।

अल्लाह तआ़ला को शुक्र करने वाला बन्दा और बन्दी बहुत ही ज़्यादा पसन्द हैं और हदीस में आता है "जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता, वह अल्लाह तआ़ला का शुक्र भी अदा नहीं करता" इसलिए अपने तमाम एहसान करने वालों का और ख़ास तौर से शौहर का शुक्र अदा करना चाहिए। इसका आसान तरीक़ा यह भी है कि हर वक़्त कहिए "जज़ाकल्लाहु ख़ैरन्" अल्लाह तआ़ला आपको अच्छा बदला दे। यह कहने की आ़दत डालें।

और छोटे बच्चों को भी आप इसका आ़दी बनाएँ। अगर बच्चों को आप पानी का गिलास दें, कोई खाने-पीने की चीज़ दें तो यह कहलवाईये बेटा कहो: "जज़ाकल्लाह"।

अगर बच्चे से कोई काम लिया और वह काम कर ले तो कहिए "जज़ाकल्लाहु ख़ैरन्" (अल्लाह तआ़ला तुझे इसका बेहतरीन बदला दे)।

सब्र मियाँ-बीवी दोनों के लिए

हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम हकीम (बुद्धिमान) तो सबके नज़दीक हैं और कुछ के नज़दीक पैग़म्बर भी हैं। एक बाग़ में नौकरी कर ली थी, बाग़ का मालिक आया और उनसे ककड़ियाँ मंगवाईं, और उसको छील कर उनको एक-एक टुकड़ा दिया। यह मज़े लेकर खाते रहे कि बहुत ही मज़ेदार है। आख़िर में मालिक ने एक फाँक अपने मुँह में रख ली तो वह कड़वी ज़हर थी, फ़ौरन थूक दिया फिर कहा: लुक़मान! तुम इस कड़वी ककड़ी को मज़े लेकर खा रहे हो? यह तो ज़हर की तरह है?

कहा जी हाँ! कड़वी तो है।

कहा फिर तुमने क्यों नहीं कहा कि यह कड़वी है।

फ़रमाया मैं क्या कहता, मुझे यह ख़्याल हुआ कि जिस हाथ से हज़ारों बार मिठाई खा ली गई और मीठी चीज़ें खाने को मिली हैं अगर उस हाथ से सारी उम्र में एक बार कड़वी चीज़ मिली तो उसको क्या ज़बान पर लाऊँ।

हज़रत हकीमुल्-उम्मत रहमतुल्लाहि अलैहि इस वाक़िए को नक़ल करने के बाद फ़रमाते हैं: यह ऐसा उसूल है कि अगर मियाँ-बीवी दोनों याद रखें तो कभी लड़ाई-झगड़ा न हो और कोई मनमुटाव न हो। बीवी याद करे कि मियाँ ने हज़ारों तरह के मेरे नाज़ उठाए हैं। पता नहीं मेरी किन-किन चीज़ों को यह बरदाश्त कर रहा होगा। एक दफ़ा सख़्ती की तो कोई बात नहीं, इसलिए सब्र करे।

शौहर के उम्र भर के एहसानों को कोई तकलीफ़ पहुँचने पर या शौहर की एक ही डाँट पर या एक ही तंगी पर न भूल जाए और ऐसे बेहूदा नामुनासिब अलफ़ाज़ ज़बान पर न लाए:

"इस नगोड़े घर में तो आकर सदा तंगी ही देखी है, माँ-बाप ने मुझे जान-बूझकर इस कुएँ में ढकेल दिया, मैंने इस मनहूस घर में क्या आराम पाया, मैं इस दिन से पहले मर जाती तो जान छूट जाती"।

ग़र्ज़ यह कि जो मुँह में आता है कह डालती है। इसका ज़रा ख़्याल नहीं करती कि आख़िर इसी घर में सारी उम्र मैंने ऐश बरता है, मुझे इसको न भूलना चाहिए।

और शौहर को चाहिए कि ख़्याल कर ले कि बीवी हज़ारों क़िस्म की मेरी ख़िदमतें करती है, अगर एक बार ख़िदमत करने में कोताही हो गई या बीवी के रवैये से तकलीफ़ पहुँची तो सब्र कर ले। यह बात दोनों मियाँ-बीवी सोचें।

एक बात मिज़ाज के ख़िलाफ़ ही, सही

इस तरह दोनों सब्र की आदत डालें, अल्लाह तआला के इरशाद को

ग़ौर से सुनें और फिर सोचें कि मेरे पैदा करने वाले रब्बुल्-आलमीन का यह हुक्म है अगर मैंने इस पर अ़मल कर लिया तो वह मालिक मुझसे खुश हो जाएगा और जब वह खुश हो गया तो सारी बिगड़ियाँ बना देगा।

उनका हुक्म है ऐ ईमान वालो! (तबीयतों में ग़म हल्का करने के बारे में) सब्र और नमाज़ से सहारा (और मदद) हासिल करो। बेशक हक़ तआ़ला (हर तरह से) सब्र करने वालों के साथ रहते हैं। (और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ तो और भी ज़्यादा। वजह यह है कि नमाज़ सबसे बड़ी इबादत है, जब सब्र में यह वादा है तो नमाज़ जो उससे बढ़कर है उसमें तो इससे भी ज़्यादा यह खुशख़बरी होगी)।

(खुलासा तफ़सीर मआ़रिफुल क़ुरआन पेज 393)

और अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं: और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ऐसे साबिरीन को खुशख़बरी सुना दीजिए (जिनकी यह आ़दत है कि) उनपर जब कोई मुसीबत पड़ती है तो वे (दिल से समझ कर यूँ) कहते हैं कि हम तो (माल और औलाद के साथ हक़ीक़त में) अल्लाह तआ़ला ही की मिल्कियत में हैं (और हक़ीक़ी मालिक को अपनी मिल्कियत में हर तरह के तसर्रुफ़ का इख़्तियार है और उससे ममलूक (यानी जो किसी की मिल्कियत में है) का तंग होना क्या मायने रखता है) और हम (दुनिया से) अल्लाह तआ़ला ही के पास जाने वाले हैं (सो यहाँ के नुक़सानों का बदला वहाँ जाकर मिलकर रहेगा।

(और जो खुशख़बरी का मज़मून उनको सुनाया जाएगा वह यह है कि) उन लोगों पर (अलग-अलग) ख़ास-ख़ास रहमतें भी उनके परवर्दिगार की तरफ़ से (मुतवज्जह) होंगी और (सब पर उमूमी तौर से) आ़म रहमतें भी होंगी और यही लोग हैं जिनकी (असल हक़ीक़त तक) पहुँच होगी (कि हक़ तआ़ला को हर चीज़ का मालिक और नुक़सान की भरपाई कर देने वाला समझ गए)।

(खुलासा तफ़सीर मआ़रिफुल क़ुरआन जिल्द 1 पेज 397)

अब सोचिए जिन पर अल्लाह की रहमतें हों, बरकतें हों और अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको खुशख़बरी मिल जाए इस बात की कि ये लोग हिदायत वाले हैं तो कितनी बड़ी बात है। जिस काम में भी बीवी की तरफ़ से, शौहर की तरफ़ से, सास-नन्द की तरफ़ से तकलीफ़ पहुँचे तो सोचें कि अल्लाह की मर्ज़ी यही थी, और कौन है जो उसके हुक्म को टाल सके। जो कुछ हुआ और जो होगा और जो हो रहा है उसकी मर्ज़ी से हो रहा है। तो कौन है जो उसके हुक्म के सामने सर उठा सके? और कौन है जो उसके हुक्म से बाहर निकल जाए?

उसकी शान निराली, उसकी अदा अनोखी, हर जगह नये रंग में, हर तरफ़ नये रूप में अपने जलवे बिखेर रहा है, जो कुछ हुआ और जो होगा और जो हो रहा है उसकी मर्ज़ी से हो रहा है।

इस बात को ज़ेहन में बैठा लीजिए कि अगर मरना न होता तो ज़िन्दगी का फ़ायदा ही क्या था। अगर रात न हो तो दिन में लज़्ज़त ही क्या, और ग़म न हो तो खुशी क्या? दुनिया खुशी व ग़म की माजूने मुरक्कब है। अच्छी बुरी दोनों बातें यहाँ मिलेंगी।

कभी जवानी की मस्ती है तो किसी वक़्त बुढ़ापे की पस्ती है। कभी दुनिया के माल व दौलत की अधिकता की चमक व रोशनी है तो किसी वक़्त ग़रीबी व तंगी का अंधेरा है। कभी सेहत का झण्डा लहरा रहा है तो कभी रोग व कमज़ोरी की वजह से यही झण्डा झुका हुआ है। कभी खुशियों की हंसी छलक रही है तो कभी ग़मों के आँसू खूने जिगर बन रहे हैं।

कभी हुस्न के रंग व रूप का जलवा है तो कभी बुढ़ापे की झुर्रियाँ अपना रूप दिखा रही हैं। कभी ज़ेहन व दिमाग़ इतना तेज़ बनकर सामने आ रहा है कि 'बू अली सीना' और 'अरस्तू' (मशहूर फ़लॉसफ़रों) की यादें ताज़ा हो रही हैं। सदफ़ और शाहकार के कम्प्यूटर को मात दी जा रही है तो कभी किसी उम्र की मंज़िल में अपना नाम भी पूछने पर याद किया जा रहा है।

पस ख़ुशनसीब है, अक़्लमन्द और समझदार है, नेक और सालेह है वह मुसलमान मर्द और वह मुसलमान औरत जो हर हालत को अल्लाह की तरफ़ से समझे और हर हाल में अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जह हो, कि हर हाल अल्लाह तआला की तरफ़ से है। अल्लाह तआला ही ने इस हाल को भेजा है। ज़ाहिरी असबाब में से एक सबब यह भी हो, मगर उसका हुक्म मौला की मर्ज़ी उसका इरादा छुपा रहता है। वह फ़रमाते हैं:

وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى. (سورة نجم پ ٢٧)

तर्जुमाः और यह कि बेशक वही अल्लाह हंसाता और वही रुलाता है। (वह जब चाहता है तो रोने वालों को एक लम्हे में हंसा देता है, और हंसने वालों को एक मिनट में रुला देता है)।

वह हर सूरत से अपने बन्दों की आज़माईश करता है। सब्र से हाथ न धोना चाहिए। मालिक की तरफ़ से ख़ुशी और ग़मी को मुस्कुराते हुए चेहरे और मुत्मईन दिल के साथ क़बूल करना चाहिए। हर हाल में उसी की तरफ़ मुतवज्जह होना चाहिए। परेशानियों को बलाओं को मुसीबतों को दुआएँ माँगकर उसी से दूर करवाना चाहिए।

दिल का कोई कोना कोई किनारा कोई ख़ाना ज़र्रा, कोई हुलिया, दिल के ख़ून का कोई क़तरा कहीं किसी ग़ैर की तरफ़ झुकने न पाए, किसी दूसरे से उम्मीद रखने न पाए, सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी अहकमुल्-हाकिमीन (अल्लाह तआला) की तरफ़ निगाह हो, उसी की बारगाह में इल्तिजा हो, उसी की तरफ़ निदा हो, उसी से गुहार हो, उसी से दुआ हो, उसी से सवाल हो। हर मुसीबत और आराम पर शुक्र और सब्र हो और यक़ीन करे कि यह हाल अल्लाह तआला की तरफ़ से जो हर चीज़ का जानने वाला है, और उसको इस मुसीबत का भी पूरा इल्म है। वह बाख़बर भी है भेजकर भूल नहीं गया। वह मेहरबान, रहम वाला करम वाला है।

जो चीज़ जो हालत जो परेशानी आई है वह मालिक की तरफ़ से

दोस्त की तरफ़ से है।

"हर चे अज़ दोस्त मी रसद् नेकोस्त"

दोस्त का दिया हुआ ज़हर भी शहदे मुसफ़्फ़ा ख़्याल किया और सब्र किया, शुक्र किया। पस राज़ी कर लिया उसे जो दोनों जहान का मालिक है, और पूरब प पश्चिम का पालने वाला है। क्या आप इसके इच्छुक नहीं हैं कि जिसके सामने जाना है वह आपको अपना दोस्त कहकर पुकारे?

अरे दुनिया इसकी तमन्ना करती है कि वह अपना दोस्त कहे, लेकिन वह ख़लील (दोस्त) का लकब तो उसे ही दिया करते हैं जो नमरूद की आग में भी हुक्मे ख़ुदावन्दी की ख़ातिर कूद पड़ते हैं, और दिल के हर-हर कोने को ग़ैरुल्लाह की तरफ़ मैलान से साफ़ कर लेते हैं। एक ही के दर पर एक ही के हो जाते हैं। एक ही को मुश्किलकुशा (मुश्किलों को दूर करने वाला) हाजतों को पूरी करने वाला समझते हैं।

जो चाहे जब चाहे जैसे चाहे जहाँ चाहे जिस तरह चाहे वैसे कर सकता है।

बीवी के लिए 'बहिश्ती ज़ेवर' से हिदायात

समझदार बीवियों को कुछ बतलाने की कोई ज़रूरत नहीं, वे ख़ुद ही हर बात के अच्छे बुरे को देख लेंगी, लेकिन फिर भी हम कुछ ज़रूरी बातें बयान करते हैं। जब तुम इनको ख़ूब समझ लोगी तो और बातें भी इसी से मालूम हो जाया करेंगी।

ख़ूब समझ लो मियाँ-बीवी का ऐसा रिश्ता है कि सारी उम्र इसी में बसर करनी है। अगर दोनों का दिल मिला रहा तो इससे बढ़कर कोई नेमत नहीं, और ख़ुदा न करे दिलों में फ़र्क़ आ गया तो इससे बढ़कर कोई मुसीबत नहीं।

इसलिए जहाँ तक हो सके शौहर का दिल हाथ में लिए रहो और उसके आँख के इशारे पर चला करो। अगर वह हुक्म करे कि रात भर

हाथ बाँधे खड़ी रहो तो दुनिया व आख़िरत की भलाई इसी में है कि दुनिया की थोड़ी सी तकलीफ़ गवारा करके आख़िरत की भलाई और कामयाबी हासिल करो। किसी वक़्त कोई बात ऐसी न करो जो उसके मिज़ाज के ख़िलाफ़ हो। अगर वह दिन को रात बतलाये तो तुम भी दिन को रात बतलाने लगो। (बहिश्ती ज़ेवर)

शौहर के मिजाज़ की रियायत

हर वक़्त मिज़ाज देखकर बात करो। अगर देखो कि इस वक़्त हंसी और दिल्लगी में खुश है तो हंसी और दिल्लगी करो, और नहीं तो हंसी दिल्लगी न करो। जैसा मिज़ाज देखो वैसी बात करो और ख़ूब समझ लो कि मियाँ-बीवी का सम्बंध ख़ाली ख़ूली मुहब्बत का नहीं होता बल्कि मुहब्बत के साथ मियाँ का अदब करना भी ज़रूरी है, मियाँ को अपने बराबर दर्जे में समझना बड़ी ग़लती है।

शौहर से हरगिज़ कोई काम मत लो, अगर वह मुहब्बत में आकर कभी हाथ या सर दबाए तो तुम न दबाने दो। भला सोचो अगर तुम्हारा बाप ऐसा करे तो क्या तुमको गवारा होगा? फिर शौहर का रुतबा तो बाप से भी ज़्यादा है। उठने-बैठने में बात-चीत करने में ग़र्ज़ यह कि हर बात में अदब व तमीज़ का ख़्याल रखो। (बहिश्ती ज़ेवर पेज 40)

मियाँ-बीवी का बेमिसाल जोड़ा

ज़रीना को सब सताते, उसके शौहर को सब ही औरत का गुलाम, औरत का दीवाना कहते तो भी ये दोनों मियाँ-बीवी चिढ़ते नहीं, और एक दूसरे में मगन रहते। एक दिन किसी ने ज़रीना से पूछा कि ओ बेगम! तेरा शौहर तुझमें ही जन्नत क्यों देख रहा है?

इस सवाल पर ज़रीना क़हक़हा लगाकर हंसी। वह ख़ूबसूरत और दिलकश थी। पढ़ी लिखी और पर्दे वाली सभ्य शरीफ़ ख़ानदान की चश्म व चिराग़ थी। उसके शौहर मुहम्मद अस्लम भी दीनदार ख़ूबसूरत और शरीफ़ ख़ानदान के चशम व चिराग़ थे। दोनों के बीच इतनी मुहब्बत थी

कि घड़ी भर के लिए दोनों एक दूसरे से अलग न होते। इसी लिए तो रिश्तेदार उनको ख़ूब चिढ़ाते।

ज़रीना ने कहा: अपने शौहर को मैं जन्नत ख़्याल करती हूँ इसी लिए तो वह भी मुझे अपनी जन्नत ख़्याल करते हैं। सच बात तो यह है कि हम दोनों में इतनी बेपनाह मुहब्बत है कि हम एक लम्हे के लिए एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। यहाँ इस वक़्त मैं तुम्हारे पास बैठी हूँ तुम्हारे साथ बात-चीत कर रही हूँ लेकिन फिर भी मेरा दिल उनमें अटका हुआ है। यह हमारी मुहब्बत सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए थी। तुम चाहे शौहर को पूजने वाली या शौहर की दीवानी कहो लेकिन मैं वास्तव में अपने शौहर ही में अपना सब कुछ महसूस कर रही हूँ क्योंकि मेरी मुहब्बत का जवाब वह भी मुहब्बत ही से देते हैं। मेरे बिना उनको भी चैन नहीं आता। मेरी सारी जायज़ ख़्वाहिशें वह पूरी करते हैं। मेरी ग़लतियों को वह सुधारते हैं। प्यार और नर्मी से मेरी ख़ामियों को दूर करते हैं। मुझे औरतों की तालीम के हलक़ों में, और मक्की मस्जिद में जुमा के बयान में ले जाते हैं, जिससे अल्लाह का शुक्र है कि मुझे बहुत ही फ़ायदा होता है। अगर मुझसे कोई नामुनासिब हरकत हो जाए तो वह मुझे मीठे अन्दाज़ में तन्बीह करके दोबारा ऐसी हरकत करने से रोकते हैं। मैं भी उनकी किसी बात को बुरा नहीं मानती। बोलो! जहाँ मुहब्बत ही मुहब्बत और प्यार ही प्यार की हमेशा रेल-पेल हो वहाँ मियाँ-बीवी एक दूसरे पर फ़िदा क्यों न हों।

हम सबको इस सुखी और पुरसुकून जोड़ी पर हसद पैदा हुआ और साथ-साथ रश्क भी हुआ कि उनके जैसी जोड़ी हमारी भी क्यों न हो। हम भी क्यों न अपने शौहर की मुहब्बत जीत कर उनको अपना ताबेदार और हम उनके ताबेदार बन जाएँ। क्या ज़रीना ऐसा कर सकती है और हम नहीं कर सकतीं? और उसी दिन से हमने भी इसी तरह की जोड़ी बनने का पक्का इरादा कर लिया।

अपने शौहर को मैंने किस तरह जीता

जो दुख और मुसीबत मुझे अपनी इस वैवाहिक ज़िन्दगी में सहना पड़ा है उसकी लम्बी दास्तान तो मैं यहाँ बयान नहीं करूँगी और उसका तज़किरा भी इस वक़्त बेफ़ायदा होगा। यहाँ तो सिर्फ़ वही बातें मैं बयान करूँगी जिसकी वजह से मैं अपने महबूब की महबूबा बनी हूँ।

पहले मेरे शौहर मुझे बिल्कुल न चाहते थे। वह मुझे छोड़ देने पर तुले हुए थे। लेकिन समझदार लोगों के समझाने की वजह से उन्होंने ऐसा कोई क़दम नहीं उठाया। हमारी ज़िन्दगी ख़ाक में मिल गई थी। मुझे उनके साथ शादी करने के बाद बहुत पछताना पड़ा। दूसरों की सुख भरी ज़िन्दगी देखती तो मेरा दिल जल-भुनकर राख हो जाता। मेरे शौहर मुझसे बोलते ही नहीं। इतना ही नहीं बल्कि मेरे हाथ का पानी तक नहीं पीते। मेरे ससुर और सास फ़रिश्ता सिफ़त थे। वे बेचारे उनको समझाते लेकिन उससे उनको कोई असर न होता। मेरी तकलीफ़ और दुख पर हमदर्दी जताते और मुझे ज़रा भी मायूस न होने देते।

एक बार मैं फ़ुरसत के वक़्त (मौलाना) अहमद मुहम्मद हथोरनी (साहिब) की लिखी हुई किताब "मुसलमान ख़ाविन्द बीवी" और "तोहफ़ा-ए-दुल्हन" और "तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन" नाम की किताबें पढ़ रही थी। उसमें कितनी ही ऐसी बातें थीं तो हमारी ज़िन्दगी से जोड़ रखती थीं। एक औरत अपने शौहर को किस तरह खुश कर सकती है, इसका बयान था। इस बयान को पढ़ते ही मेरा दिल फड़क उठा, मेरे दिल में यह जज़्बा पैदा हुआ कि मैं भी इन बातों पर अमल करके अपने शौहर पर फ़तह हासिल कर लूँगी और फिर मैंने अपने इस इरादे को अमली जामा पहना भी लिया।

मैंने अपनी आदतों की तरफ़ निगाह की और अपनी पूरी तवज्जोह अपने शौहर की तरफ़ कर दी। मुझे यक़ीन हो गया कि जिन ख़ूबियों वाली औरत को मेरा शौहर पसन्द करता है ऐसी ख़ूबियाँ अगर मैं अपने

अन्दर पैदा कर लूँ तो फिर वह मुझे ज़रूर चाहने लगेंगे, और इसी वजह से मैंने निम्नलिखित तीन बातों की तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह दी।

1. शौहर का मिज़ाज कैसा है?
2. औरत की कौन-कौनसी ख़ूबियाँ उनको पसन्द हैं।
3. उनको क्या नापसन्द है।

इन तीन बातों पर मैंने अपनी पूरी ताक़त ख़र्च कर दी। उनके मिज़ाज को मैंने धीरे-धीरे जानना शुरू किया। औरत की कौनसी सिफ़तें और कौनसी ख़ूबियाँ उनको पसन्द हैं, किस क़िस्म की औरतें वह पसन्द करते हैं, ये सारी बातें मैंने उनकी सोहबत और उनके बर्ताव से जान लीं। कैसी चीज़ों के वह शौक़ीन हैं, कौन-कौनसी बातों में उनको मज़ा आता है। यह भी मैंने पा लिया और फिर मैंने उनको जिन बातों में मज़ा आता हो उस तरह बनने की कोशिश की। उनकी पसन्द का बनाव-सिंघार, उनकी पसन्दीदा आदतें और उनकी पसन्द के खाने बनाने शुरू किए। उसका नतीजा भी उम्मीद के मुताबिक़ ही निकला।

एक दिन उन्होंने मुझसे कहा: बेगम! अब तो तुम दिन ब-दिन ख़ूबसूरत बनती जा रही हो। इसका मैंने कुछ जवाब नहीं दिया। मैंने समझ लिया कि अल्लाह का शुक्र है कि तीर निशाने पर लग गया है। मेरी आँखों में ख़ुशी और मुसर्रत और मेरे दिल में तमन्नाएँ अंगड़ाईयाँ लेने लगीं और मैंने अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया।

उन्होंने कहा: बेगम! अब तुम बहुत हसीन क्यों लग रही हो? उन्होंने यह दूसरा सवाल किया, अब मुझे लगा कि अगर मैं इसका जवाब न दूँगी तो मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़ायदा न उठा सकूँगी।

मैंने मुस्कुराते हुए कहा: मेरे सरताज! मैं ख़ूबसूरत और पुरकशिश कब न थी, मैं तो दिलचस्प और पुरकशिश ही हूँ लेकिन आपको पसन्द हूँ तब ना! और यह लफ़्ज़ बोलते ही मैंने एक उड़ती हुई निगाह डाली।

तीर बराबर निशाने पर लग गया था। परिन्दा और शिकार मेरे जाल में फंस गया था। मेरे शौहर ने मुझे प्यार से कहा: नहीं बेगम! तू

अब मुझे बहुत अच्छी लगती है। मैंने अब तक तुझे नाहक़ परेशान किया और दुख पहुँचाया। मैं अब तक तुझे सही रूप में देख नहीं सका था। अब तो मैं तुझे अपनी निगाह के सामने से हटने भी नहीं दूँगा।

मैं अपने शौहर की आँख की पुतली बन गई हूँ

आज मैं अपने शौहर की आँख की पुतली बन गई हूँ। मेरे शौहर मेरे अ़लावा और के हाथ से पका हुआ भी नहीं खाते। वह हर काम मुझसे पूछकर ही करते हैं। हर बात में मुझसे सलाह व मश्विरा लेते हैं। मेरी सास और ससुर भी मेरी इस कामयाबी पर मुझे मुबारकबाद देते हैं। अपने शौहर की निगाह से गिरी हुई और शौहर के दिल में काँटे की तरह खटकने वाली बहनों से मेरी गुज़ारिश है कि वे मेरे जैसा तजुर्बा करके देख लें। मुझे उम्मीद है कि उनको इसमें ज़रूर कामयाबी हासिल होगी।

शौहर होने के बावजूद बेवा थी

मेरे शौहर मुझे धुतकारते, नफ़रत करते, मुझमें उनको ख़ूबसूरती, जवानी की दिलकशी और कशिश जैसी कोई चीज़ नज़र न आती, इसी वजह से तो उन्होंने मुझे छोड़ रखा था। मैं अपने शौहर के ज़िन्दा होते हुए भी घर के एक कोने में बेवा (विधवा) जैसी ज़िन्दगी गुज़ारती थी।

मुझे तलाक़ मत दो

एक शौहर का किसी बेहूदा औ़रत से ताल्लुक़ हो गया। अब उस औ़रत ने मजबूर किया, "पहले अपनी बीवी को तलाक़ दो फिर मैं तुमसे निकाह कर सकती हूँ" शौहर इतना मजबूर हो गया कि उसने अपनी बीवी को तलाक़ देने का इरादा किया। बीवी साहिबा बहुत परेशान हुई। अल्लाह तआ़ला से गिड़गिड़ाकर दुआएँ माँगीं। इस दुखियारी की एक सहेली थी जो माशा-अल्लाह दीनदार व होशियार और पर्दे वाली ख़ातून थी। उसने अपनी सहेली से मश्विरा किया। सहेली ने कुछ नसीहतें कीं,

कि आगे इन बातों का ख़्याल रखो और शौहर के दिल में जगह पाने के लिए कुछ तदबीरें बतलाईं।

फिर अपनी सहेली के शौहर के लिए एक दर्द भरी नज़्म लिखी जिसमें अपनी सहेली के दिली जज़्बात की सही तर्जुमानी की। अल्हम्दु लिल्लाह यह नज़्म सीधे शौहर के दिल की गहराईयों में उतर गई, और इस नज़्म ने वह काम किया जो समाज और मुआशरे के बड़े-बड़े इस्लाह करने वालों (सुधारकों) से शायद न हो सके।

आख़िरकार उस शौहर ने अपना फ़ैसला बदल दिया और वह दुखियारी औरत तलाक़ की तलवार के वार से बच गई और शौहर उस बेहूदा औरत के जाल से बच गया, जो अपनी दूसरी बहन की तलाक़ का मुतालबा करती थी। इस नज़्म को आप पढ़कर अपने अन्दर भी उलफ़त व मुहब्बत के जज़्बात अपने शौहर के लिए पैदा कीजिए।

नज़्म

नाज़ था जिसपे मुझे मेरी वह क़िस्मत न रही
क्या ख़ता हो गई, क्यों लायक़े उल्फ़त न रही
अपने ही घर के लिए बाइसे ज़ीनत न रही
मैं वह गौहर हूँ कि जिसकी कोई क़ीमत न रही

बे सबब मुझपे अहले ज़माना ने सितमगारी की
मैं क़सम खाती हूँ आज अपनी वफ़ादारी की
फ़सले गुल अपनी जवानी पे थी गुलशन छूटा
हाय! एक ताइरे बेपर से नशेमन छूटा

जो अभी हमने बनाया था वह मस्कन छूटा
हाथ से हाय ग़ज़ब! किसका यह दामन छूटा
जिसने अपने लिए समझा गुले बेख़ार मुझे
मुद्दतों जिसने कहा! मलिका-ए-गुलज़ार मुझे

जिसने बख़्शा शर्फ़ शमा-ए-शबे तार मुझे
हाय! वह आज रुलाए, पसे दीवार मुझे

हाँ मेरे हुस्न की मेराज तुम्हीं थे कि नहीं?
मेरे मालिक मेरे सरताज तुम्हीं थे कि नहीं

आओ, अगर रूठे हो मुझसे, मना लूँ तुमको
तुम हो गर दूर तो नज़दीक बुला लूँ तुमको

डगमगाते हो कहाँ, आओ संभालूँ तुमको
दिल में आँखों में, कलेजे में बिठा लूँ तुमको

छूटे यह माल व मता, चूड़ियाँ टूटें न कहीं
दुनिया छूटे! मगर मालिक मेरे छूटें न कहीं

मुझसे सरज़द हुई क्या ऐसी बताओ तो ख़ता
कौनसे जुर्म पे दी जाती है यह सख़्त सज़ा

बे-सबब मुझको सताते हो! सता लो आक़ा
इस पे भी सर है ख़म, लगा दो ठोकर आक़ा

वास्ता उस रब्बे करीम का जो है तुमको अज़ीज़
मुझको रख लो यह समझकर कि है सौकन की कनीज़

दिल पे मेरे जो गुज़रती है सुनाऊँ क्योंकर
हो जो मर्ज़ी तो लगा दो इसीं सर में ठोकर,

मैं तो हर हाल में राज़ी ब-रिज़ा हूँ प्यारे
मैं तेरे वास्ते मसरूफ़े दुआ हूँ प्यारे

आया छोड़ा है मुझे जिन्सी मसर्रत के लिए?
वह भी दिन होगा कि तरसोगे मुहब्बत के लिए

क्या कहा! शमा बनूँ ग़ैर की ख़लवत के लिए
हाय! यह बात है मर जाने की औरत के लिए

ज़िन्दा क्यों ख़ाना-ए-यूसुफ़ से ज़ुलेख़ा निकले
मरके इस घर से तमन्ना थी, जनाज़ा निकले

गैर देखें तेरी देखी हुई सूरत मेरी
यह गवारा न करेगी कभी गैरत मेरी
देख के आँसू बहाओगे मुसीबत मेरी
मुझे काफी है फ़कत् चादरे इस्मत मेरी
नाम ले-ले के जियूँगी यह कहे जाती हूँ
रब्बुल इज़्ज़त ज़ुल्जलाल वल्इक्राम की क़सम खाती हूँ
दम निकल जाए मगर तेरी ख़िदमत-गुज़ार रहूँ
बेवफ़ा तुम हो तो क्या मैं तो वफ़ादार रहूँ
ख़ाकरोबी के लिए बा-दिले बेदार रहूँ
घर के क़ाबिल न रही तो पसे दीवार रहूँ
रख लो लौंडी ही समझ के मुझे ख़िदमत के लिए
कुछ सहारा तो रहेगा ग़मे फ़ुरक़त के लिए
याद है तुमने संवारे थे कभी ये गेसू
देख सकते न थे इन आँखों में मेरे आँसू
मेरे गेसू से कभी बाँधते थे अपने बाज़ू
था तेरे सर का सहारा कभी मेरा ज़ानू
याद है तुमने कभी माँग भरी थी मेरी
बाग़बाँ तुम थे तो खेती भी हरी थी मेरी
अभी मुरझाने भी न पाया था यह मेरा सेहरा
बैठे बिठलाए मुसीबत ने कहाँ से घेरा
कौन अब देखे यह उतरा हुआ चेहरा मेरा
ज़ब्त करती हूँ तो जलता है कलेजा मेरा
उम्र भर मुझको रुलाएगा तेरा रंजे फ़िराक़
ख़ैर ख़म है सरे तस्लीम जो देते हो तलाक़

शौहर की हैसियत से ज़्यादा किसी चीज़ की फ़रमाईश न करो

शौहर की हैसियत से ज़्यादा ख़र्च न माँगो जो कुछ मिले अपना घर समझ कर चटनी-रोटी खाकर बसर कर लो। अगर कभी कोई कपड़ा या ज़ेवर पसन्द आये तो अगर शौहर के पास ख़र्च न हो तो फ़रमाईश न करो, न उसके न मिलने पर हसरत व अफ़सोस करो, बिल्कुल मुँह से भी न निकालो। खुद सोचो अगर तुमने कहा तो वह अपने दिल में कहेगा कि इसको हमारा ख़्याल नहीं कि ऐसी बेमौक़ा फ़रमाईश करती है। बल्कि वह खुद पूछे कि आपके लिए क्या लाऊँ? तो बतला दो। (लेकिन अपनी तरफ़ से खुद फ़रमाईशों की लिस्ट न बना लो)। क्योंकि फ़रमाईश करने से आदमी नज़रों से गिर जाता है, और उसकी समाज में क़द्र कम हो जाती है। जो कुछ भी फ़रमाईश करनी है सिर्फ़ अल्लाह मियाँ से करो, अल्लाह मियाँ से जो नहीं माँगता अल्लाह तआ़ला उससे नाराज़ हो जाते हैं, और जो जितना ज़्यादा माँगता है अल्लाह मियाँ उससे ख़ुश होते हैं। और बन्दे से माँगो तो बन्दा नाराज़ होता है इसलिए बन्दे से बिल्कुल न माँगो। जिसके पास जो कुछ है अल्लाह ही की तरफ़ से उसको मिला है, किसी का अपना कुछ नहीं, तो जिसने सबको दिया है वह आपको भी देगा।

बहनो! आज हमारा ख़र्च बढ़ गया है। क्योंकि हर चीज़ की क़ीमत आसमान से बातें करती है, और इससे भी आगे यह कि हमने अपनी ज़रूरतों में आँखें बन्द करके बढ़ोतरी कर ली है। बहुत सी ग़ैर-ज़रूरी चीज़ें भी हमारी ज़िन्दगी में दाख़िल हो चुकी हैं। अगर शौहर क़र्ज़दार नहीं है तो खुदा का शुक्र अदा करे। लेकिन अगर उसकी नौकरी छूट जाए, ग्राहक कम हो जाएँ या फिर कोई बीमारी आ धमके तो फिर अल्लाह के अ़लावा उसका कोई पुरसाने-हाल नहीं है।

आमदनी से ज़्यादा ख़र्च करना यह बहुत बड़ी भूल है। अपने ही

हाथों अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना है। हमेशा चादर देखकर ही पाँव फैलाने चाहिएँ। जिस चीज़ के बिना काम चल सकता हो उसको बिना ज़रूरत ख़रीदना नहीं चाहिए।

हमारी फ़ैशन की मारी बहनें बहुत ही ख़र्च करने वाली बन गई हैं, जिसका तर्जुबा गवाह है। शौहर बेचारा बड़ी मेहनत से गुज़ारे के लिए जितना कमाकर लाता है, उसको हमारी बहनें अपनी अय्याशी में बड़ी बेदर्दी से ख़र्च कर देती हैं। हर बहन का फ़र्ज़ है कि किफ़ायत-शिआरी से काम लेकर हर महीने में कुछ न कुछ बचाया करे ताकि वक़्त आने पर काम आए। किफ़ायत-शिआरी का मतलब यह नहीं कि बेहद कन्जूस बन जाए बल्कि ग़ैर-ज़रूरी चीज़ों पर बेमतलब पैसे बर्बाद न करे, और जो चीज़ एक रुपये में ख़रीदी जा सकती हो उसके लिए दो रुपये ख़र्च न करे। सलीक़ेमन्द औरतों को किस तरह अपना घर चलाना चाहिए यह एक शायर की ज़बान से सुनो।

सलीक़ेमन्द औरतों की वैवाहिक ज़िन्दगी

सबसे पहले ख़ानादारी का जौहर है सुघड़ापे का
फ़िक्र हो पहले औरों का फिर बाद कहीं है अपने का

दुनिया का यह दस्तूर ठहरा, मर्द कमा कर घर लाए
औरत का फ़र्ज़ है उसको अच्छी तरह से काम में लगाए

जितनी चादर उतना बिछौना, चैन से वही रहते हैं
आक़िल लोग जहाँ में इसको तदबीरे-मन्ज़िल कहते हैं

जिस लड़की को गुर न यह आये उसको कब है ख़ुशहाली
उसको फूहड़ है कहना लाज़िम जो अक़्ल व ख़िरद से हो ख़ाली

ख़ुद उससे तो कुछ हो न सकेगा ख़िदमतगार उठाएँगे
पूँजी सारी खा-पी लेंगे फ़ुर्र से फिर उड़ जाएँगे

सास लड़ेगी नन्द लड़ेगी दिल बेज़ारी ठहरेगी
एक न होने से इस गुन के सौ-सौ मुसीबत आएगी

ख़ाविन्द ऐसी शादी करके दम-दम पछताएगा
कुछ भी न होगा घर में उसके कमाकर मर जाएगा

ढग लगा कचरे का घर में, टूट खटोले खाट गई
बाहर से ख़ाविन्द जो लाए घर में बीवी सब को चाट गई

ठीक नहीं है बच्ची बहनो, इससे तुम परहेज़ करो
दुनिया में जो रहना है तो दुनिया को तुम आवेज़ करो

ख़र्च करो उस सूरत से जो ख़र्च की सूरत रह जाए
खुसर भी खुश, ख़ाविन्द भी खुश, अपनी सूरत भी रह जाए

शौहर के सफ़र से वापसी के आदाब

एक शौहर ने सफ़र पर जाते हुए बीवी से पूछा: हम फुलाँ जगह जा रहे हैं, तुम्हारे लिए क्या लाएँ?

बीवी ने कहा: अल्लाह तआ़ला आपको ख़ैर व आ़फ़ियत से ले आए यही मेरे लिए दुनिया और आख़िरत की बहुत बड़ी नेमत है। मुझे वहाँ से कोई चीज़ नहीं चाहिए बस आप ही की चाहत है। आप ख़ैरियत से आ जाएँ आपका ख़ैरियत से आना ही मेरे लिए सबसे बड़ी नेमत है।

अब बताईए उस शौहर का दिल उस समझदार बीवी से कितना खुश हुआ होगा, कि हम ही इसके लिए सबसे बड़ी नेमत हैं, और मेरी बीवी को मुझ ही से सच्ची मुहब्बत है चीज़ों से नहीं।

शौहर सफ़र से वापस आए तो मिज़ाज पूछो, ख़ैरियत पूछो कि वहाँ किस तरह रहे, तकलीफ़ तो नहीं हुई, हाथ-पाँव पकड़ लो कि तुम थक गए होगे, भूखा हो तो रोटी पानी का इन्तिज़ाम करो। उसके सफ़र के हालात सुनो और ख़ैरियत से वापस आने पर खुद भी शुक्र अदा करो और बच्चों से भी अल्लाह का शुक्र अदा करवाओ। ऐसा न हो कि आते ही अपनी परेशानी के अहवाल सुनाने शुरू कर दिए और सवालात की बौछार शुरू कर दी कि मेरे लिए क्या लाए? बच्चों के लिए क्या लाए? परदेस में से तन्ख़्वाह कितनी लाए? इतने महीने रहे इतने कम पैसे लाए? तुम बहुत ख़र्च कर डालते हो।

हाय क्या कर डाला, ऐसी बातें बिल्कुल न करें। इससे शौहर की निगाह में आप ज़लील हो जाएँगी। कभी ख़ुशी के वक़्त सलीक़े के साथ बातों-बातों में पूछ लो तो ख़ैर इसमें कोई हर्ज नहीं।

अगर परदेस से कोई चीज़ लेकर आया है तो पसन्द आए या न आए हमेशा उसपर ख़ुशी ज़ाहिर करो। यह न कहो कि ऐसे डिज़ाईन का ऐसे रंग का कपड़ा लाते, ऐसा क्यों लाए? इससे उसका दिल टूट जाएगा और फिर कभी कुछ लाने का जी न चाहेगा।

और अगर उसकी तारीफ़ करके ख़ुशी से ले लोगी तो दिल और बढ़ेगा और फिर उससे ज़्यादा चीज़ लाएगा। उसकी लाई हुई चीज़ों की बुराई करने से शौहर के दिल में बीवी के लिए जगह नहीं रहती। बल्कि जो ले आए उसकी तो तारीफ़ करो कि अल्हम्दु लिल्लाह बहुत अच्छा कपड़ा है। अल्लाह तआला आपको जज़ा-ए-ख़ैर (बेहतरीन बदला) अता फ़रमाए। आप मेरे लिए यह लाए। लेकिन आईन्दा मौक़ा मिले तो इस रंग का लाईएगा यह रंग मुझे ज़्यादा पसन्द है, अगरचे जो आप लाए हैं वह भी मुझे पसन्द है। और उसको भी सिलवा लूँगी।

घर और शौहर के सामान को सलीक़े से रखो

शौहर की चीज़ों को ख़ूब सलीक़े और तहज़ीब से रखो। रहने का कमरा साफ़ रखो, गन्दा न रहे। बिस्तर मैला-कुचैला न हो, ग़िलाफ़ की सलवटें निकाल डालो। तकिया मैला हो गया हो तो ग़िलाफ़ बदल डालो।

जब ख़ुद उसने कहा और उसके कहने पर तुम ने किया तो उसमें बात क्या रही, लुत्फ़ तो इसी में है बिना कहे हुए सब चीज़ें ठीक कर दो। जिन चीज़ों को जिस तरह वह सलीक़े से रखना चाहता है उसी तरह रखो, जो चीज़ें तुम्हारे पास रखी हों उनको हिफ़ाज़त से रखो। कपड़े हों तो तह करके रखो, यूँ ही इधर-उधर न डालो, कहीं क़रीने और सलीक़े से रखो।

कुछ औरतों की यह आदत होती है कि शौहर ने घर में क़दम रखा

और उन्होंने बच्चों को मारना शुरू किया। मर्द बेचारा मुसीबत का मारा खुदा जाने कहाँ-कहाँ से परेशान ख़स्ताहाल घर में सुकून हासिल करने के लिए आए और यहाँ यह बुरा हाल कि बच्चा रो-रो के मरा जा रहा है और बीवी उधर मुँह फैलाए बैठी है।

मेरी बहनो! इन्साफ़ करो। वह कहाँ तक न घबराएगा। नतीजा यह होता है कि दो घड़ी घर में बैठना दूभर हो जाता है और वह दूसरी जगह जाकर पार्कों में, कलबों में, होटलों की मेज़ों पर, ग़लत दोस्तों की मजलिसों में जाकर बैठने लग जाता है। धीरे-धीरे उसकी तबीयत घर से, बीवी बच्चों से नफ़रत करने लग जाती है और वह बीवी और मासूम बच्चों को मुसीबत, बला और अपने गुनाहों का अज़ाब समझने लगता है और नई नस्ल के नन्हे-मुन्ने खिलौने माँ की ग़लती की वजह से बाप की शफ़क़तों और प्यार से मेहरूम हो जाते हैं।

माँ हर वक़्त बाप के सामने उन बच्चों को मारती-कूटती या डाँटती-डपटती रहती है। फिर मर्द धीरे-धीरे सुकून पसन्द औरत पर माईल हो जाता है और यह हंगामा उठाने वाली बीवी नज़रों से गिर जाती है। इसी तरह बे-सलीक़ा औरतें भी शौहरों की नज़रों से गिर जाती हैं।

शौहर तो घर में आया और बीवी साहिबा दीवार या खिड़की में खड़ी अपनी पड़ोसन से कहा-सुनी में यानी बातों में लगी हुई हैं, या फ़ोन पर अपनी माँ या बहन से बातें कर रही हैं।

घर का सामान बेटिकाने पड़ा है। बावर्चीख़ाने में सफ़ाई नहीं हुई। देगचों और हाँडियों में मक्खियाँ आ रही हैं, तवा कहीं पड़ा है, प्लेटें कहीं पड़ी हैं। मैले कपड़े इधर-उधर पड़े हैं। पानी के बरतनों और मटकियों को धोने की नौबत नहीं आती। फ्रिज खोला तो सफ़ाई नहीं, पानी की बोतल उठाई तो पानी नहीं और जिन बोतलों में पानी है उनमें कचरे वाला पानी है, गिलास उठाया तो वह चिकना रखा हुआ है। ऐसी हालत में अब शौहर का बीवी की बेतवज्जोही का रोना क्या जायज़ है?

फिर शौहर का दूसरी बीवी के चक्कर में परेशान फिरना नाजायज़ है?

कभी किसी काम में हीला-बहाना न करो, न कभी झूठी बातें बनाओ कि इसकी वजह से एतिबार जाता रहता है फिर कभी सच्ची बात का भी यक़ीन नहीं आता।

शौहर के गुस्से और नाराज़गी की सूरत में औरत को क्या करना चाहिए

तुम्हारा शौहर अगर किसी बात पर तुम से ख़फ़ा होकर रूठ गया हो तो तुम भी मुँह फुलाकर न बैठ जाओ बल्कि ख़ुशामद करके उज़्र करके माफ़ी माँग के जिस तरह से बने उसको मना लो, चाहे तुम्हारा क़सूर न हो शौहर ही का क़सूर हो, तब भी तुम हरगिज़ न रूठो और हाथ जोड़कर क़सूर माफ़ कराने को अपना फ़ख़्र और अपनी इज़्ज़त समझो।

और अगर ख़ुद तुम्हारा ही क़सूर हो तो ऐसे वक़्त ख़फ़ा होकर अलग बैठना तो और भी बड़ी बेवक़ूफ़ी और नादानी है, ऐसी बातों से दिल फट जाता है।

शौहर को अगर किसी बात पर गुस्सा आ गया हो तो ऐसी बात मत कहो कि गुस्सा और ज़्यादा आ जाए। और अगर गुस्से में कभी कुछ बुरी बात कह दे तो तुम सब्र के साथ बरदाश्त करो और बिल्कुल जवाब न दो, वह कुछ कहे तो चुपकी बैठी रहो और "माफ़ करना" कहती रहो। गुस्सा उतरने के बाद देखना शौहर ख़ुद शर्मिन्दा होगा और फिर तुमसे कितना ख़ुश रहेगा। और फिर कभी इन्शा अल्लाह आप पर गुस्सा न होगा। और अगर तुम भी बोल उठीं तो बात बढ़ जाएगी फिर न मालूम नौबत कहाँ तक पहुँचे। (कुछ इज़ाफ़े के साथ बहिश्ती ज़ेवर पेज: 41)

शौहर का गुस्सा
और समझदार बीवी की समझदारी

एक वाक़िआ मिसाल के तौर पर हम नक़ल करते हैं कि किसी महकमे के इंचार्ज आफ़ीसर ने "वलीद" (आफ़िस के नौकर) को तलब किया और उसके किसी न किये हुए क़ुसूर पर ही उसे तंबीह की। वलीद को अपनी सफ़ाई में कुछ कहने या अपना पक्ष रखने और अपनी सफ़ाई का कोई मौक़ा नहीं मिला। इसलिए जब वह आफ़िस से घर लौटा तो उसका पारा चढ़ा हुआ था और गुस्सा दबाने की कोशिश में उसका सीना जैसे उबल रहा था। घर पहुँचते ही चूँकि उसे अपना पुराना मौज़ा उसकी जगह पर नज़र न आया जहाँ वह छोड़ गया था, इसलिए वह बीवी पर बरस पड़ा।

उसकी बीवी बड़ी होशियार और मामले को समझने वाली थी। उसने भाँप लिया कि आज उसका शौहर आम दिनों से बदला-बदला नज़र आता है। इसलिए उसने उस वक़्त छेड़ना मुनासिब नहीं समझा और इतनी देर इन्तिज़ार किया जब तक कि दोनों खा-पीकर फ़ारिग़ न हो जाएँ। जब दोनों फ़ारिग़ हुए और इत्मीनान से बैठ गए तो अब बीवी ने धीरे-धीरे उस परेशानी की कैफ़ियत और नागहानी मुसीबत को बातों-बातों में जानना चाहा।

अभी बीवी ने अपने शौहर की मसरूफ़ियतों और उसकी थकावट से संबन्धित कुछ ही बातें कही थीं कि शौहर के दिल का बोझ जैसे उतर गया और उसने बड़ी राहत महसूस की। और जब सोने का वक़्त आया तो घटना से मुताल्लिक़ शौहर का ज़ेहन साफ़ और उसका मिज़ाज बिल्कुल बदल चुका था, और उसे पूरा एहसास था कि उसकी बीवी और शरीके-ए-हयात ने उसका ग़म दूर करने के लिए उसे बेइन्तिहा प्यार दिया है और मुहब्बत के फूल निछावर किए हैं।

ग़ौर कीजिए! रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में सुकून व इत्मीनान और ख़ुशी

लाने का यह एक मामूली गुण है, जिसका बुरे हालात और नागवार दिनों में हम जब चाहें तजुर्बा कर सकते हैं। और इस तरीक़े को अपनी ज़िन्दगी में लाभदायक पा सकते हैं। चुनाँचे उपरोक्त इसी वाक़िए में हम देख सकते हैं कि वलीद की बीवी अगर अपने शौहर के मिज़ाज को पहचानने वाली न होती तो उसके शौहर का बदलता मिज़ाज हरगिज़ उसके हाल के मुताबिक़ न होता। और उसकी बहाली और दुरुस्ती के लिए वह रोती, गिड़गिड़ाती, या उसके साथ हुज्जत और लड़ाई करती, उसका कोई लाभदायक नतीजा बरामद नहीं होता, बल्कि ऐसा होता कि एक छोटी सी चिंगारी या मामूली सी लड़ाई आग का अलाव या भयानक टकराव की सूरत इख़्तियार कर जाती और बात बिगड़ जाती।

बहुत सी बार बड़े-बड़े झगड़े, तलाक़, अलैहदगी, नाराज़गी व कशीदगी, मैके जाकर बैठ जाना या ससुराल वालों का न बुलाना उमूमन मामूली चीज़ों से होता है। समझदार बीवी को चाहिए कि शौहर के गुस्से के वक़्त अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे और शैतान को किसी तरह आने का मौक़ा न दे।

ख़ास तौर पर शौहर घर में थककर आए उस वक़्त पहले पानी का गिलास पेश करके उसकी थकावट दूर करने की कोशिश करे। अगर ख़िलाफ़े मिज़ाज वाक़िआ पेश आए तो सब्र करे और कह दे मुझसे ग़लती हो गई आगे ख़्याल रखूँगी। अल्लाह तआला मियाँ-बीवी दोनों को समझ और सब्र व बरदाश्त की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएँ। आमीन!

इनसानी चीज़ों और समाजी उलूम के माहिरीन, जिनका बहस का विषय ख़ानदान और ख़ानदानी बातें हैं, इस हक़ीक़त को अच्छी तरह जानते हैं कि वैवाहिक ज़िन्दगी में नाइत्तिफ़ाक़ी और झगड़े ग़ैर-अपेक्षित नहीं। उन्होंने एक चार्ट तैयार किया है, जिसमें क़रीब-क़रीब साठ ऐसे झगड़े जिनको मियाँ बीवी के सर, या बीवी मियाँ के सर डालती है, लेकिन उनकी नोईयत हरगिज़ ऐसी नहीं जो परेशानी या दिक़्क़त का सबब हो। क्योंकि सूरतेहाल तो यही है कि जिस वैवाहिक ज़िन्दगी में

झगड़ा लड़ाई न हो वह हमारी नज़र में बड़ी अहमियत की हामिल और लायक़े तहक़ीक़ व तलाश है और अच्छी तरह जायज़ा और तफ़तीश व तलाश के बाद हमें लगेगा कि मियाँ या बीवी तन्हा किसी एक की बात इस लायक़ नहीं कि उस पर यक़ीन किया जाये। क्योंकि घरेलू झगड़े या वैवाहिक नाइत्तिफ़ाक़ियाँ फ़ितरी हैं और उन्हें होना चाहिए लेकिन समझदार मियाँ-बीवी समझदारी के साथ उसको हल करें।

शौहर का अगर किसी दूसरी लड़की या औरत से ग़लत ताल्लुक़ हो

ज़रा-ज़रा से शुब्हे पर तोहमत मत लगाओ कि आप फ़ुलानी के साथ बहुत बातें करते रहते हो, फ़ोन करते रहते हो, वहाँ बैठे-बैठे क्या करते हो। इसमें अगर मर्द बेक़सूर हो तो आप ख़ुद ही सोचिए मर्द को कितना बुरा लगेगा। ख़ुदा न करे अगर सचमुच की उसकी आ़दत ही ख़राब है तो यह ख़्याल करो कि तुम्हारे डाँटने-कोसने, गुस्सा निकालने, कोई दबाव डालकर ज़बरदस्ती करने से फ़ायदा होने के बजाय तुम्हारा ही नुक़सान है।

अपनी तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ जो थोड़ी-बहुत तवज्जोह दे रहा था वह भी हटवाना हो तो ऐसा कर लो, इस तरह करने से आ़दत छूटती नहीं। बुरी आ़दत छुड़वाना हो तो रातों को उठकर अल्लाह तआ़ला से उसकी हिदायत और इस्लाह (सुधार) के लिए दुआ़ माँगो और फिर तन्हाई में चुपके-चुपके से समझाओ-बुझाओ।

जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने शौहर को हिदायत दे दी उस दिन से बीवी का गुलाम हो जाएगा। और अगर तन्हाई में ग़ैरत दिलाने और दुआ़ से भी आ़दत न छूटे तो उलेमा व बुज़ुर्गों से मश्विरा करके सब्र करके बैठी रहो। लोगों के सामने ढिंढोरा मत पीटती रहो, हर जगह मत गाती रहो और उसको ज़लील और रुस्वा न करो, न ज़ोर लगाकर उसको दबाने की फ़िक्र करो, इससे और ज़्यादा ज़िद हो जाती है और

गुस्से में आकर और ज़्यादा करने लगता है।

अगर तुम गुस्सा करोगी और लोगों के सामने बक-झक करके ज़लील करोगी तो जितना तुम्हारे पास आता और तवज्जोह देता और बोलता था उतना भी न बोलेगा। फिर उस वक़्त रोने पछताने के अलावा कुछ हाथ न आएगा।

खुदा आपकी और सारी मुसलमान बच्चियों की ऐसी परेशानियों से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

ससुराल में रहने का तरीक़ा

कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने नसब (ख़ानदान) के साथ ससुराली रिश्ते को भी ज़िक्र किया है। इससे मालूम होता है कि सास और ससुर का भी किसी क़द्र हक़ होता है, इसलिए उनके साथ भी एहसान और अख़्लाक़ का बर्ताव करना चाहिए।

जब तक सास और ससुर ज़िन्दा हैं उनकी ख़िद्मत को उनकी ताबेदारी को ज़रूरी समझ कर उसी में अपनी और अपनी औलाद की इज़्ज़त और सआदत समझिए और सास व नन्दों से अलग होकर रहने की हरगिज़ फ़िक्र न कीजिए। यही सोच बिगाड़ का सबब है।

खुद ही आप सोचिए जिस माँ-बाप ने उसको पाला, परवान चढ़ाया, माँ ने ख़ून के क़तरे पिला-पिलाकर बाप ने ख़ूब अरमानों से हिला-हिलाकर और अब बुढ़ापे में इस उम्मीद पर कि बहू से हमको आराम मिले और पोते पोतियों को प्यार व मुहब्बत करेंगे उसका निकाह किया। लेकिन बहू आते ही यह फ़िक्र करने लगी कि आज ही शौहर अपने माँ-बाप से जुदा हो जाए।

कितने अफ़सोस की बात है और फिर जब सास को यह बात मालूम होती है कि यह बेटे को हमसे छुड़वाना चाहती है तो झगड़ा फैलता है। ससुराल में ख़ानदान के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए। छोटों पर मेहरबानी और बड़ों का अबद करें। जो काम सास-नन्द करती

हैं उसके करने में शर्म न महसूस करें। उनका काम खुद करें उससे उनके दिलों में मुहब्बत आएगी।

अगर ससुराल में कोई बात बुरी और नागवार लगे तो अपनी माँ के पास जाकर चुग़लख़ोरी और शिकायत न करे, यह बड़ी बुरी बात है। इसी से लड़ाईयाँ होती हैं और झगड़े खड़े होते हैं। इसके सिवा और कोई फ़ायदा नहीं होता।

किताब "इस्लामी दुल्हन" से कुछ हिदायतें

1. अगर शौहर के माँ-बाप ज़िन्दा हों और रुपये-पैसे सब उन्हीं को दे और तुम्हारे हाथ पर न रखे तो बुरा न मानो, बल्कि अगर तुमको दे तब भी अक़्ल की बात यह है कि तुम अपने हाथ में न लो और यह कहो कि उन्हीं को दीजिए। ताकि सास-ससुर का तुम्हारी तरफ़ से दिल मैला न हो और तुमको बुरा न कहें कि हमारे लड़के को अपने ही फ़न्दे में कर लिया। और जब तक सास-ससुर ज़िन्दा हैं, उनकी ख़िद्मत और ताबेदारी को अपना फ़र्ज़ जानो और उसी में अपनी इज़्ज़त समझो और सास-नन्दों से अलग होकर रहने की हरगिज़ फ़िक्र न करो कि सास-नन्दों से बिगाड़ हो जाने की यही जड़ है।

2. जो काम सास-नन्दें करती हैं तुम उसके करने से शर्म महसूस न करो। तुम खुद भी कहकर उनसे ले लो और कर दो। इससे ससुराल वालों के दिलों में तुम्हारी मुहब्बत पैदा हो जाएगी।

3. जब दो औरतें चुपके-चुपके बातें करती हों तो उनसे अलग हो जाओ और उनकी खोज मत लागाओ कि आपस में क्या बातें हुई थीं। और ख़्वाह-मख़्वाह यह भी ख़्याल न करो कि कुछ हमारी ही बातें होंगी।

4. सास का अदब हर बात में अपनी मेहरबान माँ की तरह करो और हर हाल में उनकी रज़ामन्दी को मुक़द्दम समझो, चाहे तुमको तकलीफ़ हो या आराम मगर उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ एक क़दम मत चलो। ज़बान से कोई ऐसा लफ़्ज़ मत निकालो जिससे उनको तकलीफ़

हो। उनसे जब बात करो और ख़िताब करो तो ऐसे अलफ़ाज़ से ख़िताब मत करो जैसे अपनी बराबर वालियों से ख़िताब करती हो। बल्कि उन अलफ़ाज़ से ख़िताब करो जो बुज़ुर्गों के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। अगर सास तुमको किसी काम में तंबीह करे डाँटे तो उनके कहने को ख़ामोशी के साथ सुनना चाहिए। और याद रखो! अपने शौहर की सास (यानी अपनी माँ) से ज़्यादा अपनी सास का ख़्याल रखो।

अगर मान लो नागवार और कड़वी बात भी कहें जिसकी उम्मीद नहीं है तब भी उसको एक मीठे शर्बत के घूँट की तरह पी जाओ और हरगिज़ सख़्ती से जवाब न दो और उनकी ख़िदमत अपनी माँ की तरह करो। अगर किसी काम को दूसरे को कहें तो तुम उसको अपनी तरफ़ से अन्जाम दो।

5. अगर कोई औरत तुमसे रुतबे और उम्र में बड़ी है जैसे शौहर के बड़े भाई की बीवी, उसके साथ बात चीत और उठने-बैठने में उसके रुतबे का लिहाज़ रखो और उसके साथ इसी तरह घुल-मिलकर रहो कि गोया सगी बहनें हैं। एक बड़ी और एक छोटी। तुम अगर ऐसा बर्ताव रखोगी तो ज़रूर दूसरी तरफ़ से भी ऐसा ही बर्ताव होगा। और अगर उम्र व रुतबे में तुमसे छोटी है तो उसके साथ मुहब्बत और प्यार का बर्ताव रखो और उसको बहुत ही नर्मी व हमदर्दी से अच्छी-अच्छी बातों की तालीम देती रहो। और वह कोई काम करे तो तुम ख़ुद मदद देकर वह काम करा दो।

इसी तरह शौहर की बहनों के साथ उनके रुतबे के अनुसार सुलूक और नर्मी से पेश आओ, मगर इसमें दरमियानी राह इख़्तियार करो क्योंकि हद से आगे बढ़कर ज़्यादा मुदारात में निबाह मुश्किल है। अपने घर में औरतों के साथ जब बैठो या किसी दूसरे घर किसी तक़रीब (पार्टी या किसी फंकशन वग़ैरह) में औरतों में शामिल हो तो उसमें पीठ पीछे किसी के बारे में ऐसी बात मत कहो कि अगर वह सुने तो बुरा माने। इसी को ग़ीबत कहते हैं। ग़ीबत करने का सख़्त गुनाह है। घर में

जो बच्चे हैं चाहे वह तुम्हारी देदरानी जेठानी की औलाद हों या ऐसे क़रीबी रिश्तेदारों के जो उस घर में रहते हैं, उनके साथ बहुत ही मेहरबानी से पेश आओ।

हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स बड़ों का अदब न करे और छोटो पर रहम न करे वह हम में से नहीं। हमारे हुज़ूरे पाक रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बच्चों के साथ बहुत मुहब्बत थी। यहाँ तक कि एक बार एक बच्चे ने आपकी गोद में पेशाब भी कर दिया था। कुछ औरतें जिनको बच्चों से मुहब्बत होती है बच्चे को इस बहाने से बुलाती हैं "आओ तुम्हें एक चीज़ दूँ" और कोई चीज़ देने का इरादा नहीं होता सिर्फ़ बुलाना मक़सद होता है, लेकिन ऐसा कहना एक क़िस्म का झूठ बोलना होता है। ऐसा मत करो।

एक बीबी ने एक बार हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने बच्चे को कुछ देने को कहकर बुलाया, मगर उसने ख़ाली बहकाया न था बल्कि कोई चीज़ उसको दी भी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न फ़रमाया अगर तू इसको यह न देती तो झूठ हो जाता।

घर में अगर ख़ादिमा (नौकरानी/काम करने वाली) है तो उसकी हिम्मत से ज़्यादा काम न लो। अगर कोई काम उस पर भारी हो तो ख़ुद भी उसकी मदद करो। उससे सख़्ती और सख़्त-कलामी से पेश न आओं। वह बीमार हो या उसे कोई तकलीफ़ हो तो उसमें उसकी पूरी हमदर्दी करो, जैसा कि तुमने अपनी माँ का बर्ताव ख़ादिमा औरतों के साथ देखा है कि अगर कभी ख़ादिमा के सर में दर्द भी हुआ तो ख़ुद उसका काम कर लिया और ऐसी हालत में उसे तकलीफ़ नहीं दी। हाँ यह भी न होना चाहिए कि ख़ादिमा बिल्कुल आराम-परस्त और कामचोर हो जाए। ऐसा कर देना ख़ादिमा के हक़ में दुश्मनी है कि फिर वह जहाँ जाएगी सेठानियों की डाँट सुनेगी।

कोई अच्छी चीज़ खाने-पीने की आए तो उसमें से उसको भी किसी क़द्र देनी चाहिए। तुमने यह बर्ताव भी अपनी माँ का देखा है कि अगरचे

कितनी ही थोड़ी चीज़ हो मगर उसमें भी वह ख़ादिमा का हिस्सा ज़रूर लगाती हैं।

नोट: हज़रत हकीमुल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपनी किताब "इस्लाहे इन्क़िलाबे उम्मत पेज 188 जिल्द 2" में लिखते हैं:

लेकिन यह सब अख़्लाक़ी तालीम है वरना शरीअ़त के एतिबार से औ़रत को यह हक़ हासिल है कि अपनी सास व ससुर से अलग रहने का मुतालबा करे, और शौहर पर इस मुतालबे को पूरा करना ज़रूरी है, बल्कि साथ रहने में अगर नाइत्तिफ़ाक़ी का गुमान ग़ालिब (डर) हो जैसा कि आजकल उमूमन होता है (और सास के साथ ख़िदमत के लिए दूसरी बहू मौजूद है तो उस वक़्त अख़्लाक़ का तक़ाज़ा) भी यही है कि अलग ही रिहाईश इख़्तियार की जाए। (तोहफ़ा-ए-ज़ौजैन पेज 35)

ज़रा आप ख़ुद ही इन्साफ़ कीजिए

इसी तरह जब आप किसी की नन्द बनती हैं और आपकी भाभी अलग रहना चाहती है तो नन्द ही उसमें ज़्यादा रुकावट बनती है। हालाँकि यही नन्द जब अपने ससुराल के घर जाती है तो यही माँ बेटी दुआएँ करती हैं करवाती हैं, तावीज़ लेती हैं कि बेटी का घर अलग हो जाए। हम घर का सामान दिलवा देंगे लेकिन रहेंगे अलग, कि इसी में दीन व दुनिया की कामयाबी है। लेकिन जब बहू की बात आती है तो यही माँ-बेटी अब सास और नन्द के रूप में बदल जाती हैं और जितने अलग रहने के फ़ायदे अपनी बेटी के लिए बताती हैं वे सब यहाँ भूल जाती हैं, और अब उसी के बराबर अलग रहने के नुक़सानात बहुत ज़्यादा दलीलों के साथ बयान करती हैं।

हमारे यहाँ बहुत से लोग "दारुल-इफ़्ता" (जहाँ से फ़तवे दिये जाते हैं) में अपनी बेटी की शादी के बाद बेटी के सास व ससुर की शिकायतें लेकर आते हैं: बेटा तवज्जोह नहीं देता, सास ज़ुल्म करती है, कोई तावीज़ दीजिए। मश्विरा दीजिए, मसला बताईए।

कहते हैं: हम चाहते हैं कि बेटी अलग रहे, हम मकान दिलवा देते हैं हमारी बेटी अलग रहे। हम नहीं चाहते कि हमारी बेटी पर ज़ुल्म हो, हम सास के साथ रखना नहीं चाहते।

जब यही लोग अपने बेटों की शादी करते हैं तो कहते हैं कि जिस बहू को हम लाए वह हमारे साथ ही रहे।

जब आपकी बेटी सास के साथ नहीं रह सकती और अगर रहती है तो रोज़ के झगड़े होते हैं जिसमें न कोई दीन का काम सुकून के साथ हो सकता है न दुनिया का, तो आप बहू बनाकर जिसको लाए वह भी किसी की बेटी है उसे आप क्यों मजबूर कर रहे हैं कि वह आपकी बीवी के साथ यानी अपनी सास के साथ एक ऐसे मकान में रहे जिसमें बावर्चीख़ाना एक हो।

अगर नये माकन की गुंजाईश नहीं तो सिर्फ़ बावर्चीख़ाना अलग कर दें, उसका खाना पकाना अलग कर दें। जब अपनी बेटी की बात आती है तो क़हते हैं कि अलग रखना अच्छा है, और बहू का जब मौक़ा आता है तो कहते हैं कि नहीं वह साथ रहे। यह कैसा इन्साफ़ है?

औरत से हम चार चीज़ें चाहते हैं

1. उसके दिल में नेकी हो।
2. उसके चेहरे में हया (शर्म) हो।
3. उसकी ज़बान शीरीं (मीठी) हो।
4. उसके हाथ काम में लगे रहें। (मख़्ज़ने अख़्लाक़)

अल्लाह तआ़ला बेहतरीन बदला अ़ता फरमाये हर मुसलमान बहन को जो इस किताब को ख़ुद भी पढ़े और पढ़ने के बाद दूसरी बहनों को भी इसके पढ़ने की तरफ़ तवज्जोह दिलाये।

बीवी शौहर की निगाह में कैसे प्यारी बन सकती है

चूँकि औ़रतें हर वक़्त सास व शौहर की सख़्ती का रोना रोती नज़र आती हैं, अगर वे उन तदबीरों पर अ़मल कर लें जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाई हैं तो अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला शौहर और सास के दिलों को उन पर मेहरबान फ़रमा देंगे, और फिर ये औ़रतें अपनी ज़िन्दगी भी ख़ुशी से गुज़ारेंगी और उसके ज़रिये पूरा ख़ानदान क़बीला ख़ुशी वाली ज़िन्दगी बसर करेगा। अल्लाह हमारी बहनों को इन तदबीरों पर सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से अ़मल करने की तौफ़ीक़ और हिम्मत दे। आमीन!

अब हम नीचे चार तदबीरें लिखते हैं जिन पर अ़मल करने से यक़ीनन् कैसी ही कम सूरत, कम समझ बीवी हो इन्शा-अल्लाह तआ़ला शौहर का दिल उस पर मेहरबान हो जाएगा और मियाँ-बीवी ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और मुहब्बत व उलफ़त की फ़िज़ा में नौनिहालों को परवान चढ़ाएँगे।

1. मियाँ-बीवी का नेक बनना।
2. शौहर का मिज़ाज पहचानना।
3. शौहर की तारीफ़ और उसकी सच्ची मुहब्बत।
4. अच्छा खाना पकाना।

मियाँ-बीवी का नेक बनना फिर एक बनना

1. पहली बात यह है कि बीवी अपने आपको नेक बनाने की कोशिश करे। जब तक दोनों नेक नहीं होंगे तब तक एक भी नहीं होंगे। और नेक बीवी कैसी होती है, उसके लिए अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ

यानी नेक औ़रतें वे हैं जो मर्द की हाकिमिय्यत को मान के उनकी

इताअ़त करती हैं, और मर्दों की पीठ पीछे भी अपने नफ़्स और उनके माल की हिफ़ाज़त करती हैं।

यानी अपनी आबरू और घर के माल की हिफ़ाज़त जो घर के मामलात में सबसे अहम हैं, उनके बजा लाने (यानी उन पर अ़मल करने) में उनके लिए मर्दों के सामने और पीछे के हालात बिल्कुल बराबर हैं। यह नहीं कि उनके सामने तो इसका ख़्याल करें और उनकी नज़रों से ग़ायब हों तो उसमें लापरवाही बरतें।

(ख़ुलासा तफ़सीर मआ़रिफ़ुल-कुरआन जिल्द 2 पेज 399)

जो नेक और अल्लाह की इबादत-गुज़ार बन्दियाँ हैं, जो अपने नमाज़-रोज़े दीन की पाबन्द रहें वही नेक बन सकती हैं। जो अल्लाह का हक़ अदा करेंगी वही शौहर का हक़ अदा कर सकती हैं, जो अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी करें वह किसी की 'फ़रमाँबरदार' इताअ़त करने वाली नहीं बन सकतीं।

किसी वक़्त की नमाज़ न छोड़ें, न देर से पढ़ें, वक़्त के दाख़िल होते ही नमाज़ की तैयारी शुरू कर दें। बहुत अच्छी तरह ख़ूब सुन्नतों और मुस्तहिब्बात का ख़्याल रखते हुए धीरे-धीरे जी लगाकर यह ध्यान रखते हुए कि अल्लाह को मैं देख रही हूँ अहकमुल्-हाकिमीन रब्बुल् आ़लमीन की बारगाह में खड़ी हूँ या वह मुझे देख रहे हैं, इस तरह नमाज़ पढ़ें।

कुरआने करीम की तिलावत करें, अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र की पाबन्दी करें, हर छोटे बड़े गुनाह से अपने आपको बचाने की कोशिश करें और इस बात का ख़ास ख़्याल रखें कि:

कोई नामेहरम मर्द आपके जिस्म के किसी हिस्से को न देख सके। आपका जिस्म, आपका एक-एक बाल अल्लाह तआ़ला ने आपको अमानत के तौर पर दिया है, अगर आपने इस अमानत की हिफ़ाज़त की और हर नामेहरम मर्द से चाहे वह देवर हो या ख़ालाज़ाद या मामूँज़ाद भाई हो, नौकर हो या कोई भी ऐसा मर्द जिससे आपके और

सारे आलम के पैदा करने वाले अल्लाह तआला ने पर्दे का हुक्म दिया है, उससे अपने जिस्म को छुपाये रखे और हर छोटे-बड़े गुनाह से बचने की कोशिश करे, जो हो जाये फ़ौरन तौबा कर ले, तो इन्शा-अल्लाह तआला नेक बन्दियों में शुमार की जाएगी।

अगर किसी मजबूरी से बाहर जाना भी पड़े तो इस तरह बाहर निकलें कि आपके बदन के किसी हिस्से को कोई नामेहरम न देख सके। अगर उसने आपको देखा तो वह गुनहगार हुआ और आप बेपर्दा गईं तो आपने भी अल्लाह तआला को नाराज़ किया। इस तरह गुनाह करके आप दूसरे को गुनहगार करने का ज़रिया बन गईं।

ठंडे दिल से ग़ौर कीजिए! अगर एक औरत बेपर्दा निकलती है, मिसाल के तौर पर सौ आदमियों ने उसके जिस्म को उसके खुले हुए बालों को, उसके कपड़ों को देखा, भूखी निगाहों से उसको ताड़ा, ललचाई हुई नज़रों से उस पर ध्यान दिया और ग़लत सोच में मुब्तला हुए तो सौ आदमियों की दो सौ आँखें अल्लाह तआला के ग़ज़ब और गुस्से का शिकार हुईं। अब एक औरत दो सौ आँखों को अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में मुब्तला करने का ज़रिया बन गई।

अब जब उसने अल्लाह तआला को नाराज़ किया तो उसका शौहर उस पर कैसे मेहरबान हो सकता है? उसकी औलाद क्योंकर उसकी बात मान सकती है? हर चीज़ में यह परेशानी ही देखेगी। क्योंकि उसका पैदा करने वाला ख़ालिक़ और मालिक उससे नाराज़ है। तो सबसे पहले अल्लाह तआला से माफ़ी माँगनी होगी और अपने आपको नेक बनाना होगा। हर छोटे-बड़े गुनाह से अपने आपको बचाना होगा।

जो औरत अपने पैदा करने वाले मालिक के हुक्मों को मानने वाली बन गई, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अख़्लाक़ की पैरवी करने वाली बन गई तो वह इंसानियत के शर्फ़ से मालामाल हो गई। उसका नफ़्स सभ्य हो गया। वह मुहब्बत व उलफ़त और मुहब्बत व भाईचारे का पुतला बन गई, तो वह दूसरों की ख़ातिर तकलीफ़

बरदाश्त कर सकती है, सहेलियों और अज़ीज़ रिश्तेदारों से निबाह करने की आदी बन जायेगी।

उससे जो क़रीब होगा ख़ुश रहेगा, उसकी उलफ़त और मुहब्बत घर वालों को, पड़ोसियों को, रिश्तेदार औरतों को अपना गिर्वीदा कर लेगी।

अगर किसी शख़्स का ऐसी औरत से निकाह हो गया तो वह उसके अच्छे अख़्लाक़ और नेक आमाल की वजह से ज़िन्दगी भर ख़ुश रहेगा।

अगर इसका ख़्याल न रखा गया तो दुनियावी ज़िन्दगी सरापा मुसीबत बन जाएगी। अगर औरत नेक बन गई तो उसका दर्जा व रुतबा मर्दों से भी ऊँचा हो जाएगा और वह जन्नत में मर्दों से पहले जाएगी।

औरत का जन्नत में मर्दों से पहले पहुँचना

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि ऐ बीबियो! याद रखो तुम में से जो औरतें नेक हैं वे नेक मर्दों से पहले जन्नत में जाएँगी। जब शौहर जन्नत में आएँगे तो यह औरत गुस्ल करके ख़ुशबू लगाकर शौहरों के हवाले कर दी जाएगी। सुर्ख़ और पीले रंग की सवारियों पर और उनके साथ ऐसे बच्चे होंगे जैसे बिखरे हुए मोती।

हज़रत हकीमुल-उम्मत मौलाना थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि बीबियो! और कौनसी फ़ज़ीलत (बड़ाई और सम्मान) चाहती हो? जन्नत में मर्दों से पहले तो पहुँच गईं। हाँ नेक बन जाना शर्त है और यह कोई मुश्किल काम नहीं। (बहिश्ती ज़ेवर)

देखिए नेक बन जाने में कितनी फ़ज़ीलत है। किसी शायर के कहने के अनुसार:

मुहम्मद की शरीअत पर सर को झुका दो
इशारा हो तो अपने हाथ अपना सर क़लम कर दो

नहीं झुकता जो सर अल्लाह के अहकाम के आगे
उसे झुकना पड़ेगा नातवाँ इनसनाम के आगे

अदब से चूमकर कुरआन को रख लो पेशानियों पर
सुकूने दिल का सरमाया है रख लो अपने सीनों पर

जो एक की बन्दी नहीं बनती उसे हज़ारों की बाँदी बनना पड़ता है

मेरी मोहतरम बहनो! जो एक की बन्दी नहीं बनती उसको हज़ारों की बाँदी (नौकरानी) बनना पड़ता है। जो औरत बिल्कुल बेपर्दा या बिना शरई तरीक़े के यानी बिना बुर्क़े के बाहर निकलती है और अल्लाह के हुक्म को नहीं मानती, आप यह न समझें कि वह आज़ाद है। याद रखिए! जो एक अल्लाह की गुलामी में नहीं उसको सैकड़ों और हज़ारों की गुलामी इख़्तियार करनी पड़ती है। जो एक का हो जाए एक की गुलामी इख़्तियार कर ले उसको सबसे आज़ादी मिल जाती है, और उसका दिल अल्लाह तआला सुकून से भर देते हैं। आज हर एक किसी की क़ैद में गुलामी में चल रहा है।

एक बेपर्दा औरत से आप पूछिए कि आपको बुर्क़ा पहनने में क्या चीज़ रुकावट है? आप पर्दा क्यों नहीं करतीं? वह कहेगी समाज की वजह से, रिश्तेदारों की वजह से, ख़ानदान के रिवाज की वजह से। मालूम हुआ कि वह अल्लाह तआला की गुलामी छोड़कर समाज की गुलाम है।

क़ौम की, क़बीले की, ख़ानदान की, मैनेजर की, प्रिन्सिपल की, डायरेक्टर की, फ़र्म की, कम्पनी के क़ानून की, ससुराल की, सहेलियों की, दफ़्तरों में क्लर्की के पद पर बैठकर अफ़सरों की, सेल्ज़ गर्ल और मॉडल गर्ल बनकर ग्राहकों की, एकाउंटेन्ट बनकर सेठों की, वेटर्स बनकर रेस्तुरानों के मालिकों की, रूम अटेंडेन्ट बनकर होटल के मुसाफ़िरों की, एयर होस्टस बनकर हवाई जहाज़ के लाखों मुसाफ़िरों की, प्राईवेट सैक्रेट्री बनकर अजनबी मर्दों की, रिसेप्शन और इस्तिक़बालिया की सीट पर

बैठकर सारे आने-जाने वालों की, होली-डे इन में मुलाज़िमा बनकर मेहमानों की, इस तरह यह औरत लाखों की गुलाम बन गई, सिर्फ़ एक अहकमुल-हाकिमीन रब्बुल्-आलमीन (अल्लाह तआला) की गुलामी छोड़कर। इसी को हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब दामत् बरकातुहुम अपने दीनी बयान "आज़ादी-ए-निस्वाँ का फ़रेब" में फ़रमाते हैं:

आज़ादी के दिल को लुभाने वाले नारों की आड़ में औरत को घसीट कर सड़कों पर लाया गया। उसे दफ़्तरों में क्लर्की अता की गई, उसे अजनबी मर्दों की प्राईवेट सैकरेट्री का पद बख़्शा गया। उसे स्टेनो-टाईपिस्ट बनने का सम्मान दिया गया। उसे व्यापार चमकाने के लिए "सेल्ज़ गर्लज़" और मॉडल गर्ल बनने का गौरव बख़्शा गया और उसके एक-एक अंग को खुले बाज़ार में रुस्वा करके ग्राहकों को दावत दी गई कि आओ और हमसे माल ख़रीदो। यहाँ तक कि वह औरत जिसके सर पर दीन व फ़ितरत ने इज़्ज़त व आबरू का ताज रखा था और जिसके गले में पाकदामनी व अस्मत के हार डाले थे, तिजारती इदारों के लिए एक शोपीस और मर्द की थकन दूर करने के लिए एक तफ़रीह का सामान बनकर रह गई।

आज यूरोप और अमेरिका में जाकर देखिए तो दुनिया भर के सारे निचले (घटिया) काम औरत के हवाले हैं। रेस्तुरानों में कोई मर्द वेटर मुश्किल से नज़र आएगा। वरना ये सारी ख़िदमात औरतें अन्जाम दे रही हैं। होटलों में मुसाफ़िरों के कमरे साफ़ करने, उनके बिस्तर की चादरें बदलने और रूम अटेंडेन्ट की ख़िदमात तक औरतों के सुपुर्द हैं। दुकानों पर माल बेचने के लिए मर्द कम नज़र आएँगे। यह काम भी औरतों ही से लिया जा रहा है।

दफ़्तरों के इस्तिक़बालियों (स्वागती काउंटर) पर आम तौर पर औरतें ही होती हैं और बेरे से लेकर क्लर्क तक के सारे ओहदों पर ज़्यादा तर औरत ही के हिस्से में आते हैं जिसे घर की क़ैद से आज़ादी

अ़ता की गई है।

नहीं झुकता जो सर अल्लाह के अहकाम के आगे
उसे झुकना पड़ेगा नातवाँ अस्नाम के आगे

नई तहज़ीब का अ़जीब फ़ल्सफ़ा

नई तहज़ीब का अ़जीब फ़ल्सफ़ा है कि अगर एक औ़रत अपने लिए और अपने शौहर के लिए अपने बच्चों के लिए खाना तैयार करती है तो यह दक़्यानूसियत और पुराने ख़्याल वाला होने की बात है। अगर वही औ़रत हवाई जहाज़ में एयर होस्टस बनकर सैकड़ों इनसानों की ललचाई हुई निगाहों का निशाना बनकर उनकी ख़िदमत करती है तो इसका नाम आज़ादी और जिद्दत-पसन्दी (नई तहज़ीब का परस्तार होने की बात) है।

अगर औ़रत घर में रहकर अपने माँ-बाप, बहन-भाईयों के लिए घरेलू कामों का इन्तिज़ाम करे तो यह क़ैद और ज़िल्लत है, लेकिन दुकानों पर सेल्ज़-गर्ल बनकर अपनी मुस्कुराहटों से ग्राहकों को मुतवज्जह करे, या दफ़्तरों में अपने अफ़सरों के नाज़ उठाये तो यह आज़ादी और सम्मान की बात है! कैसी ताज्जुब और अफ़सोस की बात है।

अब अगर एक औ़रत घर का काम करती है और अपने शौहर और बच्चों के लिए खाना पकाती है तो उस पर उसके लिए बहुत बड़ा अज्र व सवाब लिखा जाता है, लेकिन आज की उल्टी तहज़ीब का फ़ैसला यह है कि:

औ़रत का घर में बैठना और घर का काम-काज तो पुराने ख़्याल का होना, दक़्यानूसियत और पुराना तरीक़ा है और यह औ़रत को घर की चारदीवारी में क़ैद करना है, लेकिन अगर वही औ़रत हवाई जहाज़ में एयर होस्टस बनकर चार सौ आदमियों को खाना खिलाए और उनके सामने ट्रे सजाकर ले जाए और चार सौ आदमियों की हवसनाक निगाहों का निशाना बने। एक शख़्स उससे कोई ख़िदमत ले रहा है, दूसरा शख़्स

उससे कोई ख़िदमत ले रहा है, और कभी-कभी बिना वजह ख़िदमत लेते हैं। कोई ख़ास ज़रूरत नहीं होती, किसी ने घन्टी बजाकर उसको बुलाया और उससे कहा कि यह तकिया उठाकर दे दो। इस ख़िदमत का नाम आज के नये दौर में आज़ादी है और अगर वही औरत घर में अपने शौहर अपने बच्चों और अपने बहन-भाईयों के लिए यह ख़िदमत अन्जाम दे तो उसका नाम "दक़्यानूसियत" है और यह तरक़्क़ी के ख़िलाफ़ है।

अगर वही औरत होटल में "वेटर" बनी हुई है और दिन-रात लोगों की ख़िदमत अन्जाम दे रही है, खाना खिला रही है, तो "आज़ादी-ए-निस्वाँ" (औरतों की आज़ादी) का एक हिस्सा है। या वह किसी की सैक्रेट्री बन जाए, या वह औरत किसी की स्टेनो-ग्राफ़र बन जाए, यह तो आज़ादी है? और अगर यही औरत घर में रहकर अपने शौहर, अपने बच्चों और माँ-बाप के लिए यह काम करे तो उसको 'दक़्यानूसियत' का नाम दे दिया गया है।

ख़िरद् का नाम जुनूँ रख दिया जुनूँ का ख़िरद्
जो चाहे आपका हुस्ने करिश्मा-साज़ करे

ख़ुलासा यह है ऐ मुसलमान बहनो! इस दुनिया की ज़िन्दगी में बेक़ैद कोई नहीं, कोई अल्लाह तआ़ला की क़ैद में है कोई शैतान की क़ैद में है, कोई नफ़्स की क़ैद में है कोई समाज की क़ैद में। क़ैद से कोई ख़ाली नहीं। यह फ़ैसला आपको करना है, यह हर इनसान का अपना काम है कि वह कौनसी क़ैद चाहता है। मशहूर शायर जोश मलीहाबादी ने कितने प्यारे अश्आ़र कहे थेः

आ़लमे-निस्वाँ पर काली रात जब छा जाएगी
यह तेरे माथे की बिन्दी सुबह को शरमाएगी

औरतें बेचेंगी जब स्टेज पर बा-रक़्स व चंग
अपनी आँखों की लगावट अपने रुख़्सारों का रंग

उनके आगे हर नया मैदान होगा जलवा-गाह
और तेरा स्टेज होगा सिर्फ़ शौहर की निगाह

तरक़्क़ी या तबाही

हमको इससे इनकार नहीं है कि रोटी होटलों में भी खाई जा सकती है, रातें कलबों और सिनेमा-घरों में भी गुज़ारी जा सकती हैं। ख़बरगीरी व तीमारदारी अस्पताल और नर्सिंग होम में भी मिल जाती है। इसी पर क़यास करते हुए यह भी मुम्किन है कि इनामों और तमग़ों का लालच दिलाकर (ज़ैसा कि रूस में किया जाता है) औरतों से बच्चे भी पैदा करवा लिये जाया करें और सरकारी परवरिश-गाहों में किराये की नर्सों के ज़रिए से उन बच्चों की परवरिश भी करा ली जाया करे। लेकिन इसको ख़ूब याद रखिए कि होटल में जीने और अस्पताल में मरने की यह ज़िन्दगी न तो ख़ानदान की ज़िन्दगी का बदल हो सकती है और न तनख़्वाह और भत्ते की ख़ातिर जन्म दिये हुए बच्चों और सरकारी परवरिश-गाहों में किराए पर उगाई नस्लों से कोई क़ौम बन सकती है।

आदमी बनाने और जूता बनाने के काम में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। आप जिस तरह इनामों और उजरत के बल पर कारख़ानों में जूते तैयार करा सकते हैं, अगर वही तरीक़ा आपने आदमी-साज़ी (इनसान को तैयार करने और बनाने) के लिए इख़्तियार भी कर लिया तो आदमियों की शक्ल की एक मख़्लूक़ तो ज़रूर तैयार हो जाएगी लेकिन वह आदमियत के सारे गुणों से बिल्कुल ख़ाली होगी।

जो आदमी बाटा (BATA) के जूतों की तरह तैयार किए जाएँगे वे पाँव में रौंदे जाने के लिए तो अच्छे रहेंगे लेकिन ज़मीन की ख़िलाफ़त (यानी अल्लाह का नेक बन्दा बनने और दूसरों को अच्छा इनसान बनाने की तालीम देने) में उनका कोई हिस्सा हो यह नामुम्किन है''।

(मुसलमान औरत दोराहे पर, मौलाना अमीन अहसन इस्लाही)

शायर अकबर मरहूम क्या ख़ूब फ़रमा गए:

हुए इस क़द्र मुहज़्ज़ब कभी घर का मुँह न देखा
कटी उम्र होटलों में मरे हस्पताल जाकर

यह तो यक़ीनी बात है कि औ़रत आर्थिक हैसियत से लाख आज़ाद हो जाए मगर वह किसी भी सूरत में मर्द की हाकिमियत से बाहर नहीं हो सकती। क्योंकि दुनिया के प्राचीन इतिहास से मौजूदा दौर तक कोई ज़माना ऐसा नहीं गुज़रा है जिसमें औ़रतों ने मर्दों पर ग़लबा पा लिया हो। यह इस बात का तारीख़ी सबूत है कि क़ुदरत ने औ़रत की पेशानी पर जो यह एक क़ानूनी इबारत लिख दी है कि "मर्द औ़रतों पर हाकिम और उनके निगराँ हैं" यह ख़ुदाई फ़ैसला है जो कभी नहीं बदल सकता और जो भी इस हमेशा रहने वाले फ़ैसले को बदलने की कोशिश करेगा उसको मुँह की खानी पड़ेगी। (मुसलमान औ़रत)

शौहर के मिज़ाज को पहचानिये

दूसरी बात यह कि शौहर की इताअ़त करे (हुक्म माने) और शौहर के मिज़ाज की रियायत की पाबन्दी करे। शौहर की हर जायज़ बात को इज़्ज़त से ले, अदब से सुने, जी हाँ कहे और फिर उस पर अ़मल करे। शौहर जब आप से बात कर रहा हो तो हर काम छोड़कर उसकी बात की तरफ़ तवज्जोह देनी चाहिए। बीच में बिल्कुल न बोले यह वैसे भी आदाब के ख़िलाफ़ है। जब बात पूरी हो जाए और कोई बात समझ में न आई हो तो पूछ ले। इस तरह अदब से बात सुने कि यह कुछ दिनों का मेहमान है।

ज़्यादातर ऐसा होता है कि किसी बात को समझने के लिए सुनने वाली बीच में बोल देती है, हालाँकि अगर वह न बोलती तो भी आगे ऐसी बात आती जो उसके सवाल का जवाब बन जाती, और उसके बोलने से बात कभी-कभी बढ़ जाती है।

कई बार बात कहाँ से कहाँ निकल जाती है। कभी-कभी शौहर को या किसी सामने वाले को गुस्से में लाने का सबब भी बन सकती है।

इसलिए अदब यही है कि ख़ामोशी से पूरी बात सुननी चाहिए। बीच में बिल्कुल न बोलना चाहिए। हाँ अगर कोई बात समझ में नहीं आई तो बात पूरी होने के बाद पूछ लें। और सुनकर इताअ़त करना चाहिए। उसकी बात माननी चाहिए।

हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यिब साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने एक वअ़ज़ (दीनी बयान) में फ़रमायाः

औरत के ज़िम्मे इताअ़त वाजिब है। औरत का काम यह है कि पूरी इताअ़त का बर्ताव करे और अपने ख़िलाफ़ भी हो तो सुनने की आदत डाले। यह न हो कि शौहर ने मिज़ाज के ख़िलाफ़ बात कही और उसकी नाक चढ़ी हुई है। एक क्या चार जवाब देने को तैयार। इससे आपसी मुहब्बत ख़त्म हो जाती है। यह हक़ीक़त है कि घर की गाड़ी जब चलती है जब औरत शौहर की फ़रमाँबरदार हो। यानी बात मानने वाली हो। शौहर की हर बात पर हाँ कहने वाली हो और शौहर औरत का ताबेदार बन जाए। मगर वह ताबेदार कब बनेगा? जब औरत इन्तिहाई मुहब्बत और ईसार (अपने पर दूसरे को तरजीह देने) का बर्ताव करेगी। इताअ़त, इताअ़त को खींचती है, सरकशी करेगी तो शौहर के दिल में भी नफ़रत पैदा हो जाएगी।

अगर कोई बीवी यह चाहती है कि मेरा शौहर बिल्कुल मेरे कहने में रहे, मेरा गुलाम बन जाए तो याद रखिए कि गुलाम बनाना गुलाम बनने से होता है। पहले खुद अ़मलन् बाँदी बनकर दिखाए, वह खुद-ब-खुद गुलाम बन जाएगा। इताअ़त से राहत होती है। जितनी उसकी इताअ़त की जाएगी वह भी इसकी इताअ़त करेगा। तो औरत का फ़र्ज़ यह है कि वह चौबीस घन्टे इस फ़िक्र में रहे कि किन चीज़ों से मेरा शौहर नाखुश होता है, किन बातों से किस लिबास से, किस काम से उसको तकलीफ़ पहुँचती है, वे काम मैं बिल्कुल न करूँ, न शौहर के सामने न उसकी ग़ैर-मौजूदगी में।

और जिन चीज़ों से वह खुश होता है उनको इख़्तियार करूँ। जिस

लिबास को पहनने से शौहर खुश होता है, वह पहनूँ, जिस बोल से वह खुश होता है उस बोल को बोलूँ। जिस क़िस्म के खाने से वह खुश होता है वैसा पकाऊँ। जिस जगह जाने से नाखुश होता है वहाँ न जाऊँ। ताकि उसका दिल खुश हो जाए और मैं उसकी आँखों की ठंडक बन जाऊँ। जितना वह राज़ी होगा उतना ही मुझ पर मेहरबान होगा।

और शौहर की यह ज़िम्मेदारी है कि वह यह देखे कि उसकी बीवी की ज़ेहनियत क्या है? किन चीज़ों से यह खुश होती है। वह चीज़ लाकर दे। यह कोई बुरी बात नहीं है कि अपनी बीवी को राज़ी करने के लिए उसकी जायज़ ख़्वाहिशों को पूरा करे। आख़िर उसका भी तो कुछ हक़ है। वह घर में आती है, अपने जज़्बात लेकर आती है, अपने ख़्यालात व एहसासात लेकर आती है। अगर शौहर उन जज़्बात की रियायत नहीं करेगा तो क्या मौहल्ले वाले रियायत करेंगे? यह शौहर का फ़र्ज़ है।

दोनों तरफ़ से जब यह बात होगी तो घर की गाड़ी बेहतर अन्दाज़ में चलेगी। फिर सुकून व मुहब्बत और आपसी ताल्लुक़ पैदा हो जाएगा।

(वअ़ज़ हज़रत क़ारी साहिब)

शौहर की तारीफ़ और उसकी मुहब्बत

तीसरी चीज़ शौहर की मुहब्बत और उसकी तारीफ़ है। शौहर के रिश्तेदारों से दिली मुहब्बत रखे और ज़बान से उनकी तारीफ़ करे। चूँकि जब घर में बहू आती है तो ख़ानदान की नादान औरतें बरतन बजने की आवाज़ों का शिद्दत से इन्तिज़ार करती हैं। अल्लाह तआ़ला ऐसी औरतों को हिदायत दें, कि अब किसी की बेटी घर में रोटी खाएगी तो फुलानी का पता चल जाएगा कि कितने पानी में है?

इसलिए हर जगह ज़बरदस्ती पूछा जाता है: क्या हाल है? बहू से उगलवाया जाता है कैसा पाया? और लड़की की नादान माँ खुद बच्ची को पहले ही दिन से चुग़ली, ग़ीबत, ऐब ढूँढने की आ़दत डलवा देती है और नई दुल्हन से टटोल कर और कुरेद कर अन्दर की बातें निकलवाई

जाती हैं। ख़ुरच-ख़ुरच कर सास के घर के हालात और उसकी बुराईयाँ पूछी जाती हैं?

जब यह लड़की नन्हियाल वालों के घर जाती है और वहाँ सास के घर का नक़्शा इतना भद्दा और बुरा बनाकर पेश करती है और सास, नन्द और भावज की एक-एक कमी, कोताही, नादानी को बड़ी बुराईयाँ बनाकर पेश करती है। और पुरानी औरतों ने तो इन बातों को नमक-मिर्च लगाकर चार बातें अपनी तरफ़ से बनाकर पेश करने में पी. एच. डी. टेक्सास यूनिवर्सिटी से या आक्सफ़ोर्ड से इसकी ख़ास ट्रेनिंग हासिल की होती है और अपने इस फ़न में ख़ास माहिर और मश्शाक़ होती हैं, और फिर उस लड़की की सास को किसी न किसी तरह बतलाती हैं। ऐसी औरतें ढूँढती हैं जिनको कहने से लड़की की सास तक बात पहुँच जाए ताकि आग पर पेट्रोल का काम दें कि तुम्हारी फुलानी बहू ने यह बात तुम्हारे घर के बारे में कही।

फिर इन्ही बातों पर झगड़े, लड़ाई, तल्ख़ियाँ, कड़वाहट, दुश्मनियाँ, दूरियाँ पैदा होकर तलाक़ व अलैहदगी पर ख़त्म होती हैं। या उम्र भर के लिए मियाँ-बीवी में दुश्मनी और मुख़ालफ़त पैदा हो जाती है। क्योंकि फिर सास बेटे को बताती है कि तेरी बीवी ने हमारे घर के बारे में यह कहा, यह कहा, फुलाँ गवाह है, फुलाँ ने सुना है। और फुलाँ औरत ने यह बात कही है जो इतनी नेक है कि झूठ बोल ही नहीं सकती, बिल्कुल तुम्हारी बीवी ने यह कहा होगा।

अब शौहर के दिल में बीवी के ख़िलाफ़ जज़्बात भड़के या माँ के ख़िलाफ़, और दोनो ज़हरे क़ातिल (घातक) हैं। इसलिए बीवी को चाहिए कि शौहर की, उसके घर की, उसके माँ-बाप की, उसके सारे रिश्तेदारों की ख़ूब जायज़ तारीफ़ करे और उसकी ग़ैर-मौजूदगी में भी जब रिश्तेदारों के घर में जाए तो भी किसी के पूछने पर बुराई को बिल्कुल न बयान करे। जितनी हो सके सच्ची तारीफ़ को बयान करे। इससे मियाँ-बीवी में भी मुहब्बत पैदा होगी। सास को जब पता चलेगा, नन्द जब

सुनेगी कि हमारे घर की बाहर तारीफ़ें हो रही हैं, हमारी नाक ऊँची हो रही है, भाभी के आने से हमारी इज़्ज़त बढ़ी है तो वे खुश होकर भाभी और बहू के लिए भी अपने दिल में अच्छे, नेक और खुश-बख़्ती के जज़्बात को जगह देंगी। और अपने भाई और बेटे से कहेंगी माशा-अल्लाह, अल्लाह तआ़ला ने तुमको बहुत अच्छी बीवी दी है। और फिर औरतें जब तारीफ़ करने पर आती हैं तो आसमानों तक पहुँचा देती हैं और किसी की बुराई करती हैं तो उसे छुपने के लिए ज़मीन में भी जगह नहीं देतीं। इसलिए सास और शौहर के भेदों को खोलना उनकी बुराईयाँ बयान करना, ग़ीबत करना सख़्त गुनाह में दाख़िल है। और ये सब बातें घर के नाम व नमूद, ख़ानदान की इज़्ज़त और नेक बीवी के बुलन्द अख़्लाक़ के ख़िलाफ़ हैं।

अब शौहर जब माँ और बहन से अपनी बीवी की तारीफ़ सुनेगा तो ज़रूर उस शौहर के दिल में उस बीवी के लिए मुहब्बत, उलफ़त और अपनाईयत पैदा होगी। और फिर मियाँ-बीवी दोनों खुश व खुर्रम रहकर इस दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत की तैयारी में गुज़ारेंगे और नई नस्ल को दुनिया भर में दीन फैलाने वाले इस्लामी सरफ़रोश बनाने की तैयारी करने में लग जाएँगे और खुशी के पुरसुकून व शानदार लहलहाते हुए साय में मियाँ-बीवी इत्मीनान और सुकून से इज़्ज़त व खुशहाली के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे।

यह शौहर की तारीफ़ और उसके घर की ख़ूबियाँ बयान करने का एक अहम फ़ायदा है, लेकिन अगर मियाँ-बीवी अलग रहते हों, सास, नन्द, देवरानी, जेठानी साथ न रहती हों, इसके बावजूद शौहर की तारीफ़ अपनी मुहब्बत का इज़हार करना, दिल की गहराईयों से शौहर को अपना महबूब समझना। इसका दूसरा फ़ायदा यह है कि ऐसे मियाँ-बीवी जिन में मुहब्बत तबई तौर से न हो या मुहब्बत कम हो इस तरह बर्ताव करने से मुहब्बत बढ़ जाती है और फिर मियाँ-बीवी आपस में घुलमिल जाते हैं। इसी लिए इस्लाम में बीवी को यही तालीम दी गई है

कि बीवी तकल्लुफ़ से काम लेकर भी अपनी मुहब्बत शौहर को दिखलाए कि "मुझे आप से बहुत मुहब्बत है" मेरी निगाह में आप ही हैं, आप ही के लिए मैंने घर, कुनबा, ख़ानदान, माँ-बाप, अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार, वतन, शहर, मौहल्ला और मुल्क छोड़ा है। आप ही मेरे लिए सब कुछ हैं, आप ही मेरी ज़िन्दगी की बहार मेरे बाग़ की ज़ीनत हैं। आप ही मेरे लिए मूनिस व ग़मख़्वार हैं, आपकी ग़ैर-मौजूदगी में मेरी ज़िन्दगी बिल्कुल सूनी-सूनी और बेमज़ा सी होती है। आपके बिना मेरी ज़िन्दगी वीरान व बेमज़ा है। मेरी ज़िन्दगी की महफ़िल की शमा आप ही हैं। मेरी दुनिया की सारी रंगीनियाँ और दिलचस्पियाँ आप ही के दम से हैं। अब आप जो कहेंगे वैसे ही मैं करूँगी। जिस तरह कहेंगे उसी तरह करूँगी।

इसी मुहब्बत को हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा इस तरह बयान फ़रमाती थीं। यानी जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर तशरीफ़ लाते तो हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ये दो शे'र मुहब्बत भरे लहजे में फ़रमाती थीं।

لنا شمس و للآفاق شمس وشمسی خیر من شمس السماء

فان الشمس تطلع بعد الفجر و شمسی تطلع بعد العشاء

तर्जुमा: एक मेरा सूरज है और एक आसमान का सूरज है। और मेरा सूरज आसमान वाले सूरज से बहुत ज़्यादा बेहतर है। आसमान का सूरज तो फ़ज्र के बाद निकलता है और मेरा सूरज इशा के बाद निकलता है।

आप ग़ौर कीजिए! शौहर हर रात को जब ऐसी बीवी के पास आए तो क्यों उसकी सेहत में, उसकी जवानी में, उसकी ताज़गी में, उसकी ताक़त में, उसकी मुहब्बत में, उसकी उलफ़त में इज़ाफ़ा न हो। घर में ऐसी बीवी के होते हुए शौहर को कैसे कोई मानसिक, रूहानी, जिस्मानी रोग छू सकता है? बीवी की मीठी ज़बान से निकले हुए चन्द फूल कौसर व तस्नीम (जन्नत की नहरों के नाम) से धुले हुए चन्द बोल बुढ़ापे में

जवानी का मज़ा दिलवा दें, बीमारी में सेहत का यक़ीन दिलवा दें, परेशानियों की फ़िज़ा में ख़ुशियों की लहर दौड़ा दें, कमज़ोरी और बीमारी की हालत में अल्लाह तआला के हुक्म से सूखी रोटी गाव-ज़बान का असर पैदा कर दे। और फिर ऐसी बीवी के लिए शौहर के दिल में बहुत बड़ी जगह होती है।

आप ग़ौर कीजिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों में सबसे ज़्यादा आपकी चहेती बीवी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। क्यों थीं? इसके लिए किताब "सीरते आयशा" (लिखित मौलाना सैयद सुलेमान नदवी रह०) का अध्ययन कीजिए। उन गुणों और ख़ूबियों को अपने अन्दर पैदा कीजिए जो उनमें थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुनिया से पर्दा फ़रमा रहे थे तो ऐन उस वक़्त आपका सर मुबारक किसकी गोद में था? ऐन अल्लाह से मिलने के वक़्त किस ख़ुशक़िस्मत का नसीब था जो नबी पाक के लिए सहारे और तकिये का काम दे? तारीख़ के अनमिट पृष्ठों से गवाही लीजिए कि वह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की मुबारक ज़ात थी जिसने शौहर के दिल में ऐसी जगह बनाई कि आने वाली मुसलमान औरतें उनकी इत्तिबा (पैरवी) करें तो आज भी मुसलमान नेक शौहर नेक बीवियों पर ऐसे ही मेहरबान हो सकते हैं। और फिर बीवियाँ देखेंगी कि उनके शौहर कैसे चाहने वाले, उनकी हर जायज़ तमन्ना को पूरा करने वाले, उनकी ख़ुशी और ग़मी में साथ देने वाले, उनके मश्विरे और उनकी सोच से काम करने वाले बनते हैं।

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कैसी मुहब्बत थी इसका अन्दाज़ा आप इस शे'र से भी लगा सकती हैं। यह सिर्फ़ रस्मी ज़ाहिरी अलफ़ाज़ नहीं बल्कि दिली मुहब्बत और सच्ची अक़ीदत के जज़्बात की तर्जुमानी के लिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इन अलफ़ाज़ को चुना, जिनसे एक मामूली इशारा ही हो सकता है न कि मुकम्मल इज़हारे मुहब्बत। फ़रमाती हैं:

لوامی زلیخا لو رأین جبینه　　لاثرن القطع بالقلوب علی الید

तर्जुमाः अगर जुलैख़ा को मलामत करने वाली औरतें आप सल्ल० के चेहरा-ए-अनवर को देख लेतीं तो बजाय हाथों को काटने के अपने दिलों को काट लेतीं।

यह एक सच्ची आशिक़ बीवी ही कह सकती है, जिसके अन्दर शौहर की मुहब्बत कूट-कूटकर भरी हुई हो, उसी को ये अलफ़ाज़ सिखलाए जाते हैं, उसी के दिल में डाले जाते हैं।

यह भी शौहर की मुहब्बत का एक हिस्सा है कि शौहर जब ख़ुश हो तो आप कोशिश करें कि उसकी ख़ुशी में आप बढ़ोत्तरी करने का सबब बन सकें। जब वह कोई दिल्लगी या मुहब्बत की बात करे तो आप भी उसका जवाब प्यार व मुहब्बत के फूलों ही से दीजिए। अगर वह ग़मगीन और बेचैन हो तो आप उसके ग़म को हल्का करने की कोशिश कीजिए और ख़ुद भी उसके ग़म में साथ दीजिये।

देखिए एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हंसी-मज़ाक़ के तौर पर औरतों के बारे में एक शे'र कहा किः

ان النساء شیاطین خلقن لنا　　نعوذ باللہ من شر الشیاطین

तर्जुमाः यक़ीनन औरतें तो हमारे लिए गोया शैतान की तरह पैदा की गई हैं कि ये भी हमको गुमराह करती हैं और हम अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त चाहते हैं शयातीन के शर और बुराई से।

तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इसी तरह हंसी में कैसा प्यारा जवाब दिया।

ان النساء ریاحینُ خُلِقنَ لکم　　وکلُّکم یَشتَمِی شَیْد الرَّیاحین

तर्जुमाः यक़ीनन औरतें तो (महकते हुए) ख़ुशबूदार फूल हैं जो तुम्हारे लिए पैदा की गई हैं और तुम में से हर शख़्स फूलों की तरफ़ माईल होता है, उसकी ख़ुशबू सूँघने की तमन्ना होती है।

मज़ा तो इसी में है कि आदमी दिनभर का थका हुआ आए तो घर

वालों की बातों से जी ख़ुश करे, वे उसको राहत दें, यह उनकी राहत का ख़्याल करे। जिन लोगों का रहन-सहन घर वालों के साथ अच्छा है वाक़ई उनको दुनिया ही में जन्नत नसीब है।

इसी तरह हज़रत आ़तिका (यह एक सहाबी औ़रत हैं) रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पहले शौहर अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु तायफ़ में शहीद हुए तो उन्होंने एक दर्द-भरा मर्सिया लिखा जिसका एक शे'र यह है:

فاليت لا تنفك عيني حزينة ولا ينفك جسدى اغبرا

तर्जुमाः मैंने क़सम खाई है कि तेरे ग़म में मेरी आँख हमेशा भीगी और जिस्म हमेशा गुबार-आलूद रहेगा (यानी बनाव-सिंगार न करूँगी)।

सहाबी औ़रतों (अल्लाह उनसे राज़ी हो) को अपने शौहरों से मुहब्बत बेपनाह होती थी। इस शे'र से आप ख़ुद ही अन्दाज़ा लगा लीजिए दोबारा उसके तर्जुमे पर ग़ौर कीजिए। कभी आपने अपने शौहर की मुहब्बत में ऐसा शे'र लिखा? कभी कहा, कभी मुहब्बत से महकते हुए अलफ़ाज़ का गुलदस्ता उनकी ख़िदमत में पेश किया?

चूँकि शौहर से मुहब्बत करना यह भी दीन का हिस्सा है और बड़ा हिस्सा है। अल्लाह की रिज़ा का ज़रिया है, दीन व दुनिया की कामयाबी और सुर्ख़रूई का ज़ख़ीरा है। समाज के लिए अमन का गहवारा है, नई नस्ल और नये होनहारों, नौनिहालों के लिए ख़ुशी और चैन व सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़रिया है, सारे घरेलू झगड़ों से बचने का यही एक रास्ता है।

इसी तरह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बेटे की शाकिरा बहू का वाक़िआ़ दोबारा पढ़िए कि जब ससुर ने बेटे के घर का हाल पूछा तो अल्लाह का शुक्र अदा किया जिससे शौहर की और शौहर के घर की तारीफ़ भी हो गई। इससे अल्लाह तआ़ला भी ख़ुश हुए और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम भी ख़ुश हुए और अल्लाह के ख़लील और नबी ने दुआ़ दी।

अल्लाह तआ़ला को यह अ़मल इतना पसन्द आया और इतने खुश हुए कि नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाईश और उनका दुनिया में आना और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद में होना इसी शाकिरा (शुक्र करने वाली) बीवी की मुबारक नस्ल से वजूद में आना मुक़द्दर हुआ और उसी से ख़ानदाने बनू हाशिम और उसी ख़ानदान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाईश हुई। तो अल्लाह तआ़ला के आख़िरी और लाडले नबी, सारे नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दधियाल में से किसी दर्जे में दादी बनने का शर्फ़ व सम्मान उसी शाकिरा औ़रत को हासिल हुआ। (सीरतुन्नबी- अ़ल्लामा शिब्ली नोमानी)

इसलिए मुसलमान बहनों को दुल्हनों को चाहिए कि पहले ही दिन से शौहर के घर की चटनी-रोटी पर भी अल्लाह तआ़ला का शुक्र करें। शौहर की और उसके घर की बुराई बिल्कुल न करें बल्कि तारीफ़ करके अल्लाह तआ़ला का शुक्र करें तो उसकी बरकत से शौहर भी आप पर मेहरबान हो जाएगा और आपकी नस्ल में भी ऐसी औलाद पैदा होगी जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीन का काम करेगी। अल्लाह के कलिमे को सारे कलिमों पर और इस्लाम के झण्डे को सारे झण्डों पर सारे आ़लम में ऊँचा करके अल्लाह तआ़ला के हुक्मों और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक तरीक़ों को दुनिया में फैलाने, इनसानियत में आ़म करने के लिए और उसको रिवाज में डालने के लिए अपनी ज़िन्दगियाँ वक़्फ़ कर देगी। और फिर ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु, अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु, उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, आ़लमगीर, सलाहुद्दीन अय्यूबी, शाह इस्माईल शहीद, मौलाना मुहम्मद इलियास, मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी की याद ताज़ा कर देगी।

अल्लाह आज भी मुसलमान माओं की गोदों में ऐसे हीरे और उनकी टहनियों पर ऐसे फूल पैदा करे जिनकी ख़ूशबू सारे आ़लम के इनसानों के दिलों को ईमान की महक से मुअ़त्तर (सुगंधित) कर दे और

दुनिया भर के इनसानों की ज़िन्दगियों को कुरआन करीम की रोशनी से रोशन करे। आमीन या रब्बल्-आलमीन।

अल्लाह रहम फ़रमाए ख़ालिदा ख़ानम तुर्किया पर कि अपनी बहनों को यह पैग़ाम देकर गईः

अगर दीने हुदा की बेटियों में है शुमार अपना
रिवायाते अस्लाफ़ की लाज रखना वक़ार अपना
हमारा पर्दा क्या, हम क्या, हमार ज़ोहद व तक़्वा क्या
न पूछो कर गईं हैं मोमिनाते क़र्ने ऊला क्या
वह शौहर की मुहब्बत और वह औलाद की ख़िदमत
वह नज़्मे-ख़ानादारी, वह अल्लाह की इताअत
वह पर्दा वह हयादारी वह इफ़्फ़त वह वफ़ादारी
"फ़ला तख़्ज़अ्-न" की इस्मत जिहादों की वह तैयारी

मियाँ-बीवी के ताल्लुकात को मधुर बनाने के लिए सही क़ायदा

मियाँ-बीवी के ताल्लुकात को मधुर बनाने के लिए सही क़ायदा वही है जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस औरत से कहा था जिसने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त दी थी और अपने शौहर के बारे में खुलकर कहा था कि "मैं उससे तबई मुहब्बत नहीं पाती हूँ" यानी मेरे दिल में उसकी तबई मुहब्बत नहीं है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुन कर उस औरत से फ़रमायाः अगर औरतों में से किसी औरत को अपने शौहर से तबई मुहब्बत न हो तो उस औरत को चाहिए कि यह बात अपने शौहर से न बयान करे (बल्कि तबीयत पर जबर करके मुहब्बत का इज़हार करे, इससे मुहब्बत नहीं भी होगी तो हो जाएगी)। क्योंकि बहुत कम ऐसे घराने हैं जिनकी बुनियाद तबई मुहब्बत पर होती है। लोग आपसी

ज़िन्दगी ख़ानदान और इस्लाम पर बसर किया करें, यानी मियाँ-बीवी में हर एक इस बात को ज़रूरी पकड़े कि एक दूसरे के रुतबे और मक़ाम का लिहाज़ करे। उन पर इस्लाम ने मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ात के सिलसिले में जो ज़रूरी ज़िम्मेदारियाँ, आदाब और फ़राईज़ लागू किए हैं उनको निभाने और उन पर अ़मल करने की कोशिश करे।

बस इसी तरीक़े से ज़िन्दगी की खुशगवारी (मधुरता) नसीब हो सकती है। चूँकि बहुत कम खुशक़िस्मत और नेकबख़्त मियाँ-बीवी ऐसे भी होते हैं जिनके तबई मिज़ाज में यकसानियत, दिली मुवाफ़क़त, मुहब्बत व उलफ़त का रिश्ता होता है, जिनमें बिना किसी कोशिश व तदबीर के मुहब्बत बढ़ती और चढ़ती जाती है, वरना आ़म रिश्तों के लिए शरीअ़त ने ऐसी तदबीरें बतलाई हैं जिससे मियाँ-बीवी की ज़िन्दगी खुशगवार (अच्छी) हो सकती है। और धीरे-धीरे एक-दूसरे का अदब व एहतिराम करते हुए माफ़ी और दरगुज़र का उसूल अपनाते हुए बार-बार मुहब्बत का इज़हार करते हुए पुरानी बातें भुलाकर नया अ़ज़्म व पुख़्ता इरादा लेकर चलते हुए एक दिन वह आता है कि ये दोनों मियाँ-बीवी एक जान दो क़ालिब, एक बातिन दो ज़ाहिर, एक मिज़ाज दो रूहें, एक बीमारी दो इलाज चाहने वाले, एक परेशानी दो दुआ़ माँगने वाले, एक दर्द दो बरदाश्त करने वाले, एक फ़िक्र दो सोचने वाले बन जाते हैं।

उनमें से एक अहम उसूल और क़ायदा यह भी है जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान फ़रमाया था, जिसको नक़ल करने के बाद अ़ल्लामा रशीद रज़ा मिस्री अपनी किताब "निदाउल् हसनुल्लतीफ़" पेज 111 में लिखते हैं कि "मियाँ-बीवी में से हर एक को चाहिए कि दिल में जितनी मुहब्बत पाता है उससे ज़्यादा का इज़हार करे।"

इस तरह धीरे-धीरे मुहब्बत दिलों में बैठ जाएगी और फिर आपसी ज़िन्दगी इत्मीनान और सुकून के शानदार लहलहाते हुए साये में गुज़ारते हुए आख़िरत की तैयारी करें, और ज़िन्दगी मुसर्रत व खुशी से गुज़ारें।

शौहर की सच्ची मुहब्बत की पहचान

शौहर की सच्ची मुहब्बत अपनाने के लिए और शौहर को अपने ऊपर मेहरबान करने के लिए यह भी एक बात बहुत ही ज़रूरी है कि अगर मियाँ-बीवी में किसी बात पर नाराज़गी, ग़मी, लड़ाई, गर्मा-गर्मी हो जाए तो नेक बीवी को चाहिए कि फ़ौरन माफ़ी माँग ले, जितना शौहर के दिल में ग़म व गुस्सा के मैल व गन्दगी जमी है उतना ही खुशी और माफ़ी के सर्फ़ और साबुन से उस ग़म के मैल को धोने की कोशिश करे।

नेक मुसलमान बीवी की मुसलमानी शान का तक़ाज़ा यह है कि जब तक शौहर को राज़ी न कर ले खुश न कर ले, तब तक चैन से न बैठे। इसलिए कि दो दिलों में अन-बन खट-पट, मैल-कुचैल अल्लाह तआला की रहमत को दूर कर देता है, मुसीबतों और बलाओं को लाता है। ऐसी तरफ़ से इनसान पर परेशानियाँ आती हैं कि उसका वहम व गुमान नहीं होता। लिहाज़ा किसी भी मुसलमान भाई-बहन के बारे में कभी भी दिल में कोई मैल नहीं रखना चाहिए। इसलिए कुरआन करीम में यह दुआ सिखलाई गई।

وَلَا تَجْعَلْ فِىْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا اِنَّكَ رَؤُوْفٌ رَّحِيْمٌ.

(پ۲۸ سورۃ حشر)

तर्जुमाः और हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न होने दीजिए ऐ हमारे रब आप बड़े शफ़ीक़ व रहीम हैं।

और जन्नत की नेमतों में से एक बड़ी नेमत यह भी होगी कि जन्नतियों के दिलों में से कीना साफ़ कर दिया जाएगा, अगरचे दुनिया में किसी बात पर आपस में रन्जिश हो गई लेकिन जन्नत में दिल साफ़ कर दिये जाएँगे आपस में भाई-भाई होकर रहेंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ.

तर्जुमाः और (दुनिया में तबई तक़ाज़े से) उनके दिलों में जो कीना

था हम वह सब (उनके दिलों से जन्नत में दाख़िल होने के पहले ही) दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह (उलफ़त व मुहब्बत से) रहेंगे, तख़्तों पर आमने सामने बैठा करेंगे। (खुलासा तफ़सीर मआरिफुल कुरआन जिल्द 5 पेज 301 सूरः हिज्र पारः 14 आयत 47)

और ख़ास तौर से मियाँ-बीवी के दिल तो हमेशा आपस में आईने की तरह साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ होने चाहिएँ। दोनों में से हर एक अपने लिए मुहब्बत दूसरे की खिलती हुई पेशानी पर बिना रोशनी के रातों की अन्धेरियों में और दिन के उजालों में, जवानी में, सेहत में, बीमारी में और बुढ़ापे में, ग़र्ज़ यह कि उम्र की हर मन्ज़िल में यह मुहब्बत देख ले।

इसलिए कि इन दो में रन्जिश सिर्फ़ दो में नहीं बल्कि सौ में रन्जिश होने का सबब बन सकती है। इन दो की लड़ाई सौ की लड़ाई बन सकती है। दोनों ख़ानदानों में लड़ाई उठ सकती है। पूरे ख़ानदान की एकता बिखर सकती है, नई नस्ल तबाही के किनारे पहुँच सकती है।

इसलिए मामूली सी बात भी हो जाए तो दिल में नहीं रखनी चाहिए फ़ौरन एक दूसरे से माफ़ी-तलाफ़ी कर लें। दिल में रखकर घुटना बहुत ही बुरी बात है, उसका मीठा खुमार दुश्मनी को ज़हर की तरह फैलाता है और नेक नरम दिल बीवी को चाहिए कि पहले माफ़ी माँग ले, अल्लाह के लिए खुद को नीचा कर ले, चाहे अपनी ग़लती न हो, फिर भी माफ़ी माँग ले और शौहर को भी चाहिए कि वह फ़ौरन माफ़ कर दे पिछली बातों को भूल जाए।

और अगर बीवी ने माज़िरत नहीं की (अपनी ग़लती नहीं मानी) तो शौहर को चाहिए कि माफ़ी माँग ले या माफ़ कर दे, इस तरह दिलों का मैल-कुचैल साफ़ कर लेना और मुहब्बत से रहना माफ़ कर देना अल्लाह तआ़ला को बहुत ही पसन्द है। हदीस शरीफ़ में ऐसे लोगों के लिए खुशख़बरी है कि ये जन्नती हैं।

जन्नती बीवी

इमाम तबरानी हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

الا اخبركم برجالكم من اهل الجنة ؟ قلنا بلٰى يا رسول اللّٰه، قال النبى فى الجنة والصديق فى الجنة والشهيد فى الجنة والرجل يزور اخاه فى ناحية المصر لا يزوره الا اللّٰه فى الجنة ......

الا اخبركم بنسائكم فى الجنة ؟ قلنا بلى يا رسول اللّٰه قال الودود الولود اذا غضبت أو أسيئ اِليها أو غضب زوجها قالت هٰذه يدى فى يدك لا أكتحل بغمض حتى ترضى. (الترغيب والترهيب ۱۲۵/۴)

तर्जुमाः क्या मैं तुम्हें जन्नत में जाने वाले मर्द बतलाऊँ? हमने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल ज़रूर बतलाईए। फरमायाः नबी जन्नत में होगा, सिद्दीक़ जन्नत में होगा, वह शख़्स जन्नत में होगा जो शहर के एक किनारे से दूसरे किनारे अपने भाई से सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए मिलने जाए।

क्या मैं तुम्हें यह न बतलाऊँ कि तुम्हारी कौनसी औरतें जन्नत में होंगी? हमने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल ज़रूर बतलाईये। आपने फ़रमायाः वह औरत जो शौहर से ख़ूब मुहब्बत करने वाली हो और ख़ूब बच्चे जनने वाली हो। वह जब नाराज़ हो जाए या उसके साथ ज़्यादती की जाए या उसका शौहर नाराज़ हो जाए तो वह यह कहेः

ऐ मेरे सर के ताज! यह मेरा हाथ आपके हाथ में है। मैं अपनी आँखों में नींद का सुर्मा नहीं लगाऊँगी जब तक आप मुझसे राज़ी और खुश न हो जाएँगे। मैं उस वक़्त तक चैन से नहीं बैठ सकती।

कितनी बड़ी फ़ज़ीलत की बात है। औरत के लिए जन्नत हासिल

करना कितना आसान है और शौहर को राज़ी करने के लिए बेचैन हो जाना और उसको ख़ुश करने की फ़िक्र करना यह औरत के लिए जन्नत में जाने का सबब है। काश औरतें इसकी क़द्र करें।

ग़ौर कीजिए! हदीस शरीफ़ के अलफ़ाज़ में "मैं अपनी आँखों में नींद का सुर्मा नहीं लगाऊँगी जब तक आप मुझसे राज़ी न हो जाएँ" अगर मियाँ-बीवी में किसी बात पर गर्मा-गर्मी हो जाए या किसी बात पर शौहर नाराज़ हो जाए तो जन्नती बीवी की सिफ़त यह होती है कि उसकी नींद उड़ जाती है, उसका खाना पीना बेमज़ा हो जाता है, उसको किसी चीज़ में मज़ा ही नहीं आता, वह बेचैन हो जाती है, माफ़ी माँग कर, हाथ-पाँवा जोड़कर, ख़ुशामद करके जब तक शौहर से माफ़ न करा ले और शौहर उससे ख़ुश न हो जाए तब तक उस बीवी को चैन ही नहीं आता।

अच्छा खाना पकाना

चौथी बात शौहर के दिल में बस जाने के लिए बीवी और दुल्हन के लिए यह भी ज़रूरी है कि खाना पकाने और दस्तरख़्वान बिछाने और उस पर सलीक़े से चीज़ें रखने का ढंग सीखे, कि यह भी बहुत ही ज़रूरी है और घरेलू कामों के इन्तिज़ाम के लिए बहुत ही ज़रूरी चीज़ है। चूँकि खाना मुँह के ज़रिये पेट में और उसका असर दिल व दिमाग़ और जिस्म के हर हिस्से और किनारे तक पहुँचता है, जितनी उम्दगी, अच्छे अन्दाज़, सफ़ाई सुथराई, तरीक़े और सलीक़े से पकाया जाएगा उतना ही शौहर के दिल में उस बीवी की मुहब्बत, उलफ़त, इज़्ज़त और सम्मान, हुस्ने तदबीर व अक़्लमन्दी और समझदारी का सिक्का बैठ जाएगा और उस बीवी की न मिटने वाली मुहब्बत की मोहर उसके दिल व दिमाग़ पर लग जाएगी।

सलीक़े और अच्छे ढंग और तदबीर से सुबह की सिर्फ़ चाय-रोटी दोपहर के दाल-चावल, रात की कढ़ी खिचड़ी भी सुबह के पाय-नहारी,

दोपहर की बिरयानी क़ोरमा और रात के तिक्का और कबाब से कई गुना ज़्यादा मज़ेदार और सेहतमन्द होने के साथ-साथ मुहब्बत और ताल्लुक़ बढ़ाने वाले भी हो सकते हैं। लेकिन बीवी को कोशिश करके माँ के घर में ही इन चीज़ों में मुकम्मल महारत हासिल कर लेनी चाहिए कि यह बहुत ही आसान और अच्छा तरीक़ा शौहर के दिल तक पहुँचने का है। जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से घर में खाने की चीज़ें दी हैं उन्हीं को तरीक़े और सलीक़े से अदल-बदल कर पकाया जाए तो हर रोज़ नई लज़्ज़त सब्ज़ी रोटी और कढ़ी-खिचड़ी ही में मिल सकती है।

काश कि औरतें इस गुण को इस राज़ को समझने वाली बन जाएँ कि अगर हमने अच्छे से अच्छा खाना बनाकर दिया तो शौहर हमारी बहुत सारी चाहतें और तमन्नाएँ बिना कहे और बिना माँगे ही पूरी कर देगा, बल्कि वह वक़्त आएगा कि शौहर ख़ुद पूछने पर मजबूर होगाः कहो जाने-मन! तुम्हारे लिए क्या लाऊँ? दिल के किस गोशे से तुमको दुआ़ दूँ? तुम्हारे लिए रात को उठकर अल्लाह से क्या माँगूँ? कहो क्या चाहती हो? और जब आप अच्छा खाना अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए पकाएँगी तो आपको तीन तरीक़े से सवाब मिलेगाः-

1. अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने का सवाब।

2. शौहर को ख़ुश करने का सवाब।

3. शौहर की दुआ़ का सवाब। यानी शौहर, सास, ससुर औलाद जब ये नेमतें खाएँगे और उसको लज़ीज़ और मज़ेदार पाएँगे तो दिल से अल्लाह तआ़ला का ख़ूब शुक्र अदा करेंगे, और उस शुक्र अदा करवाने का ज़रिया आप बनी होंगी तो आपको भी पूरा-पूरा अज्र व सवाब मिलेगा और अल्लाह तआ़ला को शुक्र बहुत ही पसन्द है।

इसी तरह दस्तरख़्वान बिछाना यह भी समझदार बीवी का एक कमाल है। मामूली प्लास्टिक का ही दस्तरख़्वान क्यों न हो या खद्दर और सूती कपड़े का ही क्यों न हो, लेकिन साफ़-सुथरा दस्तरख़्वान उस पर चाहे प्लास्टिक ही के गिलास क्यों न हों लेकिन साफ़ इतने कि उसमें

साफ़ और सुथरा पानी जब पड़े तो हर देखने वाला इस सफ़ाई को देखकर पीने पर मजबूर हो जाए और पीते ही उसकी ज़बान से यह दुआ निकले:

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ سَقَانَا مَاءً بَارِدًا عَذْبًا فُرَاتًا وَّلَمْ یَجْعَلْہُ بِذُنُوْبِنَا مِلْحًا اُجَاجًا۔

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी सक़ाना माअन् बारिदन् अ़ज़्बन् फ़ुरातन् व लम् यज्अल्हु बिज़ुनूबिना मिल्हन् उजाजन्।

तर्जुमाः सारी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमको पानी पिलाया ठंडा, मीठा, खुशगवार और हमारे गुनाहों की नहूसत की वजह से उसको नमकीन और खारा नहीं बनाया।

रकाबियाँ साफ़ हों, सब्ज़ी आदि ककड़ी या प्याज़, किसी क़िस्म का सलाद हो और ढंग से बहुत ही उम्दगी के साथ रखा जाए कि देखने वाले का दिल बाग़-बाग़ हो जाए। पेशानियों की सलवटें सीधी हो जाएँ, दिमाग़ का टेनशन सुकून में बदल जाए। जिस तरह खाने बदल-बदल कर पकाए जाते हैं इसी तरह कभी दोपहर या रात के खाने पर साफ़ स्वच्छ (पानी के) जग में शर्बत मिला दिया जाए जिसके घर में जितनी गुन्जाईश अल्लाह तआ़ला ने दी है उसी के मुताबिक़ किसी फल का जूस बनाकर पेश कर दिया जाए या सादा शर्बत कभी-कभी दस्तरख़्वान पर रख दिया जाए। सफ़ेद जग में रंगीन ज़ायक़ेदार जूस या कोई रूह-अफ्ज़ा का शर्बत जो नेक सीरत बीवी ने रखा हो, उससे भरा हुआ एक गिलास शौहर की आँखों के नूर को दिल व दिमाग़ के सुरूर को कई गुना बढ़ा देगा।

हकीम हज़रात कहते हैं कि सुबह-सुबह हरी-भरी चीज़ बाग़, पेड़, फूल आदि के मनाज़िर (दृश्य) देखने से आँखों की बीनाई और रोशनी में बढ़ोत्री ज़रूर होती है। लेकिन मुस्कुराहट बिखेरनी वाली शीरीं (मीठी) ज़बान पेशानी की सलवटों को खुशियों के रंगों से भरने वाली नेक-सीरत

बीवी का किरदार, उसके अख़्लाक़ उसके मुँह से निकले हुए दो फूल अमृत से धुले हुए दो बोल आँखों की बीनाई, दिल की दानाई और दिमाग़ की याददाश्त में कई गुना ज़्यादा बढ़ोत्तरी कर सकते हैं।

इसके साथ-साथ हकीमों और डाक्टरों का कहना है कि दस्तरख़्वान और खाने की जगह जितनी साफ़-सुथरी और खुली होगी उतना ही ग़िज़ा के हज़्म होने में सहूलियत होगी और अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उस ग़िज़ा के खाने का पूरा-पूरा फ़ायदा भी होगा। इसलिए दस्तरख़्वान पर गुलाब व चंबेली वाला फूलों का गुलदस्ता रखना और खाने का कमरा हवादार रखना मुफ़ीद होता है।

लेकिन जिसको अल्लाह तआ़ला ने असली गुलाब व चंबेली बेटे और बेटी की शक्ल में दिए हों चहचहाते हुए मैना व तोते 'हफ़्सा' और 'फ़रहाना' 'मुहम्मद' या 'अ़ब्दुल्लाह' के रूप में दिए हों उनको बनावटी गुलाब और मोतिया की ज़रूरत नहीं।

यह असली और हक़ीक़ी गुलाब व चंबेली की सफ़ाई व साथ क़ुदरत की तरफ़ से उसके पेट के हज़्म के सिस्टम को सही कर देंगी और उन नन्हे से मासूम चेहरों की मुस्कुराहट अदरक और पौदीने से भी ज़्यादा पेट के लिए काम करेगी। लेकिन आज कम-समझी, कम-ज़र्फ़ी, कम-क़िस्मती, कम-अ़क़्ली, कम-तदबीरी की वजह से इन बच्चों को मुसीबत और परेशानी समझा जाता है। हालाँकि अगर माँ-बाप सब्र से काम लें तो यह औलाद ही उनकी बहुत सारी बीमारियों के दूर करने का ज़रिया बन सकीत है।

माँ यह सोचती है कि इस औलाद की वजह से मैं कोई काम अच्छी तरह नहीं कर सकती हालाँकि उनको पालना तरबियत देना यह भी बहुत बड़ा काम है। बच्चों के इन झमेलों के साथ शौहर की ख़िदमत करना ज़िक्र व तिलावत करना बहुत बड़े अज्र का काम है।

इसलिए लड़की को चाहिए कि बीवी बनने के बाद शौहर की दुआ़ लेने के लिए उसके दिल में जगह पाने के लिए उसकी निगाह में महबूब

बनने के लिए अच्छे से अच्छा खाना पकाना अपनी माँ या बहन से अपने घर में सीख ले। और औरतें अगर एक ही खाने को जैसे गोश्त को दस तरीक़े से पकाएँ तो दस ज़ायक़े मिल सकते हैं। कभी-कभी मामूली खाना तरीक़े से पकाने और रखने से महंगे और अच्छे खानों से ज़्यादा मज़ेदार बन जाता है। कभी-कभी मामूली खाने को चटनी, चिप्स, सलाद, शर्बत, जूस, चाट, कस्टर्ड, आदि की बढ़ोत्री महंगे से महंगे खाने से ज़्यादा क़ीमती बना देता है।

लेकिन इसका मक़सद यह भी नहीं कि खाना पकाने पर इतना वक़्त लगा दिया जाए कि ज़िक्र व तिलावत, तालीम, इशराक़, चाश्त के नवाफ़िल का वक़्त ही न मिले। न ही आराम करने का न बच्चों की तरबियत का। सुबह से शाम तक हर वक़्त बावर्चीख़ाने ही में गुज़रे। मुसलमान औरत के लिए बिल्कुल मुनासिब नहीं कि वह अपना क़ीमती वक़्त सिर्फ़ इस फ़ानी दुनिया के खाने-पीने और इसको अच्छे से अच्छा बनाने पर बरबाद कर दे। इसलिए अगर औरतें पकाने में तीन बातों का ख़्याल रख लें तो इन्शा-अल्लाह तआला बहुत कम वक़्त ख़र्च होगा और जल्दी और अच्छा पक भी जाएगा।

1. वुज़ू करके इशराक़ की नमाज़ (नवाफ़िल) पढ़े और नमाज़े-हाजत भी पढ़े। और फिर सेहत व बरकत नसीब होने की दुआ माँगकर खाना पकाए। ख़ास कर जिस दिन दावत या ज़ियाफ़त हो उस रोज़ अल्लाह तआला से यह दुआ हो:

ऐ अल्लाह! लज़्ज़त डालने वाले आप ही हैं। आप ही इसमें लज़्ज़त (स्वाद) डाल दें और जो इसको खाए उसको दीनदार बना दें। इस खाने से उसके दिल में नूर पैदा कर दें ताकि यह बन्दा आपका महबूब बन जाए। और ऐ अल्लाह! इस पकाने से आप मुझसे राज़ी हो जाईए मैं इसलिए पका रही हूँ कि शौहर ख़ुश हो जाए ताकि आप ख़ुश हो जाएँ।

2. सुबह-सुबह पकाने की पाबन्दी करें कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए सुबह के वक़्त में बरकत

रखी है। फ़ौरन इश्राक़ की नमाज़ के बाद ही पकाना शुरू कर दें कि उस वक़्त एक घन्टे में वह काम होगा जो दूसरे वक़्त में तीन-चार घन्टों में होता है। जो औरतें सुबह-सुबह काम करने की आदी नहीं होतीं उनके वक़्त में बरकत बिल्कुल नहीं पाई जाती, रात तक काम करती रहती हैं लेकिन काम पूरा ही नहीं होता। इसलिए सुबह-सुबह फ़ज्र की नमाज़ के बाद ज़िक्र व तिलावत करके हो सके तो इश्राक़ की नमाज़ पढ़कर काम शुरू कर दें, फिर देखिए सारे काम कितनी जल्दी और थोड़े से वक़्त में पूरे हो जाते हैं।

3. ख़ूब ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करते हुए दुआएँ माँगते हुए काम करें। अगर सूरः यासीन, सूरः मुल्क याद हो वही पढ़ लें। हाँ शरई उज़्र हो (जैसे माहवारी की हालत हो) तो कुरआन करीम की सूरतों की तिलावत न करें, लेकिन और ज़िक्र कर सकती हैं। तीसरा कलिमा, दुरूद शरीफ़, इस्तिगफ़ार, दुआएँ, कलिमा-ए-तय्यिबा आदि पढ़ सकती हैं, तो इस तरह इन्शा-अल्लाह तआ़ला खाना लज़ीज़ (मज़ेदार) और बढ़िया भी पकेगा और जल्दी भी पक जाएगा। और ज़िक्र और दुआ के साथ और वुज़ू की हालत में पकाया हुआ खाना जो भी खाएगा उसके दिल में नूर बढ़ेगा और उस नूर के ज़रिये नेक आमाल करने की तौफ़ीक़ मिलेगी और यह शख़्स बुराईयों से बचेगा।

अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमान बहनों को इन हिदायतों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन!

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि की तरफ़ से दुल्हन को नसीहत

इमाम ग़ज़ाली ने इहयाउल्-उलूम में बीवी के लिए कुछ ज़रूरी आदाब बयान फ़रमाये हैं उनमें से एक जगह फ़रमाते हैं:

नेक सालेह घरेलू ख़ातून के लिए ज़रूरी है कि वह घर में रहे। छतों पर चढ़ना, दीवारों और खिड़कियों से नीचे झाँकना शरीफ़ ख़ानदानों की

औरतों को शोभा नहीं देता। पड़ोसियसों से बात कम करे, बिना ज़रूरत उनके घर न जाए। शौहर की मौजूदगी और ग़ैर-मौजूदगी में उसके आराम व राहत का ख़्याल रखे। हर काम में उसकी खुशी को असल मक़सद क़रार दे, न अपनी ज़ात में उसके साथ ख़ियानत करे और न उसके माल में।

उसकी इजाज़त के बिना घर से बाहर क़दम न रखे। अगर वह जाने की इजाज़त दे तो मामूली और सादा लिबास में पर्दे के सारे तक़ाज़ों को पूरा करने के बाद जाए और भरी सड़कों और बाज़ारों के बजाय ऐसे रास्तों का चुनाव करे जहाँ लोगों का आना-जाना कम से कम हो। किसी अजनबी से जान-पहचान बनाने और उसे अपनी आवाज़ सुनाने और अपने होने को बतलाने की कोशिश न करे।

अपने घर को बनाने और अपने माल की हिफ़ाज़त में मसरूफ़ रहे। नमाज़ और रोज़े की पाबन्दी करे, अगर शौहर का कोई दोस्त उसकी ग़ैर-मौजूदगी में आए तो शर्म व हया और ग़ैरत का तक़ाज़ा यह है कि उससे ज़रूरत से ज़्यादा बात न करे। (इहया)

एक ख़ास अदब

एक अदब नेक बीवी के लिए यह है कि घर से संबन्धित हर मुम्किन ख़िदमत अन्जाम दे। घर के इन्तिज़ाम व प्रबन्धन का दारोमदार औरत पर है, उसे किसी भी ऐसे काम से गुरेज़ न करना चाहिए जो उसके बस में हो।

हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मेरी शादी ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई तो उनके पास ज़मीन व जायदाद न थी, न माल व दौलत, न गुलाम व बाँदी, सिर्फ़ एक घोड़ा था और एक ऊँट था जो पानी लाने के काम में इस्तेमाल होता था।

मैं घोड़े को घास-दाना देती, पानी पिलाती, उसका जिस्म मलती, और हर संबन्धित ख़िदमत अन्जाम देती। ऊँट के लिए खजूरों की

गुठलियाँ कूटती और उसे खिलाती। पानी भरकर लाती, डोल सीती, आटा गूँधती, रोटी पकाती, लम्बी दूरी तय करके गुठलियाँ लाती और उसे खिलाती। यह हालत देखकर मेरे बाप हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरे लिए एक ख़ादिमा (काम करने वाली) भेज दी। बाँदी के आने के बाद मुझे ऐसा लगा कि गोया मैं कै़द में थी, अब आज़ाद हो गई हूँ। (हदीस, बुख़ारी शरीफ़)

घर के काम-काज पर अज्र व सवाब

कभी-कभी हम लोगों के ज़ेहन में यह होता है कि मियाँ-बीवी के सम्बंध एक दुनियावी क़िस्म का मामला है और यह सिर्फ़ नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पूरा करने का मामला है। ऐसा हरगिज़ नहीं है, बल्कि यह दीनी मामला भी है। इसलिए कि अगर औरत यह नीयत कर ले कि अल्लाह तआला ने मेरे ज़िम्मे यह फ़रीज़ा लागू किया है और इसके सम्बंध का मक़सद शौहर को खुश करना है। और शौहर को खुश करने के वास्ते से अल्लाह को खुश करना है। तो फिर सारा अमल सवाब का ज़रिया बन जाता है।

घर का जो काम औरतें करती हैं, और उसमें नीयत शौहर को खुश करने की है, तो सुबह से लेकर शाम तक जितने काम कर रही हैं वो सब अल्लाह तआला के यहाँ इबादत में लिखा जाता है, चाहे वह खाना पकाना हो, घर की देखभाल हो या बच्चों का पालन-पोषण हो, या शौहर का ख़्याल हो, या शौहर के साथ खुशदिली की बातें हों, इन सब पर अज्र लिखा जा रहा है बशर्तेकि नीयत सही हो।

घर के काम-काज

खुदा ने मर्द को मेहनत और कोशिश से रोज़ी कमाने के लिए पैदा किया है और घर के काम-काज और बच्चों के पालने आदि का इन्तिज़ाम औरत के सुपुर्द किया है। दस्तूर भी यही है कि घर के काम-काज औरतें करती हैं और बाहर के काम मर्दों से संबन्धित हैं।

औरत अमीर हो या ग़रीब उसको अपने घर के काम अपने हाथ से करने में एक क़िस्म की ख़ुशी होती है और काम भी नौकरों के मुक़ाबले में अच्छा होता है। इसके अलावा जिस्म की एक क़िस्म की वर्ज़िश भी होती है, जो इनसान की तन्दुरुस्ती के लिए बेहद ज़रूरी है। अलबत्ता काम-काज ज़्यादा हो तो नौकरों के सुपुर्द करने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन सब काम नौकरों के सुपुर्द कर देने से घर का नक़्शा ही बिगड़ जाता है, मामूली काम नौकरों को सौंपने चाहिएँ और ज़रूरी काम अपने हाथ से अन्जाम देने चाहिएँ।

मौजूदा ज़माने में हमें अपने काम अपने हाथ से करने में अपनी तौहीन और शर्म लगती है। हम हर काम में नौकरों के मोहताज हो गए हैं। कई मुसलमान औरतों की तो यह हालत है कि शौहर की माली हालत चाहे कितनी ही ख़राब क्यों न हो लेकिन घर के काम-काज के लिए एक नौकरानी ज़रूर चाहिए ताकि बेगम साहिबा को कुछ काम ही करना न पड़े, और ख़ुद सेठानी बनकर पलंग पर बैठी हुक्म चलाती रहे। बहन! यह आदत बहुत बुरी है। बैठे बैठे आराम की आदत बना लेने से इनसान बिल्कुल काहिल और सुस्त हो जाता है। इस आदत का असर अपनी सेहत पर भी पड़ता है। दिन-ब-दिन सेहत गिरती जाती है और आख़िरकार किसी काम की नहीं रहती।

बहनो! जहाँ मर्दों को अपनी सेहत बाक़ी रखने के लिए वर्ज़िश की ज़रूरत है इसी तरह औरतों को भी अपनी सेहत (तन्दुरुस्ती) बाक़ी रखने के लिए वर्ज़िश की ज़रूरत पड़ती है। औरतों के लिए उसके घर ही में इतने सारे काम होते हैं कि अगर वह अपने हाथ से सब काम करे तो ज़रूरत के मुताबिक़ वर्ज़िश हो जाती है। तजुर्बे से यह बात साबित हुई है कि अपने हाथ से काम-काज करने वाली औरतों की तन्दुरुस्ती ऐसी औरतों से बहुत ही अच्छी होती है जो औरतें नौकरानियों से काम लेने की आदी बन चुकी हैं।

याद रखो! बेकार और सुस्त बने रहना ख़ुद एक ख़तरनाक रोग है

जो धीरे-धीरे सेहत का सत्यानाश कर देता है। जो औरतें खुद काम नहीं करतीं उनके बदन का ख़ून कम होने लगता है, रंग पीला पड़ जाता है, जिस्म मोटा होकर फूलने लगता है और आख़िरकार नतीजा ख़राब निकलता है। इसलिए सारी मुसलमान औरतों को अपने घर के काम-काज अपने हाथों से ही करने चाहिएँ।

सहाबी औरतें अपने घर के काम-काज अपने हाथों से करती थीं। खुद रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने काम अपने हाथ से करते थे। हज़रत अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछाः "रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में क्या-क्या काम करते थे?" हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमायाः "आप घर वालों की ख़िदमत में लगे रहते, जब नमाज़ का वक़्त होता तो नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते"।

एक दूसरी जगह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: "हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जूते अपने हाथ से सी लेते, अपने कपड़ों में खुद ही जोड़ लगा लेते और अपने घर का सब काम-काज ख़ुद ही करते। (तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन, लेखक मौलाना मुहम्मद अहमद साहिब)

बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की घरेलू ज़िन्दगी

इफ़्लास से था सय्यिदा-ए-पाक का यह हाल
घर में कोई कनीज़ न कोई गुलाम था

घिस-घिस गई थी हाथ की दोनों हथेलियाँ
चक्की के पीसने का जो दिन रात काम था

सीने पे मशक भर के जो लाती थीं बार-बार
गो नूर से भरा था मगर नील फ़ाम था

अट जाता था लिबासे मुबारक गुबार से
झाड़ू का मश्ग़ला भी जो हर सुब्ह व शाम था

आख़िर गईं जनाबे रसूले खुदा के पास
यह भी कुछ इत्तिफ़ाक़ कि वाँ इज़्मे आम था
मेहरम न थे जो लोग तो कुछ कर सकीं न अर्ज़
वापस गईं कि पासे हया का मक़ाम था
फिर जब गईं दोबारा तो पूछा हुज़ूर ने
कल किस लिए तुम आईं थीं क्या ख़ास काम था
ग़ैरत यह थी कि अब भी न कुछ मुँह से कह सकीं
हज़रत अली ने उनके मुँह से कहा जो प्याम था
ख़ामोश हो के सय्यिदा-ए-पाक रह गईं
जुर्रत न कर सकीं कि अदब का मक़ाम था
यूँ की है बसर अहले-बैत मुतह्हिर ने ज़िन्दगी
यह माजरा-ए-दुख़्तरे ख़ैरुल-अनाम था।

हाथ के हुनर

सलीक़ेमन्द और तहज़ीबदार लड़कियाँ अपना क़ीमती वक़्त खेलकूद और सैर-सपाटे में नहीं गुज़ारतीं, बल्कि उनको जो वक़्त मिलता है, जो घड़ी हाथ लगती है उसमें सीना-पिरोना, पकाना, बुनना, कातना और दूसरे हाथ के हुनर सीखती हैं। बचपन में कोई हुनर अगर सीख लिया जाए तो वह ज़िन्दगी भर काम आता है और हुनर जानने वाला कभी किसी का मोहताज नहीं होता। हुनर ही तो इनसान के आड़े वक़्त का साथी है। गुर्बत और तंगदस्ती के वक़्त इनसान को अपने हुनर से बहुत मदद हासिल होती है और हुनरमन्द इनसान तौहीन और ज़िल्लत से बच जाता है।

सहाबी औ़रतें हुनर और दस्तकारी से वाकिफ़ थीं

हज़रत बीबी सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा तायफ़ से आने वाले चमड़ों को पकाना और रंगना बहुत अच्छी तरह से जानती थीं, इसलिए दूसरी बीबियों के मुक़ाबले में उनकी माली हालत बहुत अच्छी थी।

बीबी फ़ातिमा पुत्री शैबा रज़ियल्लाहु अन्हा बहुत अच्छा सीना-पिरोना और बुनना जानती थीं। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा उम्दा खाना पकाने में माहिर थीं। कई एक औरतें कपड़े बुनती थीं और उसी पर अपना गुज़ारा करती थीं। बीबी उम्मे ज़ियाद, बीबी उम्मे शहजिया और दूसरी कई एक ख़्वातीन (औरतें) चर्ख़ा कातना बहुत अच्छा जानती थीं। ख़ैबर की लड़ाई में इन सब ख़्वातीन ने चर्ख़ा कात कर मुसलमानों की मदद की थी।

नेक बीवी के काम-काज

सवेरे से उठी वफ़ादार बीवी
नमाज़े फ़ज्र सबसे पहले अदा की

उधर ख़ादिमा चूल्हा सुलगा रही है
इधर बीवी बच्चों को बहला रही है

कोई गोद में है कोई पाँव-पाँव
चमन में टहलते हैं तारों की छाँव

कोई रो रहा है कि बिस्कुट खिलाओ
कोई रो रहा है कि कपड़े पहनाओ

ग़र्ज़ उसने एक-एक के मुँह को धुलाया
खिलाई उन्हें रोटी पानी पिलाया

जो फ़ारिग़ हुआ था मुँह धोके शौहर
तो खाना रखा सामने उसके चुनकर

सुधारा जब वह अपने कामों को दफ़्तर
तो फ़ारिग़ हुई आप भी खाना खाकर

उठा लाई पेटी उठा लाई कपड़े
उन्हें अपने हाथों से ख़ुद छाँटे कतरे

नमाज़ व वज़ीफ़े से जब पाई वह फ़ुर्सत
तो ले बैठी वह पढ़ने को 'फ़ज़ाइले आमाल' 'बहिश्ती ज़ेवर'

जो बेपर्दा कोई सहेली वहाँ आई
तो तेवर बहुत उसने जलकर चढ़ाई

यह चाहे तो जन्नत ही घर को बना दे
यह चाहे तो दोज़ख़ से उसको बढ़ा दे

यह चाहे तो इज़्ज़त हमारी बढ़ा दे
यह चाहे तो ज़िल्लत में हमको गिरा दे

यह चाहे तो रुस्वा ज़माने में कर दे
यह चाहे तो इज़्ज़त के फट जाएँ पर्दे

ज़माने की रफ़्तार बतला रही है
सदा चार जानिब से यह आ रही है

कि तालीमे निस्वाँ तरक़्क़ी का दर है
कि तालीमे निस्वाँ तरक़्क़ी का सर है

औरतें हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का तरीक़ा इख़्तियार करें

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा (जन्नत की औरतों की सरदार) निकाह के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ ले गईं तो हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपस में यह बात तय कर ली कि हज़रत अली घर के बाहर के काम करेंगे और हज़रत फ़ातिमा घर के अन्दर के काम करेंगी। चुनाँचे हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी मेहनत से घर के काम अन्जाम देती थीं और बड़े शौक़ व ज़ौक़ से अपने शौहर की ख़िदमत करती थीं, लेकिन मेहनत का काम ज़्यादा होता था।

वह ज़माना आजकल के ज़माने की तरह तो था नहीं। आजकल तो बिजली का बटन दबा दिया और खाना तैयार हो गया। उस ज़माने में खाना तैयार करने के लिए चक्की के ज़रिये आटा पीसतीं, तन्दूर के लिए लकड़ियाँ काटकर लातीं और तन्दूर सुलगातीं और फिर रोटी पकातीं।

एक लम्बा-चौड़ा अ़मल था, जिसमें हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बड़ी मशक़्क़त उठाना पड़ती थी और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बड़े शौक़ व चाव से यह मशक़्क़त उठाती थीं। लेकिन जब ख़ैबर की लड़ाई के मौक़े पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास बहुत माले ग़नीमत आया। उस माले-ग़नीमत में गुलाम और बाँदियाँ भी थीं। चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० में उनको बाँटना शुरू कर दिया तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से किसी ने कहा कि आप भी जाकर हुज़ूरे अक़्दस से कह दें कि एक बाँदी आपको भी दे दें।

चुनाँचे हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर में हाज़िर हुईं और उनसे कहा कि आप हुज़ूरे पाक से कहें कि चक्की पीसते-पीसेते मेरे हाथों में गट्टे पड़ गए हैं, और पानी की मशक उठाते-उठाते सीने पर नील पड़ गए हैं।

इस वक़्त माले-ग़नीमत (1) में इतने सारे गुलाम और बाँदियाँ आई हैं, कोई गुलाम या बाँदी अगर मुझे मिल जाए तो मैं इस मशक़्क़त से छुटकारा पा लूँ। यह कहकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा वापस अपने घर आ गईं।

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर तशरीफ़ लाए तो हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूरे पाक से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आपकी साहिबज़ादी हज़रत फ़ातिमा तशरीफ़ लाई थीं और यह फ़रमा रही थीं कि चक्की पीसते-पीसते मेरे हाथों में गट्टे पड़ गए हैं और पानी की मशक उठाने से सीने पर नील के निशान आ गए हैं।

आप अन्दाज़ा लगाएँ कि उस वक़्त बाप के जज़्बात का क्या आ़लम होगा। लेकिन हुज़ूरे पाक ने उनको अपने घर बुलाया और फ़रमाया! तुमने मुझसे बाँदी या गुलाम की दरख़्वास्त की है, लेकिन जब तक सारे

(1) लड़ाई में दुश्मन से जो माल हासिल होता है उसको माले-ग़नीमत कहते हैं।

मदीना वालों को गुलाम और बाँदी मयस्सर न आ जाएँ उस वक़्त तक मैं मुहम्मद की बेटी को गुलाम और बाँदी देना पसन्द नहीं करता।

(वअ़ज़ शौहर के हुक़ूक़)

औ़रतों के लिए अनमोल नुस्ख़ा "तस्बीहे फ़ातिमी"

अलबत्ता मैं तुम्हें एक ऐसा नुस्ख़ा बताता हूँ जो तुम्हारे लिए गुलाम और बाँदी से बेहतर होगा। वह नुस्ख़ा यह है कि जब तुम रात के वक़्त बिस्तर पर लेटने लगो तो उस वक़्त 33 बार "सुब्हानल्लाह" 33 बार "अल्हम्दु लिल्लाह" और 34 बार "अल्लाहु अकबर" पढ़ लिया करो। यह तुम्हारे लिए गुलाम और बाँदी से ज़्यादा बेहतर होगा। बेटी भी तो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बेटी थी, पलट कर कुछ नहीं कहा बल्कि जो कुछ हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया उसी पर इत्मीनान कर लिया और वापस तशरीफ़ ले गईं। इसी वजह से इस तसबीह को "तस्बीहे फ़ातिमी" कहा जाता है। (जामिउल् उसूल पेज 501 जिल्द 6)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी बेटी को औ़रतों के लिए एक मिसाल बना दिया कि बीवी ऐसी हो, क़ानूनी एतिबार से चाहे कुछ भी हक़ हो लेकिन सुन्नत यह है कि वह अपने शौहर के घर की निगहबान है और इस निगहबान होने की वजह से वह उसके कामों को अपना काम समझकर अन्जाम दे। (वअ़ज़ "शौहर के हुक़ूक़")

माली हुक़ूक़

बीवी पर शौहर के बहुत-से हुक़ूक़ हैं, उनमें से माल के बारे में ज़्यादा अहम ये तीन हैं:-

1. माल की हिफ़ाज़त करना।
2. ज़रूरत से ज़्यादा मुतालबा करने से बचना।
3. शौहर को हराम कमाई से बचाने की फ़िक्र करना।

पुराने ज़मानी की औ़रतें इन हुक़ूक़ का लिहाज़ रखती थीं। चुनाँचे जब कोई शख़्स कमाने के लिए घर से जाता तो उसकी बीवी उसे यह

नसीहत करती कि हराम कमाई से बचना और यह यक़ीन दिलाती कि हम भूख पर सब्र कर लेंगे, तंगदस्ती से हमें कोई डर नहीं है लेकिन दोज़ख़ की आग हमारे बरदाश्त से बाहर है। इसलिए हराम की कमाई घर में मत लाना, हलाल माल जितना भी मिल जाए उस पर सब्र कर लेंगे।

शौहर की हलाल आमदनी पर अगरचे वह कम ही क्यों न हो क़नाअ़त करे। बीवी के ज़ेहन में यह बात भी रहनी चाहिए कि शौहर का हक़, खुद उसके ज़ाती हुक़ूक़ और उसके सारे रिश्तेदारों और घर वालों के हुक़ूक़ पर मुक़द्दम है। घर में भी जिस्म और लिबास की सफ़ाई का ख़्याल रखना बेहद ज़रूरी है। न मालूम किस वक़्त शौहर उसकी मुलाक़ात (यानी उससे अपनी इच्छा पूरी करने) का इरादा कर ले। और साथ ही बच्चों के लिए भी शफ़ीक़ और मेहरबान हो, उन्हें बुरा-भला न कहती हो। उनके ऐबों और कमियों को छुपाती हो।

औरत की ज़िम्मेदारियों में यह बात भी है कि शौहर का माल फ़ुज़ूल ख़र्च न करे, बल्कि कम से कम ख़र्च करे। उसके माल की हिफ़ाज़त करे। ख़ास कर दुनिया की फ़ानी चीज़ों पर शौहर का माल बरबाद करना कपड़ों, जूतों और फ़ुज़ूल चीज़ों पर या बेफ़ायदा मौक़ों में यानी शादियों में नाम व दिखलावे के लिए कपड़े बनाना, ज़ेवर बनाना आदि तो जायज़ ही नहीं, और ख़ास तौर से नेक बीवी के लिए तो शरअ़न् मुनासिब नहीं। बल्कि शौहर का माल अपने ऊपर सिर्फ़ ज़रूरत की चीज़ों पर कम से कम ख़र्च करके बाक़ी माल अल्लाह के दीन को दुनिया में फैलाने पर, अल्लाह के नेक बन्दों और बन्दियों पर ख़र्च करें।

इसके लिए हम चन्द नेक बीवियों के अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के वाक़िआत नक़ल करते हैं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का अल्लाह के नेक बन्दों पर ख़र्च करना

मुहम्मद बिन मुन्कदिर रहमतुल्लाहि अलैहि एक बार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी सख़्त ज़रूरत का इज़हार किया। उन्होंने फ़रमाया कि मेरे पास इस वक़्त बिल्कुल कुछ भी नहीं है। अगर मेरे पास दस हज़ार भी होते तो सब के सब तुम्हें दे देती मगर इस वक़्त मेरे पास कुछ नहीं है। वह वापस चले गए। थोड़ी देर बाद ख़ालिद बिन असद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से दस हज़ार का हदिया हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास पहुँचा। फ़रमाने लगीं कि मेरी बात का बहुत जल्द इम्तिहान लिया गया, उसी वक़्त इब्ने मुन्कदिर के पास आदमी भेजा और उनको बुलाकर वह सारी रक़म उनके हवाले कर दी, जिसमें से एक हज़ार में उन्होंने एक बाँदी ख़रीदी जिसके पेट से तीन लड़के पैदा हुए- मुहम्मद, अबू बक्र, उमर। तीनों के तीनों मदीना मुनव्वरा के आबिद लोगों में गिने जाते थे। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

क्या उन तीनों की इबादत में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का हिस्सा न होगा कि वही उनके वजूद का सबब हुईं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सख़ावत (दान देने और ख़ैरात करने) के वाक़िआत उनके अब्बा जान की तरह से शुमार किये जाने मुश्किल हैं। एक क़िस्सा किताब "हिकायाते सहाबा" में शैख़ुल हदीस साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है कि दो गोनें दिर्हम की बाँटीं और यह भी याद न आया कि मेरा रोज़ा है और इफ़तार के लिए एक दिर्हम का गोश्त ही मंगा लूँ। उन दोनों गोनों में एक लाख से ज़्यादा दिर्हम थे। और इसी क़िस्म का एक और क़िस्सा भी रिवायत में है जिसमें एक लाख अस्सी हज़ार दिर्हम बताए जाते हैं।

तमीम बिन उरवा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने एक बार (अपने बाप की ख़ाला) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को देखा कि

उन्होंने सत्तर हज़ार दिर्हम बाँटे और वह खुद पैवन्द लगा हुआ कुर्ता पहन रही थीं। (इत्तिहाफ़- फ़ज़ाइले सदक़ात)

अल्लाह के नेक बन्दों पर माल ख़र्च करने वाली बीवी

राबिया पुत्री इस्माईल ने अहमद इब्ने अबिल-हवारी को शादी का पैग़ाम भिजवाया। अहमदुल-हवारी नेक और इबादत-गुज़ार इनसान थे। उन्हें यह रिश्ता पसन्द नहीं आया और पैग़ाम के जवाब में यह कहकर माज़िरत कर दी कि मुझे औरतों की ख़्वाहिश नहीं है। मैं अपने काम, इबादत और अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल हूँ।

राबिया ने जवाब दिया कि खुदा की क़सम! मैं तुमसे ज़्यादा इन कामों में मशग़ूल हूँ और मुझे खुद मर्दों की ख़्वाहिश नहीं है, लेकिन बात यह है कि मेरे शौहर ने बहुत सारी दौलत छोड़ी है, मैं यह चाहती थी कि आप से निकाह कर लूँ और आप मेरी दौलत का कुछ हिस्सा अपने नेक दोस्तों पर ख़र्च करें ताकि मुझे भी नेक लोगों से जोड़ पैदा हो जाए और अल्लाह के रास्ते पर चलने में आसानी हो।

अहमदुल्-हवारी ने जवाब दिया कि मैं अपने उस्ताद से मश्विरा करूँगा अगर उन्होंने इजाज़त दी तो मैं तुम्हारी पेशकश ज़रूर क़बूल कर लूँगा। वह अबू सुलेमान दारानी रहमतुल्लाहि अलैहि के पास आए और इस सिलसिले में उनकी राय मालूम की। इससे पहले वह अहमदुल-हवारी को शादी से मना कर चुके थे। लेकिन जब उन्हें राबिया के प्रस्ताव का सबब मालूम हुआ तो फ़रमायाः इस औरत से शादी कर लो। वह अल्लाह की नेक बन्दी और उसकी दोस्त है। उसका कलाम सिद्दीक़ीन के कलाम के जैसा है।

अहमदुल-हवारी कहते हैं कि मैंने राबिया से शादी कर ली। वह इस क़द्र मेहमान-नवाज़ साबित हुई कि हमारे घर में चूने का एक हौज़ बना हुआ था, हाथ धोने वालों की अधिकता से ख़राब हो गया। हौज़ में सिर्फ़

वे लोग हाथ धोया करते थे जिन्हें वापसी की जल्दी हुआ करती थी। साबुन आदि से हाथ धोने वाले उनके अलावा थे।

मैंने राबिया के बाद तीन औरतों से निकाह किया, वह नाराज़ होने के बजाय ख़ुश होती और मुझे अच्छी चीज़ें खिलाकर कहती कि अब तुम अपनी बीवियों के पास जाओ। यह राबिया 'शाम' (सीरिया) में ऐसी थीं जैसे 'बसरा' में राबिया अदविया। (इहयाउल उलूम)

मेहमानों की इज़्ज़त करने वाली नेक बीवी

हज़रत अबूर्रबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं मैं एक गाँव में गया तो मुझे वहाँ के लोगों ने बताया कि यहाँ एक नेक औरत फ़िज़्ज़ा है। उसके यहाँ एक बक्री है जिसके थनों से दूध और शहद दोनों निकलते हैं। मुझे यह सुनकर ताज्जुब हुआ, मैंने एक नया प्याला ख़रीदा और उसके घर जाकर मैंने कहा कि तुम्हारी बक्री के बारे में मैंने यह शोहरत सुनी है कि वह दूध और शहद देती है, मैं भी उसकी बरकत देखना चाहता हूँ। उसने वह बक्री मेरे हवाले कर दी।

मैंने उसका दूध निकाला तो वाक़ई उसमें से दूध और शहद निकला। हमने उसको पिया उसके बाद मैंने पूछा कि यह बक्री तुम्हारे पास कहाँ से आई? कहने लगी इसका क़िस्सा यह है कि हम ग़रीब आदमी हैं। एक बक्री के अलावा हमारे पास कुछ न था। इसी पर गुज़ारा था। अल्लाह तआला के हुक्म से बक्ऱईद आ गई। मेरे शौहर ने कहा कि हमारे पास कुछ और तो है नहीं यह बकरी हमारे पास है, लाओ इसकी कुरबानी कर लें।

मैंने कहा कि हमारे पास गुज़ारे के लिए इसके अलावा तो कोई चीज़ है नहीं, ऐसी हालत में कुरबानी का हुक्म नहीं है, फिर क्या ज़रूरत है कि हम कुरबानी करें।

शौहर ने यह बात मान ली और कुरबानी का इरादा स्थगित कर दिया। उसके बाद अल्लाह तआला के हुक्म से उसी दिन हमारे यहाँ एक मेहमान आ गया तो मैंने शौहर से कहा कि मेहमान के इकराम (सम्मान)

का तो हुक्म है और घर में कोई चीज़ नहीं है, इस बक्री ही को ज़िबह कर लो। वह इस बक्री को ज़िबह करने लगे। मुझे यह ख़्याल हुआ कि मेरे छोटे-छोटे बच्चे इस बक्री को ज़िबह होते देखकर रोने लगेंगे। इसलिए मैंने कहा कि बाहर लेजा कर दीवार की आड़ में ज़िबह कर लो ताकि बच्चे न देखें। वह बाहर ले गए और जब उस पर छुरी चलाई तो यह बक्री हमारी दीवार पर खड़ी थी और वहाँ से खुद उतर कर मकान के सेहन में आ गई।

मुझे यह ख़्याल हुआ कि शायद वह बक्री शौहर के हाथ से छूट गई है। मैं उसको देखने बाहर गई तो शौहर उस बक्री की खाल खींच रहे थे। मैंने उनसे कहा कि बड़े ताज्जुब की बात है कि ऐसी ही बक्री घर में भी आ गई उसका क़िस्सा मैंने सुनाया। शौहर कहने लगे क्या बईद है कि हक़ तआला शानुहू ने इसका बदल हमें अता फ़रमाया हो। यह वह बक्री है जो दूध और शहद देती है। यह सब कुछ सिर्फ़ एक मेहमान के इकराम (इज़्ज़त व सम्मान) की वजह से है।

फिर वह औरत कहने लगी कि ऐ मेरे बच्चो! यह बक्री दिलों में चरती है, अगर तुम्हारे दिल नेक रहेंगे तो दूध भी अच्छा रहेगा, और अगर तुम्हारे दिलों में खोट आ गया तो इसका दूध भी ख़राब हो जाएगा। अपने दिलों को अच्छा रखो, हर चीज़ तुम्हारे लिए अच्छी बन जाएगी। (फ़ज़ाइले सदक़ात पेज 725)

मलिका जुबैदा

ख़लीफ़ा हारून रशीद की बेगम जुबैदा ख़ातून अपने कारनामों की बदौलत मशहूर हैं। जुबैदा का बाप जाफ़र ख़लीफ़ा मन्सूर का छोटा बेटा था। मन्सूर की कुन्नियत अबूजाफ़र उसी के नाम पर हैं। जुबैदा मूसल में पैदा हुई। जब उसका बाप जाफ़र मूसल का हाकिम था। जुबैदा का असल नाम अमतुल्-अज़ीज़ है। यह दो तीन वर्ष की उम्र में यतीम हो गई थी। जुबैदा के दादा ख़लीफ़ा मन्सूर ने इसकी परवरिश की, बचपन

में दादा बच्ची को प्यार से ज़ुबैदा-ज़ुबैदा पुकारा करते थे। घर वालों को यह नाम ऐसा पसन्द आया कि हर एक की ज़बान पर ज़ुबैदा ही चढ़ गया और अमतुल्-अज़ीज़ को सब भूल गए। चौदह-पन्द्रह वर्ष की उम्र में उसकी शादी हारून रशीद से हो गई। हारून के ख़लीफ़ा बनने की कोई उम्मीद न थी। हारून का बड़ा भाई हादी उसका उत्तराधिकारी था लेकिन थोड़े ही समय में हादी मर गया और हारून ख़लीफ़ा और ज़ुबैदा मलिका (रानी) बन गई।

हारून और ज़ुबैदा की मुहब्बत एक मिसाल बनी हुई है। ख़ुदा ने ज़ुबैदा को नेकी, हमदर्दी, सलीक़ामन्दी और हुस्ने इन्तिज़ाम के ख़ास गुण अता किए थे। हारून ने सलतनत की अज़मत व शौकत कमाल पर पहुँचा दी, ज़ुबैदा ने महल के इन्तिज़ाम में वह शान पैदा कर दी जो पहले किसी ने न देखी थी। ज़ुबैदा की वफ़ात को तक़रीबन बारह सौ साल गुज़र चुके हैं।

ज़ुबैदा की फ़य्याज़ी व सख़ावत का यह आलम था कि कोई भी माँगने वाला उसके दरवाज़े से ख़ाली हाथ न जाता, उसके पास एक सौ बाँदियाँ क़ुरआन मजीद की हाफ़िज़ थीं। जिनमें से हर एक दस पारे रोज़ाना पढ़ती, इस तरह तीन दिन में क़ुरआन करीम ख़त्म कर लेतीं। लोग महल के पास से गुज़रते तो अन्दर से हर वक़्त क़ुरआन करीम पढ़ने की आवाज़ आती।

इनसानी भलाई के कामों से ज़ुबैदा को बड़ी दिलचस्पी थी। (824 ई०) में हज का इरादा किया तो बहुत से इन्जीनियर साथ लिए। जहाँ देखती कि आम लोगों को रास्ते या पानी की तकलीफ़ है उसे दूर करने का फ़ौरन इन्तिज़ाम करा देती। बैतुल्मक़दिस की तरफ़ जा रही थी तो देखा कि एक जगह लोगों को पानी लाने में बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ती है। ज़ुबैदा ने फ़ौरन हुक्म दिया कि आस-पास के पहाड़ों में पानी का कोई अच्छा सा चश्मा तलाश करें चुनाँचे उसकी कोशिश से एक बड़ी नहर बन गई। जिससे दूर-दूर तक इलाक़ा सैराब हो गया।

सैंकड़ों तालाब बनवाए, सैकड़ों मस्जिदें और सराय तामीर करायीं। उनका सब से बड़ा और हमेशा ज़िन्दा रहने वाला कारनामा यह है कि मक्का मुकर्रमा के लिए एक नहर का इन्तिज़ाम किया जो अब तक "नहरे ज़ुबैदा" के नाम से मशहूर है। यह हाजियों और मक्का वालों के लिए सदियों से खुदा की ख़ास रहमत बनी हुई है। मक्का मुकर्रमा में पच्चीस-तीस किलो मीटर पूरब में पहाड़ों के अन्दर एक चश्मा मिला, वहीं से नहर की शुरूआत हुई। फिर उसमें दूसरे चश्मे शामिल कर दिये गए। यह नहर अरफ़ात, मुज़्दलिफ़ा और मिना से होती हुई मक्का मुकर्रमा पहुँचती है। उसके ज़्यादातर हिस्से ज़मीन के नीचे हैं, जैसे हमारे हाँ बलूचिस्तान के कुछ हिस्सों में कारीज़ें होती हैं। मुनासिब जगहों पर पानी के ज़ख़ीरे बना दिये गए हैं। हज के मौक़े पर लाखों आदमी कुछ रोज़ मिना में, एक रात मुज़दलिफ़ा में और एक दिन अरफ़ात में गुज़ारते हैं। नहर ज़ुबैदा वही है जहाँ से ये लाखों आदमी पानी लेते हैं, ज़ुबैदा ख़ातून ने उस वक़्त हरम को इस नहर से सैराब किया, जब पानी के एक कूज़े की क़ीमत एक दीनार थी।

कहते हैं कि नहर खोदने के ख़र्च का अन्दाज़ा लगाया गया तो दारोग़ा ने कहा कि ख़र्च बहुत ज़्यादा होगा, दरिया-दिल ज़ुबैदा बोली कि अगर कुदाल की एक ज़र्ब (चोट) की मज़दूरी एक अशरफ़ी माँगी जाएगी तो वह भी हज़ार ख़ुशी से दूँगी। लेकिन यह काम पूरा किए बिना न छोड़ूँगी। हज के इस सफ़र में ज़ुबैदा ने कम से कम सत्तर लाख अशर्फ़ियाँ नेकी के ऐसे कामों पर ख़र्च कीं।

ये वे लोग थे जिन्होंने खुदा की नेमतों का शुक्र ठीक-ठीक अदा किया। उन्होंने बेशुमार दौलत खुदा की मख़्लूक़ के आराम में ख़र्च की। वह दौलत किस काम की जो कुछ आदमियों के ऐश में ख़र्च हो और जिससे नेकी का काम न लिया जाए।

ज़ुबैदा ने सत्तर साल की उम्र में वफ़ात पाई। सदियाँ बीत चुकी हैं मगर ऐसे अच्छे कामों की वजह से उसका नाम अब तक ज़िन्दा है और

जो ज़िन्दगी अच्छे कामों की बदौलत हासिल हो उसे मौत का हाथ कभी ख़त्म नहीं कर सकता।

इसी तरह नेक बीवी के लिए यह ज़रूरी है कि शौहर के माल की हिफ़ाज़त और उसको सही जगह ख़र्च करने की फ़िक्र के साथ-साथ शौहर के ईमान की हिफ़ाज़त में मददगार हो। इसके लिए बीवी के ज़िम्मे शौहर का एक अहम हक़ हम बयान करते हैं, जिसे निभाने में नेक बीवी को कभी कोताही नहीं करनी चाहिए।

शौहर का एक बड़ा हक़ जिसको हक़ ही नहीं समझा जाता

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नज़र एक औरत पर पड़ी। आप हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले गए। ज़रूरत पूरी करके बाहर तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमायाः औरत जब सामने आती है तो शैतान की सूरत में आती है, अगर तुम में से कोई शख़्स किसी औरत को देखे और वह उसे अच्छी लगे तो उसे चाहिए कि अपनी बीवी के पास आए। उसके पास भी वही है जो दूसरी के पास है।

(तिर्मिज़ी हदीस 1078)

औरत की आमद व रफ़्त (आने-जाने) को शैतान की सूरत से ताबीर करने की वजह यह हुई कि औरत में फ़ितरी तौर पर कुछ ऐसी कशिश और दिलकशी रखी गई है कि कुदरती तौर पर मर्द का दिल औरत की तरफ़ खिंचता है, गोया शैतान को मौक़ा मिलता है कि औरत को मर्द के गुनाह में डालने का ज़रिया बनाए। गोया औरत का बाहर निकलना शैतान का बाहर निकलना है। जिससे मालूम हुआ कि औरत को बिना ज़रूरत के घर से निकल कर मर्दों की सोसाईटी में घूमने फिरने से और मर्दों औरतों की संयुक्त महफ़िलों में से जाने से बचना चाहिए।

मर्द के लिए ज़रूरी और अहम बात यह है कि अपनी आँखों की ख़ूब हिफ़ाज़त करे वरना अजनबी मर्दों के सामने नामेहरम औरतें जब आएँगी और नज़र जब नज़र से टकराएगी तो शैतान उससे फ़ायदा उठाएगा और दोनों का दीन व आख़िरत तबाह व बरबाद कर देगा।

इसलिए निगाह की ख़ूब पाबन्दी से हिफ़ाज़त करना चाहिए। अगर कहीं गलती से लग गई और उसका बुरा ख़्याल दिल व दिमाग़ पर जमा तो वस्वसों और परेशानकुन ख़्यालों और कश्मकश में नफ़्स मुब्तला हो जाएगा और उससे मुलाक़ात और बुरे काम की ख़्वाहिश उभरेगी, तो कहीं शैतान इस मौक़े से फ़ायदा न उठा ले।

इसलिए शौहर को चाहिए कि वह अपनी बीवी के पास आ जाए और बीवी से ज़रूरत पूरी कर ले। तो उसके दिल व दिमाग़ पर से वस्वसे (बुरे ख़्यालात) ख़त्म हो जाएँगे। अल्लाह तआला शैतान से उसकी हिफ़ाज़त फ़र मा देंगे। चूँकि अब इसमें नेक दीनदार पाक बीवी और समझदार, होशियार, अक़्लमन्द बीवी की यह ज़िम्मेदारी है कि शौहर जिस वक़्त भी अपनी जायज़ ख़्वाहिश पूरी करने के लिए उसको ज़रूरत से बुलाये और वह बीवी से इसका तक़ाज़ा करे, चाहे हुक्म के तौर पर चाहे इशारे में तो बीवी को फ़ौरन उसकी बात मान लेनी चाहिए। (जबकि कोई शरई उज़्र रुकावट न हो) और शौहर का यह अमल और बीवी का इसमें साथ देना, दिल के वस्वसों का ख़ात्मा करेगा और इस मरहले पर बीवी की तरफ़ से ज़रा सी भी ग़लती और कोताही शौहर के लिए बहुत ही ज़्यादा दीनी, दुनियावी, जिस्मानी, रूहानी, मानसिक और तिब्बी एतिबार से नुक़सान का कारण हो सकती है।

जिन्सी (संभोग के लिये) मैलान जो मर्द को औरत की तरफ़ तबई तौर पर होता है तो उसकी निगाहें उठ ही जाती हैं और औरत के बदन की बनावट अपनी क़ुदरती शक्ल व सूरत से मर्द के सोये हुए जज़्बात को जगा देती है, इससे बचने की तदबीर इस्लाम ने बता दी है। तो अगर ऐसी बात सामने भी आ जाए और किसी औरत के देखने की

वजह से तबीयत में जोश हो तो ऐसे नाज़ुक मौके के वक़्त नबी पाक सल्लललाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि तुम अपनी बीवी के पास चले जाओ और अपनी ज़रूरत और हाजत पूरी कर लो, ताकि शैतान तुम्हारे दिल में वस्वसा डालने की जुर्रत न करे और न तुमको गुनाह में मुलव्वस करने पाए।

इस रास्ते से फ़ितरी जज़्बात पूरे किए जाएँ। न इसमें बीवी रोक हो ने शौहर रोक हो। अगर किसी शौहर को एक बीवी से तस्कीन न हो (यानी एक से उसका दिल न भरे) और वह यक़ीन रखता है कि अदल व बराबरी और इन्साफ़ का दामन मेरे हाथों से छूटने न पाएगा तो दो बीवियाँ वरना तीन भी कर सकता है। अगर तीन भी उसकी ज़िन्दगी में सुकून पैदा न कर सकें तो चार बीवियों तक उपरोक्त शर्तों का लिहाज़ करते हुए रख सकता है, ताकि अगर एक शरई माज़ूर (जैसे माहवारी की हालत में) है, दूसरी गर्भ से फ़ारिग़ हुई है, तीसरी तबई माज़ूर (जैसे बीमार) है तो चौथी से ज़रूरत व हाजत पूरी हो जाएगी। मगर यह किसी हालत में भी क़ाबिले बरदाश्त नहीं कि अस्मत व पाकदामनी की चादर दाग़दार होने पाए और पाकीज़गी और पाकदामनी का फ़ानूस टूटने पाए। माँ-बहनों की इज़्ज़त व पाकीज़गी के अनमोल मोती पर आँच आए। समाज के अमन व सुकून की सेहत पर बद-नज़री, ग़लत निगाही के जरासीम ज़िना व बदकारी के कैंसर व टी. बी. की बीमारियाँ इस पर हमला करें। बीवी या चचाज़ाद भाभी की अस्मत की दीवारों में दरारें पड़ें।

अगर बीवी शौहर को इनकार कर देगी, या मुहब्बत के साथ उसका साथ नहीं देगी और हीले-बहाने करेगी (मुझे यह काम है, वह काम है, गुस्ल करने में देर लगती है, बच्चों के काम हैं, आदि) तो याद रखिए! अगर यह शहवत (संभोग की इच्छा) का ग़लबा इस मुसीबत का मलबा यहाँ नहीं करेगा तो कहीं न कहीं तो गिरेगा, और नाजायज़ जगह पर अल्लाह-तआला की हराम और मना की हुई जगह पर यह शहवत पूरी

होगी तो बीवी भी इस गुनाह में शरीक होगी, कि यह गुनाह करवाने का ज़रिया बनी। अगर यह शौहर की बात पर इनकार न करती तो शौहर को दूसरी जगह जाने की ज़रूरत ही न पड़ती। बीवी फ़ौरन आ जाए:

وعن طلق بن علی رضی اللّٰہ عنہ ان رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال: اذا دعا الرجل زوجتہ لحاجتہ فلتأتہ وان کانت علی التنور۔

(ترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق الزوج علی المرأۃ۔حدیث نمبر ۱۱۶۰)

तर्जुमा: हज़रत तलक़ बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब मर्द अपनी बीवी को अपनी ज़रूरत के लिए बुलाए तो उस औ़रत पर ज़रूरी है कि वह आ जाए। चाहे वह तन्दूर पर भी क्यों न हो।

मुराद यह है कि अगरचे वह औ़रत रोटी पकाने के काम में मशग़ूल हो। उस वक़्त भी अगर शौहर अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए उसको दावत दे और बुलाए तो वह इनकार न करे।

निकाह जिन्सी इच्छा पूरी करने का हलाल रास्ता

इन सारे अहकाम का मक़सद दर-हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हर मर्द व औ़रत के अन्दर फ़ितरी तौर पर एक जिन्सी जज़्बा और ख़्वाहिश रखी है, और इस फ़ितरी जज़्बे और ख़्वाहिश को पूरी करने और सुकून हासिल करने के लिए एक हलाल रास्ता तजवीज़ फ़रमा दिया है। वह निकाह का रास्ता है और शौहर बीवी के ताल्लुक़ात में इस ज़रूरत को पूरा करना पहली अहमियत का हामिल है। इसलिए हलाल के सारे रास्ते खोल दिए, ताकि किसी भी मर्द व औ़रत को हराम तरीक़े से इस जज़्बे और ख़्वाहिश को पूरा करने का ख़्याल पैदा न हो। बीवी को शौहर से सुकून हासिल हो और शौहर को बीवी से सुकून हासिल हो, ताकि दूसरों की तरफ़ देखने की ज़रूरत पेश न आए।

जिन्सी ख़्वाहिश को पूरा करने पर अज्र व सवाब

और इस विषय पर बिल्कुल वाज़ेह (स्पष्ट) हदीस मौजूद है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मियाँ-बीवी के जो आपसी सम्बंध होते हैं अल्लाह तआला उन पर भी अज्र अता फ़रमाते हैं। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! वह तो इनसान अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों के तहत करता है उस पर क्या अज्र? आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अगर वह इन नफ़्सानी ख़्वाहिशों को नाजायज़ तरीक़े से पूरा करता तो उस पर गुनाह होता या नहीं? सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! गुनाह ज़रूर होता। आपने फ़रमाया कि चूँकि मियाँ-बीवी नाजायज़ तरीक़े को छोड़कर जायज़ तरीक़े से नफ़्सानी ख़्वाहिशों को मेरी वजह से और मेरे हुक्म के मातहत पूरा कर रहे हैं इसलिए इस पर भी सवाब होगा। (मुस्नद अहमद)

ऐसी औरत पर फ़रिश्तों की लानत

عن ابی هريرة رضی الله عنه قال: قال رسول الله صلی الله عليه وسلم: اذا دعا الرجل امرأته الی فراشه فأبت ان تجی لعنتها الملا ئكة حتی تصبح. (صحيح بخاری ص ۲۸۲)

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर की तरफ़ बुलाए और यह मियाँ-बीवी के ख़ास सम्बंधों की तरफ़ इशारा है, यानी शौहर अपनी बीवी को इन ताल्लुक़ात को क़ायम करने (उसके साथ सोहबत करने) के लिए बुलाए और वह औरत न आए। या ऐसा तरीक़ा अपनाए जिससे शौहर का वह मंशा पूरा न हो और उसकी वजह से शौहर नाराज़ हो जाए, सारी रात सुबह तक फ़रिश्ते उस औरत पर लानत भेजते रहते हैं कि उस औरत

पर खुदा की लानत हो।

और लानत के मायने यह हैं कि अल्लाह तआ़ला की रहमत उसको हासिल नहीं होगी।

इसलिए कि आपके इतने हुकूक़ बयान किये गए, आपके हुकूक़ का लिहाज़ किया गया। इसका मंशा हक़ीक़त में यह है कि आपके और आपके शौहर के बीच जो सम्बंध है वह सही हो जाए। और इस ताल्लुक़ के सही होने का एक ज़रूरी हिस्सा यह है कि तुम्हारे ज़रिये शौहर को पाकदामनी हासिल हो। निकाह का बुनियादी मक़सद यह है कि पाकदामनी हासिल हो और निकाह के बाद शौहर को किसी और तरफ़ देखने की ज़रूरत न रहे। इसलिए तुम्हारे ज़िम्मे यह फ़रीज़ा आयद होता है कि इस मामले में तुम्हारी तरफ़ से कोई कोताही न हो। अगर कोताही होगी तो फिर फ़रिश्तों की तरफ़ से तुम पर लानत होती रहेगी।

इस हदीस की शरह (व्याख्या) में मौलाना आ़शिक़ इलाही साहिब "तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन" में इरशाद फ़रमाते हैं:

इस हदीस में जिस अहम बात की तरफ़ इशारा किया गया है उसकी व्याख्या की कोई ज़रूरत नहीं है, अ़क्लमन्दों को इशारा काफ़ी होता है। जो औ़रतें इस पर अ़मल नहीं करती हैं वे नसीहत हासिल करें।

इस हदीस पर अ़मल न करने की वजह से औ़रतें अपने शौहरों को दूसरी बीवी करने पर आमादा कर देतीं हैं या वह अपनी पाकदामनी खो बैठता है और पाकदामन नहीं रहता। मियाँ-बीवी का जो रिश्ता है अ़जीब रिश्ता है। आपस में एक दूसरे से उनकी जो ख़्वाहिश पूरी होती है वह दूसरे किसी आदमी से पूरी नहीं हो सकती, इसलिए एक को दूसरे का ख़्याल रखने की बहुत ज़्यादा ज़रूरत होती है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्ललाहु अ़लैहि व सल्लम इनसान के इनसानी तक़ाज़ों को पहचानते थे, आपने इन तक़ाज़ों को जान कर और समझ कर हिदायतें दी हैं। इन हिदायतों की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने से आपस के

ताल्लुक़ में ख़राबी पैदा होती है, और हालात ख़राब हो जाते हैं। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को नबी करीम सल्ललाहु अ़लैहि व सल्लम की नसीहतों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

यह जो फ़रमाया कि जब शौहर अपने बिस्तर पर बुलाए तो इनकार न करे, उज़्रे शरई न हो तो बात मान ले, यह बिस्तर पर बुलाना और रात का ज़िक्र फ़रमाना बतौर मिसाल है। नहीं तो इसमें रात-दिन की कोई क़ैद नहीं है; मक़सद यह है कि ज़रूरत के वक़्त ज़रूरत पूरी हो जाए।

दूसरी रिवायत में अलफ़ाज़ यह हैं कि:

اذا باتت المرأة مهاجرة فراش زوجها لعنتها الملائكة حتى ترجع.

(بخاری ص ۷۸۲)

तर्जुमाः अगर कोई औ़रत अपने शौहर का बिस्तर छोड़कर रात गुज़ारे तो उस पर फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं, यहाँ तक कि दोबारा वापस लौट आए।

अब आप अन्दाज़ा लगाएँ कि हदीस शरीफ़ में एक छोटी सी बात कही गई कि अगर शौहर ने बीवी को इस काम के लिए दावत दी और वह इनकार करे, या ऐसा तरीक़ा और व्यवहार अपनाये जिससे शौहर का मंशा पूरा न हो सके तो सारी रात लानत होती रहती है। और अगर शौहर की इजाज़त और शौहर की मर्ज़ी के बिना औ़रत कमरे से बाहर चली जाए यानी शौहर के साथ न लेटे तो जब तक वह कमरे से बाहर रहेगी, अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्तों की लानत होती रहेगी। इन सारे मामलात की नबी करीम सल्ललाहु अ़लैहि व सल्लम ने तफ़सील के साथ एक-एक चीज़ बयान फ़रमा दी, इसलिए कि यही चीज़ें झगड़ा और फ़साद का सबब होती हैं।

नफ़्सियात के माहिरीन की राय

जिन्सी कामों से सम्बंधित जानकार वर्ग अपने तजुर्बात और इस इल्म की ढेर सारी मालूमात के तहत यह समझता है कि अच्छी दुल्हन वह होती है जो अपने शौहर के साथ जिन्सी मिलाप में बराबर का हिस्सा ले। याद रखें! शौहर की मुहब्बत का पल्ला उस वक़्त खुद-ब-खुद हल्का हो जाएगा जब दूसरा पल्ला ख़ाली होगा। और दूसरी तरफ़ किसी क़िस्म का जोश और वल्वला नहीं पाया जाएगा। फिर इस हाल में जिन्सी मिलाप का भी जनाज़ा निकल जाएगा। क्योंकि बीवी का ठंडापन और उसकी ख़ामोशी, दिल से उसका तैयार न होना, शर्म व हया हद से ज़्यादा करना, हर ख़ूबसूरत और पुरलुत्फ़ लम्हे का पहले से गला घोंटकर रख देगा। और सारा मज़ा फीका होकर रह जाएगा।

इसके उलट आपस का मिलाप, आपसी सहयोग और एक दूसरे की मदद से दोनों को अनोखी लज़्ज़त मयस्सर होगी। दोनों में मुहब्बत बढ़ेगी। दोनों को एक दूसरे पर भरोसा बढ़ेगा। औलाद चुस्त व चालाक पैदा होने का सबब होगी। दोनों को दिली ख़ुशी और दिमाग़ी सुकून, चैन व इत्मीनान हासिल होगा। यह बहुत ही बुरी सुस्ती और आ़जिज़ी की निशानी है कि:

"मर्द बात-चीत प्यार मुहब्बत, हंसी मज़ाक़ और खेल-कूद, दिलचस्पी और दिल-बस्तगी से बीवी को अपनी तरफ़ झुकाना चाहे और बीवी हद से ज़्यादा नाज़ व नख़रे, शर्म व हया, घमंड व गुरूर से शौहर के जज़्बात व एहसासात को ठेस पहुँचाए। इससे मर्द के दिल में नफ़रत और बीवी से कीना व हसद पैदा होगा।"

बहरहाल जिन्सी मिलाप का फ़ायदा उसी वक़्त होता है जब जिन्सी मिलाप का दोनों तरफ़ से एहसास पाया जाएगा और हर कोई उससे पूरी तरह लुत्फ़ उठाने वाला हो। (तोहफ़तुल-उरूस पेज 223)

अ़क्लमन्द और समझदार बीवी अपनी समझ, नरम अख़्लाक़,

बनाव-सिंगार और अपनी ओर आकृषित करने वाली अदाओं से हमबिस्तरी की मुद्दत में सन्तुलन पैदा कर सकती है। कमी और ज़्यादती के बिना अपनी और अपने शौहर की जवानी को महफ़ूज़ और ज़िन्दगी भर बरक़रार रख सकती है।

अगर कोई मियाँ-बीवी यह अ़मल खुशदिली और ख़ूबसूरती, खुश-अख़्लाक़ी और मेल-मुहब्बत से पूरी रग़बत और सवाब की नीयत से करें। मुहब्बत और लज़्ज़त से ग़र्ज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की खुशनूदी और रज़ा-ए-इलाही हो, और हम अपनी ज़िम्मेदारी की अदायगी और ऐसे नौनिहालों की पैदाईश जिनके सुरीले नग़्मों से घर भर जाए। जो बचपन में ख़ूबसूरती के पैकर हों और बड़े होकर अपने दीन और अपनी क़ौम व मिल्लत की ख़िदमत करें, जिसकी उन्हें तरबियत दी गई हो, तब वह लज़्ज़त हासिल होगी जिसके बराबर कोई लज़्ज़त नहीं हो सकती।

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

जिसकी निशानी यह है कि उसके बाद बदन के हर हिस्से को तस्कीन नसीब होती है। महबूब को देखकर आँखों को ठंडक मिलती है। उसकी नर्म व मीठी बातों को सुनकर कान लुत्फ़-अन्दोज़ होते हैं। उसकी खुशबू से पूरी जान महक जाती है। उसका बोसा (चुंबन) लेने से मुँह का मज़ा बदल जाता है। हाथ से छूने पर अलग लज़्ज़त हासिल होती है और इस तरह जिस्म के हर अंग को वह सुकून मिलता है जिसकी दिल को ख़्वाहिश होती है। महबूब से मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल होता है, और अगर इनमें से कोई एक चीज़ भी छूट जाती है तो नफ़्स को उसका इन्तिज़ार रहता है और कामिल सुकून हासिल नहीं होता। और चूँकि औ़रतें दिल के सुकून का सबब होती हैं इसलिए उन्हें "तस्कीने जान" भी कहा जाता है।

यही वजह है कि हर जायज़ चीज़ से लुत्फ़ उठाने पर बन्दे को अज्र मिलेगा, नीयत कर ले कि यह काम इसलिए कर रहा हूँ कि यह अल्लाह

का हुक्म है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है और मेरी नीयत इसमें यह है कि अल्लाह तआला इससे राज़ी हो जाएँ।

لَعَنَ اللّٰه الْمُسَوِّفات التى يَدْعُوْها زَوْجُها الى فِراشه فتقول سَوْفَ حتى تَغْلِبَه عَيْنَاه. (رواه الطبرانى)

तर्जुमाः अल्लाह तआला लानत फ़रमाते हैं (अपनी रहमत से दूर कर देते हैं) उन औरतों को जो "अभी आई" कहती हैं। ऐसी औरतें जिनको उनका शौहर बुलाए अपने साथ लेटने के लिए और वे यह कहें "अभी आती हूँ" यहाँ तक कि शौहर को नींद आ जाए।

इसी तरह मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। फ़रमाते हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, कोई मर्द अपनी औरत को बुलाए अपने बिस्तर पर और वह औरत इनकार कर दे तो जो आसमान में है वह उस औरत से नाराज़ हो जाते हैं यहाँ तक कि वह शौहर उससे राज़ी हो जाए। (मुस्लिम शरीफ़)

इसकी वजह यह है कि शैतान इससे बड़ा ख़ुश होता है कि दो मुहब्बत करने वाले मियाँ-बीवी को एक दूसरे से अलग कर दे, और मेल-मुहब्बत के बजाय दोनों को एक दूसरे से हमेशा के लिए मेहरूम हो जाएँ। चुनाँचे मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि इब्लीस अपना तख़्त पानी पर बिछाता है। फिर अपने शागिर्दों को इनसानों में भेजता है। उनमें जो ज़्यादा फ़ितना मचाता है वही उसकी नज़र में ज़्यादा मुक़र्रब (क़रीबी और ख़ास) हो जाता है।

फिर ये उसके मातहत जब इकट्ठे होते हैं तो एक कहता है: मैंने फ़ुलाँ का पीछा उस वक़्त छोड़ा जब उसने ज़िना कर लिया। दूसरा कहता है मैंने तो फ़ुलाँ दो मियाँ-बीवी को एक दूसरे से अलग करके दम लिया है। यह सुनकर शैतान उसे शाबाशी देता है, उसकी पीठ थपथपाता है।

"हाँ तूही है, हाँ तूही तो है"।

मालूम हुआ कि दो दिलों का मिलाप अगर ख़ुदा और रसूल को ज़्यादा महबूब है तो उनके अन्दर बिगाड़ पैदा करना ख़ुदा के दुश्मन को ज़्यादा पसन्द है। (तोहफ़तुल्-उरूस पेज 184)

इसलिए अगर शौहर बीवी को बुलाए और बीवी के दिल में ख़्याल आए "क्या मुसीबत है इनको तो बस एक ही काम के लिए फ़ुर्सत है, मेरे इतने काम रह गए हैं, ऐसी सर्दी में नहाना होगा वग़ैरह" तो यह समझ ले कि यह शैतान की तरफ़ से ख़्याल है। "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम" तीन बार पढ़े और "ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम" पढ़े और फ़ौरन शौहर की बात पर लब्बैक कहे तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला शैतान ज़लील व रुस्वा होकर उस घर से जाएगा। और अल्लाह तआ़ला उस औ़रत से उसके शौहर की फ़रमाँबरदारी की वजह से ख़ुश होंगे।

शौहर की इजाज़त से नफ़्ली रोज़ा रखे

وعن ابی هريرة رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال: لا يحل للمرأة ان تصوم وزوجها شاهد الا باذنه ولا تاذن فی بيته الا باذنه. (صحيح بخاری، کتاب النکاح)

तर्जुमाः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ललाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी औ़रत के लिए हलाल नहीं है कि वह अपने शौहर की मौजूदगी में रोज़ा रखे, मगर शौहर की इजाज़त से। यानी किसी औ़रत को नफ़्ली रोज़ा रखना शौहर की इजाज़त के बिना हलाल नहीं।

नफ़्ली इबादत के लिए कितने फ़ज़ाईल हदीसों में बताए गए हैं, लेकिन औ़रत शौहर की इजाज़त के बिना रोज़ा नहीं रख सकती। इसी लिए कि हो सकता है कि दिन में रोज़े से होने की वजह से शौहर को

तकलीफ़ हो। इसलिए पहले शौहर से इजाज़त ले ले। अलबत्ता शौहर को चाहिए कि वह बिना वजह बीवी को नफ़्ली रोज़े से मना न करे, बल्कि रोज़े की इजाज़त दे दे।

कभी-कभी मियाँ-बीवी के बीच झगड़ा हो जाता है, बीवी कहती है कि मैं रोज़ा रखना चाहती हूँ और शौहर कहता है कि मैं इजाज़त नहीं देता। इसलिए मर्द को चाहिए कि वह बिना वजह इस फ़ज़ीलत को हासिल करने से बीवी को मना न करे। लेकिन औरत का बिना इजाज़त रोज़ा रखना जायज़ नहीं। अगर शौहर इजाज़त नहीं देता तो औरत वह नफ़्ली रोज़ा छोड़ दे। इसलिए कि शौहर की इताअत (हुक्म मानना) नफ़्ली रोज़े से पहले है।

शौहर की फ़रमाँबरदारी नफ़्ली इबादत पर मुक़द्दम है

इससे मालूम हुआ कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शौहर की इताअत को सारी नफ़्ली इबादतों से ऊपर रखा है। इसलिए जो सवाब इस औरत को रोज़ा रखकर मिलता, अब शौहर की इताअत करने में उससे ज़्यादा सवाब मिलेगा। और वह औरत यह न समझे कि मैं रोज़े से मेहरूम हो गई, बल्कि वह यह सोचे कि रोज़ा किस लिए रख रही थी? रोज़ा तो इसलिए रख रही थी कि सवाब मिलेगा और अल्लाह राज़ी होंगे, और अल्लाह तआला यह फ़रमा रहे हैं कि मैं उस वक़्त तक राज़ी नहीं हूँगा जब तक तेरा शौहर तुझसे राज़ी नहीं होगा, इसलिए जो सवाब तुम्हें रोज़ा रखकर मिलता, रोज़े का वही सवाब खाने-पीने के बावजूद भी मिलेगा। इन्शा-अल्लाह तआला।

माँ की नसीहत रुख़्सत होने वाली बेटी को

माँ-बाप को चाहिए कि वे अपनी बेटी की सही तरबियत करें। उसे तालीम का ज़ेवर दें। तरबियत की और घरेलू इन्तिज़ाम की चूड़ियाँ दें,

अल्लाह से डरने वाला लिबास दें, परहेज़गारी के कंगन दें, अल्लाह के ज़िक्र और इताअ़त का दहेज दें। और ख़ास तौर से माँ को चाहिए कि बेटी के सामने अपने शौहर के साथ बहुत अदब वाला मामला रखे, जैसा बेटी आज माँ को देखेगी कि माँ जिस तरह अपने शौहर का अदब व एहतिराम और इकराम करती है, बेटी अपने शौहर और आपके होने वाले दामाद का उसी तरह अदब, एहतिराम और इकराम करेगी।

अल्लाह तआ़ला की कुछ बन्दियाँ ऐसी माँयें होती हैं जो प्यार व मुहब्बत से अपनी बच्चियों की ऐसी तरबियत कर जाती हैं कि जिससे न सिर्फ़ उन बच्चियों की बल्कि उन बच्चियों का जहाँ निकाह होता है उस पूरे ख़ानदान की क़िस्मत को चार चाँद लग जाते हैं, और उनके होने वाले दामाद बिना कोठी व महलों के आधी सलतनत के बादशाह बन जाते हैं। क्योंकि मीठी ज़बान और मुस्कुराहट बिखेरने वाली बापर्दा नेक बीवी अगर किसी के मुक़द्दर में आ जाए तो बिना तख़्त व ताज के वह वक़्त का हाकिम बन जाता है। और आने वाली नस्ल एक होनहार, तेज़ दिमाग़ की मालिक, ख़ौफ़े ख़ुदा और यादे इलाही वाली और अल्लाह की नेक बन्दी की गोद में अपनी तरबियत के मराहिल तय करती है।

अल्लाह की इन्हीं नेक बन्दियों में हज़रत अस्मा बिन्ते ख़ाजा फ़ज़ारिया थीं। उन्होंने अपनी बेटी को रुख़्सती के वक़्त इन मुबारक अलफ़ाज़ से नसीहत फ़रमाई थी जो तारीख़ के न मिटने वाले पन्नों में आज तक सुरक्षित हैं और हर नई दुल्हन के लिए रोशनी का मीनार हैं।

बेटी! अब तुम इस घर से रुख़्सत हो रही हो जहाँ तुमने बचपन के दिन गुज़ारे और जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखा। अब तुम ऐसे बिस्तर की ज़ीनत बनोगी जिसकी ख़ुशबू तुम्हारे लिए अजनबी है, और ऐसे जीवन-साथी के साथ क़दम मे क़दम मिलाकर चलोगी जिससे तुम मानूस (परिचित और जानकार) नहीं हो।

बेटी! तुम अपने जीवन-साथी के लिये ज़मीन बन जाना ताकि वह तुम्हारे लिए आसमान बन जाए। तुम उसके लिए गहवारा बन जाना

ताकि वह तुम्हारे लिए सहारा बन जाए। अगर तुम उसकी बाँदी बन गईं तो वह तुम्हारा गुलाम साबित होगा। उससे ज़िद और ज़बरदस्ती न करना वरना वह तुमसे नफ़रत करने लगेगा, उससे दूर मत रहना वरना वह तुमको भुला देगा।

अगर वह तुम्हारे नज़दीक आए तो तुम उससे और नज़दीक हो जाना, तुम उसकी नाक, कान और आँख का ख़्याल रखना। यानी तुम्हारी ग़फ़लत और बेपरवाही की वजह से उसको किसी चीज़ में तकलीफ़ न पहुँचे, ख़ास तौर से खुशबू का एहतिमाम करना कि वह नाक के ज़रिये उसके दिमाग़ तक राहत पहुँचाए।

इसी तरह अपनी ज़बान का ख़्याल रखना कि तुम्हारे मीठे बोल उसके कानों तक पहुँचकर उसको इत्मीनान और सुकून पहुँचाएँ। इसी तरह अपनी ज़ाहिरी हालत और हैअत के अच्छे होने का एहतिमाम रखना, ताकि उसके लिए तुम आँखों की ठंडक और राहत व आराम और तस्कीन का सामान बन जाओ। जब वह तुम्हें देखे तो अच्छी हालत में नज़र आओ, बालों में कंघी हो, आँखों में काजल हो, पेशानी के ऊपर दुपट्टा और साफ़-सुथरा लिबास हो।

बस बेटी इस बात का एहतिमाम (पाबन्दी और ख़्याल) करना तो तुम्हारा दुनिया का छोटा-सा घर जन्नत के जैसा हो जाएगा। अल्लाह करे सारी मुसलमान बीवियाँ इस नेक माँ की नसीहत पर अमल करें। होता यह है कि दुल्हन पहली रात तो बहुत बन-ठनकर शौहर के पास आती है और फिर कुछ महीने बाद घर में मासी और नौकरानी की तरह रहती है और जहाँ कहीं बाहर जाना हो तो नये और अच्छे कपड़े पहन कर जाती है।

इसलिए जिस दूल्हा के लिए दुल्हन बनकर आई है उसके सामने गन्दी रहना, मैले-कुचैले कपड़े पहनना यह बिल्कुल नामुनासिब है। इसी वजह से शौहर के दिल में बीवी की मुहब्बत बाक़ी नहीं रहती, इसलिए खुसूसन शौहर के आने के वक़्त साफ़-सुथरा हो जाना चाहिए ताकि

शौहर उसको देखे तो उसे राहत मिले।

शौहर की तरफ़ से नई दुल्हन को तोहफ़ा

पहली रात की चार हिक्मत की चूड़ियाँ

एक अ़रबी (अ़रब के रहने वाले) शौहर ने अपनी नई-नवेली दुल्हन को चार अ़रबी शे'रों में बहुत ही अच्छे और बहुत ही प्यारे अन्दाज़ में नसीहतें की हैं। हम उनको हर मुसलमान बहन के लिए दुल्हन बनने से पहले और अगर बन चुकी हों तो अब भी उनकी ख़िदमत में पेश करते हैं और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि अल्लाह तआ़ला सारी मुसलमान बहनों को जो किसी के निकाह में आ चुकी हैं या आने वाली हैं, इनपर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँ। आमीन सुम्म आमीन।

خذ العفو مني تستديمي مودتي   ولا تنطقي في وقت حين اغضب

तर्जुमाः कभी मुझसे कोई ग़लती हो जाये तो माफ़ी और दरगुज़र से काम लेना ताकि तेरी मुहब्बत मेरे साथ हमेशा के लिये रहे, और जब मैं गुस्से में हूँ तो उस वक़्त मेरे सामने जवाब बिल्कुल मत देना।

ولا تنقريني نقرك الدف مرة   فانك لا تدرين كيف المغيب

तर्जुमाः मुझे इस तरह मत बजाना जिस तरह तुम ढोल बजाती हो, तुम्हें क्या मालूम कि उसमें से कैसी आवाज़ निकलती है।

यानी अगर तुम गुस्से के वक़्त चुप न हुई तो हो सकता है मेरे मुँह से ऐसी बात मेरी बेएहतियाती की वजह से या मेरे गुनाहों की नहूसत की वजह से निकल जाए जिससे उम्र भर तुम्हें परेशानी उठानी पड़े और मुझे भी। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान मर्द व औ़रत की हिफ़ाज़त फ़रमाए इससे कि इस मुबारक रिश्ते पर कोई धब्बा कोई चोट कोई दाग़ या कोई परेशानी आए।

ولا تكثري الشكوى فتذهب باهوى   ويا باك قلبي والقلوب تتقلب

तर्जुमाः शिकवे-शिकायतों की ज़्यादती और अधिकता भी न हो। याद रखना कि यह इतनी बुरी चीज़ है कि इससे मियाँ-बीवी के बीच मुहब्बत ख़त्म हो जाती है। अल्लाह तआ़ला आपकी हिफ़ाज़त फ़रमाएँ अगर आप भी इसमें मुब्तला हो गईं तो मेरा दिल आप से नफ़रत करने लगेगा और दिलों को बदलने में ख़्यालात को आने-जाने में देर नहीं लगा करती।

इनसान की हर साँस के साथ ख़्याल अन्दर जाता है इसलिए शिकवा और शिकायतें मुहब्बत को नफ़रत से बदल देते हैं।

فانی رأیت الحب فی القلب والأذی　　اذا اجتمعا لم یلبث الحب یذهب

तर्जुमाः मैंने तो यह देखा है कि शौहर की तरफ़ से मुहब्बत और बीवी की तरफ़ से नाफ़रमानी की तकलीफ़ या शिकवा-शिकायत की अधिकता या शौहर के गुस्से के वक़्त ख़ुद भी गुस्से में आ जाना जवाब पर जवाब देते जाना, ये दोनों बातें अगर जमा और यकजा हो जाएँ तो शौहर की मुहब्बत ऐसी बीवी से ख़त्म हो जाती है।

अश्आर का ख़ुलासा

1. इसलिए अगर शौहर की मुहब्बत चाहती हो तो मेरी नसीहतों को इन चार शे'रों में हमेशा याद रखना, जिसका ख़ुलासा दोबारा सुन लो। शौहर की ग़लतियों और कोताहियों को फ़ौरन माफ़ कर देना, उसको दिल में मत रखना।

2. शौहर के गुस्से के वक़्त ख़ामोश रहना, अपनी ग़लती का इक़रार व एतिराफ़ कर लेना, चाहे अपनी ग़लती न भी हो, तब भी यह कहना कि आईन्दा ऐसा नहीं होगा, जैसे आप कहेंगे वैसे ही करूँगी।

3. शिकवा-शिकायत मत करना, शौहर के घर में जो कुछ अल्लाह तआ़ला दे उस पर शुक्र करना और जो सास, नन्द, देवरानी, जेठानी की तरफ़ से तकलीफ़ें हों उन पर सब्र करना और अल्लाह से दुआ़ माँगते रहना। कभी-कभी शौहर का मिज़ाज देखकर कहने में हर्ज नहीं, लेकिन ऐसा न हो कि शौहर थका हुआ घर पर आए और बीवी की तरफ़ से

शिकायतें शुरू हो जाएँ कि आपकी माँ ने यह कहा, आपकी बहन ने मुझे, इस तरह डाँटा, फुलाँ ने यह किया। बच्चा इतना शरीर है बात नहीं मानता आप मेरा साथ नहीं देते, वग़ैरह। इस तरह शिकायतें मत करना।

4. इन शिकायतों से शौहर को तकलीफ़ होगी और जो मुहब्बत होगी वह ख़त्म हो जाएगी, इसलिए कि तकलीफ़ और मुहब्बत एक ही बर्तन में जमा नहीं हो सकते।

दुल्हन के लिए कुछ सुनहरे उसूल

अब हम आपके लिए एक बहुत ही मुफ़ीद (लाभदायक) किताब "तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन" से शौहर व सास के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने के सुनहरे उसूल नक़ल करते हैं। यह दुआ करते हुए कि अल्लाह तआला सारी मुसलमान बहनों को इन पर अमल करने और इनको सारी मुसलमान बहनों में फैलाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। और आपसे भी गुज़ारिश है कि आप भी इस किताब का ज़रूर मुताला कीजिए (पढ़िये)। मुसलमान औरतों के लिए यह बहुत ही बेहतरीन और लाभदायक किताब है। यह किताब गुजराती भाषा में मौलाना मुहम्मद अहमद सूरती साहिब ने लिखी है, अब अल्हम्दु-लिल्लाह इसका उर्दू में तर्जुमा मौलाना सुलैमान साहिब ने कर दिया। आप अपनी दुआओं में हमें भी याद रखते हुए इस किताब के लेखक और उसके अनुवादक के लिए भी दुआएँ कीजिएगा।

मेरी प्यारी बच्चियो! आओ तुमको तुम्हारे फ़ायदे की बात बतलाऊँ। तुम हमेशा माँ-बाप के घर रहने के लिए पैदा नहीं हुई हो, माँ-बाप का घर तो तुम्हारे लिए एक मेहमान-ख़ाना है। ख़ुदा पाक ने चाहा तो इस घर से तुम्हें एक दिन ज़रूर जाना होगा। बाहर के मेहमान तुम्हारे यहाँ आते हैं ना! क्या वे हमेशा के लिए तुम्हारे घर पड़े रहते हैं? दो पाँच दिन रहकर चले जाते हैं। बस यही हालत तुम्हारी भी है। जब तुम उम्र लायक़ और बालिग़ा होकर शादी के लायक़ हो जाओगी तो माँ-बाप तुमको भी रुख़्सत कर देंगे और तुमको अपने ससुराल में जाना पड़ेगा।

इसी लिए तो लड़की को "पराया धन" कहा जाता है। इसमें माँ-बाप कुछ ग़लत नहीं करते, यह तो ख़ुदा पाक का हुक्म है। उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा है। दुनिया के सारे लोग ऐसा ही करते चले आए हैं और ऐसा ही करते रहेंगे। चाहे वे बादशाह हों कि भिखारी, अमीर हों कि ग़रीब।

मेरी नन्ही-मुन्नी बच्चियो! तुम आज माँ-बाप के घर रह रही हो, माँ-बाप की मीठी और मुहब्बत भरी छत के साये में परवरिश पा रही हो। किसी क़िस्म की तकलीफ़ नहीं, न खाने-पीने की फ़िक्र और न पहनने-ओढ़ने का कोई ग़म, सब राहत ही राहत है। किसी में हिम्मत नहीं कि तुम्हारी तरफ़ निगाह उठाकर देखे। तुम से कोई ग़लती हो जाए, घर में कुछ नुक़सान हो जाए तो भी कोई एतिराज़ की बात नहीं। माँ-बाप तुम्हारी ग़लतियों को सुधार देते हैं, भूलों को माफ़ करते हैं और तुम्हारे किए हुए नुक़सान पर पर्दा डाल देते हैं। इतना ही नहीं वे तुमसे लाड-प्यार करते हैं, तुम्हारा दिल ख़ुश रखते हैं और तुमको किसी तरह से फ़िक्रमन्द नहीं होने देते।

लेकिन मेरी बेटियो! कल तुम ससुराल जाओगी, इसके लिए कुछ सोचा है? क्या वहाँ लोग तुम्हारी ग़लतियों से आँखें बन्द कर लेंगे? नहीं, हरगिज़ नहीं।

वे लोग कभी भी तुम्हारी इन बातों को नज़र-अन्दाज़ नहीं करेंगे। माँ-बाप की तरह कभी भी दरियादिल नहीं होंगे। वहाँ तो तुम्हें इंसानियत और मुरव्वत का सुबूत पेश करना होगा। अपनी क़ाबलियत, संजीदगी का सुबूत देना होगा, तब ही तुम सुख और इत्मीनान भरा जीवन गुज़ार सकोगी, इसके बिना तुमको चैन नसीब न होगा।

सबसे पहले मैं तुमको माँ-बाप के यहाँ रहने का तरीक़ा बताऊँ। इससे तुमको बहुत तजुर्बा मिलेगा। उसके बाद ससुराल में रहने के तौर-तरीक़े बतलाऊँगा जिससे तुम सारे मामलों की जानकार बन जाओगी। और अगर इन बातों को तुम ज़िन्दगी में उतार लोगी तो जिस

घर में जाओगी उसको जन्नत बना दोगी, सब तुमको हाथों-हाथ ले लेंगे। सब तुम्हारी ख़ूबियों और तुम्हारे तहज़ीब-याफ़्ता होने पर दाद देंगे। तुम्हारे माँ-बाप की इस आला तरबियत पर मुबारकबाद देंगे। कोई तुमको तकलीफ़ नहीं देगा। उनकी आँखों में नूर पैदा होगा, पूरा ख़ानदान तुम्हारा हमदर्द और मददगार होगा और तुम्हारा शौहर तुम पर नाज़ करेगा। छोटे-बड़े सब ही तुम्हारी इज़्ज़त करेंगे।

इसी लिए तो कहता हूँ कि ससुराल जाते ही सबसे पहले जो काम करना है और जिसमें तुम्हारा इम्तिहान लिया जाएगा वह घर के काम-काज करने की सलाहियत है। इसी तरह तुम में घर चलाने की लियाक़त है, घर की सफ़ाई, मेहमानों की ख़ातिर-तवाज़ो और रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक, अगर ये हुनर और ये काम तुम न संभाल सकीं तो गोया तुमको कुछ नहीं आता। आज तुमको बतलाने वाले मौजूद हैं, कल कोई तुम्हारा हाल पूछने नहीं आएगा। वह तुम अकेली को करना होगा। और जब आज कुछ नहीं करोगी तो कल तुमसे क्या हो सकेगा? और अगर होगा भी तो बड़ी तकलीफ़ के बाद। अगर ग़फ़लत और सुस्ती तुम्हारी आदत बन जाएगी तो दूसरों की निगाहों में तुम हक़ीर (ज़लील और बेहैसियत) बन जाओगी, फिर कहाँ की इज़्ज़त और कैसी ख़ुशी।

इसलिए मेरी ख़्वाहिश है कि तुम अभी से ही वे ख़ूबियाँ, कमालात और हुनर पैदा कर लो जो आने वाली मुसीबतों में तुम्हारे लिए ढाल बन जाएँ। जो हंगामी हालात में तुम्हारी रहबरी करें।

अगर तुम अपने दिमाग़ में यह गुरूर रखती हो कि हमको तो सब कुछ आता है और वक़्त आने पर सब कुछ कर लेंगे तो यह तुम्हारी भूल है। एक-आध रोटी पका ली, कढ़ी-खिचड़ी पका ली, ज़र्दा बिर्यानी बनानी आ गई, किसी को बटन टाँक दिया, चादर पर एक आध फूल बना दिया, कलाम पाक नाज़रा पढ़ लिया और उर्दू हिन्दी अंग्रेज़ी वग़ैरह की दो-चार किताबें पढ़ डालीं, तन्ज़िया या हास्य मज़मून पढ़ना शुरू कर दिया और फिर तुमने यह समझ लिया कि हमने ज़रूरत की सारी चीज़ें

सीख ली हैं, यह तो वही बात हुई कि पूरी रात यूसुफ़-जुलैख़ा का क़िस्सा पढ़ने में गुज़र गई और सुबह को इतनी भी ख़बर नहीं कि जुलैख़ा मर्द था या औरत थी। तुम खुद ही बतलाओ कि इस क़िस्म की क़ाबलियत किस काम की?

इसलिए तुमको ज़रूरी है कि जो भी काम शुरू करो, वह कितना ही दुश्वार क्यों न हो, उसको पूरा करके ही छोड़ो और ऐसी क़ाबलियत और सलाहियत पैदा करो कि किसी की मदद के बिना भी तुम अपने काम में कामयाब हो जाओ। न तो सास और नन्दों की मोहताज बनो और न किसी मददगार की मोहताज बनो। ऐसी फुर्ती और होशियारी से काम करो कि घर के मर्द भी हैरान रह जाएँ। बच्चों की ख़िदमत भी अच्छी तरह से करो, उनकी तरबियत भी करो और घरेलू काम-काज भी करती रहो।

लेकिन ऐसा न करो कि एक उलझन आन पड़े तो दूसरी सौ उलझनें खड़ी कर दो, और इसी तरह एक चीज़ की ज़रूरत पड़े तो दूसरी सौ ज़रूरतों को भुला बैठो। हर चीज़ का ख़्याल रखो। इस तरह न तो एक दम झुक जाओ और न एक दम बुलन्द और ऊँची हो जाओ। हर चीज़ में बराबरी का पूरा ख़्याल रखो। जब ये सारी ख़ूबियाँ अपने अन्दर पैदा कर लोगी तो बिगड़ी हुई चीज़ को बना लोगी। अगर कोई नुक़सान होगा तो तुम अपनी अक़्ल और होशियारी से उस चीज़ की भरपाई कर लोगी, भूल हो जाएगी तो सही कर लोगी।

दोस्त को दोस्त समझना और दुश्मन को दुश्मन समझना। जो बात करो सोच-समझकर करो। न तो खुद नुक़सान में पड़ना और न दूसरों को नुक़सान में डालना। ऐसी सूरत में लड़ाई-झगड़े तुमसे दूर भागेंगे। हर जगह तुम्हारी आव-भगत होगी। अगर किसी वक़्त तुम से कोई भूल हो जाएगी तो लोग दरगुज़र कर देंगे क्योंकि अक़्लमन्द आदमी अगर बेवक़ूफ़ी की बात भी करे तो उसको भी दरगुज़र किया जाता है। अगर बेवक़ूफ़ के मुँह से कोई अक़्लमन्दी की बात निकल जाए तो लोग उसे

भी मज़ाक़ में उड़ा देते हैं। अ़क़्ल और हया इनसान के लिए दो क़ीमती हीरे हैं। शर्म और हया वह चीज़ है जो इनसान को सारी बुराईयों से बचाती है। अब मैं कुछ वे बुनियादी बातें बताता हूँ जिनसे तुम्हारा मुस्तक़बिल (भविष्य) रोशन हो सकेगा।

माँ-बाप के घर पर रहने के तौर-तरीक़े

माँ-बाप की ख़िदमत दिल व जान से करती रहो, उनको कोई तकलीफ़ न होने दो। खाना उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ वक़्त पर तैयार करो। जो कुछ कहें उसको ग़ौर से सुनो। जो हुक्म दें उसको दिल व जान से बजा लाओ। वे किसी काम में लगे हुए हों तो उनको परेशान न करो, खाने पीने के वक़्त जिन चीज़ों की उनको आ़दत हो वक़्त पर हाज़िर करो। एक बात को बार-बार मत कहो। उनके कपड़े वग़ैरह ख़ूब सफ़ाई और क़रीने से ठिकाने पर रखो। साबुन, रूमाल, तौलिया वग़ैरह लाकर उसकी जगह रख दो, उनके बैठने की जगह और बिस्तर साफ़ रखो।

रोज़ाना घर की सफ़ाई करो, सुबह जल्दी और सवेरे उठने की आ़दत डालो। अपनी ज़रूरतों से फ़ारिग़ होकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ो, क़ुरआन पाक की तिलावत करो, इश्राक़ की नमाज़ पढ़ो, फिर अपने काम में लग जाओ। हर वक़्त उनकी ख़िदमत के लिए तैयार रहो। अगर किसी बात पर तुम से नाराज़ और ख़फ़ा हो जाएँ तो अपनी ग़लती की माफ़ी माँग लो, उनसे उलझने की कोशिश न करो। उनके सामने उफ़ भी न कहो, उनके एहसान याद रखो, उनकी नाशुक्री न करो। उन पर किसी भी क़िस्म का एहसान न जताओ। अपने काम अपने हाथ से करो। अपनी ज़रूरत की चीज़ें काग़ज़, क़लम, दवात, सियाही, सूई, धागा, कपड़े, जूते, वग़ैरह अपने ठिकाने पर रख दो। अगर इन सब बातों की तुमको तमीज़ होगी तो मैं कहूँगा कि हाँ! तुमको कुछ आता है, नहीं तो तुम्हारा ख़्याल ग़लत है।

प्यारी बच्चियो! याद रखो कि अगर शुरू में इन ऐबों (कमियों) की तरफ़ तवज्जोह नहीं दी और इनका सुधार न किया तो आगे चलकर ये बुराईयाँ अपना रंग दिखाएँगी। तुम्हारी बद-अख़्लाक़ी, बेअदबी, बेहयाई, बुख़्ल, तकब्बुर और ज़िद ये वे ऐब हैं जो अभी तुम्हें मालूम न होंगे और माँ-बाप इन ऐबों को तुम्हारी नासमझी और छिछोरापन समझ कर ध्यान न देते हुए नज़र-अन्दाज़ कर देते हैं और समझते हैं कि आगे जाकर ख़ुद-ब-ख़ुद सुधर जाएँगी, लेकिन जूँ-जूँ तुम्हारी उम्र बढ़ती जायेगी वे बुरी आदतें तुम्हारे लिए ज़हरे-क़ातिल बन जाएँगी और जब तक ठोकरें न खाओगी उस वक़्त तक सुधार न होगा।

अक़्लमन्द आदमी वह है जो पानी आने से पहले उसको रोकने के लिए इन्तिज़ाम करे। वक़्त आने पर अक़्ल तुम्हें रास्ता बता देगी और शर्म तुमको बुरे कामों से बचा लेगी। तुम पर जो मुसीबत आन पड़ेगी अल्लाह पाक के हुक्म से आसान हो जाएगी। दुनिया का कारख़ाना अक़्ल पर ही चल रहा है। ख़ुदा-ए-पाक ने जिसको जितनी समझ और अक़्ल दी है वह उतनी ही ख़ूबियों के साथ अपना काम करता है। हर बिल्डिंग की मज़बूती और कमज़ोरी अक़्ल की कमी-बेशी पर टिकी है।

शौहर के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े

प्यारी बच्चियो! आओ मैं तुमको बताऊँ कि ससुराल में जाने के बाद शौहर के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने के क्या-क्या तरीक़े हैं। ख़ूब याद रखो कि मियाँ-बीवी के आपस के सम्बंध कच्चे धागे की तरह नहीं कि जब जी में आए तो तोड़कर अलग हो जाएँ बल्कि यह तो ज़िन्दगी भर का सौदा है। मौत के बिना यह बन्धन नहीं टूट सकता। पूरी ज़िन्दगी इसी में गुज़ारनी पड़ती है।

अगर दोनों मियाँ-बीवी का दिल मिल गया है तो इससे बढ़कर कोई नेमत नहीं, और यूँ समझो कि दुनिया ही में जन्नत उतर आई है। लेकिन अगर ख़ुदा न करे दोनों के दिल एक न हो सके तो फिर इससे बढ़कर कोई और मुसीबत नहीं, गोया कि यह दुनिया ही उनके लिए

जहन्नम बन जाती है।

शादी के बाद की ज़िन्दगी को कामयाब बनाना ज़्यादातर औरतों के हाथों में होता है। इसलिए जहाँ तक हो सके शौहर के दिल पर क़ाबू हासिल करके उसको अपना लेना चाहिए। पूरी तरह से उसके रंग में रंग जाना चाहिए। उसके इशारों पर चलना चाहिए। अगर वह यूँ हुक्म दे कि रात भर हाथ बाँधकर खड़ी रह तो दुनिया और आख़िरत की भलाई इसी में है कि थोड़ी तकलीफ़ बरदाश्त करके आख़िरत की भलाई की राह इख़्तियार करे।

दुनिया की निगाह में औरत उसी वक़्त मक़ाम हासिल कर सकती है जब वह शौहर के दिल में अपने लिए जगह बना ले। शौहर की नज़र में जिसकी इज़्ज़त न हो तो दुनिया की निगाह में उसकी क्या इज़्ज़त होगी। शौहर के दिल पर क़ाबू हासिल करके ही दुनिया को जन्नत बना सकती है और आख़िरत की भलाई भी हासिल कर सकती है।

शौहर का दिल जीत लेने की तदबीर

मियाँ-बीवी में एक-दूसरे से मुनासबत और जोड़ हो तो वैवाहिक ज़िन्दगी पूरी तरह सुख और इत्मीनान से गुज़रती है। इसके बिना ज़िन्दगी नामुकम्मल और दुखी मानी जाती है। इसी लिए औरतों को शौहर का दिल जीत लेने की तदबीर सीखनी चाहिए जिसके बिना चारा नहीं। औरत चाहे कितनी ही पढ़ी लिखी, ख़ूबसूरत और मालदार क्यों न हो, लेकिन इस तदबीर को जाने बिना वह शौहर के दिल की मलिका (रानी) नहीं बन सकती।

शौहर को अपना बनाने के लिए थोड़ी सी हिक्मत भरी (गुर की) बातें लिखी जाती हैं। जो औरतें शौहर की ख़िदमत और उनसे मुहब्बत को ईमान का अहम हिस्सा समझती हैं और शौहर के क़दमों में अपनी पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देने को अपनी कामयाबी समझती हैं, उन औरतों को अपनी ज़िन्दगी पुरसुकून बनाने के लिए इन बातों पर अमल किए बिना

चारा नहीं।

शौहर के हुकूक़

तुम्हारा शौहर ग़रीब हो तो भी तुम उसको मालदार ही समझो। उसकी इज़्ज़त करो। हर काम में उससे मश्विरा लो, जो कहे उसको फ़ौरन करो। उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कभी कोई काम न करो। हर बात में उसकी ख़ुशी का ख़्याल रखो। अपनी ख़ुशी पर उसकी ख़ुशी को तर्जीह दो। हर वक़्त उसके आराम का ख़्याल रखो। ऐसी कोई बात न करो जिससे उसके दिल को रंज पहुँचे। जो कुछ वह अपनी ख़ुशी से दे उसे ले लो, जो काम करने के लिए कहे इस तरह ख़ुशी से करो कि वह बेफ़िक्र हो जाए और थोड़ी आमदनी के बावजूद किसी क़िस्म की उलझन न हो।

ज़िन्दा-दिल बनकर रहो। इस तरह हंसी-ख़ुशी से पेश आओ कि तुमको देखते ही उसका दिल बाग़-बाग़ हो जाए और सब परेशानियाँ भूल जाए। अपनी ज़रूरतों से पहले उसकी ज़रूरतों को पूरी करो। जहाँ तक हो सके उसको अच्छा खिलाओ, खाने से पहले तुम ख़ुद उसके हाथ धुलाओ, ग़रीब हो तो हाथ से कपड़े सीकर पहनाओ। उसके सब काम अपने हाथ से करती रहो, चाय-पानी नाश्ता पहले ही से तैयार रखो, ऐसा कोई काम और कोई बात न करो जिससे उसको परेशानी हो। उसकी गुन्जाईश से ज़्यादा फ़रमाईश न करो, क्योंकि अगर वह न ला सकेगा तो उसको अफ़सोस होगा और अगर तुम्हारी क़िस्मत में होगी तो वह चीज़ तुमको ज़रूर मिल जाएगी। अपनी ज़रूरत जहाँ तक हो सके ख़ुद ही पूरी करो उसको तकलीफ़ न दो। जब वह घर आए तो उसके सामने अपना रोना मत रोओ। मालूम नहीं कि वह किस हालत में घर आया होगा और बाहर उस पर क्या-क्या बीती होगी।

खाते वक़्त ऐसी दिलचस्प बातें करो कि वह इत्मीनान से खा सके, क्योंकि बेफ़िक्री में दाल भी क़ोरमे जैसी लगती है और परेशानी में

बिर्यानी भी बेमज़ा लगती है। यह बात तजुर्बे से साबित हुई है कि कुछ नासमझ औरतें शौहर को आते ही अपनी दास्तान सुनाने बैठ जाती हैं और उसका खाना-पीना, उठना-बैठना सब दुश्वार कर देती हैं और फिर वह बेचारा कुछ खाया न खाया करके उठ जाता है। उसमें अल्लाह पाक भी नाराज़ होते हैं और शौहर भी नाख़ुश होता है, ऐसी बेअक़्ल से ख़ुदा बचाए।

अगर ख़ुदा पाक ने तुमको कुछ सलाहियत दे रखी है तो उसके काम में हाथ बटाओ, उसका बोझ हल्का करो, अपनी मीठी गुफ़्तगू से उसका ग़म दूर करो। उसके दुख-सुख में शरीक रहो। अगर कुछ परेशान मालूम हो तो उसकी परेशानी दूर करो। अगर वह क़र्ज़दार हो जाए तो तुम अपने हाथ के हुनर से उसके क़र्ज़ के बोझ को हल्का कर दो, फिर तुम्हारे पास कोई नक़दी या ज़ेवर हो तो उसकी ख़िदमत में पेश कर दो और कहो कि आपकी ज़ात के मुक़ाबले में ये चीज़ें कोई हक़ीक़त नहीं रखतीं। आप हैं तो सब कुछ है। ख़ुदा आपका साया मेरे सर पर हमेशा क़ायम रखे। ख़ुदा ने चाहा तो आप इससे बढ़कर चीज़ें ला देंगे और उन चीज़ों को देकर एहसान न जताओ और ऐसी कोई बात भी महसूस न होने दो, वरना सब कुछ बेकार हो जाएगा। हर वक़्त उसकी ख़िदमत में लगी रहो और उसके आराम व राहत की तरफ़ से कभी भी लापरवाही न बरतो। उसकी ख़िदमत में ग़फ़लत न करो, घर के सब काम-काज तुम अपने हाथ से ही करो, ख़ुदा तआला सुख के दिन भी दिखाएँगे।

ख़र्च कम करो, किफ़ायत से काम लो। जो कुछ मिले उसमें से कुछ जमा भी करती रहो, मामूली रक़म समझकर उड़ा मत दो। कपड़े ख़ुद सियो, खाना ख़ुद पकाओ, बच्चों की देखभाल ख़ुद करो। इस तरह काफ़ी रक़म जमा हो जाएगी और मुसीबत के वक़्त काम आएगी और लोगों के सामने हाथ फैलाना न पड़ेगा। तुम्हारा दिल भी ख़ुश होगा और फिर तुम्हारी अक़्ल व होशियारी पर शौहर शाबाशी देगा। कुछ बात पूछे तो नर्मी से जवाब दो, अगर वह किसी वक़्त गुस्सा हो जाए तो तुम नरम

बन जाओ। उसकी मर्ज़ी पर राज़ी रहो, वह चाहे तुम्हारे कामों से राज़ी न हो फिर भी तुम उसके हुकूक़ अदा करती रहो ताकि ख़ुदा तआ़ला तुमसे राज़ी रहे। वह जो कुछ कमा कर दे उसको ईमानदारी से ख़र्च करो, तुम खुद तकलीफ़ बरदाश्त करके भी उसकी ज़रूरतें पूरी करो।

ऐसा साफ़-सुथरा मामला करो कि हर आदमी देखकर या सुनकर खुश हो जाए। मर्द को अपनी कोशिश से जो कुछ हासिल होता है वह लाकर तुमको देता है, अब तुम्हारे इख़्तियार में है कि अगर तुम चाहो तो अपनी सलाहियत और लियाक़त से ख़ाक के घर को लाख का बना दो और अगर चाहो तो बेसमझी और फूहड़पने से उसको बरबाद कर दो। मर्द बेचारा इसमें क्या कर सकता है। देखो तमीज़, सलाहियत और हुस्ने-इन्तिज़ाम भी दुनिया में एक अजीब ही चीज़ है।

सलीक़ेमन्द और तमीज़दार बीवी कभी भी परेशानी नहीं उठाती और बद-नज़्मी से घर के सब ही लोग पनाह माँगते हैं। आये दिन नई-नई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। कभी चैन और इत्मीनान से खाना भी नसीब नहीं होता और मर्द बेचारा परेशान हो जाता है। आख़िर वह बेचारा कब तक और कितना देता रहे, आख़िरकार छुटकारा लेकर सुकून और चैन की तलाश में दूसरी ज़गह भटकता फिरता है। घर की ज़िन्दगी उसके लिए वबाल बन जाती है और बच्चे भी वबाले-जान बन जाते हैं और फिर वह घर आने में भी बोरियत महसूस करता है और उससे बेज़ार हो जाता है।

सलीक़ेमन्द बीवियाँ हमेशा घर को जन्नत नुमा बनाए रखती हैं। खुद भी सुकून और चैन से ज़िन्दगी गुज़ारती हैं और घर वाले भी आराम से रहते हैं। बल्कि ऐसी औ़रत घर वालों को आराम से रखती है।

अच्छा इन्तिज़ाम एक ऐसी ख़ूबसूरत और रोशन चीज़ है कि उसकी रोशनी दूर-दूर तक पहुँचती और फैलती है। हज़ारों हसीनाएँ अपने इन्तिज़ाम की कमी और सलीक़ेमन्द न होने की वजह से चुड़ैल जैसी लगती हैं। ज़्यादातर मर्द सूरत के मुक़ाबले में सीरत को पसन्द करते हैं।

वे ज़ाहिरी ख़ूबियों (दिखाई देने वाली अच्छाईयों) के बजाय बातिनी ख़ूबियों (न दिखाई देने वाली अच्छाईयों) के दिलदादा होते हैं। जो औरतें मर्द की ताबेदार और फ़रमाँबरदार होती हैं ऐसी औरतें अपने शौहर को चाहे वह कितना ही बद-मिज़ाज और नालायक़ ही क्यों न हो, आख़िरकार अपना ताबे बनाकर छोड़ती हैं।

ये बातें कुछ मुश्किल भी नहीं लेकिन अफ़सोस! कितनी औरतें समझती हैं कि हम जितनी तेज़ी और रौब दिखाएँगी मर्द उतना जल्द हमारा ग़ुलाम और ताबेदार बन जाएगा। यह सब ग़लत ख़्यालात हैं। जो औरतें मुहब्बत व प्यार और दुनिया की शर्म और ख़ुदा के ख़ौफ़ से और अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के जज़्बे से अपने शौहर की ख़िदमत करती हैं, वही आगे चलकर अपने शौहर की महबूबा बनकर रहती हैं। और फिर मर्द उस पर अपनी जान तक क़ुरबान करता है। उसके आराम का, उसकी रज़ामन्दी का ख़्याल रखता है और उसके नाज़ उठाता है। उसकी हर दिली ख़्वाहिश पूरी करता है, उसके दुख को अपना दुख समझता है और जो कुछ कमाकर लाता है सब उसके हाथों में रख देता है। कभी किसी बात का हिसाब नहीं माँगता। ऐसे मियाँ-बीवी की ज़िन्दगी सुकून और आराम से गुज़रती है और यह नेमत अ़क़्लमन्द बीवियों को नसीब होती है और बेवक़ूफ़ औरतें इससे मेहरूम रहती हैं। इसलिए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम अगर अ़क़्ल से काम न लो तो कम से कम उसकी ख़िदमत ही को अपना ज़रूरी फ़र्ज़ समझो इससे भी कुछ समझ-बूझ पैदा हो जाती है।

अ़क़्लमन्द बीवियो! तुम अनानियत और ग़ुस्से को छोड़ दो, बड़ाई और ग़ुरूर को पास न फटकने दो। पराये आदमी के साथ तन्हाई में बातचीत न करो, किसी के आगे शौहर की बुराई न करो, और उसके ख़िलाफ़ एक शब्द भी न बोलो। शौहर को खाना खिलाने से पहले ख़ुद न खाओ, जिस बात में उसको दिलचस्पी न हो उसको बिल्कुल छोड़ दो। ग़ुस्से वाले शौहर को भी ख़िदमत से मरऊब करो। उसकी ख़्वाहिश के

मुताबिक़ हो जाओ। ऐसा काम करो जिससे वह राज़ी रहे। उसकी राज़ की बातें दिल में ही में महफ़ूज़ रखो। ऐसा बनाव-सिंगार करो जैसा उसको पसन्द हो, ख़राब और बद-चलन औ़रतों की सोहबत को छोड़ दो। इस तरह बरतोगी तो तुम्हारा नसीब अच्छा हो जाएगा और तुम्हारा शौहर ताबेदार हो जाएगा और हमेशा तुम्हारे नाज़ उठायेगा।

हर औ़रत की दिली ख़्वाहिश क्या होती है?

आ़म तौर से हर औ़रत चाहती है कि मेरा शौहर मेरा ताबेदार बनकर रहे और वह मुझसे पूछ-पूछकर हर काम करे। घर के काम-काज और इसी तरह दूसरे कामों में मुझसे मश्विरा ले। अपनी तन्ख़्वाह की सारी रक़म मुझे सौंप दे और मैं ही घर का सारा निज़ाम चलाऊँ। ऐसी ख़्वाहिश हर औ़रत की होती है, यह क़ुदरती बात है। लेकिन इस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए कोई कोशिश नहीं करती। शौहर के साथ ज़रा-ज़रा सी बात पर गुस्सा होने वाली और गुस्से में ख़फ़ा होकर मैके चली जाने वाली और इसी तरह शौहर के रुतबे और उसकी इ़ज़्ज़त का ख़्याल न रखने वाली, लिबास और ज़ेवरात के लिए रोज़ाना झगड़ा करने वाली और शौहर पर अपनी मर्ज़ी चलाने वाली औ़रत शौहर के घर को ही नहीं बल्कि अपनी ज़िन्दगी को भी तबाह कर देती है।'

शौहर से मुहब्बत करना सीखो

अपने शौहर को अपना बनाने के लिए औ़रत को शौहर से मुहब्बत का अन्दाज़ और तरीक़ा सीखना चाहिए। शौहर कितना ही गुस्से वाला और बुरा, बदमाश, बेवक़ूफ़, आवारा हो लेकिन उसको सही रास्ते पर लाने की कुंजी औ़रत के हाथ में है। बहुत सी ऐसी मिसालें मौजूद हैं, कि औ़रतों ने अपने शौहरों का सुधार किया है। आवारा-गर्द शौहर को भी सही राह पर लाने वाली और सब्र करने वाली औ़रतों की कमी नहीं, शौहर के दिल को अपनी मुट्ठी में रखने के लिए उसकी हर ख़्वाहिश के ताबे बन जाए। उसकी ग़लतियों को दूर करने के लिए अच्छी मिसालें

देकर समझाए। उसको दीनी माहौल में भेजे, घर में हदीस की तालीम करे, और दीन की बातें शौहर को भी सुनाए। उसको जिस काम से ख़ुशी होती हो ऐसे काम करे, दिल की गहराईयों और पुरख़ुलूस तरीक़े पर उसकी ख़िदमत करे तो शौहर एक न एक दिन ज़रूर उसका ताबे हो जाएगा। जो औ़रत अपने शौहर से सच्ची मुहब्बत करती है ऐसे शौहर की मजाल नहीं कि वह अपनी औ़रत का बेवफ़ा बनकर इधर-उधर भटकता रहे।

शौहर के दिल को जीत लो

दिल की गहराईयों से मुहब्बत की सदा (आवाज़) देकर शौहर के दिल को जीत लो। घर साफ़ और सुथरा रखो, घर में सजावट की चीज़ों को सलीक़े और तरतीब से रखो। अपनी पाकीज़ा और सच्ची मुहब्बत भरी निगाह शौहर पर रखो। वह जब घर में दाख़िल हो तो ख़ुश होकर उसका स्वागत करो, शौहर से बहस व मुबाहसा के बजाय उसकी ताबेदारी को तर्जीह दो। अपनी वैवाहिक ज़िन्दगी को कामयाब बनाने के लिए ये सुनहरे उसूल हैं जिन पर हमेशा तुम्हारी तवज्जोह होनी चाहिए।

तुम अपना मुँह उधर कर लो

जहाँ मर्द-औ़रत एक दूसरे की मुख़ालफ़त करते हैं, जहाँ एक दूसरे से मुहब्बत नहीं, प्यार नहीं, हमदर्दी नहीं, जिस घर में मुहब्बत की आवाज़ बुलन्द नहीं होती, जहाँ औ़रत कड़वी ज़बान की होती होती है या फिर शौहर के साथ बात-बात में इस तरह होता हो कि "तुम अपना मुँह उधर कर लो हम अपना मुँह इधर कर लें"। ऐसे घर में ख़ुशी और मुसर्रत के शादयाने कैसे बज सकेंगे। ऐसे में मुहब्बत का गुलशन कब लहलहा सकता है। और फिर मर्द व औ़रत के मचलते हुए दिल के अरमान कैसे पूर होंगे और ऐसे घर की गाड़ी कामयाब तरीक़े पर कैसे चल सकेगी।

मुहब्बत की गिरह मज़बूत कर लो

मर्द व औ़रत की वैवाहिक ज़िन्दगी की गिरह तो खुदा की लगाई हुई है, यह गिरह तो इस्लाम के उसूल के मुताबिक़ बाँधी गई है। इस गिरह को इतना नाज़ुक तसव्वुर न किया जाए कि मामूली झटके से टूट जाए। औ़रत ने जब मर्द से शादी की है तो उन दोनों को एक दूसरे का वफ़ादार रहना चाहिए। इस गिरह को मज़बूत से मज़बूत तर बनाना औ़रत के हाथों में है। सरताज के दिल से गिरह बाँधकर औ़रत चाहे तो इस दुनिया को भी जन्नत बना सकती है, सरताज के क़दमों में अपना तन मन धन निछावर कर दे, उसके सुख में सुखी और उसके दुख में दुखी बने, तब ही प्रेम मुहब्बत के बन्धन मज़बूत होंगे और यही गिरह मज़बूत गिरह कही जाएगी। प्रेम और मुहब्बत बाज़ारी सौदा नहीं होता, इस राह में तो सब कुछ देना ही पड़ता है, लेना कुछ नहीं होता।

शौहर की पसन्द को जान लो

औ़रत को अपने शौहर पर फ़तह हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि वह अपने अन्दर ऐसी अच्छाईयाँ पैदा करे जो शौहर को पसन्द हों। उसके शौहर को क्या पसन्द है, उसको किस तरह खुश किया जाए और वह किन कामों से खुश होता है, इन तमाम बातों को जान लेना औ़रत के लिए ज़रूरी है। जो उसको महबूब हों ऐसी चीज़ें लाना, ऐसा बनाव-सिंगार करना, ऐसे खाने पकाना। शौहर की क्या ख़्वाहिश है और कौन सी ख़ूबियाँ उसको अपनी तरफ़ मुतवज्जह करती हैं, ये सब बातें औ़रत को ज़ेहन में बैठा लेनी चाहिएँ। शौहर की खुशी में ही अपनी खुशी समझनी चाहिए।

शौहर की पसन्दीदा बनो

बहुत से मर्द अपनी ख़ूबसूरत औ़रतों को छोड़कर पराई औ़रतों के साथ घूमते हुए नज़र आते हैं। इसकी वजह क्या है? शौहर को अपनी

तरफ़ मुतवज्जह करने के लिए आला तालीम, धन व दौलत की रेल-पेल या मचलते और छलकते हुस्न की ज़रूरत नहीं, इसके लिए तो शौहर को माईल करने की मालूमात होंने की ज़रूरत है। कितने ही मर्द ऐसे होते हैं जो अपनी हूर व परी जैसी औरत को छोड़कर पराई औरत के हुस्न की, उसके चाल चलन की और उसकी अदाओं की तारीफ़ करते हैं। क़ीमती लिबास से सजी हुई अपनी औरत उसको पुरकशिश नहीं लगती। इसकी क्या वजह है?

वजह यही है कि शौहर किस तरह मुतवज्जह हो, उसको किस तरह क़ाबू में लिया जाए, उसका दिल किस तरह जीता जाए, इस क़िस्म के आर्ट, तदबीर और जानकारी से कुछ औरतें अनजान होती हैं। इसलिए शौहर का दिल जीतने के लिए इन तदबीरों को जानना हर औरत के लिए लाज़िमी है।

मर्दों को क्या पसन्द है

कौनसी ख़ूबियों से शौहर के दिल को जीता जाए, इसका यक़ीनी जवाब तो मुश्किल है, क्योंकि हर शख़्स का मिज़ाज अलग-अलग होता है। किसी को बनाव-सिंगार पसन्द होता है तो किसी को सादगी भाती है। किसी को फ़ैशन पसन्द होता है, किसी को सीधी-सादी और शर्मीली औरत से प्यार होता है। किसी को बातूनी पसन्द होती है तो किसी को मासूम और भोली-भाली सूरत से मुहब्बत होती है। कोई बाँकी बाँकी अदाओं का दिलदादा, तो कोई नाज़ व नख़रों को गले से लगाता है। कोई मुस्कुराहट बिखेरने वाली औरत को पसन्द करता है तो कोई अपनी ताबेदारी करने वाली औरत को पसन्द करता है।

मतलब यह कि हर एक का अलग-अलग नज़रिया और अलग-अलग पसन्द होती है। इसलिए हर एक औरत को ऐसी ख़ूबियाँ और ऐसी तर्कीबें तलाश करनी चाहिएँ कि जिससे उसका शौहर उसकी तरफ़ ललचाए और उसका शैदाई रहे। शौहर की पसन्द की कुछ ख़ूबियाँ ये हैं:

1. सबसे पहली ख़ूबी जिसमें कशिश होती है वह हुस्न और ख़ूबसूरती है। औरत बहुत ख़ूबसूरत होनी चाहिए यह कोई ज़रूरी नहीं, अलबत्ता उसका बनाव-सिंगार और उसके लिबास पहनने की तर्कीब आदि में ऐसी सफ़ाई और अदा होनी चाहिए कि जिससे उसका जिस्म ख़ूबसूरत और आकर्षक बन जाए।

2. दूसरी ख़ूबी दिल की मासूमियत और क़द्र-दानी का जज़्बा है। कीना रखने वाली, झूठी, मैले दिल की औरत को मर्द हमेशा लानत करता है। इसलिए औरत को क़द्र-दानी के जज़्बे और दिल की मासूमियत और अपनाईयत का नमूना पेश करने की सख़्त ज़रूरत है। इससे उसमें ख़ूबसूरती और हया, ये दोनों ख़ूबियाँ पैदा होती हैं। कीना पालने वाली और मैले दिल की औरत अपने शौहर के भरोसे को हासिल नहीं कर सकती। इतना ही नहीं बल्कि दूसरे लोग भी उसको इज़्ज़त की निगाह से नहीं देखते।

3. हर शौहर यह चाहता है कि मेरी बीवी मुझसे समझ और अक़्ल में कम होनी चाहिए। चालाकी और होशियारी में औरत शौहर से बढ़ जाये यह बात मर्द को पसन्द नहीं। मामूली पढ़ा लिखा शख़्स भी एक ग्रेजुऐट औरत के साथ शादी करके सही और कामिल इत्मीनान नहीं पा सकता, क्योंकि इसमें उसको अपनी कमज़ोरी और अपनी तौहीन महसूस होती है। इसलिए औरत को कभी भी शौहर के आगे अपनी होशियारी और अक़्लमन्दी की तारीफ़ नहीं करनी चाहिए। और कभी भी शौहर की समझ और अक़्ल व होशियारी की कमज़ोरी ज़ाहिर न करे।

औरत की समझ और होशियारी से मर्द डर सकता है लेकिन मुहब्बत नहीं कर सकता। इसके अलावा औरत भी अपने लिए ज़्यादा बर्तरी वाले और बहादुर शौहर को पसन्द करती है। अपने इशारे पर नाचने वाले मर्द को ज़्यादा पसन्द नहीं करती।

4. मर्द के दिल को अपनी तरफ़ झुकाने के लिए सबसे बढ़कर सिफ़त और ख़ूबी; ख़िदमत और तवाज़ो है। हर एक औरत को अपने

शौहर की ख़िदमत करनी चाहिए और उसके साथ तवाज़ो और ख़ाकसारी (विनम्रता) से पेश आना चाहिए। इससे शौहर की मुहब्बत बढ़ती है और औ़रत को भी इत्मीनान नसीब होता है। ढीट, बेहया और ज़िद्दी औ़रत को मर्द कभी पसन्द नहीं करता। फ़रमाँबदार औ़रत ही शौहर के दिल को जीत सकती है।

5. मर्द ऐसी औ़रत को दिल से चाहता है जो उसकी ग़लतियों को दरगुज़र (माफ़ और नज़र-अन्दाज़) करे। उसके ऐबों को जानते हुए भी उससे मुहब्बत करे और जिसके बर्ताव में अपनाईयत, ख़ुलूस और बातचीत में मिठास हो, ऐसी औ़रत को ही मर्द दिल से चाहता है।

6. मर्द ऐसी औ़रत को पसन्द करता है जिसमें रहमदिली हो, दूसरों की तकलीफ़ देखकर उसके दिल में हमदर्दी का जज़्बा पैदा हो। किसी यतीम बच्चे को देखकर अपनी गोद में उठा ले, जिसका दिल कामिल इनसानियत के जज़्बात से भरा हुआ हो, ऐसी ही औ़रत शौहर को भाती है और पसन्द है।

अपना ही फ़ायदा चाहने वाली, बद-ज़बान और जिसकी ज़बान हमेश कैंची की तरह चलती हो, इसी तरह वह औ़रत जो हमेशा उदास और मायूस बनकर ख़ामोश रहने वाली हो, उसको कोई मर्द पसन्द नहीं करता।

7. मर्द के लिए पुरकशिश नज़र, औ़रत का मुस्कुराता हुआ चेहरा खुशदिली का सबब है। जो औ़रत खुद खुश रहती है वह दूसरों को भी खुश करती है और कर सकती है। औ़रत की यह ख़ूबी और सिफ़त मर्द के फ़िक्र व ग़म और थकान व परेशानी आदि को दूर करके उसको इत्मीनान, सुकून, मुहब्बत और ताज़गी बख़्शती है। थके-माँदे शौहर को खुशी और ताज़गी के साथ आराम देने की औ़रत को फ़िक्र होनी चाहिए। उसको जिन बातों से खुशी होती है ऐसी बातें करनी चाहिएँ। "हंसता और मुस्कुराता हुआ चेहरा हज़ारों दुख दूर करता है" यह कहावत औ़रत को याद रखनी चाहिए और यह ख़ूबी अपने अन्दर पैदा

करनी चाहिए। इसके लिए औ़रतों को "जो तुम मुस्कुराओ तो सब मुस्कुराएँ" नामी किताब पढ़नी चाहिए।

8. औ़रत का सबसे अहम वस्फ़ उसकी पाकदामनी है। पाकदामनी के नूर से औ़रत की ख़ूबसूरती दमक उठती है। जो औ़रत पाकदामन होगी वह अपने शौहर के लिए पूरे तौर पर वफ़ादार होगी और वही औ़रत पाकीज़गी के नूर से चमक दमक उठेगी। पाकदामनी की रोशनी जिस्म की ख़ूबसूरती से भी बढ़कर है। जिस औ़रत में यह रोशनी नहीं होती फिर चाहे कितना ही हुस्न उसके जिस्म में हो, फिर भी उसकी क़ीमत एक कौड़ी के बराबर भी नहीं होती। पाकदामनी के नूर से औ़रत जो चाहे वह काम करा सकती है। पाकदामनी के नूर से ही औ़रत अपने ग़रीब घर को भी मालदार बना कर उसमें जन्नत जैसे आराम व सुख पाने का नमूना दिखा सकती है।

जो औ़रत हर बात अपनी ख़्वाहिश के अनुसार करना चाहती है या दूसरों से कराना चाहती है, जिसको दूसरों की ख़ुशी व नाराज़गी की कुछ परवाह नहीं, ऐसी औ़रत अपने शौहर के दिल में कभी भी इ़ज़्ज़त व सम्मान का मक़ाम हासिल नहीं कर सकती। शौहर की ताबेदारी करो, पूरी दुनिया तुम्हारे ताबे हो जाएगी। शौहर का भरोसा हासिल करो तो तुम घर का पूरा एतिमाद हासिल कर सकोगी। शौहर की मुहब्बत और उसके दिल को जीत कर अपने ग़रीब और छोटे से घर को जन्नत का नमूना बना दो।

❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋

माँ और बेटी का सवाल व जवाब

लो आ भी गई डोली		जी भर के नहीं रो ली
जब जाना ही जाना है		क्या अपना ठिकाना है
जी भर के तो रोने दो		जी हल्का तो होने दो
सब रिश्ते मुहब्बत के		प्रेम के उलफ़त के
और प्यार के चाहत के		मैं तोड़ चली सारे
माँ, बाप, बहन, भाई		मैं छोड़ चली सारे
मैं बाग़ की चिड़िया थी		या खेल की गुड़िया थी
क्या जल्दी है गुज़रा		यह कुंवार पन मेरा
हर एक सहेली को		हर साथ की खेली को
जी खोल के मिलना था		जी भर के न देखा था
गो छोड़ चली सब को		लेकिन मेरे दिल में हो
भूलूँ न मैं कभी तुमको		ता हश्र कुछ भी हो
हरगिज़ न भुलाऊँगी		अम्माँ तेरी उलफ़त को
अम्माँ तेरी चाहत को		इस प्यार को, शफ़्क़त को
इस मेहर व मुहब्बत को		जिसने मुझे पाला है
क्या ख़ूब खिलाया पहनाया है		क्या ख़ूब दीन सिखाया है
हरगिज़ न भूलाऊँगी		यह रहम व करम तेरे
उस प्यार को ममता को		जिसमें कि पली हूँ मैं
जो लेके चली हूँ मैं		भूलूँ न कभी मैं तुमको
पर यह भी न भूलूँगी		जो तूने किया मुझ से
यह आख़िरी बर्ताव		जो तूने किया मुझ से
दुनिया का दिखलावा		और घर से निकलवाया
तक़दीर की बेटी को		कर्मों जली बेटी को
क्या देश निकाला है		अपने घर से निकाला है

माँ का जवाब

सुन ओ मेरी दुखियारी	आई है तेरी बारी
हर एक पे बीती है	हर एक पे गुज़री है
हर एक पे आता है	यह वक़्त जुदाई का
यह रीत है इस जग की	और रस्म है दुनिया की
अम्माँ जिसे कहती हो	यह भी थी कभी बेटी
और लाडली बेटी थी	एक कर्मों जली माँ की
जिसके हो पड़ी पाले	उससे न जुदाई हो
वह तेरा हो तू उसकी	परवाह तुझे फिर किसकी
वह तख़्त पे बिठलाए	या ऐश वह दिखलाए
वह सख़्ती करे राहत में रखे	या पाँव में मसल डाले
लेकिन न तेरे मुँह से	निकले न कभी उफ़! भी
है हाथ में अब तेरे	नामूस बुज़ुर्गों की
बदला मेरी मेहनत का	समरा मेरी उलफ़त का
सब कुछ यहीं मिल जाए	शादाँ तू घर जाए
मेहनत से रियाज़त से	सर तोड़ मशक़्क़त से
दुख दर्द से, मेहनत से	या प्रीत से, उलफ़त से
मतलब कि किसी ढब से	उसको न बिगड़ने दे
जिससे है पड़ा पाला	हो तेरा वह रखवाला
ये ख़ुशियाँ, ये रंग-रलियाँ	यह ऐश, यह राहत सब
आराम की बेफ़िक्री	सब आरज़ी चीज़ें हैं
अल्लाह तुझे वहाँ पर दे	इस से भी कहीं ज़्यादा
मौला तुझे सब कुछ दे	उस घर में मुसर्रत सब

भूले से न याद आए		माँ-बाप का घर तुझको
पर माँ की नसीहत को		भूलो न कभी दिल से
ख़ाविन्द की ख़िदमत को		सरताज की सेवा को
फूलोगी फलोगी तुम		जब याद करोगी तुम
सच कहती थी माँ मेरी		और सच्ची ही नसीहत थी
ख़ाविन्द भी औरत के लिए		एक रब्बे मजाज़ी है
जो उसको रखे शादाँ		जो उसकी रहे बनकर
दुनिया उसे जन्नत है		उक़्बा उसे जन्नत है

सच कहती थी माँ मेरी

सास बहू का झगड़ा

आम तौर पर लोगों में एक रिवाज हो गया है जिसको देखा भी जा रहा है, कि लड़के शादी और निकाह के बाद भी माँ-बाप के साथ ही रहते हैं। माँ-बाप अपनी मर्ज़ी से अपने बेटों की उस उम्र में शादी करा देते हैं कि उनमें उस वक़्त घर चलाने की और ख़र्च बरदाश्त करने की ताक़त और सलाहियत नहीं होती। माँ-बाप खुद ही उनका ख़र्च बरदाश्त करते हैं तो इस सूरते-हाल में उनको माँ-बाप के सांथ एक ही घर में रहे बिना चारा-ए-कार नहीं। इस तरह सास और बहू एक साथ न रहें तो और क्या करें।

उपरोक्त रिवाज आम तौर पर हमारे ज़्यादातर घरों में देखने में आता है। अब अगर कोई लड़का अपनी मर्ज़ी से अपने माँ-बाप से अलग हो जाए और अपनी औरत को लेकर अलग घर में रहे तो लोग उसको बुरा-भला कहना शुरू कर देते हैं और उसको नादान, बुद्धू, बेसमझ, बेवकूफ़ आदि कह डालते हैं। और इस रवैये से माँ-बाप को भी दुख होता है। उनकी मुहब्बत इस बात को गवारा नहीं करती कि बचपन से पाल-पोस कर बड़ा किया हुआ लड़का इस तरह एक दम से माँ-बाप

के घर को सूना बनाकर चला जाए। और बात भी ठीक है, हज़ारों लाड और तमन्नाओं से बेटे की शादी की और जब पोता पोती की बहार देखने का मौक़ा आया तो माँ-बाप से अलग हो गया।

मतलब यह कि सब एक साथ रहते हैं और यह साथ उस वक़्त छूटता है जब सास-बहू में से कोई इस दुनिया से रुख़्सत होकर क़ब्र का कोना आबाद करे।

शायद ही कोई ख़ुशनसीब बहू हो जो इस मुसीबत से बच जाए। वरना तो हर एक बहू को इस पुलसिरात से गुज़रना पड़ता है। जब एक ही घर में साथ रहना ही ज़रूरी क़रार पाया तो फिर कोई वजह नहीं कि आपस में झगड़े फ़साद न हों। वह कहावत है ना कि: "दो बर्तन जमा हों तो उनमें टकराव होता है"।

बेजान चीज़ों का जब यह आलम है कि एक जगह रहकर लड़े-झगड़े बिना नहीं रहतीं तो फिर सास और बहू जैसी अलग-अलग मिज़ाजों और बदगुमानियों से भरी हुई हस्तियों में एक साथ रहकर आपस में झगड़ा न हो, इस तरह मुक़ाबला न हो, यह कैसे हो सकता है? एक साथ रहे बिना चारा-ए-कार नहीं। जब तक रहने-सहने के रिवाज और इन्तिज़ाम में तबदीली न हो और यह अपने इख़्तियार से बाहर की चीज़ है। इसलिए इस सिलसिले में कुछ लिखना भी फ़ुज़ूल है। रह गई सास-बहू की तकरार और टकराव तो अलबत्ता इसकी इस्लाह (सुधार) हो सकती है।

झगड़ा और तकरार कैसी बुरी चीज़ है

लड़ाई-झगड़े के बारे में ज्यादा कहने की ज़रूरत नहीं, सब जानते हैं कि लड़ाई चाहे किसी के साथ ही क्यों न हो बहरहाल अच्छी नहीं, बल्कि ख़राब ही ख़राब है। लड़ाई-झगड़ा आपस के सुकून, इत्मीनान और राहत व आराम का सत्यानास कर देता है। दोनों फ़रीक़ के दिलों में एक दूसरे की तरफ़ से नुक़सान पहुँचने का हमेशा ख़तरा रहता है।

ख़ास कर जहाँ मियाँ-बीवी और सास-बहू में लड़ाई झगड़ा हो तो फिर सुख-चैन और सुकून टुकड़े-टुकड़े हो जाता है और घर जहन्नम का जीता-जागता नमूना बन जाता है।

जिन घरों में इस क़िस्म की लड़ाई झगड़ों का बाज़ार गरम हो तो उनकी मुसीबतों और तकलीफ़ों का पूछना ही क्या, दोज़ख़ में रहना और उस घर में रहना बज़ाहिर दोनों बराबर हैं, आराम और इत्मीनान का सत्यानास हो जाता है। हर वक़्त यही ख़्याल रहता है कि उसने यूँ क्यों किया, ऐसा ताना क्यों मारा, मेरा क्या क़सूर है, दूसरी बार दिखा दूँगा वग़ैरह। सास ऐसी फ़िक्र करती है कि बेटे और बहू में इत्तिफ़ाक़ और मुहब्बत बढ़ने न पाए। वरना मुझे दूध की मक्खी की तरह उठा कर फेंक देंगे और बहू रानी हमेशा इस फ़िक्र में रहती है कि कोई आसमानी गोला आकर सास के सर पर फटे कि वह वहीं ढेर हो जाए और पानी तक माँगने न पाए। और अगर ऐसा न हो तो फिर कोई और तरीक़ा जादू या छू-मन्तर करने का हाथ आ जाए कि अपने अमल के बल-बूते पर सास को ख़त्म कर दे और किसी को वहम भी न जाए कि यह काम बहू रानी का करवाया हुआ है।

ऐसे झगड़ों में शौहर के लिए एक अजीब कश्मकश पैदा होती है। जब वह माँ की तरफ़ निगाह करता है तो माँ के बेशुमार हुक़ूक़ उसकी निगाहों के सामने घूम जाते हैं। उन हुक़ूक़ के पेशे-नज़र अगर माँ की तरफ़दारी करता है तो बीवी को नागवार गुज़रता है, जबकि पूरी ज़िन्दगी बीवी के साथ गुज़ारनी है। और अगर बीवी की तरफ़दारी के लिए सोचता है तो माँ उसको नालायक़ क़रार देने और दूध माफ़ न करने की धमकी देती है, बेचारा शौहर अब क्या करे, एक अजीब मुसीबत में फंस जाता है और एक तरफ़ बीवी है जिसके साथ पूरी ज़िन्दगी गुज़ारनी है उससे बिगाड़ कर ज़िन्दगी पुरसुकून नहीं गुज़ार सकता और दूसरी तरफ़ माँ है जिसने उसको नौ महीने पेट में रखा और बड़ी तकलीफ़ों के बाद उसे जन्म दिया है, दूध पिला-पिला कर बड़ा किया है, रातों को जागी है, जन्नत भी हाथ से जाती है, क्योंकि औलाद

की जन्नत माँ के पैरों तले है और दुनिया में भी बदनाम होना पड़ता है।

इस मुक़ाबलेबाज़ी और कश्मकश से बचने के लिए हमको ऐसी राह तलाश करने की कोशिश करनी चाहिए कि सास और बहू की तकरार व झगड़े का ख़ात्मा हो जाए। दोनों के बीच नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा होने न पाए, बल्कि दोनों के दिलों से हसद व बुग्ज़ और नफ़रत का काँटा दूर हो जाए और एक को दूसरे की मुख़ालफ़त में कुछ कहने की ज़रूरत न पड़े। इस सिलसिले में सबसे पहले झगड़े के असबाब और उसके कारणों को तलाश करना ज़रूरी है, उसके बाद उन झगड़ों को कैसे रोका जाए इसकी तदबीर करनी होती है।

अगर कोई समझदार औरत इस मामले को सामने रखते हुए अमल करना चाहे तो उसका घर लड़ाई-झगड़े से पाक हो जाए और वह पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ार सके। इसके लिए शौहर और ससुर को किताब "तोहफ़ा-ए-ज़ौजैन" (लेखक हज़रत थानवी रह०) को पढ़ना चाहिए और वअ़ज़ "बीवी के हुक़ूक़" मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब दामत् बरकातुहुम को देखना भी बहुत ही ज़रूरी है।

झगड़े के कारण सास की तरफ़ से

सास की तरफ़ से झगड़े के कई असबाब (कारण) हो सकते हैं। सबसे अहम सबब घरों में दीन का न होना है। जब घरों में दीन आएगा अल्लाह तआ़ला के अहकाम ज़िन्दा होंगे तो ये मुसीबतें, बलाएँ ख़त्म हो जाएँगी।

पहला सबबः सास के दिल में ख़ुद-ब-ख़ुद क़ुदरती तौर पर ऐसी बदगुमानी पैदा हो जाती है कि जिस बेटे को मैंने मुसीबतें बरदाश्त करके और ख़ून का पानी करके पाला है। एक नई आई हुई लड़की उस पर क़ब्ज़ा कर लेगी और फिर बेटा मेरे क़ब्ज़े से निकल जाएगा।

दूसरा सबबः सास अपने घर की मालिका होती है। पूरे घर पर उसकी हुकूमत चलती है। अपनी ताक़त और अपने इख़्तियार से घर का

हर काम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करती है। और अब बहू के आने के बाद ख़तरा पैदा हो जाता है कि मेरी हुकूमत ख़त्म हो जाएगी, बहू भी घर में हुकूमत करने लगेगी और हर काम में दख़ल-अन्दाज़ी करेगी, इसलिए मेरी हुकूमत की लगाम कमज़ोर होकर टूट जाएगी।

तीसरा सबबः सास सिर्फ़ अपने शौहर ही के माल व असबाब रुपये आदि को अपनी मिल्क नहीं समझती बल्कि बेटे की कमाई पर भी क़ब्ज़ा जमाना चाहती है और जब बहू उसमें से अपना हिस्सा चाहती है तो सास उसको बरदाश्त नहीं कर सकती।

चौथा सबबः सास के दिल में ज़्यादातर ऐसा वहम पैदा हो जाता है कि बहू मेरे घर की चीज़ें अपने माँ-बाप के यहाँ भेज देती है।

पाँचवाँ सबबः सास अपना वक़्त भूल जाती है। उसको याद नहीं रहता कि एक ज़माने में मैं भी बहू थी और मेरी सास भी मेरे साथ अच्छा बर्ताव न करती थी। अगर सास अपना वक़्त और ज़माना याद रखे तो समझ सकती है कि बहू भी एक इनसान है और उसके पहलू में भी दिल है।

छठा सबबः जब किसी मामले में ज़रा भी वहम हो जाता है तो फिर बदगुमानियों का सिलसिला शुरू हो जाता है और इसमें कई एक नई-नई बातें पैदा हो जाती हैं और फिर राई का पहाड़ बन जाता है।

सातवाँ सबबः बहुत सी सासें तबई तौर पर बहुत तेज़ और कड़वे मिज़ाज की होती हैं। अपनी इस तुन्द-मिज़ाजी की वजह से न तो ख़ुद सुकून से रहती हैं और न बहू को सुख का साँस लेने देती हैं। बात-बात में तन्ज़ किया करती हैं। बहू भी कब तक ख़ामोश रहे, तुर्की-ब-तुर्की जवाब देती है और फिर चीन और जापान की जंग शुरू हो जाती है। अल्लाह तआला ऐसे झगड़ों से हर घर की हिफ़ाज़त फ़रमाए।

नन्दों की नाराज़गी की वजह

यही हालत दीन से दूर नन्दों की भी होती है। जब भाभी घर में

आई तो माँ के ज़माने की तरह आज़ाद नहीं रहतीं, घर की हर चीज़ को हाथ लगाते हुए भी डरती हैं कि कहीं ऐसा न हो कि भाभी कुछ कह दे और यह बात उनकी तबीयत के ख़िलाफ़ होती है इसलिए वे भी भाभी से नफ़रत और बुग़ज़ की नुमाईश करने लगती हैं। एक तरफ़ भाई को उसकी मुख़ालफ़त पर उकसाती हैं दूसरी तरफ़ माँ से कानाफूसी करके उसको भी उकसाती हैं, खुद भी भाभी से लड़ने में कसर बाक़ी नहीं रखतीं और ख़ूब उसके अन्दर ऐब निकालती हैं। इस तरह माँ और भाई को भड़का करके आग में तेल डालती रहती हैं।

लड़ाई-झगड़े के कारण बहू की तरफ़ से

बहू बेचारी नातजुर्बेकार, नादान और नासमझ लड़की होती है। घरेलू किसी भी तरह का तजुर्बा नहीं होता कि किस तरह बड़ी बात मामूली बनाई जा सके, यह नहीं जानती और इस तरह ख़ामोश रहने और न बोलने की कितनी ख़ूबियाँ हैं इसका भी उसको होश नहीं होता। अपने शौहर को वह अपना ही ताबेदार देखना चाहती है कि सास या दूसरे किसी का ताबेदार हो यह बरदाश्त नहीं कर सकती। वह इस बात को ख़ूब जानती है कि सास मेरे हर काम की निगरानी करेगी और उस पर नुक्ताचीनी करेगी (ऐब और कमी निकालेगी)। वह इस तरह समझती है कि जस तरह इस घर में सास कभी बहू बनकर आई थी, मैं भी उसी तरह बहू बनकर आई हूँ। इसलिए सास से किसी भी तरह कम नहीं हूँ और उसको जितना इख़्तियार इस घर में है मुझे भी उतना ही इख़्तियार है। मैं इस घर में बाँदी या गुलाम बनकर नहीं आई।

अगर सास मुझ पर एक तोहमत रखेगी तो मैं उस पर चार तोहमतें रखूँगी। सास अगर मेरी तरफ़ आँख निकाल कर देखेगी तो मैं उसकी आँखें निकाल लूँगी। वह अगर मुझे चोर कहेगी तो मैं उसकी सात पुश्तें उखाड़ दूँगी। उसको उसकी सहेलियों ने पहले ही से ऐसा पढ़ा दिया होता है कि ख़बरदार! अगर एक बार भी दब गई तो फिर दबकर ही रहना

पड़ेगा। बेदीन बेपर्दा सहेलियों का यह सबक़ होता है "पहला इम्प्रेशन ही आख़िरी इम्प्रेशन होता है" इसलिए वह अपने दिमाग़ में दबकर रहने का ख़्याल तक नहीं आने देती।

अगर हालात के पेशे-नज़र किसी जगह और कोई चीज़ सबब बन जाए तो यह अलग बात है वरना मेरे ख़्याल के अनुसार यही 'असबाब' (कारण) होते हैं जिसकी वजह से बदगुमानियाँ बढ़ती जाती हैं और यह आग एक लम्बे ज़माने तक अन्दर ही अन्दर सुलगती रहती है और आख़िर में एक दिन एक दम से शोला बनकर भड़क उठती है, और फिर न ख़त्म होने वाली एक जंग शुरू हो जाती है और सास बहू पहलवानों की तरह खुल्लम-खुल्ला अखाड़े में उतर आती हैं। और फिर दिन-रात तरह-तरह की कुश्तियाँ चलती रहती हैं और अड़ोस पड़ोस वाले, मौहल्ले वाले इसी तरह दूसरे रिश्तेदार ख़ूब मज़े ले-लेकर मुफ़्त का तमाशा देखते हैं।

लड़ाई के ये असबाब सरासर ख़ुदग़र्ज़ी (अपने स्वार्थ) नादानी और नासमझी पर टिके होते हैं और सास बहू को लड़ाते हैं, लेकिन अगर दोनों ज़रा सी समझ और अक़्ल से काम लें, नादानी छोड़ दें और अपनी-अपनी हैसियत को पहचानें और दीनदार बन जाएँ, घरों में 'फ़ज़ाइले आमाल' की तालीम शुरू कर दें। 'इस्लाही ख़ुतबात' का मुताला करें तो बहुत ही आसानी से लड़ाई ख़त्म हो सकती है।

सास को क्या समझना चाहिए

सास को यूँ समझना चाहिए कि बहू भी एक इनसान ही तो है। उसके पहलू में भी तो दिल है। दिल में उमंगें और अरमान हैं। ज़िन्दगी गुज़ारने की तड़प है। वह अपने माँ-बाप के घर को हमेशा के लिए छोड़कर आई है और अब इसी घर को वह अपना घर समझती है। बहू उसके बेटे की आबरू है, लाज है।

वह ज़र-ख़रीद बाँदी नहीं। शौहर के उस पर हुक़ूक़ हैं। ये हुक़ूक़

खुदा और उसके रसूल और बन्दों ने उसको दिए हैं। उसको सुख-दुख का ऐसा ही एहसास होता है जिस तरह सास को होता है। सास भी किसी ज़माने में बहू रह चुकी है, जैसा सुलूक वह अपनी सास से चाहती थी ऐसे ही सुलूक की उम्मीद बहू भी उससे रखती है। सास अपनी ज़िन्दगी का हर मज़ा और लुत्फ़ उठा चुकी है, अब बहू की बारी है।

फ़र्ज़ करो अगर सास नर्मी न करे, झुकने को तैयार न हो और आग ही भड़काती रहे तो भी बहू घर छोड़कर भाग न जाएगी। तो फिर रोज़ाना की यह टक-टक और मुफ़्त की हड़भोंग आख़िर क्यों? लोगों को मुफ़्त का तमाशा दिखाने से क्या लाभ। पूरे ख़ानदान के वक़ार और आबरू को मिट्टी में मिलाने से क्या मिलेगा। सास को अपना बड़ापन दिखाकर बहू की ग़लतियों से माफ़ करना चाहिए। यह ग़लती और भूल, बहू जान-बूझकर नहीं करती बल्कि नादानी से हो जाती है, क्योंकि वह नातजुर्बेकार है, शायद ऐसी ग़लतियाँ ख़ुद सास से भी किसी ज़माने में हुई होंगी। इसलिए सास को चाहिए कि बड़ा दिल रखकर दरगुज़र से काम ले, तो फिर रोज़ाना की ये उलझनें और परेशानियाँ दूर हो जाएँगी और दिल को सुकून व इत्मीनान हासिल होगा।

बल्कि मेरे ख़्याल के मुताबिक़ अगर सास अम्माँ घर का पूरा इन्तिज़ाम अपनी ख़ुशी से बहू को सौंप दे और ख़ुद सारे बखेड़ों से अलग होकर ख़ुदा की याद में मशग़ूल हो जाए और फ़सादी जेठानियों की बातें न सुने तो यह बात हर एक के लिए बेहतर साबित होगी। बहू अगर नादानी से ऐसी ग़लतियाँ कर बैठे जो नुक़सानदेह हों तो अच्छे अन्दाज़ और नर्मी से उसकी इस्लाह करे और मामूली बातों पर उसको लान-तान न करे, जिस तरह कि वह अपनी लड़कियों से करती है। इस तरह घर का इन्तिज़ाम अच्छे ढंग से चलता रहेगा और फिर किसी परेशानी और उलझन का मौक़ा आएगा ही नहीं।

बहू को क्या समझना चाहिए?

बहू को यह बात सोचनी चाहिए कि अगर खुदा न करे सास उसकी दुश्मन होती तो वह अपने बेटे के लिए उसको क्यों पसन्द करती, और उसके साथ शादी कराकर उसको अपने घर में क्यों लाती?

याद रखो! सारी सासें ख़राब नहीं होतीं, बहुत सी जगह देखने में आया है कि बहू ही अपनी नादानी की वजह से घर का पूरा ढाँचा बिगाड़ देती है और माँ बेटे की मुहब्बत में काँटा भोंक देती है। बहुत सी बहुएँ ख़तावार होती हैं, उनसे सास को बहुत तकलीफ़ बरदाश्त करनी पड़ती है, ख़ास करके जब सास, बहू और बेटे की मोहताज बन जाए, उस वक़्त तो बहू बहुत बेलगाम हो जाती है। सास को तरह-तरह से तंग करती है, सताती है और तकलीफ़ें पहुँचाती है। वही सास जो कभी इस घर की रानी थी, अपने घर पर हुकूमत करती थी और उसको कोई रोकने वाला न था, अब वह बेबस हो चुकी है, सब इख़्तियारात उससे छिन गए हैं, बहू अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करती है और सास को तंग करती रहती है। गोया कि घर में उसका कोई हक़ ही नहीं।

खुदा ही बचाए ऐसी बदबख़्त और जाहिल बहुओं से। कई बहुएँ तो अपनी ख़िदमत भी सास से लेती हैं और सास को मजबूरन करना पड़ती है और वह अपने ज़माने को याद करके रोती हैं और बद-दुआएँ देती रहती हैं।

कई बहुओं में ऐसी ख़राब आदतें देखने में आती हैं कि वे घर की मामूली-मामूली बातों को बढ़ा-चढ़ाकर शौहर के सामने सास और नन्दों की बुराई करती हैं और शौहर को उनके ख़िलाफ़ भड़काती रहती हैं। बेचारे शौहर को असली मामले की जानकारी नहीं होती इसलिए वह औरत की चालबाज़ी और धोखे में आ जाता है और फिर वह माँ-बहनों के साथ उलझ जाता है और बहू दूर खड़ी तमाशा देखती है।

याद रखिए! ऐसी बहुएँ जो सासों पर ज़ुल्म करती हैं, दुनिया ही में

परेशानियों और ऐसी बुरी बीमारियों में मुब्तला हो जाती हैं। अल्लाह ही हम सबको आ़फ़ियत में रखे।

बहू को जान लेना चाहिए कि अगरचे वह बाँदी और ग़ुलाम नहीं मगर शौहर की ख़िदमत ख़ुदा तआ़ला ने उस पर फ़र्ज़ की है। इन्साफ़ की नज़र से शौहर के लिए माँ से बढ़कर दूसरे किसी का मर्तबा नहीं। माँ ने हज़ारों तकलीफ़ें बरदाश्त करके उसको पाला-पोसा है जो इस वक़्त इसका शौहर है। इसके शौहर की जन्नत अगर किसी के पैरों तले है तो वह उसकी बूढ़ी माँ है, जिसके बारे में रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत माँ के पैरों के नीचे है।

अगर बेवक़ूफ़ और कम-अ़क़्ल बीवी की शह से "चढ़ जा सूली पर" कहावत की तरह बेटा तैश में आकर नख़रेबाज़ और नट-खट बीवी की मुहब्बत में अंधा बनकर सूली पर चढ़ जाए और माँ से उलझ जाए तो वह जन्नत में किस तरह जा सकेगा? और जब शौहर ही जन्नत में न जाए तो अकेली बीवी को जन्नत में जाने से क्या मज़ा आएगा? क्योंकि शौहर की जन्नत तो इसी बूढ़ी माँ के क़दमों के नीचे है, इसलिए बहुओं को इस बात पर ग़ौर करना चाहिए।

शौहर की मुहब्बत के तुफ़ैल में बहू अपनी सास की ख़िदमत और चाकरी कर ले तो यह शौहर पर बहुत एहसान होगा। दूसरे यह कि सास की जितनी उम्र अब तक हो चुकी है आगे उतनी कहाँ बची है, उसकी उम्र तो अब थोड़ी रह गई है। सास के बाद वह इस गद्दी की वारिस होगी। घर की मालिका ख़ुद-मुख़्तार बनेगी। घर की कुल बागडोर उसके हाथ में आ जाएगी। इसलिए इस पर ग़ौर व फ़िक्र (विचार) करे कि जल्दी करने से क्या फ़ायदा। अगर सास उसकी तरफ़ से कुछ बदगुमान होती है तो उससे दरगुज़र करे, दिल बड़ा करके बरदाश्त कर ले। क्योंकि थोड़े ही ज़माने के बाद यह ख़ुद सास बनने वाली है और इस तरह की बदगुमानियाँ करने का इसको भी मौक़ा मिलेगा।

बहू को जान लेना चाहिए कि सास घर की ख़ुद-मुख़्तार बेगम और

मलिका होती है। वह फ़ितरी तौर पर चाहती है कि छोटे-बड़े सब उसके कहने पर चलें, उसी पर अ़मल करें, उसकी इ़ज़्ज़त करें और उसको अपना बड़ा समझ कर उससे पूछ-पूछ कर काम करें। बहू न माने और उससे बग़ावत करे यह बात सास को बरदाश्त नहीं हो सकती, उसकी कड़वी बातें और ज़बान-दराज़ी बरदाश्त नहीं कर सकती। इसलिए बहू के लिए ज़रूरी है कि हर हाल में उसके वक़ार (रुतबे और सम्मान) का ख़्याल रखे औ उसका अदब करे।

सास को भी जानना चाहिए कि बहू गुलाम बनकर इस घर में नहीं आई, कि अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ सब काम उससे कराती रहे। सास ख़ुद ही पसन्द करके अपने बेटे के लिए लाई है। वह जब दुल्हन को पसन्द करने गई तब वह रूप और ख़ूबियों का ख़ज़ाना थी और अब दुल्हन बनकर आते ही क्या उसमें कीड़े पड़ गए? क्या वह सास को काटने दौड़ती है? यह तो इस कहावत के मुताबिक़ हुआ कि:

जब तक बहू कुंवारी सास गई वारी
बहू का आया डोला सास को लगा गोला

अफ़सोस! अगर हमारी औ़रतें दीनी तालीम हासिल करतीं और मेहरम औ़रतों की जमाअ़तों में जाकर दीन पर अ़मल करने और उसको फैलाने की फ़िक्र करतीं, और रोज़ाना घरों में फ़ज़ाइले आमाल, फ़ज़ाइले सदक़ात की तालीम करतीं तो ऐसे नापाक झगड़े हमारे घरों मे पैदा न होते। और अगर होते भी तो इस क़द्र नहीं।

इस्लामी तालीम हासिल करने से इनसान में अच्छा-बुरा और ग़लत-सही पहचानने की तमीज़ पैदा हो जाती है, और जब यह तमीज़ और समझ आ जाती है तो फिर न तो सास बहू को तकलीफ़ देती है और न बहू सास को तंग करती है।

बहू का यह फ़र्ज़ है कि वह सास को अपनी असली माँ समझकर उसकी ताबेदारी करे, उसकी इ़ज़्ज़त व आदर करे, बल्कि माँ से भी बढ़कर सास का अदब करे। क्योंकि माँ तो माँ है और सास तो शौहर

की माँ है।

बहू यह सोचे कि सास की ख़िदमत से जो दुआएँ मिलेंगी वह मेरी आने वाली ज़िन्दगियों में मुझे कितनी बलाओं, मुसीबतों, आफ़तों से बचाएँगी। आज सास की डाँट पर थोड़ा-सा सब्र बहुत बड़ी मुसीबतों पर कड़वे सब्र से बचाएगा। सास की दुआ मेरी औलाद की हर मुसीबत के आगे मज़बूत क़िले की तरह होगी। सास की दुआएँ मेरे और मेरे घर वालों के लिए ज़िन्दगी का क़ीमती सरमाया होंगी। सख़्त सर्दी की रातों में बीमार सास की रात को ख़िदमत करना वह क़ीमती दौलत है जिसकी क़द्र इस दुनिया की आँख बन्द हो जाने पर ही मालूम होती है।

सख़्त गुस्से वाली सास जो देवरानी जेठानी की हर बात को सच्चा माने, फ़सादी नन्द की पढ़ाई हुई पट्टी पर हर्फ़-ब-हर्फ़ चले, ऐसी सास के साथ भी सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए अच्छा बर्ताव करना, उसकी ग़ीबत न करना, उसके लिए रातों को उठकर अल्लाह तआला से दुआएँ करना, अपनी ग़लती न होने के बावजूद यह कहना मेरी ग़लती हो गई माफ़ी माँगती हूँ आईन्दा नहीं करूँगी। यह वह क़ीमती दौलत और अनमोल मोती हैं कि जिस औरत में ये होते हैं उसी की गोद में अल्लाह तआला कोई ऐसी राबिआ बसरिया या कोई ऐसा रशीद अहमद गंगोही देते हैं जिससे लाखों इनसानों की काया पलट जाती है, लाखों लोग गुमराही के रास्ते से हिदायत की तरफ़ आ जाते हैं, जहन्नम के रास्ते से बचकर जन्नत के रास्ते पर आ जाते हैं।

बहू को चाहिए कि कभी भी माँ-बाप के घर जाकर ससुराल की बुराई न करे और जिस तरह माँ बाप के घर अपने काम-काज की ख़ूबियों की वजह से सबको प्यारी थी इसी तरह ससुराल में भी अपनी ख़ूबियों से काम लेकर सबके दिलों में अपना मक़ाम बना ले। क़ाबिले तारीफ़ बहू तो वह है जिसकी तारीफ़ मैके और ससुराल दोनों में लोग करते हों।

इसके साथ-साथ सास का भी फ़र्ज़ है कि वह अपनी बहू के साथ

नर्मी का बर्ताव करे और असली माँ की तरह रहम वाला सुलूक करे और यूँ समझे कि यह पराये घर की बेसमझ और नातजुर्बेकार लड़की अपने माँ-बाप, बहन-भाई सब को छोड़कर आई है। अब हमारे अ़लावा इसका कौन है। अगर हम भी इसके साथ सख़्ती बरतेंगे तो यह बेचारी कहाँ जाएगी और इसको कौन तसल्ली देगा।

अगर बहू उपरोक्त तदबीरों पर अ़मल करे तो सास चाहे कितनी ही तुन्द-मिज़ाज, लड़ाकू और आफ़त उठाने वाली हो वह भी बहू के साथ लड़ाई न कर सकेगी। वह यूँ समझेगी कि ऐसी गूँगी-बहरी बहू से क्या लड़ना, इसके साथ तो लड़ने में भी मज़ा नहीं आता। हर बात को बेहयाई से हंसकर टाल देती है और फिर सास मजबूरन ख़ामोश हो जाएगी।

अगर सास भी उपरोक्त तदबीरों पर अ़मल करे तो बहू चाहे कितनी ही ज़बान-दराज़ फ़ितना उठाने वाली, तूफ़ानी-मिज़ाज की और तेज़ मिर्च जैसी भी क्यों न हो, वह सास के मुक़ाबले पर न आ सकेगी और इस तरह ज़िन्दगी की गाड़ी इत्मीनान से चलती रहेगी।

इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से

हम आपके सामने सास-बहू देवरानी-जेठानी नन्द-भावज के साथ रहने और दीनदारी न होने की वजह से घरेलू झगड़ों को मिसाल के तौर पर समझाने की कोशिश करते हैं। अल्लाह करे हम इस कोशिश में कामयाब हों। अगर आप बहू हैं तो इसको पढ़कर इन ग़लतियों और ज़बान-दराज़ियों से बचें। सास का अदब करें। और अगर आप सास हैं तो कभी भी दो बहुओं को साथ न रखें। अगर मजबूरी की वजह से एक बहू को भी रखना हो तो ख़ुद बहुत ज़्यादा टक-टक न करें, बार-बार बावर्चीख़ाने में न जाएँ और अगर बहू ख़ुशी से तीन वक़्त आपको रोटी पकाकर देती है तो बावर्चीख़ाना उसके हवाले कर दें। हर मामले में बहुत ज़्यादा पूछ-गछ न करें और बहू अलग बावर्चीख़ाना

रखकर तीन वक़्त आपकी ख़िदमत करे तो यह बहुत ही बेहतर है, आप दिन भर तिलावत, ज़िक्र व तस्बीहात में और आई हुई मेहरम औरतों की जमाअतों की मदद में गुज़ारें। आपको तीन वक़्त अच्छी तरह इज़्ज़त से खाना मिल जाए तो इससे बेहतर और क्या है?

और अगर आप नन्द हैं तो ज़रूर समझा-बुझाकर अपनी भाभी को अलग रखवाएँ। चाहे छोटी सी कोठरी ही क्यों न हो। और अगर आप जेठानी हैं और आपकी देवरानी अलग होना चाहती है या इसके उलट हो तो आप मना न करें। अल्लाह तआ़ला हमारे घरों से सास बहू के झगड़े ख़त्म फ़रमाएँ और दोनों को अपने पूरे दीन पर अ़मल करने और उसको दुनिया भर में फैलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें।

मिसाल के लिये एक कहानी

अफ़ज़ाल अहमद………… एक नया शादीशुदा अमीर नौजवान

मरियम………… अफ़ज़ाल अहमद की दुल्हन

मुहम्मद वसीम………… अफ़ज़ाल अहमद का दोस्त

ज़ुबैदा………… अफ़ज़ाल अहमद की छोटी बहन

आमना बाई………… अफ़ज़ाल अहमद की अम्मी जान

मासी………… घर की नौकरानी

ख़ादिम………… अनीस।

✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪

शाम का सुहाना वक़्त है। अफ़ज़ाल अहमद अपनी दुकान से आ रहा है। रास्ते में उसका दोस्त मुहम्मद वसीम मिलता है।

मुहम्मद वसीमः अस्सलामु अ़लैकुम।

अफ़ज़ाल अहमदः व अ़लैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

मुहम्मद वसीमः कहो भाई कैसे हो?

अफ़ज़ाल अहमदः यार क्या बताऊँ, आज तो इतना काम जमा हो गया था कि कुछ पूछो ही मत। दो तीन आर्डर कैंसिल करवाने पड़े और

एक मुसीबत हड़तालों पर हड़तालें चल रही हैं।

मुहम्मद वसीमः ठीक है। आजकल काम का बोझ बहुत बढ़ गया है। पैमेन्ट वसूल नहीं हो रही, मैं भी निकलने की तैयारी में था कि उस्मान सेठ ने हिसाब का दफ़्तर लाकर रख दिया।

अफ़ज़ाल अहमदः और मज़े की बात यह है कि दुकान से थक-हारकर घर पहुँचते हैं तो वहाँ एक नई उलझन का सामना होता है।

मुहम्मद वसीमः हाँ भाई इनसान दुकान की उलझनों और उसके बखेड़ों से नहीं घबराता लेकिन घर की उलझनें, ख़ुदा की पनाह! रूह और जान को जलाकर ख़ाक कर देती हैं।

अफ़ज़ाल अहमदः सही बात है यार, तुमने तो दिल की बात कही। जब से शादी के चक्कर में फंसा हूँ अजीब कश्मकश में मुब्तला हूँ। अब जब घर पहुँचूँगा तो कोई नई आफ़त और उलझन मुँह खोले खड़ी होगी और ख़ूबी की बात तो यह होगी कि अम्मी जान का बयान कुछ और होगा और दूसरी तरफ़ बेगम साहिबा कुछ और क़िस्म का राग अलापेंगी। दोनों की पेशानी पर बारह बजे हुए होंगे।

मुहम्मद वसीमः तुम्हारे अकेले पर क्या मौक़ूफ़ है, आजकल सब ही इस दौर से गुज़र रहे हैं। और मेरे ख़्याल में इसका हल यह है कि हम तौबा और इस्तिग़फ़ार ज़्यादा करें।

अफ़ज़ाल अहमदः नहीं जी! मेरा ख़्याल है कि दूसरों की हालत मेरी जैसी क़ाबिले रहम न होगी। सच पूछो तो मैं ज़िन्दगी से ही बेज़ार हो गया हूँ। शादी के पहले सुनता था कि फ़ुलाँ सास बहू में आपस में बराबर बनती नहीं, रोज़ाना झगड़े-फ़साद होते हैं, लेकिन शादी के बाद अब मुझे बराबर इसका तजुर्बा हुआ है कि सास-बहू के झगड़ों की वजह से मियाँ-बीवी में भी झगड़े शुरू हो जाते हैं।

मेरे ख़्याल से घरेलू झगड़ों की सारी ज़िम्मेदारी सास के सर होती है। ख़ुद मैं अपने घर में देख रहा हूँ कि कोई वक़्त ऐसा नहीं गुज़रता कि अम्मी जान दुल्हन को तान-तश्नी न करती हों। इतना ही नहीं बल्कि

घर के छोटे-बड़े सब ही हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गए हैं।

मुहम्मद वसीमः अरे भाई! यही हालत आजकल हमारे घर की भी है। बेगम साहिबा रोज़ाना तंग करती हैं कि या तो अलग मकान ले लो या फिर मुझे मैके भेज दो। क्या करूँ क्या न करूँ कुछ समझ में नहीं आता।

अफ़ज़ाल अहमदः बेचारी दुल्हन भी क्या करे, मुझे तो यह देखकर ताज्जुब होता है कि दुल्हन को पसन्द करके लाने वाली तो खुद सास ही होती है फिर वह दुश्मन किस तरह बन जाती है। क्या बहू उसको काटने दौड़ती है? सास इतना भी नहीं सोचती कि वह उसके, लड़के की बीवी है। अगर वह कोई अच्छा काम करे तो उसकी इतनी तारीफ़ नहीं होती जितनी कि काम के बिगाड़ने पर उसकी मिट्टी पलीद की जाती है। घर में अगर कोई बिगाड़ हो, चाहे वह किसी और ने किया हो लेकिन नाम तो दुल्हन ही का आता है।

मुहम्मद वसीमः भाई हम दोनों एक ही कश्ती के सवार हैं।

अफ़ज़ाल अहमदः नहीं नहीं! हम दोनों ही नहीं आज तक़रीबन मुसलमानों का हर घर इस मुसीबत में फंसा हुआ है। सास बहू का हर घर दोज़ख़ का, नमूना बन गया है। इस दोज़ख़ में बद-नसीब दुल्हन की बद-नसीब रूह दर्दनाक मुसीबतें बरदाश्त करती रहती है। इन घरों को दोज़ख़ बना देने की पूरी ज़िम्मेदारी बेदीन जेठानी और दीन से दूर फ़सादी और हसद करने वाली नन्द पर होती है।

मुहम्मद वसीमः और इसका कोई हल भी नज़र नहीं आता।

अफ़ज़ाल अहमदः इसका हल इसके अलावा क्या हो सकता है कि हम अपने माँ-बाप से अलग होकर दूसरा घर बसाएँ। लेकिन फिर भी दुनिया वालों की उंगलियाँ तो हमारी ही तरफ़ उठेंगी और हमको और हमारी बीवियों ही को गुनाहगार ठहराएँगी। और माँ-बाप भी नालायक़ और नाफ़रमान कहेंगे।

अब तो मैंने फ़ैसला ही कर लिया है कि अलग रहूँगा। इसलिए कि

हमारे घर में टी. वी., वी. सी. आर. चलता रहता है, तो बीवी कहती है अगरचे हम देखते तो नहीं हैं लेकिन इस गुनाह में हम भी तो शामिल हो जाएँगे। जहाँ अल्लाह की लानत बरसती हो वहाँ से तो फ़ौरन उठ जाना चाहिए। और फिर हमारे बच्चे यह टी. वी. से कैसे बच सकेंगे और तुम्हें पता होगा इस टी. वी. ही की नहूसत से लड़कियाँ बिना निकाह के गर्भवती हो रही हैं। मार-धाड़ से भरी फ़िल्मों और डरावने ड्रामों ने घर-घर को मुसीबतों का अड्डा बना दिया है। इसलिए मैं तो अपनी आने वाली नस्ल पर रहम खाते हुए कहीं भी किराये का मकान मिल गया तो अलग हो जाऊँगा।

हाँ! लायक़ और फ़रमाँबरदार और समझदार कहलवाना हो तो जैसे चलता है चलने दो। अपनी ज़िन्दगी तबाह होने दो और साथ-साथ उस बेज़बान बेचारी ग़रीब को भी तड़पा-तड़पाकर मार डालो जिसको क़िस्मत ने तुम्हारे रहम व करम पर छोड़ा है। और इतना होने के बावजूद सास अम्माँ और नन्द के बर्ताव में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं आएगा और आने वाली नस्ल भी ख़ौफ़ और बेएतिमादी, बुज़दिली का शिकार रहेगी।

मुहम्मद वसीमः ख़ैर छोड़ो इन बातों को और बताओ कि आज हज़रत मौलाना साहिब के बयान में बैतुल-इल्म में चलना है कि नहीं?

अफ़ज़ाल अहमदः हाँ क्यों नहीं! मुझे तो वहाँ जमाअत में जाने के लिए मश्विरा भी करना है। अच्छा तुम घर जाओ मैं अभी आता हूँ।

अफ़ज़ाल अहमद पहुँचता है (और कमरे में पहुँचकर)

✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪

आमना बीबीः दुल्हन! ओ दुल्हन! क्या कर रही हो? अब तक चाय भी तैयार नहीं की? सो बार कहा है, कि जल्दी-जल्दी काम किया कर। अब यह बेचारी भी क्या करे माँ-बाप ने कुछ सिखाया भी हो।

(मरियम चाय लेकर आती हैं)

आमना बीबीः केक नहीं रखकर आती?

मरियमः ज़ुबैदा ला रही है अम्मी जान।

आमना बीबीः तुझसे न हो सका? हाथ टूट गए? ऐसा ही था तो माँ-बाप ने एक-आध नौकरानी क्यों नहीं भेजी ताकि तुझे कुछ करना ही न पड़ता।

अफ़ज़ाल अहमदः यह केक किसने बनाए हैं?

जुबैदाः मरियम भाभी ने

आमना बीबीः पेड़ जैसी लम्बी हो गई है फिर भी कुछ जानती ही नहीं।

अफ़ज़ाल अहमदः जुबैदा उठा ले इस चाय को, मैं होटल में पी लूँगा।

आमना बीबीः क्यों बेटे चाय को क्या हो गया?

अफ़ज़ाल अहमदः ऐसी चाय बनाई है, गर्म पानी और इसमें क्या फ़र्क़ है?

आमना बीबीः क्या करूँ बेटा मेरा तो नाक में दम आ गया है। इस औरत से तो तंग आ चुकी हूँ।

नौकरः हुज़ूर! मुहम्मद वसीम मियाँ बाहर खड़े हैं।

अफ़ज़ाल अहमदः अम्मी जान! मैं होटल ही में चाय पी लूँगा। आठ बज गए हैं, देर हो जाएगी।

(अफ़ज़ाल अहमद चला जाता है)

आमना बीबीः तेरे जैसी नालायक़ और बेवक़ूफ़ कोई औरत न होगी, चाय बनाना भी नहीं आता। माँ-बाप ने तुझे क्या सिखाया है। हाय रे मेरे बेटे को आज चाय बिना ही जाना पड़ा।

मरियमः अम्मी जान इसमें मेरा कोई क़ुसूर नहीं। जुबैदा ने कहा कि पानी जोश खा गया है और फिर आप भी जल्दी कर रही थीं।

आमना बीबीः वाह! क़ुसूर अपना और दूसरों के सर, शर्म नहीं आती।

मरियमः नहीं अम्मी जान! मैं किसी के सर नहीं थोपती।

आमना बीबीः चुप हो जा, बहुत मुँह फट हो गई है, मुँह छोटा

और बड़ी बात।

✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪

(बाहर से किसी के खंखारने की आवाज़ आती है। अफ़ज़ाल अहमद के अब्बा सुलैमान सेठ घुसते हैं। मरियम और जुबैदा घर के कमरे में चली जाती हैं)

सुलैमान सेठः अफ़ज़ाल अहमद की अम्माँ कहाँ गई? ...... देखा तो बीवी साहिबा बैठी हुई थी। पूछाः यहाँ बैठी-बैठी क्या कर रही है?

आमना बीबीः मैं अपनी क़िस्मत को रो रही हूँ।

सुलैमान सेठः क्यों क़िस्मत को क्यों रो रही है? ख़ुदा तआ़ला का दिया हुआ बहुत कुछ तो है। लड़के लड़कियाँ, बहुएँ अब क्या चाहिए?

आमना बीबीः और क्या चाहिए इस मुई दुल्हन ने नाक में दम कर दिया है। चाय बनाई भी तो गर्म पानी जैसी। हाय मेरा अफ़ज़ाल अहमद, मेरा क्लेजा चाय के बिना ही चला गया।

सुलैमान सेठः चाय में क्या था?

आमना बीबीः यही कि पानी को जोश आने भी नहीं दिया और पत्ती डाल दी।

सुलैमान सेठः तो जल्दी तूने ही की होगी। अफ़ज़ाल अहमद की अम्मी! तुम भी तो कुछ कम नहीं हो। छोटी छोटी और मामूली बातों में हड़बोंग मचा देती हो। पूरा घर सर पर उठा लेती हो। तुम्हारी यह आ़दत मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं और ऊपर से क़ुसूर दुल्हन के सर थोप देती हो।

आमना बीबीः लो, दुल्हन का तो कोई क़ुसूर ही नहीं। वाह रे वाह।

सुलैमान सेठः अब शायद दुल्हन की बारी तो ख़त्म हुई, मेरी बारी आई है। देखो तो मामूली बात पर तैश में आ गई। कौन कहता है कि बहू का कोई क़ुसूर ही नहीं। उसका यह क़ुसूर क्या कम है कि वह तेरी बहू बनकर आई।

आमना बीबीः जाओ जाओ! मेरे जैसी सास उसे फिर न मिलेगी,

चाहे वह दूसरा ही जन्म क्यों न ले ले।

सुलैमान सेठः भला उसको दूसरा जन्म लेने की ज़रूरत क्या है, जबकि इस जन्म में ही तू उसको मिल गई है।

आमना बीबीः हाय हाय! इस नालायक़ की तरफ़दारी करके जलते में तेल न डालो। मेरे तो तन-बदन में आग लगी हुई है। हाय हाय, मेरे बच्चे को चाय बिना ही आज जाना पड़ा।

सुलैमान सेठः अफ़ज़ाल अहमद की माँ! ज़रा अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो।

आमना बीबीः क्या ख़ाक क़ाबू में रखूँ।

सुलैमान सेठः अफ़ज़ाल अहमद की चाय की तुझे बहुत फ़िक्र है, तुझे क्या ख़बर कि वह अपने यार-दोस्तों के साथ होटलों में कितनी चाय उंडेलता होगा।

आमना बीबीः तुमको तो औलाद से ज़रा भी प्यार व मुहब्बत नहीं।

सुलैमान सेठः देखो बेगम! दोबारा इस तरह मत बोलना, कौन कहता है कि मुझे औलाद से प्यार व मुहब्बत नहीं? अफ़ज़ाल अहमद के साथ मुहब्बत न होती तो मैं उसकी दुल्हन की तरफ़दारी क्यों करता।

आमना बीबीः रहने दो, तुम तो वकीलों की तरह बात-बात में दलील देते हो।

सुलैमान सेठः अरे वकीलों की तरह क्या, मैं वकील तो पहले था ही, फिर अल्हम्दु लिल्लाह झूठ बोलने से तौबा कर ली। फिर अल्लाह तआला ने तब्लीग़ में लगने के ज़रिये अपने फ़ज़्ल से वकालत से निजात देकर जायज़ तिजारत अता फ़रमा दी। इसलिए वकीलों जैसी बातें भी करूँगा और घर हो या कचहरी वकील आख़िर वकील है।

आमना बीबीः यह सब तुम्हारा ही किया हुआ है। मैं तो ख़दीजा आपा के पास से मंगनी लेकर पछता रही हूँ।

सुलैमान सेठः क्यों इसमें ख़दीजा आपा ने कौनसा गुनाह किया है। पढ़ी लिखी दीनदार मदरसे से फ़ारिग़ पर्दे वाली दुल्हन तेरे घर लाकर

बैठा दी है, फिर क्या है?

आमना बीबी: ऊँह! पढ़ी लिखी हुई? अरे इससे तो अनपढ़ अच्छी।

सुलैमान सेठ: अफ़ज़ाल अहमद की माँ! मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि तुम पूरा दिन हाथ मुँह धोकर इसके पीछे क्यों लगी रहती हो।

आमना बीबी: तो यूँ कहो कि मेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है इसलिए इसके पीछे पड़ गई हूँ।

सुलैमान सेठ: समझ में नहीं आता कि तुम इतनी क्यों बदल गई हो। तुम में इतना फ़र्क़ क्यों आ गया है।

आमना बीबी: क्यों? मुझमें क्या फ़र्क़ आ गया है?

सुलैमान सेठ: तुम वह ज़माना भूल गई जब मेरी माँ ज़िन्दा थी, तब मुझे तुम बार-बार कहा करती थीं कि चलो अपना अलग घर ले लें, मुझे यहाँ नहीं रहना। मुझे मैके भेज दो और यह सब तुम मुझे क्यों कहती थीं, इसी लिए कि तुम अम्मी जान के बर्ताव से उक्ता गयी और तंग आ गई थीं। क्या तुम में काम करने की सलाहियत न थी, यह सब होने के बावजूद अम्मा जान तुम्हें टोकती थीं तो उस वक़्त तुम्हरा दिल दुखता न था?

आमना बीबी: नहीं जी, मुझे तो ज़रा भी नागवार न गुज़रता था।

सुलैमान सेठ: अच्छा? नागवार नहीं गुज़रता था तो फिर अम्मा के बुरे बर्ताव की शिकायत मुझसे क्यों करती थी। नहीं नहीं! तुझे ज़रूर नागवार गुज़रता था, लेकिन असल हक़ीक़त तू मुझसे छुपा रही है। सिर्फ़ इसलिए कि आज तू दुल्हन के बजाय सास बनी हुई है। अब ज़रा सोच तो सही कि तेरी इस हर घड़ी की टक-टक और बात-बात में ताना-तश्नी से दुल्हन का दिल दुखता न होगा? क्या वह अफ़ज़ाल अहमद से तेरे इस सख़्त बर्ताव की शिकायत न करती होगी? और क्या उसके दिल में अलग हो जाने का ख़्याल न आता होगा? तुझे तो इन सब बातों का तजुर्बा है, फिर तू इस तरह बच्चों जैसी हरकतें और छिछोरापन क्यों करती है? मुझे इस बात से ताज्जुब होता है कि औरत जब सास बनती

है तो फिर उसकी अक़्ल चरने चली जाती है और उसको इस बात का ख़्याल क्यों नहीं रहता कि वह भी एक दिन दुल्हन थी। फ़र्ज़ करो कि इस दुल्हन की जगह तेरी जुबैदा होती तो तेरे दिल को क्या होता?

आमना बीवीः ना रे भई! मैं अपनी लड़की की ऐसी जगह शादी होने ही न दूँगी जहाँ उसकी सास जल्लाद जैसी हो।

सुलैमान सेठः अच्छा! अपनी बेटी के लिए तो सास को भी बरदाश्त नहीं कर सकती और दूसरों की बेटियों को तुम जान से मार दो तो भी कोई गुनाह नहीं।

आमना बीवीः जान से कौन मार रहा है।

सुलैमान सेठः यह तो जान से मार डालने से भी ज़्यादा अज़ाब है, कि किसी पर उसकी ज़िन्दगी अजीरन और दुश्वार कर दी जाए। उठते बैठते उसको बुरा भला कहा जाए। बात बात पर ताने मारे जाएँ। हर घड़ी उस पर लानत बरसाई जाए। ऐसा करना तो तड़पा-तड़पाकर मार डालने से भी ज़्यादा बुरा है। जल्लाद सासों की ऐसी कड़वी-कसीली बातों से कितनी ही नाज़ुक जवानियाँ मुरझाकर क़ब्र में जाकर सो गई हैं। हमारे हिन्दुस्तान के घरों की चार दीवारियाँ ऐसे इनसानियत-सोज़ सैंकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों वाक़िआत से भरी पड़ी हैं।

आमना बीवीः लो अब छोड़ो भी ऐसी बातें, तुम तो तक़रीर करने ही बैठ गए। चलो अब खाना खा लो, देर हो गई। अरे जुबैदा तू अपने अब्बा के लिए खाना ले आ।

सुलैमान सेठः नहीं! मैं उस वक़्त तक नहीं खाऊँगा जब तक कि तू मुझसे यह वायदा न करे कि आज से तू दुल्हन को कुछ न कहेगी।

आमना बीवीः अच्छा अच्छा भई! खाना तो खा लो, मैं आज से अफ़ज़ाल अहमद की दुल्हन को कुछ न कहूँगी। अब तो ख़ुश हो गए ना?

सुलैमान सेठः ख़ुश तो मैं उस वक़्त हूँगा जब तू इस वायदे को निभायेगी वरना तुम दोनों को अलग अलग रखूँगा।

वज़ाहतः आप इस वाक़िए को बहू होते हुए नहीं बल्कि नन्द होते हुए पढ़िए कि अगर आप किसी की नन्द हैं या बड़ी जेठानी हैं तो अपनी भाभियों पर ज़ुल्म न होने दीजिए। इस बात की कोशिश कीजिए कि आने वाली बहू आपके घर में सुकून से रहे। ख़ुद भी ग़ीबत, ऐब निकालने, ताक-झाँक, सुनी-सुनाई बातों पर यक़ीन न कीजिए और अपनी माँ साहिबा को भी इन फ़ुज़ूल बातों से और इन बेहूदा झगड़ों से बचाईए। आमीन या रब्बल्-आलमीन।

अलविदाई नसीहत

एक दोशीज़ा का जब डोला चला
सारे घर में हश्र बरपा हो गया
माँ हुई बेटी से अपनी हम-कलाम
जा के करना सास को बेटी सलाम
और ख़ुसर का अपने तू करना अदब
ताकि कहलाई न जाए तू बेअदब
अपने शौहर का तू करना एहतिराम
ज़िन्दगी तेरी न हो जाए हराम
सब हो घर वाले हों तुझसे बाग़-बाग़
तू अंधेरे घर का कहलाए चिराग़
सख़्त लहजे में न करना गुफ़्तगू
सादगी से घर में रहना नेक-ख़ू
और नंगे सर न रहना, रख ख़्याल
सर से तू ढलकी हुई चुनरी संभाल
शादी तेरी हो गई अच्छा हुआ
तू रहे बा-इस्मत व इफ़्फ़त सदा
और उलटे जब कोई तेरा नक़ाब
तुझको शर्मिन्दा करे तेरा शबाब

सबसे पहले सो के उठना बेख़बर
सीना-ए-बेबाक पर रखना नज़र
मैं समझती हूँ तेरी बेताबियाँ
शोला-ए-उलफ़त की हैं ये गर्मियाँ
अपने रुख़ से तू ज़रा आँचल उठा
फिर ज़रा तू चाँद से रुख़ को दिखा
जाते ही करना तू घर का काम-काज
बस यही दुनिया का है रस्म व रिवाज
जब तू घर के काम-काज में लग जाएगी
सब ही घर वालों में इज़्ज़त पाएगी
सब बड़े-छोटे के करना काम तू
बाप माँ का बेटी, करना नाम तू
अपने शौहर को न देना तू जवाब
ताकि शर्मिन्दा न हो रोज़े हिसाब
अलविदाई नसीहत अब मैं कह चुकी
तुझको हर एक बात मैं समझा चुकी
माल व ज़र करती हूँ मैं तुझ पर निसार
आ गये डोला उठाने को कहार
नेक साअत हो ख़ुदाया, इस घड़ी
अब जुदा होती है मुझ से दिलबरी

हफ़्सा बेटी का क़ीमती दहेज

ससुराल जाने वाली बेटी से उसका बाप कहता है

आ गया आख़िर वह वक़्ते दिल ख़राश व दिल-फ़गार
बेबसी से जिसका था मुद्दत से तुझको इन्तिज़ार
यानी तुझसे छूटने को हैं तेरे भाई-बहन
बाप, घर, कुनबा, क़बीला और यह तेरा वतन

मैंने यह माना, तसव्वुर भी है इसका दिल-ख़राश
दिल को बरमाता है, करता है जिगर को पाश-पाश

है मगर हुक्मे-ख़ुदा यह, और यही दस्तूर भी
लड़कियाँ ससुराल जाएँ, छोड़ें यह घर आरज़ी

वह हक़ीक़ी घर है तेरा जा रही है तू जहाँ
तेरा जीना और मरना आज से होगा वहाँ

वक़्त रोने का नहीं है मेरा कहना मान ले
जो मैं कहता हूँ उसे तू सुन निहायत ग़ौर से

दर हक़ीक़त जो तेरा घर है वहाँ जाती है तू
काम वह करना शराफ़त का हो शोहरा चार-सू

जिसका जो भी हक़ हो तू उसका अदा करना ज़रूर
ख़िदमते शौहर बहर हालत बजा लाना ज़रूर

तू समझती है कि है ख़ाविन्द का क्या मर्तबा
नारे दोज़ख़ की सज़ा है वह अगर नाख़ुश रहा

तुझको पाबन्दे शरीअ़त देखकर ऐ मेरी लाल
ला-मुहाला हक़ शनासी का उसे होगा ख़याल

शौहर व ज़ौजा के ख़ुश रहने का जन्नत नाम है
याद रख यह सुन्नते पैग़म्बरे इस्लाम है

माँ से बढ़कर सास है और बाप से बढ़कर ख़ुसर
उनकी ख़िदमत और इताअ़त करती रहना उम्र भर

रहना पाबन्दे-शरीअ़त दीन पर साबित-क़दम
जान पर बन जाए या हो जाए तेरा सर क़लम

था बहुत कुछ मुझको कहना क्या कहूँ मजबूर हूँ
दिल नहीं क़ाबू में मेरा क्या करूँ माज़ूर हूँ

मैं तो दिल थामे हुए हूँ तुझको यह क्या हो गया
मेरी बेटी! आँसुओं का अब तू न दरिया बहा

जब सफ़र को कोई जाता है तो यूँ रोता नहीं
होनी होकर ही रहेगी इससे कुछ होता नहीं
सब्र से काम ले, साबिर का है दर्जा बड़ा
साथ साबिर के खुदा है इससे बढ़कर और क्या
बस है बस बेटी मेरी अब सब हैं मसरूफ़े दुआ
तू भी उठ और सच्चे दिल से शुक्रे-ख़ालिक़ कर अदा
जो भी तुझको माँगना हो माँग ले अल्लाह से
माँगता है अब दुआ बाप भी यूँ तेरे लिए
ऐ खुदा ऐ पाक रहमाँ, ऐ मेरे रब्बे करीम
खुश रहे फूले-फले जहाँ हफ़्सा जाए

शौहर की घर से रवानगी के आदाब

नेक बीवी को चाहिए कि जो शौहर का वक़्त मुतैयन है रवानगी का, उससे पहले ही उसके कामों के समेटने में उसकी मदद करे, ताकि वह निर्धारित समय पर अपने काम पर पहुँच सके।

अक्सर ऐसा होता है कि उस समय बीवी की थोड़ी सी फ़िक्र व चुस्ती के साथ शौहर की मदद करने से शौहर कई परेशानियों से बच जाता है। कई बार शौहर जाने की फ़िक्र में अपनी कई चीज़ें भूल जाता है जो उसको दुकान...... दफ़्तर...... पहुँचने के बाद याद आती हैं। फिर कई बार दोबारा आने की ज़हमत उठानी पड़ती है, या किसी को भेजकर मंगवाना पड़ता है, जो मियाँ-बीवी दोनों के लिये परेशानकुन होता है।

इसलिए समझदार बीवी को चाहिए क़ि इन छोटे-छोटे कामों की फ़िक्र करने से अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी और अपने शौहर की मुहब्बत और दुआ ले सकती है। जैसे रात को शौहर कोई अमानत लाए कि सुबह दुकान ले जाना है, अब वह मेज़ पर रखी ही रह गई, सुबह दुकान पहुँचे तो वह आदमी आया, अब ख़्याल आया तो "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" कहा और अब इस परेशानी में लग

गए कि कैसे मंगवाऊँ?

या सुबह कपड़े बदले दफ़्तर जाने के लिए जेब में फ़ोन की डायरी भूल गए या दूसरी मन्ज़िल से नीचे उतरे, दुकान की चाबी मेज़ पर रह गई, समझदार बीवी समय से पहले ही शौहर के लिए नाश्ता, रोज़ाना ले जाने का ज़रूरी सामान आदि तैयार कर लेती है। अब शौहर इत्मीनान और खुशी के साथ अपने काम के लिए रवाना होता है।

मुहब्बत से पेश अपने वाली ऐसी बीवी को शौहर अपने दिल के हर कोने और बदन के हर रुएँ से दुआएँ देते हुए अपनी हलाल रोज़ी की तलाश में रवाना होता है, इत्मीनान से घर से निकलते हुए दो रकअ़त नफ़िल पढ़कर रवाना होता है, सुन्नत के मुवाफ़िक़ घर से निकलने की दुआ:

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि।

पढ़ते हुए रवाना होता है। और बीवी उसको "फ़ी अमानिल्लाह" अल्लाह की हिफ़ाज़त में देने:

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ اَعْمَالِكَ.

अस्तौदिउल्ला-ह दीन-क व अमान-त-क व ख़्वाती-म अअ़्मालि-क।

की दुआएँ देती हुई अल्लाह तआ़ला की अमान और हिफ़ाज़त में सुपुर्द करती है।

अब ऐसे मियाँ-बीवी में झगड़ा कैसे हो सकता है? शैतान को ऐसे घर में आने का कैसे मौक़ा मिलेगा?

ग़र्ज़ यह कि मुसलमान बीवी इस छोटे से अ़मल से अपने घर की दुनिया को कितनी आसानी से जन्नत का नमूना बना सकती है। दिन भर अल्लाह की रहमत में और शौहर की दुआओं के साये में किस तरह अपनी और अपने बच्चों की तरबियत कर सकती है। काश औ़रतें इस गुर को पहचानने और इस पर अ़मल करने वाली बन जाएँ। आमीन!

विभिन्न औरतों की दुआएँ

अपने शौहर की रवानगी के समय

कुछ दिनों पहले एक अरबी अख़बार ने कुछ औरतों से पूछा था कि हर सुबह तुम्हारे शौहर की रवानगी के वक़्त तुम्हारा क्या काम होता है और तुम्हारी क्या दुआ होती है, और तुम्हारी क्या तमन्ना व चाहत होती है? इस पर अनेक औरतों ने अलग-अलग जवाबात दिए जो नक़ल किये जाते हैं।

पहली ने कहा: जब मेरे शौहर सुबह काम पर रवाना होते हैं तो मैं आसमान की तरफ़ देखकर कहती हूँ:

يا ربّ أعده لی سریعًا وأعده لی سلیمًا.

तर्जुमा: ऐ मेरे रब इसको मेरे पास जल्दी और सलामती के साथ लौटा। हर मुसीबत व बीमारी से महफूज़ रखते हुए इसको मेरे पास वापस भेज दे।

दूसरी ने कहा: मैं अपने शौहर को दिली मुहब्बत के साथ अलविदा कहती हूँ और दुआ देते हुए कहती हूँ:

یا رب احفظه لی، انه زوج مثالی، وأب لا یعوض لأطفالی.

तर्जुमा: ऐ मेरे रब इसकी हिफ़ाज़त फ़रमा कि बेशक यह मेरे लिए समझदार शौहर है और मेरे बच्चों के लिए ऐसा शफ़ीक़ बाप है जिसका और मिसाली बदल कोई नहीं हो सकता।

तीसरी ने कहा: कि मैं हमेशा अपने दिल में कहती हूँ: ऐ मेरे रब कब तक आप इसको इस काम में लगाए रखेंगे?

متی تجعلنا اغنیاء حتی لا یضطر هذا الرجل العجوز الی ان یکد ویعمل کل یوم ثمانی ساعات.

तर्जुमा: कब आप हमको इतना मालदार बनाएँगे कि मेरे बूढ़े शौहर

को रोज़ाना आठ-आठ घन्टे तक काम न करना पड़े।

चौथी ने कहा: मैं सोचती रहती हूँ कि:

هل سيعود لي ثانية اوستحمله لي سيارة الموتى كما حملت زوج جارتي.

तर्जुमा: क्या यह मेरे पास दोबारा आ सकेंगे या एंबूलेन्स उनको उठाकर मेरे पास लाएगी जैसे कि मेरी पड़ोसन के शौहर की लाश को एंबूलेन्स उठाकर लाई थी।

पाँचवीं ने कहा: उनके जाने के बाद मैं फ़ौरन घड़ी की तरफ़ मुतवज्जह हो जाती हूँ:

متى تدق الساعة السادسة مساء حتى أرى زوجي مرة أخرى.

तर्जुमा: कब छः बजेंगे शाम के कि मैं दोबारा अपने शौहर को देखूँ।

छठी ने कहा: मैं शौहर के जाने के बाद अपने घर की सफ़ाई और शौहर और बच्चों के लिए खाना पकाने की तैयारी में लग जाती हूँ। इसलिए कि:

فالرجال لا يعودون الى بيت قذر، ولا الى طعام لا يهضمونه.

तर्जुमा: मर्द यह पसन्द नहीं करते कि शाम को वापस लौटें गन्दे घर की तरफ़ जहाँ चीज़ें बेतरतीब रखी हुई हों, बावर्चीख़ाना गन्दा सा हुआ हो, बर्तन धुले हुए न हों, बच्चे साफ़-सुथरे न हों। न मर्द ऐसा खाना पसन्द करते हैं जो जल्दी-जल्दी में कच्चा रह गया हो, या मसाला न भुना हुआ हो, या अच्छी तरह साफ़ करके न पकाया गया हो जो पेट में जाकर हाज़मे व पेट को ख़राब करे।

इसलिए मैं कमरों की सफ़ाई-सुथराई बच्चों को नहला-धुलाकर खाना पकाने की तैयारी में लग जाती हूँ।

सातवीं ने कहा: जब वह घर से चले जाते हैं तो मेरा दिल यह चाहता है:

أطبع على فمه قبلة أخرى، ويبقى هذالشعورعلى شفتي، الى ان يعود.

तर्जुमा: कि एक और बोसा दे देती ताकि उसकी लज़्ज़त मेरे होंठों

पर उनके आने तक बाक़ी रहती।

आठवीं ने कहाः मैं कोशिश करती हूँ कि उनका ख़्याल भुला दूँ अगर मैं उन्हीं की याद में लगी रही तोः

لماستطعت ان أغسل لا بس أطفالي ولا أعد طعامهم.

तर्जुमाः न अपने बच्चों के कपड़े धो सकती हूँ न उनके लिए खाना तैयार कर सकती हूँ।

नवीं ने कहाः मैं आसमान की तरफ़ निगाह करके कहती हूँ:

لما ذا أوقعتني يا رب في هذاالرجل وهناك ملا ئين أحسن منه؟

ونالت الأخيرة الجائزة.

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! कहाँ मेरे मुक़द्दर में यह शौहर आ गया हलाँकि लाखों लोग इससे अच्छे थे। इसी अख़ीर वाली ने इनाम पा लिया।

(ज़हरात मिनरौज़िल-मर्अतिल् मुस्लिमति पेज 30)

1. इन नौ के जवाबात आपने सुन लिए अपने लिए ज़रूर कोई पसन्दीदा जवाब आपने चुन लिया होगा।

अब हम आपको बताते हैं कि अगर आप दसवीं होती और आप से पूछा जाए तो आपको क्या कहना चाहिए?

दसवींः पहले उनको सलाम करके "फ़ी अमानिल्लाह" कहते हुए रवाना करती हूँ। वह दुआः

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि।

पढ़कर बाहर निकलते हैं तो मैं उनको कहती हूँ:

اِتَّقِ اللّٰه فينا، ولا تطعمنا الا حلالا.

तर्जुमाः हमारे बारे में अल्लाह से डरना और हमें सिर्फ़ हलाल लुक़्मा खिलाना।

यानी कारोबार में, नौकरी में कोई ऐसा काम न करना जिससे रिज़्क़ मकरूह या हराम हो जाए। मसलन सूदी कारोबार, रिश्वत लेना, झूठ

बोलकर ग्राहक को धोखा देकर सौदा बेचना, नौकरी का जो मुक़र्रर समय है उसमें कोताही करना, वग़ैरह-वग़ैरह इनसे बचना। अज़ान होते ही कारोबार बन्द करके ख़ुद भी नमाज़ के लिए जाना और मुलाज़िमों और दोस्तों को भी नमाज़ की तर्ग़ीब (तवज्जोह और शौक़) देना। और कभी-कभी मैं उनको समझाती हूँ कि मुसलमान सिर्फ़ कमाने के लिए दुनिया में नहीं आया, हमें दीन का काम भी ज़रूर करना चाहिए। इसलिए उसके लिए कारोबार ख़त्म करने के बाद घर आने से पहले कुछ समय मस्जिद में ज़रूर लगाना, उसमें अपने दोस्तों को जमा करके इस बात की फ़िक्र करना कि सब लोग कैसे पूरे-पूरे दीन पर अमल करने और उसको फैलाने वाले बन जाएँ।

इसके लिए शाम को घर आने से पहले एक घन्टा दो घन्टा ज़रूर मस्जिद में बैठ जाएँ। कहीं ऐसा न हो कि पूरा दिन आपका इसी छोटी सी दुनिया के तक़ाज़ों में लग जाये जो बहुत जल्द फ़ना होने वाली है।

अ़रब की एक देहाती औ़रत का हम इसी सिलसिले में क़िस्सा किताब "परेशानियों से बचा हुआ ख़ानदान" से पेश करते हैं। अल्लाह करे हमारी औ़रतें भी इस क़िस्से को पढ़कर कम से कम इस देहाती औ़रत की एक ही यह सिफ़त अपना लें तो हर घर दुनिया ही में जन्नत का नमूना, ख़ुशियों का ठिकाना, नूर व सुरूर का मजमूआ बन जाए। कहती है:

ان زوجی اذا خرج یحتطب أحس بالعناء الذی لقیه فی سبیل رزقنا، وأحس بالحرارة عطشه فی الجبال تکاد تحرق حلقی، فأعدله الماء البارد حتی اذا ما قدم وجده......

तर्जुमाः मेरा शौहर जब जंगल में लकड़ी चुनने जाता है और दिन भर वह जंगल में लकड़ियाँ जमा करने की जो तकलीफ़ उठाता है, मैं उस तकलीफ़ व मशक़्क़त को अपने घर में बैठे-बैठे महसूस करती हूँ कि हमारी रोज़ी की ख़ातिर यह कैसी तकलीफ़ बर्दाश्त कर रहा है। खुले आसमान के नीचे पहाड़ के ऊपर जो उसको गर्मी लगती है और जिस

प्यास से उसका हलक़ ख़ुश्क हो जाता है, मुझे अपनी झोंपड़ी में पूरी तरह उसका एहसास होता है कि गोया मुझे ही गर्मी लग रही है और मेरा ही हलक़ ख़ुश्क हो रहा है। इसलिए उसके आने के समय में ठंडा पानी तैयार रखती हूँ। घर की सफ़ाई वग़ैरह करके उसके लिए खाना तैयार करती हूँ। फिर अच्छे कपड़े पहनकर उसका इन्तिज़ार करती हूँ।

فاذا ماولج الباب استقبلتُه كما تستقبل العروس عروسها الذى عشقتُه، مسلّمة نفسى اليه فاذاأراد الراحة أعنتُه عليها،وان أرادنى كنت بين ذراعيه كالطفلة الصغيرة يتلهّى أبوها.

तर्जुमा: जब वह जंगल से लकड़ियाँ जमा करके घर में दाख़िल होता है तो मैं उसका ऐसा स्वागत करती हूँ जैसे एक आशिक़ दुल्हन अपने दूल्हे का स्वागत करती है। अपनी पूरी तवज्जोह उसको दे देती हूँ। अगर वह आकर आराम करना चाहता है तो उसकी मदद करती हूँ और अगर वह मुझे चाहता है तो मैं उसके पहलू में ऐसी बन जाती हूँ जैसे छोटी बच्ची अपने अब्बा की गोद में खेलती व कूदती है, ऐसे ही मैं छोटी बच्ची की तरह उससे प्यार व मुहब्बत करती हूँ और वह मुझसे प्यार व मुहब्बत करता है। ("परेशानियों से बचा हुआ ख़ानदान" पेज 40)

शौहर से बात करने के आदाब

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की छोटी बीवी जब अपने शौहर से कोई हदीस रिवायत करती तो कहती "मुझे सुनाया इस हदीस को मेरे सरदार अबुद्दर्दा ने" अरबी में सैयद का लक़ब बहुत ही अदब के लिए इस्तेमाल होता है। और जब इसमें निस्बत अपनी तरफ़ लग जाए कि मेरे सैयद ने तो इसमें एक तरह की मुहब्बत व अक़ीदत की हल्की सी झलक भी महसूस होती है। जिसका उर्दू में तर्जुमा ज़्यादा से ज़्यादा यह हो सकता है कि मेरे सरदार ने मुझसे यह बात कही, या मेरे सरदार ने मुझे यह बात सुनाई।

इसलिए नेक बीवी को चाहिए कि शौहर से बात करने में इन बातों का ख़ास ख़्याल रखे।

1. उसकी बात को पूरी तवज्जोह से सुने, बीच में न बोले जब बात पूरी हो जाए और फिर कोई बात समझ में न आई हो तो पूछ ले, इन्शा-अल्लाह तआ़ला अगर ख़ामोश रहेगी और पूरी बात सुन लेगी तो जो इश्काल हुआ होगा (यानी कोई बात समझने में न आयी होगी) वह पूरी बात सुन लेने से ख़त्म हो जाएगा और बीच में बोलने से अधिक्तर बात का रुख़ कहीं से कहीं निकल जाता है और बात का मक़्सद ही ख़त्म हो जाता है।

कभी यह न कहे "आप तो यह नहीं करते, फ़ुलाँ को देखो इस तरह करते हैं" जैसे आप हमें कहीं लेकर नहीं जाते, हमारे साथ कभी वक़्त नहीं गुज़ारते। मेरी बहन के शौहर उनको हफ़्ते में एक दिन ज़रूर बाहर ले जाते हैं। इसके बजाय यूँ कहे: अगर आप हमें कहीं हफ़्ते में घुमाने फिराने ले जाएँ तो बहुत अच्छा हो। कुछ समय हम लोग बाहर गुज़ारें।

2. कभी "तू" से बात न करे, हमेशा "आप" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करे, बल्कि हमारे यहाँ तो कुछ ख़ानदानों में किसी को "तू" कह देना गाली की तरह शुमार होता है। पचास साल का दादा भी जब दस साल के पोते से मुख़ातिब होगा तो यूँ कहेगा।

बेटा! आप मदरसा क्यों नहीं गए। बेटा! आप यह ले लीजिए। बेटा! आपने खाना क्यों नहीं खाया? वग़ैरह।

इसलिए 'तू' का लफ़्ज़ कभी इस्तेमाल न करे।

3. हमेशा अपना लहजा नरम रखे, कभी भी तेज़ लहजे में बात न करे। गुस्से व नाराज़गी को छोड़कर नर्मी व शगुफ़्तगी की मिठास के साथ बात करे।

4. क्यों, क्या, कैसे, कब, कहाँ इस तरह की चीज़ों से बचती रहे, इन अलफ़ाज़ को कभी इस्तेमाल न करे। जैसे आप क्यों देर से आए?

आपने क्या कर दिया? ऐसे जंगलियों की तरह बच्चों को मारना चाहिए? आपकी आ़दतें कैसी हैं मेरी तो समझ से बाहर है? आप कब जाएँगे कोई आपका ठिकाना नहीं है। आप कहाँ चले जाते हो हमें पता ही नहीं चलता, बताकर तो जाया करो? हमारा भी तो कुछ हक़ है वग़ैरह।

जबकि इसके बजाय इन सवालात का जो मक़सद है या इन सवालात से जो औ़रत चाहती है, अपने शौहर से अगर उसको इन अलफ़ाज़ के बजाय इन मायनों को दूसरे इससे ज़्यादा सुनहरे व ख़ूबसूरत अलफ़ाज़ का लिबास पहना दिया जाए तो ये अलफ़ाज़ शौहर के दिल को नरम करने और बीवी की मर्ज़ी के पूरा होने में ज़्यादा मददगार होंगे। और बीवी का जो मक़सद है वह भी पूरा हो जाएगा, और दोनों में एक दूसरे के लिए मुहब्बत के जज़्बात भी बढ़ते जाएँगे। जैसे यूँ कहे: आप अगर समय पर आ जाया करें तो मुझे बहुत आराम होगा चूँकि बहुत देर से खाना तैयार रखा था, इन्तिज़ार करते करते कोई और काम भी न हो सका और मैं और बच्चे भी खाना न खा सके। या आपने रात जो रशीद को मारा तो उसके कान पर बहुत तेज़ लगा है, और इस तरह मारने से कभी-कभी बच्चे की कान की सुनने की ताक़त ख़त्म हो जाती है। इस तरह फिर हम अल्लाह तआ़ला के भी ग़ज़ब के शिकार होंगे और जो बन्दा अल्लाह तआ़ला के गुस्से में आ गया उसकी हलाकत व बरबादी में क्या शक होगा, और दूसरे यह कि इस तरह मारने से बच्चा बाप को ज़ालिम समझता है, आहिस्ता-आहिस्ता वह दिल में यह ख़्याल जमा लेता है कि बाप ज़ालिम है मेरी इस्लाह नहीं चाहता बल्कि अपने गुस्से को उतारना चाहता है और गुस्से में मारते हुए जायज़-नाजायज़ की भी तमीज़ नहीं करता।

और फिर यह बच्चा ऐसा ढीट हो जाता है कि फिर ज़िद में आकर ग़लत काम करता है। इसलिए आपको बच्चों की ग़लत हरकतों पर गुस्सा आए तो उस पर आप सब्र करेंगे तो सवाब मिलेगा। औलाद को पालने में इसी लिए तो बहुत बड़ा सवाब है कि उनकी ग़लतियों पर गुस्सा आए

तो हमको चाहिए कि सब्र करें और अच्छी तरह इस्लाह (सुधारने) की ऐसी कोशिश करें कि आईन्दा वह उस बुरी आदत के क़रीब न जाए। उसके दिल में उस बुरी आदत की नफ़रत ऐसी बैठाएँ कि वह अकेले में भी उसका इरादा न करने पाए।

या अगर आपको आपके जाने का समय पता हो तो आप अपने जाने का समय मुझे बता दें तो मुझे तैयारी करने में आसानी हो जाएगी। इसी तरह रात को आज किस समय आएँगे, अगर बता सकें तो मैं उससे पहले पहुँच जाऊँ। इसलिए कि आज बच्ची की दवा लेने के लिए जाना है वग़ैरह। या आप जहाँ जाएँ अगर हो सके तो बताकर जाया करें तो हमें फ़िक्र लग जाती है, पता नहीं क्या हुआ होगा? इसी तरह आपके फ़ोन बहुत आते रहते हैं, हमें पता हो तो हम बता सकें कि कहाँ गए हैं?

अब आप खुद ही इन्साफ़ कीजिए कि दोनों मुकालमों (गुफ़्तगुओं) को पढ़िए, पहले वाले से जिसमें: क्यों...... क्या...... कैसे...... कब...... कहाँ...... से सिर्फ़ घर में नफ़रत की आग ही भड़केगी और लड़ाई झगड़ों की अधिकता होगी, और मक़सद भी पूरा नहीं होगा, बल्कि बेवकूफ़ शौहर ज़िद में आकर बीवी को और सताएगा। पहले समय पर पहुँचता था तो अब जान-बूझकर देर करेगा।

पहले बच्चों को सिर्फ़ ग़लत काम पर डाँटता था अब मारेगा, अल्लाह तआला ऐसे जाहिल, बेवकूफ़ शौहर से हव्वा अलैहस्सलाम की हर बेटी की हिफ़ाज़त फ़रमाए आमीन।

और दूसरी तरह बात करने से शौहर का दिल नरम भी होगा, वह अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा भी होगा और आईन्दा ज़रूर ख़्याल रखेगा और बीवी की अक़्लमन्दी व समझदारी का पहले से ज़्यादा मोतक़िद हो जाएगा। इसी लिए मुसलमान बीवी को चाहिए कि हर मौक़े पर, हर परेशानी व ख़ुशी के लम्हों में हर बीमारी व मुसीबत में अपने लहजे (बात करने के अन्दाज़) को न बदले। अदब, अदब, अदब, का हर समय ख़्याल रखे, कि बेअदबी के जाल से किसी चीज़ का शिकार नहीं हो सकता और अदब व

एहतिराम बिना किसी जाल के ज़ालिम से ज़ालिम शौहर के दिल को मोम बना सकेगा, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

प्यारी बहन! याद रखना कभी-कभी छोटी सी ग़लती की सज़ा उम्र भर भुगतनी पड़ती है। किसी समय का ग़लत बोल या ग़लत मौक़े पर बेतुकी बात उम्र भर सताती है, इसलिए कभी नर्मी व तमीज़ वाला लहजा हाथ से न जाने देना। यह नर्मी वाला लहजा कभी न कभी ज़रूर आराम पहुँचाएगा। खुदा न करे खुदा न करे! अगर दुनिया में इसका बदला न मिला तो आख़िरत में ज़रूर बिज़्ज़रूर बेशुमार सवाब दिलाएगा।

और यह सख़्ती वाला अन्दाज़ कभी न कभी इनसान को ज़रूर नुक़सान पहुँचाता है, हाँ मगर यह कि अल्लाह से तौबा करे और शौहर से बार-बार माफ़ी माँगती रहे और उसकी ख़िदमत करके इतना उसको खुश कर दे कि जितना उसका दिल दुखा है, बल्कि उससे भी ज़्यादा खुश कर दे।

याद रखिए! आपको नफ़्स कभी यह धोखा न दे कि मेरे माँ-बाप मालदार हैं, मैं उनके पास चली जाऊँगी। नहीं, कभी नहीं! शौहर के कहने पर भी आप इसको क़बूल न कीजिए। ऐसा मौक़ा ही न दीजिए कि वह यह कह दे कि तुम अपने मैके चली जाओ। तुम नहीं होती तो मुझे सुकून मिलता है। इसलिए कि अभी आपका शौहर के घर से निकलना बहुत आसान है और यह आपके हाथ में है, अब यह मुम्किन है कि माँ को फ़ोन कर करके गाड़ी मंगवा ली और मैके चली गई, या छोटे भाई और बाप को बुला लिया और चली गई, लेकिन फिर दोबारा लौटना बड़ा मुश्किल है। अब यह आपके हाथ में नहीं रहा, अब यह किसी और के हाथ में चला गया कि वह जब आपको बुलाना चाहेगा बुलाएगा और जो चीज़ दूसरे के हाथ में चली जाए उसमें फिर अपनी नहीं चलती।

इसलिए कभी इस ख़्याल को भी दिल व दिमाग़ में मत आने देना। अभी तो नादान माँ भी आपका साथ दे देगी, छोटे भाई भी साथ दे देंगे,

ख़ालाएँ भी हौसला बढ़ाएँगी, लेकिन ज्ूँ-ज्ूँ समय बीतता जाएगा आपके लिए माँ के घर का एक दिन एक महीने के बराबर होगा और जब छोटे भाईयों की शादी हो जाएगी और भाभियों ने कभी यह कह दिया:

"हमारे साथ क्या निबाह करेगी कभी अपनी सास और शौहर के साथ नहीं निभाया"

उस समय का यह एक ताना पत्थर जैसे जिगर में भी सुराख़ कर सकता है। खिले से खिले फूल को भी यकदम मुरझा कसता है।

इसलिए कि शौहर के सौ ताने हज़्म हो सकते हैं लेकिन भाभी का एक ताना उन सौ पर भी भारी होता है। शौहर के घर में चटनी-रोटी, भाईयों की मुर्ग़ी-बिर्यानी से बहुत ही बेहतर होती है, इसलिए कभी इस ख़्याल को दिल में जगह मत देना कि "मैके चली जाऊँगी"।

इसी लिए बड़ी-बूढ़ीयाँ कहती थीं:

"डोली आई है बारात की शक्ल में, अब जनाज़े की सूरत ही में वापस जाएगी"।

ज़िन्दा क्यों ख़ाना-ए-यूसुफ़ से ज़ुलेख़ा निकले
मर के उसके घर से तमन्ना थी जनाज़ा निकले

ग़ैर देखें तेरी देखी हुई सूरत मेरी
यह गवारा न करेगी कभी ग़ैरत मेरी

इसलिए यही अब तुम्हारा असली घर है। इसी घर को बनाना है इसमें अपने मुक़द्दर की तकलीफ़ों को मुस्कुराहट के आईने में देखना है। सारी तकलीफ़ें फ़ना हो जाएँगी एक दिन, इसी को सोचकर अपने आपको तसल्ली देना है।

अल्लाह से गिड़गिड़ाकर रो-रोकर दुआएँ माँगकर इन मुसीबतों को दूर करवाना है। लेकिन यह नहीं हो सकता, कभी नहीं हो सकता कि मैं यह सोचूँ कि मैं इस घर से चली जाऊँगी, इन्शा-अल्लाह इसी को जन्नत का गहवारा बनाऊँगी। इन्हीं बच्चों को जन्नत के लड़के और इन्हीं बच्चियों को हूर बनाऊँगी। आमीन या रब्बल्-आलमीन।

4. शौहर को हुक्म के लहजे में कोई बात न कहे। इनसान की तबीयत है कि कोई बात उसको हुक्म से कही जाएगी या ज़बरदस्ती उससे तलब की जाएगी तो या वह इनकार कर देगा, या मजबूरी की सूरत में दिल से नाराज़ होकर आपका काम करेगा।

दीन के आ़लिमों ने तो यहाँ तक लिखा है कि माँ-बाप को भी चाहिए कि अपने बेटे को भी हुक्म देने के अन्दाज़ में किसी काम को मत कहो, कहीं ऐसा न हो कि हुक्म देकर कहा और फिर बेटे ने बात न मानी तो वह गुनाहगार होगा। बेटे को गुनाह से बचाने के लिए यूँ कहिए:

"बेटा हमारा ख़्याल है कि यूँ कर लो तो अच्छा है"।

(खुलासतुल फ़तावा जिल्द 4 पेज 340)

इसलिए बीवी को चाहिए कि शौहर को हुक्म न दे "आप यह करना आप यह लाना, फुलाँ को यूँ कह देना" बल्कि यूँ कहे मेरा ख़्याल है इस तरह हो जाए तो, मैं चाहती हूँ आप फुलाँ चीज़ ला सकें तो बड़ी मेहरबानी होगी। रशीद की तबीयत ठीक नहीं अगर आपको समय मिले तो दवा के लिए जाना है, घर में सब्ज़ी कल तक ख़त्म हो जाएगी परसों के लिए लानी पड़ेगी, वग़ैरह।

प्यारी बहन! क्या ख़्याल है आपका ...... अगर आप इन नसीहतों पर अ़मल करके देखें, आज़माने के लिए कुछ महीने ही करके देखें। अल्लाह तआ़ला आपकी और सारी मुसलमान बहनों की मदद फ़रमाए आमीन।

बीवी शौहर को ऐसी बातों पर मजबूर न करे

1. ऐसी बातें जिनमें शौहर मजबूर है, वह कर नहीं सकता, तो उन बातों पर नेक बीवी को चाहिए कि शौहर को मजबूर न करे, जैसे वह घर में बहुत ज़्यादा ख़र्चा नहीं कर सकता, बहुत महंगे-महंगे कपड़े नहीं दिलवा सकता, तो उसको मजबूर न करे। यह न कहे: देखिये आपके भाई ने भाभी को कैसा अच्छा कपड़ा दिलवा दिया? आप कभी ऐसा मेरे

लिए लाए? वह भी तो आप ही की तरह मुलाज़िम है, उनका घर देखें, हमारे घर में कोई ढंग की चीज़ है? या फुलाँ आपके भाई बच्चों के लिए कैसी कैसी चीज़ें लाते हैं, आप कभी लाए ऐसी चीज़ें? वग़ैरह।

ऐसी औरत जो शौहर की हैसियत से अधिक मुतालबा करे, या मालदार शौहर को भी ग़रीबों, मिस्कीनों, फ़क़ीरों पर माल ख़र्च करने के बजाय अपनी फ़ना होने वाली ख़्वाहिशों पर लगवाए, मालदार को ख़र्च करने से थका दे और फ़क़ीर पर ऐसा बोझ डाले जिसकी वह ताक़त नहीं रखता, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो अज़ीमुश्शान सहाबी हैं और फ़ुक़हा-ए-सहाबा में से हैं, ऐसी औरत को फ़ितनों में से एक फ़ितना बताया है। अल्लाह तआला हर मुसलमान मर्द की हिफ़ाज़त फ़रमाये कि उसके निकाह में ऐसी औरत आ जाए जिसको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी फ़ितना कहें।

इसी तरह अल्लाह तआला हर मुसलमान औरत की हिफ़ाज़त फ़रमाए कि वह इस बुरी आदत में मुब्तला होकर अल्लाह के लाडले प्यारे बन्दे की मुबारक ज़बान से फ़ितना बनने की हक़दार हो।

रजा बिन हैवह से रिवायत है कि मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

انكم ابتليتم بفتنة الضرّاء فصبرتم، وانا اخاف عليكم من فتنة السرّاء وهى النّساء، اذا تحلين بالذهب ولَبِسْنَ ريط الشام وعصب اليمن فأتعبن الغنى و كلفن الفقير ما لا يطاق. (المرأة المثالية فى أعين الرجال ص١٣)

तर्जुमाः तुम आज़माये गये सख़्ती के फ़ितने में तो तुमने सब्र किया, अब मैं डरता हूँ तुम पर ख़ुशी व नर्मी के फ़ितने से और वह औरतों का फ़ितना है, ऐसी औरतें जो सोने के ज़ेवरात पहनें और मुल्क शाम की चादरें पहनें और यमन के ताज पहनें, जिससे मालदार शौहर ख़र्च करके उन पर थक जाए और फ़क़ीर पर इतना बोझ डाल दें जिसको वह सह न कर सके।

इसी बिना पर एक अ़रबी शायर ने ऐसी बीवी को बहुत ही सुलझे हुए अन्दाज़ से नसीहत करते हुए फ़रमायाः

ان كلفتنى مالم اطق سائك ماسرك منى من خلق

तर्जुमाः अगर तूने मुझे ऐसी बातों पर मजबूर किया जो मेरे बस में नहीं हैं तो (याद रखना) जितनी अब तक तुमने मुझसे राहत हासिल की है अब उससे ज़्यादा तकलीफ़ें उठाओगी।

2. इसी तरह शौहर से अपनी सास की बार-बार शिकायत लगाना; आपकी माँ ऐसी ऐसी...... अब शौहर माँ को तो बदल नहीं सकता कि दूसरी माँ ले आए नेक बीवी को चाहिए कि माँ को यह समझे किः

الضّيف الذى سيرحل عما قريب.

तर्जुमाः कि यह एक ऐसा मेहमान है जो जल्द ही हमारे यहाँ से चला जाएगा।

इसलिए थोड़ा-सा सब्र कर लूँगी तो हमेशा-हमेशा इस बूढ़ी सास की जो दुआ़ मिलेगी वह मेरे लिए दुनिया व आख़िरत में बहुत-बहुत इनाम दिलाने वाली होगी।

और यह ग़ौर करे कि मेरी माँ भी बूढ़ी होने वाली है, अल्लाह न करे अगर मैं अपने शौहर की माँ का ख़्याल नहीं रखूँगी तो मेरी भाभियाँ भी मेरी माँ के साथ ऐसा ही करेंगी, इसलिए कि उसूल है "जैसी करनी वैसी भरनी"। तीसरी बात यह सोचे कि मैं भी एक दिन बूढ़ी होने वाली हूँ। अगर आज मैंने सास के साथ अच्छा सुलूक नहीं किया तो कल मेरी बहू भी मेरे साथ ऐसा ही करेगी।

चौथी बात यह सोचे कि जूँ-जूँ इनसान बूढ़ा होता रहता है, वह बच्चे की तरह होता रहता है, तो मेरे दो साल के बच्चे को जिस तरह मैं फेंक नहीं सकती, इसी तरह मैं अपनी सास को अपने से अलग क्यों कर दूँ?

इसलिए आपके शौहर आपकी सास के अकेले बेटे हैं या दूसरे भाईयों ने भी माँ को साथ नहीं रखा तो आप इस सूरत में इस सवाब

से कभी मेहरूम न हो जाईए और अपने शौहर को कभी मजबूर न कीजिए कि वह माँ को अलग रखे। हाँ! बिल्कुल ही न बनती हो और दोनों की दीन व दुनिया ख़राब व बरबाद हो रही हो और नई नस्ल की ज़िन्दगी भी अजीरन हो रही हो तो शरीअ़त में इजाज़त है कि अलग रह सकते हैं और इस हालत में अलग रहना ही बेहतर है। हाँ उस सूरत में भी ख़िदमत में कमी-कोताही न करे। सास की इस तरह ख़िदमत करे कि उनको पानी का गिलास भी न उठाना पड़े।

सास के साथ रहने में या अलग रहने में इन बातों का ज़रूर ख़्याल रखे कि शौहर को समझाए कि माँ के सामने मेरी तरफ़ तवज्जोह ज़्यादा न दीजिए बल्कि माँ की तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह दीजिए। कहीं माँ को हल्का सा भी ख़्याल न गुज़र जाए कि यह मुझे छोड़कर बीवी की तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह करता है।

3. गाड़ी में कहीं जाएँ तो शौहर से कहिए कि माँ को आगे बैठाएँ, मैं पीछे बैठ जाऊँगी। मैं हमेशा तो आगे बैठती हूँ आज माँ को बैठा लीजिए तो उनका दिल खुश होगा। अल्लाह मियाँ खुश हो जाएँगे और जिस बन्दे से अल्लाह तआ़ला खुश हो गए तो उसका क्या कहना, उसकी तो दुनिया और आख़िरत बन गई।

4. आप कभी कोई कपड़ा वग़ैरह लाएँ तो पहले माँ को दीजिए उनके हाथ में रखें जो उनको ज़्यादा अच्छा लगे वह उनको दे दें फिर जो वह मुझे अपनी खुशी से दे देंगी मैं ले लूँगी।

अगर यह मालूम हो कि जब सास के हाथ में जाएगा तो बहू को कुछ भी नहीं मिलेगा बल्कि बहू का हिस्सा भी नन्दों के पास चला जाएगा तो उस समय शौहर चुपके से लाकर बीवी को दे। और बीवी जायज़ बहाना बनाकर सास को समझा दे कि यह कपड़ा मेरी माँ ने मुझे दिया है, ईद की खुशी में, या फुलाँ बच्चे की पैदाईश पर। वग़ैरह।

5. कभी शौहर के साथ बाहर जाए तो माँ को अकेले घर में न छोड़कर जाए (लेकिन अगर माँ इसी में खुश है कि अकेले घर में रहे तो

कोई हर्ज नहीं)। रिश्तेदारों से मिलने के लिए या जायज़ तफ़रीह के लिए मियाँ-बीवी गए और माँ यानी सास को अकेले छोड़कर गए, ख़ास कर ससुर का भी इन्तिक़ाल हो गया हो तो इस सूरत में माँ के दिल में बहू की तरफ़ से मैल आने का ख़तरा है।

6. किसी रिश्तेदार औरत की तरफ़ से फ़ोन आए तो सास के होते हुए सास को दे दे ख़ुद ही सारी बातें न कर ले। फ़ोन की घन्टी बजते ही कुछ सासों को बेचैनी शुरू हो जाती है- किसका फ़ोन होगा? बहू ने क्या क्या बातें की होंगी? उसने क्या-क्या कहा होगा?

इन सब ख़ुराफ़ात से बचने के लिए माँ (सास) को बुला ले, माँ आप बात कर लीजिए फ़ुलानी का फ़ोन है। हाँ अगर अल्लाह तआ़ला ने गुन्जाईश दी है तो शौहर को चाहिए कि दो फ़ोन रख लें एक अपने कमरे में हो, एक माँ के पास हो, ताकि बीवी अपने माँ-बाप अपनी बहनों से इत्मीनान से बात कर सके।

बीवी हमेशा याद रखे! सास और ससुर की ज़्यादतियों को सहना नेक औ़रतों का शेवा है। इसलिए कि आग, आग से नहीं बल्कि पानी से ठंडी होती है, और जब किसी मामले में नर्मी की जाए तो उसके अन्दर हुस्न और ख़ूबसूरती पैदा होती है।

बीवी पर एक हक़ शौहर की तरफ़ से यह भी है कि हमेशा शौहर को उसके माँ-बाप यानी अपनी सास और ससुर के साथ एहसान और हदिया देने की तर्ग़ीब देती (प्रेरित करती) रहे। समय-समय पर शौहर जो बीवी के लिए चीज़ लाए तो उससे कहे कि माँ के लिए भी ऐसी ही लाओ और अगर गुन्जाईश नहीं तो पहले माँ को दे दें फिर अल्लाह ने दोबारा दिया तो मैं ले लूँगी। इसलिए कि बचपन में जो माँ-बाप ने शौहर को पाला है, उसकी तालीम व तरबियत पर ख़र्च किया है, उसका दसवें का दसवाँ हिस्सा भी शौहर अदा नहीं कर सकता।

जो बीवी अपने शौहर को सास, ससुर के ख़िलाफ़ उकसाएगी वह याद रखे कि वह हक़ीक़त में अपने और अपने शौहर की राह में काँटे

बो रही है। अपनी जीती जागती और हंसती खेलती दुनिया को वीरान कर रही है। शौहर काम पर गए हुए हैं, सास किसी बात पर नाराज़ हुई, बात ख़त्म हो गई, बीवी ने उसको ख़ूब दिल में रखा, सजाया, चार बातें और मिलाईं, शौहर जब रात को आए तो बिना कुछ बताए बीवी ख़ूब रोने लगी।

अरे क्या हुआ? बातओ तो सही? मुझे अकेले में बता दो।

बीवीः नहीं! बस आप छोड़ दीजिए मेरे मुक़द्दर ही ऐसे हैं।

शौहरः नहीं! बताओ तो सही हुआ क्या?

बीवीः नहीं! आप रहने दें, बस मेरे माँ-बाप ने मुझे कहाँ फेंक दिया। अल्लाह करे जल्दी मर जाऊँ जान छूटे।

शौहरः नहीं! बताओ तो सही तुम्हें बताना ही पड़ेगा।

बीवीः बावर्चीख़ाने में दूध गर्म होते-होते गिर गया तो अम्मी ने इतना डाँटा, मासी बड़ी भाभी सबके सामने ज़लील किया। बस ज़रा सी फ़ोन की घन्टी बजी, मैं उठाने गई हल्की आँच पर दूध रखा था थोड़ा सा ही गिर गया, इसमें क्या हो गया, लेकिन माँ ने ऐसा डाँटा।

अब खुदा न करे, खुदा न करे, अगर नादान शौहर बीवी के आँसुओं से मुतास्सिर हो गया (जैसे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई उनको कुएँ में गिराकर बाप साहिब के पास रोते हुए आए कि भेड़िये ने यूसुफ़ को खा लिया, बाज़े वक़्त औरतों का रोना ऐसा ही होता है) और उसने माँ को सख़्त लहजे में कुछ कह दिया तो उस घर का तो अल्लाह ही हाफ़िज़ है।

इसलिए बीवी होशियार रहे, कभी माँ की बुराई बेटे यानी अपने शौहर से न करे। दिन को जो झगड़ा हो गया उसको भूल जाए। रात को नये हौसले जज़्बे से ज़िन्दगी की नई बुनियाद डाले, पुरानी बात शौहर को न बताए। अगर शौहर को बताया और शौहर ने मुतास्सिर (प्रभावित) होकर माँ-बाप को कुछ कह दिया तो दुनिया व आख़िरत दोनों बिगड़ने का ख़तरा है।

हाँ! अगर साथ रहने में रोज़ाना के झगड़े होते रहते हैं तो अच्छा है

कि अलग हो जाएँ। वरना कम से कम बावर्चीख़ाना अलग कर लें, कि यह बीवी का फ़ितरी हक़ है। बीवी अपने अलग बावर्चीख़ाने में पका कर सास को खाना दे दे, यह अच्छा और बेहतर है इसके मुक़ाबले में कि एक ही मकान एक ही बावर्चीख़ाना हो, इसलिए कि एक चूल्हा अक्सर घरों में सास बहू में, फिर शौहर-ससुर में आग भड़काता है। इसलिए सास की ख़िदमत ज़रूर करे लेकिन अलग होकर, नज़दीक मकान ले ले अगर गुन्जाईश हो, वरना सिर्फ़ बावर्चीख़ाना अलग कर ले।

बीवी को याद रखना चाहिए कि माँ का बहुत बड़ा दर्जा होता है। सआदत-मन्द और मुबारकबादी के लायक़ वही बीवी है जो अपने शौहर को माँ-बाप, भाई-बहनों से अच्छा सुलूक करने पर उभारती रहे। हम किताब "तोहफ़तुल् उरूस" से एक लड़की का ख़त पेश करते हैं जो नई-नवेली माँ बनी है, ताकि नई-नवेली दुल्हन इसको पढ़कर अपने शौहर की माँ का हक़ व रुतबा पहचाने और शौहर से सास की कभी बुराई न करे।

हर दुल्हन के लिए नई-नवेली माँ का ख़त

पहले बच्चे की पैदाईश के बाद......

मेरी अम्मी, मेरी अच्छी अम्मी!

मैं तुमसे मुहब्बत करती हूँ मुझे तुमसे मुहब्बत है। मैं तुम्हें चाहती हूँ और इतना चाहती हूँ कि शायद आज से पहले तुम्हें कभी इतना न चाहा था। मेरे इर्द-गिर्द मौजूद एक-एक चीज़ मुझे मजबूर करती है कि पहले से कहीं ज़्यादा टूटकर मैं तुमसे मुहब्बत करूँ, क्योंकि इस मुहब्बत की हक़ीक़त ज़िन्दगी में आज पहली बार खुली है। आज मेरी अन्दरूनी एक-एक चीज़ मुझे झिंझोड़ रही है मेरी माँ!

यूँ तो मैंने हमेशा तुमसे मुहब्बत की है लेकिन इस क़द्र अज़ीम मुहब्बत की तह तक मेरी रसाई ऐसी कभी नहीं हो सकी जितनी आज हुई है। क्या यह ताज्जुब की बात नहीं कि यह शऊर मेरे अन्दर अब

पैदा हुआ है और इतने दिन जब तक मैं तुम्हारी गोद में रही, जैसे एक बच्ची रहती है, मुझे इसका एहसास तक न हुआ।

मैं तो यह देखती थी कि तुम मुझसे कितनी मुहब्बत करती हो, मुझ पर कितनी तवज्ज़ोह करती हो। उस समय जब मैं नवजात थी, फिर नन्हीं मुन्नी बच्ची थी, फिर एक नौजवान लड़की हुई। इन तमाम दिनों, ख़ास तौर से बचपन और जवानी में मैंने तुम्हारी शफ़क़त, मुहब्बत और तवज्जोह को बख़ूबी महसूस किया।

फिर आख़िरकार वह समय आया जब मैं दुल्हन बनी और एक नई दुनिया बसाने के लायक़ हुई। ऐसी दुनिया जो उसके माँ-बाप और उसके अपने ख़ानदान से निराली दुनिया थी। मैं जब अपने और अपने भाईयों पर तुम्हारी नवाज़िशें और इनायतें देखा करती तो हैरान रह जाती थी। मैं हैरान थी कि आख़िर यह ऐसी कौनसी ज़ात है, इसके अन्दर कौनसा इनसान छुपा हुआ है जो अपनी ज़िन्दगी हम पर इस तरह निछावर कर रही है। हमारे सुख, चैन और राहत के लिए अपने चैन को कुर्बान किए हुए है। यह कौन है जिसे मैं माँ के मीठे नाम से पुकारती हूँ।

यह किस ख़ाक की पुतली है, कौनसी खान से निकली है? यह कैसा दिल है जो सिर्फ़ मुहब्बत और नरमी की बोली जानता है और अपने बच्चों को, इस छोटी-मोटी दुनिया को इसी मुहब्बत के बोल से आबाद किये हुए है।

लेकिन मेरी अच्छी अम्मी!

मेरी नई पैदा हुई बच्ची की पहली चीख़ ने मुझ पर इस भेद को खोल दिया। उसकी मासूम किलकारियों ने मुझे सब कुछ सिखा दिया और जिस समय वह मेरी आग़ोश (गोद) में आई, उसके महकते हुए गरम आँसुओं में मैंने सब कुछ पा लिया। मुझे एक-एक हर ऐसे सवाल का जवाब मिल गया, जिसने एक ज़माने से मुझे हैरान कर रखा था। आज मैं तसव्वुर की आँख से तुम्हारे ख़ूबसूरत चेहरे को तक रही हूँ। तुम्हारी आँखों में झाँक रही हूँ। तुम्हारी नवाज़िश आज भी इसी तरह जारी है।

तुम आज भी मुझ पर वैसी ही निसार हो। इसकी ज़र्रा बराबर तुम्हें परवाह नहीं कि अपने किसी एहसान का कोई बदला तुम मुझसे माँगो। अपने बच्चों के लिए तुम ने जो कुछ किया, उसका सिला चाहो।

मेरी अम्मी! आज मैंने जाना कि माँ होने का मतलब क्या है? क्योंकि आज मैं भी एक नन्ही-मुन्नी बच्ची की माँ हूँ। इसके अन्दर अपने साथ-साथ मैं तुम्हारी झलक भी देखती हूँ। मेरी अपनी ज़िन्दगी का पूरा नक़्शा जब से मैं इस दुनिया में आई, फिर पली-बढ़ी, जवान हुई, मेरी शादी हुई, फिर खुदा ने मुझे बच्चों वाला बनाया, और एक छोटी सी जान को मेरी गोद में डाला, यह पूरा नक़्शा मैं उसके अन्दर देख रही हूँ।

अम्मी! ज़चगी (बच्चे की पैदाईश) की घड़ियाँ इन्तिहाई तकलीफ़देह थीं। मैंने बेहद और देर तक तकलीफ़ उठाई। उस घड़ी जो हर माँ पर आती है, मैं चाहती थी कि तुम मेरे नज़दीक होती, फिर मैंने ज़चगी की तकलीफ को भुला दिया और उसके दुख को भूला दिया। अब मुझे कुछ याद नहीं। हाँ एक नन्हा-सा धड़कने वाला दिल मुझे याद है जो मेरी नई दुनिया को आबाद किए हुए है।

जब मैं अस्पताल में थी, मैं अपने नवजात को देख रही थी, जिसे नर्स अपने हाथों पर उठाए मेरे पलंग पर मेरे बराबर में सुलाने के लिए आ रही थी। मैंने उस बच्ची को देर तक देखा, उस छोटी मख़्लूक़ को बहुत समय तक तकती जिसे पूरे नौ महीने तक मैं अपने पेट में लिए लिए फिरी। अपने ख़ूने-दिल से उसको पाला, मैं उसके लिए उसके साथ-साथ जी रही थी। खाना हिसाब से खाती थी, टाईम से टाईम तक सोती थी, बड़े हिसाब से हिलना-डुलना करती थी, जैसे दुनिया का सबसे क़ीमती ख़ज़ाना मैं उठाए हुए हूँ।

मेरी अम्मी! अब वही मेरी कुल/कायनात है। वही मेरी ज़िन्दगी है मेरी जान और मेरा कुल सरमाया है, मेरी नन्ही सी कली मेरी बच्ची। ज़िन्दगी भी कितनी हसीन है ऐसी ज़िन्दगी जो लौटकर फिर आ रही हो।

अम्मी! मैं तुम्हारा गरम-जोशी से देर तक बोसा लेती हूँ और तुम्हारी छोटी सी नवासी का बोसा लेते हुए अपने साथ तुम्हें भी शरीक पाती हूँ ।

तुम्हारी बेटी

(अल-अ़रबी से माख़ूज़, लेखक मुनीर नसीफ़, 19 मार्च 1974 ई.)

ग़ौर कीजिए! कौनसा जुमला आपके दिल में घर कर गया और आपने अपनी इरादी कुव्वत से फ़ैसला कर लिया कि मैं कभी भी कैसे भी हालात में अपनी सास की शिकायत शौहर को नहीं करूँगी। शौहर की माँ मेरी माँ है, उसने मुझे मार भी दिया, डाँट भी दिया, ज़लील कर दिया, ताना दिया, मेरे ख़ानदान को बुरा-भला कहा, जो कुछ भी हुआ आख़िर माँ है, आख़िर माँ है, आख़िर माँ है।

आह! किसकी माँ! मेरे सर के ताज की माँ। मेरे दोस्त की माँ। मेरे जीवन-साथी की माँ, जिसने मुद्दत तक मेरे शौहर को पेट में उठाया, अपनी ग़िज़ा से परवान चढ़ाया, फिर जब उस छोटी सी जान ने दुनिया में क़दम रख तो उसने उसकी परवरिश की, रातों को उसके लिए जागती रही, अपनी ज़िन्दगी की डोर को उसके साथ बाँधे रखा, तरह-तरह की घाटियाँ आईं। हर तरह का बोझ बर्दाश्त किया और ख़ुशी-ख़ुशी सब कुछ सहती रही। क्या मैं इन सब कुर्बानियों को भूलकर एक डाँट पर माँ और बेटे में झगड़ा करा दूँ?

ऐ रब्बुल्-आ़लमीन! मेरी क़िस्मत का वह बुरा दिन मुझे न दिखा और किसी मेरी मुसलमान बहन को ऐसा दिन न दिखा कि वह माँ और बेटे में झगड़ा करवाए। क्या कोई अपनी माँ की कोशिश, उसकी मेहनत, उसके घुलने और पिघलने को भूल सकता है। कुरआन पाक माँ की ज़िन्दगी की नाज़ुक-तरीन और अहम-तरीन घड़ी को याद दिलाता है।

कि इस मुक़द्दस ज़ात ने तन, मन, धन, और सब कुछ उस पर निछावर कर दिया। इसलिए बहू को चाहिए कि माँ की इस घड़ी को अपने सामने रखे और उसी आँख से अपनी सास को देखे। माँ-बाप की

नाफ़रमानी, उनसे बेताल्लुक़ी, उनसे सख़्त लहजे में बातचीत, उनको गुस्सा करना या डाँटना, ख़ुसूसन बीवी का साथ देकर उनको तकलीफ़ देना, उनके एहसान को भुला देना बड़े गुनाहों में से है। किसी तरह भी मुसलमान बीवी के लिए मुनासिब नहीं कि सास के थोड़े से जुल्म की वजह से माँ और बेटे में झगड़ा करवाए। कभी नहीं, कभी नहीं।

दुनिया कुछ दिन की ज़िन्दगी का नाम है। रात के बाद दिन का आना ज़रूरी है। इसी तरह आज सख़्त हालात हैं कल इन्शा-अल्लाह तआ़ला अच्छे हो जाएँगे। लोग सालों-साल जेलों में तकलीफ़ों के साथ ज़िन्दगी गुज़ार लेते हैं, तो क्या हो गया मैं भी सास के साथ गुज़ारा कर ही लूँगी।

हाँ! अगर सास से अलग रहती है तो ज़रूर कोशिश करे कि कुछ न कुछ रोज़ाना खाने पीने की चीज़ें भेजे। फ़ोन पर रोज़ाना ख़ैरियत मालूम करे। बच्चों को दादी अम्माँ से फ़ोन पर बातें करवाए। दादी पोते पोतियों से बात करने में ख़ुशी महसूस करती है। यह तो कम-क़िस्मती से हमारे हिन्द व पाक में यहाँ के दूसरे समाजों के साथ रहने की वजह से नन्द और देवरानी जेठानी ने मिलकर सास को वास्ता व ज़रिया बनाकर नई आने वाली बहू पर इतना जुल्म किया, इतना जुल्म किया कि नई नस्ल के बच्चों के दिमाग़ में दादी और फूफी का तसव्वुर एक ज़ालिम मख़्लूक़ की शक्ल में आता है, इसके मुक़ाबले में नानी और ख़ाला को वे अपना सब कुछ समझते हैं, उनसे बेख़ौफ़ व ख़तर मिलते हैं, उनकी गोद में बैठते हैं। और दादी, फूफी, चची से डरते रहते हैं, उनको इनसानियत से बाहर कोई नई मख़्लूक़ समझते हैं, जिनका काम ही झगड़े और फ़साद करवाना होता है।

हालाँकि इसमें दादी का क़ुसूर बहुत ही कम होता है। जेठानी और नन्द इसमें मुख्य रूप से काम करतीं हैं। अल्लाह ही ऐसी फ़सादी जेठानी और नन्द को हिदायत अ़ता फ़रमाए और आपकी भी ऐसी जेठानी और नन्द बनने से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आप ज़रूर किसी की बहू हैं लेकिन

आप अपनी माँ के घर में नन्द भी हैं, कहीं वहाँ नन्द का रोल अदा करते हुए आप यही नन्द तो नहीं बन रहीं हैं?

इसलिए अभी से तौबा कर लीजिए। जिस दिन कोई काम नहीं आएगा, बहू या भाभी को सताने से अपनी नेकियाँ उनको दे देनी होंगी, फिर उनके गुनाह आप पर लाद दिए जाएँगे। इसलिए हमारी राय के मुवाफ़िक़ सास के साथ तो बहू का गुज़ारा हो सकता है लेकिन देवरानी जेठानी के साथ या फ़सादी नन्द के साथ दीन भी बर्बाद होता है और दुनिया भी और आने वाली नई नस्ल भी तबाह व बर्बाद हो जाती है। नन्द का एक बोल हाय अम्मी! आप तो कुछ बोलती नहीं हो, भाभी ने तो भाई को ख़रीद लिया है, भाई तो हमारे हाथ से गए। अम्मी! आप इतना भी नहीं बोल सकतीं? जेठानी और नन्द का यह फ़सादी बोल माँ और बेटे में, बीवी औ शौहर में, बाप और इक्लोते बेटे में फ़साद पैदा कर देता है। अल्लाह तआला मुसलमानों के घरों पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाए और हर घर में इत्तिफ़ाक़ व मुहब्बत अता फ़रमाए आमीन!

सारे झगड़ों से बचने का तरीक़ा

याद रखिए! मियाँ-बीवी का आपस में जोड़ अल्लाह तआला की निशानियों में से एक निशानी है। शौहर तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा क़रीब अपनी बीवी से होता है। इसी तरह बीवी तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा क़रीब अपने शौहर से होती है।

अब अगर इस ताल्लुक़ और संबन्ध के बीच दूसरे भी दाख़िल हो जाएँगे तो कभी भलाई की तरफ़ रहबरी नहीं हो सकती।

अक्सर जगहों पर मियाँ-बीवी में झगड़े, नफ़रतें, अदावतें, गिले-शिकवे, अपने-अपने रिश्तेदारों की तरफ़ से होते हैं। कभी शौहर के रिश्तेदारों से शैतान यह काम लेता है, कभी बीवी के रिश्तेदारों से शैतान अपने हरबे (वार) में कामयाब हो जाता है।

इसलिए मियाँ-बीवी दोनों को चाहिए और ख़ास कर बीवियों को चाहिए कि कभी सास व नन्द की शिकायतें शौहर से न करें और अपनी माँ को कभी भी घर के हालात न बताएँ। हमेशा उन पर अच्छाईयाँ ही खोलें, हाँ अगर ऐसा हो कि शौहर के साथ निभाने में आख़िरत बिगड़ रही है और दीन का नुक़सान हो रहा है, अल्लाह और उसके रसूल की नाराज़गी मोल लेनी पड़ रही है, उसको दीनदार बनाने की भरपूर कोशिश करने के बावजूद न ख़ुद दीन पर आता है न बीवी को पूरे दीन पर चलने की इजाज़त देता है, तो दीन के आ़लिमों और मुफ़्तियों से पूछकर अ़लैहदगी इख़्तियार कर ले।

बहरहाल! इस नसीहत को ख़ूब याद रखना कि घर की कोई बात अपनी सगी माँ और छोटी बहनों को भी मत बताना कि इससे आप ही का नुक़सान है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है: जो व्यक्ति किसी मुसलमान की पर्दा-पोशी करता है अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी पर्दा-पोशी फ़रमाएगा।

जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दा-दरी करता है (यानी किसी की छुपी बात खोलता है) अल्लाह तआ़ला उसकी पर्दा-दरी फ़रमाता है यहाँ तक कि घर बैठे उसको रुस्वा कर देता है। (फ़ज़ाइले आमाल 619)

इसी तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि बदतरीन सूद मुसलमान की इज़्ज़त से खेलना है। इसलिए एक मुसलमान बीवी के लिए मुनासिब नहीं कि अपने ससुराल के घर का कोई छोटे से छोटा ऐब भी अपनी माँ को बताए या अपने रिश्तेदारों को बतलाए। इसी तरह यह कि मेरे शौहर ने इस तरह किया, मेरी सास ने इस तरह किया, मेरी नन्द ने इस तरह किया, उनके घर में खाने का यह हाल है, उनके अख़्लाक़ उनकी सफ़ाई वग़ैरह का यह हाल है, वग़ैरह-वग़ैरह।

इन सब से मुसलमान औरत को बचना चाहिए वरना सालों की

इबादत बेकार जाती है और उन लोगों की जिनकी ग़ीबत की या जिन पर ग़लत इल्ज़ाम लगाए उनके गुनाह इस औरत पर डाले जाएँगे।

समझदार बीवी को चाहिए कि जब शौहर को या अपने को गुस्सा आए तो ख़ामोशी से किसी बहाने से दूसरे काम में मशग़ूल हो जाए। शौहर डाँट रहा हो, गुस्सा हो रहा हो तो बजाय इसके कि जवाब दे और लड़ाई की आग बहुत ज़्यादा भड़क जाए, इस तरह कह दे कि मैं अभी आ रही हूँ। चूल्हे पर कोई चीज़ रखी हुई है उसको देख लूँ। बच्चा सोया हुआ है उसको देख लूँ वग़ैरह। किसी बहाने से ख़ुद भी उस मजलिस से अलग हो जाए और कोशिश करे कि शौहर को भी उस मजलिस से अलग कर दे, कि इसमें बहुत ही फ़ायदे और बहुत ही हिक्मतें हैं, और क्यों न हों कि सुन्नत भी यही है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हर सुन्नत उम्मत के लिए रहमत का सबब है, बरकत का सबब है, उलफ़त का सबब है, इत्तिफ़ाक़ और मुहब्बत का सबब है।

आज हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतें छूट जाने की वजह ही से यह हम पर नाइत्तिफ़ाक़ी का अ़ज़ाब छाया हुआ है। अल्लाह तआ़ला हमें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक-एक सुन्नत पर अ़मल करने वाला और उसको दुनिया में फैलाने वाला बनाएँ। आमीन!

बुख़ारी व मुस्लिम में सहल बिन सअ़द साइदी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर तशरीफ़ लाए तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को न पाया, आपने पूछाः

"तुम्हारे चचा के बेटे कहाँ हैं?"

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब दियाः हम दोनों के बीच कुछ बात हो गई जिससे उनको गुस्सा आ गया और वह बाहर निकल गए। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी आदमी से कहा "देखो

अ़ली कहाँ हैं?" उन्होंने कहा वह मस्जिद में लेटे हुए हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए इस हाल में कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु लेटे हुए थे और उनके कन्धे से चादर हटी हुई थी तो वहाँ मिट्टी लग गई, आपने कहाः

"खड़े हो जाओ ऐ अबू तुराब, खड़े हो जाओ ऐ अबू तुराब"।

सहल रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि उसके बाद हज़रत अ़ली रज़ि० के नज़दीक इससे ज़्यादा प्यारा कोई और नाम नहीं था। (मुस्लिम)

इसमें एक और बात यह मालूम हुई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इस तरह दामाद के लिए पहल करना लड़की वालों के लिए इब्रत और नसीहत का सबब है, जबकि आज लड़की वाले अपनी बेटी को घर लेजाकर बैठा लेते हैं ताकि शौहर ख़ुद चलकर आए, ख़ुशामद दरामद करे और उनसे अपनी बीवी की भीख माँगे।

इसी तरह इस वाक़िए से मालूम हुआ कि शौहर को जब गुस्सा आ जाए तो फ़ौरन उसको उस कमरे से बाहर कहीं चला जाना चाहिए जैसे हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पर गुस्सा आया तो वह बाहर चले गए और मस्जिद में जाकर लेट गए। जिससे गुस्से के जज़्बात ठंडे हो गए। चूँकि गुस्से में ख़ून खौल जाता है आदमी को पता नहीं चलता कि इस समय मैं क्या कर रहा हूँ, इसलिए जब आप उस जगह से हट जाएँगे तो बदन के तमाम अंग और दिल व दिमाग़ ख़ून की नालियों को सुकून हो जाएगा। जिससे शैतान को ग़लत फ़ायदा उठाने का मौक़ा नहीं मिलेगा। इसलिए इस वाक़िए से हमें तीन बातें मालूम हुई हैं:-

1. गुस्से की हालत में मियाँ-बीवी फ़ौरन एक-दूसरे से अलग होने की कोशिश करें।

2. मियाँ-बीवी अपने झगड़े की सारी तफ़सील अपने रिश्तेदारों व अ़ज़ीज़ों को न बतलाएँ और एक-दूसरे की छोटी-छोटी बुराईयों को पहाड़ के बराबर बड़ी बुराईयाँ बनाकर पेश न करें। घर का झगड़ा घर ही में

विभिन्न तदबीरों और दुआओं के ज़रिये चुकाने की कोशिश करें, जिसके ज़रिये घर का सुधार घर के अन्दर ही हो जाए।

3. सुलह कराने वाला कोशिश करे कि उनका ज़ेहन झगड़े की बातों से हटाकर किसी ऐसी बात की तरफ़ मुतवज्जह कर दे जो उनको ख़ुश कर दे। जैसे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यूँ मुख़ातिब हुएः

قم یا ابا تراب، قم یا ابا تراب.

तर्जुमाः ऐ अबू तुराब उठो, ऐ अबू तुराब उठो।

इसी तरह जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बीवियों की कुछ ज़्यादतियों पर क़सम खा ली थी कि एक महीने तक उनके पास न जाऊँगा तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दिलजोई के तौर पर कहाः

या रसूलल्लाह! हम कुरैशी लोग औरतों पर ग़ालिब रहते थे मगर जब मदीना आए तो देखा कि अन्सार की औरतें मर्दों पर ग़ालिब हैं। उनको देखकर कुरैश की औरतें भी इससे प्रभावित हो गईं। उसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं: मैंने एक आध बात की जिससे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक चेहरे पर तबस्सुम के आसार ज़ाहिर हुए।

इसलिए हर सुलह कराने वाले व्यक्ति के लिए इन दोनों क़िस्सों में नमूना है कि सुलह कराने वाला/या कराने वाली, अच्छे अन्दाज़ से पहले ऐसी बातें करे जिससे शौहर का ग़म दूर हो जाए और गुस्सा कम हो जाए उसका ध्यान किसी और तरफ़ चला जाए, किसी तरह वह मुस्कुरा दे। फिर बात शुरू करे, इस बुनियाद पर किः

"जो हो गया उसको भूल जाओ, आगे ख़्याल रखना, अब नये हौसले नये जोश, नये अ़ज़्म के साथ अपने आज और कल को ख़ुशगवार बनाने के लिए नई ज़िन्दगी शुरू करो......"

बीवी अपनी सोच में मुस्तक़िल-मिज़ाज होने की कोशिश करे

बहुत सी दुल्हनें अपनी फ़िक्र व सोच से कोई काम नहीं करतीं, बल्कि हर समय छोटी सी बच्ची की तरह हर बात में अपनी माँ या बहनों और सहेलियों की तरफ़ रुजू करती हैं। यहाँ तक कि अपने शौहर की ज़िन्दगी के बीच के बहुत से मामलों में भी अपना इख़्तियार नहीं रखतीं बल्कि माँ से पूछ-पूछकर अ़मल करती रहती हैं।

तजुर्बेकार, दीनदार माँ से पूछकर चलना बड़ी अच्छी बात है, लेकिन ज़्यादा तर समय अपनी माँ के सामने घर की और शौहर के मिज़ाज की पूरी नौइयत सामने नहीं होती जिससे वह ऐसा मश्विरा दे दिया करती है जो दोनों को नुक़सान पहुँचाने का सबब होता है। इसलिए कि हर शौहर की यह चाहत होती है कि बीवी मेरी जीवन-साथी है, हम दोनों एक दूसरे के लिए ज़िन्दगी की चक्की के दो पाट हैं अब इसमें हमारा कोई शरीक न हो। बीवी के प्यारे से प्यारे रिश्तेदार को भी अपना हिस्सेदार देखना गवारा नहीं करता, चाहे वह उसका ख़ून व गोश्त का रिश्ता ही क्यों न हो।

इसलिए समझदार बीवी को चाहिए कि अल्लाह से दुआ़ माँगकर हर मौक़े पर ऐसा क़दम उठाए और ऐसा फ़ैसला करे जो दोनों की दुनिया व आख़िरत दोनों बनाए। ऐसा न हो कि हर काम में माँ व ख़ालाओं की राय की मोहताज हो। बल्कि अपनी सोच व फ़िक्र व सुलूक में मुस्तक़िल मिज़ाज बनने की कोशिश करे।

बीवी शौहर के सामने अपने घर वालों के राज़ न खोले

इसमें कोई शक नहीं कि राज़ की बातें उसी समय तक राज़ में

रहती हैं जब तक उनको राज़ में रखा जाए। इसलिए हर घर में कुछ बातें ऐसी हो जाती हैं जो माँ-बाप न भी बताएँ तब भी औलाद को ख़बर हो जाती है। तो औलाद को चाहिए कि उनकी शादी हो जाने के बाद वह शौहर हो तो बीवी को, बीवी हो तो शौहर को अपने माँ-बाप की, अपने भाई बहनों की, अपनी फूफी ख़ालाओं की बातें न बताएँ।

एक तो इसमें अपने माँ-बाप के साथ बहुत ही बड़ी ख़ियानत है, जिन्होंने इतने एहसान किए। बीस साल तक पाला-पोसा परवान चढ़ाया, अब बीस दिन हुए जिस शौहर के पास गई उससे माँ बाप के घर की सारी पुरानी बातें बयान कर दीं और इस तरह ख़ियानत करने से अल्लाह तआला नाराज़ हो जाते हैं। इस सिलसिले में हदीसों में बहुत सी वईदें (सज़ा और अल्लाह की नाराज़गी की धमकियाँ) आई हैं।

दूसरी बुराई इसमें यह है कि जज़्बात, एहसासात, ख़्यालात बदलने में देर नहीं लगती, इनसान का हर साँस उसके अन्दर नये ख़्याल को लाता है, दिल को इसी लिए 'क़ल्ब' कहते हैं कि वह बदलता रहता है। अल्लाह आपकी और सब मुसलमान बहनों की हिफ़ाज़त फ़रमाए। अगर यह शौहर उस औरत से बद्‌दिल हो गया किसी भी वजह से आपस में न बनी, बीवी ख़ुद ही अलग हो गई तो जो राज़ आपने बता दिए हैं उनका वह नादान शौहर और उसका ख़ानदान दुनिया भर में ढिंढोरा पीटेगा, जिससे आपकी, आपके माँ-बाप की बदनामी होगी, आपके भाई-बहन समाज में ज़लील होंगे। बड़ों ने इसी लिए मिसाल दी है कि "होंठों निकली कोठों चढ़ी" यानी बस एक बार बात पराई होने की देर है फिर कहाँ से कहाँ पहुँचती है।

तीसरी बुराई यह है कि आपने अपने माँ-बाप का राज़ खोला फिर कभी आपसे कोई ग़लती हो गई तो शौहर आपको भी इसी तरह ताना देगा। आप अपने घर का राज़ खोलकर उसको हर्बे सिखा रही हैं जिनसे वह हमेशा आपको ज़लील करता रहेगा।

याद रखिए! जो राज़ आपके बत्तीस दाँतों में छुप नहीं सका वह

अब शौहर के पास पहुँचकर चौंसठ दाँतों में कैसे महफ़ूज़ रहेगा। फिर शौहर की तबीयत भी अगर औ़रतों की तबीयत के जैसी है तो वह अपनी माँ और अपनी बहनों को बतलाएगा, फिर शौहर की माँ अपनी बेटी की सास को बतलाएगी और यूँ कहेगीः

"देख सिर्फ़ तेरे को कहती हूँ किसी और को मत कहना, फ़ुलानी जो है ना! उसके साथ यह यह हुआ"। फिर वह दूसरी को इसी तरह कहेगीः देख सिर्फ तेरे को कहती हूँ किसी और को बिल्कुल मत कहना।

इसी तरह शौहर का कहीं कम्पनी की तरफ़ से एक हफ़्ते के लिए किसी मुल्क में सफ़र तय हुआ, शौहर ने बीवी से कहा मैं एक हफ़्ते के लिए फुलाँ मुल्क जाऊँगा, तुम मेरा बैग तैयार कर देना। बीवी साहिबा ने फ़ौरन छोटी बहन को फ़ोन किया कि ख़ालिद के अब्बू एक हफ़्ते के लिए आस्ट्रेलिया जाएँगे तो मैं माँ के घर दो दिन रहने जाऊँगी तुम भी आ जाना।

बहन ने अपने शौहर से इजाज़त माँगी कि दो दिन के लिए जाऊँ क्योंकि बहनोई आस्ट्रेलिया जा रहे हैं। अब दोनों हम-ज़ुल्फ़ों की आपस में मुलाक़ात हुई तो उसने कहा भाई साहिब! कब आस्ट्रेलिया जाने का इरादा है? इस सवाल पर शौहर पानी-पानी हो जाता है कि यह ख़बर इतनी दूर कैस पहुँच गई, मैं तो सबसे अपना राज़ इतना छुपाकर रखता हूँ कि मेरी दाढ़ी के बाल को भी पता चल जाए तो मैं उस बाल को निकाल देता हूँ। मेरे राज़ों की तो मेरे साये को भी ख़बर नहीं पड़ती। शौहर ने आकर बीवी साहिबा की ख़बर ली, बीवी ने रात को दोबारा बहन को फ़ोन किया अरे पगली! तुमने अपने शौहर को बता दिया और तुम्हारे शौहर ने ख़ालिद के अब्बू से कह दिया, देखो मेरे घर में कितना बड़ा झगड़ा हुआ।

अब यह बहन दोबारा अपने शौहर पर नाराज़ हुई कि आपको उनको बताने की क्या ज़रूरत थी, आपको पता नहीं वह किस मिज़ाज के आदमी हैं, दिन भर उनके घर में लड़ाई रही।

अब यह बेचारा सीधा-सादा शौहर दोबारा उनके पास माफ़ी माँगने गया कि भाई मेरे मुँह से ग़लती से निकल गया अब इन्शा-अल्लाह तआला ऐसा नहीं होगा। अब शौहर पर क्या-क्या गुज़रेगी? वह अपनी उंगलियों को दाँतों में दबाकर अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी ही चाहेगा कि या अल्लाह! मेरे नसीब में कैसी बीवी आई?

ऐसी ही बीवी के लिए एक अ़रब के शायर ने तीन अश्आ़र में अपने ग़म व हसरत की तर्जुमानी ही नहीं बल्कि हक़ीक़त बयान की है:-

تنحى فاجلسى منى بعيدا   أراح الله منك العا لمينا

أغربالا اذا استودعت سرًا   وكانونًا على المتحد ثينا

حياتك ما علمت حياة سوء   وموتك قد يسر الصالحينا

1. तुम मेरे सामने से हट जाओ और मुझसे दूर होकर बैठो, अल्लाह तुमसे सारे आ़लम वालों को राहत दे।

2. क्या तुम आटे की छलनी की तरह हो कि जब कोई भी राज़ बताया जाए तो उसको फ़ौरन छान कर किसी और को बता देती हो या उस अख़्बारी रिपोर्टर की तरह हो जो वाक़िआ़त का पता इसलिए लगाए ताकि उनको दूसरी जगह नक़ल करे और गप-शप करने वालों के लिए मजलिस लगे।

3. तुम्हारी ज़िन्दगी तो मैं समझता हूँ बहुत ही बुरी ज़िन्दगी है, और तुम्हारी मौत से तो नेक लोगों को ख़ुशी हासिल होगी।

अल्लाह तआ़ला हर मोमिन और मोमिना को ऐसी बूरी आ़दतों से बचाए। आमीन। अल्लाह तआ़ला उस शख़्स पर भी रहम फ़रमाए जो इस दुआ़ पर आमीन कहे।

यूँ समझिए जो राज़ आपके दो होंठो में बन्द न हो सका वह शौहर के पास पहुँचकर चार होंठों में कैसे बन्द होगा? इसी तरह का एक सच्चा वाक़िआ़ "क़बस मैगज़ीन" में इस तरह लिखा है।

डॉक्टर लांकस्तर न्यूयार्क के विवाहित जोड़ों के मश्विरे के केन्द्र में

काम करती थी। हज़ारों विवाहित जोड़ों की समस्सायें व मुश्किलें उनके पास आती थीं, जिसका एक वाक़िआ हम कुछ मामूली रद्दोबदल के साथ अपने विषय की मुनासबत से पेश करते हैं। कहती हैं:

मेरी नसीहत है कि मियाँ-बीवी अपने सारे राज़ एक दूसरे पर न खोलें। मेरे पास एक जोड़ा आया जिसकी शादी को दस साल अच्छे भले गुज़र चुके थे। फिर दोनों में अन-बन हो गई यहाँ तक कि बात बहुत आगे बढ़ गई। वजह मालूम की गई कि क्या हुआ? कैसे हुआ? पता चला कि एक बार बातों-बातों में बीवी ने में अपने माँ-बाप की सारी पिछली ज़िन्दगी उनके सामने रख दी, कि मेरी माँ बहुत तेज़ थी, मेरे बाप हमेशा माँ से डरते थे और बहुत ही ध्यान से क़दम फूँक-फूँक कर ज़िन्दगी गुज़ारते थे, फिर अल्हम्दु लिल्लाह हम जवान हुए। हमने माँ को संभाल लिया, अब मेरे बाप भी खुश हैं और माँ भी लेकिन मेरे बाप का कमाल था कि मेरी माँ जैसी औरत के साथ निबाह कर लिया। सालों साल सब्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ार दी, न कोई शिकायत ज़बान पर आने दी न पड़ोस तक को ख़बर होने दी।

बस यह बात कहना था कि अब जब किसी बात पर इख़्तिलाफ़ (झगड़ा) होता तो मेरे शौहर अब हमेशा मुझे ताना देते रहते हैं:

"तुम पर भी तुम्हारी माँ का असर है, तुम क्या निबाह करोगी, कभी तुम्हारी माँ ने तुम्हारे बाप को रोटी पर चटनी लगाकर चैन सुकून से खाने दी, कहाँ ऐसी नालायक़ को लेकर मैंने अपने दस साल बर्बाद कर दिए अगर मुझे पहले से यह पता होता कि तुम्हारा ख़ानदान ऐसा है तो मैं कभी इस घाट का पानी न पीता। याद रखना! मैं तुम्हारे बाप की तरह नहीं हो सकता, मुझे अपने बाप की तरह बिल्कुल मत समझना" वग़ैरह-वग़ैरह।

इसी तरह डाक्टर केनेत जो इनसानी साईकलोजी के डिपार्टमेंट में रह चुकी हैं कहती हैं:

मियाँ-बीवी को आपस में हर क़िस्म की सारी बातें खोलकर बता

देना, अपने जज़्बात का साफ़-साफ़ इज़हार कर देना, कि पता नहीं मुझे तो आपकी बात समझ में नहीं आती, या मेरे दिल में आपके लिए मुहब्बत आती ही नहीं मैं क्या करूँ वग़ैरह, बिल्कुल मुनासिब नहीं। इसके नुक़सानात इसके लाभ से कई गुना अधिक हैं। एक साल में एक सौ चौरासी जोड़ों में राज़ खोल देने और अपने जज़्बात का खुल्लम-खुल्ला इज़हार कर देने के मैंने नुक़सानात देखे हैं।

इसलिए बीवी को चाहिए कि कभी अपना राज़ न खोले और अगर शौहर भी कोई अपना राज़ खोले तो उसके मुँह पर हाथ रख दे कि आप मुझे यह न बताओ। इसी तरह अपने बुरे जज़्बात का इज़हार न करे। (रिसाला इला हव्वा, पेज 57)

जैसे पता नहीं मैं इतनी दुआ करती हूँ हमारे दोनों के दिलों में मुहब्बत पैदा हो जाए लेकिन मुहब्बत नहीं होती। या आपके न रहने में मुझे आपकी याद ही नहीं आती। वग़ैरह-वग़ैरह। बल्कि तकल्लुफ़ से काम लेकर मुहब्बत का इज़हार करे कि मुझे आपके बिना तो नींद ही नहीं आती। आपको जब तक देख न लूँ खाना ही हज़म नहीं होता। आप कुछ दिनों के लिए सफ़र पर गए थे कुछ न पूछो हम पर क्या बीती। दिन तो काम-काज में गुज़र जाते लेकिन रातें किसी की रात सोते कटे किसी की रात रोते कटे, हमारी रात न सोते कटे न रोते कटे। वग़ैरह-वग़ैरह। इसी तरह मुहब्बत का इज़हार करे चाहे तकल्लुफ़ से ही हो।

इसी तरह भाई-बहनों के राज़ भी न खोले। जैसे- मेरे छोटे भाई का फ़ुलानी जगह रिश्ता हुआ था फिर टूट गया, अब फ़ुलानी जगह हम कोशिश कर रहे हैं। मेरी छोटी बहन के ससुराल वाले ऐसे-ऐसे हैं, मेरी बड़ी भाभी का मेरी माँ से झगड़ा हुआ, वह आजकल मैके में बैठी हुई है। मेरा रिश्ता आपसे पेहले मेरी ख़ाला के फुलाँ...... से हुआ था लेकिन मेरी बड़ी बहन के ससुराल वालों ने मना किया, वरना घर वाले तो सब राज़ी थे, लेकिन मुक़द्दर से वहाँ न हो सका। अल्हम्दु लिल्लाह आपके साथ हो गया। वग़ैरह वग़ैरह।

मुसलमान बहनो! ऐसी बातें कभी किसी को मत बताना चाहे दस-बीस साल आपके रिश्ते को हो जाएँ। इन राज़ों को अपने साथ कफ़न ही में ले जाना किसी पर मत खोलना। कभी भी मत खोलना, कहीं भी मत खोलना। किसी हाल में और किसी समय भी नहीं खोलना। पूछने पर भी मत खोलना, बिना पूछे भी मत खोलना। अल्लाह तआ़ला आपकी हिफ़ाज़त फ़रमाए और हव्वा की हर बेटी अपने बड़ों के नाम की लाज रखने वाली, शरीफ़ों की लाडली, अल्लाह पाक की बन्दी, रसूले पाक की बाँदी, आ़यशा व ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के इशारों पर निसार हो जाने वाली बन जाये। हर लड़की की बुरे वक़्त से हिफ़ाज़त फ़रमाए किसी आज़माईश में मुब्तला न फ़रमाए। किसी की मेहंदी सूखने से पहले न उतरने पाये, किसी की चूड़ियाँ वक़्त से पहले उतारने की नौबत न आए। दीन व दुनिया दोनों की सआ़दतों से मालामाल फ़रमाए आमीन या रब्बल्-आ़लमीन।

मियाँ-बीवी आपस की बातें किसी को न बताएँ

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सख़्ती से मना फ़रमाया है कि मियाँ-बीवी आपस की बातें किसी को न बताएँ। बहुत ही ज़्यादा बेहयाई व शर्म की बात है कि दूल्हा पहली रात की बातें अपने दोस्तों को बताए या दुल्हन अपनी सहेलियों को बताए। इससे बिल्कुल बचना चाहिए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब बताया गया कि लोग ऐसा करते हैं तो फ़रमाया:

فلا تفعلوا، فانما ذلك مثلُ الشيطان لقی شيطانه فی طريق فغشيها والناس ينظرون.

ऐसा मत करो यह तो शैतान की तरह हुआ जो रास्ते में किसी मादा शैतान से मिलकर उससे लिपट जाते हैं और लोग उनहें देखते रहते हैं। (मुस्नद अहमद)

कुरआन करीम की आयत में नेक औ़रतों की जो तारीफ़ की गई है:

حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ.

इसकी तफ़सीर यह भी है हिफ़ाज़त करने वालियाँ हैं उन राज़ों और भेदों की जो मियाँ-बीवी के बीच होते हैं। यानी तन्हाई की पुरलुत्फ़ बातें दूसरों को बताना हराम है। अल्लाह तआ़ला हमारे मर्दों औ़रतों की इससे हिफ़ाज़त फ़रमाए आमीन।

इसी तरह कुछ नादान औ़रतें रिश्तेदार औ़रतों का हुस्न भी मर्दों के सामने बयान करती हैं। जैसे फ़ुलाँ की शादी में गई तो वापस आकर शौहर को मंगनी या शादी की तक़रीब की कारगुज़ारी ऐसी बताएँगी जिससे अल्लाह और उसका रसूल नारज़ हों और घरों में बलाएँ, मुसीबतें आएँ, कि फ़ुलानी तो इतनी ख़ूबसूरत लग रही थी कि बस कोई गुड़िया है। उसके बड़े भाई की जहाँ मंगनी हुई है वह तो बहुत ही अच्छी है लेकिन छोटे भाई की जहाँ हुई है वह ऐसी नहीं है। इससे फिर मर्दों के दिलों में उन औ़रतों का इश्क़ करवटें लेता है। मर्द इस उपरोक्त औ़रत का आ़शिक़ हो जाता है और फिर मेल-मिलाप के लिए तरह-तरह से डोरे डाले जाते हैं। इस भयानक ग़लती के नतीजे में बड़े-बड़े तकलीफ़देह वाक़िआ़त उत्पन्न होते हैं। इसलिए इस तरह की बातों से मुकम्मल तौर पर बचना चाहिए।

या यह कि फ़ुलाँ औ़रत को अब तीन साल बाद बच्चे की उम्मीद है, या फ़ुलाँ का हमल (गर्भ) ज़ाया हो गया वग़ैरह-वग़ैरह। इसलिए नामेहरम औ़रतों के बारे में ऐसी बातें अपने शौहर या दूसरे मर्दों (भाई वग़ैरह) को बिना किसी ज़रूरत के बताना बिल्कुल जायज़ नहीं, सख़्त गुनाह है।

इसी बात को इस हदीस में मना फ़रमाया गया है:-

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

لا تُباشِرُ المرأةُ المرأةَ فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا كَأَنَّهُ ينظر اليها.

(البخاری کتاب النکاح۹/۳۳۸)

कोई औ़रत किसी औ़रत के साथ इस तरह न बैठे कि शौहर के पास आकर उस औ़रत का हुलिया, उसका जिस्म, उसका हुस्न इस तरह बताए कि गोया शौहर उसको देख रहा है।

यानी बीवी अपने शौहर से किसी नामेहरम औ़रत की शक्ल व सूरत, हुलिये और जिस्म व हुस्न के बारे में इस तरह न बताए कि गोया शौहर ने उसको देख लिया।

आपने सुना होगा, कई बार ऐसा हुआ, शौहर ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और बीवी की ख़ाला की बेटी से निकाह कर लिया। या बीवी को तलाक़ देकर पड़ोसी की बेटी से निकाह कर लिया, वग़ैरह-वग़ैरह। बल्कि कभी-कभी इस तरह बीवी का शौहर को नामेहरमों के बारे में बताने से या नामेहरमों से पर्दा न करने से ऐसे वाक़िआत भी सामने आये हैं कि शौहर ने अपनी बीवी को छोड़कर बिना तलाक़ दिए ही साली से ग़लत सम्बंध बना लिया। या घर की नौकरानी से ग़लत सम्बंध क़ायम हो गया।

इसलिए हर मुसलमान औ़रत को चाहिए कि जिससे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पर्दे का हुक्म दिया है उनसे पर्दा करे, चाहे ख़ानदान वाले राज़ी हों या नाराज़। जैसे देवर, जेठ, ख़ाला के लड़के, मामूँ के लड़के, फूफी के लड़के, बहनोई नन्दोई, ड्राईवर, चौकीदार वग़ैरह से।

कुछ औ़रतें ख़ालाज़ाद भाई को भाई समझती हैं हालाँकि भाई वह होता है जिससे कभी भी निकाह नहीं हो सकता, इसलिए ख़ालाज़ाद, मामूँज़ाद, फूफीज़ाद, ये भाई न हुए उनसे बहुत ही एहतिमाम से पर्दा करना ज़रूरी है। उनसे पर्दा करे। इसी तरह शौहर को भी नामेहरम औ़रतों से पर्दा करवाने की कोशिश करे। अपनी बहनों और अपनी बहन की नौजवान बेटी, शौहर की ख़ाला व फूफी की बेटियाँ, इन सबसे शौहर को पर्दा करवाने की कोशिश करे। और खुद किसी हाल में भी शौहर को किसी औ़रत के बारे में न बताए कि अल्लाह! वह तो आज कितनी

अच्छी लग रही थी, आज फुलानी ने जो जोड़ा पहना था इतनी अच्छी लग रही थी कि पूछो नहीं, बस आप मेरे लिए भी ऐसा ही जोड़ा ले आएँ। पता नहीं फुलानी ने मेहंदी कहाँ से लगवाई थी, इतना अच्छा मेहंदी का रंग आया था कि सब उसी को देख रही थीं। फुलानी को चौथा महीना लग रहा है। इस तरह की बातें अपने शौहर या अपने भाई किसी भी नामेहरम को बताना नाजायज़ व हराम है।

शौहर का राज़ न खोलिये

इसी तरह बीवी शौहर की कोई भेद की बात किसी को न बताए। एक तो वह राज़ है जिसका बताना सबसे बुरा है, जैसे पहली रात की बातें सहेली या बहन या माँ पूछती हों, उनको भी बताना हराम है और पूछना भी हराम है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसे मर्द और ऐसी औ़रत को लोगों में सबसे ज़्यादा बुरा बतलाया है। फ़रमायाः

انَّ من أشرّ النّاس عند الله منزِلَةً يوم القيامة الرجل يفضى الى امرأته وتفضى اليه، ثم ينشر سرها (مسلم رقم: ۲۵۹۷، ۱۰۶۲ ج۱)

अल्लाह के नज़दीक क़ियामत के दिन लोगों में सबसे ज़्यादा बुरा व्यक्ति वह होगा जो अपनी बीवी से और (इसी तरह वह) बीवी जो शौहर से अपनी ज़रूरत पूरी करे, फिर वह अपनी तन्हाई की बातें फैलाता फिरे।

यह राज़ बताना और पूछना दोनों नाजायज़ है। उम्र की किसी मन्ज़िल में भी मियाँ–बीवी दोनों के लिए ये ज़ाती बातें किसी और को बताना हराम है।

लेकिन कुछ राज़ इनके अ़लावा हैं जिनको बता देना इतना बुरा तो नहीं है लेकिन फिर भी नेक बीवी की सिफ़त यह होनी चाहिए कि शौहर की हर बात अपने पास अमानत समझे और इस अमानत को क़ब्र के पेट में साथ ले जाए तो सच्ची नेक बीवी शुमार होगी। वरना बक़ौल एक

दुखी मर्द के "औरत के पेट में कोई राज़ रह ही नहीं सकता सिवाय एक राज़ के और वह उसकी उम्र है"।

बहरहाल! नेक बीवी को चाहिए कि शौहर की हर बात छुपाए रखे। अपने नौजवान बेटों और बेटियों को भी अपने शौहर के पुराने और बुरे हालात न बतलाए। आपने सूरः तहरीम में यह वाक़िआ ज़रूर पढ़ा होगा, अगर नहीं पढ़ा तो ज़रूर पढ़ लीजिए मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की तफ़सीर "मआ़रिफ़ुल कुरआन" में से यह वाक़िआ ज़रूर पढ़िए और यह तफ़सीर भी अपने घर में रखिए और समय-समय पर इसको पढ़ते रहिए।

वाक़िआ यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को कोई राज़ की बात बतलाई। उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से कह दी तो अल्लाह और उसके रसूल उस समय उन दोनों से कितने नाराज़ हुए और अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पाक में इस आयत के ज़रिये दोनों को तंबीह फ़रमाई:

اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰـهُ

وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ. وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ. (سورۃ التحریم: پ ۲۸)

तर्जुमाः ऐ (पैग़म्बर की) दोनों बीबियो! अगर तुम अल्लाह के सामने तौबा कर लो तो (बेहतर है, क्योंकि) तुम्हारे दिल (इस तरफ़) माईल हो रहे हैं। और अगर पैग़म्बर के मुक़ाबले में तुम दोनों कार्रवाईयाँ करती रहीं तो (याद रखो कि) पैग़म्बर का रफ़ीक़ (साथी) अल्लाह है और जिब्रील हैं और नेक मुसलमान हैं और उनके अ़लावा फ़रिश्ते (आपके) मददगार हैं। (ख़ुलासा तफ़सीर मआ़रिफ़ुल कुरआन पेज 498 जिल्द **8**)

शौहर के जज़्बात व ख़्यालात के साथ मुवाफ़क़त

हर शौहर कुछ चीज़ों को पसन्द करता है, कुछ चीज़ों से नफ़रत करता है। नेक बीवी की शान यह होनी चाहिए कि उसके जज़्बात व ख़्यालात में, उसके नज़रियात रुझानात में, उसके मुवाफ़िक़ होने की पूरी

पूरी कोशिश करे, सिवाय उन चीज़ों के जिनको अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है।

बल्कि कोशिश करे कि उसकी ज़बान से निकलने से पहले ही उन कामों को कर ले, जिस तरह वह चाहता है। खुद अपने उठने-बैठने, रहने-सहने में इसी तरह रहे जैसे वह पसन्द करता है और शौहर के दिल में अपने लिए हमेशा की उलफ़त और हमेशा की मुहब्बत पैदा करने के लिए यह सबसे बड़ी और अहम सिफ़त है। इसलिए कि हुस्न व खूबसूरती चन्द दिनों के मेहमान होते हैं, कितनी भी ख़ूबसूरत औ़रत हो लेकिन कुछ दिनों बाद शौहर का दिल उसके हुस्न से भर जाता है। कितनी ही मालदार हो लेकिन माल भी किसी भी लम्हे में साथ छोड़ सकता है।

हाँ! औ़रत की रूह का मर्द की रूह के साथ मुवाफ़िक़ हो जाना, दोनों के मिज़ाजों का मिल जाना, हर एक की पसन्दीदा चीज़ दूसरे के लिए पसन्दीदा हो जाए, हर एक की नापसन्दीदा चीज़ दूसरे की नज़र में नापसन्दीदा हो जाए, यह है हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ शौहर के लिए भी और बीवी के लिए भी, और आने वाली नस्लों के लिए भी।

जो मियाँ-बीवी कोशिश करके ऐसे बन जाते हैं, उनकी औलाद दुनिया में ही बहुत ही ज़्यादा सुखी हो जाती है और खुशी और चैन से सब ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, और फ़ितरी कुदरती सलाहियतें उनकी औलाद में उजागर हो जाती हैं, ऐतिमाद और बहादुरी उनमें पाई जाती है, जिससे वह दुनिया की रहबरी व इमामत कर सकते हैं, इसी को सुलैमान हकीम कहते हैं।

الجمال كاذب، والحسن مخلف، وانما تستحق المدح المرأة والموافقة.

पावडर मैकअप की ख़ूबसूरती झूठी है और असली हुस्न भी कुछ दिनों बाद ख़त्म हो जाने वाला है। लेकिन वह औ़रत मौत के बाद भी तारीफ़ की हक़दार है जो मर्द के मिज़ाज के मुवाफ़िक़ बन जाए।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं: मैं पानी पीती थी,

हालाँकि माहवारी के दिनों में होती, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पानी पीते और वहीं मुँह लगाते जहाँ मैंने मुँह लगाया है। इसलिए आप भी अपने शौहर के साथ इस सुन्नत को ज़िन्दा कीजिए। कभी शौहर का बचा हुआ पानी लीजिए उसी जगह से पीजिए जहाँ से शौहर ने पिया था, और कभी अपना बचा हुआ पानी उसको पिला दीजिए।

याद रखिए! आप शौहर से जितना बेतकल्लुफ़ होंगी उतना ही आप दोनों की इ़ज़्ज़त, शराफ़त महफ़ूज़ रहेगी और उसके दिल में आपकी मुहब्बत ज़्यादा जमेगी और आप दोनों में मुवाफ़कत ज़्यादा बढ़ेगी। और कोई शक नहीं अगर किसी को ऐसी बीवी मिल गई तो पूरी नहीं तो वह आधी दुनिया का मालिक हो ही गया।

बेवकूफ़ से बेवकूफ़ नौजवान को अगर ऐसी नेक बीवी मिल गई तो दुनिया का समझदार शख़्स बना सकती है। ऐसा शख़्स कभी न कभी दुनिया का अ़क्लमन्द व समझदार शख़्स बन सकता है। और अगर समझदार से समझदार शख़्स को नादान व नाफ़रमान बीवी मिल गई तो कभी न कभी उसकी दुनिया के बेवकूफ़ों में गिनती हो सकती है।

दुनिया के इन्हीं ख़ुशक़िस्मत इनसानों में क़ाज़ी शुरैह रहमतुल्लाहि अ़लैहि थे। इमाम शअ़बी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक दिन उनसे पूछा: घर का क्या हाल है? कहने लगे:

من عشرين عاما لم أر ما يغضني من أهلي .

बीस वर्ष हो गए शादी को, कोई एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़रा जिसमें मुझे बीवी से कोई तकलीफ़ पहुँची हो।

قال له: وكيف ذاك ؟

इमाम शअ़बी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने कहा यह कैसे हो सकता है?

कहने लगे: पहली ही रात जब मैं बीवी के पास पहुँचा उसी समय से हम दोनों का मिज़ाज ऐसा मिला कि अब तक हम दो जिस्म एक रूह हैं। जब मैं पहली रात में बीवी के पास गया तो देखा अल्हम्दु लिल्लाह

बहुत ही ख़ूबसूरत है। मैंने सोचा दो रकअ़त नमाज़ पढ़ लूँ और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करूँ कि ऐसी बीवी मिली।

जब मैंने सलाम फेरा तो देखा कि वह भी मेरे साथ नमाज़ पढ़ रही है और मेरे सलाम फेरने के साथ उसने भी सलाम फेर लिया। फिर दुआ़ के बाद मैंने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया, वह कहने लगी सब्र करो ऐ अबू उमय्या! फिर उसने कहा:

الحمدللّٰه احمده واستعينه وأصلى علىٰ محمد واله، انى امرأة غريبة لا علم لى بأخلاقك، فَبَيِّنْ لى ما تحب فاٰتيه، وما تكره فأتركه. وقالت: انه كان لك فى قومك من تتزوجه من نسائكما وفى قومى من الرجال من هو كفولى، ولكن اذا قضى اللّٰه أمرًا مفعولا، وقد ملكت فاصنع ما أمرك اللّٰه به، امساك بمعروف او تسريح باحسان أقول قولى هٰذا وأستغفر اللّٰه لى ولك.

इस नई-नवेली दुल्हन ने जो अ़रबी में ख़ुतबा कहा और चन्द सुनहरे जुमलों के अन्दर अपने शौहर को ख़िताब करके ज़िन्दगी भर के लिए शौहर की नज़रे मुहब्बत और नज़रे अ़क़ीदत को पा लिया, काश सारी मुसलमान बहनें इस ख़ुतबे को समझने वाली और उम्र भर क़ाज़ी शुरैह रहमतुल्लाहि अ़लैहि की बीवी की इस नसीहत को याद रखने वाली बनें तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला आज भी मुसलमान घरानों में क़ाज़ी शुरैह जैसे आ़लिम, फ़क़ीह, आ़दिल जज पैदा हो सकते हैं।

इस अ़रबी मज़मून के मफ़हूम व मक़सद की असल मिठास, चाश्नी उसी को मिल सकती है जो अ़रबी भाषा जानती हो, अल्लाह करे हमारी मुसलमान बहनों में भी अ़रबी ज़बान सीखने का शौक़ पैदा हो जाए और जो नहीं सीख सकतीं वे अपनी दूसरी बहनों और बच्चियों को ज़रूर सिखाने की कोशिश करें। आमीन या अर्हमर्राहिमीन।

तर्जुमाः तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं मैं उसी की तारीफ़

करती हूँ। मैं उसी अल्लाह की हम्द बयान करती हूँ और उसी से अपनी नई ज़िन्दगी के तमाम मराहिल में मदद माँगती हूँ। मैं अल्लाह से दुआ करती हूँ कि वह रहमत नाज़िल फ़रमाए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल पर।

मेरे प्यारे सरताज! मैं एक सीधी-साधी औरत हूँ मुझे आपकी चाहत का पता नहीं आप मुझे बतला दें, आप किन चीज़ों को पसन्द करते हैं तो मैं हमेशा उनको करती रहूँ और जिन चीज़ों को आप नापसन्द करते हैं उनसे बचती रहूँ। फिर कहा कि आपकी क़ौम में बहुत सी ऐसी औरतें होंगी जिनसे आप निकाह कर सकते थे और मेरी क़ौम में बहुत से ऐसे मर्द हैं जो मेरे जोड़ के थे, मैं उनसे निकाह कर सकती थी, लेकिन जब अल्लाह तआ़ला किसी बात का फ़ैसला फ़रमा देते हैं तो वह हो जाती है। अब तुम मेरे सरदार बन चुके हो, मैं तुम्हारे निकाह में आ गई हूँ।

तुम वह करो जिसका अल्लाह तआ़ला ने हर मुसलमान शौहर को हुक्म दिया है "पसन्द हो तो अच्छी तरह रखो या भले तरीक़े से छोड़ दो" मेरी बात ख़त्म हुई। मैं अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहती हूँ गुनाहों की अपने लिए और आपके लिए।

शुरैह कहते हैं: जब मैंने यह खुतबा सुना तो ऐ शअ़बी! मैं मजबूर हो गया कि मैं भी कुछ इस विषय पर उसको जवाब दूँ तो मैंने कहा:

أحمد الله وأستعينه وأصلّى على النبى واله وسلم، وبعد: فانك قلتِ كـلامًا ان ثبتّ عليه يكن ذلك حظك، وان تدعيه يكن حجة عليك أحب كذا وكذا وأكره كذا وكذا. وما رأيت من حسنة فانشريها وما رأيت من سيئة فاستريها.

अल्लाह की तारीफ़ और नबी पाक पर दुरूद शरीफ़ के बाद! मेरी बीवी साहिबा! तुमने ऐसी बात कही है अगर तुम अपनी बात पर पक्की रहीं तो यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ी नेक-बख़्ती होगी। और अगर तुम अपनी बात से फिर गई तो तुम पर दोहरा इल्ज़ाम होगा। मैं इन-इन

चीज़ों को पसन्द करता हूँ इसलिए तुम इनको इख़्तियार करना और इन-इन चीज़ों को नापसन्द करता हूँ तुम इनसे बचती रहना।

और मैं नसीहत करता हूँ तुमको कि तुम जो भी भलाई और नेकी देखो उसको फैलाना और जो बुराई और ऐब देखो उस पर पर्दा डाल देना।

फिर उसने कहा! मेरे घर वालों से तुमको कैसी मुहब्बत है? मैंने कहा: मैं यह नहीं चाहता कि मैं इतनी बार उनके पास जाऊँ कि वे उकता जाएँ। फिर उसने कहा! तुम्हारे रिश्तेदारों में से किसको तुम पसन्द करते हो कि मैं उसको आने दूँ और किसको नापसन्द करते हो कि मैं उससे माफ़ी माँग लूँ।

मैंने कहा फुलाँ मेरे रिश्तेदार नेक हैं और फुलाँ-फुलाँ हिदायत की दुआ के मोहताज हैं, इसलिए उनसे बचना।

फिर क़ाज़ी शुरैह इमाम शअ़बी से कहने लगे:

فمكثت معی عشرين عاما لم أعتب عليها فی شیء الا مرة وكنت لها ظالما. (ماخوذ از المرأة المثالية فی أعين الرجال شيخ محمد عثمان الخشت ص ٣٤ مطبوعة القاهرة)

मैं उसके साथ बीस साल रहा लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह कभी ऐसा मौक़ा नहीं आया कि मैं उसको डाँटूँ एक बार के अ़लावा, और उसमें भी मेरी ही तरफ़ से ज़्यादती हुई।

इसलिए नेक बीवी को चाहिए कि शौहर का साथ दे। उसकी हाँ में हाँ मिलाने वाली हो। उसकी ना में ना करने वाली हो। ऐसी ही बीवी का शौहर क़ाज़ी शुरैह जैसा इनसान बन सकता है। जिस ख़ुशनसीब को हव्वा की ऐसी बेटी मिल जाए उसकी सलाहियत को ज़रूर चार चाँद लग जाते हैं। वह तंगदस्ती व फ़ाक़े के अन्दर ही बिना तख़्त व ताज के पूरी नहीं तो आधी दुनिया का हाकिम ज़रूर होता है। अल्लाह तआ़ला हव्वा की हर बेटी को अपने शौहर के मिज़ाज व जज़्बात व एहसासात व

तसव्वुरात के मुवाफ़िक़ बना दे। आमीन या रब्बल्-आ़लमीन।

इससे यह बात भी मालूम हुई कि दूल्हा-दुल्हन को शुरू से ही एक दूसरे के मिज़ाज के बारे में पूछ लेना चाहिए ताकि एक दूसरे की पसन्दीदा चीज़ों की जानकारी हो जाए और उसको अपनाना आसान हो जाए, और नापसन्दीदा से बचना आसान हो जाए। जैसे क़ाज़ी शुरैह की बीवी ने पहली रात ही पूछ लिया कि आप क्या पसन्द करते हैं? किनको अपने घर में आने की इजाज़त देना पसन्द करते हैं किनको नहीं? मेरे रिश्तेदारों के बारे में आपका क्या ख़याल है? आप वहाँ कब आना पसन्द करते हैं कब नहीं? अगर यह कहावत किसी हद तक सही है कि "हर मर्द के कमाल के पीछे किसी न किसी तरह औ़रत का हाथ होता है" तो क़ाज़ी शुरैह रहमतुल्लाहि अ़लैहि इसकी ज़िन्दा मिसाल हैं।

नेक बीवी के लिए

अल्लाह तआ़ला की तक़सीम पर राज़ी हो जाना

यह भी एक नेक बीवी की सिफ़त है कि जो कुछ अल्लाह ने दिया उस पर राज़ी हो जाए और उस पर शुक्र अदा करे। ऐसी औ़रत कुछ न होते हुए भी अपने आपको बहुत ख़ुश महसूस करती है, जैसे इमाम अ़स्मई रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपना एक वाक़िआ़ बयान किया है।

फ़रमाते हैं: मैं एक गाँव में गया तो एक बहुत हसीन औ़रत एक बहुत बदसूरत आदमी के निकाह में थी। मैंने उससे कहा: तुम कैसे राज़ी हो गई उस इस शख़्स से निकाह करने पर? उसने कहा:

اسکت، فقد أساء ت فی قولك، لعله أحسن فيما بينه وبين خالقه فجعلنی ثوابه، أو لعلنی أساء ت فيما بينی وبين خالقی فجعله عقوبتی أفلا أرضى بما رضى الله لی ؟ فأسكتتنی. (المرأة المثالية ص ٣٢)

तुम ख़ामोश हो जाओ, तुमने यह बात पूछकर अच्छा नहीं किया। इसलिए कि शायद उसने अल्लाह को ऐसा राज़ी किया कि उसका अज्र

अल्लाह ने उसको मेरे जैसी बीवी की सूरत में दिया, और मुझसे ऐसी नाफ़रमानी हो गई जिसकी सज़ा मुझे यह मिली। क्या जो अल्लाह तआला ने मेरे लिए पसन्द किया उस पर मैं राज़ी न हो जाऊँ?

इमाम अ़स्मई रहमतुल्लाहि अ़लैहि कहते हैं कि उसने मुझे ख़ामोश कर दिया।

इसी तरह किताब 'अ़क्दुल् फ़रीद' में एक वाकिआ़ लिखा है:

इमरान बिन हत्तान की बीवी ने जो बहुत ही ख़ूबसूरत थी अपने शौहर से एक दिन कहा जो बहुत ही बदसूरत था कि: हम दोनों जन्नती हैं। शौहर ने कहा यह कैसे? कहने लगीं:

इसलिए कि तुम जैसे शौहर को मुझ जैसी ख़ूबसूरत औरत मिली तो तुमने उस पर शुक्र किया और मुझे तुम जैसा शौहर मिला तो इस पर मैंने सब्र किया, और साबिर व शाकिर दोनों जन्नत में होंगे।

शौहर की बेतुकी बातें और समझदार बीवी का जवाब

कभी-कभी कम-समझ शौहर अपनी माँ या अपनी बहन से बीवी के रिश्तेदारों के बारे में सही या ग़लत ख़बर सुनकर बीवी को ताना देता है, कि तुम्हारे भाई ऐसे, तुम्हारी बहन ऐसी, तुम्हारे माँ-बाप ऐसे-ऐसे। चूँकि बीवी को अपने माँ-बाप से फ़ितरी मुहब्बत होती है और होनी भी चाहिए, इसी मुहब्बत के जज़्बे के तहत बीवी इन बातों के जवाबात देते हुए शौहर की ज़ात पर और कभी शौहर के माँ-बाप पर बातों से हमला कर देती है और इस तरह शैतान को उस घर में दाख़िल होने का मौक़ा मिल जाता है।

अच्छे-भले मियाँ-बीवी मुहब्बत से ज़िन्दगी बसर कर रहे थे, लेकिन एक-दूसरे पर सुनी-सुनाई बातों की बुनियाद पर हमला करके दोनों ने अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर ली। उस समय समझदार बीवी को अपने माँ-बाप और भाई-बहनों के हक़ में बचाव करने के बजाय या अपनी

सास और नन्द के ऐबों को खोलने के बजाय चुप रहना चाहिए।

यह कह दे कि मैं अपने भाई की तरफ़ से माफ़ी चाहती हूँ अगर आपको मेरे माँ-बाप या किसी भी रिश्तेदार से कोई तकलीफ़ पहुँची है तो मैं उनकी तरफ़ से माफ़ी माँगती हूँ और मैं उनको समझा दूँगी, आगे ऐसा न करें। आप उनको दिल से माफ़ कर दें।

लेकिन मेरी राय यह है कि अगर उन्होंने कोई ग़लती की है या किसी के साथ बुरा किया है तो यह उनकी ग़लती है और उनका मामला है, हम अपना घर उनकी वजह से क्यों बर्बाद करें।

अगर हम उनकी वजह से आपस में झगड़ेंगे तो इससे पहला झगड़ा ख़त्म नहीं होगा बल्कि अब दो झगड़े उठ जाएँगे और दो बुराईयाँ पैदा हो जाएँगी। इसलिए अ़क्लमन्दी यह है कि हम उनकी बुराई को अच्छे तरीक़े से ख़त्म करने की कोशिश करें, न यह कि दूसरी बुराई को वजूद में लाकर आपस में बहस-मुबाहसा करके आपस के झगड़े को जन्म दें।

इस सिलसिले में हम एक वाक़िआ़ मुसलमान बहनों के लिए मिसाल के तौर पर पेश करते हैं, अल्लाह तआ़ला इस वाक़िए को पढ़ने से हमें हिदायत अ़ता फ़रमाए और उस नेक औ़रत की यह मुबारक सिफ़त सारी मुसलमान बहनों को अपनाने की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

एक दिन ख़ालिद इब्ने यज़ीद ने किसी रिश्तेदार के सामने अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु (जो उनकी बीवी के भाई थे) के बारे में बुरा-भला कहा, उसकी बीवी रमल्ला बिन्ते ज़ुबैर उसके क़रीब ही बैठी हुई थी, वह सर झुकाए बैठी रही और ख़ामोश रही।

ख़ालिद ने जब सब कुछ कह डाला फिर भी उसके गुस्से की आग न बुझी उसने अपनी बीवी (रमल्ला) से ख़िताब करते हुए कहा:

क्यों! तुमने कुछ कहा नहीं, क्या मेरी बात का तुम्हें भी इक़रार है? कि तुम्हारा भाई हक़ीक़त में ऐसा ही है इसलिए चुप बैठी हो या मेरी बात तुम्हें नागवार गुज़री और जवाब न देना पड़े इसलिए तुम ख़ामोश हो? रमल्ला ने कहा:

لا هـٰذا ولا ذاك ! ولـكـن الـمرأة لم تخلق للدخول بين الرجال انما نحن رياحين للشم والضم. فمالنا وللدخول بينكم ؟

मेरे पेशे-नज़र न यह रुख़ है न वह। बात यह है कि हम औरतों का काम तुम मर्दों के बीच दख़ल देना नहीं, न हम इसलिए पैदा की गई हैं। हमारी हैसियत तो ख़ुशबूदार पौधों और फूलों की सी है जो सूँघने और नज़रों को भाने के लिए समेटे जाते हैं, इसलिए तुम मर्दों के अन्दर दख़ल-अन्दाज़ी से हमें क्या वास्ता।

ख़ालिद को अपनी बीवी का यह जुमला इतना पसन्द आया कि वह अपनी जगह से उठा और आकर बीवी की पेशानी को चूमा और बहुत ही ख़ुश हुआ और जो दिल में अपने बिरादरे-निस्बती (साले) के मुताल्लिक़ नागवारी थी वह सब ख़त्म हो गई।

इसीलिए हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम अपने फ़ैसलों में फ़रमाते थे:

المرأة العاقلة تبنى لبيتها والسفيهة تهدمها (ماخوذ از المرأة المثالية ص ٢٦)

समझदार बीवी उजड़े हुए घर को आबाद कर सकती है और नासमझ बीवी बने-बनाये आबाद घर को वीरान कर सकती है।

यानी फटे हुए दिल को अपनी समझदारी और दुआ के सूई-धागे से जोड़ सकती है। दिल की मुर्दा क्यारी को मुहब्बत के पानी से दोबारा ज़िन्दा कर सकती है। जले हुए दिल के ज़ख़्मों पर अपने मुहब्बत भरे अलफ़ाज़ का मर्हम रख सकती है।

ग़ौर कीजिए! कितनी समझदार बीवी थी। अगर उस समय जवाब देने लग जाती और अपने भाई की सफ़ाई पेश करती या बुराई करती, अपने शौहर का साथ देकर, तो उसके कुछ ही जुमले ख़ालिद के गुस्से के ईंधन पर माचिस की तीली का काम देते और बात बहुत आगे बढ़ जाती। मगर इस समझदार औरत ने हिक्मते-अमली से दो ऐसे मीठे बोल बोले कौसर व तस्नीम (जन्नत की नहरों के नाम हैं) के पानी से धुले हुए दो फूल ऐसे झाड़े जिसने शौहर के गुस्से व नागवारी की इस

आग पर मूसलाधार बारिश का काम दिया। और ऐसी समझदारी से बात की कि भाई की चादर पर भी कोई धब्बा न आने दिया और शौहर की नाजायज़ हिमायत भी न की, और भाई की वकालत करते हुए शौहर को भी नाराज़ न किया, बल्कि उन दोनों के बीच से ऐसा रास्ता निकाला कि खुद भी महफूज़ हो गई अपने शौहर को भी नाराज़गी व ग़ज़ब की आग से निजात दिलाई, और अपने घर वालों की भी इज़्ज़त महफूज़ कर ली।

क्या हमारी मुसलमान बहनों के लिए इस शऊर वाली ख़ातून रमल्ला बिन्ते ज़ुबैर के वाक़िए में कोई इब्रत, कोई नसीहत, कोई सीख, कोई हिक्मत, कोई अच्छी आदत, कोई अच्छी सिफ़त नहीं? काश कि मुसलमान बहनें अपने बड़ों और बुज़ुर्गों की मुबारक आदतों को अपनाएँ जिनसे दुनिया का घर जन्नत का नमूना, खुशियों का मजमूआ, नूर व मुहब्बत का गुलदस्ता बन जाए। इसी तरह और भी कई औरतों की समझदारी और होशियारी के क़िस्से मशहूर हैं। जिन्होंने अपनी समझदारी और नरम लहजे और जादू भरी आवाज़ से अपने शौहर से बातचीत की, उसके ग़म को दूर करने की और उसके दिल में जगह पाने की भरपूर कोशिश की।

औरत की तो बातचीत का असरदार तरीक़ा और जादू जगाने वाला नरम लहजा वैसे ही अच्छे-अच्छे पहाड़ों जैसे बहादुर मर्दों को भी गिरा देता है, इसी लिए कुरआन करीम में औरत को नामेहरम मर्दों से नरम लहजे में बात करने से मना फ़रमाया है, कि औरत के नरम लहजे के दो बोल ही मर्दों को गुनाह में या गुनाहों के ख़्यालात दिल में डालने के लिए काफ़ी हैं।

इसलिए बीवी शौहर से उसकी बेतुकी बातों पर अपना प्यार व मुहब्बत से भरा हुआ नरम और शर्मीला लहजा इस्तेमाल करे तो इन्शा-अल्लाह तआला शौहर बहुत जल्द उसकी तरफ़ माईल हो जाएगा और रोज़-रोज़ के झगड़े बहुत जल्द ख़त्म हो जाएगें।

इस सिलसिले में हम अरब की औरतों के बात करने और गुफ़्तगू

के अन्दाज़ के बारे में कुछ बयान करते हैं कि उन्होंने अपने शौहर को कैसे मीठे-मीठे जवाबात दिए हैं ताकि दूसरी मुसलमान बहनें भी अपनी सलाहियतों को जगाएँ और अपनी शादीशुदा ज़िन्दगी में इससे काम लेती रहें और जो सूत्र उन्हें हासिल हैं उनसे अपनी मुश्किलात का इलाज करती रहें।

मशहूर शायर बश्शार बिन बर्द अपनी बीवी की बातचीत की तारीफ़ करते हुए कहते हैं:

وقد تكون بها سلمٰى تحدثنى   تساقط الحلى حاجاتى وأسرارى

तर्जुमा: वहाँ रहकर सलमा कभी यूँ बात करती थी जैसे हार की लड़ियाँ टूट गई हों और मोती की तरह मेरे दिली राज़ और मेरी ज़रूरतें मेरी दिली चाहतें बाहर आ जाती हैं।

शायर ने सलमा की बातचीत को उसके होंठों से निकलने वाले अलफ़ाज़ को मोतियों के हार से संज्ञा दी है जिसकी लड़ी टूट गई हो और एक-एक मोती तरतीब से गिर रहा हो।

حديث لَو أنَّ اللحم يصلٰى بحره   غريضًا اَتٰى اَصْحَابُهٗ وهو منضَجُ

तर्जुमा: वह ऐसी गर्मजोशी से बातें करती है कि उसकी गर्म-गुफ़्तारी के सामने कच्चा गोश्त रख दिया जाए और लोग वापस आएँ तो उन्हें गोश्त पका हुआ मिलेगा।

وكأنَّ رجع حديثها   قطع الرياض كَسَيْن زَهرًا

तर्जुमा: उसकी आवाज़ का पलटकर आना ऐसा है जैसे बाग़ीचे की कियारियाँ जो फूलों से लदी हुई हैं।

क्या आज भी हमारी दुल्हनों के लिए उस "सलमा" जैसी औरत की बातचीत में कोई नमूना है? कोई नसीहत है? कोई इब्रत है? कि हमारी औरतें भी इसी तरह नरम व मुस्कुराहट भरे लहजे में अपने शौहरों से बात करें। मुस्कुराहट और ख़ुशी से पेश आएँ। ख़ुश, ताज़ा और हंसते हुए चेहरे के साथ शौहर से गुफ़्तगू करें। पाकीज़ा व मुबारक

शौहर से मीठे लहजे और नरम अन्दाज़े-गुफ़्तगू में बात करके उसके ग़म व नाराज़गी और परेशानियों का इलाज करें।

कहते हैं कि अमीरुल्-मोमिनीन रशीद के पास एक बाँदी फ़रोख़्त करने के लिए पेश की गई तो अमीरुल्-मोमिनीन ने कहा:

فلولا كنف في وجهها وخس في أنفها لا شتريتها.

तर्जुमा: अगर यह दाग़दार चेहरे वाली और दबी हुई नाक वाली न होती तो मैं इसे ख़रीद लेता।

बाँदी ने यह सुना तो कहा अमीरुल्-मोमिनीन मुझे भी कुछ कहने की इजाज़त दीजिए। ख़लीफ़ा ने इजाज़त दी तो उसने कहा:

ما سلم الظبي على حسنه   كلا ولا البدر الذي يوصف

الظبي فيه خنس بيّن   والبدر فيه كلف يُعرف

तर्जुमा: 1. हिरन भी अत्यंत हसीन होने के बावजूद सालिम (यानी तानों और बुराईयों से) नहीं रहा। हरगिज़ नहीं! न चौदहवीं का चाँद जिसकी बहुत ज़्यादा तारीफ़ की जाती है।

2. हिरन की नाक देखो तो दबी हुई है और चाँद के दाग़ों को तो सब ही मानते हैं।

ख़लीफ़ा को ये अश्आर पसन्द आए तो उसने उसको ख़रीद लिया। उसको अपने ख़ास दरबारियों में शामिल कर लिया। यह बाँदी उसकी ख़ुश-क़िस्मत बाँदियों में से एक रही।

देखिए! यह बाँदी बावजूद ख़ूबसूरत न होने के अपनी समझदारी, शऊर और होशियारी से ख़लीफ़ा के दिल को अपनी तरफ़ कैसे माईल कर गई। अगरचे चेहरे पर दाग़ हैं लेकिन इतनी हिम्मत वाली औरत थी कि अपने आपको चाँद से तश्बीह दी, कि चाँद पर भी तो दाग़ लगे हुए हैं, दाग़ होने की वजह से उसकी चाँदनी और नूरानियत में कोई फ़र्क़ नहीं आया। इसी तरह नाक दबी हुई हिरन की भी तो होती है तो हिरन के हुस्न में नाक का दबा हुआ होना कोई रोक नहीं बना। इसलिये मेरी

नाक दबी हुई है तो क्या हुआ।

देखिए एहसासे-कमतरी या रोने-धोने में मुब्तला नहीं हुई बल्कि शाकिर बनी कि अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने अनगिनत नेमतों से नवाज़ा और अल्हम्दु लिल्लाह उसने अ़क्ल से नवाज़ा है, अ़क्ल के ज़रिये अपने सर के ताज की ख़िदमत करूँगी, और अमीरुल्-मोमिनीन को इत्मीनान दिला दिया।

इसी तरह अ़ली बिन जुहम कहते हैं कि मैंने एक रात अपनी कनीज़ (बाँदी) से कहा आओ हम चाँदनी रात में चलकर बैठें। जवाब में उसने कहा दो सौकनों को एक साथ रखने का शौक़ तुम्हें क्योंकर हुआ? यानी उसने चाँद को अपनी सौकन बनाया। इसी तरह एक दिन सूरज को ग्रहण लगा, उसने सूरज की तरफ़ देखा तो कहाः मेरी ख़ूबियों को देखकर आग-बगूला हुआ और शर्मा कर आड़ में चला गया।

यह औ़रत ज़ेवरात से नफ़रत करती थी। एक दिन कहने लगीः ज़ेवर से ऐब की तरह ख़ूबियाँ छुप जाती हैं। औ़रत का यही ज़ौक़ शानदार होता है कि वह अपना असली हुस्न जो क़ुदरत ने दिया है उसका इज़्हार बिना ज़ेवर के करे और बातिनी हुस्न का इज़्हार इन चन्द सिफ़ात के साथ करेः

1. समझदारी के साथ बातचीत का सलीक़ा।

2. अपने घर की सफ़ाई सुथराई।

3. शौहर की फ़रमाँबरदारी।

4. शौहर की दिलजोई की ख़ातिर अपने को उसके लिए संवारना। इससे अपने शौहर को अपनी तरफ़ राग़िब (आकर्षित) करे, न यह कि ज़ेवरात की तैयारी या ख़रीदारी का बोझ शौहर पर रखे और उसका पैसा पानी की तरह बहाए।

एक बार ख़लीफ़ा मोतज़िद ने अपनी बीवी के घुटनों पर अपना सर रखा और सो गया। बीवी ने सिरहाने एक तकिया रखकर अपना घुटना हटा लिया और उठकर चली गई। ख़लीफ़ा जब उठा तो गुस्से में बीवी

से पूछा ऐसा क्यों किया? क्योंकि उसके अन्दर तकब्बुर की बू आ रही थी। बीवी ने कहा: यह बात नहीं! हमें इसकी तालीम दी गई है कि सोने वाले के पास कोई न बैठे। न बैठने वाले के पास कोई शख़्स सोने की कोशिश करे। मोतज़िद ने उसके जवाब को पसन्द किया और सही समझा।

इसी लिए जिस औ़रत को अल्लाह ने जितना भी हुस्न दिया है दूसरी कुदरती सलाहियतों से नवाज़ा है, उस पर शुक्र करे, नाशुक्री बिल्कुल न करे, वरना होता यह है कि जितना मिला है वह भी कम हो जाता है। एहसासे-कमतरी में मुब्तला न हो, कि मैं ऐसी हूँ मेरा रिश्ता कैसे आएगा? मेरा शौहर मुझसे कैसे मुहब्बत करेगा? बल्कि अल्लाह तआ़ला से ख़ूब दुआ़एँ माँगे, गुनाहों से बचने की कोशिश करे और अन्दरूनी हुस्न (कुदरती सलाहियतों) को उजागर करे। समझदारी व सलीक़े से सब काम करने से बीवी की इज़्ज़त व अ़ज़मत को चार चाँद लग जाते हैं। इसी लिए सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का क़ौल है:

المرأة العاقلة تبنى بيتها والسفيهة تهدمها. (ماخوذ از المرأة المثالية ص ٢٦)

आ़क़िला! (यानी अ़क़्ल से काम लेने वाली, सही इन्तिज़ाम और घरेलू कामों को ढंग से अन्जाम देने वाली, शौहर के मिज़ाज को समझकर चलने वाली औ़रत) अपने घर को बनाती है। और बेवक़ूफ़ औ़रत बने बनाए घर को गिरा देती है। यानी घर का बना बनाया वक़ार, आपस के प्यार व मुहब्बत से रहने, सुकून व राहत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने, इन सब को ख़त्म कर देती है। शौहर और उसके ख़ानदान की इज़्ज़त पर बट्टा लगा देती है।

अल्लाह तआ़ला ऐसी बुरी सिफ़ात वाली औ़रत से सब मुसलमान शौहरों की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

इसी लिए किसी ऐसी ही हसीन औ़रत को किसी शायर ने शे'र में नसीहत की है:

يا حسنة الوجه توقت الخنا   لا تبدلن الزين بالشين

तर्जुमाः ऐ हसीन चेहरे वाली औ़रत! बद्‌कलामी से बाज़ आ, जो अल्लाह ने तुम्हें अपने फ़ज़्ल व करम से हुस्न दिया है उसको अपनी बद्‌कलामी (कड़वी ज़बान) से ख़राब मत कर।

وَيَاقبحة الوجه كُوني محسنة   لا تجمعنّ بين قبحين

तर्जुमाः ऐ बदसूरत औ़रत! कम से कम नेक तो बन ही जा। दो ख़राबियों (बदसूरती और बद्‌कलामी) को एक जगह जमा न कर।

यानी तेरा शौहर तेरी सूरत की ख़राबी पर तो सब्र कर ही रहा है, अब तेरे चिड़चिड़ेपन और मुँह-दर-मुँह जवाब देने को भी कैसे बर्दाश्त करेगा।

नेक बीवी हर हाल में शौहर का साथ दे

नेक बीवी को चाहिए कि हर हाल में एक ही की होकर रहे। ख़ुशियों के हालात आएँ या परेशानियों के हालात हों, घर में अमीरी हो या ग़रीबी हो, सफ़र हो या वतन में हो, हर हाल में शौहर ही की होकर रहे। ऐसा न हो कि "मीठा-मीठा हप-हप, कड़वा-कड़वा थू-थू"।

जब पैसा था तो ख़ूब मुहब्बत और अदब का मामला करना और जब पैसा न रहा तो अब ग़ैरों जैसा मामला! मालूम हुआ कि यह बीवी "माल की बीवी" थी, माल से उसने निकाह किया था, इस शौहर से निकाह नहीं किया था।

लेकिन जन्नती बीवी सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए शौहर से मुहब्बत करती है। वह हर हाल में शौहर से मुहब्बत करती है। उसको दुनिया की किसी चीज़ की परवाह नहीं होती। उसके सामने सिर्फ़ मालिक की रिज़ा होती है, कि मालिक की निगाह न बदल जाए वह नाराज़ न हो जाए। इसलिए वह हर हाल में शौहर की इ़ज़्ज़त व बड़ाई करती है। शौहर बीमार हो जाए या सेहतमन्द हो दोनों हालतों में से किसी हाल में भी वह शौहर को अपनी मुहब्बत व ख़िदमत

की कमी का एहसास नहीं होने देती।

बल्कि यहाँ तक कि मौत के बाद भी अपने शौहर की मन्शा के मुवाफ़िक़ चलने की कोशिश करती है, कि जब शौहर की ज़िन्दगी में उनकी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ काम नहीं किया तो अब मौत के बाद उनकी चाहत के ख़िलाफ़ क्यों करूँ? जैसे हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि की वफ़ात के बाद उनकी बीवी से उनके भाई ने पूछाः अगर तुम चाहो तो तुम्हारा ज़ेवर वापस दे दिया जाए? फ़रमाने लगींः जब मैं उनकी ज़िन्दगी में उससे ख़ुश न हुई तो मरने के बाद इससे क्या ख़ुश हूँगी।

ऐसी ही नेक बीवी के लिए अ़रब के देहात के रहने वाले एक शख़्स ने यह शे'र कहा था, जिस समय उनके घर में तंगदस्ती और फ़ाक़े की शिद्दत हो गई तो दोनों किसी मैदान में बैठे हुए थे और शौहर यह दुआ़ कर रहा थाः-

يا رب انى قاعد كما ترى   وزوجتى قاعدة كما ترى

والبطن منى جائع كما ترى   فما ترى ربنا فيما ترى

(المرأة المثالية ص٣٣)

तर्जुमाः ऐ मेरे अल्लाह! मैं बैठा हुआ हूँ जैसा कि आप देख रहे हैं, और मेरी बीवी भी मेरे साथ बैठी हुई है जैसा कि आप देख रहे हैं। और हम दोनों का पेट ख़ाली है और भूख लगी हुई है जैसा कि आप जानते हैं। तो आपका क्या ख़्याल है ऐ हमारे परवर्दिगार! इस बारे में जो आप देख रहे हैं।

ग़ौर कीजिए! बीवी अगर ऐसे समय में शौहर का साथ न दे बल्कि और ताना देती रहे तो शौहर पर दस ग़म तो लगे हुए हैं ग्यारहवाँ ग़म जो बीवी का दिया होगा वह उन दस ग़मों पर हावी होगा, वह लग जाएगा, जिससे उस बेचारे की अन्दर व बाहर की सारी ही ज़िन्दगी ख़राब हो जायेगी।

जैसे कारोबार ठप हो गया, नौकरी छूट गई, लोग पैसा खा गए वग़ैरह वग़ैरह। अब शौहर इतना परेशान है कि उसको रोज़ी-रोटी की कोई सूरत समझ नहीं आ रही तो बीवी को चाहिए कि उस समय उसके ग़म का पसीना पौंछे कि आप कोई फ़िक्र न करें, पैसा तो हाथ का मैल है, अल्लाह ने ले लिया, वह वापस भी दे सकता है। और उसके लेने में भी ज़रूर ख़ैर होगी। आप नमाज़ों की पाबन्दी के साथ चाश्त की नमाज़ पढ़कर बाज़ार जाएँ। चलते-फिरते "या मुग़नी, या ग़निय्यु" पढ़ते रहें और यह दुआ भी याद कर लें:

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

अल्लाहुम्मक्फ़िनी बि-हलालि-क अन् हरामि-क व अग़्निनी बि-फ़ज़्लि-क अम्मन् सिवा-क।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे रिज़्के हलाल इतना दे कि हराम से बच जाऊँ और मुझे अपने फ़ज़्ल से इतना मालामाल फ़रमा कि मुझे तेरे सिवा किसी से (किसी क़िस्म की भी मदद माँगने की ज़रूरत न पड़े)।

और उसको यूँ समझाए कि इन्शा-अल्लाह तआला दोबारा आपका काम सही हो जाएगा। हम कुछ महीने रूखा-सूखा खाकर गुज़ारा कर लेंगे।

आप ख़ुद बताईए उस शौहर पर कितने ही सख़्त हालात आएँ लेकिन जिसको ऐसी ख़ुश-क़िस्मत बीवी मिली हो वह उन सख़्त से सख़्त हालात का मुक़ाबला बड़ी हिम्मत के साथ करेगा। उन परेशानियों ही में से उसको ऐसी राह सुझाई दे जाएगी जो उसकी तकलीफ़ों को नेमतों से बदलवा देगी, बीमारी सेहत में बदल जाएगी, ग़म ख़ुशी में बदल जाएगा।

लेकिन ख़ुदग़र्ज़ बीवी! (जिसका ज़िक्र हम इसलिए कर रहे हैं ताकि आपको ऐसी बातों और आदतों से बचने की तौफ़ीक़ हो) जिसने अपना शौहर माल सामान और ज़ाहिरी असबाब और राहत को बनाया हुआ होता है, वह तकलीफ़ देखकर ही यह कहेगी: क्या मैंने आपको मना नहीं किया था कि फ़लाँ दोस्त के साथ कारोबार में साझा न करें, या मैंने नहीं

कहा था कि फलाँ मुल्क में नौकरी के लिए न जाएँ। देखा वही हुआ ना जो मैंने कहा था, अब मैं बच्चों की फ़ीस कहाँ से लाऊँ, फ़ोन और बिजली का बिल कैसे भरेंगे, मासी को क्या मुँह दिखाऊँगी। आपके सारे करतूत मुझे भुगतने पड़ते हैं। ख़ूब अपने वालिद और भाईयों को दो, और दो। ख़ूब बहनों को दिया था ना, आज देख लिया भाई-बहनों ने क्या सुलूक किया, वग़ैरह वग़ैरह।

ऐसी ही बीवी के बारे में अ़रब के मशहूर विद्वान अबू उमर बिन अ़ला ने इब्रह् बिन अत्तबीब का यह शे'र नक़ल किया है, जो शे'र नहीं बल्कि हक़ीक़त की तर्जुमानी है, कि ख़ुदग़र्ज़ बीवी हक़ीक़त में अपनी ग़र्ज़ से निकाह करती है। जब तक वह ग़र्ज़ बाक़ी है वह निकाह में है, अपनी ग़र्ज़ ख़त्म हो गई तो अब ....। अल्लाह हर मुसलमान औ़रत की इन बुरी आ़दतों से हिफ़ज़त फ़रमाए आमीन।

فان تسألونی بالنساء فاننی علیم بأدواء النساء طبیب

اذا شاب رأس المرء أو قلّ ماله فلیس له فی ودهن نصیب

तर्जुमा: अगर तुम मुझसे पूछो औ़रतों के बारे में तो मैं उनके हालात से ज़्यादा बाख़बर हूँ। उनकी बीमारियों का इलाज करने वाला भी हूँ। जब शौहर के सर के बाल सफ़ेद होने लगते हैं, या उसका माल कम हो जाता है तो अब उस औ़रत के दिल में मर्द की मुहब्बत का कोई हिस्सा नहीं रहता।

नेक बीवी सिर्फ़ शौहर की तालिब हो

नेक बीवी की एक सिफ़त यह भी होनी चाहिए कि वह सिर्फ़ शौहर से मुहब्बत करे और यह मुहब्बत भी किसी ग़र्ज़ के लिए न हो सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो, कि अल्लाह राज़ी हो जाए। इसलिए कि अल्लाह के नबी ने यह ख़ुशख़बरी दी है कि जिस औ़रत को मौत इस हाल में आए कि उससे उसका शौरह राज़ी हो तो वह सीधी जन्नत में दाख़िल होगी।

ऐसी नेक औ़रत शौहर की मुहब्बत न माल के लिए करती है न

हुस्न के लिए, न डिग्री व ओहदे की ख़ातिर, बल्कि हर हाल में और हर वक़्त और हर जगह और हर मौक़े पर करती है। ऐसी ही औरत की इज़्ज़त और मक़ाम मर्द के दिल व दिमाग़ में होता है।

जन्नती औरतों की एक सिफ़त यह होगी कि वे 'क़ासिरातुत्तर्फ़ि' होंगी, यानी उनकी निगाहें नीची होती हैं। वे अपने शौहरों के सिवा ग़ैर-मर्दों की ख़्वाहिश नहीं रखतीं। दूसरी सिफ़त यह कि "मक़सूरात" यानी ख़ेमों में रहती होंगी। इस सिफ़त का मतलब यह है कि वे इधर-उधर अपना सिंगार दिखाती नहीं फिरतीं। न ग़ैर-मर्दों के सामने आती हैं। (हादिल अरवाह पेज 253)

इसलिए नेक बीबी को चाहिए कि ग़ैर-मर्दों की तरफ़ हरगिज़ न देखे। शौहर को प्यार-मुहब्बत और पसन्दीदगी की नज़र से देखे। अपनी निगाहें सिर्फ़ अपने शौहर पर केन्द्रित रखे। अपने घर से फ़ुज़ूल कामों के लिए न निकले। सिर्फ़ शौहर की होकर रहे किसी और की नहीं।

हम आपके सामने एक वाक़िआ नक़्ल करते हैं। देखिए बादशाह की बाँदी कैसे सिर्फ़ एक ही की बाँदी रही। दुनिया की सब चीज़ों को ठुकरा कर सिर्फ़ अपनी निगाह बादशाह पर जमाए रखी, तो बादशाह भी उससे सच्ची मुहब्बत करने लगा।

कहते हैं कि हारून रशीद रहमतुल्लाहि अलैहि की एक काली रंगत की कनीज़ (बाँदी) थी। हारून रशीद को उससे और उसको हारून रशीद से बेपनाह मुहब्बत थी। दूसरी कनीज़ों को हसद होता था और वे हमेशा उसके ख़िलाफ़ तदबीरों में लगी रहती थीं। हारून रशीद ने एक बार इम्तिहान के लिए दस्तरख़्वान पर सोना, चाँदी और हीरे-जवाहिरात फैला दिए और ऐलान कर दिया: आज बादशाह का ख़ज़ाना खुला है जो जिस पर हाथ लगा लेगा वह उसी का हो जायेगा। सब नौकर व नौकरानी उन हीरे-जवाहिरात और सोने के सिक्कों को चुनने लग गए, लेकिन वह कनीज़ टिकटिकी बाँधे खड़ी हारून रशीद को देखती रही।

हारून रशीद रहमतुल्लाहि अलैहि ने उससे पूछा: तुम क्यों सोने

और मोतियों के इन हारों को नहीं लेतीं? ख़ादिमा ने कहा: क्या यह ऐलान सही है कि जो जिस पर हाथ लगा लेगा वह उसका हो जाएगा? बादशाह ने कहा: जी हाँ।

ख़ादिमा उठी और उसने जाकर बादशाह यानी हारून रशीद के कन्धे पर हाथ रख दिया कि मेरा मक़सूद तो सोने और चाँदी का मालिक यानी आपकी ज़ात है। अगर बादशाह मेरे साथ है तो यह सब कुछ मेरा है, और अगर बादशाह मेरे साथ नहीं तो यह कुछ भी मेरा नहीं। हारून रशीद ने उसके इस अ़मल से सारी दूसरी बाँदियों को समझा दिया कि अगरचे वह ख़ूबसूरती में बहुत कम है लेकिन इसने मुझसे मुहब्बत की है और तुम सब ने मेरी बादशाहत से या मेरे माल व दौलत से मुहब्बत की है।

इसी से हम सब मुसलमानों को यह समझ लेना चाहिए कि जो अल्लाह को राज़ी करने की फ़िक्र में लगेगा, हमेशा एक ही फ़िक्र होगी कि अल्लाह किसी तरह राज़ी हो जाए, लोग राज़ी हों या नाराज़ किसी की परवाह नहीं, सिर्फ़ एक ही की परवाह रखेगा कि सातों आसमान व ज़मीन का मालिक मुझसे राज़ी हो जाए, जब वह मुझसे राज़ी हो गया तो जो कुछ आसमानों व ज़मीनों में है वह मेरा है। और अगर वह मुझ से नाराज़ हो गया तो सब कुछ होने के बावजूद भी मैं हैरान व परेशान रहूँगा। अल्लाह तआ़ला हम सबको अपना सच्चा बन्दा और हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीन का सच्चा ख़ादिम बनाए। आमीन

दुल्हन के लिए हिदायत-नामा

रुख़्सती के वक़्त बेटी को माँ की दस नसीहतें

कन्दा के हाकिम अ़मर बिन हजर ने उम्मे अयास बिन्ते औफ़ ब्रिन मुस्लिम शैबानी के साथ शादी का पैग़ाम भेजा। शादी के बाद सुहागरात से पहले लड़की की माँ उमामा बिन्ते हारिस रहमतुल्लाहि अ़लैहा ने

अपनी बेटी से तन्हाई में बातचीत की और निम्नलिखित नसीहतें कीं। जिनसे यह पता चलता है कि बीवी पर उसके शौहर के क्या-क्या हुकूक़ और वाजिबात हैं। ये नसीहतें सारी दुल्हनों के लिए हिदायत-नामे की हैसियत रखती हैं। माँ ने कहा:

बेटी! तेरा वह माहौल छूट गया जिससे निकल कर जा रही है। तेरा वह नशेमन भी पीछे चला गया जहाँ ग़ाफ़िल को भी एक मक़ाम हासिल था और अक़्लमन्द को सहारा था। अगर कोई औरत अपने शौहर से और कोई शौहर अपनी बीवी से अपनी सख़्त हाजत के बावजूद बेनियाज़ (लापरवाह) हो सकता था तो तुम्हारे माँ-बाप इसके ज़्यादा हक़दार थे कि वे एक दूसरे से बेनियाज़ रहते। इसलिए कि तुम्हारे नाना के पास बहुत ही माल था। लेकिन हक़ीक़त यह है कि औरतें मर्दों के लिए पैदा की गईं और मर्द औरतों के लिए पैदा किए गए हैं।

बेटी! तेरा वह माहौल छूट गया जिससे तू निकल कर जा रही है तेरा वह नशेमन भी पीछे चला गया जिसमें तू परवान चढ़ी। अब तेरा रुख़ ऐसे आशियाने की तरफ़ है जिससे तू आशना नहीं। वहाँ तेरा साथी वह है जो तेरा शनासा नहीं। आज तेरी गर्दन और तेरा पूरा बदन उसकी मातहती में है।

فكوني له أمة يكن لك عبدًا وشيكًا واحفظي مني خلالا عشرة يكن لك ذكرًا وذخرًا.

इसलिए तू उसकी बाँदी बनकर रह वह तेरा गुलाम बनकर रहेगा।

इसके लिए दस आ़दतें अपने अन्दर पैदा कर, ये तेरे लिए ज़िन्दगी में भी शौहर की दुआओं का सबब होंगी और मौत के बाद भी नेकनामी का सबब होंगी। आगे चलकर ये तेरे काम आएँगी।

पहली और दूसरी आ़दत यह कि क़नाअ़त (यानी जो हासिल हो उस पर सब्र व शुक्र) के साथ-साथ उसके लिए इन्किसारी बरतना (यानी झुककर रहना)। उसकी एक-एक बात सुनना और उसकी फ़रमाँबरदारी (इताअ़त) करना।

तीसरी और चौथी आदत यह है कि शौहर की निगाह और उसकी पसन्दीदा ख़ुशबू का ख़्याल रखना। इसलिए कि जब उसकी तुझ पर निगाह पड़े उसकी तबीयत मैली न होने पाए। तेरे बदन से ऐसी कोई महक न आए जो उसे नापसन्द हो। याद रखना।

وَاِنَّ الكحل أحسن الحسن الموجود، والمآءُ أطيب الطّيب المفقود.

यानी शौहर की आँख में भली मालूम होने के लिए सुर्मे का इस्तेमाल करना, कि यह आसान चीज़ है जो हर एक को मयस्सर हो सकती है। और शौहर के नाक में बदबू न जाए इसके लिए पानी का इस्तेमाल ख़ूब करना। यानी नहाने और वुज़ू का एहतिमाम करना कि यह सबसे अच्छी ख़ुशबू है।

पाँचवीं और छठी सिफ़त यह है कि उसके सोने और खाने के समय का लिहाज़ रखना, क्योंकि देर तक भूख बर्दाश्त करने से आग सी भड़क उठती है और नींद में कमी आने से गुस्सा तेज़ होता है।

इसलिए नेकी बीवी को चाहिए कि जो शौहर के खाने का समय हो उससे पहले ही खाना तैयार करने की पूरी कोशिश करे। अगर किसी दिन देर हो जाए तो कुछ न कुछ खाने की चीज़ ही उस समय पेश कर दे और अगर उस समय शौहर को गुस्सा भी आ जाए कि इतनी देर पकाने में क्यों लगी तो माज़िरत कर दे, गुस्से का जवाब गुस्से से न दे।

सातवीं और आठवीं सिफ़त यह है कि उसके माल की हिफ़ाज़त करना और उसके घर वालों और उसके मर्तबे का लिहाज़ रखना। माल की अच्छी निगरानी अच्छे इन्तिज़ाम से होती है और घर वालों की हिफ़ाज़त अच्छी तदबीर से।

नवीं और दसवीं सिफ़त यह है कि कभी उसके हुक्म के ख़िलाफ़ न करना। न ही उसके किसी राज़ को ज़ाहिर करना। अगर उसकी नाफ़रमानी की तो उसका सीना गुस्से से भड़क उठेगा और अगर उसके राज़ खोल दिए तो उसके फ़रेब से हिफ़ाज़त मुम्किन न होगी। वह कभी तुम पर भरोसा न कर पाएगा, कभी तुम्हें अपना न समझेगा। जब वह

रंजीदा हो ग़मगीन हो तो उसके सामने हरगिज़ ख़ुशी का इज़हार न करना, बल्कि उसके साथ ग़म में पूरी शरीक होकर उसको तसल्ली देना और अगर ख़ुश हो तो कभी रंज व ग़म ज़ाहिर न करना।

واعلمي يا بنية ! أنك لا تقدرين على ذٰلك حتى توثرى رضاه الٰى رضاك وتقدمى هواه على هواك فيما أحببت أوكرهت، والله يضع لك الخير وأستودعك الله.

तर्जुमाः और ख़ूब ध्यान से सुन लो ऐ मेरी प्यारी बेटी! तुम शौहर का दिल जब तक नहीं जीत सकतीं जब तक अपनी पसन्द को फ़ना न कर दो उसकी पसन्द में। अपनी मर्ज़ी को ख़त्म न कर दो उसकी मर्ज़ी के सामने। जिसको वह पसन्द करे उसको तुम पसन्द करो, और जिसको वह नापसन्द करे उसको तुम नापसन्द करो।

अब बेटी! हम तुमसे अलग हो रहे हैं, अल्लाह ही की हिफ़ाज़त में तुमको सुपुर्द करते हैं। अल्लाह हर भलाई और हर नेकी को तुम्हारे लिए मुक़द्दर फ़रमाए और हर बुराई से बचाए।

मुसलमान बहन! अल्लाह तआ़ला तुम्हें और सारी मुसलमान बहनों को इन नसीहतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन या रब्बल् आ़लमीन।

रुख़्सती के वक़्त बाप की बेटी को नसीहत

दुल्हन को नसीहत करना मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जब किसी दुल्हन को उसके शौहर के पास भेजते तो उसे शौहर की ख़िदमत और उसके हुक़ूक़ की रिआ़यत की ताकीद करते थे। (तोहफ़तुल् उरूस पेज 77)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन अबी तालिब ने अपनी बेटी को निम्नलिखित नसीहत की थी। आपने फ़रमायाः

ग़ैरत यानी रश्क और तकब्बुर व ग़ुरूर से बचना। क्योंकि यह

तलाक़ की चाबी है। ज़्यादा डाँट-डपट से परहेज़ करना, क्योंकि इससे बुग्ज़ व हसद पैदा होता है। सुर्मा ज़रूर इस्तेमाल में लाना क्योंकि यह सबसे बेहतर सिंगार है और सबसे बेहतर ख़ुशबू पानी है।

इसी तरह 'फ़राफ़सा बिन अह्वस' ने अपनी बेटी नायला का निकाह अमीरुल-मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से किया। जब उनकी रुख़्सती का समय क़रीब आया तो बाप ने नसीहत करते हुए कहाः मेरी बेटी! तो कुरैश की औरतों के पास जा रही है, जिन्हें तेरे मुक़ाबले में ख़ुशबू ज़्यादा मयस्सर है। इसलिए दो आदतें इख़्तियार करने की नसीहत मेरी तरफ़ से याद रखना- सुर्मे का इस्तेमाल करना और पानी की ख़ुशबू लगाना। (यानी ख़ूब नहा-धोकर साफ़ रहना) कि तेरी महक मश्कीज़े की महक की तरह हो, जिस पर बारिश का पानी पड़ा हो। (तोहफ़तुल-उरूस पेज 122)

अबुल्-अस्वद ने उपरोक्त नसीहतों के अलावा अपनी बेटी से कहाः

अपने रख-रखाव का ख़्याल रखना और सबसे बेहतर सिंगार सुर्मा है और ख़ुशबू का इस्तेमाल करना, और अच्छी ख़ुशबू अच्छी तरह वुज़ू करना है।

यूरोप की एक हसीन व ख़ूबसूरत ख़ातून ने अपने ज़माने की लड़कियों को दिन भर में कई बार ठंडे पानी से चेहरा धोने की ताकीद की थी। मालूम हुआ कि वुज़ू में क्या-क्या हिक्मतें छुपी हुई हैं।

आपने ग़ौर किया! इस्लाम में हर शौहर के लिए ज़ीनत (बनाव-सिंगार) का कितना एहतिमाम किया गया है, लेकिन सादगी कैसी! हर ग़रीब से ग़रीब औरत, हर मिस्कीन से मिस्कीन औरत, चाहे सफ़र में हो चाहे घर में हो, चाहे बीमारी में हो चाहे तन्दुरुस्त हो, उम्र की किसी मन्ज़िल पर भी चाहे जवान हो या अधेड़ उम्र की हो, इन दो बातों का ख़्याल रखे। अगर गर्मी हो तो दिन में दो बार वरना एक बार तो नहा ही ले। (अगर नहाना सेहत के लिए नुक़्सानदेह न हो) और वुज़ू तो चूँकि पाँच बार फ़र्ज़ नमाज़ के लिए करेगी ही, इसके अलावा भी

बावर्चीख़ाने के कामों से जब फ़ारिग़ हो तो हाथ-मुँह ज़रूर धो ले।

इसी तरह सुर्मे का भी ज़रूर एहतिमाम (पाबन्दी) करे और यह ऐसी सादी ज़ीनतें (बनाव-सिंगार और रख-रखाव) हैं कि इनके लिए न बहुत पैसा ख़र्च करने की ज़रूरत है, न इसमें शौहर का माल बर्बाद होगा, न काफ़िरों के मुल्कों की बनी हुई ख़ुशबुओं और ज़ीनत का सामान लेने की ज़रूरत है, न इसमें अपना क़ीमती वक़्त बर्बाद करने की ज़रूरत है, न यह ऐसा बनाव-सिंगार होगा जिससे वुज़ू व ग़ुस्ल भी नहीं होता।

इसलिए इस्लाम का असली जौहर "सादगी" है। काश आप औरतें यह फ़ैसला कर लें कि हम सादगी अपनाएँगी तो आज मुसलमानों का माल-दौलत जो तबाह व बर्बाद हो रहा है वह न हो।

कहते हैं कि औरतें मर्दों की गुड़िया हैं। इसलिए मर्दों को चाहिए कि जहाँ तक हो सके अपनी इन गुड़ियों को बनाए-संवारे रखें। औरत का बनाव-सिंगार मर्द की शहवत (शहवत/काम-इच्छा) को तेज़ करती है। औरत की ख़ूबियाँ इससे नुमायाँ होती हैं उलफ़त व मुहब्बत देर तक क़ायम रहती है।

अबुल-फ़र्ज अस्फ़हानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है: "हसीन व ख़ूबसूरत औरत भी अपने शौहर की नज़र में उस वक़्त अपना मक़ाम बनाती है जब वह बनाव-सिंगार करे और साफ़-सुथरी रहने की पाबन्द हो। अपने हुस्न को अतिरिक्त दिलकश बनाने के लिए जायज़ तर्ज़ के बनाव-सिंगार, तरह-तरह के कपड़े और सजावट के ऐसे तरीक़ों पर अमल करे जिन्हें वह पसन्द करता हो। और इसकी हमेशा कोशिश करे कि मर्द की नज़र उसकी किसी गंदगी या किसी नापसन्दीदा चीज़ पर न पड़ जाए और उसकी कोई नागवार बू (गंध) उसे महसूस न हो।

और अगर उसने इन चीज़ों पर कोताही बरती तो इसका नुक़सान ख़ुद उठाएगी। क्योंकि इसका पूरा-पूरा डर है कि शौहर उसकी सुस्ती और लापरवाही को भांप लेगा, किसी और की तरफ़ माईल होगा।

औरतों को चाहिए कि अपने कपड़े साफ़-सुथरे रखें। अगर कपड़े पर कोई धब्बा लग जाए तो फ़ौरन साफ़ करें। एक धब्बा भी अपने जिस्म पर या कपड़ों पर न लगा रहने दें। कहते हैं कि जो अपने जिस्म और कपड़ों की हर क़िस्म की गन्दगी और दाग़-धब्बों से बचाव करेगा इन्शा-अल्लाह तआ़ला उसको दिल के गुनाहों के धब्बों से हिफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ होगी।

इसी तरह ख़ुशबू लगाना, मिस्वाक करना, ख़िलाल करना, मैल-कुचैल से ख़ुद को बचाए रखना, फ़ालतू बालों की सफ़ाई करना, पाकी हासिल करना और नाख़ुन काटना, ये सब औ़रत के लिए ज़रूरी और लाज़िमी चीज़ें हैं ताकि मर्द का दामन दाग़दार न होने पाए और न ही दूसरों की तरफ़ माईल होने का उसे मौक़ा मिले।

और इसी सफ़ाई-सुथराई का एहतिमाम शौहर को भी अपनी बीवी के लिए करना चाहिए ताकि बीवी भी गुनाह में मुब्तला न हो। इसकी तफ़सील इन्शा-अल्लाह तआ़ला किताब "'तोहफ़ा-ए-दूल्हा" में शौहरों के लिए आएगी।

कहते हैं कि बनी इस्राईल यह सब नहीं करते थे इसलिए उनकी बीवियाँ ज़िनाकारी (बदकारी) की तरफ़ माईल होती गईं।

(तोहफ़तुल-उरूस पेज 131)

मौलाना मुहम्मद अहमद सूरती रहमतुल्लाहि अ़लैहि की तरफ़ से बेटी को नसीहत

मेरी प्यारी बच्ची! तू रुख़्सत हो रही है। ख़ुशी से जा, ख़ुदा पाक तुझे तेरा नया घर मुबारक करे। तू जहाँ-जहाँ भी जाती है वहाँ रोशनी फैलाती है। ख़ुदा तआ़ला तुझे ऐसी अच्छी समझ दे कि जिससे तेरा मुस्तक़बिल (भविष्य) रोशन हो। तू ख़ुद भी सुखी हो और अपने जीवन-साथी का दामन भी ख़ुशियों से भर दे। ख़ुदा तआ़ला तुझे मासूम मुहब्बत का ऐसा जज़्बा इनायत करे जो सिर्फ़ तेरे ही लिए न हो बल्कि तेरे

सुख-दुख के साथी के लिए भी रास्ते की एक मशाल बने और ससुराल वालों के लिए भी हमेशा सुकून का ज़रिया बने।

बेटी! खुदा तआ़ला तुझे तौफ़ीक़ दे कि तू ससुराल में जाकर मैके की लाज रख ले। देखना! कहीं सास और ससुर और माँ-बाप की इ़ज़्ज़त पर पानी न फिर जाए। अब हमारी इ़ज़्ज़त व आबरू तेरे हाथों में है। ख़बरदार! माँ-बाप की तरबियत व तालीम पर उफ़ भी न होने देना। कहीं ऐसा न हो कि माँ का दूध बदनाम हो।

बेटी! खुदा तआ़ला तुझे हर मुसीबत और नामुवाफ़िक़ हालात से जुर्रत व बहादुरी के साथ मुक़ाबले की हिम्मत दे और नाज़ुक हालात में अपनी नैया (कश्ती) को ख़ैरियत के साथ पार लगाने की सूरतें अ़ता फ़रमाए। मन-मुटाव और लड़ाई-झगड़ों से तेरे दामन को पाक रखे और खुदा पाक तुझे ऐसी ख़ूबियाँ दे जो हर शरीफ़ बीवी को देता है।

मेरी लाडली बेटी! जिस दिन से तू पैदा हुई उसी दिन से हमने समझ लिया था कि तू हमारी नहीं है बल्कि पराये के लिए है। तू इस घर में हमेशा रहने वाली नहीं बल्कि एक मेहमान की हैसियत से आई है और एक दिन इस घर से रुख़्सत होना तेरी क़िस्मत में लिखा जा चुका है। तुझे इसी लिए पाला-पोसा है कि जब तुझ में घर संभालने की सलाहियत और क़ाबलियत पैदा हो जाए तो तुझे ससुराल रुख़्सत कर दिया जाए।

बाप की जान! आज तू रुख़्सत हो रही है और तू अपनी माँ को, अपने भाई को, अपनी सहेलियों को और सबको छोड़कर जा रही है। आह! कितना दर्दनाक है तेरी रुख़्सती का यह मन्ज़र। घर में औ़रतों का झमेला है, अड़ोस-पड़ोस की और दूर-दूर से औ़रतें आई हैं। छोटे-छोटे बच्चे नये-नये इस्लामी लिबास पहनकर कैसे खुश नज़र आ रहे हैं, जैसे कि ईद हो। तेरे बाप के सारे ही जान-पहचान वाले आए हुए हैं। इसी तरह बाहर के बुलाये हुए मेहमान भी आ पहुँचे हैं, रिश्तेदार, दोस्त व अहबाब सभी मौजूद हैं।

कोई चीख़ें मार-मारकर रो रहा है, कोई सिसकता है तो कोई चुपके-चुपके आँसू बहा रहा है। कोई ठंडी आहें भरकर दिल के ग़म का बोझ हलका कर रहा है। कोई उदास होकर ग़म का इज़हार कर रहा है। मतलब यह है कि छोटे बड़े, मासूम बच्चे, बूढ़े सभी ग़म व मातम के समन्दर में डूबे हुए नज़र आ रहे हैं। पूरे घर पर अजीब क़िस्म की उदासी फैली हुई है।

प्यारी बेटी! ज़रा देख तो सही अपनी माँ को, क्या हालत हो रही है। उसकी यह बेबसी की हालत अलफ़ाज़ में बयान नहीं की जा सकती। इस बेचारी ने तुझे नौ महीने तक अपने पेट में रखकर अपने जिस्म के ख़ून को दूध के रूप में तुझे पिलाकर बड़ा किया। ख़ुद तो गीली जगह पर सोती रही लेकिन तुझे उस गीली जगह से बचाकर सूखी जगह पर सुलाया। फिर तुझे लगातार अट्ठारह साल तक अपनी आँखों के सामने रखा। उसके आँसू किस तरह सूखें? क्या तेरी जुदाई उसके लिए कोई मामूली वाक़िआ है।

उसने तेरे आराम के लिए अपना आराम क़ुर्बान कर दिया। अपनी जवानी की मीठी नींद भी क़ुर्बान कर दी। न रात को रात समझा न दिन को दिन। अब तेरे बिना उसके दिन कैसे कटेंगे, उसकी रातें कैसे कटेंगी।

तेरी तालीम के लिए इस बेचारी ने कैसे-कैसे दुख सहे। किस-किस तरह तुझे पाल-पोस कर बड़ा किया। तेरे चेहरे की मामूली मायूसी उसकी सारी ख़ुशियों को ख़त्म कर देती। तेरी आँखों से बहा हुआ एक आँसू उसके दिल पर न मालूम कितनी चिंगारियाँ जला देता। तू ज़रा भी रोती कि उसके दिल पर ग़मों की घंघोर घटाएँ छा जातीं।

आज तू इस मामता भरी गोद से दूर हो रही है। तेरी वह माँ जिसने तुझे अच्छे से अच्छा खिलाया लेकिन उसने ख़ुद कभी उसकी तमन्ना नहीं की, जिसने तुझे अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनाया लेकिन उसने कभी उसको पहनने की ख़्वाहिश नहीं की। उसके दिल में हमेशा यह बात रही कि लड़की अच्छा खाती है तो गोया वह मैं ख़ुद खा रही

हूँ और लड़की अच्छा, जो पहन रही है तो गोया कि मैं खुद उसे पहन रही हूँ। वह तेरी माँ तेरी फ़िक्रों को दूर करने के लिए खुद अनगिनत फ़िक्रों में मुब्तला हो गई।

क्या तुझे याद है कि तेरी उस माँ ने तेरे लिए अपनी कितनी ही सुख भरी रातों को दुखों से भर लिया? तू ज़रा भी बीमार हुई कि वह बेचारी तेरे सिरहाने घन्टों खड़ी रही। कहीं ज़रा भी तेरे सर में दर्द हुआ कि उसकी दौड़-धूप देखने के क़ाबिल बन गई। तेरी तन्दुरुसती के लिए उसने अपनी भी सेहत का ख़्याल न किया।

आह! क्या गुज़र रहा होगा इस समय उसके दिल पर। बेटी! ज़रा तू अपनी माँ की हालत पर रहम कर। क्या उसका दिल पारा-पारा न हो रहा होगा? आह! अब उसे लगातार तेरी जुदाई का ग़म बर्दाश्त करना पड़ेगा। वह बेचारी जुदाई के इस भारी बोझ को किस तरह उठा सकेगी। खुदा तआ़ला उसे सब्र दे।

बेटी! आज तू अपनी प्यारी बहनों से भी अलग हो रही है। ये बहनें तुझे कितना चाहती थीं। ये तेरी बहनें भी थीं और सहेलियाँ भी थीं। हर काम में साथ-साथ, हर खेल में साथ-साथ, उठने-बैठने में सैर व तफ़रीह में, तेरे साथ ही साथ। तू जो सोचती वे भी वही सोचतीं और जो तू कहती उसे करने को हर वक़्त तैयार। तेरी ख़ुशी में उनकी भी ख़ुशी। ऐसी थीं तेरी बहनें। ज़रा तेरा चेहरा बिगड़ा तो उनके चेहरों का रंग भी बदल गया, और अगर कहीं तू ज़रा भी हंसी तो उन सबके चेहरे ख़ुशी से खिल उठे। अगर कहीं तू ज़रा भी गुस्सा हुई तो उन सब के दिल काँप गए और तेरी मामूली सी तबीयत बिगड़ने पर ऐसा लगता है जैसे वे सब भी बीमार हो गईं।

साथ ही साथ आँख-मिचोली खेली जा रही है और इसी तरह एक साथ खाने भी पक रहे हैं। इसी तरह साथ-साथ झूले भी झूल रहे हैं। सीना पिरोना भी साथ में हो रहा है। कहीं सहाबी औरतों के क़िस्से सुनने सुनाने में रातें गुज़र रही हैं। सोना भी साथ और जागना भी

साथ। तू चली जाएगी तो अब उनका क्या होगा। आह रे तेरे बिना बेचारियाँ तड़पती रहेंगी। घर के काम-काज तो चलते ही रहेंगे लेकिन निगाहें हर समय तुझे ही तलाश करती रहेंगी। तेरी यादें वे थोड़ा ही भूल जाएँगी?

काश! तू इस समय अपनी सहेलियों की हालत देख सकती। एक इस कोने में खड़ी-खड़ी रो रही है और एक दूसरे कोने में सिसकियाँ ले रही है। कहीं किसी का दिल ग़म से निढाल हो रहा है। अगर इत्तिफ़ाक़ से दो दिन भी तुझे न देख सकें तो उनका चैन ख़त्म हो जाता। किसी न किसी बहाने से तुझे ढूंढकर आन पहुँचती। कहीं तालीम के हलक़े क़ायम हो रहे हैं तो किसी जगह आई हुई औरतों की जमाअत की मदद हो रही है, किसी जगह दावतें हो रही हैं।

मतलब यह कि कहीं कुछ तो कहीं कुछ। ये सारी ही बातें मुहब्बत की कशिश थीं। ये सब बातें एक-दूसरे को मिलने और देखने के बहाने न थे तो और क्या था? अब वे हफ़्तों तक तुझे देख न सकेंगी। क्या तेरी याद उनको तड़पाएगी नहीं? तेरी जुदाई से उनके दिलों पर क्या बीत रही होगी शायद तू ही इसको अच्छी तरह जान सके।

बाप की जान! आज तू मुझसे रुख़्सत हो रही है। शुरू ही से मेरी दिली तमन्ना थी कि तू पढ़-लिखकर, बड़ी होकर, ख़ूबियों से भरपूर, मुहज़्ज़ब, तर्बियत-याफ़्ता पर्दे वाली लड़की बनकर ऐसी मिसाल पेश करे जिसकी नज़ीर तू खुद ही हो। मैंने जहाँ तुझे अच्छे से अच्छा खाना खिलाया और अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनाया, वहीं इस बात का भी ख़्याल रखा कि तू अख़्लाक़ व आदाब से पूरे तौर पर मालामाल हो जाए। साथ ही मेरी हमेशा यह भी तमन्ना रही कि तू जहाँ भी रहे वहाँ इस तरह ज़िन्दगी बसर करे कि नेक औरतें तुझे देख-देखकर सबक़ हासिल करें और गुमराह औरतें तुझे देखकर सही राह पा लें।

तुझे अच्छी तरह याद होगा कि तरबियत के मामले में तेरे ऊपर मैंने कभी कोई सख़्ती नहीं की, फिर भी कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैंने

तेरी ग़लती भी नज़र-अन्दाज़ की हो। अख़्लाक़ बिगाड़ने वाली किताबों के पढ़ने से तुझे हमेशा दूर रखा। गन्दे नाविलों को छूने तक से तेरे हाथों को दूर रखा और तेरे मुताले (पढ़ने) के लिए हमेशा ऐसी किताबें लाया जो अख़्लाक़ व आदाब सिखाने वाली हों और गृहस्ती को रोशन करने वाली हों। नाटक, सिनेमा, बाईस्कोप और इसी तरह के खेल-तमाशों से तुझे हमेशा मैंने दूर रखा। टी. वी., वी. सी. आर. की लानत से हमेशा तुझे बचाए रखा। इन चीज़ों से शरीफ़ से शरीफ़ घरानों की औरतों को गुमराह होते हुए देर नहीं लगती। इनसे तो कितने ही शरीफ़ घरानों की बरसों की इज़्ज़त व आबरू ख़ाक में मिल गई और जो इन चीज़ों में फंस गया वह शैतान के चक्कर में आ गया।

बेटी! तू अच्छी तरह जानती है कि मैंने अपने आराम व राहत का इतना ख़्याल नहीं किया जितना कि तेरे आराम का ख़्याल रखा। मैंने अपने आराम को तेरे आराम पर कभी तरजीह नहीं दी।

मैंने तेरी तालीम व तरबियत के लिए लायक़ और क़ाबिल उस्तानियाँ लगाईं। स्कूल की मिली-जुली तालीम से हमेशा बचाए रखा। तुम्हें और तुम्हारी माँ को मेहरम औरतों की जमाअत में बहुत सी बार लेकर गया, बुज़ुर्गों के इस्लाही बयानात सुनाने के लिए तुम्हें लेजाता रहा। फिर मैं भी तेरी तालीम की तरफ़ पूरी तवज्जोह देता रहा। मैं अच्छी तरह जानता था कि तू हमारे घर एक अमानत की तरह है, एक पराया धन है जो ख़ुदा तआला ने हमको दिया है और इसलिए दिया है कि तेरी अच्छी तरह से तरबियत की जाए और उम्दा से उम्दा अख़्लाक़ सिखाए जाएँ और यह सब करके तू पराये घर सौंप दी जाए। अगर हम तुझे उम्दा दीनी तालीम, अदब और शरई तहज़ीब पर्दा न सिखाते तो हम अपने फ़र्ज़ को भूलने वाले गिने जाते और फिर क़ियामत के दिन ख़ुदा तआला की बारगाह में जवाब देना पड़ता।

बाप की जान! वाक़ई आज तू रुख़्सत हो रही है। तेरी जुदाई का ख़्याल कितना रूँगटे खड़े करने वाला है। इस ख़्याल में कितना दर्द छुपा

हुआ है। लेकिन ऐ बेटी! तुझे कुछ ख़बर है कि आज का यह दिन तेरी ज़िन्दगी के लिए कितनी अहमियत रखता है। अब तक तेरी दुनिया क्या थी और अब क्या होने वाली है?

देखने में तो तू एक घर छोड़कर दूसरे घर जा रही है लेकिन यह बात शायद ही तेरे ख़्याल में हो कि यह मामूली सा फेर-बदल ज़िन्दगी के लिए कितना ज़बरदस्त इन्क़िलाब है।

आज तक तू माँ-बाप के घर रहकर, बेफ़िक्र होकर ज़िन्दगी गुज़ारती रही है और अब तुझे बहुत सोच-समझकर काम करना होगा। आज तक तू हर तमन्ना, हर आरज़ू से बेनियाज़ थी और अब तुझे अपनी हर आरज़ू पूरी करने से पहले उसके अन्जाम पर निगाह रखनी होगी। आज तक तू अपनी हर ख़्वाहिश दूसरों से मनवाती थी और अब तुझे दूसरों की तजवीज़ों (प्रस्तावों) और दूसरों की ख़्वाहिशों को पूरा करना होगा।

आज तक तू हुक्म चलाने वाली रानी थी और अब तुझे हुक्म मानने वाली बाँदी बनना होगा। इसके बिना तू महारानी का ओहदा न पा सकेगी।

बेटी! अब तेरी पूरी दुनिया ही बदल जाएगी और आज तक जिन-जिन तरीक़ों पर काम करती रही है वे तरीक़े भी अब बदल जाएँगे। इसी तरह गुफ़्तगू का अन्दाज़ भी बदल जाएगा और तेरी ज़िन्दगी में ज़बरदस्त बदलाव आएगा। तेरी ज़िन्दगी का हर मोड़ हर कोना एक नये अन्दाज़ से शुरू होगा।

मुझे अच्छी तरह याद है कि कभी-कभी तू मामूली-मामूली बातों में बुरी तरह ज़िद करती, उस वक़्त तू रोना-पीटना शुरू कर देती, खाना बन्द कर देती और रूठ जाती। हम सबको तेरी ज़िद पूरी करनी पड़ती। मैं इसे मानता हूँ कि ऐसा मामला कभी-कभी होता, लेकिन अब ख़बरदार! आँखें खोल और ध्यान से सुन! तुझे कोई भी ख़्वाहिश ज़ाहिर करने से पहले यह सोचना होगा कि तेरा जीवन-साथी (शौहर) और उसके रिश्तेदार तेरी उस ख़्वाहिश को किस अन्दाज़ से देखते हैं। तू जब

तक अपने दिल पर क़ाबू न पाएगी उस वक़्त तक दूसरों के दिलों पर क़ाबू न पा सकेगी।

ज़िन्दगी का यह कैसा अज़ीम और बड़ा बदलाव है, गोया कि तेरी ज़िन्दगी की गाड़ी एक नये ही रुख़ पर जा रही है। तेरे ख़्यालात अजीब अंगड़ाईयाँ लेंगे। तेरे सोच-विचार में अजीब क़िस्म की तब्दीली उत्पन्न होगी। तेरी तमन्नाओं और उम्मीदों का रुख़ भी बदल जाएगा। तेरे अन्दर ख़ुद-ब-ख़ुद ऐसा बदलाव होगा। तेरी तमन्नाओं और उम्मीदों का रुख़ बदल जाएगा। तेरे अन्दर ख़ुद-ब-ख़ुद ऐसी तब्दीली होगी कि माज़ी (गुज़रे ज़माने) को तू एक भूली-बिसरी कहानी समझने लगेगी। तेरा बर्ताव, तेरी ज़िन्दगी की तरबियत, तेरी रफ़तार, तेरी गुफ़तार, तेरी चाल-ढाल, हर चीज़ में बड़ा बदलाव आ जाएगा। इसको सोचेगी तो ख़ुद तुझे भी ताज्जुब होगा।

बेटी! आज मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि तेरे कान में कुछ ऐसी बातें भी डाल दूँ जिनकी ज़रूरत तुझे इस नई ज़िन्दगी में पड़ेगी। जिनको सामने रखकर तू अपनी ज़िन्दगी को उन उलझनों और हालात से महफ़ूज़ रख सके जो तुझे बर्बाद करने वाले हों, जिनमें अक्सर लड़कियों की ज़िन्दगियाँ तबाह व बर्बाद हो गई हैं। जिन्होंने शादी के बाद दूर अन्देशी और समझ-बूझ से काम नहीं लिया।

बाप की जान! इस सिलसिले में जो बात सबसे पहले ज़ेहन में बैठानी है वह यह कि शादी अस्ल में है क्या? शादी किसको कहते हैं? इसका मक़सद क्या है? सुन! हक़ीक़त में निकाह किसी की गुलामी नहीं बल्कि आपस में एक-दूसरे की मदद करने का नाम है। शरीअत के मुक़र्रर (निर्धारित) तरीक़े के अनुसार मर्द औरत आपस में तय नियमों के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने लगें, इसका नाम शादी है। शादी के बाद मर्द और औरत को एक-दूसरे की ख़ैरख़्वाही की ज़रूरत पड़ती है। आपस के प्यार, ख़ुलूस और अपनेपन की अहमियत होती है और ज़िन्दगी की इस गाड़ी को दोनों मिलकर खींचना पड़ता है और दोनों

मिलकर ज़िन्दगी को अपनी-अपनी ताक़त और हैसियत के अनुसार खुशगवार बनाते हैं। इसको कामयाब बनाने के लिए कुर्बानियाँ देते हैं।

इसमें शक नहीं कि खुदा तआला ने मर्दों का दर्जा औरतों से बुलन्द रखा है और मर्द को औरत पर सरदार बनाया है, लेकिन यह सरदारी हुकूमत चलाने के लिए नहीं बल्कि इसका मक़सद औरत की सरपरस्ती और निगहबानी है, और अगर ऐसा न होता तो मर्दों पर औरतों के बेशुमार हुकूक़ को बयान न किया जाता। इसी तरह इस शादीशुदा ज़िन्दगी को पुरसुकून बनाने के लिए औरतों पर भी बेशुमार ज़िम्मेदारियाँ लागू की गई हैं और ये ज़िम्मेदारियाँ औरत को मर्द के साथ पुरसुकून ज़िन्दगी बनाने के लिए अन्जाम देनी पड़ती हैं।

जब शादी एक अमली तआवुन (सहयोग) का नाम हुआ तो ज़ाहिर है कि शादी के बाद दूल्हा और दुल्हन की यह ज़िम्मेदारी है कि वे अपनी ज़िन्दगी के लिए एक निज़ाम तरतीब दें कि वे कौन कौन-कौन से तरीक़े, ज़ाबते और मिसाली नमूने पेश करें कि जिनसे ज़्यादा से ज़्यादा राहत हासिल कर सकें। उस निज़ाम में इसकी भी वज़ाहत हो कि एक लड़की की क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं। ये सारी चीज़ें तो ज़माने के हालात और वक़्त के तक़ाज़े शनाख़्त कराएँगे लेकिन इस सिलसिले में कुछ बातें यहाँ बता देना मुनासिब समझता हूँ ताकि तू जो भी तरीक़ा इख़्तियार करे उसमें ज़्यादा समझदारी और दूर-अन्देशी से काम लेती रहे।

प्यारी बेटी! जब तू अपने नये घर जाएगी तो जिस तरह तुझे हम आँसुओं और आहों के साथ रुख़्सत कर रहे हैं इसी तरह वहाँ तेरा मुस्कुराहटों, क़हक़हों के साथ स्वागत किया जाएगा। वहाँ तुझे दुनिया ही एक अलग क़िस्म की नज़र आएगी। पूरा घर खुशियों से भरा होगा। दर व दीवार से खुशियों का रंग चमक रहा होगा। हर एक शख़्स के चेहरे पर खुशी के फूल खिल रहे होंगे और हर एक की बातें दिलचस्प होंगी। हर एक तुझे हाथों-हाथ ले लेने के लिए बेक़रार होगा और तू तो उस घर में इस तरह दाख़िल होगी जिस तरह महफ़िल में "शमा-ए-महफ़िल"

लाई जाती है। वहाँ जाते ही तू हर एक के लिए तवज्जोह का केन्द्र बनेगी। सब औरतों की निगाहें तुझ पर लगी होंगी। वे सब ही तेरे दीदार की शौक़ीन होंगी। तेरी हर हरकत पर तेरे हर-हर क़दम पर न मालूम कैसी-कैसी राय ज़ाहिर होंगी।

लेकिन यह सारी हमा-हमी सिर्फ़ एक दो हफ़्ते के लिए होगी। इस हमा-हमी में तुझे बहुत एहतियात और होशियारी से काम लेना होगा। इसलिए कि तेरी छोटी से ग़लती भी घर की औरतों के लिए नुक्ताचीनी (कमी निकालने) का सबब बनेगी। तू काफ़ी समझदार है, तूने अपने ख़ानदान की बहुत सी लड़कियों को दुल्हन बनते हुए देखा है। शादी के शुरूआती दिनों में कितनी होशियारी, अक़्लमन्दी से काम करना पड़ता है। मुझे पूरा यक़ीन है कि तू इन दिनों को बहुत एहतियात से गुज़ार देगी और तुझसे कोई ऐसी हरकत न होने पाएगी जिससे लोगों को नुक्ताचीनी का मौक़ा मिले।

बाप की जान! सबसे पहले जिस इनसान से तुझे साबक़ा पड़ेगा वह तेरा सरताज होगा। तेरी आने वाली ज़िन्दगी की बेहतरी या बर्बादी उसी एक शख़्स के अच्छे या बुरे बर्ताव पर निर्भर है। इसलिए तेरी सबसे अहम ज़िम्मेदारी यह होगी कि तू अपने शौहर को ज़्यादा से ज़्यादा समझने की कोशिश करे और जब तक हो सके तू अपने ख़्यालात और अपनी ख़्वाहिशों को उसकी रिज़ा के साँचे में ढालती रहे। ऐसा होगा तब ही तू ज़ेहनी कोफ़त (मानसिक परेशानी) और झगड़े से बच सकेगी। ख़्यालात और ख़्वाहिशों में टकराव की वजह से बहुत से ख़ानदानों में मियाँ और बीवी में इख़्तिलाफ़ात (मनमुटाव) पैदा हो जाते हैं और फिर यही इख़्तिलाफ़ उन दोनों के लिए एक ख़तरनाक अज़ाब बन जाता है।

इस समय यहाँ उन सारी बातों को नज़र-अन्दाज़ करता हूँ जिनका संबन्ध शौहर की ज़िम्मेदारियों से है, क्योंकि वे बातें मेरे मौज़ू (विषय) से बाहर हैं। मुझे इस समय जो कुछ कहना है वह तुझे ही कहना है। तेरे सरताज को जो कुछ नसीहत करनी हो या कोई बात समझानी हो यह

बात अपनी जगह पर सही है लेकिन वह ज़िम्मेदारी तो उसके माँ-बाप की है। मुझे यक़ीन है कि उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी ज़रूर अदा की होगी। एक बात यह भी है कि तेरे शौहर के माँ-बाप अपने बेटे के साथ रहते हैं, इसलिए वे हर बात का ख़्याल रखेंगे और जहाँ समझाने की ज़रूरत होगी वे तेरे सरताज (शौहर) को ज़रूर समझाते रहेंगे।

ख़ुदा तआ़ला ने औ़रत और मर्द दोनों को एक दूसरे के लिबास से ताबीर किया है। यानी कि मर्द अपनी औ़रत के लिए लिबास है और औ़रत अपने शौहर के लिए लिबास है। फ़र्ज़ कर कि एक शख़्स की कोहनी में ज़ख़्म पड़ा हुआ है जिसमें से पीप वग़ैरह बहता है, अब जो उस ज़ख़्म को खुला रखा जाए तो देखने वालों के दिलों में ज़रूर उससे नफ़रत होगी। इसी तरह एक शख़्स से जिस्म पर मैल जमा हुआ है और उस पर कपड़ा पड़ा हुआ न हो तो लोग ऐसे शख़्स को इज़्ज़त की निगाह से देखने के बजाय उसको गन्दा और काहिल कहेंगे। लिबास ज़ख़्म को छुपाता है और वही लिबास उस उज़्व (जिस्म के अंग) के मैल-कुचैल को लोगों की निगाहों से छुपाए रखता है जिससे लोगों को उससे नफ़रत का मौक़ा नहीं मिलता।

इसका मतलब यह हुआ कि मर्द जो जिस्म है तो औ़रत उसकी रूह है, या फिर औ़रत जिस्म है तो मर्द उसका लिबास है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है कि:

من تو شدم تو من شدی   من تن شدم تو جاں شدی

यानी "मैं तू हो गया हूँ और तू मैं बन गई हूँ। मैं जिस्म हूँ तो तू जिस्म की रूह है"।

औ़रत का यह अहम फ़र्ज़ है कि मर्द के जिस्म की इस तरह हिफ़ाज़त करे जिस तरह लिबास जिस्म की हिफ़ाज़त करता है। औ़रतों में ऐसे जज़्बात होने चाहिएँ कि वे अपने मर्दों को अपनी जान व रूह समझ कर उनके जिस्म की तरह हो जाएँ।

फ़ारसी की कहावत है: "हर कि ख़िदमत कर मख़्दूम शुद" यानी

जिसने ख़िदमत की वह सरदार बना। अपनी ज़ात को मिट्टी में मिला देने के बाद ही दूसरे को अपना बनाया जा सकता है।

इसके अलावा ख़िदमत के सिलसिले में एक मज़ीद इनाम की हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुशख़बरी सुनाई है। मुझे यक़ीन है कि तू इस इनाम को हासिल करने के लिए अपनी ज़ात को मिटा देने में ऐड़ी-चोटी का ज़ोर लगाएगी। हर मुसलमान चाहे वह औरत हो कि मर्द अपनी ज़िन्दगी में इस तरह दुआ माँगे कि:

ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ कर और मेरा ख़ात्मा ख़ैर के साथ कर और मुझे जन्नत में जगह अता फ़रमा और मुझे और मेरी आने वाली नस्लों को पूरे दीन को सारे आलम में फैलाने के लिए क़बूल फ़रमा। जन्नत हासिल करने के लिए लोग अपनी जानें तक क़ुर्बान कर देते हैं।

हज़रत बीबी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत में है कि हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो औरत इस हालत में मर जाए कि उसका शौहर उससे ख़ुश था तो बेशक ऐसी औरत जन्नत में दाख़िल होगी"।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "ऐ औरत! देख तेरी जन्नत और दोज़ख़ तेरा शौहर है"।

हर औरत के लिए जन्नतुल-फ़िरदौस के दरवाज़े खुले हुए हैं। हूर व ग़िल्मान (जन्नत के ख़ादिम और ख़ादिमायें) उसका पुरजोश स्वागत करने के लिए बेचैन हैं, लेकिन शर्त यह है कि उसके पास उसके शौहर की रज़ामन्दी का परवाना होना चाहिए।

बेटी! अब भी तू इस सौदे को महंगा समझेगी? हाँ अलबत्ता इसमें शक नहीं है कि शौहर की ख़िदमत का काम एक कठिन काम है। अपनी ज़ात को मिटा देना पड़ता है और फिर जन्नत भी तो मुफ़्त देने के लिए नहीं है। औरत के लिए मग़फ़िरत कितनी आसान बना दी गई है। एक तरफ़ मर्द को हुक्म दिया गया कि हमेशा वह अपनी औरत से ख़ुश रहे

और दूसरी तरफ़ औ़रत को बता दिया गया कि अगर तेरा शौहर तुझ से ख़ुश होगा तो जन्नत तेरी ही है।

ख़ुदा तआ़ला का रहम व करम और उसकी मेहरबानी को देखो तो सही कि मर्द अपना ख़ून पानी की तरह बहाकर भी इतनी आसानी से जन्नत में दाख़िल होने का परवाना हासिल नहीं कर सकता, जितनी आसानी से एक औ़रत अपने शौहर की रज़ामन्दी हासिल करके जन्नत की हक़्दार बन जाती है।

एक दुल्हन के लिए उसका शौहर बहुत अन्जानी शख़्सियत होती है फिर भी उसको उसी के साथ ही ज़्यादा काम पड़ता है। उसके दामन से ही दुल्हन का दामन बाँधा जाता है। ख़ुदा पाक और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसी की ताबेदारी की ताकीद की है। उसके दिल में मक़ाम हासिल करके ही दूसरों के दिलों में मक़ाम हासिल किया जा सकता है। और जो औ़रत शौहर की निगाह से गिर जाती है तो वह औ़रत दुनिया और आख़िरत दोनों को गंवा बैठती है। शौहर के दिल मे प्रेम (प्यार) को उजागर करके ही औ़रत उसके दिल की रानी बन सकती है। जो औ़रत इसमें नाकाम होती है उसको घर की एक घटिया से घटिया नौकरानी से भी हल्का दर्जा मिलता है।

और फिर शौहर भी एक इनसान ही तो है। वह भी प्यार मुहब्बत और ख़िदमत का इच्छुक है। उसने शादी यह समझकर की होती है कि बीवी के आने के बाद उसको मुहब्बत और आराम जैसी नेमतें हासिल होंगी। अगर उसकी उम्मीदें और आरज़ूएँ बीवी से पूरी हों तो कौन ऐसा बेवक़ूफ़ होगा जो ऐसी मुहब्बत करने वाली और ख़िदमत गुज़ार बीवी की क़द्र न करे।

एक शख़्स ने अपने एक दोस्त को कहा कि "जब भी मैं घर में दाख़िल होता हूँ तो मेरी बीवी मुहब्बत की एक नई अदा से मेरा स्वागत करती है"।

दोस्त ने ताज्जुब से कहा: "यह कैसे"

उस शख़्स ने जवाब दिया कि "जब मैं घर में क़दम रखता हूँ तो मेरी बीवी फ़ौरन खड़ी हो जाती है। मुझे खुश-आमदीद कहती है और उस समय उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ होता है और उसके होंठों पर मुस्कुराहट खेलती हुई होती है। कितनी ही नागवार बात हो लेकिन वह मुझे आते ही कभी नहीं कहती। और वह मेरे आने का सख़्त इन्तिज़ार करती रहती है। घर पहुँचने पर उसको बहुत ख़ुशी होती है और जब तक मैं घर में रहता हूँ वह मेरी हर ख़्वाहिश पूरी करने की कोशिश करती रहती है और वह उसको फ़ख़्र समझती है"।

हमारे घरों में ख़िदमत के लिए जो नौकर होते हैं उनमें से जो नौकर हमको ज़्यादा आराम पहुँचाता है, हमारी ज़्यादा ख़िदमत करता है तो उसको हम ज़्यादा चाहते हैं, और अगर ऐसा नौकर चला जाए तो हम मुद्दतों तक उसको याद करते हैं। और अगर कामचोर नौकर नौकरी छोड़कर चला जाए तो कोई भी उसकी परवाह नहीं करता। इसके उलट ख़ुशी होती है कि अच्छा हुआ बला टल गई।

जिस औरत ने अपनी ख़िदमत और फ़रमाँबरदारी के ज़रिये शौहर के दिल में मक़ाम हासिल कर लिया है, ऐसी औरत का वजूद शौहर के आराम और उसकी राहत के लिए बेहद ज़रूरी होता है। ऐसी ख़िदमत गुज़ार बीवी की एक मिनट की जुदाई से शौहर तकलीफ़ महसूस करता है, तो उसके बिना घर में बद-नज़्मी जैसा माहौल पैदा हो जाता है और जो औरत शौहर और उसके घर के लिए बेकार साबित होती है ऐसी औरत का होना और न होना दोनों बराबर हैं, क्योंकि उसकी हाज़िरी और ग़ैर-हाज़िरी से उसके शौहर को सुख-चैन और हुस्ने इन्तिज़ाम या दुख-तकलीफ़, बद-नज़्मी जैसा कुछ महसूस नहीं होता।

कामचोर नौकर बदला जा सकता है, घर की बद-नज़्मी को हुस्ने इन्तिज़ाम में तब्दील किया जा सकता है, लेकिन इस्तिख़ारे के मश्विरे के बाद "मैंने निकाह किया और दूसरे ने कहा मैं ने क़बूल किया" से जो गिरह शादी की बन्ध गई है वह इतनी मज़बूत और सख़्त होती है कि

मौत आने के बाद ही उससे पीछा छूट सकता है। तो ऐसी औरत कितनी बेअक्ल और बेवकूफ़ है जो थोड़े दिनों की तकलीफ बर्दाश्त करके हमेशा-हमेश की ज़िन्दगी का सुख-चैन न ख़रीद सके और थोड़े दिनों के आराम के लिए पूरी ज़िन्दगी के लिए मुसीबतें ख़रीद ले।

आज हमारी निगाहों के सामने ऐसी हज़ारों मिसालें मौजूद हैं कि कम-ज़र्फ़ और तंग-नज़र लड़कियों की ज़िद की वजह से शौहर की मुहब्बत की क़द्र न की जा सकी। लड़की ने अपनी ज़िद के नाम पर शौहर की पुरखुलूस मुहब्बत को भेंट चढ़ाया और नतीजे में अपनी ज़िन्दगी को तबाह कर दिया।

बेटी! तुझे याद होगा कि आज से पाँच वर्ष पहले एक शरीफ़ आदमी अपने पड़ोस में आकर बसे थे, वह तक़रीबन दो महीने रहे होंगे। उनकी तन्ख़्वाह अच्छी थी। उनके माँ-बाप भी उनके साथ ही रहते थे लेकिन फिर भी ऐसा लगता था कि जैसे वे बर्सों से बीमार हों। तेरी माँ के कहने के मुताबिक़ उनकी बीवी की हालत शौहर से भी ज़्यादा क़ाबिले रहम थी। हालाँकि उन दोनों में से हक़ीक़त में कोई भी बीमार न था। सास और ससुर दोनों अपनी बहू से बहुत खुश थे और उनके सथ कोई लड़ाई झगड़ा न था। घर में खाने-पीने की, पहनने-ओढ़ने की और किसी चीज़ की कोई कमी न थी। दोनों मियाँ-बीवी की आपस में बनती न थी।

प्यार की कमी थी, खुलूस न था। मिज़ाज मिले हुए न थे। हर समय अन-बन रहती। एक पूरब की बात करता तो दूसरा पश्चिम की हाँकता। रात-दिन हमेशा झगड़ा ही रहता। मियाँ अपनी ज़िद पर क़ायम तो बीवी भी अपनी हट छोड़ने को तैयार नहीं। और हर एक को यह बात मद्दे नज़र रहती कि मेरी बात नीची न होने पाये लेकिन इसका ख़्याल किसी को भी न आता कि ज़िन्दगी तबाह न होनी चाहिए।

इस क़िस्म के इख़्तिलाफ़ात (झगड़े) बहुत ही ख़तरनाक होते हैं, लेकिन अगर इसका खुलासा किया जाए तो इसकी कोई ख़ास वजह और

सबब नहीं होता। न कोई ठोस और अहम मामले में इख़्तिलाफ़ होता है बल्कि मामूली और छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा होता है। अगर समझदारी से काम लिया जाए और ज़रा-सा झुकाव हो जाए तो झगड़े की सारी इमारत जड़ से ही उखड़ जाती है।

बेटी तुझे अच्छी तरह याद होगा कि कभी-कभी तो दो-दो घन्टों तक मियाँ-बीवी की ज़बरदस्त लड़ाई चलती रहती थी। तहक़ीक़ करने से पता चला कि वजह सिर्फ़ यह थी कि मियाँ के कमरे की कुर्सी किसी ने कुछ आगे-पीछे कर दी थी या खाने में नमक कुछ ज़्यादा पड़ गया था, या घन्टी पर किसी ने मैला कपड़ा लटका दिया था और बस। और कई बार तो यह लड़ाई इतनी लम्बी होती कि पूरी रात गुज़र जाती लेकिन यह शैतानी लड़ाई ख़त्म न होती और पड़ोसियों का भी सोना हराम हो जाता। बराबर दो महीने तक लड़ाई-तमाशा जारी रहा। पूरे मौहल्ले में घर-घर उन्हीं मियाँ-बीवी के तज़किरे होते और हर एक आदमी उनके इस बेकार के इख़्तिलाफ़ को दिलचस्प अन्दाज़ में बयान करता। उफ़! कैसी रुस्वाई भरी ज़िन्दगी थी। सुनते थे कि बेगम साहिबा छह-छह महीने तक अपने माँ बाप के यहाँ अड्डा डाले रहती हैं। उसका शौहर उसको बुलाने ही न जाता और अगर बुलाना पड़ता तो भी बुलाकर ख़ुश न होता। ऊपर से ख़ूब-ख़ूब पछतावा होता।

इससे भी ज़्यादा रोशन मिसाल तेरी ख़ालाज़ाद बहन शाहिदा की है। तूने देखा है कि उसकी ज़िन्दगी किस तरह तबाह हो गई। उसका मियाँ न तो उसे अपने पास बुलाता है और न ही तलाक़ देकर आज़ाद करता है और न ख़र्चा ही देता है। उसकी बर्बादी को वह भी तो अच्छी तरह जानते हैं और शाहिदा ख़ुद भी इसका इक़रार करती है कि शुरू-शुरू में उसका शौहर उससे बेहद मुहब्बत करता था लेकिन शाहिदा ने उसकी मुहब्बत की कोई क़द्र न की। हमेशा उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ चलती रही।

शुरू-शुरू में तो मामलात और सम्बन्ध ज़्यादा ख़राब न हुए क्योंकि

उसका शौहर बहुत सब्र व बर्दाश्त से काम लेता रहा, लेकिन फिर भी शाहिदा की आदतें न बदलें। खींचा-तानी चलती रही, यहाँ तक कि मियाँ-बीवी को साथ रहना भी मुश्किल हो गया।

तुझे ख़बर होगी कि शाहिदा ज़रा से मामले में कैसी ज़िद पकड़ती थी। शौहर ने कोई चीज़ लाकर न दी या फिर कोई अच्छा मश्विरा दिया तो फिर शाहिदा का पारा और ऊँचा हो गया। क्योंकि उसको मुख़ालफ़त करना ज़रूरी हो जाता था।

शाहिदा का कहना है कि उसका शौहर उसको चिढ़ाने के लिए ऐसा करता था और वह जान-बूझकर ऐसी बातें करता था जिससे उसको दुख हो। लेकिन शाहिदा का यह उज़्र किसी भी समझदार आदमी के दिमाग़ में उतर जाये, ऐसा नहीं। हर शख़्स अपने आराम के लिए शादी करता है। शादी करने का मक़सद हरगिज़ यह नहीं होता कि यह यानी शौहर किसी की लड़की को परेशान करने के लिए दुख पहुँचाने के लिए शादी करके लाता है। कोई पागल दीवाना हो या फिर जिसको पागल कुत्ते ने काट खाया हो वही शख़्स ऐसा कर सकता है।

लेकिन जो अक्ल व समझ रखता है और जिसमें ज़रा भी शऊर होगा वह कभी भी ऐसा न चाहेगा कि मामूली-मामूली बातों से चिढ़कर अपनी और अपनी बीवी की ज़िन्दगी को बर्बाद कर दे। और बात-बात में दिमाग़ी सन्तुलन खोकर अपनी या अपने बाल-बच्चों की ज़िन्दगी को ख़राब कर दे।

हाँ! अलबत्ता यूँ हो सकता है कि आपस के झगड़े बढ़ते-बढ़ते इस हद तक पहुँच जाएँ कि हर बात में तू-तू मैं-मैं होने लगे। शाहिदा और उसके शौहर के बीच भी ऐसा ही मामला हुआ। दोनों एक दूसरे के मिज़ाज को समझ नहीं सके और समझने की कोशिश भी नहीं की। नतीजा यह निकला कि ज़रा-ज़रा सी बात में दिमाग़ी सन्तुलन गंवाने लगे और यह मुख़ालफ़त इतनी शिद्दत पकड़ गई कि शाहिदा के शौहर ने शाहिदा को उसके माँ-बाप के घर भेज दिया और अब न तो मेल-मिलाप

की कोई राह नज़र आती है और न तलाक़ का कोई रास्ता।

शौहर कुछ भी है लेकिन वह आज़ाद है, वह दूसरी शादी कर सकता है। और न करे फिर भी उसको ऐसी उलझनों का सामना नहीं करना पड़ेगा। हंगामी हालात तो शाहिदा के लिए हैं, बच्चे उसके साथ हैं। इस वक़्त उसका सारा ख़र्च उसका भाई उठा रहा है और अब उसका भाभी के साथ भी निबाह होता नज़र नहीं आता। जिसने शौहर की बात की परवाह नहीं की वह भाभी की बात की क्या परवाह करेगी।

एक और मिसाल तुझे दूँ। तेरा फूफीज़ाद अस्लम मियाँ एक आज़ाद नई तहज़ीब का इनसान है। उसकी बीवी पुराने तर्ज़ की लेकिन शरीफ़ घराने की बेटी है। मियाँ चाहता है कि बीवी पुराने ख़्यालात को उतार फेंके और ख़्यालात व नज़रियात में उसकी हम-ख़्याल हो जाए। लेकिन पुराने ख़्यालात के माहौल में पली हुई बीवी किसी भी क़ीमत पर पुराने उसूल छोड़ने को तैयार नहीं। वह पुराने ज़माने की एक नई यादगार है और मरते दम तक इसी तरह रहना चाहती है और नये फ़ैशन की हर चीज़ से उसे नफ़रत है। नये फ़ैशन का लिबास वह पहनना नहीं चाहती। शौहर अगर कोई नई चीज़ पकाने के लिए कहे तो भी उसको उससे सदमा पहुँचे। शौहर चाहता है कि उसकी बीवी बिल्कुल फ़ैशन-ऐबल न बने तो कम से कम पुराने ख़्यालात की भी न रहे।

पहले पहले तो उसने बीवी के ख़्यलात बदल देने की बहुत कोशिश की लेकिन इसमें उसको कामयाबी नहीं मिली। नतीजा यह निकला कि अस्लम को बीवी की ज़रा-ज़रा सी बात अब खटकने लगी, बात-बात में नुक्ताचीनी करने (कमी निकालने) लगा और मामला इस हद तक पहुँचा कि मियाँ-बीवी एक दूसरे से अलग होने पर मजबूर हो गए।

हक़ीक़त में भूल दोनों की है। मियाँ अस्लम की भूल यह है कि शरीअत की बातों में रद्दोबदल करने का उसको कोई हक़ न था। जिस इनसान में शर्म व हया का ज़रा सा भी हिस्सा हो तो वह इस बात को हरगिज़ गवारा नहीं कर सकता कि उसकी बीवी शरई पर्दा छोड़कर

खुल्लम-खुल्ला सरेबाज़ार फिरने लगे और फिर नमाज़ और इसी तरह दूसरी इबादतों को छोड़ देने पर मजबूर करना, यह तहज़ीब और नई रोशनी नहीं बल्कि यह तो एक बहुत ही नीच क़िस्म का पागलपन और जंगलीपना है। और जो अल्लाह तआला को नाराज़ करता है तो वह दुनिया व आख़िरत दोनों में परेशान होता है।

जिसकी बीवी में ये सब ख़ूबियाँ हों तो उसको रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "ख़ुदा की एक बहतरीन नेमत" क़रार दिया है। ऐसी औरत ज़मीन के लिए एक नूर है। ख़ुदा तआला की एक बख़्शिश और देन है। वह एक अनमोल हीरा है।

मेरे ख़्याल के मुताबिक़ अगर कोई औरत समझदार हो और शौहर को अपनी मुहब्बत का यक़ीन दिला दे और ख़्वाह-मख़्वाह की ज़िद से परहेज़ करे तो कोई भी शौहर ऐसा ज़ालिम न होगा कि खुद हज़ारों तमन्नाओं के साथ शादी करके औरत को लाए और फिर खुद ही अपनी औरत को तकलीफ़ में डाले और खुद भी परेशान हो।

इसलिए अगर कोई औरत यूँ चाहती हो कि शादी के बाद उसकी ज़िन्दगी तबाही की तरफ़ न जाने पाये तो वह किसी भी मामले में अपने शौहर की मुख़ालफ़त खुल्लम-खुल्ला कभी न करे और जो-जो तकलीफ़ें और रुकावटें पेश आयें, मौक़े-मौक़े पर, अलग-अलग अन्दाज़ से शौहर के सामने पेश करके उसका फ़ैसला और तसफ़िया करने की कोशिश करे। फ़ौरन उसी समय मुख़ालफ़त करने से कभी कामयाबी हासिल नहीं होती बल्कि वह तो जलते पर तेल डालने के मानिंद होता है।

झगड़ों के नाजुक हालात में सबसे बेहतर तरीक़ा यह है कि दूल्हा और दुल्हन आपस में बैठकर ख़्यालात व नज़रियात के लिए तबादल-ए-ख़्यालात कर लें और खुलूस और मुहब्बत से इस बात का फ़ैसला कर लें कि उनको ऐसा कौनसा रास्ता इख़्तियार करना चाहिए जो दोनों के लिए उलझनों और परेशानियों का कारण न बने। ऐसे में यह बात ज़रूरी है कि दोनों को अपने-अपने ख़्यालात में थोड़ा-थेड़ा बदलाव करना होगा।

इसी तरह थोड़ी बहुत दोनों को कुर्बानियाँ भी देनी होंगी। ख़्यालात में तब्दीली की वजह से मानसिक तौर पर दोनों को कुछ तकलीफ़ भी होगी लेकिन यह तकलीफ़ रोज़ाना की दर्दसरी और हर घड़ी की बक-बक के मुक़ाबले में बहुत ही मामूली होगी।

अगर किसी मामले में औरत को यूँ लगे कि उसकी शौहर किसी ऐसे रास्ते की तरफ़ ले जाना चाहता है जो आगे चलकर पूरे ख़ानदान की तबाही और बदनामी का सबब बनेगा तो अपनी ताक़त और हैसियत के अनुसार मामले के उतार-चढ़ाव को समझाकर पूरे ख़ुलूस व हमदर्दी के साथ मामले की नज़ाकत उसके सामने पेश करे, तो मुझे यक़ीन है कि अगर कोई लड़की अपने शौहर को किसी मामले में ख़ुलूस और मुहब्बत से मश्विरा देगी और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद और रातों को उठकर शौहर के लिए दुआ करेगी तो उसका शौहर ज़रूर उसकी बात मान लेगा। और अगर बद-क़िस्मती से न भी माने तो भी औरत को फ़ितने और हंगामे में उलझने की ज़रूरत नहीं और मौक़ा को पहचानते हुए मामले की नज़ाकत उसके सामने रखे। यह बात बिल्कुल मुम्किन है कि एक बात अगर इस वक़्त उसकी समझ में नहीं आई तो किसी दूसरे मौक़े पर वही बात उसके दिमाग़ में उतर जाएगी। इस तरह लड़की की ज़रा सी समझदारी, अक़्लमन्दी और इन्किसारी से आने वाली एक ज़बरदस्त बला सर से टल जाती है।

बच्चों की सफ़ाई-सुथराई की अहमियत

हमारे पास कुछ ऐसे भी शौहरों के मसाईल आए हैं कि बच्चों की पैदाइश के बाद बीवी इतनी गन्दी मैली-कुचैली रहती है कि हमारे लिए घर में कुछ घड़ियाँ गुज़ारना दूभर हो जाता है और बच्चों को भी इतना गन्दा रखती है कि हम उन बच्चों को अपने पास बैठा नहीं सकते।

ख़ूब ध्यान रखिये! ख़ूब ध्यान रखिये! कभी ऐसा मौक़ा न आने दीजिए कि आपका शौहर बच्चों से नफ़रत करने लगे। यह आप ही

अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार रही हैं, आप ही अपने बच्चों को बाप की शफ़क़त व रहमत से दूर कर रही हैं। ऐसा न कीजिए। आप अपने इन नौनिहाल, तेज़ दिमाग़, क़ौम व मिल्लत की तामीर करने वालों, ख़ूबसूरती के पैकर, आपकी आँखों की ठंडक (जिनके सुरीले नग़मों से घर आबाद हो जाए, मुर्दा दिलों की कियारियाँ ज़िन्दा हो जाएँ) को इस तरह बर्बाद न कीजिए। ख़ुदा के वास्ते उन पर रहम खाईये। उनको एहसासे-कमतरी में मुब्तला न कीजिए। ख़ुदा के वास्ते उनके बचपने पर रहम कीजिए। ख़ुदा के लिये उनके मुस्तक़बिल (आने वाली ज़िन्दगी) को अपने हाथों से बर्बाद न कीजिए।

क्या पता उस बच्ची की क़िस्मत में कोई उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि जैसा वली शख़्स लिखा हो। क्या पता इस बच्चे की पेशानी में सलाहुद्दीन अय्यूबी की झलक हो। जिसकी आज उम्मते मुस्लिमा जितनी मोहताज है शायद ही किसी ज़माने में उम्मत ऐसी मोहताज हुई है। यह गुलशन बिना माली के ख़ाली रहा हो, यह क़ौम बिना रहनुमा के फिर रही हो, इसकी कियारियाँ जिनको सहाबा-ए-किराम ने अपने ख़ून से सींचा था आज इस्लाम के दुश्मन उनको बिना किसी डर व फ़िक्र के जैसे चाहें बाग़ से उखाड़ कर ले जाते हैं।

काश आपका यह बच्चा सुलतान नूरुद्दीन ज़ंगी रहमतुल्लाहि अ़लैहि हो जिनको अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक की ईसाइयों के शर (बुराई) से हिफ़ाज़त करवाने का सबब बनाया हो।

काश आपका यह बच्चा शाह वलियुल्लाह रहमतुल्लाहि अ़लैहि हो, जिनके ज़रिये हिन्दुस्तान में लाखों काफ़िरों को इस्लाम की दौलत मयस्सर हुई, और लाखों ईमान वालों में ईमान की नई रूह फूँकी गई।

काश आपकी यह बच्ची फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल-मलिक बने जिसने उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का उम्र भर साथ दिया। काश आपकी इस बच्ची पर उन बुज़ुर्ग औ़रतों का साया पड़े जिनसे

अल्लाह ने दीन का काम लिया। आमीन

इसलिए इन बच्चों को बर्बाद न होने दीजिए। इनको हर समय ऐसा साफ़-सुथरा रखने की कोशिश कीजिए कि घर के सारे लोग इनको उठाने और प्यार देने पर और इनको अपनी दिली दुआएँ देने पर मजबूर हो जाएँ। नानी देखे तो यह दुआ दे:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُعِیْذُهَا بِكَ وَذُرِّیَّتَهَا مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ.

अल्लाहुम्-म इन्नी उओ़ीजुहा बि-क व ज़ुर्रिय्य-तहा मिनश्शैतानिर्रजीम।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान मर्दूद से आपकी पनाह में देती हूँ।

दादी देखे तो यह दुआ दे:-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا صَالِحَةً

अल्लाहुम्मज्अ़ल्हा सालि-हतन्।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस पोती को नेक बना।

दादा देखे तो यह दुआ दे:-

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْبِتْهَا نَبَاتًا حَسَنًا.

अल्लाहुम्-म तक़ब्बल्हा बि-क़बूलिन् ह-सनिन् व अन्बित्हा नबातन् ह-सनन्।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह बेहतर से बेहतर तरीक़े पर इसकी नश्व-नुमा (बढ़ोतरी) फ़रमा, हर क़िस्म की आफ़ियत के साथ इसको बड़ा फ़रमा।

नाना नवासी को हंसते हुए देखे तो यह दुआ दे:

اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكِ.

अज़्हकल्लाहु सिन्नकि।

तर्जुमाः अल्लाह तुझे हंसता रखे कोई ग़मी का मौक़ा न दिखाए।

बाप देखे तो यह दुआ दे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ لَّنَا.

अल्लाहुम्मज्अ़ल्हा कुर्-त अअ़्युनिल्-लना।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इसको हमारे लिए आँखों की ठंडक बना।

माँ देखे तो यह दुआ़ दे:-

اَللّٰهُمَّ نَوِّرْ قَلْبَهَا وَاجْعَلْهَا مُقِيْمَةَ الصَّلٰوةِ.

अल्लाहुम्-म नव्विर् क़ल्बहा वज्अ़ल्हा मुक़ीमस्सलाति।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इसके दिल को रोशन फ़रमा और इसको नमाज़ का पाबन्द बनाईयो।

माँ बच्ची को रोता हुआ देखे तो यह दुआ़ दे:-

لَا اَبْكَاكَ اللّٰهُ اَسْعَدَكَ اللّٰهُ فِى الدَّارَيْنِ.

ला अब्काकल्लाहु अस्अ़-दकल्लाहु फ़िद्दारैनि।

तर्जुमाः अल्लाह तुझे कभी न रुलाए बल्कि दुनिया व आख़िरत दोनों में नेकियों से मालामाल करे, आमीन। मेरी आँखों की ठंडक तुम मेरे होते हुए क्यों रोती हो।

चचा देखे तो यह दुआ़ पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا خَادِمَةً لِّدِيْنِكَ وَدَاعِيَةً اِلَيْكَ وَاِلٰى رَسُوْلِكَ.

अल्लाहुम्मज्अ़ल्हा ख़ादिमतन् लिदीनि-क व दाअ़ियतन् इलै-क व इला रसूलि-क।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस बच्ची को अपने दीन की ख़ादिमा बना और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीन की तरफ़ दावत देने वाली बना।

फूफी देखे तो यह दुआ़ दे:-

اَللّٰهُمَّ فَقِّهْهَا فِى الدِّيْنِ.

अल्लाहुम्-म फ़क़्क़िह्हा फ़िद्दीन।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इसको दीन की समझ दे।

इसी तरह बच्चे को बुख़ार या कोई और बीमारी आए तो माँ यह दुआ़ दे:-

لَا بَاْسَ بِهٖ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ .

ला बअ्-स बिही तहूरुन् इन्शा-अल्लाहु।

तर्जुमाः कोई बात नहीं, अल्लाह ने चाहा तो फ़ौरन बुख़ार ख़त्म हो जाएगा। और यह बुख़ार गुनाहों से पाकी का ज़रिया है इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُّوْذِيْكَ .

अल्लाहु यश्फी-क मिन् कुल्लि दाइन् यूज़ी-क।

तर्जुमाः अल्लाह तुमको शिफ़ा दे हर ऐसी बीमारी से जो तुमको तकलीफ़ पहुँचाए।

अब जिस बच्चे या बच्ची को इतनी दुआ़एँ उसके ख़ानदान वालों से मिली हों, उस बच्चे को शैतान, जिन्नात, आसेब कैसे छू सकते हैं। अल्लाह तआ़ला उस बच्चे की हिफ़ाज़त फ़रमाएँगे और उसको अपने दीन का ख़ादिम बनाएँगे।

वज़ाहतः हमने ये सब दुआ़एँ बच्ची के लिए लिखी हैं अगर बच्चा हो तो जहाँ "हा" है वहाँ "हु" कहिए। यानी "अल्लाहुम्मज्अ़ल्हा" के बजाय "अल्लाहुम्मज्अ़ल्हु"।

ग़र्ज़ यह कि जब बच्चे साफ़-सुथरे होंगे तो घर का हर व्यक्ति उसे उठाएगा। अपने सीने से लगाएगा और गर्मजोशी से उसका मुहब्बत का बोसा लेगा और उसे दिली दुआ़एँ देगा। वरना गन्दे बच्चे को देखकर कहेंगे- कैसा कम-क़िस्मत बच्चा है कि ऐसी गन्दी लापरवाह व ग़ाफ़िल माँ मिली। हाय अल्लाह! ऐसी माँओं को हिदायत दे दे। आमीन

1. रोज़ाना बच्चे को गर्मी में तो कम से कम दो बार नहलायें।
2. कपड़े गन्दे हो जाएँ तो फ़ौरन बदल दें।
3. किसी क़िस्म की गन्दगी का बच्चे को आ़दी न बनाएँ।
4. बच्चे के नापाक बिस्तर को फ़ौरन धो लें।

याद रखिए! घर में नापाक कपड़े बिल्कुल न रखें, नापाक जगहों पर

शैतान को आने का मौक़ा मिल जाता है, जिस से घरों में मुसीबतें व परेशानियाँ आती हैं।

इसलिए नापाकी से बहुत बचें और बच्चे ने जिस बिस्तर पर चादर पर पेशाब कर लिया है उसको सिर्फ़ सुखाने पर बस न करें बल्कि अच्छी तरह पानी से धोकर पाक करके फिर इस्तेमाल करें।

यहाँ हमें सिर्फ़ यह समझाना है कि बच्चे को साफ़-सुथरा रखें, उसकी सही तरबियत करें। अगर खुद कमज़ोर हों और सब काम खुद नहीं कर सकतीं और अल्लाह ने गुंजाईश भी दी है तो काम करने वाली रख लें जो आपके कामों में हाथ बटाए ताकि बच्चे की तरबियत पर कोई आँच न आने पाए और कोशिश करें कि दो बच्चों के बीच इतना मुनासिब फ़ासला (अन्तराल) हो कि दोनों का हक़ अदा हो सके और दोनों की सही तरबियत हो सके। जिस्मानी और रूहानी, ज़ाहिरी व बातिनी, तरबियत में किसी तरह भी कमी न आने पाए।

ऐसा न हो कि लगातार बच्चे होने से माँ भी कमज़ोर और बीमार होती जाए और बच्चे भी कमज़ोर और बीमार पैदा होते जाएँ और फिर कम-क़िस्मती से न उनको माँ की तवज्जोह मिल सके न बाप का प्यार, और ये बच्चे हमेशा ख़ौफ़, एहसासे-कमतरी, बुज़दिली और एतिमाद की कमी का शिकार रहें और पूरी तरबियत व निगरानी न होने की वजह से बुरी सोहबत (संगत) में पड़ जाएँ।

इसलिए कम से कम इतना तो फ़ासला हो कि एक बच्चे को शरई तौर पर माँ अपना दूध पिला सके (बिना दूसरा गर्भ जल्द ठहरे), ताकि यह बच्चा सेहत व ताक़त के एतिबार से पूरी तरह अपनी उम्र की मन्ज़िलें तय करे। फिर जब माँ इस बच्चे को अच्छी तरह दूध पिलाकर फ़ारिग़ हो जाए और अब तक जो कमज़ोरी बच्चा जनने और उसको दूध पिलाने से हुई थी वह कमज़ोरी भी दूर हो जाए और मज़ीद कोई शरई उज़्र न हो तो अब दूसरे बच्चे के लिए तैयार हो, वरना कोई और उज़्र हो तो उलेमा व तजुर्बेकार मुफ़्ती हज़रात से पूछकर बच्चों के बीच

लम्बा फ़ासला भी किया जा सकता है, जबकि कोई ग़लत नीयत न हो- जैसे रोज़ी वग़ैरह का डर। हाँ बच्चे की पैदाईश का सिलसिला बिल्कुल ख़त्म कर देना सिवाय किसी सख़्त और शरई तौर पर मोतबर मजबूरी के जायज़ नहीं। अल्लाह ही बेहतर जानने वाला है।

अब हम बच्चे की तरबियत और उसकी अहमियत के बारे में इब्राहीम बिन सालेह के अश्आर नक़्ल करते हैं। अल्लाह तआ़ला इनको पढ़ने से हर माँ के दिल में बच्चे की तरबियत और उसको दीनदार और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीन का ख़ादिम/ ख़ादिमा बनाने का शौक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन या रब्बल् आ़लमीन।

जिस ख़ुश-क़िस्मत औ़रत को अ़रबी भाषा आती हो वह इन अश्आ़र को ज़रूर याद करे।

عود بنيك على الاداب فى الصغير فانما مثل الاداب تجمعها

كيما تقربهم عيناك فى الكبر فى عنفوان الصبا كالنقش فى الحجر

तर्जुमाः अपने बेटों को छोटी ही उम्र से अच्छे आदाब का आ़दी बनाओ, ताकि बड़ी उम्र में तुम्हारी आँखें ठंडी हों, उनको देखकर।

बचपन में आदाब सिखा देना और अच्छी तरह तरबियत करना, इसकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी पत्थर पर नक़्श कर लिया जाए कि जैसे वह नहीं मिटता ऐसे ही बचपन की आ़दतें पचपन तक चलती हैं।

यानी कमरे को भी साफ़ सुथरा रखे। खाना भी सफ़ाई से पकाये और सलीक़े से रखे। ऐसी ही बीवी के लिए शैख़ क़त्तान की किताब "सिर्री लिन्निसा" के कुछ प्यारे अश्आ़र हम नक़्ल करते हैं:-

لزوجة مطيعة عينك عنها راضية وطفلة صغيرة محفوفة بالعافية

وغرفة نظيفة نفسك فيها هانية ولقمة لذيذة من يد أغلى طاهية

خير من الساعات فى ظل القصور العالية

تعقبها عقوبة يصلى بنار حامية

तर्जुमाः ऐसी फ़रमाँबरदार बीवी जिसको शौहर देखकर ख़ुश हो जाए। उन मियाँ-बीवी को अल्लाह तआला ने ऐसी बच्ची दी जो लिपटी हुई है अल्लाह की दी हुई आफ़ियत के साथ। उस बीवी ने कमरे को ऐसा साफ़ रखा जिसमें शौहर आकर ठंडे दिल के साथ सुकून से राहत हासिल करता है। और ऐसे उम्दा लज़ीज़ पके हुए खाने का सादा लुक़्मा जो ऐसी नेक बीवी के मुबारक हाथों से शौहर को मिले जो सबसे महंगे फ़ाईव स्टार होटलों के खाने से भी बेहतर हो। यह बेहतर है अपने घर में उन घड़ियों से जो ऐसे महलों में गुज़रें जिनमें अल्लाह तआला की नाफ़रमानी होती हो, जिसके पीछे दहकती हुई गरम आग का अज़ाब है। जिसमें गुनाहगारों को दाख़िल कर दिया जाए।

नोटः लेकिन इस सफ़ाई-सुथराई में इतना हद से ज़्यादा भी न बढ़े जिसकी बिना पर शौहर से झगड़ा हो जाए। समय पर शौहर की कोई चीज़ तैयार न हो, इसलिए कि बीवी साहिबा सिर्फ़ सफ़ाई के अलावा कोई और चीज़ जानती ही नहीं।

बीवी का शौहर के लिए ख़ुशबू का इस्तेमाल करना

कहते हैं कि बीवी को चाहिए कि समय-समय पर शौहर के लिए ऐसी ख़ुशबू का इस्तेमाल करे जो शौहर को पसन्द हों। इसलिए कि औरत का अपने शौहर के लिए सजना और ख़ुशबू लागाना आपस में उलफ़त व मुहब्बत पैदा करने के लिए बहुत ही असरदार चीज़ है। इससे नफ़रत और आपसी मनमुटाव का ख़ात्मा होता है। ख़ुशबू दिलों में निशात (ताज़गी और चुस्ती) पैदा करती है। फ़रिश्तों को इससे राहत होती है। क्योंकि नाक की तरह आँख भी दिल का क़ासिद और उसका दरवाज़ा है। आँख को जब कोई चीज़ भा जाती है, या कोई मन्ज़र अच्छा मालूम होता है तो वह उसे बराहेरास्त (डायरेक्ट) दिल में पहुँचा देती है।

इसके उलट जब कोई बुरा मन्ज़र सामने आता है, बीवी के गन्दे

लिबास या पोशाक पर नज़र पड़ती है और दिल में उसका अक्स आता है तो उससे कराहत और नफ़रत का एहसास जाग उठता है।

इसलिए कुछ अ़रब औ़रतें एक दूसरे को ताकीद करती थीं कि इससे हमेशा बचने की कोशिश करना कि तुम्हारे शौहर की नज़र किसी ऐसी चीज़ पर पड़े जो उसे बुरी मालूम हो, या तुम्हारे जिस्म या लिबास से बदबू आए जो उसे बुरी मालूम हो। (फ़ैजुल-क़दीर)

खुशबू की अहमियत और उसके असर डालने की वजह से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इत्र लगाकर सड़कों और आ़म रास्तों पर निकलने से औ़रतों को मना फ़रमाया है, ताकि मर्द उसकी खुशबू की वजह से उसकी तरफ़ माईल न हों। न ही किसी क़िस्म के इम्तिहान में मुब्तला हों।

मर्दों की खुशबू ऐसी हो जिसकी खुशबू नुमायाँ और रंगत हलकी हो, और औ़रतों की खुशबू ऐसी हो जिसका रंग नुमायाँ और महक हलकी हो। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी दुनिया की ये चीज़ें मुझे पसन्द हैं- "औ़रतें और खुशबू" और मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में रखी गई है। (मुस्तद्रक हाकिम)

इसलिए औ़रत को चाहिए कि दावतों में जाते हुए खुशबुओं का इस्तेमाल बिल्कुल न करे ताकि नामेहरम मर्द औ़रतों की तरफ़ माईल न हो। हाँ सिर्फ़ अपने शौहर के लिए घर में इस्तेमाल करे।

और जैसे पहले गुज़र चुका है, बेहतरीन खुशबू पानी है यानी पानी का प्रयोग ज़्यादा करे। गुस्ल, वुज़ू, दाँतों की सफ़ाई, इन सब का ज़्यादा एहतिमाम करे। अपने ख़ास दिनों (माहवारी के दिनों) से फ़ारिग़ होने के बाद भी अच्छी तरह खुशबू का एहतिमाम रखे। हज़रत आ़यशा रज़ि० से रिवायत है कि एक औ़रत ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से "गुस्ले जनाबत" (माहवारी के बाद नहाने) की कैफ़ियत दरियाफ़्त की। आपने उसे नहाने की कैफ़ियत बताकर फ़रमाया कि मुश्क का एक टुकड़ा लेकर उससे पाकी हासिल कर लेना।

औ़रत ने पूछा ऐ हुज़ूरे पाक! मुश्क के टुकड़े से मैं कैसे तहारत (पाकी) हासिल करूँ? आपने फ़रमाया बस तहारत कर लेना।

औ़रत ने फिर कहा : हुज़ूर कैसे?

आपने फ़रमाया "सुब्हानल्लाह" (तू इतना भी नहीं जानती) तहारत (पाकी हासिल) कर ले।

हज़रत आ़यशा फ़रमाती हैं तब मैंने उसे अपनी तरफ़ खींचकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुराद बतलाई और बताया कि मुश्क़ के टुकड़ों को ख़ून के असरात व निशानात के मक़ाम पर मल लेना।

इसलिए बीवी को चाहिए कि खुशबू का इस्तेमाल करे। इससे मियाँ-बीवी में भी मुहब्बत बढ़ेगी। दिमाग़ के लिए भी खुशबू काफ़ी लाभदायक है। फ़रिश्तों को भी खुशबू पसन्द है। अल्लाह तआ़ला हर घर में खुशबू का इस्तेमाल आ़म करे और हर क़िस्म की ज़ाहिरी व बातिनी बू (गंध) से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

और जो शौहर का कमरा हो उसमें भी खुशबू छिड़कने का या खुशबूदार लकड़ी की धूनी देने का एहतिमाम करे। इसी तरह नेक बीवी को चाहिए कि अच्छी से अच्छी खुशबू शौहर को भी अपने हाथों से लगा दे। इसलिए कि यह भी एक सुन्नत वाला अ़मल है।

इसका दुनियावी फ़ायदा यह होगा कि इससे मियाँ-बीवी में मुहब्बत बढ़ेगी और सुन्नत की नीयत से अ़मल करने पर आख़िरत में अज्र मिलेगा वह बहुत ही ज़्यादा होगा। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि:

طَيَّبْتُ رسولَ اللهِ صلى الله عليه وسلم لِحُرْمِهٖ حين اَحْرَمَ وَلِحله قَبْلَ أَنْ يَّفِيضَ بِأَطْيَبِ مَا وَجَدْتُ. (رواه مسلم صفحه ٣٧٨ جلد اول)

तर्जुमाः मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को खुशबू लगाई जब हुज़ूरे पाक ने एहराम बाँधा, यानी (एहराम की नीयत करने

से पहले-पहले)। और जब हज के अरकान से फ़ारिग़ हुए तो तवाफ़े ज़ियारत से पहले-पहले जो बेहतर से बेहतर ख़ुशबू मेरे पास थी वह मैंने लगा दी।

इसी तरह दूसरी रिवायत मैं है:-

मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़ुशबू लगाई अपने इन दोनों हाथों से जिस समय एहराम बाँधा था, यानी (एहराम की नीयत करने से पहले)।

जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एतिकाफ़ में थे और हज़रत आ़यशा रज़ि० ख़ास दिनों (माहवारी के दिनों) की वजह से मस्जिद न आ सकती थीं तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपना सर मुबारक हज़रत आ़यशा के हुजरे से नज़दीक फ़रमा देते तो आ़यशा रज़ि० कंघी कर देतीं और सर धो देतीं।

इसलिए आप भी अपने शौहर के साथ पूरी तरह मुहब्बत कीजिए जुमा के दिन या आ़म नमाज़ों के लिए जाने से पहले ख़ुशबू अपने हाथों से शौहर के जिस्म और कपड़ों पर मल दीजिए। कभी उनके बालों में कंघी कर दीजिए। कभी ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक ही बार इस सुन्नत पर भी अ़मल कर लीजिए कि उनका सर धो दीजिए जैसे हज़रत आ़यशा रज़ि० एतिकाफ़ के बीच धो दिया करती थीं। अल्लाह तआ़ला हर मियाँ-बीवी में ऐसी ही मुहब्बत अ़ता फ़रमाए जैसी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा में थी। आमीन

हनीमून

अगर इसको पढ़ने वाली औ़रत है तो मेहरबानी करके आप अपने आपको किसी की बीवी समझ कर नहीं बल्कि किसी की नन्द समझकर पढ़िएगा, कि इसको पढ़कर जो कुछ एहसान और भलाई की तौफ़ीक़ हो वह अपनी भाभी के साथ कीजियेगा। न यह कि सैर व तफ़रीह का तक़ाज़ा लेकर अपने शौहर पर मुसल्लत हो जाईएगा। और न अपनी भाभी के जाने पर रुकावट बनिएगा।

अगर दूल्हा दुल्हन शादी के बाद कुछ समय अलग गुज़ारना चाहें तो इसमें कुछ हर्ज नहीं। ख़ास कर जिन इलाक़ों में शादी के बाद शौहर अपने ख़ानदान के साथ रहता है ऐसे ख़ानदान के नये शादीशुदा जोड़ों के लिए बहुत ही ज़रूरी है कि कुछ समय अलग माहौल में गुज़ारें ताकि मियाँ-बीवी एक दूसरे के मिज़ाज को अच्छी तरह समझ सकें, एक दूसरे को भरपूर एतिमाद में ले सकें, एक दूसरे को अच्छी तरह पहचान सकें। एक दूसरे से मुहब्बत का इज़हार कर सकें।

एक दूसरे के लिए जान व दिल के सुकून का सबब बन सकें। इसलिए कि उन दोनों में कामिल मुहब्बत, कामिल ताल्लुक़, कामिल उलफ़त दुनिया व आख़िरत दोनों की सआदतों व ख़ूबियों से मालामाल करने का ज़रिया है, अज्र व सवाब का सबब है, सारी नेकियों और भलाईयों तक पहुँचने का वसीला है। दिल की खुशी का सामान और ग़लत सोच के दूर करने की तदबीर है। रूह के हलके-फुलके होने और सख़्ती के ख़त्म होने और नर्मी व मुहब्बत के पैदा होने का ज़रिया है। रब की खुशनूदी और अल्लाह की रिज़ा तक पहुँचाने का रास्ता है।

इसी लिए अ़ल्लामा इब्नुल-क़य्यिम फ़रमाते हैं:

"मालूम हुआ कि दोनों का मिलाप अगर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ज़्यादा महबूब है तो उनके अन्दर बिगाड़ पैदा करना खुदा के दुश्मन को ज़्यादा पसन्द है। इसलिए शैतान की मक्कारी और मियाँ बीवी में झगड़ा फूट डालने की फ़रेब भरी चालों से होशियार रहना बेहद ज़रूरी है।" (तोहफ़तुल-उरूस)

इसलिए अगर कुछ समय मियाँ-बीवी सफ़र में गुज़ारें और हो सके तो हनीमून का अक्सर हिस्सा अल्लाह के रास्ते में दीन सीखने और उसको फैलाने में लगाएँ ताकि नई ज़िन्दगी की शुरूआत ही नेक आमाल की पाबन्दी से हो और फ़िक्रे रसूल से नई ज़िन्दगी की बुनियाद पड़े।

यानी यह फ़िक्र करें कि उम्मत का एक-एक शख़्स जहन्नम से बचकर जन्नत में जाने वाला बन जाए। इस फ़िक्र और इसी ग़म और

इसी कुरआन पर इस नई ज़िन्दगी का बीज बोया जाए ताकि उसकी टहनी पर हसनैन (इमाम हसन और इमाम हुसैन अलैहिमस्सलाम) जैसे फूल खिलें, कहीं उसकी शाख़ पर उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ या सलाहुद्दीन अय्यूबी, या फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल-मलिक, या ज़ुबैदा हारून जैसे फूल आएँ। उसके बाद हनीमून का कुछ समय बचे तो उसी जगह की कुदरती चीज़ें देखने में अगर गुज़ारना चाहते हैं तो ख़ुशी से गुज़ारें। बल्कि हमारी राय तो यह हैं कि दूल्हा दुल्हन शादी में, वलीमे में, दहेज में, कम से कम ख़र्च करें और यह पैसा बचाकर अपने ऊपर ख़र्च करें। उमरा-हज के लिए जाएँ वग़ैरह वग़ैरह।

बल्कि बेहतर यही है कि गुंजाईश हो तो मियाँ-बीवी उमरा करने के लिए चले जाएँ ताकि बैतुल्लाह और मदीना मुनव्वरा में अपने लिए और आने वाली नस्ल के लिए और पूरी उम्मत के लिए ख़ूब दुआएँ माँगी जा सकें। ख़ास तौर से मियाँ-बीवी अपने लिए और आने वाली नस्ल के लिए और पूरी उम्मत के लिए ख़ूब दुआएँ माँगें। ऐ अल्लाह! उम्र भर हम दोनों के दिलों को मिलाए रखिये।

اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَنَا كَمَا اَلَّفْتَ بَيْنَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَخَدِيْجَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَنَا كَمَا اَلَّفْتَ بَيْنَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम दोनों मियाँ-बीवी में ऐसी मुहब्बत पैदा फ़रमा जैसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा में आपने मुहब्बत पैदा फ़रमाई थी। और ऐ अल्लाह! हम दोनों में ऐसी मुहब्बत पैदा फ़रमा जैसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा में आपने मुहब्बत पैदा फ़रमाई थी।

और नेक औलाद के लिए भी ख़ूब-ख़ूब दुआएँ माँगें।

बहरहाल हम एक नेक बीवी का ख़त आपके सामने पेश करते हैं

जो उसने हनीमून अपने शौहर के साथ गुज़ारने के बाद अपनी माँ को लिखा था। अल्लाह करे आप पर भी इस नेक बीवी का साया पड़ जाए। आपको भी ऐसी समझदारी व होशियारी और सलीक़ा व तरीक़ा मिले, जिससे आप माँ-बाप की और शौहर की आँखों की ठंडक बन सकें।

इस ख़त लिखने वाली लड़की की माँ कितनी ख़ुशकिस्मत होगी कि उसकी बेटी ने ऐसा मुबारक ख़त लिखा। इस ख़त लिखने वाली ज़ैनब का शौहर कितना ख़ुशनसीब होगा कि दुनिया व आख़िरत का ख़ज़ाना उसके छोटे से घर में अल्लाह तआला ने उसको दिया। हमारी आप सब पढ़ने वालियों के लिए और उम्मते मुहम्मदिया की हर मुसलमान लड़की के लिए दुआ है कि अल्लाह तआला सबको अपने शौहरों के लिए कुवैत की इस अ़रबी लड़की ज़ैनब की तरह बना दे जिसने ऐसा मुबारक ख़त लिखा। अल्लाह करे! यह ख़त हर मुसलमान लड़की के दिल व दिमाग़ में उतर जाए और इस पर अ़मल करने की हिम्मत हो और इस पर पूरा-पूरा उतरने की कुव्वत व हिम्मत हासिल हो और उम्र भर इसको अपनी पेशानी की सलवटों में, अपनी आँखों के सामने रखकर चलने की तौफ़ीक़ हो, और उसके ख़िलाफ़ शैतान और उसकी चालों से अल्लाह तआ़ला हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

दुल्हन का अपनी माँ को ख़त

आपकी बेटी ज़ैनब बिन्ते यासिर कुवैतिया की तरफ़ से......

मेरी प्यारी अम्मी!

अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

माहे-अ़स्ल (हनीमून) गुज़ारने के बाद आज मैं अपने छोटे से आशियाने में पहुँची हूँ इस छोटे से घर को मेरे शौहर ने बनवाया है।

अम्मी! मेरी दिली तमन्ना है कि तुम इस समय मेरे पास होती ताकि अपनी इस नई ज़िन्दगी के सारे नये तजुर्बे जो मुझे अपने शौहरे नामदार के साथ पेश आए तुमको भी बताती। मेरे शौहर बहुत अच्छे आदमी हैं। वह मुझे बहुत चाहते हैं। मैं भी उनसे बहुत मुहब्बत करती हूँ। इतना

ज़रूर है कि उनकी कुछ फ़ितरी आदतों की अब तक मैं आदी नहीं हुई हूँ। कभी तो मैं यह समझती हूँ कि मैं उनहें कई साल से अच्छी तरह जानती हूँ। लेकिन कभी यह एहसास सताने लगता है कि वह मेरे लिए बिल्कुल अजनबी हैं।

मेरी उस छोटी सी दुनिया से मैं जिसमें पली बढ़ी, परवान चढ़ी, उनका कोई मेल नहीं, लेकिन फिर भी क्या यह हक़ीक़त नहीं कि मैं जितना मुझसे हो सकता है उन्हें खुश करने की कोशिश करती हूँ। क्योंकि तुम्हारी यही ताकीद थी। और इस ताकीद की बदौलत मुझे यक़ीन है कि मुझे आपकी एक-एक नसीहत याद है और मेरा उस पर अमल है ख़ास तौर पर वे नसीहतें मुझे अब भी याद हैं जो आपने मुझे बहते हुए आँसुओं और काँपती हुई मुस्कुराहट के साथ की थीं।

उसका एक-एक शब्द आज भी मुझे याद है, एक-एक हर्फ़ जो ज़बान से निकल कर मेरे कानों में पड़ा। उस समय मैं तुम्हारी ममता भरी गोद में तुम्हारे भरे सीने से चिमटी थी, वही मेरी सुहागरात भी थी।

आज भी हर्फ़-हर्फ़ मैं याद रखे हुए हूँ और ज़िन्दगी का जो नक़्शा उस वक़्त तुमने बताया आज हू-बहू वह नक़्शा मेरे सामने है।

मेरी अम्मी! मेरे सामने आपकी मिसाली हैसियत है। आज मेरे सामने उसके सिवा कोई और रास्ता नहीं जो आपने मेरे प्यारे अब्बा के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए इख़्तियार किया, और अपने बच्चों, यानी खुद हमारे साथ किया, मैं भी आज वही सब करूँ। और मुहब्बत हम पर निछावर की, ज़िन्दगी के मतलब से हमें आगाह किया, चलने का ढंग हमें सिखा दिया, हमारे दिलों में मुहब्बत का बीज अपने शफ़ीक़ हाथों से बो दिया।

कल की डाक से आपका मुबारकबादी का मीठा ख़त, मेरी सुहागरात के संबन्ध में लिखा हुआ मुझे मिला।

मेरी अच्छी अम्मी! जब मैं यह मुहब्बत भरा ख़त पढ़ रही थी, इस तहरीर की हर-हर पंक्ति का एक-एक लफ़्ज़ तुम्हारी दिलकश आवाज़

बनकर मेरे अपने कानों में रस घोल रहा था। मुझे इस पूरे ख़त में उस चीज़ की शिद्दत से तलाश थी, जो न मिली और वह तुम्हारा गर्मजोशी का बोसा था, जिसका तुमने मुझे बहुत ही ज़्यादा आदी बना दिया था।

बहरहाल! मैं अभी-अभी अपने शौहर के लिए खाना तैयार करके फ़ारिग़ हुई हूँ वह काम से लौटते ही होंगे।

मेरी प्यारी अम्मी! फ़िक्र न करना। अब पकाने पर मुझे बड़ी महारत हासिल हो चुकी है। मैं इस समय अपने आपको बेहद ख़ुशनसीब समझती हूँ वह मेरे हाथ से तैयार किए हुए पकवान मज़े लेकर खाते हैं। और जब वह फ़ारिग़ होते हैं तो मेरा शुक्रिया अदा करना नहीं भूलते।

मेरी अम्मी! तुम्हें भी याद रहे कि मैं पकाने में तुम्हारी ही शागिर्द हूँ। तुमने मुझे यह ढंग सिखाया। तुम ही ने मुझे यह बताया था कि शौहर के दिल के अन्दर सबसे नज़दीक रास्ता उसके पेट से होकर जाता है। और मेरी अम्मी! मैं पाँच वक़्त की नमाज़ पाबन्दी के साथ पढ़ती हूँ। ख़ास तौर से माहवारी के दिनों से फ़ारिग़ होने के बाद नहाने में देर नहीं करती और उन्हीं दिनों के छूटे हुए रोज़ों की जल्द से जल्द क़ज़ा उतार लेती हूँ। ज़ेवरात की ज़कात भी पूरी अदा कर देती हूँ और घर में किताब "रियाजुस्सालिहीन" और "फ़ज़ाइले आमाल" की तालीम का भी एहतिमाम करती हूँ। घर की नौकरानी और पड़ोसन और मिलने वालियों को भी नमाज़ों की पाबन्दी और पर्दे की अहमियत समझाती रहती हूँ।

मैं दरवाज़े के ताले में चाबी घुमाने की आवाज़ सुन रही हूँ मेरे शौहर आते ही होंगे। अल्हम्दु लिल्लाह हाँ! वही हैं। वह मेरा यह ख़त पढ़ना चाहते हैं, वह जानना चाहते हैं कि मैं तुम्हें क्या लिख रही हूँ। इन चन्द लम्हों में जिनमें मेरी रूह तुम्हारी यादों और ख़्यालात में गुम है वह भी इन लम्हों में मेरे शरीक होना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि क़लम मैं उनके हवाले करूँ और कुछ जगह छोड़ दूँ ताकि वह भी आपको कुछ लिख सकें।

मैं तुम्हारा ग़ायबाना बोसा लेती हूँ अपने बाप और भाईयों का

ग़ायबाना बोसा लेती (यानी प्यार करती) हूँ। फ़ी अमानिल्लाह।

वस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

आपकी बेटी

(तोहफ़तुल उरूस पेज 176)

तुम्हारा शौहर

तुम्हारी जन्नत और तुम्हारी दोज़ख़ है

عن الحصين بن محصن أن عمة له أتت النبى صلى الله عليه وسلم فى حاجة ففرغت من حاجتها، فقال صلى الله عليه وسلم(أذات زوج أنت؟) قالت:نعم، قال: (كيف أنت منه) قالت: ماآلوه الا ما عجزت عنه قال فانظرى أين أنت منه، فانما هوجنتك ونارك. (اخرجه احمد: ٦/٤١٩)

तर्जुमा: हुसैन बिन मोहस्सन कहते हैं कि मेरी फूफी ने मुझसे नक़ल किया कि मैं नबी पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुई। जब मैंने अपनी बात पूरी कर ली तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम शादीशुदा औ़रत हो?

मैंने कहा: हाँ! फ़रमाया तुम्हारा उसके साथ क्या सुलूक है? मैंने कहा मैं उसकी इताअ़त में कोताही नहीं करती सिवाय यह कि किसी काम से मैं खुद ही आ़जिज़ रहूँ। फ़रमाया सोच लो तुम उसके साथ क्या करती हो? क्योंकि वही तुम्हारी जन्नत और जहन्नम है।

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस औ़रत को वसीयत फ़रमाई:-

"तुम अपने आपको देख लो, शौहर की निगाह में तुम्हारा क्या मक़ाम है? तुमने शौहर के हुक़ूक़ पूरे अदा किए तो यही सबब बनेगा तुमको जन्नत में दाख़िल करवाने का। और अगर उसके हुक़ूक़ अदा करने में कोताही की, उसका हक़ नहीं पहचाना तो याद रखो फिर वह तुमको जहन्नम में दाख़िल करवाने का सबब भी बन सकता है।

अल्लाह तआला हर औरत की इस बात से हिफ़ाज़त फ़रमाए कि उससे शौहर के हुकूक़ अदा करने में कोताही हो।

औरत पर शौहर के क्या-क्या हुकूक़ हैं? इसकी तफ़सील हमने आख़िर में फ़ेहरिस्त बनाकर पेश कर दी है, उसको ग़ौर से पढ़ लें और उन हुकूक़ में से कोई हक़ अदा करने में भी कोताही न करें। और अगर कोई हक़ अदा करने में कोताही हो जाए तो शौहर से माज़िरत तलब (यानी माफ़ी) करें और जितना उसका दिल दुखाया है उससे ज़्यादा ख़ुश करने की कोशिश करें और अल्लाह तआला से भी इस्तिग़फ़ार के ज़रिये माफ़ी माँग लें।

औरत पर शौहर का एक हक़ हदीस में अहमियत से बयान किया गया है।

الا ان لكم على نسائكم حقا ولنسائكم عليكم حقا. فاما حقكم على نسائكم فلا يوطين فرشكم من تكرهون، ولا ياذن في بيوتكم لمن تكرهون (رواه ابن ماجه والترمذی ص۲۳۰)

तर्जुमाः ध्यान से सुन लो तुम पर तुम्हारी औरतों की तरफ़ से कुछ हुकूक़ हैं और औरतों के ऊपर तुम्हारी तरफ़ से कुछ हुकूक़ हैं। तुम्हारी तरफ़ से उनपर हक़ यह है कि ऐसे लोगों को तुम्हारे बिस्तर पर क़दम न रखने दें जिनको तुम पसन्द नहीं करते। और तुम्हारे घरों में ऐसे लोगों को न आने दें जिनको तुम पसन्द नहीं करते।

इसलिए हर मुसलमान औरत को चाहिए कि नामेहरम मर्द चाहे कोई भी हो उससे मज़ाक़-मस्ती करना, खुल्लम-खुल्ला बिना पर्दे के बातें करना, उनको घरों में बैठाना, ख़ुसूसन जिस वक़्त शौहर घर में न हो, या पड़ोसियों के घर बिना उनके वक़्तों का ख़्याल रखे जाना, या नामेहरम पड़ोसी को अपने घर आने देना, पड़ोसन के शौहर या उनके नौजवान बेटों से बेतकल्लुफ़ी से या बिना पर्दे के बात करना, शौहर के दोस्तों से बिना ज़रूरत बातें करना, इनसे ऐसे बचें जैसे शेर या साँप से

बचा जाता है। इसलिए कि इन मामलात में एहतियात न करने की वजह से बहुत सी बार पाकदामन बीवी को भी तलाक़ मिल चुकी है। कि शौहर किसी वक़्त अचानक घर पर आया और नामुनासिब हालत में देख लिया जिससे उम्र भर शक व शुब्हे की कैफ़ियत रही, या मियाँ बीवी में जुदाई हो गई। इसलिए जो औरत अपने और दो जहान के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस वसीयत को मानेगी और इस पर पूरी तरह अमल करेगी वह दुनिया में भी इज़्ज़त व आफ़ियत से रहेगी और आख़िरत में भी कामयाब रहेगी।

दो औरतों के बीच मुक़ाबला

दारुल-इफ़्ता (जहाँ से फ़तवे दिये जाते हैं) में काम करने के दौरान तलाक़ से मुताल्लिक़ हमारी नज़र से जो सैंकड़ों मसाईल गुज़रे, या मियाँ-बीवी के बीच मुहब्बत का तावीज़ या पढ़ा हुआ पानी तलब करने वालों की परेशानियों का अन्दाज़ा करके जो कुछ तजुर्बा हुआ, उन झगड़ों के पैदा होने के असल कारण क्या होते हैं और उनसे निजात का असल तरीक़ा क्या है, वह हम अपके सामने पेश करते हैं। और अगर इन असबाब (कारणों) से पहले से बचा जाए तो यह घर पहले दिन से लेकर आख़िर तक ख़ुशी और नूर का गहवारा रह सकता है और जन्नत का नमूना बन सकता है।

इसलिए हम दो औरतों की आदतों का तज़किरा करते हैं ताकि आप भी पहली औरत की आदतों को अपनाने की कोशिश करें और दूसरी औरत की आदतों से बचें। अगर ख़ुदा न करे दूसरी औरत वाली कोई एक आदत भी आप में है तो अभी से उससे बचने की कोशिश शुरू कर दें और अल्लाह तआला से गिड़गिड़ाकर दुआ माँगें। अल्लाह आपकी और सारी मुसलमान बहनों की इन बुरी आदतों से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन या रब्बल्-आलमीन।

पहली औरत

सुबह-सुबह उठकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ती है। शौहर की तहज्जुद के बाद आँख लग चुकी है तो उनको भी उठाती है, नमाज़े फ़ज्र के बाद थोड़ा ज़िक्र व तिलावत करके शौहर और बच्चों के लिए नाश्ता तैयार करती है।

दूसरी औरत

शौहर ने उठाया तो बड़ी मुश्किल से फ़ज्र की नमाज़ अख़ीर वक़्त में अदा की। नमाज़ के बाद फ़ौरन अपने आपको बिस्तर पर फेंक दिया।

पहली औरत

अपने बच्चों को उठाया। सुबह की सारी दुआएँ पढ़वाईं। बारीक मिस्वास से या किसी भी तरह बच्चों के दाँत साफ़ करवाए। फिर शौहर को और बच्चों को प्यार व मुहब्बत से नाश्ता करवाया। एक-एक लुक़्मा बच्चों को खिलाती जाती और एक-एक नसीहत करती जातीः

बेटा! मदरसे के आदाब यह………… यह ………… हैं। इसका ख़्याल रखना। उसताद की बात को ध्यान से सुनना। किसी बच्चे से बद्तमीज़ी मत करना। फिर बच्चों को स्कूल की ड्रेस सुन्नत के मुवाफ़िक़ दुआ पढ़वाते हुए पहनवाई। सीधी तरफ़ से पहनाया। बच्चों को स्कूल रवाना किया। शौहर बीवी ने एक दूसरे को मुस्कुराहट भरे चेहरे के साथ फ़ी अमानिल्लाह (अल्लाह की हिफ़ाज़त में) कहा।

दूसरी औरत

देर से उठी। देखा कि बच्चों के स्कूल का वक़्त क़रीब है। बड़ी बच्ची को बावर्चीख़ाने से ही ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें देकर उठाया। बच्ची चन्द बार आवाज़ देने से नहीं उठी तो ज़ोर से पिटाई करके उठाया "चलो अभी स्कूल की वैन आ जाएगी।"

सारा घर बीवी के शोर से आसमान से बातें करने लगा। बड़ी मुश्किल से बच्चे टूटे हुए दिल, माँ की ख़ौफ़नाक डाँट से काँपते हुए,

अब्बा के उदास चेहरे को ताकते हुए घर से रवाना हुए। छोटे बच्चे ने बाहर निकलने के बाद नीचे से आवाज़ लगाई "अम्मी मैं बॉक्स भूल गया"।

अम्मीः जंगली। इसी लिए कहती थी जल्दी उठो, अब अम्मी बिना किसी पर्दे का ख़्याल किए हुए बेतुके लिबास में जल्दी से बच्चे को बॉक्स देने नीचे भागीं। पड़ोस में से किसी शख़्स की अचानक निगाह पड़ी तो उसने शौहर और मासूम बच्चों पर तरस खाकर एक आह भरी "इस प्यारे नौजवान के गले में बना रस्से का यह कैसा तौक़ पड़ गया"

पहली औरत

बच्चे और शौहर को रवाना करके वुज़ू किया इशराक़ के चार नफ़िल पढ़े। कुछ तिलावत की "मुनाजाते मक़बूल" या "अल्हिज़्बुल आज़म" या कोई और मोतबर वज़ीफ़ों और दुआओं की किताबों में से पढ़कर दुआएँ माँगीं। तस्बीहात पढ़ ही रही थीं कि छोटी बच्ची के रोने की आवाज़ आई। फ़ौरन झूले के पास गई मुहब्बत की गर्मजोशी से बच्ची का बोसा लिया, यह दुआ देते हुए।

نَوَّرَاللّٰهُ وَجْهَكِ يَا فَاطِمَة

ऐ फ़ातिमा! अल्लाह तेरा चेहरा ईमान के नूर से रोशन फ़रमाए।

फिर छोटी बच्ची को तैयार किया, इतने में ख़ादिमा (काम करने वाली) आ गई। उसको बरतन व कपड़े दिये, ख़ुद शौहर के कमरे की सफ़ाई शुरू कर दी। शौहर एक थैली में कुछ पैसे रख कर दफ़्तर ले जाना भूल गए थे, फ़ौरन दफ़्तर फ़ोन कर दिया– "आप फ़िक्र न कीजिए पैसे मैंने संभाल कर रख लिए हैं"। फिर दो रकअत चाश्त के नफ़िल पढ़कर पकाने की तैयारी शुरू कर दी।

अब बच्चों के आने का वक़्त हो गया। फ़ौरन हल्की-फुल्की खाने की चीज़ प्लेट में निकाल कर रख दी कि बच्चे आएँगे तो भूख लगी हुई होगी। सलाम का जवाब देने के बाद फ़ौरन बच्चों को यह खिला दूँगी

और साफ़ पानी का गिलास रखा कि पानी की प्यास लगी होगी तो पानी पिला दूँगी।

दूसरी औरत

बच्चे और शौहर गए। अब नाश्ते के बरतन उठाने लगी। ख़ुद भी नाश्ता नहीं किया था तो चाय पीने बैठ गई। अभी प्याला उठाया ही था कि छोटे मुन्ने के रोने की आवाज़ आई। वहीं से उसको कोसना शुरू कर दिया- तुम्हारे लिए मैं क्या करूँ, मर जाऊँ, कहाँ जाऊँ। तुम लोगों ने तो मेरा ख़ून पी लिया है। तुम जैसी औलाद अल्लाह किसी को न दे और एक तुम्हारे अब्बू हैं वह चैन से बैठने नहीं देते।

जल्दी-जल्दी चाय पी, मुन्ने के पास गई, उसको प्यार से छोटा सा तमाँचा लगाया। इतना जल्दी उठ गए। अभी मैं तुमको बाहर नहीं निकालती। अभी मेरे इतने काम हैं। वह और तेज़ रोने लगा तो अब झूले से निकाला। हाथ-मुँह धुलवाया, साफ़-सुथरा किया, लेकिन फिर भी वह चुप नहीं हुआ। काफ़ी रुलाने के बाद अब ख़्याल आया तो फ़ौरन रात की रखी हुई बिना धुली हुई बोतल में ही दूध दे दिया। जब मासूम बच्चे के ख़ुश्क हलक़ में दूध गया जब जाकर उसका जिगर तो ठंडा हुआ और उसका रोना बन्द हुआ, लेकिन बिना धुली हुई कीटाणुओं से भरी हुई बोतल में पिलाए गए दूध ने न जाने उस मासूम के मेदे व जिगर का क्या हाल किया होगा।

अब जल्दी-जल्दी नाश्ते के बरतन उठाए। दस्तरख़्वान बाहर सुखाने गई तो पड़ोसन यासमीन बाहर खड़ी थी। पूछा बहन! क्या बात है आज मुन्ना बहुत ही रो रहा था? हाँ बहन पूछो नहीं। पता नहीं बच्चे हैं क्या हैं! और तुम्हारे भाई! यह नहीं कि बच्चों को उठाएँ और नाश्ता करवाएँ और मेरा साथ दें, बल्कि बस जल्दी-जल्दी, हर काम उनको जल्दी भी चाहिए और वक़्त पर भी। इसी तरह बातें करने में आधा घन्टा गुज़ार दिया।

अब शौहर के कमरे की सफ़ाई शुरू की, फिर पकाने की तैयारी कर

रही थी कि मासी आई। दस मिनट मासी (काम करने वाली) पर गुस्सा हुई "यह आने का वक़्त है? मासी रोज़ाना देर लगाती हो देखो अभी बच्चे स्कूल से आ जाएँगे। टीफिन वाला खाना लेने आ जाएगा। चलो अब जल्दी-जल्दी करो"। खुद जल्दी-जल्दी खाना जैसा तैसा पकाया टीफ़िन में डाल ही रही थी कि घन्टी बजी, वहीं से आवाज़ दी "अभी दे रही हूँ" फिर कच्चा-पक्का सालन टीफ़िन में डालकर दे दिया। अब कहने लगी कि जान छूटी। बच्चों के आने का समय हो गया। बच्चे आए मासी से पूछा अम्मी कहाँ हैं? मासी ने कहा देखो उस कमरे में होंगी या पड़ोसन के घर में बैठी होंगी।

पहली औरत

बच्चे आए उनको सलाम सिखाया। फिर हर एक को बोसा दिया, घर में दाख़िल होने की दुआ पढ़वाई:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَ عَلَى اللّٰه رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا (رواه ابو داود حديث رقم ۴۴۳۲)

अल्लाहुम्-म इन्नी असअलु-क ख़ैरल् मौलजि व ख़ैरल् मख़रजि। बिस्मिल्लाहि वलजूना व बिस्मिल्लाहि ख़रजूना व अलल्लाहि रब्बिना तवक्कलूना।

हाथ-मुँह धुलाया और कहा यह बिस्कुट खा लो। फिर नहाकर के खाना खा लेना। बच्चे ने कहा अच्छा अम्मी! आज 'मैडमस' ने मुझे स्टार दिया है।

अच्छा बेटा! तो अल्हम्दु लिल्लाह कहो। अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि तुम रात को अपना "होम वर्क" पूरा करके गए थे। अल्लाह ने स्टार दिलवाया अब बिस्कुट खाकर स्कूल के कपड़े बदल लो और मुँह-हाथ धोकर मदरसे जाने की तैयारी कर लो।

इतने में शौहर ज़ोहर के समय दफ़्तर से आ गए। दरवाज़े पर ही शौहर का मुस्कुराते हुए स्वागत करके "व अलैकुमुस्सलाम" कहा। इतने

में दोपहर के मदरसे के लिए बच्चों को रवाना किया। शौहर के लिए दस्तरख़्वान पहले से तैयार था, मगर शौहर वुज़ू करके ज़ोहर की नमाज़ के लिए रवाना हुए।

बीवी ने वुज़ू के बाद साफ़-सुथरा तौलिया पेश किया। नमाज़ को जाने के लिए चप्पल दरवाज़े पर रख दिए। नमाज़ के बाद शौहर ने खाना खाया, बीस मिनट आराम करके दोबारा दफ़्तर चले गए।

दूसरी औरत

जल्दी-जल्दी बच्चों के कपड़े बदले। छोटे बच्चे ने कहा मैं आज मदरसे नहीं जाऊँगा, मुझे बाजी बहुत मारती हैं। बच्ची ने कहा अम्मी वह इसलिए मारती हैं कि इसको सबक़ याद नहीं होता। देखो तुम सबक़ याद नहीं करते ना ......।

नहीं अम्मी! वैसे भी मुझे मारती रहती हैं। ग़र्ज़ यह कि डाँट कर एक को तो मदरसा भेजा, एक गया नहीं। अच्छा तुम्हारे अब्बू को कहूँगी वह तुमको बहुत ही मारेंगे। बच्चा! हाँ कह देना कोई बात नहीं, मैं अब्बू से डरता तो नहीं हूँ।

पहली औरत

शौहर के कमरे के बिस्तर की चादर वग़ैरह ठीक की, कमरा साफ़ किया। कमरे में थोड़ी खुशबू छिड़क कर कमरा बन्द कर दिया। बच्चों के कपड़े लेकर प्रेस करनी शुरू कर दी कि आज शाम को दादी के घर बच्चों को जाना है। बच्चे शाम को आए हाथ-मुँह धुलाया, किसी फल का जूस पिलाया और बिस्कुट बच्चों को दिए। खुद अ़सर की नमाज़ पढ़ी। बच्चों को खिलौने दे दिए और बड़ी बच्चे से कहा देखो तुम मुन्नी का ख़्याल रखना मैं नमाज़ पढ़ रही हूँ। बड़ी बच्ची! अच्छा अम्मी आप नमाज़ पढ़ लें मैं इसका ख़्याल रखती हूँ। अच्छा अम्मी आज हम दादी अम्माँ के घर जाएँगे ना? जी हाँ बेटी! इन्शा-अल्लाह आज हम सब वहाँ जाएँगे।

दूसरी औरत

बच्ची शाम को मदरसे से आई। बच्ची को न सुबह नहलाया न शाम, गन्दे कपड़ों में, बिखरे हुए बालों वाली मासूम बच्ची आकर खेल-कूद में लग गई। बच्चा रोने लगा- "दो रुपये दो, बाहर चीज़ वाला आया है, मैं चीज़ लूँगा"। अम्मी पड़ोसन से बात करने में लगी हुई है ज़ोर से बच्चे को मारा। देखते नहीं हो बात कर रही हूँ।

इतने में अ़सर की नमाज़ जल्दी-जल्दी पढ़ी। चाय बनाई छोटे बच्चे को दूध दिया। बच्चों के सुबह के स्कूल के कपड़े तैयार किये कि मग़रिब हो गई। शौहर तो शाम से परेशान थे कि अब घर जाने का समय हो गया है कैसे जाऊँगा? बच्चों पर बरस रही होगी, या मुझपर बरसेगी।

इसलिए शौहर नमाज़ के बाद आए कमरे में गए तो अ़जीब सी बदबू महसूस हुई। बच्चा पलंग पर सोया था दूध पलंग पर गिर गया है। बच्चों ने जो चाय-बिस्कुट खाए थे उसके टुकड़े ज़मीन पर गिरे हुए हैं। बच्चों के खिलौने फैले हुए पड़े हैं, बावर्चीख़ाना गन्दा छोड़ा हुआ है। बीवी साहिबा ने आते ही हल्ला बोल दिया। देखिए सामने वाली रुख़्साना रोज़ाना अपने शौहर के साथ बाहर जाती है, आप भी कभी हमें ले जाते हैं? आज यह लोग दादी के घर जाएँगे। हमें भी तो क़भी ले जाओ।

शौहर थका हुआ फ़ौरन बिस्तर पर गया पूछा खाना तैयार होगा? अभी दे रही हूँ। यह अभी पच्चीस मिनट हो गए तो शौहर ने आवाज़ दी- कब खाने के लिए बुलाओगी। शौहर को गुस्सा आया नादान शौहर उठा, देखा दोनों बच्चे आपस में लड़ रहे हैं, दोनों को ज़ोर से तमांचे मारे, क्या कर रहे हो, देखते नहीं हो अभी थक कर आया हूँ? चन्द लम्हे तो सुकून से बैठने दो।

अब बीवी ने बुलाया चलें खाना खा लें। जल्दी-जल्दी ज़बरदस्ती से जैसा-तैसा पका हुआ खाना खाया और अपनी ज़िन्दगी पर मातम करते हुए गहरी सोच में डूब गया।

हाय अल्लाह! कैसी मेरी जानवरों की तरह ज़िन्दगी है।

पहली औरत

मग़रिब के अव्वाबीन के नफ़िल से फ़ारिग़ हुई। बड़ी बच्ची से कहा बेटी "होम वर्क" की कॉपी लाओ और यह-यह लिखना शुरू कर दो, मैं अब्बू के लिए रोटी पका लूँ। वह अभी आ रहे होंगे।

रोटी पकाना शुरू की तो घन्टी बजी, तुरन्त साफ़ गिलास में पानी भरकर मेज़ पर रखा। शौहर आए दरवाज़ा खोला "व अलैकुमुस्सलाम" कहा, दोनों बच्चे फ़ौरन दरवाज़े पर आए। एक ने अब्बू का हाथ पकड़ा एक ने अब्बू से फलों की थैली लेकर अम्मी को दी। इतने में अम्मी पानी का गिलास लेकर आई।

बच्चे इतने साफ़-सुथरे कि अब्बू ने फ़ौरन उठा लिया। बच्चे और बच्ची का बोसा लिया। इतने में बच्ची अब्बू को अपने कमरे में ले गई। अब्बू मुझे यह यह सबक़ मिला है। अब्बू ने कुछ याद करवाया इतने में शौहर के कान में बीवी की सुरेली लेकिन धीमी सी आवाज़ आई "रोटी पक गई है" आप बैठ जाएँ।

शौहर बच्ची से बातों में मसरूफ़ हो गए कि दोबारा थोड़ी देर बाद शौहर के पास गई। आप आ जाएँ रोटी ठंडी हो जाएगी। ओहो सलमा! माफ़ करना तुमने पहले भी मुझे बुलाया, याद नहीं रहा, चलो बेटा खाना खा लेते हैं।

सबने दुआ पढ़कर आदाब के साथ खाना खाया। सलमा आज अम्मी के घर जाना है, तुमने कुछ पका लिया?

हाँ जो आप कस्टर्ड लाए थे वह अम्मी को पसन्द है, वह बनाया है। और अब्बा के लिए पाय पकाए हैं। बहुत अच्छा किया। इन्शा-अल्लाह हम लोग नमाज़ के बाद चलेंगे।

शौहर खाना खाने में लग गए और दिल उनका अल्लाह की नेमतों पर शुक्र करने में मसरूफ़ है, कि ऐ अल्लाह! तेरा करम है तेरा शुक्र है, तूने मुझे ऐसी बीवी और ऐसे प्यारे बच्चे अता फ़रमाए कि मुझे बीवी बच्चों को देखकर जन्नत की हूर और जन्नत के ग़िलमान (जन्नती

ख़ादिम लड़के) याद आते हैं। ऐ अल्लाह! ऐसी बीवी और ऐसे बच्चे सारे मुसलमानों को अ़ता फ़रमा।

आपकी क्या राय है इन दोनों औ़रतों के बारे में? हम जवाब आप पर छोड़ते हैं।

अल्लाह तआ़ला आपको और सारी मुसलमान बहनों को पहली औ़रत की सिफ़ात अपनाने और उन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन (सिलसिलतुल् मुस्लिमतुस्सईदतु पहला हिस्सा पेज 54)

याद रखिए! मर्द जो घर के बाहर काम करता है, और मेहनत व मशक़्क़त के बाद थक कर चूर-चूर हो जाता है। फिर अपने दफ़्तर से बस में या अपनी सवारी चला कर घर पहुँचता है, तो उसको ऐसी नेक बीवी की ज़रूरत है जो घर के सब कामों से फ़ारिग़ हो चुकी हो। सिर्फ़ और सिर्फ़ शौहर के इन्तिज़ार में सजी-संवरी हो। खुशबुओं में बसी हुई हो। उसकी मुस्कुराहट से उसकी थकन दूर हो जाये।

लोगों के साथ मुलाज़िमों ग्राहकों के साथ मसरूफ़ रहकर तंगी और परेशानी और उलझन जो तबीयत में बस गई और जिस उकताहट का वह शिकार हो गया, उन सब का ख़ात्मा हो जाए। लेकिन अगर बीवी भी थकी हुई है, बच्चों पर नाराज़ है, पड़ोसियों से झगड़ा करके आई है, देवरानी-जेठानी की ग़ीबत करके आई है, तो बताईए थका हुआ थके हुए से किस तरह तसल्ली पा सकता है?

थका हुआ थके हुए से किस तरह तसल्ली पा सकता है?

अगर दोनों थके हुए हैं तो दोनों में से किसका दिल-गुर्दा है कि प्यार व मुहब्बत और ख़ुशी से एक दूसरे का सामना करे? बच्चों के साथ हंसी और दिल्लगी करे, उनकी तरबियत और उन्हें ख़ुश रखने के तरीक़े अपनाये। अगर ख़ुदा न करे बीवी ने यही तर्ज़ अपनाया तो उस समय हक़ीक़त में उनकी ज़िन्दगी दुख, तकलीफ़ और बद-बख़्ती का

दूसरा नाम होगी। या बीवी खुद भी नौकरी करने लग गई तो याद रखिए! इस सवाल पर ग़ौर कीजिए! "थका हुआ थके हुए से किस तरह तसल्ली पा सकता है?"

फिर ख़ानदान के ये अफ़राद चाहे मर्द हों या औरत, जवान हों या बच्चे, उनकी हैसियत ज़िन्दगी की मशीनरी की तरह होगी, उन बेजान कलपुर्ज़ों की सी होगी जिनकी क़िस्मत में सुकून और ठहराव नहीं। उनका काम बस चलते रहना और घिसते रहना है। शैहर घर पर सुकून और चैन के बजाय कश्मकश और परेशानी और बेचैनी महसूस करेगा जो कि फ़ितरत के बिल्कुल ख़िलाफ़, अक़्ल के ख़िलाफ़, दीन के ख़िलाफ़, इनसानियत के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह तआला यह चाहते हैं कि दोनों मियाँ-बीवी मुहब्बत व नर्मी और प्यार के साथ रहें ताकि कायनात की आबादकारी और इनसानी नस्ल की हिफ़ाज़त और बाक़ी रहने का मर्हला आसान हो।

अगर औरत ने ऐसा किया तो उसकी हैसियत सिर्फ़ बीवी या बिस्तर के खिलौने की सी नहीं होगी बल्कि वह शौहर की पर्सनल सैक्रेट्री और राज़दान व मुशीर की होगी जो हर मुश्किल के वक़्त उसकी साथी और ग़मगुसार होगी और फिर दोनों मियाँ-बीवी दीन व दुनिया दोनों का काम अच्छी तरह कर सकेंगे। "इस्लाम में ख़ानदान का मक़ाम" नामी किताब में लिखा है।

मुहब्बत करने वाले मियाँ-बीवी की यह बेहतर सूरत है। इस तरह उन्हें बन्दगी की मिठास, यादे-इलाही की मिठास और इबादत की लज़्ज़त मयस्सर हो सकती है। अगर दोनों एक दूसरे का ख़्याल रखते हुए चलें, एक दूसरे के लिए राहत का सबब हों, खुसूसन नेक बीवी को चाहिए कि शौहर के आने के समय खुद ताज़ा-दम साफ़ होकर रहे ताकि थके हुए शख़्स की थकावट दूर हो सके और वह अपने घर में राहत व सुकून हासिल कर सके। और यही राज़ और गुर बच्चों को नेक और समझदार और ताबेदार बनाने का है कि जब मासूम बच्चे स्कूल से

वापस आएँ तो उनके लिए पहले से कोई हलकी-फुलकी खाने की चीज़ तैयार रखनी चाहिए। वे मायें बड़ी नासमझ होती हैं जो बच्चों के आते ही उन्हें डाँट-डपट करती हैं...... कि किताबें यहाँ क्यों फेंक दीं? कपड़े ऐसे मैले क्यों कर दिए? इतनी देर क्यों लगाई? रूमाल सुबह दिया था कहाँ छोड़कर आ गए?

समझदार माँ यह समझती है कि यह बच्चा सिर्फ़ छह घन्टे घर से दूर ही नहीं रहा बल्कि छह घन्टे माँ के प्यार से भी दूर रहा है। माँ की नर्म व नाज़ुक उंगलियों के पोरे उसके रुख़्सारों पर नहीं फिरे हैं। माँ की प्यार भरी दो नज़रें उसके चेहरे पर नहीं पड़ी हैं। बाप का शफ़क़त का हाथ उसके सर पर नहीं फिरा। इसलिए पहले उसे भरपूर प्यार देती है, भूख की वजह से उसके आसाब (मांसपेशी) व दिमाग़ किसी नये बोझ (यानी माँ की डाँट सुनने) सहने और उसको बर्दाश्त करने के क़ाबिल नहीं होते, इसलिए पहले उनको हलकी-फुलकी ग़िज़ा (खाने की कोई चीज़) खिलाकर फिर मुँह-हाथ धुलाकर, किसी बात की नसीहत या किसी बात पर मुनासिब तंबीह करती है। और उस वक़्त की थोड़ी सी नसीहत उस मासूम नौनिहाल के दिल व जिगर में ऐसी जम जाती है जैसे पत्थर पर कोई नक़्श, और बचपन की यह नसीहत पचपन तक याद रहती है।

अल्लाह तआ़ला सारी मुसलमान बहनों को इन सिफ़ात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

मिसाली औ़रत

अ़रब के एक देहाती की नज़र में

अ़रबी भाषा इतनी प्यारी और इतनी ख़ूबसूरत है कि किसी और भाषा का उससे मुक़ाबला किसी तरह भी नहीं किया जा सकता। यह भाषा देहात के रहने वाले को भी सलीक़ेदार, समझदार और उम्दा बातचीत करने का तरीक़ा सिखा देती है तो उनके शहरियों का क्या हाल होगा।

अब हम आपके सामने एक देहाती का जवाब पेश करते हैं जब उससे पूछा गया कि सबसे बेहतर बीवी कौनसी होती है? उसने फ़साहत व बलाग़त (यानी अपनी बात को कम अलफ़ाज़ में बेहतर अन्दाज़ में कहने) के एतिबार से कुछ जुमलों में एक बहुत बड़ी किताब सुमो दी और बहुत हकीमाना व नासिहाना अन्दाज़ से समझा दिया कि तवाज़ो औरत का सबसे बड़ा गुण और कमाल है।

अगर आपको अ़रबी भाषा आती तो आप भी ज़रूर इन चन्द जुमलों से भरपूर फ़ायदा उठाते। अब आप अपनी छोटी बहनों और औलाद को अ़रबी भाषा सीखने से मेहरूम न कीजिए उनको ज़रूर अ़रबी सिखाईए। हम आपके सामने अ़रबी इबारत और उसका तर्जुमा पेश करते हैं, इस दुआ़ के साथ कि अल्लाह तआ़ला सारी मुसलमान बहनों को ये ख़ूबियाँ अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

أفضل النساء أطولهن اذا اقامت، وأعظمهن اذا قعدت، واصدقهن اذا قالت.

तर्जुमाः सबसे बेहतर औ़रत वह है कि जब खड़ी हो तो लम्बी मालूम हो और बैठे तो शान व शौकत वाली मालूम हो, जब उसके मुँह से फूल खिलें तो सच्चे-सच्चे बोलों की शक्ल में हों और झूट न बोले।

التى اذا غضبت حلمتْ واذا ضحكت تبسّمت واذا أصنعت شيئًا جودت.

तर्जुमाः जब गुस्सा आए तो उस कड़वे घूँट को पी ले। जब हंसे तो दाँत बाहर न निकाले मामूली सी मुस्कुराहट उसके होंठों पर मोतियों की लड़ी की तरह ज़ाहिर हो। जब किसी चीज़ को पकाये या कोई भी काम करे तो अच्छी तरह से सफ़ाई-सुथराई के एहतिमाम के साथ करे।

التى تطيع زوجها وتلزم بيتها العزيزة فى قومها الذليلة فى نفسها الودود الولود وكُلّ أمرها محمود.

तर्जुमाः अपने शौहर की इताअ़त करने वाली हो और अपने घर में

क़ालीन की तरह चिपक कर बैठने वाली हो कि जब तक क़ालीन को घर से निकाला नहीं जाता खुद नहीं निकलता। इसलिए बहुत ज़रूरी काम हो तब घर से बाहर जाए। अपनी क़ौम में इज़्ज़त वाली हो लेकिन खुद अपने आपको बहुत ही कमतर समझती हो। शौहर के सामने अपनी कोई हैसियत न समझती हो कि मैं यूँ मैं यूँ मैं ऐसी वैसी हूँ।

शौहर से बहुत ही ज़्यादा मुहब्बत करने वाली और मुहब्बत का इज़हार करने वाली हो। ज़्यादा बच्चे जनने वाली हो। और उसका हर काम ही तारीफ़ के क़ाबिल हो।

आप भी यह दुआ कीजिए कि ऐ अल्लाह! ये सिफ़ात हमारी सारी मुसलमान बहनों में अ़ता फ़रमा ताकि हर ग़रीब अमीर की झोंपड़ी और कोठी चैन व सुकून का गहवारा अमन व इत्मीनान का ठिकाना, इज़्ज़त व राहत का आशियाना, मुहबबत व प्रेम का घर बन जाए। आमीन या रब्बल् आलमीन।

शैख़ उस्मान अपनी किताब "मिसाली औ़रत" में अबू मअ़शर से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने क़सम खाई थी, जब तक सौ आदमियों से मश्विरा न कर लूँ निकाह नहीं करूँगा। जब निन्नानवे पूरे हो गए तो एक ही बाक़ी रहा, सोचा जो भी रास्ते पर निकलेगा उससे मश्विरा कर लूँगा। एक मजनूँ (पागल) सा शख़्स नज़र आया उससे सलाम के बाद पूछा एक परेशानी का हल चाहता हूँ? वह यह कि औ़रतों से मैंने बहुत तकलीफ़ उठाई है, अब क़सम खा ली कि जब तक सौ से मश्विरा न कर लूँ निकाह नहीं करूँगा, निन्नानवे से कर चुका अब तुम सौवें हो। तुम बताओ मुझे क्या करना चाहिए?

उसने कहा औ़रतें तीन क़िस्म की होती हैं:

एक वह जो तुम्हारे लिए है, एक वह जो तुम पर मुसल्लत की गई है, एक वह जो न तुम्हारे लिए है ने तुम पर मुसल्लत की गई है। ऐसी औ़रत से निकाह करना चाहिए जो सिर्फ़ तुम्हारी हो और तुम्हारे लिए हो, वह यह है:

فـامّـا الّتى لك: فشـابّة ظـريفة لم تمسّهـا الرجـال، ان رأت خيرًا حمدت، وان رأت شرًّا قالت : الرجال كذا.

तर्जुमाः हंस-मुख नौजवान लड़की, जिसको किसी मर्द ने न छुआ हो। अगर वह तुममें कोई भलाई देखे तो अल्लाह का शुक्र अदा करे उसकी तारीफ़ बयान करे, और अगर तुम में कोई बुराई देखे तो कहे तमाम लोग ऐसे ही होते हैं।

यानी यह न सोचे की फ़ुलानी के शौहर देखो ऐसे ऐसे हैं, काश! मैं इस घर में न आती, मैं कहाँ फंस गई। बल्कि यह सोचे जो कुछ हुआ अल्लाह की तरफ़ से हुआ। यहाँ एक क़िस्म की तकलीफ़ है वहाँ किसी और क़िस्म की होगी।

बाक़ी दो औरतों का ज़िक्र हम इसलिए नहीं करते कि उनका तज़किरा आपके लिए मुफ़ीद नहीं है, सिर्फ़ हमें यह समझाना है कि आप अपने अन्दर यह सिफ़त पैदा कर लें। कोई भलाई पेश आए तो अल्लाह की तारीफ़ बयान कीजिए और शौहर का शुक्र अदा कीजिए और अगर कोई तकलीफ़ पेश आए तो सोच लीजिए कि हर घर में कुछ न कुछ तकलीफ़ तो होती है।

मियाँ-बीवी की मुहब्बत की एक मिसाल

बीवी शौहर के साथ मुहब्बत, इताअ़त वाला मामला करे तो शौहर को वह अपना आशिक़ बना लेती है। अपना आक़ा और गुलाम दोनों बना लेती है। ख़ादिमा बन जाए तो शौहर भी उसका ख़ादिम, उसका आशिक़, उसका राज़दार व मुशीर बन जाता है।

मगर शुरू में नई दुल्हन को कुर्बानी देनी पड़ती है। उसकी एक मिसाल तो आप हज़रत ज़ैनब बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वाक़िए में पढ़ चुके हैं कि ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपनी माँ हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से वे ख़ूबियाँ सीखी थीं जिनके ज़रिये अपने शौहर को अपना सच्चा दोस्त, जीवन-साथी, ख़ुशी व ग़म का

साथी बना लिया था।

जब उनके शौहर से सारे कुरैश ने कहा था:

فارق صاحبتك ونحن نزوجك أى امرأة من قريش.

तर्जुमा: अपनी बीवी को तलाक़ दे दो, फिर कुरैश की जिस औरत से तुम कहोगे उससे हम तुम्हारी शादी करवा देंगे। मगर (नऊज़ु बिल्लाह) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी को अपने घर में मत रखो।

मगर हज़रत अबुल-आस जो उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे कहने लगे:

لا والله انى لا افارق صاحبتى، وما أحب أن لى بامرأتى امرأة من قريش.

नहीं! क़सम खुदा की मैं अपनी बीवी को छोड़ नहीं सकता और मुझे यह पसन्द नहीं कि मेरी बीवी (ज़ैनब) के बदले मुझे कुरैश की कोई भी और औरत मिल जाए।

ग़ौर कीजिए! इत्ताअ़त से मुहब्बत के इज़हार से बीवी अपने शौहर के दिल में कैसे जगह बना लेती है।

क़बीला कुरैश की सारी बिरादरी उनसे तलाक़ देने पर इसरार कर रही है और कुरैश की ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत औरत देने पर राज़ी है मगर यह अबुल-आस कह रहे हैं मुझे कोई और औरत मन्ज़ूर ही नहीं है, ज़ैनब का कोई और मुक़ाबिल हो ही नहीं सकता, मैं ज़ैनब के बदले किसी और को लेने के लिए तैयार नहीं हूँ। क्या इसमें किसी मुसलमान लड़की के लिए कोई नसीहत है? कि वह भी अपने शौहर के साथ ऐसा ही मामला रखे कि वह भी इस पर मजबूर हो जाए कि इस ख़िदमत गुज़ार बीवी का बदल मुझे कभी भी और कहीं भी नहीं मिल सकता।

इसी तरह एक अ़रब देहाती जो क़बीला बनी-अ़ज़रा के थे, उनसे किसी हसीन लड़की का निकाह हुआ। जब उस देहाती के पास पैसा न रहा तो लड़की के बाप ने ज़बरदस्ती घर बैठा लिया। शौहर मरवान के पास पहुँचा, मरवान ने लड़की और उसके वालिद को बुलाया, मरवान को

यह लड़की इतनी पसन्द आई कि ज़बरदस्ती तलाक़ दिलवाकर इद्दत के बाद लड़की के वालिद को ख़ुश करके उस लड़की से मरवान ने निकाह कर लिया।

शौहर उसकी मुहब्बत में फ़रेफ़्ता था। शौहर अमीर (बादशाह) के पास शाम (मुल्क सीरिया) पहुँचा। क़ाज़ी ने लड़की को बुलवाया और मरवान को ख़ूब डाँटा। मरवान ने माज़िरत चाही कि लड़की ऐसी थी कि मैं इसमें माज़ूर हो गया। अमीर ने उस पुराने शौहर के सामने लड़की को बुलवाया और फ़ैसला करवाना चाहा।

अमीर की निगाह जब उस औरत पर पड़ी तो अमीर ने अपने निकाह के लिए मनवाने की कोशिश की। अमीर ने पहले उसके शौहर से पूछा, तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर मैं इससे निकाह कर लूँ? शौहर ने बिल्कुल इनकार किया और दो शे'रों में ख़िदमत गुज़ार बीवी की मुहब्बत को ज़िक्र किया।

والله والله لا انسى محبتها حتى أغيب في قبرى وأحجارى

كيف أسلوا وقد هام الفواد بها فان فعلت فانى غير كفارِ

तर्जुमा: अल्लाह की क़सम! अल्लाह की क़सम! मैं उस औरत की मुहब्बत को भूल नहीं सकता यहाँ तक कि मैं क़ब्र में चला जाऊँ और मेरा जिस्म मिट्टी-मिट्टी हो जाए।

कैसे मैं उस बीवी को छोड़कर अपने आपको तसल्ली दे सकता हूँ हालाँकि मेरे दिल का हर गोशा उसकी मुहब्बत में भरा हुआ है। अगर मैंने ऐसा कर भी लिया तो उस बीवी ने मुझे जो मुहब्बत और इताअत दी है उसका शुक्रिया व बदला मैं अदा नहीं सकूँगा बल्कि मैं उसके एहसान की नाक़द्री करने वाला हूँगा।

फिर बीवी से पूछा कि तुम्हारा क्या ख़्याल है?

ياسعدى أيناأحب اليك الامير فى عزه وشرفه وقصوره ؟ أومروان

فى غضبه واعتدائه أو هذاالاعرابِى فى جوعه وأطماره؟

तर्जुमाः तुम मुझसे निकाह करना चाहती हो ताकि इ़ज़्ज़त व शराफ़त के साथ महलों और सोने चाँदी में रहो। या मरवान के पास जाना चाहती हो जिसने तुम्हारे पुराने शौहर पर तुम्हारे वालिद की मिली भगत से ग़ज़ब करके ज़ुल्म किया। या उस पुराने देहाती शौहर के पास जाना चाहती हो, ग़रीबी व फ़ाक़े और झोंपड़ी में और परेशानी में और मुसीबतों व बलाओं में दोबारा लौटकर जाना चाहती हो? तुम कहाँ जाना चाहती हो?

उस औ़रत ने अ़रबी अश्आ़र में जवाब दिया। काश! आज मुसलमाना लड़कियों को अ़रबी भाषा आती तो हमारा हाल कुछ और ही होता। हम उन शे'अ़रों का तर्जुमा पेश करते हैं लेकिन उसका मतलब किसी ज़बान में भी नहीं समझा जा सकता। इसका हक़ीक़ी मतलब तो वही समझ सकती है जिसको अ़रबी भाषा आती हो। काश मुसलमान औ़रतों में अ़रबी सीखने का ज़ौक़ व शौक़ पैदा हो जाए। अगर आप ख़ुद नहीं सीख सकीं तो अपनी बच्चियों और बहनों को ज़रूर अ़रबी भाषा सिखाईए।

هذا وان كان فى جوع وأطمار   أعز عندى من أهلى ومن جارى

وصاحب التاج أو مروان عامله   وكل ذى درهم منهم ودينار

तर्जुमाः मुझे तो यह देहाती ही पसन्द है अगरचे यह भूख व झोंपड़ी में है, लेकिन उसने मुझे इतनी मुहब्बत दी है, मेरे साथ ऐसा अच्छा सुलूक किया है कि मेरी निगाह में मेरे घर वालों और रिश्तेदारों के मुक़ाबले में अब सबसे ज़्यादा प्यारा और सम्मानित व महबूब शख़्स यही देहाती है। जहाँ तक अमीर या उसके हाकिम मरवान का ताल्लुक़ है तो कोई उनमें दिर्हम वाला है कोई दीनार वाला, यानी कोई सोना देगा, कोई चाँदी देगा, लेकिन मुहब्बत व प्यार, उलफ़त तो इसी देहाती से मिलेगी। अगर आप मुझे इस शौहर के पास जाने दें तो यह आपका एहसान व करम होगा।

अल्लाह करे तमाम मियाँ-बीवी में ऐसी ही मुहब्बत हो, ऐसी ही उलफ़त हो। एक दूसरे के लिए फ़ना होने वाले, एक दूसरे के लिए भलाई चाहने वाले, एक दूसरे के लिए दुआ करने वाले, एक दूसरे को दीन पर उभारने और तहज्जुद में एक दूसरे को उठाने वाले, अल्लाह के रास्ते में दीन को फैलाने के लिए फिरने वाले बनें और बनाएँ। आमीन या रब्बल् आलमीन।

ख़ूबसूरत बीवी कौनसी होती है?

अ़रब के लोग कहते हैं कि ख़ूबसूरत बीवी वह नहीं होती जिसको आदमी एक बार देखकर उसका गिर्वीदा व फ़रेफ़्ता हो जाए लेकिन जब उसके पास जाए और उससे नज़दीक हो तो वह अपने बुरे अख़्लाक़ के एतिबार से ख़ूबसूरत न हो। बल्कि ख़ूबसूरत बीवी वह होती है:

بل الجميلة التى كلما كررت بصرك فيها زادتك حسنًا.

जिसको जितनी बार देखो और जिस हाल में देखो और जिस अन्दाज़ से दखो, लेकिन तुम्हारी नज़रों में उसका हुस्न बढ़ता ही जाए।

असली ख़ूबसूरत बीवी वही होती है जिसको जितनी बार देखें उसके हुस्न में ज़्यादती ही होती रहती है।

यानी उसको तंगदस्ती के हाल में देखें या अमीरी में देखें दोनों में उसके होंठों पर तबस्सुम (मुस्कुराहट) के मोती बिखरे हुए होते हैं।

परेशानी व ख़ुशी दोनों हालतों में वह शौहर को तसल्ली और तशफ़्फ़ी देती रहती है।

बच्चों का रोना और उनका तंग करना, शौहर का सफ़र पर जाना और अपनी ख़ुद की बीमारी का बढ़ जाना, सब हालात में उसको देखें लेकिन उसके चेहरे के रंग में कोई फ़र्क़ नहीं आता, वह हर हाल में अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहकर शुक्र ही करती रहती है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान बीवी को ऐसी ही जमीला (ख़ूबसूरत) बनाए।

एक बुढ़िया जो बहुत ही ख़ूबसूरत और आकर्षक चेहरे की मालिका

थी, उससे किसी नौजवान लड़की ने पूछा- अम्माँ! आपने ख़ूबसूरती के लिए कौनसी चीज़ें प्रयोग की हैं, जिससे आपके चेहरे से इतना नूर टपक रहा है? बुढ़िया ने कहा:

استخدم لشفتي الحق، ولصوتي الذكر، ولعيني غض البصر، ولبدني الاحسان، ولقوامي الاستقامة، ولقلبي حب الله ولعقلي الحكمة، ولنفسي الطاعة، ولهواى الايمان.

तर्जुमा: बेटी! मैंने अपने होंटों पर हमेशा हक़ की लाली लगाई। अपनी ज़बान को हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रखा। जिन चीज़ों को अल्लाह ने देखने से मना किया है उनको देखने से बचने का अपनी आँखों में सुर्मा लगाया। अपने हाथों में एहसान यानी "अ़ता करने" की मेहंदी लगाई (सबको देना सीखा और लेना सिर्फ़ अल्लाह ही से सीखा, देकर खुद इस्तेमाल करना, खिलाकर खाना, पहना कर पहनना यह है मुसलमानी)।

और अपने आमाल पर इस्तिक़ामत (सही और हक़ राह पर जमे रहने) का पावडर लगाया। अपने दिल पर अल्लाह की मुहब्बत का सिक्का जामाया। अपनी अ़क़्ल पर समझ व बसीरत को ग़ालिब किया। अपने नफ़्स पर इताअ़त को लाज़िम ठहरया। अपनी हर ख़्वाहिश को इस ध्यान से बाँधा कि "अल्लाह देख रहा है"।

दोबारा इसको ग़ौर से पढ़िये और ख़ूब गिड़गिड़ा कर अल्लाह से दुआ माँगिए ऐ अल्लाह! आपने जो अपना करम उस बुढ़िया पर फ़रमाया था वह मुझ पर और आ़म मुसलमान बहनों पर फ़रमा। और ये सिफात हम सब में पैदा फ़रमा। आमीन या रब्बल् आ़लमीन।

याद रखिए! ख़ूबसूरत होने का बड़ा सबब "इताअ़त" है। शौहर की फ़रमाँबरदारी और इताअ़त तो बीवी की फ़ितरत में शामिल होनी चाहिए। क्योंकि यह वही शौहर है जो उसके लिए दिन-रात एक करता है। लगातार मेहनत करता है। मुसलसल अपने आपको थकाता है। इसका

हक़ तो इससे कहीं बढ़ा हुआ है। इसलिए ख़ैर और भलाई के कामों में उसकी इताअ़त और ताबेदारी फ़र्ज़ है।

इसी लिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा औ़रतों को अपने शौहरों के बारे में वसीयत करती थीं और सख़्त लहजे में फ़रमाती थीं:

يا معشر النساء، لو تعلمن بحق ازواجكن عليكن، لجعلت المرأة منكن

تمسح الغبار عن قدمی زوجها بخدِّ وجهها. (راوه ابن حبان فی صحیحه)

तर्जुमा: ऐ औ़रतों की जमाअ़त! अगर तुम जान लेतीं कि तुम पर तुम्हारे शौहरों के क्या हुक़ूक़ हैं तो तुम उनके क़दमों की धूल को अपने चेहरे के रुख़्सारों से साफ़ करतीं।

इताअ़त और फ़रमाँबरदारी औ़रत को ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत बना देगी। इताअ़त मुहब्बत को खींचेगी। औ़रत मुहब्बत का चश्मा और स्रोत है। और जब घर प्यार-मुहब्बत में डूबा हुआ होता है तो औ़रत का दामन भी ख़ुशियों से भर जाता है और दोनों को इताअ़त से फ़ायदा होगा इसलिए कि यह किसी तरह मुम्किन नहीं है कि जो औ़रत ढेरों प्यार दे, अपने शौहर और बच्चों पर शफ़क़त व मुहब्बत और रहमत के आँसू निछावर कर दे, फिर उसको उससे फ़ायदा न हो।

इसलिए कि औ़रत ज़ात ही ऐसी ख़ूबसूरत है जो ख़ानदान को नूर, बरकत और सआ़दत से हमकिनार करती है। मर्द ऐसी फ़रमाँबरदार बीवी से बेहद ख़ुश होता है। जब उसकी बीवी के होंटों पर मुस्कुराहट मोतियों की लड़ी की तरह सजती है, जब उसकी आँखों पर नज़र पड़ती है तो वहाँ प्यार की गर्मी, मुहब्बत की मिठास और फ़ितरी ख़ूबसूरती उन आँखों से झलकती नज़र आती है।

प्यार की इस फ़िज़ा का क़ायम रखना बड़ी अहम ज़िम्मेदारी है। जो औ़रत के कमज़ोर कन्धों पर आती है। क्योंकि इस जैसे कामों के लिए मर्दों की क़ुव्वते इरादी के मुक़ाबले में औ़रतों की क़ुव्वते इरादी कहीं ज़्यादा होती है।

सेहतमन्द ख़ानदान की बुनियाद ही हमेशा आपसी मेल-मुहब्बत, रहमदिली और सच्चाई पर आधारित होती है, ताकि ख़ानदान का हर फ़र्द खुशी-खुशी अपना फ़र्ज़ (ज़िम्मेदारी) अन्जाम दे सके। उसे किसी उकताहट और बेचैनी का एहसास न हो।

औरत की ख़ूबसूरती उसकी इताअ़त के साथ होती है। जितनी वह शौहर की फ़रमाँबरदारी करेगी उतनी ही ख़ूबसूरत होगी। इसलिए कि औरत अपनी सारी अदाओं और इश्क़ व नाज़ के तीरों से लैस होने के बाद भी मर्द की क़द्दावर शख़्सियत के आगे बेबस है। उसकी कमज़ोरी और बेबसी ज़ाहिर है, और आख़िरकार जल्द ही मजबूर होकर उसे मर्द की ताबेदारी और इताअ़त के लिए अपना सर झुका देना होगा। आदाब व अख़्लाक़ से सुसज्जित होकर आईन्दा हर क़िस्म की नाफ़रमानी से बचना होगा। इसलिए कि जब तक बीवी फ़रमाँबदार और मर्द की हाँ में हाँ मिलाने वाली न होगी, मर्द उसके हुस्न के जलवों से मुतास्सिर और नाज़ व अन्दाज़ से घायल नहीं हो सकता।

एक हदीस में नाफ़रमान बीवी के लिए बहुत ही शदीद वईद (सज़ा की धमकी) आई है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान लड़की की इससे हिफ़ाज़त फ़रमाए। दो तरह के आदमियों की नमाज़ें उनके सर से ऊपर नहीं बढ़तीं, एक वह गुलाम जो अपने आक़ा से भाग गया हो, यहाँ तक कि वापस लौट जाए। और एक वह बीवी जो शौहर की नाफ़रमान हो यहाँ तक कि फ़रमाँबरदारी की तरफ़ दोबारा लौट आए।

(तबरानी व हाकिम फी मुस्तदरक)

इसलिए मुसलमान बीवी को चाहिए कि इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि शौहर की निगाह में हक़ीक़ी ख़ूबसूरती "इताअ़त" है। इसलिए शौहर की ख़ूब माने, जिस काम को करने के लिए कहे कभी भी उसके ख़िलाफ़ न करे और जिस पर "ना" कह दे हमेशा उससे बचती रहे। अगर नेक बीवी ने अपने अन्दर एक यह सिफ़त पैदा कर ली तो वह पावडर लगाए बिना और किसी ब्यूटी पार्लर में जाए बिना और

किसी मैकअप के बिना सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत बीवी मानी जाएगी।

शौहर के दिल के बन्द ताले खोलने के चाबियाँ

शौहर के दिल के बन्द तालों को बीवी कैसे खोल सकती है? शौहर कैसा ही हो जो बीवी की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह न देता हो, लेकिन कुदरत ने औ़रत को एसी तबई रंगीनियाँ, सुरीली आवाज़, मुस्कुराहट बिखेरने वाली पेशानी, नरम आ़दत और नरम बोलने वाली ज़बान, माईल करने वाले और घायल करने वाले दो होंठ, दिलजोई और दिलदारी करने वाली दो आँखें, नर्म व नाज़ुक हाथों की उंगलियों के पोरे दिये हैं, कि नेक बीवी इनको इस्तेमाल करके अपनी हर अदा और हर आवाज़ से शौहर को अपना और सिर्फ़ अपना बना सकती है।

कोई औ़रत अगर यह कहती है कि मुझे कोई ऐसा तावीज़ दो कि मेरा शौहर मुझसे मुहब्बत करने लगे तो उस पर बहुत ही ताज्जुब होता है, कि अल्लाह तआ़ला ने जब उसकी हर अदा, हर आवाज़, हर निदा, हर ज़र्रे-ज़र्रे को तावीज़ बनाया हुआ है, उसकी हर चीज़ में जादू से ज़्यादा असर रखा है, फिर यह किसका तावीज़ माँगती है?

हाँ शौहर अगर तावीज़ माँगे कि "बीवी मुझसे मुहब्बत करने लग जाए तो समझ में आने वाली बात है" उस पर ग़ौर किया जा सकता है। उसको तदबीरें बतलाई जा सकती हैं। लेकिन औ़रत का जिस्म, उसके चेहरे के नुकूश उसकी आवाज़ और सबसे बढ़कर उसकी जाँनिसारी और हमदर्दी वाली सिफ़त में वह तासीर है जिसका कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता।

कहते हैं कि 130 मन्ज़िल की इमारत के ऊपर कोई औ़रत खड़ी हो और मर्द नीचे से गुज़र रहा हो तो आ़म तबीयतों के मुवाफ़िक़ लाज़िमी तौर पर उस मर्द की तवज्जोह औ़रत की तरफ़ जाएगी। कशिश के एतिबार से ज़मर्रुद का कोई पत्थर, मक़्नातीस का कोई टुकड़ा उतना असर नहीं रखता होगा जितना औ़रत मर्द पर असर रखती है।

मनोविज्ञान के माहिरीन का कहना है कि अगर किसी ख़ाली मैदान में मुर्दा हड्डी एक औरत की और एक मर्द की रख दी जाए तो भी उन दोनों में मैलान हो जाए। (तोहफ़तुल् उरूस)

इसी लिए दीन के आ़लिमों (फुक़हा) ने बूढ़ी से बूढ़ी औरत नानी परनानी भी हो चुकी हो, फिर भी उसके लिए बिना मेहरम के सफ़र करना जायज़ क़रार नहीं दिया। इसलिए कि हो सकता है कि उस परनानी को चाहने वाला कोई परनाना आ जाए। औरत की तवज्जोह और मुस्कुराहट, चेहरे के नाक-नक़्शे और इशारों ही में इतनी तासीर है कि वह मर्द के दिल में जगह बनाकर उसको अपना बना सकती है।

फूलों का हुस्न व जमाल एक तरफ़, शाख़ों के लचकने और बल खाने के अन्दाज़ एक तरफ़, जंगल और उसके सिलसिलों की बहार और दिलफ़रेब अन्दाज़ एक तरफ़, टीलों और चोटियों की शादाबी एक तरफ़, नेरोबी के नेशनल पार्क (ज़ू) की सैर एक तरफ़, बावे डोज़ और मोरेशश के द्वीपों की छुट्टियाँ एक तरफ़ और नेक फ़रमाँबरदार बीवी का मुस्कुराहट के साथ शौहर को लब्बैक कहना एक तरफ़। "मैं हाज़िर हूँ-मैं हाज़िर हूँ" "कहो जाने-मन क्या हुक्म है"।

एक तरफ़ परिन्दों का शोर, तारों की सरगोशी, सुबह की ठंडी हवा के झोंकों के नग़मे, दुनिया भर के गवैयों और क़व्वालों की क़व्वालियाँ और संगीत एक तरफ़, नेक बीवी की बेलालच मुहब्बत, हुस्न व जमाल, सजे हुए और शाइस्ता जज़्बात, हद से ज़्यादा सम्मानित और स्थापित ताल्लुक़ का जीता-जागता तसव्वुर एक तरफ़।

यह हक़ीक़ी नेक फ़रमाँबरदार बीवी का एक ख़ाका है, जबकि नेक बीवी शौहर से सच्ची मुहब्बत करने वाली, नर्मी व शफ़क़त, मेल व मुहब्बत नज़रों और होंठों के तबस्सुम के साथ पेश आने वाली उससे कहीं ज़्यादा तरोताज़ा और रंगीन है।

इसलिए समझदार बीवी को शौहर की मुहब्बत चाहने या उसमें इज़ाफ़े के लिए कोई तावीज़ देने की ज़रूरत नहीं, लेकिन फिर भी कोई

इस बारे में किसी तदबीर की ज़रूरत महसूस करे या किसी के मुक़द्दर में कोई ऐसा शौहर आ गया हो जिसको समझदारी से घायल व माईल करने की ज़रूरत है तो हम उसके दिल के बन्द ताले खोलने के लिए पाँच चाबियाँ पेश करते हैं, ताकि नेक बीवी इन सब बातों का एहतिमाम (पाबन्दी) करे और अपने घर में मुहब्बत की फ़िज़ा क़ायम करे, ताकि दीन व दुनिया दोनों की ख़ैर और भलाई, ताज़गी और बरकत नसीब हो, मियाँ-बीवी आपस में मुहब्बत और शफ़क़त से रहें।

(1) निगाह

सबसे पहली चीज़ मर्द के दिल व दिमाग़ पर हमला करने वाली उसकी निगाह है। पहले उसकी आँख फ़ैसला करती है कि यह मेरे लिए कैसी रहेगी? फिर उसका दिल इसकी तस्दीक़ करता है हाँ या नहीं।

अगर उसकी निगाह बीवी की अच्छी हालत, अच्छे साफ़-सुथरे चेहरे व लिबास पर पड़ती है तो उसके दिल में मुहब्बत उतर जाती है और मुहब्बत उसके दिल में अपना ठिकाना व घर बना लेती है। इसी लिए अरब की एक विद्वान औरत ने अपनी बेटी को यही नसीहत की थी।

فلا تقع عينه منك على قبيح .

तुम्हारे शौहर की आँख कभी तुम पर किसी बुरी व गन्दी हालत में न पड़ने पाए। यानी हमेशा सफ़ाई का ख़्याल रखना।

इसी तरह औरत को चाहिए कि अपने आपको साफ़-सुथरा रखने के साथ-साथ अपने सोने के कमरे और बच्चों की सफ़ाई का भी ध्यान रखे, ताकि शौहर की निगाह बुरी या गन्दी चीज़ों पर न पड़े और उसका दिल मैला न कर दे।

इसी लिए बाज़ मनोविज्ञान के माहिरीन ने लिखा है कि हमने बहुत से मर्दों की राय इकट्ठी की हैं, तो हमें मालूम हुआ कि कमरे का साफ़-सुथरा होना और उसमें हरे रंग के पौधे रखना या कुछ फूल वग़ैरह रखना या इसी तरह बेजान ख़ूबसूरत कुदरती चीज़ों की तस्वीरें

(सीनरियाँ) फ्रेम करके लगाना और बिस्तर पर साफ़-सुथरी सफ़ेद चादर, जिस पर सलीके से रखे हुए ख़ूबसूरत तकिये दिल को राहत और सुकून देने में बहुत ही ज़्यादा मददगार साबित होते हैं, अपने छोटे हवादार कमरे में पहाड़ियों और हरे-भरे जंगलात, ख़ूबसूरत फूलों के बाग़ात का तसव्वुर इनसान के दिल व दिमाग़ को राहत पहुँचा सकता है। अल्लाह तआ़ला ने घर में जो कुछ अ़ता फ़रमाया है चाहे कितनी ही छोटी नेमत हो, लेकिन सफ़ाई व तरतीब से रखने से उस नेमत की अहमियत बढ़ जाती है।

(2) सुनना

नेक बीवी की एक ही सुरीली आवाज़ मर्द को गिर्वीदा फ़रेफ़्ता व आ़शिक़ बनाने के लिए काफ़ी है। हमें बहुत ही ताज्जुब होता है, इन्तिहाई हैरत होती है जब कोई औ़रत आकर यह कहती है-

"मेरा शौहर मुझे बहुत मारता है, डाँटता है, मेरी बात नहीं मानता, मुझे कहीं लेकर नहीं जाता"।

हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने उसको इतनी प्यारी आवाज़ दी है, अगर वह उसका सही इस्तेमाल कर ले तो क्या कोयल की कूक, परिन्दों के नग़मे, मैना का चहचहाना, तितलियों का अलबेलापन, लाला (फूल) की रंगीनी, शबनम की ठंडक, शफ़क़ (सूरज छुपने के बाद रहने वाली आसमान) की सुर्ख़ी, ये सारे मनाज़िरे क़ुदरत एक तरफ़ लेकिन नरम-दिल व फ़रमाँबरदार बीवी का एक मीठा बोल जो गोया कौसर व तस्नीम की (जन्नत की नहरों के नाम) नहर से धुला हुआ एक फूल है, कि जी! मैं हाज़िर हूँ कहिये क्या हुक्म है? शौहर के दिल को लुभाने और मुर्दा दिल में ज़िन्दगी की नई उमंग पैदा करने दिल की मुर्दा कियारियों में नये वलवलों और नये हौसलों के फूल खिलाने के लिए यह एक ही बोल बहुत ही ज़्यादा काफ़ी है।

इसके नरम व सुथरे लहजे से शौहर की काया पलट सकती है।

उसकी निगाह में फ़र्क़ आ सकता है। उसकी अ़क़्ल ठिकाने आ सकती है। उसकी बीमारी दूर हो सकती है। उसकी जवानी दोबारा लौट सकती है। इसलिए औ़रत को चाहिए कि ख़ूब समझदारी से काम ले कि किस वक़्त क्या कहना है, कहाँ चुप रहना है, कहाँ नरम बोल बोलना है, कहाँ ज़ोर से बोलना है, इन सब मौक़ों का ख़्याल रखे कि ये सब वे रास्ते हैं जो शौहर के दिल तक पहुँच जाते हैं और यह ख़ास कर कान का दरवाज़ा ऐसा है कि इससे एक बार कोई बात अन्दर चली जाए तो बहुत मुश्किल सें खुरचने के बाद निकल जाए तो ख़ैर! वरना मौत तक सुनी हुई बात भुलाई नहीं जा सकती।

अल्लाह रहम करे उस शायर पर जिसने कहा है:

كلمات السنان لها التيام ولا يلتام ما جرح اللسان

तर्जुमाः तीरों व तलवारों से जो ज़ख़्म लगते हैं, उनको दवाओं के ज़रिये भरा जा सकता है, किसी दिन वे ठीक हो सकते हैं, लेकिन जो ज़ख़्म ज़बान के ज़रिये से लगते हैं वे भरे नहीं जा सकते। वे हमेशा हरे-भरे रहते हैं।

अल्लाह तआ़ला मियाँ-बीवी दोनों को अच्छी ज़बान इस्तेमाल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। दोनों एक दूसरे से कोई बुरी बात न सुनें। बीवी को चाहिए कि ताने बिल्कुल न दे। जैसे आप तो हमें कहीं नहीं ले जाते, हमारे घर में देखें कोई अच्छी चीज़ है? फ़ुलानी के घर देखें कैसे पर्दे, अलमारी, फ़्रिज वग़ैरह हैं, हमारे घर में देखें यह भी कोई दीन है कि दूसरों पर तो ख़ूब ख़र्च करें अपना घर फ़क़ीरों की तरह रहे।

ऐसे ताने शौहर को बिल्कुल न सुनाए। इससे रही-सही मुहब्बत भी ख़त्म हो जाएगी। पहले उसको अपना आ़शिक़ बनाएँ फिर अलमारी पर्दे सोफ़े सब आ जाएँगे। पानी माँगोगी तो गिलास आ ही जाएगा। इसलिए पहले उसके दिल में जगह बनाने की कोशिश करो, फिर वह ख़ुद पूछेगा तुम्हारे लिए क्या लाऊँ तो कहो फ़ुलानी चीज़ अगर आप मुनासिब समझते हैं तो ला दें। जिसकी तफ़सील और इसका तरीक़ा पहले आ

चुका है।

(3) सूँघना

कुछ लोगों को इसका तसव्वुर ही नहीं होता कि कुदरत ने सूँघने की ताक़त में कितनी तासीर रखी है। खुसूसी तौर से जिन्सी सम्बन्ध के अन्दर सूँघने की ताक़त तो विद्वानों के यहाँ भी माना हुआ मसला है। कहते हैं कि हर औरत के गुदूद के ज़रिये खालों से एक ऐसी ग़ैर-महसूस खुशबू महकती है जो मर्दों की अक्लों को खो सकती है, और सदियों से मर्द औरत की तरफ़ उसी महक की वजह से माईल होते हैं। जिस औरत में जितनी ज़्यादा यह महक होती है मर्द उसकी तरफ़ उतने ही ज़्यादा आकर्षित होते हैं। और जिस में यह कम होती है उसकी तरफ़ कम मैलान होता है। वल्लाहु आलम। (मिसाली औरत)

इसलिए औरत को चाहिए कि वह शौहर के लिए ऐसी खुशबू का इस्तेमाल रखे जो उसकी नाक के ज़रिये उसके दिल व दिमाग़ तक पहुँचे और ऐसी ख़ुशबू हो जिसका रंग ज़्यादा हो, महक कम हो, जैसे खुशबूदार मेहंदी, ज़ाफ़रान वग़ैरह।

इसमें औरतें मर्दों से ज़्यादा माहिर हैं कि कौनसी ख़ुशबू किस वक़्त इस्तेमाल की जाए। इसी तरह एक सुन्नत यह भी है कि औरत अपने शौहर को भी खुशबू लगा दे। अगर आपने कभी अपने शौहर को खुशबू नहीं लगाई तो अब ज़रूर लगाईए।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एहराम के कपड़ों पर ख़ुशबू लगाती थी, एहराम की नीयत करने से पहले। देखिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा या हज के लिए तशरीफ़ लेजा रहे हैं और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा खुद अपने हाथों से खुशबू लगा रही हैं। यह मियाँ-बीवी में मुहब्बत का एक अहम ज़रिया है।

कुछ लोग यह समझते हैं कि हमेशा औरत से दूर रहना इबादत है या मुजाहदा है, या कुर्बानी है, यह बिल्कुल ग़लत है। हुज़ूरे अकरम

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम सब के लिए बेहतरीन नमूना हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एतिकाफ़ में तशरीफ़ फ़रमा हैं। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा अपने मख़सूस हालात (यानी माहवारी की हालत में होने) की वजह से मस्जिद में जा नहीं सकतीं, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपना सर मुबारक मस्जिद के बाहर कर देते हैं और हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कंघी कर देती हैं। क्या इसमें नमूना है उन लोगों के लिए जो औ़रत से दूर रहने को सवाब या इबादत समझते हैं?

अल्लाह तआ़ला हम सब मुसलमानों को दीन की सही समझ अ़ता फ़रमाए और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक-एक सुन्नत पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

ग़र्ज़ यह कि अगर आपने कभी अपने शौहर के बालों में कंघी नहीं की तो आज से इस सुन्नत पर अ़मल शुरू कर दें, और आईन्दा अपने शौहर को आ़म नमाज़ों और जुमा की नमाज़ के लिए जाने से पहले, एहराम की नीयत से पहले, घर से निकलते वक़्त ख़ुशबू अपने हाथों से लगाएँ। इसी तरह अपने हाथों से उनके सर के बालों में और दाढ़ी में कंघी कर दें, इन्शा-अल्लाह तआ़ला मुहब्बत तो इससे बहुत ही बढ़ेगी और सुन्नत का सवाब अलग मिलेगा।

इसी तरह औ़रत को शौहर के नाक का भी बहुत ही ख़्याल रखना चाहिए। ऐसा न हो कि बीवी के जिस्म से बदबू आ रही है, दाँत गन्दे हों, कपड़ों से पसीना की बू आ रही हो, कमरे में बदबू हो, बाथरूम साफ़ न हो, तौलिया गन्दा हो, इन सब में सफ़ाई के बाद ख़ुशबू छिड़क देनी चाहिए ताकि शौहर उस बीवी से ख़ुश रहे और दोनों मुहब्बत से रहें और शैतान को उस घर में आने का मौक़ा न मिले और इस नसीहत को याद रखना चाहिए जो अमामा बिन्ते हारिस ने अपनी बेटी को की थी- कि सुर्मा और पानी का इस्तेमाल अधिक रखना, सुर्मे से अच्छी ख़ूबसूरत लगोगी और पानी यानी वुज़ू गुस्ल ख़ूब ज़्यादा करना, इससे बदबू नहीं आएगी और ख़ुशबू बढ़ेगी।

मुँह और दाँतों की सफ़ाई की अहमियत

मुसलमान बीवी को यह बात हमेशा ख़्याल रखनी चाहिए कि वह जितनी साफ़-सुथरी होगी उतनी ही अल्लाह की मुक़र्रब (क़रीबी) होगी और फ़रिश्ते भी उसके नज़दीक रहेंगे। और जितनी गन्दी और बदबू वाली होगी उतनी ही शैतान और उसके साथियों के नज़दीक होगी। इस्लाम ने बहुत ही अहमियत के साथ सफ़ाई पर ज़ोर दिया है।

ग़ौर कीजिए! अगर कोई औरत गन्दे और बदबू वाले मुँह से नमाज़ पढ़ती होगी तो फ़रिश्तों को कितनी तकलीफ़ होती होगी। जिस मुँह से अल्लाह का ज़िक्र किया जाए, कुरआन करीम की तिलावत की जाए, उसको साफ़-सुथरा न रखना कितनी बुरी बात है। जिस्म के ऊपर ख़ूब अच्छे-अच्छे पावडर मल लेना, प्रफ़्यूम छिड़क लेना, यह हक़ीक़ी सफ़ाई नहीं, सफ़ाई का सच्चा मेयार तो यह है कि मुँह में बदबू न आती हो, दाँत साफ़ हों, बदन के ग़ैर-ज़रूरी बाल काट दिए गए हों, नाक अच्छी तरह साफ़ हो, बड़े-बड़े नाख़ुन कटे हुए हों, उंगलियों के पोरे चमकते हुए मोती की तरह साफ़-सुथरे हों। पाँव के तलवे साफ़ हों, सर के बाल साफ़ और कंघी किए हुए हों।

यह है सफ़ाई का मेयार। किसी औरत को अपनी सफ़ाई का मेयार जाँचना हो कि आया मैं साफ़-सुथरी कहलाने की मुस्तहिक़ हूँ या नहीं, तो इन चीज़ों में सफ़ाई-सुथराई देख ले। फिर बावर्चीख़ाना, फ़्रिज, बाथरूम इनकी सफ़ाई देख ले। हर वक़्त इनकी सफ़ाई का फ़िक्र रहे तो समझ ले कि अल्हम्दु लिल्लाह मुझे सफ़ाई से मुहब्बत है। या फिर अपने से समझदार किसी औरत को बुलाकर पूछ ले कि मेरे अन्दर कोई ऐब की बात हो, कहीं गन्दगी व बेतरतीबी हो तो बता देना।

इसी तरह अगर करती रहे तो उम्मीद है कि इन्शा-अल्लाह तआला एक दिन साफ़-सुथरी कहलाने की हक़दार हो जाएगी और सफ़ाई का हक़ीक़ी (असली) मेयार हासिल हो जाएगा। वरना इसके बिना पावडर

मेकअप की ज़ाहिरी लीपा-पोती हक़ीक़ी (असली) सफ़ाई नहीं।

असल तो वह सफ़ाई है जो हमें इस्लाम ने बतलाई और सिखाई। जिसमें ख़ुसूसियत से दाँत-मुँह की सफ़ाई बहुत ही अहमियत रखती है। कुछ औरतों की आदत है कि पान खाकर सो जाती हैं या चाकलेट स्वीटी खाकर बिना दाँत साफ़ किए ख़ुद भी सो जाती हैं और बच्चों को भी बिना दाँत साफ़ करवाए सुला देती हैं, अफ़सोस! हाय अफ़सोस! इस माडर्न तालीम ने हमारी असली सौग़ात को भी ख़त्म कर दिया।

हदीस की किताब बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत उरवा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। फ़रमाते हैं:-

وسمعنا استنان عائشة ام المومنين فی حجرته .

तर्जुमाः हम उम्मुल-मोमिनीन आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पाक कमरे से उनके दाँत साफ़ करने की आवाज़ सुनते थे।

इसी तरह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उरवा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है:-

انا نسمع ضربها بالسواك تستن.........

तर्जुमाः हम आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की मिस्वाक से दाँत साफ़ करने की आवाज़ सुनते थे।

इसी तरह सय्यिदा आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं:-

أن رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم كان لا يرقد ليلا ونهارا فيستيقظ الا تسوك قبل ان يّتوضأ .(حديث حسن، رواه احمد وابوداود)

तर्जुमाः हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात और दिन में किसी वक़्त भी लेटते तो उठने के बाद वुज़ू से पहले मिस्वाक फ़रमाते थे।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नज़दीक सफ़ाई और ख़ुसूसन दाँतों की सफ़ाई की इतनी अहमियत थी कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि हुज़ूरे पाक जब घर पर तशरीफ़ लाते

तो सबसे पहले क्या करते थे? तो फ़रमाने लगीं: मिस्वाक।

अब हम ग़ौर करें! क्या हम इस सुन्नत को ज़िन्दा करते और करवाते हैं? आपके शौहर, बेटे, भाई जब घर आएँ तो उनको मिस्वाक की तर्ग़ीब दें (शौक़ दिलायें) ताकि यह सुन्नत ज़िन्दा हो जाए और आपको दोहरा सवाब मिल जाए।

ऐ मुसलमान बहन! क्या आपके लिए नमूना है आयशा रज़ि० का यह मुबारक अमल? कि वह अपने दाँतों की सफ़ाई की कितनी अहमियत रखती थीं, जो आपने पिछली हदीसों में पढ़ लिया। इसलिए ख़ुसूसियत के साथ हमारी गुज़ारिश है।

1. अपने मसूढ़ों और दाँतों के मुनासिब बारीक या मोटी मिस्वाक ले लें और मिस्वाक को भी साफ़-सुथरा रखें, मुम्किन हो तो हर दो तीन दिन के बाद उसका ब्रश बदल लें या मिस्वाक ही बदल दें।

2. खाने के बाद ज़रूर मिस्वाक या ब्रश से अच्छी तरह दाँत साफ़ कर लें। प्याज़ या लहसुन की तरह की चीज़ें खाकर दाँतों को और उनको काटने के बाद हाथों को ख़ूब साफ़ कर लें।

3. दाँतों के बीच ख़िलाल करने के लिए मख़सूस धागा (Dental Floss) दवा की दुकान से मिलता है, वह लेकर दाँतों के बीच आईना देखकर ख़िलाल कर लें ताकि कोई खाने की चीज़ रहकर बीमारी और बदबू का सबब न बने।

4. मुम्किन हो तो आईना देखकर दाँतों को साफ़ करें।

5. ख़ुद भी पान खाने से बचिए और बच्चों को भी बचाएँ कि इसका फ़ायदा कम और नुक़सान ज़्यादा है।

6. रात को सोने से पहले ज़रूर दाँतों को देखकर ख़िलाल कर लें वरना दाँतों के बीच कोई ज़र्रा रह जाने से वह रात भर नई-नई बीमारियों के पैदा होने का सबब हो जाता है। रात को चाक्लेट मीठी चीज़ें खाकर दाँत ख़ूब साफ़ करें इसलिए कि "स्वीट्स ईट टीथ" (मीठी चीज़ दाँतों को खा जाती है) यह कहावत याद रखें।

7. साल में एक बार मुम्किन हो तो दाँतों की माहिर किसी लेडी डॉक्टर से अपने दाँतों की जाँच करवाएँ और याद रखिए! दाँत जितने साफ़-सुथरे और सही रहेंगे उतने ही जिस्म के दूसरे आज़ा (अंग) सही चुस्त व चाक-चौबन्द रहेंगे।

साफ़-सुथरे दाँतों से चबाई हुई ग़िज़ा पेट की तन्दुरुस्ती और मेदे (पेट, जिस जगह खाना जाता है) की चुस्ती का ज़रिया है। जिससे सारे बदन को सेहत व ताक़त मिलती है। और पेट और मेदा पूरे जिस्म में बुनियादी हैसियत रखता है।

दाँतों की सफ़ाई कितनी अहमियत रखती है और इस्लाम में इसका किस क़द्र ख़याल रखा गया है और एक शौहर के दिल में बीवी की मुहब्बत आने के लिए दाँत की सफ़ाई कितनी ज़रूरी और लाज़िमी चीज़ है, इसका अन्दाज़ा आप इस बात से अच्छी तरह लगा सकती हैं कि जब हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हा को एक औ़रत देखने के लिए भेजा तो फ़रमाया कि उसके मुँह की महक सूँघ लेना, उससे अन्दाज़ा हो जाएगा कि दाँतों की सफ़ाई कैसी है। कहीं दाँतों को साफ़ न रखने की वजह से बदबू तो नहीं आ रही या ऐड़ियों के ऊपर या आस-पास में मैल तो नहीं जमी हुई है।

इससे यह बात अच्छी तरह मालूम हो गई कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किसी औ़रत को निकाह में लेने के लिए उसकी सफ़ाई सुथराई का कितना ख़्याल फ़रमाते थे और उसमें दाँतों की सफ़ाई की किस क़द्र अहमियत थी कि मुँह की महक के बारे में ख़ास ताकीद फ़रमाई, कि दाँत साफ़-शफ़्फ़ाफ़ न हों तो मुँह खोलते ही सारे चेहरे की ज़ीनत ख़राब हो जाती है।

इसी तरह दाँत साफ़ न रखने की वजह से मुँह में एक अ़जीब सी बू पैदा हो जाती है जिससे हर पास बैठने वाले को तकलीफ़ होती है, तो आप अन्दाज़ा लगाएँ कि शौहर को कितनी तकलीफ़ पहुँचेगी। इसलिए नेक बीवी को चाहिए कि अपने दाँतों की सफ़ाई का ख़ुद भी ख़ूब

एहतिमाम रखे और अपनी छोटी बहनों, बच्चों को भी इसका एहतिमाम (पाबन्दी) करवाए।

इसी दाँतों की सफ़ाई की अहमियत बयान करते हुए एक अ़रबी किताब में लिखा है कि इस्लाम ने औ़रत को साफ़-सुथरी रहने की इस क़द्र ताकीद की है कि जब शौहर कुछ मुद्दत के लिए सफ़र पर गया हो तो वापसी में शौहर को ताकीद की गई है कि बिना इत्तिला के घर न पहुँचे। इसकी वजह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बतलाई किः

لکی تمتشط الشعثة وتستحد المغیبة (رواہ البخاری ص ۵۲۴۷)

तर्जुमाः बिखरे हुए परागन्दा और मैले-कुचैले बालों वाली औ़रत अपने बालों को साफ़ करके कंघी कर ले और जिन ज़ायद बालों को दूर करने का हुक्म है उन्हें दूर कर दे।

देखिए! इन दो मुख़्तसर जुमलों में हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने समझदार, अल्लाह की रिज़ा चाहने वाली, शौहर की मुहब्बत की इच्छुक नेक बीवी के लिए बहुत सी नसीहतें बयान फ़रमाई हैं।

ग़र्ज़ यह कि इस्लाम यह चाहता है कि शौहर अपनी बीवी को किसी ऐसी हालत में न देखने पाए जिससे उसके दिल में बीवी से नफ़रत पैदा हो। क्योंकि दीन व दुनिया की भलाईयों और ख़ूबियों का मदार व मेयार ही मियाँ-बीवी की मुहब्बत पर क़ायम है। मियाँ-बीवी की ज़िन्दगी एक छोटी सी हुकूमत की तरह है जिसमें शौहर उस मुल्क का मालिक और हाकिम है तो बीवी उस घर की रानी और मलिका है। और जितनी दोनों में मुहब्बत की मिठास, प्यार की गर्मी, शफ़क़त की शीरीनी बाक़ी रहेगी उतनी ही दुनिया में मिठास और प्रेम बाक़ी रहेगा। उतनी ही दुनिया में ख़ैरें, भलाईयाँ फैलती रहेंगी। इसलिए इस्लाम ने बीवी को सफ़ाई-सुथराई की ख़ास ताकीद की है, यहाँ तक कि दाँतों की सफ़ाई, मुँह की महक बालों में कंघी, ज़ायद बालों का दूर करना, इन सब बातों की ख़ुसूसियत के साथ ताकीद की है। इसलिए इस हदीस की शरह (व्याख्या) में हदीस

मशहूर मुहद्दिस अल्लामा इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं:

"यह तो हुक्म सफ़र व घर पर रहने दोनों के लिए आम होगा, कि बीवी कोशिश करे शौहर की मौजूदगी में भी बीवी इन दो बातों का खुसूसियत से ख़्याल रखे- बालों में कंघी और ज़ायद बाल काटने का एहतिमाम रखे। और शौहर भी कोशिश करे, बीवी की मजबूरी की हालत में या किसी ऐसी हालत में उससे निकटता न करे जिससे उसकी किसी ऐसी हालत पर मुत्तला (वाक़िफ़) हो जिससे शौहर की तबीयत बीवी से मैली हो। इस हदीस में शौहर को हुक्म है कि अचानक घर में न कूद पड़े बल्कि बीवी को उसके हालात के एतिबार से इतना वक़्त ज़रूर दे कि जिसमें वह तैयारी कर ले। (फ़त्हुल-बारी 9/252)

इससे यह बात भी मालूम हुई कि शौहर के आने का कोई वक़्त मुतैयन हो तो अगर किसी वजह से किसी दिन आफ़िस से जल्दी आ जाए, या अपने मुक़र्ररा (निर्धारित) वक़्त से पहले आ जाए तो बहुत ही बेहतर है अगर मुम्किन हो तो इत्तिला कर दे कि मैं अभी घर आ रहा हूँ कि इसमें बुहत सारी हिक्मतें हैं। वल्लाहु आलम।

(4) छूना

यह बात तो शादी के बाद अच्छी तरह मालूम हो जानी चाहिए कि मियाँ-बीवी के जिस्मों का आपस में मिलना, दिलों के मिलने का बहुत बड़ा और मुख्य सबब और रुकने-आज़म होता है। क़ुदरती तौर से दोनों के जिस्मों की हरारत व गर्मी खुसूसन जो औरत के बदन से बाहर आती है, दोनों की बीमारियों व परेशानियों का इससे ख़ात्मा होता है।

इसलिए मुसलमान बीवी को इस लज़्ज़त को हासिल करने में शौहर का मददगार बनना चाहिए न कि इसके उलट। अगर शौहर हाथ लगाकर छूना चाहे तो वह अपने जिस्म को पहले से आगे कर दे, ऐसा न हो कि वह अपने जिस्म को उससे दूर रखे बल्कि खुद भी उसका जिस्म छूकर अपने जिस्म को छूने की दावत दे और कोशिश करे कि इस फ़ानी लज़्ज़त के ज़रिये शौहर को आख़िरत की लज़्ज़तें या दिलवाए। इस तरह

कि ये लज़्ज़तें तो हमारे बाप-दादा आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अब तक हासिल करते रहे और दुनिया से चले गए, इस लज़्ज़त को कोई हमेशा के लिए हासिल नहीं कर सकता, हम भी यहाँ से चले जाएँगे। इसलिये हम देख लें कि कहीं हमारी ज़िन्दगी में अल्लाह तआला का कोई हुक्म टूट तो नहीं रहा, हम कोई ऐसा काम तो नहीं कर रहे जिससे अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमसे नाराज़ हो रहे हों। इसलिए हम अभी तौबा कर लें और सौ फ़ीसद अपनी ज़िन्दगी अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने में गुज़ारें और उन हुक्मों को दुनिया भर के सारे इनसानों के अन्दर लाने की कोशिश व फ़िक्र करें। ताकि सारी दुनिया के इनसान आख़िरत की उस हक़ीक़ी और हमेशा वाली लज़्ज़त से मेहरूम न हों।

(5) चखना

ज़ौक़ व ज़ायक़ा हासिल करने का इनसान के पास सबसे पहला ज़रिया मुँह है, जो सर में सबसे ज़्यादा हस्सास उज़्व (अंग) है। बहुत जल्द असर क़बूल करता है और इस मुँह के ज़रिये सबसे पहली चीज़ बोसा (चुंबन) है। जो दोनों के ताल्लुक़ की मात्रा बिना किसी दलील और हुज्जत के दे देता है। बिना किसी थर्मामीटर के मुहब्बत का दर्जा और उसका वज़न बता देता है। यह "बोसा" ऐसी गूँगी चीज़ है जो बिना कहे ही सब-कुछ कह देती है। ऐसी बेज़ुबान है जो बिना ज़बान के अपने दिल की बात सुना देती है।

दलायल में सबसे ज़्यादा सच्ची और पक्की चीज़ यही बोसा है, जो मियाँ-बीवी के जिस्मानी और रूहानी रिश्ते को मज़बूत से मज़बूत करता रहता है। हज़ारों मुहब्बत की बातों और हज़ारों दलीलों के मुक़ाबले में यह एक मीठा बोसा ज़्यादा वज़न रखता है। समझदार शख़्स का जब बीवी सच्चा बोसा लेती है तो वह समझ जाता है कि यह मेरी और सिर्फ़ मेरी ही है।

न इसके लिए कोई वक़्त ख़ास किया जा सकता है न कोई तरीक़ा व सलीक़ा। यह मुहब्बत का फ़व्वारा फूटने पर दोनों को बेक़ाबू कर देता

है कि वे एक दूसरे से बोसा लें और दोनों को मुहब्बत के जज़्बात के इज़हार पर मजबूर कर देता है कि वे बोसा लेकर अपने आपको मुत्मईन करें। लेकिन बहुत सी बार जाहिल बीवी इसमें कोताही करती है, या तो वह बोसा लेती ही नहीं सिवाय जिन्सी मिलाप के, हालाँकि सहाबी औ़रतें (रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न) का मुख़्तलिफ़ वक़्तों में अपने शौहरों का बोसा लेना साबित है, ख़ुसूसन शौहर घर से जब बाहर जा रहा हो तो बीवी उसे पेशानी पर अलविदाई बोसा दे, जिसमें अ़ज़मत व एहतिराम के बोसे के साथ मुहब्बत व शफ़क़त की महक हो।

वह सफ़र पर जा रहा हो तो उसकी इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत की रियायत रखते हुए शौहर की पेशानी का बोसा ले ले। जब वह सफ़र से लौटे तो बोसा दे। इसी तरह जब शौहर बोसा लेने का इरादा करे तो एक गाल के साथ दूसरा गाल भी आगे कर दे, ताकि मुहब्बत में पायदारी व दवाम बढ़े। लेकिन जो नादान औ़रतें इससे ग़ाफ़िल हैं वे मियाँ-बीवी के बहुत से भेद और राज़ों से नावाक़िफ़ होती हैं, और ऐसे मियाँ-बीवी यह हक़ीक़ी लज़्ज़त हासिल नहीं कर सकते जो अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में अपने बन्दों के लिए रखी है। जिसकी लज़्ज़त दुनिया की हर लज़्ज़त से ज़्यादा ऊँची व महंगी है, लेकिन दुनिया के हर अमीर व ग़रीब, काले गोरे को हासिल हो सकती है।

इसलिए समझदार बीवी को चाहिए कि बोसा ले और बोसा दिलवाए ताकि उससे दिल के बन्द ताले खुल जाएँ। बहुत सी औ़रतें शौहर की मुहब्बत के लिए पानी पढ़वाती हैं, अ़मलियात करती हैं। तावीज़ लेती हैं कि शौहर दूसरी बीवी न करे, मुझ पर सही तवज्जोह दे। उनको चाहिए कि मुहब्बत बढ़ाने का यह बोसे वाला आसान तावीज़ इस्तेमाल करें।

अक्सर जो औ़रत मैके जाकर बैठती है या मुतल्लक़ा (तलाक़याफ़्ता) हो जाती है या उसका शौहर उस पर ज़ुल्म करते हुए दूसरी शादी कर लेता है, अगर आप उसके असबाब (कारण और वुजूहात) मालूम करें तो अक्सर आपको यही पाँच असबाब इख़्तियार करने में औ़रत ही की

तरफ़ से कोताही मिलेगी, कि बीवी ने इन पाँच के ज़रिये शौहर का दिल जीता नहीं। इन पाँच चाबियों के ज़रिये शौहर के दिल के बन्द ताले खोले नहीं, उसे मुहब्बत करना नहीं आया। उसे मुहब्बत का इज़हार नहीं आया।

और ख़ास तौर से पाँचवीं चाबी यानी शौहर का बोसा लेना, इसमें जहाँ-जहाँ जितनी कोताही होती है उतनी ही मुहब्बत में कमी आती है। और अगर बीवी यह काम अल्लाह को राज़ी करने की नीयत से करे तो सोने पर सुहागा और "नूरुन् अ़ला नूर" होगा। दुनिया के मज़े तो मिले ही, आख़िरत के इनामात भी मिले और सबसे बड़ी बात अल्लाह का राज़ी हो जाना सबसे बड़ी नेमत है, जिससे अल्लाह राज़ी हो जाए उसका क्या पूछना। अल्लाह हम सबसे राज़ी हो जाए। आमीन।

اللّٰهم ارضنا وارض عنّا.

अल्लाहुम्-म अर्ज़िना वर्-ज़ अ़न्ना।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप हमें खुश कर दीजिए और आप हमसे राज़ी हो जाईए।

शौहर को ख़त लिखने के आदाब

चूँकि ख़त आधी मुलाक़ात होती है और ख़त भी बीवी का हो तो वह ग़ैर-मामूली अहमियत रखता है। खुसूसन लम्बी मुद्दत और दूर-दराज़ का सफ़र हो, या दावत वाला सफ़र हो, बच्चे छोटे हों, रोज़गार की तंगी हो, इन सब हालात में एक समझदार बीवी का ख़त शौहर के लिए बहुत ही क़ीमती, बहुत ही अनोखा तोहफ़ा, हिम्मत और दिलासा देने वाला, तसल्ली व तशफ़्फ़ी देने वाला होता है।

इसलिए हम कुछ अहम हिदायतें लिखते हैं जिनको हर मुसलमान बीवी अपने हालात के एतिबार से अपनाती रहे और उसके अ़लावा से बचती रहे।

1. ख़त लिखने में एक अदब यह है कि बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम से

शुरू करें।

2. फिर जिसकी तरफ़ से ख़त है यानी अपने नाम का इज़हार करे। फिर जिसको लिख रही है उसको मुख़ातब करे। फिर सलाम लिखे, फिर इस्लामी तारीख़ लिखे।

3. फिर अल्लाह तआला की तारीफ़, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद लिखे। अगर लिखे हुए की बेअदबी का डर हो तो सिर्फ़ ज़बान से बिस्मिल्लाह पढ़ ले जैसे ......

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़िदमत में जनाब मोहतरमी व मुकर्रमी रफ़ीके हयात, शरीके खुशी व ग़म........... हफ़्सा के वालिद साहिब।

पस बेशक मैं उस अल्लाह की तारीफ़ बयान करती हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो हम सबको पैदा करने वाला और पालने वाला है। और दुरूद व सलाम हो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जिनके बाद कोई नबी आने वाला नहीं। अम्मा बाद!

उम्मीद करती हूँ कि आप अपने दोस्तों के साथ ख़ैरियत व सुकून के साथ होंगे।

4. कोशिश करे कि शौहर का नाम लिखने के बजाय यूँ लिखे- मेरे प्यारे शौहर, मेरे सच्चे दिली दोस्त,. मेरे लिए रात-दिन एक करने वाले, मेरी खुशियों व ग़मों में शरीक, जनाब मुहम्मद (यानी अपने किसी बच्चे का नाम लिख कर) के वालिद साहिब! अल्लाह तआला आपको दोनों जहान में इ़ज़्ज़त व आ़फ़ियत अ़ता फ़रमाए।

5. मुझे आपका मुहब्बत नामा (यानी आपका ख़त) मिला। जो मेरी आँखों के लिए नूर, मेरे कानों के लिए खुशख़बरी, मेरे दिल व दिमाग़ के लिए राहत व सुकून का सबब बना। आपका ख़त मेरे शौक़ की गर्मी के लिए ठंडक और सलामती था और मेरी शदीद मशग़ूलियत के लिए राहत व इत्मीनान था।

मेरी नज़र के लिए चमकने वाला नूर और मेरी मजलिस के लिए

फ़ायदा पहुँचाने वाला साथी और रात को बातें करने वाला था। लेकिन मुहब्बत पूरी न होगी जब तक आपको देख न लूँ और मेरी ख़ुशी मुकम्मल न होगी जब तक आप से गुफ़्तगू और साथ बैठना न हो।

6. पहले तो कोशिश करे कि ख़त में कोई ग़म की ख़बर न लिखे। अगर ज़रूरी हो तो इस तरह लिखे कि ख़ुद ग़ौर कर ले कि अगर ख़ुद सफ़र में होती और उसको कोई इस तरह लिखता तो कहीं बहुत ज़्यादा परेशान तो न हो जाती।

7. अपनी मुहब्बत का भरपूर इज़हार करे, जैसे- मुझे आपकी याद बहुत सताती है। मैं जिस्म के एतिबार से आपसे बहुत दूर हूँ लेकिन मेरी रूह मेरे जज़्बात व एहसासात आपके साथ हैं। किसी मुसाफ़िर ने अपने वतन से जुदाई के वक़्त और किसी दोस्त ने अपने दोस्त से जुदाई के वक़्त शायद इतनी तकलीफ़ नहीं पाई होगी जितनी मैंने आपकी जुदाई के वक़्त पाई, अल्लाह इस जुदाई की घड़ियों को जल्द ख़त्म करे।

मैं आपकी जुदाई दीन को फैलाने की ख़ातिर अल्लाह की रिज़ा के लिए बर्दाश्त कर रही हूँ सवाब की उम्मीद रखते हुए वरना आप जैसे करीम शख़्स की जुदाई किसी इनसान के बस में नहीं कि वह बर्दाश्त कर सके।

मैं अल्लाह से उम्मीद रखती हूँ कि जुदाई की ये घड़ियाँ जल्द से जल्द ख़त्म हों और हम दोनों को अल्लाह सलामती से मिला दे।

8. शौहर से हमेशा दुआ की तालिब हो, यह लिखे- मैं भी आपके लिए हर नमाज़ के बाद दुआ करती हूँ और हफ़्सा भी आपके लिए रोज़ाना दुआ करती है। आप से भी गुज़ारिश है कि हमें दुआओं में न भूलिएगा।

9. कोशिश करे कि किसी चीज़ की फ़रमाईश न करे, कि आप मेरे लिए यह लाना, मुन्ने के लिए यह लाना, मुन्नी के लिए यह लाना, बल्कि अगर शौहर पूछे भी क्या लाऊँ? तो जवाब में लिखे आप सलामती व आफ़ियत के साथ आ जाएँ मेरे लिए तो दुनिया व आख़िरत की सबसे

क़ीमती हस्ती आप ही हैं। आप हैं तो सब चीज़ें हैं, मुझे सिर्फ़ आपके सफ़र की दुआएँ चाहिएँ। इसलिए कि हदीस में आता है कि मुसाफ़िर की दुआ क़बूल होती है, आप मेरे लिए और बच्चों के लिए ज़रूर दुआ कीजिएगा और दुआओं का तोहफ़ा लाईएगा कि अल्लाह हम सबको अपने दीन के काम के लिए क़बूल फ़रमा ले।

अगर आप बहुत इसरार कर रहे हैं तो जो मुनासिब हो बिना तस्वीर के खिलौने बच्चे के लिए ला सकें वह ले आएँ और मेरे लिए एक सूटपीस जो अच्छा लगे ले लीजिए आपकी पसन्द मेरी पसन्द होगी।

10. शौहर से ख़त में माज़िरत भी तलब करे, जैसे- मैं आप से दिल से माफ़ी चाहती हूँ हम लोग अल्हम्दु लिल्लाह! दस साल साथ रहे इसमें मेरी तरफ़ से जो आपके हक़ में कोताही हो चुकी हो, या मेरी किसी बात से आपको तकलीफ़ पहुँची हो तो आप माफ़ कर दीजिएगा, दिल में बिल्कुल न रखिएगा। अल्लाह तआला आपको इस माफ़ करने पर बहुत ही अज्र दे और आईन्दा मैं कोशिश करूँगी कि मेरी किसी बात से आपको तकलीफ़ न पहुँचे।

11. अगर शौहर रोज़गार के सिलसिले में बाहर गए हैं तो ज़रूर कुछ भले अन्दाज़ में नसीहत कर दे। जैसे मैं रात को एक हदीस पढ़ रही थी जी चाहा कि वह हदीस आपको भी सुना दूँ।

इसलिए मैं उम्मीद करती हूँ आप अपने दोस्तों को भी एहतिमाम से पाँच वक़्त की नमाज़ के लिए ले जाते होंगे, और कुछ न कुछ मौक़ा मिले तो मस्जिदों में जो दीनी हल्क़े लगे हुए होते हैं उनमें भी ज़रूर शरीक हो जाया करें इसलिए कि उन हल्क़ों में बैठने से बहुत ही फ़ायदा होता है।

12. छोटा बच्चा नासिर आपको बहुत याद करता है। जब कभी जहाज़ की आवाज़ आती है तो कहता है कि अब्बू आ गए अब्बू आ गए। मेरा जी चाहता है कि काश मेरे दो पर होते तो मैं आपके पास उड़कर पहुँच जाती। अल्लाह हम दोनों को बहुत जल्द मिलाए और ये

जुदाई की घड़ियाँ और जुदाई की रातें जल्द से जल्द ख़त्म हों।

13. अगर शौहर अल्लाह के रास्ते में दीन फैलाने के लिए तशरीफ़ ले गए हैं तो उनको ख़ूब तसल्ली के हालात लिखें, और अल्लाह के रास्ते में मज़बूती से क़दम जमाकर दीन के काम करने का शौक़ दिलायें।

अब मैं आपसे इजाज़त चाहती हूँ कि अदब व एहतिराम की देहलीज़ पर क़दम रखते हुए आप अपनी इस पेशानी को नज़दीक कीजिए जिसका मैं तसव्वुर और ख़्यालों की आँखों में गर्मजोशी से बोसा लूँ जो अपने मालिक के सामने पाँच वक़्त मस्जिद में जाकर टिकती है और घर में तहज्जुद के वक़्त काफ़ी देर तक यह मुबारक पेशानी अल्लाह के सामने अपने लिए और सारे आलम के इनसानों की भलाई के लिए दुआएँ माँगते हुए ज़मीन पर सज्दे की हालत में टिकी रहती है।

मैं अपने इन गुनाहगार हाथों को आपके सामने पेश करती हूँ आप भी इनका बोसा लीजिए जिन हाथों से मैं आपकी सही ख़िदमत न कर सकी, और आपकी तरफ़ से हफ़्सा/मुहम्मद को बोसा लेती हूँ, जिसमें बाप का मुहब्बत व तरबियत भरा साया भी हो और माँ का साया-ए-शफ़क़त भी हो। अल्लाह आपको आफ़ियत व सुकून के साथ लौटाए और जहाँ रखे भलाई व आफ़ियत के साथ रखे, और सलामती और आफ़ियत के साथ जल्द हमारी मुलाक़ात हो।

आपकी अपनी और सिर्फ़ आपकी

वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

उम्मे हफ़्सा

ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

महबूब सरताज की याद में

ख़ामोश व ग़मगीन बैठी हूँ इस दम
दिल है परेशाँ आँखें हैं पुर-नम
तारी है गोया हसरत का आ़लम
और लिख रही हूँ यह नज़्मे पुर-ग़म
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

पैहम तुम्हारी याद आ रही है
क़ल्ब व जिगर को बरमा रही है
तरसा रही है तड़पा रही है
और कर रही है एक बारिशे-ग़म
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

मायूस दिल है सूना मकाँ है
पहली सी अब वह रौनक़ कहाँ है
अफ़सुर्दगी हर शै से अ़याँ है
छाया हुआ है दिल पर सोज़े-मातम
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

तन्हाईयों से उक्ता रही हूँ
अन्बोहे ग़म से घबरा रही हूँ
फिर भी यूँ दिल को बहला रही हूँ
एक रोज़ हम-तुम फिर होंगे बाहम
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

थे वस्ल के दिन इश्रत-बदामाँ
हर सू ख़ुशी के जलवे थे रक़्साँ
हर शाम रंगीन, हर सुब्ह ख़न्दाँ

क्या दिन थे वे भी रहते थे बाहम
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

वारफ़्ता मुझको अपना बनाकर
रंगीन अदा से दिल को चुराकर
भूल गए तुम जुनूबी अफ़्रीक़ा जाकर
क्या मेरी उलफ़त कुछ हो गई कम
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

ख़त भी अब तक न आया तुम्हारा
जिस से कुछ होता दिल को सहारा
इतने न ग़ाफ़िल होओ तुम ख़ुदा रा
दुनिया मेरी हो जाएगी बर्हम
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

समझा दो मुझको तुम इसका मफ़्हूम
ख़त से मुझे क्यों रखा है मेहरूम
क्या कुछ ख़फ़ा है ऐ जाने मासूम
कुछ तो कहो क्यों मुझसे हो बर्हम
ऐ मेरे प्रीतम, ऐ मेरे प्रीतम

नेक बीवी को चाहिए कि सिर्फ़ "अल्लाह" ही से उम्मीद रखे

हर मुसलमान मर्द व औरत को चाहिए कि ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अलावा) से किसी क़िस्म की उम्मीद न रखे, ख़ास कर मुसलमान नेक बीवी की यही मिसाल होनी चाहिए कि अपने शौहर, अपने वालिद, अपने भाई, सास, भाभी किसी से कुछ भी मिलने की उम्मीद न रखे।

यक़ीन रखे! कोई बन्दा किसी को अल्लाह के हुक्म के बिना कुछ भी नहीं दे सकता, सबको देने वाला वही दाता है, सबका वही पालनहार है, उसी से उम्मीदें लगाई जाएँ।

जिसके पास जो कुछ है वह उसी अल्लाह का दिया हुआ है, किसी की अपनी ज़ाती मिल्कियत में कुछ भी नहीं है, बल्कि आज उसके हाथ में अमानत है उसके इम्तिहान के लिए।

सारे झगड़ों की बुनियाद यही होती है कि बीवी या शौहर एक दूसरे से उम्मीदें बाँध लेते हैं- जैसे बीवी ने उम्मीद बाँधी, वह पूरी नहीं हुई, अब उस पर नाराज़ हो गईं।

अमीर घराने में मंगनी हुई और अब उम्मीदें बाँध लीं कि यह यह मिलेगा, इस तरह राहत व ज़ीनत का सामान मिलेगा। हालाँकि अक्सर अमीरों के घर में जो कुछ दिया जाता है, दिखावे के लिए बल्कि कुछ की तो अन्दरूनी ज़िन्दगी तो ग़रीबों से भी बदतर होती है, इसलिए न अमीर घराने से उम्मीद बाँधे न फ़क़ीर घराने से ना-उम्मीद हो। और उम्मीद से भी बढ़कर बुरा यह है कि सवाल करें, चाहे खुल्लम-खुल्ला हो या इशारों में शौहर से माँगे, यह भी नेक बीवी की शान के ख़िलाफ़ है।

जिस चीज़ की ज़रूरत हो, जो कपड़ा ज़ेवर पसन्द आये, जहाँ जाने का जी चाहे, जो कुछ करना चाहे तो पहले अल्लाह ही से कहे, अल्लाह ही से माँगे, अल्लाह देना चाहे तो कोई रोक नहीं सकता और वह रोकना चाहे तो कोई दे नहीं सकता। इसलिए अल्लाह से दुआ के बाद दुनिया में मिले या न मिले लेकिन यह तसल्ली कर ले कि ज़रूर मेरे लिए इसी में ख़ैर है। इसी लिए इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि दुआ करते थे:

اَللّٰهُمَّ صُنْ لِسَانِىْ عَنْ غَيْرِكَ كَمَا صُنْتَ وَجْهِىْ عَنْ غَيْرِكَ.

"ऐ अल्लाह! मेरी ज़बान की हिफ़ाज़त फ़रमा आपके ग़ैर से जैसा कि आपने मेरी पेशानी की हिफ़ाज़त फ़रमाई है कि वह आपके ग़ैर के आगे झुके।"

कहते हैं कि बादशाह हारून रशीद के पास एक फ़क़ीर माँगने आया, देखा तो हारून रशीद रहमतुल्लाहि अलैहि नमाज़ में मश्ग़ूल थे। नमाज़ के बाद दुआ माँगने लगे। फ़क़ीर की तरफ़ मुतवज्जह हुए- किस

काम के लिए आए हो?

फ़क़ीर ने कहा- मेरा काम हो गया। जिस मक़सद के लिए आया था वह पूरा हो गया।

बादशाह ने कहा- फिर भी बताओ तो, कैसे काम हो गया? क्या हुआ।

फ़क़ीर ने कहा- मैं आपसे बच्ची की शादी के सिलसिले में कुछ लेने आया था, मैंने आपको देखा आप भी दो हाथ फैलाए हुए किसी से माँग रहे हैं, तो मैंने सोचा बजाय इसके कि मैं आपसे माँगूँ खुद आप जिससे माँग रहे हैं उसी से मैं भी क्यों न माँग लूँ।

आप भी तो फ़क़ीर ही हैं, खुद किसी ज़ात के आगे हाथ फैला रहे हैं, तो फ़क़ीर फ़क़ीर को क्या देगा। इसलिए अब मैं उसी ग़नी से माँग लूँगा जिससे आप माँगते हैं और वह आपको देता है, फिर आप हमको देते हैं, अब हम डायरेक्ट उसी से माँग लेंगे।

अक्सर बार-बार माँगने वाली बीवी की इज़्ज़त व क़द्र शौहर की निगाह से गिर जाती है। और जो बीवी शौहर से किसी चीज़ की तालिब नहीं होती, सिर्फ़ शौहर से यह कहती है- मैं आपकी दुआ चाहती हूँ। जब मुझे आप देखकर मुस्कुराते हैं तो यह मुस्कुराहट मेरे लिए दुनिया की सबसे क़ीमती चीज़ है। इसलिए कि इससे अल्लाह तआला राज़ी होंगे और जब अल्लाह तआला मुझसे राज़ी हो जाएँगे तो मैं जो माँगूँगी मेरी दुआएँ क़बूल होंगी।

शौहर से बार-बार न माँगने और न ही उम्मीदें रखने का फ़ायदा यह है कि शौहर के दिल में अल्लाह तआला खुद डाल देते हैं, वह पूछता है आपके लिए कौनसा कपड़ा लाऊँ? बच्चों के लिए क्या लाऊँ? वग़ैरह वग़ैरह।

हाँ जब शौहर दिल से पूछे तो उसका दिल तोड़ना भी नहीं चाहिए बल्कि ज़रूर बता दे कि हमें इन चीज़ों की ज़रूरत है, ये चीज़ें पसन्द हैं।

इसी तरह बिना माँगे भी अगर शौहर कोई चीज़ ले आए तो यह न कहे क्यों लाए? हमें ज़रूरत तो नहीं थी। बेकार ही आप फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं, बल्कि "जज़ाकल्लाह ख़ैरन्" (अल्लाह तआ़ला आपको बेहतरीन बदला दे) कहे।

जो कुछ ले आए उस पर तो शुक्रिया अदा करना और उसकी चीज़ की तारीफ़ करना ही सीखे, लेकिन ख़ुद कोशिश करे कि अपनी ज़बान से न माँगे। हाँ अल्लाह से ख़ूब-ख़ूब और बार-बार माँगे, फिर ज़रूरत समझे तो इस अन्दाज़ से शौहर को कह दे- "मेरा ख़्याल है यह चीज़ घर के लिए ज़रूरत की है, बाक़ी जैसे आप मुनासिब समझें" "मैं यह चाहती हूँ यह कपड़ा फुलाँ की शादी के लिए ख़रीद लूँ आपका क्या ख़्याल है?"

हदीस शरीफ़ में आता है:

اِذَا سَاَلْتَ فَاسْاَلِ اللّٰهَ .وَاِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللّٰه.

"जब तू कोई चीज़ माँगे तो अल्लाह ही से माँग, जब किसी से कोई मदद तलब करनी हो तो अल्लाह ही से मदद तलब कर।"

इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि अ़जीब बात फ़रमाते हैं जो हर मुसलमान औरत को याद कर लेनी चाहिए और बार-बार उसको पढ़ना चाहिए ताकि उसकी हक़ीक़त दिल में उतर जाए। फ़रमाते हैं गोया अल्लाह तआ़ला इब्ने आदम से ख़िताब करते हैं।

قَلْبُك لی ، فلا تدخل فيه حب غيری

ولسانك لی، فلا تذكر به احدا غيری

وبدنك لی فلا تشغُله بخدمة غيری

واذا اردت شيئا فلا تطلبه الا منّی

ऐ आदम के बेटे! तेरा दिल मेरे लिए है इस दिल में मेरे सिवा किसी और की मुहब्बत दाख़िल मत कर। तेरी ज़बान मेरे लिए है इससे मेरे

सिवा किसी और का ज़िक्र मत कर। तेरा बदन मेरे लिए है इस बदन को मेरे हुक्मों के सिवा किसी और की चाहत पर इस्तेमाल न कर और जब तेरा दिल किसी चीज़ को चाहे तो सिवाय मेरे किसी और से मत माँग। सिर्फ़ मुझसे ही माँग।

अल्लाह तआ़ला हम सबके दिलों से अपने ग़ैर की मुहब्बत निकाल दे, सिर्फ़ अपनी मुहब्बत हमारे दिलों में ऐसी बैठा दे कि हम किसी से न कोई उम्मीद रखें कि बाद में अगर वह मतलूबा चीज़ न मिले तो हमें अफ़सोस हो, न हम ज़बान से न दिल से किसी और से कुछ माँगें। अल्लाह ही से माँगें, उसने ही सबको दिया है, हमको भी ज़रूर देगा। छोटी से छोटी चीज़ की भी शौहर से उम्मीद न रखें, अल्लाह ही से माँगें वही देगा। वही देने वाला दाता है, उससे न माँगा जाए तो वह नाराज़ हो जाता है, हम माँगकर थक सकते हैं वह देते-देते नहीं थक सकता।

नेक बीवी की नेकी भुलाई नहीं जा सकती

कहते हैं कि नेकी और भलाई करने वाला भलाई भूल जाता है लेकिन जिस पर और जिसके साथ नेकी की जाती है वह नहीं भूला करता। कहते हैं कि जिस पर भी एहसान कर लो, वह तुम्हारा क़ैदी, ग़ुलाम, ख़ादिम बन जाएगा। इसलिए नेक बीवी अपने आपको नेकी, भलाई पर उभारे। यूँ सोचे- मैं जिस दिन दुनिया से चली गई, मेरी नेकी, भलाई शौहर को याद आएगी और शौहर मेरे लिए दुआ करेंगे, मुझे अच्छे तज़किरों से याद करेंगे, मेरी ख़िदमत उनको रात के अन्धेरों और दिन के उजालों में मेरे लिए दुआओं पर मजबूर करेगी, और यही शायद मेरी मग़फ़िरत का और अल्लाह तआ़ला के राज़ी होने का सबब हो जाए।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं: जितना रश्क मुझे हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पर हुआ उतना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की किसी बीवी पर नहीं हुआ। हालाँकि मैंने उन्हें देखा भी नहीं था।

इतने रश्क (यानी उन जैसा बनने की तमन्ना) की वजह यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अक्सर उनका ज़िक्र किया करते थे और आपका दस्तूर यह था कि जब आप कोई बकरी ज़िबह करते तो ढूंढ-ढूंढकर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की सहेलियों को उसका गोशत हदिये (तोहफ़े) में भेजा करते थे।

कभी मैं आप से अ़र्ज़ करतीः आप ख़दीजा को इतना याद करते हैं जैसे ख़दीजा ही दुनिया में एक औ़रत थीं, दूसरी कोई औ़रत न थी?

तब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते वह ऐसी और ऐसी थीं। उनसे मेरी औलाद हैं (उस वक़्त अपने ज़माने की) सबसे अच्छी औ़रतों में हज़रत मरियम बिन्ते इमरान थीं और (अपने ज़माने की औ़रतों में) सबसे बेहतर हज़रत ख़दीजा हैं। यह कहकर आपने आसमान और ज़मीन की तरफ़ इशारा किया। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैंः जितना रश्क मुझे हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पर हुआ उतना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की किसी बीवी पर नहीं हुआ, इसलिए कि हुज़ूरे पाक उनको बहुत याद करते थे।

एक दिन आपने उनका तज़किरा किया तो मैंने अ़र्ज़ कियाः सुर्ख़ मुँह वाली उस बुढ़िया का तज़किरा आप इतना करते हैं? अल्लाह सुब्हानहू ने उनसे बेहतर आपको दिया है।

आपने फ़रमायाः अल्लाह की क़सम! उसके बाद अल्लाह ने जो मुझे दिया है वह उससे बेहतर नहीं। वह उस वक़्त ईमान लाईं जब लोग अभी काफ़िर थे। उन्होंने उस वक़्त मेरी तस्दीक़ की जब औरों ने मुझे झुठलाया। उस वक़्त अपना माल मुझ पर निछावर किया जब लोगों ने मुझे मेहरूम कर रखा था। अल्लाह ने मुझे उनसे औ़लाद दी किसी और से नहीं दी। (बुख़ारी शरीफ़)

ग़ौर कीजिए! हर मुसलमान दुल्हन के लिए नमूना है कि "नेकी भुलाई नहीं जा सकती"। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हज़रत

ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को इस क़द्र पसन्दीदगी से याद करना, आपकी वफ़ादारी, बुलन्द अख़्लाक़ी, पुख़्ता अक़्ली और दिली शराफ़त का खुला हुआ सुबूत है। फिर यह सब इस सूरत में था कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी उम्र की औरत थीं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र पच्चीस साल की थी, उस वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र चालीस साल थी और जब तक हज़रत ख़दीजा ज़िन्दा रहीं उनकी बड़ी उम्र के बावजूद आपने किसी से निकाह नहीं फ़रमाया। यहाँ तक कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल हो गया।

आख़िर क्या वजह थी जिसके तहत हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह रविश अपनाई और हज़रत ख़दीजा के साथ वफ़ादारी को इस क़द्र ख़ूबसूरत तरीक़े से आख़िर तक निभाए रखा? जो मियाँ-बीवी दोनों के लिए एक मिसाल की हैसियत रखती है। क्या मुबारक ज़िन्दगी थी! काश आज भी मियाँ-बीवी ऐसी साफ़-सुथरी ज़िन्दगी तकल्लुफ़ात से ख़ाली होकर अपनाएँ एक दूसरे के वफ़ादार हों। जबकि आज हमारे चारों तरफ़ हर क़िस्म की नाफ़रमानी, एहसान फ़रामोशी, बद-अहदी और दग़ाबाज़ी भरी पड़ी है।

इसमें शक नहीं कि हमदर्द, दोस्त और ग़मगुसार मियाँ-बीवी की ज़िन्दगी बहुत बेहतर और शादाब होती है, जबकि ज़िन्दगी के स्टेज पर जानवरों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बीवी व शौहर की ज़िन्दगी बदतरीन और बेमज़ा गुज़रती है। क्या इस वाक़िए में कोई सबक़ लेने का सामान है मुसलमान बीवी के लिए? हम हर मुसलमान बीवी की ख़िदमत में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की सीरत, शौहर की इताअत, मुहब्बत, ख़िदमत, इज़्ज़त, नर्म-गुफ़्तगू, ईसार, लेने के बजाय देना, सब्र, शुक्र के मुबारक गुण और क़ीमती मोती भेंट करते हैं, और हर मुसलमान बीवी से दरख़्वास्त करते हैं कि इन मोतियों का हार अपने गले में डालकर अपने शौहर के पास जाना और इन जवाहर को अपनी अंगूठी का नगीना,

अपने सर का ताज और पेशानी की बिंदया बनाना, कि तुम्हारा दुनिया में आने का मक़सद ही इन्हीं मोतियों को अपने दामन में समेट कर अपने मौला के पास जाकर जन्नत की नेमतों का हक़दार होना हो। अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मदद फ़रमाए। हर गुनाह से बचने वाली और नेकी की तरफ़ लपकने वाली बनाए। आमीन।

हर बड़े आदमी के पीछे
अ़ज़ीम ख़ातून का हाथ हुआ करता है

यह जुमला आपने ज़रूर सुना होगा, इसलिए इस पर अ़मल भी कीजिए। आप अपने शौहर और अपने बेटों और बेटियों को एक अ़ज़ीम इनसान, इल्म व हिक्मत की बुलन्द चोटियों तक पहुँचने वाला बना सकती हैं। अपने शौहर और बच्चों को ईमान व यक़ीन की दौलत से मालामाल करें। सब्र, साबित-क़दमी, बहादुरी और ऊँचे अख़्लाक़ कूट-कूटकर उनमें भरें। अगर आप ख़ुद ही अख़्लाक़ नहीं अपनाएँगी तो नई नस्ल का क्या होगा। बच्चे की किसी ग़लती पर, आपने उससे कह दिया जंगली! हज़ार बार समझाऊँ समझ में नहीं आता, ख़बरदार आईन्दा जो किया वग़ैरह वग़ैरह...... आपने हमेशा के लिए उस मासूम से खिलौने के दिल में नर्मी व शफ़क़त के बजाय सख़्ती और ढीटपना (ज़िद) पैदा कर दिया।

इसी तरह शौहर के साथ प्यार व मुहब्बत, नर्मी व ख़ुशदिली, सब्र व साबित-क़दमी, इन्तिज़ाम व व्यवस्था, ख़ुश-उस्लूबी, निशात व लुत्फ़, मुसर्रत व ख़ुशी के साथ निबाह करे, शौहर को हिम्मत दिलाए। मुश्किल वक़्तों में उसके लिए आसानी फ़राहम करने का सबब हो। मुश्किलों, तकलीफ़ों और परेशानियों के आ़लम में सब्र व हिम्मत का दामन हाथ से न छोड़े।

घर में सुकून पहुँचाने की राहें हमवार करने, बच्चों की परवरिश करने और अपने माल और इ़ज़्ज़त व सम्मान को बचाने के लिए

जद्दोजहद करे और अपने शौहर और बेटों को इस्लाही और अच्छे कामों के लिए उम्मत व मिल्लत की ज़िम्मेदारी व इमामत (रहनुमाई और लीडरी) के लिए तैयार करे। दुनिया के ऐश व आराम, चीज़ों की मुहब्बत व उलफ़त उनके दिलों से निकालने की कोशिश करे। ऐसी ही औरतें क़ायद और रहनुमा ख़्वातीन बनती हैं और क़ायदीन और रहनुमाओं की बीवियाँ ऐसी ही अज़ीम और आला और कमाल वाली होती हैं।

अगर हम भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एहसानात देखें तो ज़रूर उसमें सैयदा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और नबी करीम की बाक़ी पाक बीवियाँ शरीक हैं। अन्सार सहाबा के दीन फैलाने की मदद में अन्सारी सहाबी औरतें पूरी शरीक हैं। मुहाजिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की हिजरत में मुहाजिर सहाबा औरतें पूरी शरीक हैं।

उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के इन्क़िलाब (क्रान्ति) में फ़ातिमा बिन्ते अब्दुल-मलिक पूरी शरीक हैं। हारून रशीद की बादशाही में ज़ुबैदा हारून पूरी शरीक हैं। क़ाज़ी शुरैह के क़ाज़ियुल-क़ुज़ात (मुख्य न्यायधीश) बनने में उनकी बीवी पूरी शरीक हैं।

और जैसे यह कहावत सही थी इसी तरह यह कहावत भी सही है कि "हर सुस्त और बदमिज़ाज आदमी के पीछे ऐसी ही सुस्त और गंवार औरत, या शरारत पसन्द पढ़ी लिखी बेहया लड़की होती है"।

पहले औरत जहालत की वजह से मुसीबत बनती थी तो आज कालेज व यूनिवर्सिटियों की तालीम ने उनके दिमाग़ में घमन्ड, अपने आपको दूसरों से बेहतर और समझदार समझकर हर बात में होशियार बनना, ख़ुदग़र्ज़ी और अनानियत के जरासीम से उनके दिमाग़ बर्बाद हो गए। फ़ैशन और इस फ़ानी दुनिया की चीज़ों को जमा करने का बुख़ार उन पर हावी हो गया।

इस अख़्लाक़ को ख़राब करने वाली तालीम ने पर्दे वाली औरतों को घरों से निकाल कर सड़कों और बाज़ारों में लाकर खड़ा कर दिया है। बाल-बच्चों और घरेलू ज़िन्दगी से हटाकर सड़कों पर मॉडल-गर्ल, प्रस्नल

सैक्रेट्री, ग्राहकों को मुतवज्जह करने के लिए उसको हर आ़म व ख़ास के सामने बेहया बनाकर खड़ा कर दिया। उसके एक-एक जिस्मानी अंग की बेबाकी से नुमाईश आ़म हो गई।

यूरोप ने उसको इतना ज़लील किया कि एक वक़्त की रोटी के लिए उसे सरेबाज़ार अपनी अ़स्मत बेचने पर मजबूर किया। और कारख़ाने, दुकान, आफ़िसों में काम करने वाली मॉडल ने बच्चों को अपनी पिस्तान से दूध पिलाने के बजाय डिब्बे का दूध पीने पर मजबूर किया। यह नये नौनिहालों! मासूम फूलों, शाहीन कलियों, महकते गुनचों, चहचहाती हुई मैनाओं के साथ न सिर्फ़ यह कि बड़ा ज़ुल्म है बल्कि अमानत में ख़ियानत, हदों से निकलना और ख़ुदाई तरीक़े को बिगाड़ देने जैसा है। इसलिए कि औ़रत की छाती इसलिए नहीं कि नाईट क्लबों में उसकी नुमाईश की जाए। सड़कों व शाहराहों पर अपने हुस्न व जमाल की नुमाईश की जाए, बल्कि उसकी पैदाईश का असल मक़सद यही दूध पिलाना है। फिर याद रखिए!

बच्चे को दूध पिलाने में सिर्फ़ एक उज़्व (अंग) का इस्तेमाल नहीं है क्योंकि उसके पीछे माँ की शफ़क़त और मज़बूत अ़हद व पैमान के रिश्ते के साथ माँ अपने फूल पर अपने सारे क़ीमती जवाहर, अपनी अच्छी आ़दतें, ख़ानदान की इ़ज़्ज़त व शराफ़त सब उसके मुँह के ज़रिये उसके दिल व दिमाग़ तक निछावर व सिरायत कर देती है और अपनी मामता जिसका दुनिया में कोई बदल नहीं, वह दे देती है।

याद रखिए! भैंस व गाय का दूध पिलाने से हैवानी सिफ़ात उसमें आ सकती हैं, ऐसी ही किसी माँ ने बच्चे को डाँटते हुए कहा:-

माँ: मैं तुम्हें अपना दूध माफ़ नहीं करूँगी।

बेटा: माँ मुझे Dano या Nido का डिब्बा माफ़ कर दे तो ठीक है या मुझे यह धमकी हालैन्ड की गाय देती तो फ़िक्र की बात भी थी, वरना आपने मुझे दूध ही कहाँ पिलाया है। इसकी तफ़सील का यहाँ मौक़ा नहीं, जो नेकबख़्त ख़ातून इसकी तफ़सील देखना चाहे तो "इस्लाम

और तरबियते औलाद" नाम की किताब और हमारी किताब (जो जल्द ही इन्शा-अल्लाह छाप जाएगी) 'नई-नवेली माँ के लिए कुछ हिदायात" का मुताला करें। (ये किताबें उर्दू भाषा में हैं। मुहम्मद इमरान क़ासमी)

बहरहाल एक बच्चे को अज़ीम (बड़ा और क़ाबिल) इनसान बनाने के लिए एक अज़ीम माँ की ज़रूरत है, जो अपने ख़ून से दूध की शक्ल में उसको सैराब करे और उसको शफ़क़त व मुहब्बत दे। जिससे उसको माँ पर पूरा भरोसा हासिल होकर अपने रब पर भी पूरा भरोसा व एतिमाद हासिल हो।

इसी तरह शौहर को प्यार की गर्मी, मुहब्बत की मिटास, नर्मी की चाश्नी, घर के कामों में अच्छे ढंग, ख़न्दा-पेशानी व मुस्कुराहट से भरी हुई पेशानी, अपने नाज़ुक हाथ की बाकमाल उंगलियों और जाँनिसार आँखों से दीनदारी की तरफ़ अंगड़ाई, आग़ाज़े शादी से तहज़ीब, सलीक़ा, देने वाली बीवी अपने शौहर को उम्मत का क़ायद और दीन इस्लाम का मुजाहिद, राहे हक़ व सिराते मुस्तक़ीम का दाई बना सकती है।

अपने शौहर को घर की फ़िक्रों से आज़ाद करके अल्लाह के रास्ते में खुशी-खुशी दीन फैलाने के लिए भेज सकती है, अपने बच्चों को कुरआन मजीद के हिफ़्ज़ का शौक़ और अरबी ज़बान सीखने और उसको समझने और उसको फैलाने का जज़्बा वलवला उनमें पैदा कर सकती है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशादात व पाक हदीसों उनको याद करवा कर उनको मुसलमानों में पूरे दीन पर अमल करवाने और काफ़िरों को इस्लाम में दाख़िल करवाने का ज़रिया बना सकती है, ताकि मौत के बाद यह औलाद माँ-बाप के लिए सदक़ा-ए-जारिया हो और ये कुफ़्फ़ार जो इन बच्चों के ज़रिये इस्लाम लाएँ उन बच्चों के लिए सदक़ा-ए-जारिया हों और इस्लाम जल्द से जल्द सारी दुनिया में फ़ैल जाए। ऐसी ही औरतों के लिए ग़ालिबन मशहूर शायर मुतनब्बी ने कहा था:

وَلَوْ كَانَ النِّسَاءُ كَمَنْ فَقِدْنَا لَفَضِّلَتِ النِّسَاءُ على الرِّجَالِ

अगर आज भी ऐसी ही औ़रतें हम में हों जैसे चली गईं तो औ़रतों को मर्दों पर फ़ज़ीलत (बड़ा दर्जा) हासिल हो जाए।

मिसाली बीवियाँ...... विद्वानों की नज़रों में

अब हम आपके सामने कुछ मिसाली बीवियों की सिफ़ात बयान करते हैं, जिनको उलेमा व विद्वानों ने अपने-अपने गहरे तजुर्बों के बाद और ज़माने के मुख़्तलिफ़ पहलुओं पर निगाह रखते हुए मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर बयान किया है।

नेक बीवी को चाहिए कि वह इन सिफ़ात को मालूमात में इज़ाफ़े के बजाय मामूलात में इज़ाफ़े कि नीयत से पढ़े। याद रखिए! नेक सिफ़ात को अपने अन्दर लाने के लिए नीयत व इरादा बहुत ही अहमियत रखता है। जब अल्लाह की बन्दी अल्लाह के भरोसे पर इच्छा बना लेती है कि मुझे ऐसी नेक औ़रत बनना है, तो अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से उसको बना भी देते हैं।

इसलिए अभी से नीयत करे और हो सके तो पढ़ने से पहले दो रकअ़तें 'सलातुल-हाजत' पढ़ ले कि:

ऐ अल्लाह! ये सारी सिफ़ात (ख़ूबियाँ) जो आपको और आपके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को और बुज़ुर्गों को पसन्द हैं, जिनके ज़रिये मैं आपके एक बन्दे का दिल ख़ुश करके अपनी और अपने ख़ानदान की ज़िन्दगी चैन व सुकून, इत्मीनान व राहत वाली बना सकती हूँ उन सिफ़ात को अपनाने और उन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। आमीन

मिसाली बीवी

मिसाली बीवी वह बेहतर ख़ातून (औ़रत) होती है जो मर्द को उभारे, ज़हीन हो और उसकी तवज्जोह अपनी तरफ़ करे। ख़ूबसूरत हो, और उसे अपना क़ैदी बना ले। मुहब्बत व शफ़क़त वाली हो, अपना हक़ शौहर पर बाक़ी रखे।

कहते हैं कि शैतान औ़रत से कहता है: तू मेरी आधी फ़ौज है। तू मेरा वह तीर है जिसे मैं जब चलाता हूँ कभी चूकता नहीं। मालूम हुआ कि शैतान की आधी फ़ौज ख़्वाहिशों और शहवतों की शक्ल में है और दूसरी आधी फ़ौज ग़ैज़ व ग़ज़ब (गुस्से और नाराज़गी) की सूरत में है। इसलिए जब किसी की अपनी ही बीवी उसे राहत नहीं पहुँचाएगी तो शैतान उसे हराम की तरफ़ माईल करने की कोशिश करेगा।

इसी तरह कहते हैं कि औ़रत जितने क़दम ज़मीन पर रखती है, हर क़दम के पीछे जहाँ ज़िन्दगी छुपी है वही क़दम अपने पीछे हलाकत भी लिए हुए है। वही नेक-बख़्ती का सबब भी बनती है, वही तबाही का सबब भी बनती है। वही हर सर-बुलन्दी के लिए आगे बढ़ाती है और कभी दोनों हाथों समेत मुँह के बल पस्ती में भी गिराती है।

यही औ़रत बेहद पेचीदा और मुश्किल भी है और यही सादा और बिल्कुल बेगुबार भी है। इसी नाजुक बदन के अन्दर कुदरत ने फ़ज़ीलत, पाकीज़गी और ख़ूबसूरती के असरात रखे हैं और इसी छोटे से सर के अन्दर इन्क़िलाब और आग भी भरी हुई होती है। जब चाहे ख़ानदानों के ख़ानदानों को आग लगाकर दुनिया से मिटाने का सबब बन जाए।

बेदीन बीवी शौहर और आने वाली नस्लों के लिए वबाले जान है। उसका क़ियामत ढाने वाला हुस्न उसकी दौलत और उसका ऊँचा ख़ानदान, कोई भी उसे ज़िन्दगी का चैन नहीं दे सकता, कोई उसके ख़ानदान को बामुराद नहीं कर सकता, किसी बेहतर नतीजे, हमेशा की रहमत, कारगर तोशा और फ़ायदेमन्द पूँजी तक उसे नहीं पहुँचा सकता।

(इस्लाम में ख़ानदान का मक़ाम)

नेक बीवी की हैसियत शमा-ए-ख़ाना (घर के चिराग़) और घर की बेताज मलिका की सी है। शादीशुदा होने की सूरत में शौहर की तरफ़ से उसको यह हैसियत हासिल है।

मिसाली बीवी अपनी शख़्सियत में पुख़्ता होती है, उसको इस्लाम ने जो राह बताई हैं उसी पर चलती है। काफ़िरों, और हुज़ूरे अकरम

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दुश्मनों की आ़दात और तौर-तरीक़ों, पोशाक, ज़ेब व ज़ीनत वग़ैरह अपनाने से बचती है, यहाँ तक कि काफ़िरों के मुल्कों से हासिल की हुई ख़ुशबुओं से, उनके बनाए हुए सामान से भी बचती है, कि मुसलमान मुल्क की बनाई हुई चीज़ें लेती है ताकि मेरे माल से मुसलमानों का फ़ायदा हो।

बन्दरों की तरह वह ग़ैरों की नक़्क़ाली नहीं करती। ज़माने की लहरों और यूरोपियन फ़ैशन से मुतास्सिर नहीं होती। लिबास घरेलू सामान का हासिल करना हो या आ़दात और तौर-तरीक़ों के इख़्तियार करने वाला मर्हला, कहीं भी आँख बन्द करके दूसरों के पीछे नहीं चलती।

इसलिए कि घर की ज़िन्दगी में बरकतें मियाँ-बीवी की आपस की मुहब्बत, नर्मी और समझौते व तालमेल के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने में है। वैवाहिक ज़िन्दगी इसका नाम नहीं कि कपड़े, घर का ढेरों सामान, अमेरिकी किचन, अच्छे पर्दे, मेहमानों और पड़ोसियों को दिखाकर उन पर गुरूर व फ़ख़्र किया जाए।

मिसाली बीवी वही होती है जो शौहर को नेकियों और भलाईयों पर आमादा करती है। इसलिए एक ख़ातून का कहना है, वह मर्दों को ख़िताब करके कहती है, तुममें बहादुर जाँबाज़ वही है जिसे हम गुनाहों की तरफ़ बहका-फुस्ला न सकें।

इसलिए कि धरती पर सबसे पहले बहने वाला ख़ून आदम के उस एक बेटे का है जिसका ख़ून सिर्फ़ औ़रतों से मुताल्लिक़ तकरार और खींच-तान के नतीजे में बहा।

मिसाली बीवी के अन्दर शौहर के साथ पूरे-पूरे सहयोग का जज़्बा होना चाहिये, बल्कि यह तो दोनों के लिये ज़रूरी है कि दोनों मियाँ-बीवी एक दूसरे पर जान छिड़कें और माँगने से पहले देने का जज़्बा अपने अन्दर पैदा करें। ईसार और कुरबानी की आ़दत डालें।

मिसाली बीवी शौहर के लिए जीने का फ़ैसला कर ले। अगर बीवी ने यह फ़ैसला कर लिया कि आज से मैं न अपने लिए जियूँगी न अपने

लिए मरूँगी, अब सब कुछ शौहर की रिज़ा के लिए और उसकी पसन्द के मुवाफ़िक़ करूँगी तो इसमें कोई शक नहीं कि उसकी गिनती दुनिया की नेक औरतों में से होगी और थोड़े ही दिनों बाद उसका शौहर भी फिर उसी के लिए उसी के क़दमों पर अपनी जान निछावर कर देगा, मगर इसके लिए बीवी को शुरूआती मुद्दत में कुर्बानी देनी होगी।

मिसाली बीवी कभी भी नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे चलना पसन्द नहीं करती, न अपने नफ़्स के धोखे में पड़ती हैं, न अपने घर की इज़्ज़त को बट्टा लगाती है, न ही अपने बच्चों की इस्लाह व तरबियत (यानी उनके सुधार और सही परवरिश) और उन्हें आदाबे ज़िन्दगी सिखाने में ग़फ़लत बरतती है। और न ही शौहर के हुक़ूक़ में कभी कोताही करती है। इस दीनदार नेक बीवी की एक यही सिफ़त काफ़ी है कि दिल की तसल्ली की यह कारगर तदबीर है। यह मिसाली बीवी शौहर को हमेशा यह वसीयत करती रहती है:-

اياك وكسب الحرام،فانا نصبرعلى الجوع، ولا نصبرعلى النار.

तर्जुमाः ख़ूब बचना हराम कमाई से। ऐसा पैसा जिसमें किसी का हक़ मारा गया हो, किसी को धोखा दिया गया या झूठ बोलकर लिया गया हो, या बहनों का हक़ दबा लिया गया हो, या मुलाज़िमों का हक़ मार लिया गया हो, या नौकरी के समय में डंडी मार ली, या नमाज़ों को क़ज़ा करके कमाया गया हो, अज़ान होने के बावजूद दुकान बन्द न की, ऐसा माल हमें नहीं चाहिए। हम भूख बर्दाश्त कर लेंगे, हम जहन्नम की आग बर्दाश्त नहीं कर सकते। (तोहफ़तुल उरूस)

दुल्हन को नसीहतें

अल्लाह तआला का अटल फ़ैसला है कि जो अल्लाह को नाराज़ करके अपनी ज़िन्दगी गुज़ारेगा वह कभी भी चैन व सुकून के साथ नहीं रह सकता। बज़ाहिर कितना ही खुश हो लेकिन उसके दिल में परेशानियों व मुसीबतों का हुजूम होगा। उसको दुनिया के किसी काम में भी असली

लज़्ज़त नहीं आएगी।

यह तो दुनिया का हाल है और जब अल्लाह तआला के पास पहुँचेगा तो अल्लाह पाक की जितनी नाफ़रमानी की है उसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। अल्लाह तआला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

इसलिए दुल्हन को चाहिए कि वह यह फ़ैसला कर ले कि मैं अल्लाह सुब्हानहू व तआला को नाराज़ नहीं करूँगी। किसी हाल में भी, किसी के कहने से भी कोई ऐसा काम नहीं करूँगी जिससे अल्लाह तआला नाराज़ हों।

इसलिए हम सारी मुसलमान औरतों को यह नसीहत करेंगे:-

1. पाँच वक़्त की नमाज़ पाबन्दी से वक़्त आते ही पढ़ें, लम्बी-लम्बी नमाज़ पढ़ें। नमाज़ के अन्दर जिस्म और हाथों को न हिलाएँ। सूरा-ए-फ़ातिहा (अल्हम्दु शरीफ़) की हर आयत पर वक़्फ़ (ठहर) करके पढ़ें। ऐसे नमाज़ में खड़ी हों जैसे पेड़ या सुतून होते हैं, अज़ान होने के बाद बिल्कुल देर न करें।

पर्दा

2. पर्दे का बहुत ही ज़्यादा ख़्याल करें, जिस्म का कोई हिस्सा बाल, यहाँ तक कि आवाज़ की भी नामेहरम मर्दों से हिफ़ाज़त करें।

अगर आपने अपना चेहरा खुला रखा, बिना बुर्क़े के बाहर निकली, आपको दस आदमियों ने देखा तो गोया बीस आँखें अल्लाह तआला के ग़ज़ब का शिकार हुईं। इसलिए आप कभी भी घर से बन-ठनकर निकल कर अपना हुस्न दूसरों को न दिखाईए। ख़ास तौर से जब दुल्हन बनी हों और ससुराल में जाएँ तो पूरे बुर्क़े के साथ जाएँ। अल्लाह को नाराज़ करने वाला एक रिवाज कुछ जगहों पर यह भी है कि दुल्हन अपने देवर, जेठ या दूल्हा के चचा और मामूँ या दूसरे नामेहरमों से मुसाफ़ा करती है।

याद रखिए! आप बिना किसी डर के बिल्कुल मना कर दें कि "मैं यह हराम काम कभी भी नहीं करूँगी, जिसको अल्लाह और उसके रसूल

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मना कर दिया उसको मैं नहीं करूँगी, मैं जहन्नम की आग में जलने की ताक़त नहीं रखती।"

इसलिए बेहतर है कि मंगनी से पहले ही लड़की यह शर्त लगा दे कि कोई काम अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म के ख़िलाफ़ हो, इस पर मुझे मजबूर न किया जाए।

रिसाला "बेपर्दगी" (लेखक पत्नी डॉक्टर मुहम्मद रज़ा) में लिखा है:

जो औ़रतें अपने घरों से दुल्हन बनकर, सज-धजकर निकलती हैं, गोया ज़बाने हाल से वह हर भंगी व चमार, हर नौजवान और बुड्ढे को आ़म दावते नज़ारा देती हैं, और कहती फिरती हैं- क्या तुम इस हुस्न व जमाल को नहीं देख रहे हो? यह सब देखकर भी क्या तुम हमारी निकटता और मुलाक़ात की ख़्वाहिश नहीं रखते हो? इस तरह ये औ़रतें बाज़ारों और सड़कों में अपनी ख़ूबसूरती की इसी तरह नुमाईश करती हैं जैसे फेरी वाला चल-फिरकर अपना माल जगह-जगह दिखाता फिरता है। मिठाई वाला अपना माल कई रंगों से सजाकर चाँदी का वरक़ लगाकर शोकेस में क़रीने से रखता है ताकि आने-जाने वालों की नज़रें उन पर पड़ें। दिल उनके लिए ललचाए और ख़रीदने की ख़्वाहिश तेज़ से तेज़तर हो। इस तरह उसके माल का रिवाज हो, ग्राहक ज़्यादा आएँ, भूख-प्यास का शिकार होने वाले मिठाई के शौक़ीन और उसके चाहने वालों की भीड़ लग जाए। (पेज 26 रिसाला "इस्लामी तमद्दुन" दमिश्क़)

दोज़ख़ियों की एक क़िस्म के बारे में आता है:

ऐसी औ़रतें जो कपड़े पहने हुए भी नंगी होंगी और (ग़ैर-मर्द को अपनी तरफ़) मायल करने वाली और (ख़ुद उनकी तरफ़) मायल होने वाली होंगी। (अदा से कन्धों को घुमाकर लचकदार चाल से चलेंगी) उनके सर बड़े-बड़े बुख़्ती ऊँटों के कोहानों की तरह (फूले हुए) होंगे। ऐसी औ़रतें जन्नत में दाख़िल न होंगी और न जन्नत की ख़ुशबू सूँघेंगी, हालाँकि जन्नत की ख़ुशबू इतनी-इतनी दूर के फ़ासले से आएगी।

(मुस्लिम शरीफ़)

इसलिए ऐसे बारीक कपड़े जिनमें जिस्म की रंगत या बाल नज़र आएँ, अंगों की नुमाईश हो, जिससे मर्दों की शहवत भड़क उठे, या ऐसे फ़िट लिबास जो जिस्म के अंगों की बनावट ज़ाहिर कर दें, किसी भी मुसलमान औरत के लिए जायज़ नहीं कि वह ऐसे कपड़े पहने। हाँ अपने शौहर के सामने हर ऐसे काम की इजाज़त है जिससे शौहर की शहवत (बीवी से मुलाक़ात की तमन्ना और शौक़) भड़के। जिसकी वजह से शौहर की तवज्जोह सिर्फ़ अपनी बीवी पर ही रहे।

इसी तरह घर से बाहर निकलते हुए ऐसा मोटा बुर्क़ा पहनें जिसमें चमक न हो। बुर्क़े का रंग ऐसा चमकदार और डिज़ाईन वाला न हो कि मर्दों की नज़रों का शिकार हों। बुर्क़े पर ज़रदोज़ी, कशीदाकारी, रंग-बिरंग का ऐसा काम न हो जो मर्दों की नज़रों को मुतवज्जह करे।

दूसरे लिहाज़ से ग़ौर करें तो बेपर्दा औरत हर मुसलमान बीवी के लिए ज़ालिमा है, इसलिए कि जब वह बेपर्दा होकर अपना चेहरा ख़ूब सजा-संवार करके निकलती है और जिस मर्द की उस पर ग़लती से भी निगाह पड़ जाती है, उसके दिल में तीर की तरह यह ख़्याल घुस जाता है काश! यह मेरी बीवी होती, और अक्सर देवरों में बहनोईयों में नन्दोईयों में, पड़ोस के लड़कों में ऐसे ख़्याल का बीज पेड़ बनता रहता है। यार! काश फलाँ की बीवी मेरी बीवी होती।

उसके बाद जब यह मर्द अपने घर पर आता है और घर में बीवी को बावर्चीख़ाने के कपड़ों में देखता है, या नादान बीवी अपनी गन्दी हालत में होती है तो वह बात-बात पर झगड़ा करता है, छोटी सी बात पर बीवी से ज़बान-दराज़ी मार-पीट तक नौबत पहुँच जाती है।

बीवी समझती है कैसा ज़ालिम शौहर है, इतनी छोटी सी ग़लती पर, या कोई ग़लती भी नहीं हुई लेकिन मुझे और मासूम बच्चों को डाँट रहा है या मार रहा है। बीवी के रोते-रोते आँसू ख़त्म हो गए लेकिन ज़ालिम शौहर समझता है, अभी तो इसको मारना चाहिए बल्कि इसको घर से निकाल कर किसी तरह उस फ़ुलानी लड़की को लाना चाहिए। पता नहीं

कहाँ मेरी माँ और बहन ने फंसा दिया। देखो फुलाँ कैसी ख़ूबसूरत है? हालाँकि यह पावडर की ख़ूबसूरती पर पागल हो जाते हैं, अभी वह पानी से मुँह धोये तो सारा मेकअप ख़त्म और शौहर की अ़क्ल ठिकाने आ जाए। इसलिए बेपर्दा औ़रत अपनी दूसरी बहनों के लिए इस तरह ज़ालिम बनी कि उसकी तरफ़ तवज्जोह ने किसी मर्द का ध्यान उसकी अपनी बीवी से हटवा दिया।

लेकिन उस बीवी को क्या ख़बर कि आज शौहर ने अपने फुलाँ दोस्त की बीवी को देखा था, या आज दुकान पर फुलाँ रिश्तेदार औ़रत आई थी, या शौहर के आफ़िस में आज उनको एक लड़की पसन्द आ गई, या रात दावत में गए थे वहाँ उनकी ख़ाला की बहू ने नरम लहजे में मुस्कुराते हुए नई दुकान की मुबारकबाद दी थी। नफ़्स व शैतान के दूसरा एजेन्ट निगाह के फ़ितने के बाद ज़बान है। इसलिए कहते हैं कि शैतान आदमी की तीन चीज़ों में होता है- उसकी निगाह में, दिल में, उसकी शर्मगाह में।

आपने ग़ौर किया! औ़रत बेपर्दा होकर ख़ास तौर से देवर, जेठ, ख़ाला ज़ाद, मामूँज़ाद भाई, बहनोई, नन्दोई, के सामने खुलकर बेहयाई से मज़ाक़ मस्ती करती है और अपनी झलक और नरम आवाज़ से उनको मुतास्सिर करके अपनी बहन यानी उनकी बीवियों के लिए मुसीबत का कैसा दरवाज़ा खोलती है। आप क्या समझते हैं जो औ़रत दूसरों के घरों में अच्छे भले मियाँ-बीवियों में झगड़े करवाएगी उसका घर झगड़ों से बच जाएगा? नहीं, कभी नहीं!

शैतान उसके शौहर को भी उस बीवी से ज़्यादा काली-कलौटी बदसूरत औ़रत को उस शौहर की निगाह में ख़ूबसूरत करके पेश करेगा, अल्लाह तआ़ला हम सबकी हिफ़ाज़त फ़रमाए। हमारी औ़रतों को शरई पर्दा करने की तौफ़ीक़ दे, औ़रतों मर्दों को अपनी ज़ाहिरी निगाह और दिल की निगाह की हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ दे। आमीन

यह एक नज़र काया पलट देती है। एक शायर कहते हैं आप क्या

समझते हैं कि एक औरत बेपर्दा किसी दुकान पर जाती है वह दुकानदार सिर्फ़ एक ही बार उसको देखता है, लेकिन यही एक नज़र आगे अपना काम दिखा देती है। यह एक नज़र उसको अपनी बीवी से नफ़रत करा देती है। यह एक नज़र उसकी नमाज़ों और रोज़ों की रूहानियत ख़त्म कर देती है। यह एक नज़र उसको गुनाहगार बना देती है।

نظرة فابتسامة فسلام   فكلام فموعد فلقاء

एक निगाह, एक मुस्कुराहट, फिर सलाम, उसके बाद फ़ोन पर बातचीत, फिर वादा और फिर मुलाक़ात। (तोहफ़तुल-उरूस 545)

और दारुल-इफ़्ता में ऐसे वाक़िआत भी समने आए कि अल्लाह ही हिफ़ाज़त फ़रमाये, रोंगटे खड़े हो जाते हैं, उन वाक़िआत को हम यहाँ बयान नहीं कर सकते। घर में अच्छी-भली बीवी है लेकिन शौहर ने मासी और नौकरानी के साथ मुँह काला किया। बल्कि राह चलती फ़क़ीरनी को अपनी दुल्हन बना लिया। नौजवान बीवी के होते हुए अधेड़ उम्र की मुतल्लक़ा (तलाक़ पाई हुई) जिसको दो बार तलाक़ मिल चुकी है उसके साथ मुँह काला कर लिया। जैसे हमने आपको शुरू में बताया कि अल्लाह तआला के फ़ैसले को कोई बदल नहीं सकता, उनका फ़ैसला है जो अल्लाह को नाराज़ करके ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसकी दुनिया भी तबाह व बर्बाद होगी और आख़िरत भी बिगड़ेगी।

बताईए! वह अमीर औरत जो अल्लाह को नाराज़ करती है अपनी और अपने बच्चों की शादियों में ख़ूब नाफ़रमानी करती है, उनको समझाया जाए कि शादी में फ़ोटो मत खिंचवाओ, अपनी महफ़िलों में ग़ैर-मर्दों का औरतों से रलना-मिलना मत होने दो। नौजवान लड़कियों को बिना पर्दे के मत बुलाओ, लम्बा-चौड़ा दहेज मत दो, दहेज मत माँगो, फ़ुज़ूलख़र्ची मत करो, कोई भी नाजायज़ काम मत करो, तो वे कहती हैं: यह मौलाना तो कहते रहते हैं। शादी ज़िन्दगी में एक बार तो होती है हम जैसा चाहे वैसा करें। फिर शादी के कुछ महीने बाद ही पता चलता है कि-

लड़के ने तो कहीं और भी हाथ फैलाया हुआ है। या लड़की के कोई और दोस्त भी हैं। या लड़का उस बीवी को दिल से चाहता ही नहीं, या सास बड़ी ज़ालिमा है। फिर दोबारा हमारे पास तावीज़ लेने आते हैं। मुफ़्ती साहिब! कोई तावीज़ दे दो, लड़के का दिल उस लड़की से हट जाए। या फिर मौलाना साहिब! लड़के ने घर की नौकरानी से ग़लत ताल्लुक़ भी रखा हुआ है कोई दुआ बता दीजिए।

याद रखिए! अल्लाह तआला की तरफ़ से जो सज़ा मुसल्लत होती है उसको कोई तावीज़ कोई दम किया हुआ पानी दूर नहीं कर सकता। इसके लिए सिर्फ़ तौबा करना है कि ऐ बारी तआला! अब तक ख़ूब बेपर्दा घूमी फिरी, शौहर को नाजायज़ माल कमाने पर मजबूर किया, फ़ुज़ूलख़र्चियाँ कीं, अब मेरी तौबा, अब मेरी तौबा, अब मेरी तौबा। ऐ मालिक! क़बूल फ़रमा ऐ मालिक क़बूल फ़रमा ऐ मालिक क़बूल फ़रमा। आमीन या रब्बल् आलमीन।

फ़ोटो ...... मूवी से बचना

तीसरी नसीहत यह है कि मंगनी से पहले ही ससुराल वालों से शर्त लगा दें कि हम फ़ोटो, मूवी नहीं बनवाने देंगे। जिस दावत में फ़ोटो, मूवी की लानत होगी वहाँ हम नहीं आएँगे। इसलिए कि इसको अल्लाह तआला ने मना किया है। हम कोई काम ऐसा नहीं कर सकते जिसको हमारे मालिक हमारे आक़ा ने मना फ़रमाया हो।

हमारे यहाँ ऐसे क़िस्से भी आ चुके हैं कि मूवी बनाने वालों ने अपने पास उस कैसिट की कापी महफ़ूज़ रख ली, उसके मनाज़िर में कुछ जोड़-तोड़ करके फिर दुल्हन और दूल्हा वालों को ब्लैकमेल किया कि इतने लाख दो वरना...... और अगर यह भी न हो तो कितनी बुरी बात है कि औरत क़ब्र में चली जाए लेकिन उसकी बेहयाई, बेपर्दगी की हालत वाली तस्वीर मूवी में महफ़ूज़ हो और उसको दुनिया में जो भी जहाँ भी देखे वह उस औरत को देखकर लज़्ज़त उठाए। यह मर चुकी

हो लेकिन इसका गुनाह ज़िन्दा हो। एक औरत जिसको अल्लाह ने एक शौहर के लिए बनाया था अब सैंकड़ों लोगों की हवस भरी नज़रों का निशाना बनी हुई है, मूवी बनवाने की वजह से।

इसलिए मूवी, फ़ोटो बनवाना, नामेहरम लोगों का दुल्हन के पास मुँह दिखाई की रस्म के वक़्त आना, ऐसा मेकअप इस्तेमाल करना जिससे वुज़ू नमाज़ न हो, इन सबसे बचना चाहिए।

याद्र रखिए! शौहर के दिल में मुहब्बत, और घर में सुकून, अल्लाह तआला को राज़ी करने से मिलेगा। दिल तो अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है, मुरव्वजा ब्यूटी पार्लर जहाँ अल्लाह तआला के अनगिनत हुक्मों को तोड़ा जाता है वहाँ से मेकअप करवा कर शौहर के पास गई तो यह नाजायज़ नहूसत शौहर के दिल में बुग़ज़ व नफ़रत आज नहीं तो कल ज़रूर बैठा देगी।

इसलिए ब्यूटी पार्लर में न खुद जाएँ न दूसरों को भेजें। यह यक़ीन रखें कि दिल में मुहब्बत डालने वाले अल्लाह हैं, दिलों के मालिक अल्लाह हैं, रहमान की दो उंगलियों के बीच इनसानों के दिल हैं, वह जैसे चाहें उनको फेर देते हैं। जो सादा ज़ीनत घर में हो सके वह कर ले, अल्लाह तआला उसी ज़ीनत व मेकअप (जो जायज़ तरीक़े से हो अल्लाह को राज़ी करते हुए हो, उस) के ज़रिये शौहर के दिल में न मिटने वाली मुहब्बत बैठा देंगे और पहली रात ही से मियाँ-बीवी में एक रूह दो जिस्म वाला ताल्लुक़ हो जाएगा।

अल्लाह तआला सारी दुल्हनों को हर क़िस्म के नाजायज़ व हराम कामों से बचने की तौफ़ीक़ दे, और जिन कामों का अल्लाह और उसके रसूल ने हुक्म दिया उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे, और जिन कामों के न करने का हुक्म दिया उनसे बचने की तौफ़ीक़ और हिम्मत दे। आमीन

ब्यूटी पार्लर

देखिए! ज़ेब व ज़ीनत (बनाव-सिंगार) औरत का फ़ितरी हक़ है। यह औरत के लिए बनाव-सिंगार पावडर मेकअप, उसकी फ़ितरत के बिल्कुल मुताबिक़ है। क्योंकि हर औरत तबई तौर पर हसीन व जमील होना पसन्द करती है। हर औरत चाहती है कि वह ख़ूबसूरत नज़र आए। इस्लाम इस फ़ितरी ख़्वाहिश का मुख़ालिफ़ नहीं। अलबत्ता यह ज़रूर चाहता है कि इसको सलीक़े और तरीक़े से किया जाए और इसका मुज़ाहरा (प्रदर्शन) हर तरफ़ से समेट कर सिर्फ़ एक रुख़ पर, एक मर्द के सामने ही किया जाए। वही मर्द जो उसका शरीके-हयात और ज़िन्दगी का हम-सफ़र है।

हर क़िस्म की ज़ीनत (सिंगार) और हर क़िस्म की ख़ुशबू उसी शौहर के लिए इस्तेमाल की जाए। इसलिए हदीस में आता है:

जो औरत इत्र (ख़ुशबू) लगाकर बाहर निकले और उसका गुज़र ऐसे लोगों पर हो जो उसकी ख़ुशबू महसूस करें तो वह औरत ज़ानिया (ज़िना करने वाली जैसी गुनाहगार) होगी। (अहमद 4/414)

औरत अगर रास्ते में ख़ुशबू लगाकर चले, जो कि दूसरे को अपनी तरफ़ आकर्षित करने का निहायत लतीफ़ ज़रिया है और इससे आम अख़्लाक़ी क़ायदे मुतास्सिर होते हैं, इसलिए इस्लाम किसी मुसलमान औरत को इसकी इजाज़त हरगिज़ नहीं देता कि रास्तों और ख़ास तौर से मर्दों की महफ़िलों के पास ख़ुशबू में अच्छी तरह बस कर उसका गुज़र हो।

क्योंकि हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) छुप सकता है लेकिन इत्र और ख़ुशबू को कौन रोक सकता है? ख़ुशबू फ़िज़ा में घुलकर आगे बढ़ेगी और उससे मर्दों के जज़्बात यक़ीनी तौर पर भड़केंगे।

इसमें शक नहीं कि इन नसीहतों से ग़फ़लत ने सैंकड़ों झगड़े, लड़ाईयाँ और मियाँ-बीवी के बीच फूट और अलैहदगी पैदा कर रखी है। इसलिए जिस क़द्र एहतियात हो सके एहतियात की जाए। ज़ेब व ज़ीनत

(बनाव-सिंगार) ज़रूर कीजिए लेकिन उसमें इतना भी हद से आगे न बढ़िए कि अपने बजट का भी ख़्याल न हो, या नये फ़ैशन के कपड़े और महंगे-महंगे ज़ेवरात कम से कम ऐसे हालात में तो इस्तेमाल न करें जबकि लोग सूखी रोटी के लिए तरस रहे हों।

बंगलादेश में हर साल एक साहिब साड़ियाँ बाँटते हैं। एक वर्ष इतनी भीड़ हुई कि 19 औरतें भीड़ में कुचल कर मर गईं। उनको क्या पता था कि हमें साड़ियाँ मिलेंगी या हमें कफ़न पहनाया जाएगा।

(हुक़ूक़ुल मुस्लिमीन, मौलाना अस्लम शैख़ूपूरी)

इसलिए आपकी बहनों पर फ़क्र व फ़ाक़े की वजह से उनकी छातियों में दूध भी कम हो गया हो और वे दुनिया के किसी कोने में इस हाल में ज़िन्दगी गुज़ार रही हों और आप मिट्टी में मिलने वाले इस बदन के लिए महंगे-महंगे ड्रेस व ज़ेवरात की तैयारी में लगी हुई हों, यह हरगिज़ मुनासिब नहीं और इसमें काफ़िर व मुसलमान का फ़र्क़ किए बिना इनसानियत और आदम व हव्वा के बेटे और बेटी होने के नाते उनकी मदद कीजिए। अपने ऊपर कम से कम ख़र्च करके बाक़ी बचाकर राहे ख़ुदा में उन लोगों पर ख़र्च कीजिए।

ब्यूटी पार्लरों में जाने का दूसरा नुक़सान जो डॉक्टर अब्दुल-मुन्इम (उस्ताद शोबा-ए-अमराज़े तिब्बियत कालेज क़ाहिरा) रिसाला "तुम्हारा ख़ुसूसी मुआलिज" से नक़ल करते हुए लिखते हैं:-

इसी तरह ब्यूटी पार्लर जाकर बालों की सेटिंग और कटिंग कराना, यूरोप के फ़ैशन के लिहाज़ से विभिन्न रंगों में उन्हें रंगना, बालों को झाड़ने और उनके अन्दर घुंघरियाला पन पैदा करने के लिए विभिन्न ग़ैर-फ़ितरी तरीक़े इस्तेमाल करना, जिससे बाल जल्दी गिर जाएँ, उनकी जड़ें कमज़ोर हो जाएँ, या सेटिंग मशीन इस्तेमाल करने और कैमिकली दवाओं के ज़रिये जिनमें ऐसे माद्दे शामिल होते हैं जो बालों के लिए बहुत नुक़सानदेह होते हैं, किसी भी मुसलमान औरत के लिए मुनासिब नहीं कि वह ऐसी ज़ेब व ज़ीनत (सिंगार) इख़्तियार करे।

बहुत सारी औ़रतों को यह मालूम नहीं कि बालों को खींच-तानकर रखने के क्या नुक़सानात हैं, इसलिए कि एक रात के लिए बालों को खींच कर रखने का मतलब यह है कि उनकी जड़ों पर ज़ोर डाला जाए और ख़ून की मख़्सूस मात्रा को बालों की जड़ों में पहुँचने न दिया जाए, जिससे बालों की जड़ें कमज़ोर हो जाएँ और वे जल्दी गिर जाएँ। जिसका यह नतीजा होता है कि ब्यूटी पार्लरों में फ़ीशल, हेयर कटिंग, थरेडिंग, वैकसिंग, बिलीचिंग करवाकर और आई बरूज़ और अपरल्यूज़ बनवाकर बन-ठनकर निकलने वाली कुछ दिनों तक बज़ाहिर बहुत अच्छी भी लगेगी लेकिन उसके बाद जूँ-जूँ उसका असर ख़त्म होता है फिर पच्चीस साल की जवान औ़रत अगर पचास वर्ष की नहीं तो चालीस वर्ष की ज़रूर लगती है, और गुनाह का यह असर ज़रूर होता है कि शौहर के दिल में मुहब्बत के बजाय बुग़ज़ व नफ़रत बैठती रहती है, और ख़ास तौर से ब्यूटी पार्लर में संवारने वाली जो औ़रतें होती हैं, वे अक्सर बेनमाज़ी और बेपर्दा और आज़ाद ख़्याल, अल्लाह तअ़ला और उसके रसूल को नाराज़ करने वाली औ़रतें होती हैं, जिनमें कई बार काफ़िर औ़रतें भी होती हैं, जिनके शौहर खुद ही उनसे बेज़ार हैं और वे खुद अपने शौहरों से बेज़ार होकर इन कामों पर लग गई, तो वे क्या दूसरी नई-नवेली दुल्हन को ऐसा तैयार करेंगी जिससे वह शौहर की हो जाए; कभी नहीं! बल्कि नई-नवेली दुल्हन को ऐसी औ़रत को अपने जिस्म पर हाथ भी नहीं लगाने देना चाहिए।

और अगर (खुदा वह दिन न दिखाए) ब्यूटी पार्लर में काम करने वाले मर्द हों या उनका आना-जाना हो तो उसके हराम होने में और खुदा की लानत बरसने में क्या शुब्हा बाक़ी रह जाएगा।

ब्यूटी पार्लर में जाकर ऐसी गुनाहगार औ़रतों से अपने को संवारना व सिंगार करवाना मुसलमान औ़रत के लिए मुनासिब नहीं, बल्कि नेक और सादा औ़रत से घर पर ही जो कुछ हो सके उससे अपने आपको संवार ले और बनाव-सिंगार करवा ले। इसलिए कि नेक औ़रतों की

सोहबत ज़रूर अपना अच्छा असर दिखलाती है। और ये नेक औ़रतें शौहर की चाहत मोल लेने का असली गुण जानती हैं।

इसके लिए हम कुछ अश्आ़र जिनको शैख़ बशीर अल-ग़ज़्ज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़ारसी से अ़रबी में तर्जुमा किया है, और शैख़ अ़ली-फ़िक्री ने अपनी किताब "तरबियतुल् बनात" में ज़िक्र किया है, ये अश्आ़र इस क़ाबिल हैं कि हर मुसलामन लड़की को याद होने चाहिएँ और इसके ज़रिये बुरी सहेलियों और फ़ुज़ूल-ख़र्च औ़रतों की सोहबत से बचें, और ब्यूटी पार्लरों में काम करने वाली औ़रतों को अपना जिस्म सजाने के लिए न कहें।

शाम (सीरिया) के मुल्क में एक ख़ास क़िस्म की मिट्टी के साथ गुलाब मिलाया जाता है और उसी मिट्टी को ग़ुस्ल करने के बाद सर पर लगा दिया जाता है, जिससे देर तक ख़ुशबू आती रहती है तो शायर कहता है:

فقلت له: أَمِسك اَمْ عنبر   لَقَدْ صيَّرْتَنى بالحُبِّ مُغْرِمُ

اجاب الطين انا كنت ترابا   صحبت الورد صيرنى مكرم

الفت اكابرا وازددت علما   كذامن عاشر العلماء يكرم

तर्जुमा: मैंने उस मिट्टी से पूछा! तुम्हारी ख़ुशबू ने मुझको तुम्हारा आ़शिक़ गिर्वीदा बना लिया है, तुम मुझे यह तो बताओ तुम्हारा क्या नाम है, तुम मुश्क हो या अं़बर हो?

उस मिट्टी ने जवाब दिया मैं तो एक नर्म मिट्टी गारे कीचड़ की तरह थी, लेकिन गुलाब की सोहबत में बैठकर मेरे अन्दर भी ख़ुशबू आने लगी। जो कुछ तुम मुझे आज देखते हो यह गुलाब का करम है उसने मुझे मुअ़ज़्ज़ज़ (सम्मानीय) बना दिया, वरना मैं तो पाँवों में रौंदने के क़ाबिल मिट्टी थी। इसी तरह मैंने भी नेक बड़ी उम्र की औ़रतों की सोहबत अपनाई और मैंने उनसे अपने इल्म में इज़ाफ़ा किया। आज अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह ने मुझे इ़ज़्ज़त दी, माँ-बाप की नज़रों का तारा,

शौहर की आँखों की ठंडक बनाया, यह सब समझदार दीनदार औरतों की सोहबत में बैठने की बरकत है।

ग़ौर कीजिए! जो औरत आपको ब्यूटी पार्लर में जाने के लिए मजबूर कर रही है, आपके वालिद की ख़ून-पसीने की कमाई हुई हलाल रोज़ी को एक ही रात के लिए ज़ाया कर देती है, वह कैसे दोस्ती के क़ाबिल है। क्या आपके दूसरे छोटे भाई-बहन नहीं हैं जिन पर वालिद को ख़र्च करना है। और दुनिया में जहाँ भी कोई मर्द औरत रहते हैं वे आपके दीनी भाई बहन हैं।

अभी पिछले दिनों 'जंग' अख़बार में आया था कि लाहौर में एक लड़के (इक़बाल) ने इसलिए खुदकुशी कर ली कि उसके पास ईद का जोड़ा नहीं था, अपने माँ-बाप के मुसलसल फ़क्र व तंगदस्ती को वह देख न सका और दुनिया से चला गया।

आज आप भी ग़ौर कर लें, हमारे बच्चों के स्कूल का यूनीफ़ार्म अलग, घर के कपड़े अलग, दावत के कपड़े अलग, खेल के अलग, रात के सोने के अलग, इसी मुल्क में ऐसी कई इक़बाल हैं जो रोटी के टुकड़ों और ईद के जोड़े के मोहताज हैं। कई ऐसे घर मिलेंगे जिनके वालिद की तन्ख़्वाह 15 दिन बाद ख़त्म हो जाती है, उनको तन्ख़्वाह सिर्फ़ 3000 मिलती है, उस पर उनका गुज़ारा बहुत मुश्किल है। बच्चों की स्कूल मदरसे की फ़ीस देने के लिए पैसा नहीं है और वे बड़ी मुश्किल से गुज़ारा कर रहे हैं।

इसी शहर में अगर इनसानियत की क़ातिल कोई औरत, रहम व शफ़क़त जिसके दिल से खुरच कर निकाल दिया गया हो, आपको यह मश्विरा देती है कि तुम एक रात के लिए ब्यूटी पार्लर में जाकर इतने हज़ार रुपये का ख़र्चा कर लो कोई बात नहीं, ज़िन्दगी में एक ही बार तो यह रात आती है। ऐसी औरत किसी तरह दोस्ती के क़ाबिल नहीं, ऐसी औरत की बात मानना ख़िलाफ़े-अक़्ल है, ख़िलाफ़े फ़ितरत है, ख़िलाफ़े इनसानियत है।

सोचिए और फिर ठंडे दिल से सोचिए! जिस ग़रीब का पूरा घराना छह महीने इतने पैसों में गुज़ारा कर लेता है, वह आप एक रात की भेंट चढ़ा दें? फिर आप यह सोचें कि मैं अल्लाह की नेक बन्दी हूँ। मैं आ़यशा व ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) की ताबेदार हूँ, मैं फ़ातिमा व ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) की बाँदी हूँ, मैं अपनी गोद में सलाहुद्दन अय्यूबी की इच्छुक हूँ मैं जुबैदा हारून की बहन हूँ, मैं फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल-मलिक की बेटी की तरह हूँ! अपनी हालत ऐसी बनाकर और ऐसे ऊँचे ख़्याल बाँधना बेवकूफ़ी और हिमाक़त है। यह नहीं हो सकता। आप खुशफ़हमी में मुब्तला हैं।

याद रखिए! ऐसी जाहिल माओं की गोदों में ऐसे फूल नहीं खिला करते। ऐसी फ़ुज़ूलख़र्च टहनियों पर ऐसे क़ीमती परिन्दे नहीं बैठा करते। ऐसी क़ातिले इनसानियत मुन्ढेर पर बैठकर चहचहाने वाली मैनायें अपना सुरीला नग़मा दुनिया को नहीं सुनाया करतीं, ऐसे नाफ़रमान व ख़ुदग़र्ज़ गुलदस्तों में सुलतान नूरुद्दीदन ज़ंगी जैसे गुलाब नहीं खिला करते, ऐसी ख़ुदग़र्ज़ और दूसरों के हुक़ूक़ से लापरवाही करके ब्यूटी पार्लर की कुर्सी पर बैठने वाली के पालान में उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि जैसे नहीं सोया करते, खुदा की नेमतों के नाक़द्र दान टीलों और चोटियों पर ख़नसा व हमना बिन्ते जहश का रंग नहीं भरा जा सकता। ऐसी सुनसान राहों और बन्जर इलाक़ों में मुहम्मद बिन क़ासिम व उक़बा बिन नाफ़े नहीं आया करते।

ऐसी नमाज़ों को छोड़ने वाली व बेपर्दा फिरने वालियों और अपने जिस्म के अंगों की बेबाकी के साथ नुमाईश करने वालियों की छातियों से तारिक़ बिन ज़ियाद व टीपू सुलतान दूध नहीं पिया करते। ऐसी रात की रानियों के गुनचों में ऐसे महकते खुशबुओं वाले तारिक़ बिन ज़ियाद, मुहम्मद फ़ातेह कुस्तुन्तुनिया, जिनकी खुशबू से आ़लमे इस्लाम झूम उठता है, अपनी खुशबूएँ ऐसी माओं को नहीं सुंघाया करते।

जो दुनिया के इनसानों को लचकने और बल खाने के अन्दाज़

सिखाएँ उनकी गोद ऐसी बड़ी हस्तियों का ठिकाना नहीं बना करती जिनका ज़र्रा-ज़र्रा अज़मत और पाकीज़गी का हामिल होता है। जिनके हाथों ज़माना नई अंगड़ाई लेता है, जो जगह-जगह कुफ़्र के टीले और चोटियों को ईमान की हरियाली बख़्शते हैं। कुफ़्र के मुर्दा दिलों में ईमान और नेक आमाल के ख़ूबसूरत नग़मे फूटने का सबब होते हैं, पुराने ईमान वालों की कलियों में कुव्वते ईमान और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नई लहर का सबब बनते हैं। मुसलमानों के बिखरे हुए अफ़राद को एक झंडे के नीचे और एक अमीर के कटोरे में समेटने का सबब होते हैं। मुसलमानों की ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में दोबारा दीन की ताज़गी व शादाबी की बहार लाने का सबब बनते हैं। इस्लामी दुनिया की पेशानी पर तबस्सुम की लहर दौड़ जाती है। इनसानी दुनिया उनके एक एक जौहर और उनकी अनोखी और बाकमाल फितरी क़ाबलीयत पर रश्क करती है। इस्लामी दुनिया की औरतें अपने नौनिहालों के नाम उनके नाम पर रखने से फ़ख्र महसूस करती हैं। हव्वा की बेटियाँ बारगाहे-इलाही में दुआ करती हैं- इलाही! मुझे लख़्ते जिगर व नूरे नज़र मिलेगा तू उसका नाम सलाहुद्दीन रखूँगी, नूरुद्दीन ज़ंगी रखूँगी, ख़न्सा व हमना (बिन्ते जहश) रखूँगी।

मोहतरमा मुसलमान बहन! हव्वा की बेटी! हर नये नौनिहाल की गोद! तेरी शाख़ पर भी हम किसी ऐसे ही फूल के मुन्तज़िर हैं। तेरी ही टहनी पर हम किसी ऐसी ही चहचहाती हुई मैना के मुन्तज़िर हैं। और जितना इस वक़्त हम किसी उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के मोहताज हैं शायद ही उम्मत किसी वक़्त इतना मोहताज रही हो। जिस बाग़ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा व सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने ख़ून से सींचा था, आज उस बाग़ के फूलों का कोई सुरक्षा करने वाला नहीं, उसकी घास को अपने राहे दीन पर मुजाहदा कुर्बानी करके अपने पसीने से भी कोई सैराब करने वाला नहीं। यह गुलशन बिना क़ायद (रहनुमा और लीडर) के और यह बाग़ बिना

माली के हो गया है।

इसलिए नई-नवेली दुल्हन! तू अपने आक़ा और अपने मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अपने आपको इस्तेमाल न कर। अल्लाह ही की बन जा, उस एक की बन जा, उसी से माँग, उसी की मान, तो इन्शा-अल्लाह हो सकता है कोई नौनिहाल शाहीन-ज़ेहन का मालिक ईमानी जवाहर व क़ीमती मोतियों के साथ सुसज्जित तेरे जिगर का टुकड़ा बन कर इस्लामी दुनिया के लिए और इनसानी दुनिया के लिए खुशियाँ बिखेरने का सबब हो। उसमें अशरफ़ अ़ली थानवी की महक हो, इलियास काँधलवी की तड़प हो, अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक का ज़ौक़े हदीस हो, इब्ने क़य्यिम जौज़िया की नज़र हो, इस्माईल शहीद का असर हो, इब्ने हजर अ़स्क़लानी का हाफ़ज़ा हो, आलमगीर की सियासत हो, मुहम्मद बिन क़ासिम रहमतुल्लाहि अ़लैहि की क़ायदाना सलाहियत हो।

या अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से हमारी मुसलमान औ़रतों को पूरा-पूरा दीन पर चलने वाला और इस दीन को आ़लम भर में फैलाने वाला बना दे। उनकी औलादों को नेक बना दे, उनको अपना बना ले और आप उनके हो जायें। उनकी शादी ग़मी, मौत हयात, सुन्नते रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तरह बना दीजिए। आमीन

ग़ैर-शरई तावीज़ से बचना

एक बात ध्यान से समझ लो वह यह कि किसी नजूमी, हाथ की रेखायें देखने वाला, फ़ाल निकालने वाला, काले इल्म वाला, जादूगर, ग़ैर-शरई पीर, प्रोफ़ेसर, ज्योतिषी, बाबा साईं, आ़मिले कामिल, रूहानियात के दावेदार, झूटे पीर वग़ैरह के पास किसी औ़रत के बहकाने से या ख़ुद अपनी मर्ज़ी से हरगिज़ मत जाना, और न ही ख़तों के ज़रिये कोई बात पूछना या कोई अ़मल करवाना।

हदीस में साफ़ तौर पर अ़मले नुजूम करने और करवाने और नजूमियों (हाथ देखने वाला, ज्योतिषी, ग़ैर-शरई आ़मिले कामिल) से बात

पूछने और उनकी तारीफ़ करने वाले पर सख़्त वईद (सज़ा की धमकी) आई है और ऐसे लोग नबी की शफ़ाअ़त से बिल्कुल मेहरूम रहेंगे।

इसलिए इस बात का यक़ीन रखना कि सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से होता है और सारे हालात का भेजने वाला अल्लाह तआ़ला ही है, अलबत्ता हालात का दारोमदार अपने ही आमाल पर होता है, इसलिए जब ये हालात आएँ तो अपने आमाल को ठीक करने की फ़िक्र करना और किसी सूरत में नजूमियों और झूठे पीरों वग़ैरह के पास न जाना। एक बात ख़ूब समझ लो कि सबसे बड़ा तावीज़ अल्लाह की रिज़ा है और झूठे पीरों के और काले इल्मों वालों के तावीज़-गन्डों से अक्सर दिल की बेचैनी बढ़ती है और घरों में फ़साद होते हैं। और कई औरतों को उनके शौहरों ने इस वजह से छोड़ दिया कि वे छुप-छुपकर तावीज़-गन्डे करती थीं। हाँ अगर किसी वाक़ई ज़रूरत में इलाज या नुस्ख़े के तौर पर शरीअ़त के पाबन्द किसी अहले-हक़ आ़लिम बुज़ुर्ग से तावीज़ वग़ैरह लेना ही हो तो शौहर की इजाज़त ज़रूरी है।

अगर किसी शरीअ़त के पाबन्द बुज़ुर्ग से तावीज़ लेना हो तो अपने किसी मेहरम मर्द के ज़रिये मंगवा लेना, और याद रखना तावीज़ से ज़्यादा दुआ़ माँगने का एहतिमाम करना, दुआ़ आई हुई बला को दूर करवा देगी, और आने वाली बलाओं को रोक देगी और उसके लिए सबसे बेहतरीन नुस्ख़ा "मन्ज़िल" पढ़ना है। "मन्ज़िल" छोटी सी दुआ़ की किताब है, उसको ख़ुद भी अपने पास रखना और अपने भाई-बहनों और बच्चों और बच्चियों को याद करवाना और सुबह व शाम पढ़ने का मामूल बना लेना। अल्लाह तआ़ला आपकी और सारी मुसलमान बहनों की हर बला व मुसीबत से हिफ़ाज़त फ़रमाए आमीन।

कभी हसद न करना

इसी तरह छोटी भाभियों व नन्दों पर हसद मत करना कि यह हसद (दूसरों को देखकर जलना) ऐसी बीमारी है कि जिस पर हसद करोगी

उसका तो कोई नुक़सान न होगा, ख़ुद ही हसद की आग में जलती रहोगी। अक्सर शैतान यह धोखा देता है कि देखो जेठानी साहिबा की सास के नज़दीक कितनी इज़्ज़त है, और सास हर बात जेठानी की मानती है, और न तो मेरी इज़्ज़त है और न मेरी बात मानी जाती है, मैं तो एक नौकरानी की तरह हूँ दूसरी देवरानियाँ, जेठानियाँ तो सेठानियों की तरह हैं। हाय मेरी तक़दीर ही फूट गई, मुझसे तो किसी चीज़ का मश्विरा ही नहीं लिया जाता। मुझे किसी बात की ख़बर ही नहीं होती और फुलाँ भाभी को देखो अभी ही तो शादी हुई है और उनको कितनी चीज़ें मिलती हैं, और मैं इतने सालों से सास-ससुर की ख़िदमत कर रही हूँ और मुझे फूटी कौड़ी भी नहीं मिली। उनके शौहर उनको गाड़ियों में घुमाते हैं, और हर महीने नये कपड़े, नये जूते लाकर देते हैं और हर साल फ़र्नीचर तब्दील करवाते हैं और मेरे शौहर तो.....।

इसके बजाये यह सोचे कि जो कुछ जिसको मिल रहा है अल्लाह ही की तरफ़ से मिल रहा है, तो मुझे भी किसी चीज़ की ज़रूरत है तो मैं अल्लाह से माँगूँ। बजाय इसके कि अपना ख़ून जलाऊँ उनपर हसद करूँ अपने आपको और अपने बच्चों को परेशान करूँ और अल्लाह की नाशुक्री बन्दी बनूँ जिससे मेरी दुनिया व आख़िरत दोनों बिगड़ें।

इसलिए अगर हसद करना ही हो तो इस पर करूँ कि फुलाँ औ़रत तहज्जुद की कितनी पाबन्द और रोज़ाना कितना कुरआन पढ़ती है, अपने शौहर और बेटों के साथ मेहरम औ़रतों की जमाअ़त में जाती है। अपने बच्चों को हाफ़िज़ आ़लिम बना रही है और मैं? मेरा दीन के एतिबार से क्या हाल है? अल्लाह तआ़ला हम सबको और सारी मुसलमान औ़रतों को हसद की और इस जैसी सारी रूहानी बीमारियों से हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

अगर किसी के मुक़द्दर में नाफ़रमान शौहर आ जाए

अगर किसी के मुक़द्दर में ऐसा शौहर आ जाये जो बीवी से बिल्कुल मुहब्बत न करता हो, उसके किसी काम की क़द्र न करता हो, हर वक़्त लड़ाई-झगड़ा ही करता रहता हो, तो उसके हल करने के लिए बुनियादी कारणों की तहक़ीक़ और बीमारी की असल जड़ पर महारत और समझदारी के साथ उंगली रखना बहरहाल ज़रूरी है।

और अक्सर ऐसा होता है कि बज़ाहिर नज़र आने वाली बीमारी के अ़लावा झगड़े की असल जड़ कोई और चीज़ या कैफ़ियत है जिसका दोनों की ज़िन्दगी से गहरा ताल्लुक़ होता है, और जिसके निवारण के लिए सिर्फ़ मियाँ-बीवी की आपसी सुलह-सफ़ाई और मुख़्लिसाना यहयोग काफ़ी होता है। कई बार शुरू में एक दूसरे की आ़दतों से मानूस न होने की वजह से झगड़ा होता है, कई बार मियाँ-बीवी में शदीद मुहब्बत लगाव होता है, लेकिन सास, नन्द, जेठानी बीच में रुकावट हो जाती हैं। बहरहाल जो भी सबब हो उसका तदारुक उसका हल माहिर उलेमा किराम से पूछकर हल कर ले। कैसा भी सबब हो ना-उम्मीद न हो। एक से मश्विरा सही न मिला दूसरे से मश्विरा करे, या अपने ख़ानदान के किसी दीनदार और समझदार शख़्स से मश्विरा करे।

कभी मियाँ-बीवी को शुरू से ही अन्दाज़ा हो जाता है कि उनकी वैवाहिक जीवन की गाड़ी देर तक चल नहीं सकती, जैसे शौहर को पहली ही नज़र में बीवी पसन्द न आई, और यह अक्सर वहाँ होता है जहाँ मंगनी करते वक़्त शौहर बीवी को देखता नहीं है, बिना देखे सिर्फ़ माँ या बहन के भरोसे पर शादी कर लेता है।

इसलिए मर्द व औ़रत का सबसे पहला फ़र्ज़ यह है कि अपनी आने वाली वैवाहिक ज़िन्दगी के लिए पूरी ईमानदारी और बारीक-बीनी के साथ अपने शरीके हयात (जीवन साथी) को ढूंढ ले। जज़्बाती मुहब्बत, या

सुनी-सुनाई तारीफ़ पर भरोसा न करे, लड़की और लड़के के बारे में, मुकम्मल तहक़ीक़ कर लें और माहिर तजुर्बेकार उलेमा किराम से मश्विरा करे और इस्तिख़ारा कर ले।

जब शादी हो गई तो अब मायूस न हो और अ़लैहदगी का दिल में ख़्याल न लाए। हाँ अगर शुरू से बिल्कुल ही मायूस हो जाए और प्रबल अन्देशा हो कि हमारी गाड़ी नहीं चल सकेगी तो मियाँ-बीवी दोनों ऐसी कोशिश करें कि किसी तदबीर से हमल (गर्भ) फ़ौरन न ठहर जाए। कहीं ऐसा न हो कि जुदाई हो जाए और इस नये आने वाले मेहमान की ज़िन्दगी अजीरन हो जाए। मर्द व औ़रत अपनी सरकशी और नाफ़रमानी की सज़ा उसे दें। उस मासूम जान को अख़्लाक़ी और दिमाग़ी सदमों से दोचार करें।

हमने कुछ ऐसे घराने देखे कि शुरू से मुवाफ़क़त न हुई और मियाँ-बीवी इसी कश्मकश और बेचैनी की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे, यहाँ तक कि तीन बच्चों के बाद जुदाई हो गई। या अगर उम्र भर चलते भी रहे तो रोज़ाना झगड़ों की वजह से नई नस्ल भी ख़ौफ़, एतिमाद की कमी, बुज़दिली, कन्जूसी, हौसले की कमी, चिड़चिड़ापन, बीमारी व कमज़ोरी का शिकार रही। इस दौरान किसी तरह बनाने की कोशिश करे, लेकिन यह हमल रोकने की मुद्दत बहुत ही मुख़्तसर हो और माहिर उलेमा से मश्विरा करके फ़ैसला करें। इसलिए कि बहुत सी बार बच्चों की पैदाईश ही की बरकत से मियाँ-बीवी में बुग़ज़ व नफ़रत ख़त्म होकर मुहब्बत पैदा हो गई।

या एक सूरत यह भी होती है कि बच्चा हो गया, शादी को काफ़ी समय बीत गया लेकिन अब भी झगड़ा चल रहा है, मिलाप नहीं है, मुहब्बत व उलफ़त नहीं है, तो इसके अ़सबाब पर ग़ौर करें। शौहर कब ज़्यादा नाराज़ होते हैं? मेरी कौनसी बात पर गुस्सा ज़्यादा आता है? किस बात से आज उनको गुस्सा कम हुआ? आज अचानक वह कैसे मुस्कुराए? आज उन्होंने क्यों नहीं डाँटा? माहिर मियाँ-बीवी अगर ख़ुद

भी चाहें तो इन मुश्किलात को दूर करके और उनका हल खुद भी ढूँढ कर निकाल सकते हैं। खुसूसन जबकि दोनों नर्मी, आपसी सहयोग और ऐकता के साथ सर जोड़ कर बैठें, और एक दूसरे को समझने की कोशिश करें, तो यह डोर इतनी उलझी हुई नहीं रहेगी।

और यह हक़ीक़त है कि अक्सर शादीशुदा जोड़े तसल्ली-बख़्श जिन्सी ताल्लुक़ को क़ायम करने के लिए खुद से क़ाबू पा सकते हैं, और अपनी शादीशुदा ज़िन्दगी में बरकत, ताक़त और सआदत को बढ़ा सकते हैं। इसमें बीवी की ज़्यादा ज़िम्मेदारी है, असली नाराज़गी के असबाब पर ग़ौर करें और खुशदिली और ख़न्दा-पेशानी से उस नाराज़गी के सबब को दूर करें। इसमें दिल में भी किसी क़िस्म की तकलीफ़ व नागवारी न समझें, इसलिए कि शौहर को खुश करने के लिए जितनी भी तकलीफ़ व मुजाहदा बर्दाश्त करेगी उसका बहुत ही सवाब मिलेगा, जिसका अन्दाज़ा इस तरह लगाया जा सकता है कि खुदा और उसके रसूल की इताअ़त के बाद उसी का मक़ाम है।

इसलिए जो झगड़े का असल सबब है उसे उखाड़ फेंकने की कोशिश करे। और माँ-बाप या अपनी जिगरी सहेलियों को भी बीच में लाने की कोशिश हरगिज़ न करे। न यह उम्मीद रखे कि कोई आकर उनकी हिमायत या तरफ़दारी करेगा, या यह साबित करेगा कि हाँ तुम सही हो, तुम्हारा शौहर ग़लत है। मुशाहदा व तजुर्बा गवाह है कि इस क़िस्म की दख़ल अन्दाज़ी से झगड़ा बढ़ता है या मामला और भी पेचीदा हो जाता है।

ऐसी सूरत में हम बीवी के लिए कुछ तदबीरें लिखते हैं जिनको अपनाने से वह अपने शौहर को अपना गिर्वीदा बना सकती है।

1. अच्छी और नरम बात ज़बान से निकाले, और इस हक़ीक़त को अच्छी तरह समझ ले कि इनसान एहसान का क़ैदी होता है।

2. शौहर पर एहसान करे यानी उसकी मंशा के मुवाफ़िक़ चलती रहे।

3. उसकी हर डाँट को सह ले, और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा और दुआ़ करती रहे। उसके खाने-पीनी की चीज़ों पर सात बार बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम के साथ सूरा-ए-फ़ातिहा पढ़कर दम करे और दुआ़ करे कि ऐ अल्लाह! अख़्लाक़ को सुधारने वाले आप ही हैं, हम दोनों में मुहब्बत फ़रमा दीजिए। हम दोनों के दिलों को मिला दीजिए। मेरे शौहर को अच्छे अख़्लाक़ अ़ता फ़रमाईए।

किताब 'तोहफ़तुल-उरूस' के लेखक शैख़ महमूद इस्तन्बूली अपने एक दोस्त का वाक़िआ़ लिखते हैं जिसको हम नक़ल करके दुखी दिल बीवी को सहारा और तसल्ली देना चाहते हैं कि फ़िक्र मत करो, ग़म मत खाओ, यह काली रात कभी न कभी ज़रूर छटेगी और सुबह का चाँदना तुम्हारे ग़मों को ज़रूर ख़त्म कर देगा। कहते हैं:-

मेरा एक दोस्त सादा-मिज़ाज और गुस्से वाला शौहर था, पूरी पढ़ाई भी न कर सका कि शादी की डोर में बंध गया और नतीजा यही हुआ कि बीवी के साथ ठीक से निबाह न रख सका। इस मन्ज़िल के उतार-चढ़ाव और इस गली के आदाब को वह ठीक से बरत न सका। चुनाँचे आए दिन वह बीवी पर सख़्ती करता, उसके साथ बदसुलूकी से पेश आता।

बीवी ने अपनी माँ (लड़के की सास) से इसकी शिकायत की, माँ समझदार दीनदार औ़रत थी। माँ ने कहा बेटी! तेरा शौहर नातजुर्बेकार नौजवान है, लेकिन उसके चेहरे से अच्छाई और दोस्ती के असरात ज़ाहिर होते हैं, इसलिए तू सब्र से काम ले। धीरे-धीरे उसे रास्ते पर ला। उसे समझाने की कोशिश कर, एक न एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा जब वह तेरे हक़ में बिल्कुल ठीक हो जाएगा।

लड़की ने इसी नसीहत पर अ़मल किया। नतीजा यह हुआ कि उसकी माँ की भविष्यवाणी हर्फ़-ब-हर्फ़ सही साबित हुई और उसका शौहर बेहतरीन शौहर साबित हुआ।

इसलिए मुसलमान औ़रत को अल्लाह की रहमत से मायूस न होना

चाहिए। जो आपके ज़िम्मे है वह अदा करती रहो और अल्लाह से दुआएँ माँगकर अच्छी उम्मीद रखो, इन्शा-अल्लाह बहुत जल्द ख़ैर की सूरत निकल आएगी। बहुत से ऐसे रिश्ते जिनमें बुग़ज़ व नफ़रत, दुश्मनी आख़िर हद तक पहुँच चुकी थी, लेकिन दिलों के मिलाने वाले रब्बुल-आलमीन ने उनको एक कर दिया।

इसी तरह कई बार शादीशुदा ज़िन्दगी में ना-हमवारी, नफ़रत व ना-इत्तिफ़ाक़ी और आपसी बुग़ज़ व हसद का एक सबब मियाँ-बीवी का एक दूसरे की तलब पर फ़ौरी जवाब न देना भी है। इसलिए दोनों के लिए एक दूसरे की तलब पर फ़ौरी जवाब देना चाहिए। इसी लिए हदीस में "टाल-मटोल करने वाली" औरतों पर लानत आई है कि जिनको शौहर अपने बिस्तर पर बुलाए तो वे कहें "अभी आती हूँ" "अभी आती हूँ" यहाँ तक कि जब आए तो शौहर को नींद आ चुकी हो।

(इब्ने हिब्बान)

हाँ यह सही है कि मर्द औरत के मुक़ाबले में जल्द और सहूलत के साथ जोश में आ जाता है जबकि औरतें देर तक लुत्फ़ व मिज़ाह, खेल हंसी, दिल्लगी किये जाने की हाजत रखती हैं, तैयारी और तम्हीद की उन्हें ज़्यादा ज़रूरत होती है, और जब जवाब आता है तो वह ज़्यादा देरपा नहीं होता, यह फ़र्क़ फ़ितरी है। नये-नये मियाँ बीवी को यह जानना भी बहुत ज़रूरी है कि एक-दूसरे में तलब कैसे पैदा करें और उसका हाँ में कैसे जवाब दें। इसके लिए शौहर को किताब "तोहफ़तुल-उरूस" और "तोहफ़ा-ए-दूल्हा" का मुताला करना ज़रूरी है।

हाँ अगर मियाँ-बीवी के अन्दर यह जज़्बा हो कि उन्हें एक दूसरे को राज़ी रखना है तो इसमें शक नहीं कि यह अमल किसी दुश्वारी के बिना पूरा हो सकता है। इसलिए कि मियाँ-बीवी के दिल में एक दूसरे की तलब पर जवाब देने का जज़्बा रखना पूरी ज़िन्दगी पर अपना अनमिट असर रखता है और इससे बहुत सी उलटी बातें सीधी हो जाती हैं। अजनबी पन मुहब्बत में और नफ़रत मुसर्रत में तब्दील हो जाती है।

ख़ुदग़र्ज़ी और अनानियत की जगह दूसरों की भलाई और कुर्बानी का ज़ज़्बा जाग जाता है, लापरवाही और ग़फ़लत के बजाय ताल्लुक़ बनाने, बेलोस मुहब्बत व शफ़क़त पैदा हो जाती है, काश बीवी इस गुण को समझे और जी न चाहते हुए भी शौहर की तलब पर दिल से साथ दे।

कभी-कभी मियाँ-बीवी एक दूसरे को अच्छी तरह पहचान लेते हैं, दोनों एक दूसरे से मानूस हो जाते हैं, लेकिन माली मुश्किलात (आर्थिक समस्सयाओं) से दोचार होकर एक दूसरे से उलझे-उलझे या परेशानहाल रहते हैं और बिस्तर पर भी एक दूसरे से बेज़ार और मूँह मोड़े पड़े रहते हैं। या किसी क़िस्म की मजबूरी, बीमारी, बेक़रारी, उलझन या घुटन हो तो एक दूसरे से कटे-कटे रहते हैं।

इस सूरत में अगर शौहर पर ये हालात हैं तो बीवी ज़्यादा चुस्ती और चौकन्नी और होशियार रहकर इस मामले को समझने की कोशिश करे। कोई ऐसा अमल न होने दे जो इस हालत में शौहर के मिज़ाज के ख़िलाफ़ हो, इसलिए कि यह हालत ऐसी है जैसे बीमारी में मरीज़ को हर मीठी चीज़ का मज़ा भी कड़वा मालूम होता है, इसी तरह मिसाल के तौर पर शौहर थके हुए परेशान दुकान से आए। अब बच्चा रो रहा है, जिसके शोर से सो नहीं सकता, बीवी को चाहिए कि फ़ौरन उनका कमरा बन्द करके बच्चे को किसी तरह भी बहला कर चुप करवा ले। कहीं ऐसा न हो कि दुकान की परेशानी का नज़ला, रक़म वसूल न होने का मलबा उस मासूम बच्चे पर गिर जाए। या खाना वक़्त पर तैयार नहीं है तो अब सारी मुलाज़मत की घुटन तन्ख़्वाह न बढ़ने का ग़म, सेठ की सख़्ती और डाँट का ख़ौफ़ इस खाने के तैयार न होने पर गिरे।

इसलिए कि शौहर भी समझता है कि मैं यह जो कर रहा हूँ ग़लत कर रहा हूँ मासूम बच्चे का इसमें कोई क़सूर नहीं। या बीवी ख़ुद बीमार व परेशान है, अगर खाना तैयार नहीं तो थोड़ी देर में हो जायेगा।

इन सब बातों के समझने के बावजूद कई बार शौहर मजबूर होकर न चाहते हुए भी डाँट देता है और अगर इसमें बीवी की तरफ़ से भी

ख़ुदा न करे सूखा जवाब या मुँहमारी व ज़बान-दराज़ी हो तो जुदाई तक नौबत पहुँच जाती है। इसलिए इन वक़्तों में बीवी ख़ास ख़्याल रखे और शौहर की परेशानी दूर करने के लिए मुख़्तलिफ़ तदबीरें इस्तेमाल करे। उनका ग़म दूर करने और उनका ख़्याल परेशानियों से हटाने की कोशिश करे। उनमें से हम कुछ बता देते हैं बाक़ी हर औरत अपने हालात को देखते हुए ख़ुद दुआ माँगकर मश्विरा करके हल करे।

1. ख़ुद को और शौहर को अपने गुनाहों से माफ़ी माँगने की तर्ग़ीब दें (यानी इस तरफ़ तवज्जोह दिलाये)। सुबह व शाम इस्तिग़फ़ार की तस्बीह पढ़ती रहे।

2. ख़ुद और शौहर को आयते-करीमा पढ़ने की तर्ग़ीब दे, कि यह परेशानियों को दूर करने में बहुत मुफ़ीद है।

3. पाँच वक़्त की नमाज़ के अलावा अक्सर दो रकअत 'सलातुत्-तौबा' पढ़ें और ख़ूब दुआएँ माँगें।

4. जो कुछ मुम्किन हो सदक़ा करती रहे और शौहर को सदक़ की तर्ग़ीब (प्रेरणा) दे। इस तरह सदक़ा दे कि सीधे हाथ से दे तो बाएँ हाथ को ख़बर न हो।

कभी-कभी मियाँ-बीवी में झगड़े का सबब "सास" और देवरानी जेठानी "नन्द" होती हैं, हमें जहाँ तक दारुल-इफ़्ता में तजुर्बा हुआ तो अक्सर घरों में झगड़े, मैके के घर बैठना, तलाक़, ख़ुला के असबाब में अहम सबब इन चार औरत में से कोई औरत बनी है। अगर हर झगड़े की सही छानबीन की जाए, उसकी असल जड़ तक पहुँचने की कोशिश की जाए तो अक्सर झगड़ों का सबब यही औरतें होती हैं।

हमारे नाक़िस ख़्याल में इसका हल यह है कि देवरानी, जेठानी और नन्द के साथ न रहे और फ़ौरन अलग हो जाए चाहे किराये का मकान हो और मामूली सी झोंपड़ी ही हो। इसलिए कि ख़ुद इससे अपनी और बच्चों की ज़िन्दगी पूरी तबाह व बर्बाद होती है और किसी ख़ानदान को उजाड़ कर और उसकी बुनियादों को जड़ से उखाड़ कर शैतान जितना

ख़ुश होता है उतना किसी और ऐसे जुर्म पर नहीं ख़ुश होता जिसका इनसान इर्तिकाब (अमल) करता है। क्योंकि शैतान की इस ताबेदारी और इताअ़त में बच्चों का मुस्तक़िबल (भविष्य) तबाह हो जाता है, उम्मते मुस्लिमा (मुस्लिम कौम) हलाकत की राह पर चल पड़ती है। सिवाय उन लोगों के जिन पर अल्लाह तआ़ला रहम करे।

और अगर झगड़ा "सास" की वजह से है और सास ख़िदमत की मोहताज है तो ऐसे अलग मकान में रहे जिसमें बीवी के लिए बावर्ची-ख़ाना अलग हो और बीवी तीन वक़्त सास को अपने बावर्चीख़ाने से पका कर दे दे। हाँ अगर सास किसी और बहू के साथ रहकर ख़ुश रहना चाहती है तो उस बहू के साथ रहे, यह बीवी कुछ न कुछ रोज़ाना पका कर भेजती रहे, जिससे माँ की दुआ़एँ मिलती रहें। अल्लाह तआ़ला मियाँ-बीवी दोनों को अपने झगड़ों को हल करने और सही सबब तक रहनुमाई फ़रमाने के बाद हंसी-ख़ुशी से एक दूसरे की मदद करने की तौफ़ीक़ दे और लड़ाई-झगड़े की फ़िज़ा बदल कर सुलह, दोस्ती, मुहब्बत और सलामती की फ़िज़ा पैदा करने और वैवाहिक ज़िन्दगी की मुश्किल तरीन घाटियों को पूरी सहूलत, दिल की तसल्ली और इत्मीनान से पार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

नेक बीवी के लिए एक सबक़

कहते हैं कि एक शख़्स ने एक बाँदी ख़िदमत के लिए ख़रीदी, जब उसको घर ले आया तो उससे पूछा तुम्हारा नाम क्या है?

बाँदी: बाँदी का कोई नाम नहीं होता जो नाम आक़ा रखे वह मेरा नाम है।

आक़ा: तुम क्या खाना पसन्द करोगी?

बाँदी: जो आक़ा मेरे लिये पसन्द करेंगे।

आक़ा: तुम कौनसे कपड़े पसन्द करती हो तुम्हारे लिए वह कपड़े ख़रीद दूँ?

बाँदी: जो आक़ा मेरे लिए पसन्द करे।

आक़ा: तुम क्या काम करोगी?

बाँदी: मेरे आक़ा जो आप हुक्म देंगे वह करूँगी।

आक़ा: तुम्हारी कोई पसन्द हो तो बता दो?

बाँदी: आक़ा के सामने बाँदी की कोई पसन्द नहीं होती, जो आक़ा की पसन्द है वह बाँदी की पसन्द है।

आक़ा के सामने बाँदी की ख़ाहिश क्या चीज़ है जो आक़ा की मर्ज़ी है वही गुलाम की ख़्वाहिश है। उसका यह जवाब सुनकर मुझे रोना आ गया और मुझे यह ख़्याल आया कि मेरा भी तो मेरे मौला (जल्ल जलालुहू) के साथ यही मामला होना चाहिए। मैंने उससे कहा कि तुमने तो मुझे अपने आक़ा (अल्लाह तआ़ला) के साथ अदब करना सिखा दिया। उसने इस पर दो शे'र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि "अगर तेरे किसी बन्दे की ख़िदमत मुझसे पूरी-पूरी आदा हो जाए तो इससे बढ़कर मेरे लिए और क्या नेमत हो सकती है। पस तू सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल से मेरी कोताही और ग़फ़लत को माफ़ कर। इसलिए कि मैं तुझे बड़ा मोहसिन और रहीम समझता हूँ। (फज़ाइले सदक़ात पेज 773, मामूली तब्दीली के साथ)

हर मुसलमान बन्दा/बन्दी को ऐसा ही होना चाहिए कि जो अल्लाह का हुक्म हो और उसके नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा हो वह अपनाए और जिससे अल्लाह ने मना किया उससे बचे। इसी तरह नेक बीवी के लिए इस वाक़िये में सबक़ और नसीहत है कि अपनी मर्ज़ी फ़ना कर दे शौहर की मर्ज़ी में। अब उठना और जागना शौहर के लिए, रहना व सहना शौहर के लिए और सब कुछ शौहर को ख़ुश करने के लिए, ताकि अल्लाह तआ़ला ख़ुश हो जाए और यह नीयत रखे कि "शौहर ख़ुश होगा तो अल्लाह तआ़ला ख़ुश होगा" तो इन्शा-अल्लाह हर मुश्किल आसान हो जाएगी।

मंगनी के बाद

होने वाले शौहर के साथ घूमना-फिरना

हम हर मुसलमान बहन को अल्लाह के लिए नसीहत करते हैं कि मंगनी के बाद रिश्ता तय हो जाने के बाद निकाह से पहले आपका होने वाला शौहर आपके लिए अजनबी और नामेहरम शख़्स है। अभी आपका उसको देखना और उसका आपको देखना हराम है और उसके साथ घूमना-फिरना दुनिया व आख़िरत दोनों को तबाह करने के जैसा है।

मेरी प्यारी बहन! मंगनी के बाद होने वाले शौहर के साथ फिरने के नुक़सानात हमारे सामने दारुल-इफ़्ता (फ़तवा देने वाले दफ़्तर) में ऐसे ख़तरनाक नतीजे की सूरत में आए हैं कि वह बयान से बाहर हैं।

आप खुद फ़ैसला कर लें, मनोविज्ञान के माहिरीन का कहना है कि अगर ख़ाली मैदान में एक मर्द की हड्डी और एक औरत की हड्डी रख दी जाए तो भी उन दोनों में मैलान हो जाए। शैतान की मशहूर धमकी का तज़किरा तो आपने पढ़ा होगा कि "राबिया बसरिया व हसन बसरी रहिमहुमल्लाह भी तन्हाई में जमा हो जाएँ तो उनको भी गुनाह पर उभार सकता हूँ" तो हम किस दर्जे में शुमार होंगे।

एक नौजवान लड़के के साथ बन-ठनकर नौजवान लड़की का जाना, जो उसको चौराहों और पार्कों और होटलों में लेजा कर उसको फिराए जहाँ न चौकी है न पहरा, न दीन व अख़्लाक़ का कोई वास्ता न किसी रिश्तेदार का वहाँ गुज़र है, यह ऐसा ही है जैसे एक शेर फाड़ खाने वाले दरिन्दे के मुँह में ताज़ा लुक़्मा डाल दिया जाए, या फिर इस खुली छूट के नतीजे में हिर्स व हवस का यह पुतला साँप बनकर जब अपने शिकार का रस चूस ले, अपना दिल उस खिलौने से अच्छी तरह बहला ले, लड़की की इज़्ज़त व नामूस को सरे-बाज़ार रुस्वा कर दे, उसकी इज़्ज़त व शराफ़त का जनाज़ा निकाल दे, फिर यह बेमुहार नौजवान

शहद की मक्खियों की तरह एक कली का रस निचोड़ कर दूसरी की तलाश में लग जाते हैं। और इस खुले मेल-जोल के नतीजे में फ़रेबी तहज़ीब, गन्दी रविश और अजनबी लड़के के साथ खुल्लम-खुल्ला मेल-जोल लड़को को शादी से पहले माँ बना देता है।

कभी नादान लड़की किसी के बहकाने की वजह से ग़लती से यह कह देती है कि क्या हुआ मैं अपने मंगेतर के साथ जाऊँगी तो वह मुझे खा तो नहीं जाएगा?

प्यारी बहन! जिसने भी आपको यह पट्टी पढ़ाई बिल्कुल खुल्लम-खुल्ला आपको धोखा दिया, आप उसे यह समझाएँ कि वह मेरा गोश्त तो नहीं खाएगा, हाँ मेरी इज़्ज़त व शराफ़त ज़रूर खा जाएगा। मेरे ख़ानदान पर ज़रूर न मिटने वाले धब्बे लगा देगा, मेरे माँ-बाप की इज़्ज़त व नेकनामी पर ज़रूर पानी फेर देगा।

इसलिए कि इस खुल्लम-खुल्ला बेहयाई पर बहुत से शरीफ़ ख़ानदानों की इज़्ज़त मलियामेट हो गई। बहुत से ख़ानदानों ने अनेक डाक्टरों को लम्बी-चौड़ी फ़ीसें देकर अपने ज़ख़्मों पर मर्हम लगवाए। लेकिन उम्र भर के लिए बच्ची की ज़िन्दगी अजीरन हो गई और इस गुनाह की नहूसत कुछ ख़ानदानों में इस तरह हुई कि शादी से पहले लड़का और लड़की एक दूसरे से बहुत ही ज़्यादा मुहब्बत करते थे, घन्टों टेलीफ़ोन पर बातें हो रही हैं, घन्टों बाहर घूम रहे हैं, रिश्तेदारों की शादियों में बेग़ैरत माँ-बाप के सामने खुल्लम-खुल्ला घूम-फिर रहे हैं, लेकिन शादी होते ही शौहर का दिल उस बीवी से हट गया और देखने वाले इसपर हैरान हो गए कि इन दोनों में यह नफ़रत की आग कैसी?

लेकिन यह हक़ीक़त है कि जो बन्दा या बन्दी अल्लाह को नाराज़ करते हैं वे कभी सुकून व राहत के साथ नहीं रह सकते। गुनाह करके जो अल्लाह को नाराज़ किया और उसमें जो मज़ा आया वह ऐसा ही है जैसे ख़ारिश करने वाले को ज़ख़्म पर ख़ारिश करने (खुजलाने) में मज़ा आता है कि वह थोड़ी देर की लज़्ज़त बड़ी बीमारी और ठीक न होने

वाले ज़ख़्म पैदा कर देती है। इस गुनाह की नहूसत कुछ ख़ानदानों में यह भी सुनी गई कि रिश्ता बहुत जल्द टूट जाता है, किसी बहाने से लड़का यह कह देता है कि मुझे लड़की पसन्द नहीं।

अब उम्र भर उस लड़की के लिए परेशानी हो जाती है, ख़ानदान में यह बदनामी छा जाती है कि इस लड़की का रिश्ता टूट चुका है, ज़रूर इस लड़की में कोई ऐब होगा जिसकी वजह से फुलाँ लोगों ने रिश्ता तोड़ दिया। इसलिए हम हर मुसलमान बहन की ख़िदमत में अर्ज़ करेंगे कि आप इस गुनाह से बहुत ही एहतिमाम से बचिए। ऐसे बचिए जैसे शेर व साँप से बचा जाता है।

अगर होने वाले ससुराली रिश्तेदार मजबूर करें तो उनको साफ़ मना कर दें कि दुनिया इधर से उधर हो जाए मैं नामेहरम के साथ बाहर नहीं जा सकती। हाँ अगर आप चाहते हैं तो निकाह करा दें फिर निकाह करने के बाद आप जा सकती हैं। इसलिए कि निकाह करने के बाद अल्लाह तआला के हुक्म के मुवाफ़िक़ दोनों एक दूसरे के लिए हलाल हैं। अल्लाह तआला आपकी हिफ़ाज़त व मदद फ़रमाए और हर गुनाह से बचने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

याद रखिए! मंगनी के बाद होने वाले शौहर से फ़ोन पर भी बिल्कुल बात न कीजिए। पहले फ़ोन पर बात शुरू होगी, फिर आमने-सामने बात होगी, फिर उठना-बैठना, फिर घूमना-फिरना, फिर शैतान के लिए अपने मक़सद तक पहुँचने में राहें हमवार हो जाएँगी। इसी लिए एक शायर ने कहा:

نظرة فابتسامة فسلام فكلام فموعد فلقاء

मुहब्बत क्या है, एक नज़र, फिर एक मुस्कुराहट, फिर सलाम, फिर फ़ोन पर बातें, फिर टाईम का निर्धारण और फिर मुलाक़ात और फिर मुसाफ़ा करने से दिल को करन्ट सा लगता है और फिर बड़ी बुराई के गढ़े में गिरना आसान हो जाता है। इसलिए फ़ोन पर भी बात करने से बिल्कुल बचना चाहिए। आप बचने का इरादा कीजिए अल्लाह तआला

आप की ज़रूर मदद फ़रमाएँगे।

नेक बीवी

नामेहरम मर्दों से कभी मुसाफ़ा नहीं करती

नेक बीवी की एक यह भी सिफ़त है कि नामेहरम मर्दों की तरफ़ न कभी निगाह उठाकर देखती है, न उनको सलाम करती है, न उनसे मुसाफ़ा करती है। ज़रूरत पड़ जाए तो मजबूरी में पर्दे का एहतिमाम रखते हुए सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ ही बात करती है। आज 20 फ़रवरी ईद के दिन हरम शरीफ़ में बैठे हुए इस बात का ख़्याल आया कि बाज़ ख़ानदानों में एक नई आदत पैदा हो चुकी है तो मुसलमान बहनों तक यह पैग़ाम पहुँचाने की कोशिश कर ली जाए, अल्लाह करे इस मुबारक मक़ाम और इस मुबारक दिन की बरकत से इस गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ मिल जाए और इस मुबारक दिन में मुसलमान अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त को नाराज़ करने से बचें और बचाएँ, इसलिए कि हमें कुछ बहनों से यह अफ़सोसनाक ख़बर पहुँची कि ईद के दिन उनके ससुराल के लोग जेठ से मुसाफ़ा करवाते हैं, उसको हाथ चूमने पर मजबूर करते हैं, जबकि वह पाकदामन औरत गुनाहों से बचना चाहती है, अल्लाह की नाराज़गी और उसके अज़ाब से डरती है, लेकिन ससुराल के लोग इस गुनाह पर मजबूर करते हैं, या ईद के दिन ख़ाला मामूँ, चचा, फूफी के लड़कों से मुसाफ़ा करना, या अपने बहनोई से मुसाफ़ा करना और हाथों को चूमना, ये सब बातें अल्लाह तआला को नाराज़ कर देती हैं। और मुसलमान बीवी कभी ऐसा काम नहीं कर सकती जिससे उसका मालिक उसका पैदा करने वाला ख़ालिक़ नाराज़ हो जाए। इसलिए कि वह यक़ीन रखती है कि-

"जिससे अल्लाह तआला नाराज़ हो जाएँ उसकी बनी-बनाई दुनिया भी गिड़ जाती है और जिससे अल्लाह तआला राज़ी हो जाएँ उसके बिगड़े हुए काम भी बन जाया करते हैं"।

हाँ अगर कोई समझदार औ़रत मुसाफ़ा करने से या बेपर्दा उनके सामने बात-चीत करने से मना कर दे तो कुछ बेवक़ूफ़ औ़रतें जैसे नन्द, बड़ी भाभी, ख़ाला की बड़ी बेटी कह देती हैं: क्या हो गया हाथ मिला लोगी तो कौनसी क़ियामत आ जाएगी? ईद का दिन साल में एक ही बार तो आता है, कोई हाथ मिलाने से तुम्हें खा तो नहीं जाएँगे। ऐसे मौक़ों पर उनकी बात न सुनें, बल्कि उनको कुछ जवाब न दें, उनकी हिदायत के लिए अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला से दुआ़ माँगें, उनको दीन के अच्छे माहौल में ले जाएँ।

जहाँ औ़रतों की तालीम अकाबिरे दावत (बड़ों और दीन के आ़लिमों) के मश्‍विरे से होती हो, वहाँ उनको ले जाएँ इन्शा-अल्लाह तआ़ला फिर अल्लाह के हुक्म पर अ़मल करना आसान हो जाएगा और दिल से यक़ीन आ जाएगा कि अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने से वाक़ई क़ियामत बर्पा हो जाएगी। वाक़ई घर बला व मुसीबत का गहवारा बन जाएगा, रोज़ी में तंगी शुरू हो जाएगी, आपस में मेल-मिलाप और मुहब्बत के बजाय झगड़े और मनमुटाव की आग भड़क जाएगी।

हाँ अगर कोई समझदार औ़रत हो तो उसको अपनी तरफ़ से समझा दो और नासमझ के सामने ख़ामोश रहो।

उसे अच्छी तरह यह समझा दो कि ग़ैर-मेहरम मर्द से मुसाफ़ा करने का कम से कम नुक़सान यह होगा कि मेरे हाथ वह अपनी बीवी के हाथों से ज़्यादा नर्म व नाज़ुक और हसीन पाएगा तो उसकी अपनी बीवी उसकी नज़र से गिर जाएगी और हमेशा के लिए ग़म व अफ़सोस में रहेगा- काश! भाभी मेरे निकाह में होती और ख़ुसूसन ईद व शादी के दिनों में हाथों पर मेहंदी और मेकअप वाला चेहरा जेठ या ख़ाला और मामूँ के लड़के के दिल में घर कर गया तो यह मेरी तरफ़ से एक बहुत बड़ा ज़ुल्म होगा अपनी उस मुसलमान बहन पर जो उस शख़्स के निकाह में है, इसलिए कि वह मुझे फिर ज़्यादा पसन्द करेगा और अपनी

बीवी को नापसन्द करते हुए बात-बात पर उससे झगड़ेगा, तो गोया मेरा नामेहरम मर्द के साथ देवर, जेठ, ख़ालाज़ाद, मामूँज़ाद, से बेतकल्लुफ़ी से मिलना-मिलाना बज़ाहिर बहुत ही अच्छा लगे लेकिन नतीजा व अन्जाम इसका बहुत ही बुरा होता है। ये दो अच्छे-भले मियाँ-बीवी में झगड़ा करवाने का सबब है।

इसी तरह अगर मैंने नामेहरम मर्द से मुसाफ़ा किया और मुझे देवर या जेठ के हाथ अपने शौहर के हाथ से ज़्यादा पसन्दीदा और बेहतर मालूम हुए तो मेरा शौहर मेरी निगाहों से गिर जायेगा और मुझे ख़ालाज़ाद या मामूँज़ाद या देवर की मुस्कुराहट पसन्द आ गई तो मैं कभी दिल से अपने शौहर को नहीं चाहूँगी, शैतान हमेशा मेरे सामने उनकी बनावटी झूठी मुस्कुराहट सामने लाकर धोखा देगा कि देख ये लोग कैसे अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं, प्यार व मुहब्बत वाले हैं, और तू कहाँ फंस गई। अब बहन! तुम ही बतलाओ कि अगर मैं मुसाफ़ा न करूँ, हंसते हुए ईद मुंबारक न कहूँ उनके साथ मज़ाक़-मस्तियों में शामिल न रहूँ और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहूँ तो भला बताओ क्या इसके अन्दर हम सब के लिए भलाई, सलामती और पाकदामनी न होगी? या मैं अल्लाह को नाराज़ करते हुए और तुम जैसी औरतों की बातें सुनते हुए कि "ख़ालाज़ाद तो भाई होता है, या शौहर के दोस्त से हंसते वक़्त बातें कर लेने में कौनसी क़ियामत क़ायम हो जाएगी या तुम्हें देवर पर हसद है इसलिए बात नहीं करतीं" अगर मैंने मुसाफ़ा कर लिया, खुल्लम-खुल्ला घूमती फिरती रही, एक मेज़ कुर्सी पर बैठकर खाना खाया, वग़ैरह वग़ैरह तो बहन तुम ही बतलाओ कि इसमें हम सबके लिए हलाकत, बर्बादी, शर्मिन्दगी, परेशानी, दुनिया व आख़िरत की ज़िल्लत व रुस्वाई है या नहीं?

उम्मीद है कि इस तरह आप अगर किसी मुसलमान बहन को प्यार व मुहब्बत और तरीक़े के साथ समझाने में कामयाब हो गईं और उसने भी शरई पर्दा इख़्तियार किया और करवाने लगी तो जितनी औरतें

आपकी मेहनत से पूरे पर्दे के साथ पूरे दीन पर आएँगी और फिर इस दीन को सारी दुनिया के मर्दों, औरतों में फैलाने की फ़िक्र करेंगी तो आपको इस अमल करने का ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी अज्र मिलता रहेगा।

औरतों को हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक ख़ास नसीहत

ऐ औरतों की जमाअत! तुम सदक़ा बहुत कसरत से दिया करो, मैंने औरतों को बहुत ज़्यादा जहन्नम में देखा है। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह! यह क्या बात है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि औरतें लानत (बद्दुआएँ) बहुत करती हैं और शौहर की नाशुक्री बहुत करती हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

यह औरतों को ख़ास नसीहत है कि जहन्नम की आग से बचने के लिए ख़ूब सदक़ा किया करें।

दूसरी हदीस में है कि सदक़ा इस तरह अल्लाह के गुस्से को बुझा देता है जिस तरह पानी आग को बुझा देता है। इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार औरतों को ख़ास ख़िताब करके फ़रमायाः

يا نساء المومنين! تهادين ولو فرسن شاة فانه ينبت المودة ويذهب الضغائن . (ومعناه فى الصحيحين صحيح مسلم كتاب الزكاة ٢/١٤٧)

तर्जुमाः ऐ मोमिनों की औरतो! एक दूसरे को हदिया (तोहफ़ा या किसी तरह की कोई चीज़) दिया करो चाहे बकरी का एक खुर ही क्यों न हो। इसलिए कि इससे मुहब्बत पैदा होती है और कीना-कपट ख़त्म हो जाता है।

इसलिए मुसलमान औरतों को अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इरशाद पर अमल करते हुए हदिया देने की आदत

बनानी चाहिए। जैसे अपने शौहर के रिश्तेदारों को कभी-कभी कोई चीज़ पका कर भेज दी, लेकिन इस हदिया देने में नीयत अल्लाह को राज़ी करने की करनी चाहिए।

कमाई मर्द की, ख़र्च का सवाब औरत को

عن عائشة رضى الله عنها قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا انفقت المرأة من طعام بيتها غير مفسدة كان لها اجرها بما انفقت ولزوجها اجره بما كسب وللخازن مثل ذلك لا ينقص بعضهم اجر بعض شيئا. متفق عليه كذا فى المشكوٰة .(ص١٧٢ج اول)

तर्जुमाः हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि जब औ़रत अपने घर के खाने में से ऐसी तरह सदक़ा करे कि (फ़ुज़ूलख़र्ची व रियाकारी वग़ैरह से) उसको ख़राब न करे तो उसको ख़र्च करने का सवाब है, और शौहर को इसलिए सवाब है कि उसने कमाया था और खाने का इन्तिज़ाम करने वाले को (मर्द हो या औ़रत) ऐसा ही सवाब है और उन तीनों में से एक के सवाब की वजह से दूसरे के सवाब में कमी न होगी।

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक इरशाद वारिद हुआ है कि अल्लाह तआ़ला रोटी के एक लुक़्मे और खजूर की एक मुट्ठी की वजह से तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाते हैं- एक घर के मालिक को यानी शौहर को, दूसरे बीवी को जिसने यह खाना पकाया, तीसरे उस ख़ादिम को जो दरवाज़े तक मिस्कीन को देकर आया।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की बहन हज़रत अस्मा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मेरे पास कोई चीज़ नहीं है अ़लावा उसके जो मेरे शौहर हज़रत ज़ुबैर मुझे दे दें, क्या मैं उसमें से ख़र्च कर लिया करूँ? हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़ूब ख़र्च

किया करो, बाँधकर न रखो कि तुम पर भी बन्दिश कर दी जाएगी।

उलेमा ने लिखा है कि सदक़ा देना मरने के वक़्त शैतान के वसाविस (दिल में उलटे-सीधे ख़्याल डालने) से महफ़ूज़ रखता है, और मर्ज़ की शिद्दत की वजह से नाशुक्री के अलफ़ाज़ निकलने से हिफ़ाज़त करता है और नागहानी मौत से रोकता है। ग़र्ज़ सदक़ा देना अच्छे ख़ात्मे में मददगार है।

एक हदीस में आया है कि सदक़ा क़ब्र की गर्मी को दूर करता है और आदमी क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साये में होगा।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने 'सलातुल-कुसूफ़' (सूरज ग्रहन के मौक़े पर पढ़ी जाने वाली नमाज़) में जन्नत व दोज़ख़ को देखा तो दोज़ख़ में कसरत से औ़रतों को देखा। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने जब इसकी वजह पूछी तो हुज़ूरे पाक ने इरशाद फ़रमाया कि वे एहसान फ़रामोशी करती हैं, शौहर की नाशुक्री करती हैं। अगर तू सारी उम्र उनमें से किसी पर एहसान करता रहे, फिर कोई ज़रा सी बात पेश आ जाए तो कहने लगती हैं कि मैंने तुझसे कभी कोई भलाई नहीं देखी। (मिश्कात शरीफ़)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद फ़रमाया हुआ यह जुमला भी औ़रतों की आ़म आ़दत है। जितना भी उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाए, अगर किसी वक़्त कोई बात उनकी तबीयत के ख़िलाफ़ पेश आ जाए तो शौहर के उम्र भर के एहसान सब भुलाकर यह कहना कि "इस निगोड़े घर में मुझे चैन न मिला, इस घर में आकर मैंने सदा तंगी देखी" उनका ख़ास तकिया-ए-कलाम है। इन रिवायात से औ़रतों के कसरत से जहन्नम में दाख़िल होने की वजह मालूम होने के साथ यह भी मालूम हुआ कि उससे बचाव और हिफ़ाज़त की चीज़ भी सदक़ा की कसरत (अधिकता) है।

चुनाँचे इस वईद (सज़ा की धमकी) वाली हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब यह इरशाद फ़रमा रहे थे और हज़रत

बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु, हुज़ूरे पाक के साथ थे तो सहाबी औरतें हुज़ूरे पाक का पाक इरशाद सुनने के बाद कसरत से अपने कानों का ज़ेवर और गले का ज़ेवर निकाल-निकाल कर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के कपड़े में, जिसमें वह चन्दा जमा कर रहे थे, डाल रही थीं।

हमारे ज़माने में अव्वल तो औरतों को इस क़िस्म की सख़्त हदीसें सुनकर ख़्याल भी नहीं होता और अगर किसी को होता भी है तो फिर उसका नज़ला भी शौहर ही पर गिरता है कि वह ही उनकी तरफ़ से ज़कात अदा करे, उनकी तरफ़ से सदक़ा करे। अगर वे ख़ुद भी करेंगी तो शौहर ही से वसूल करके। क्या मजाल है कि उनके ज़ेवरों को कोई आँच आ जाये। वैसे चाहे सारा ही चोरी हो जाए, खो जाए, या ब्याह-शादियों और बेकार की तक़रीबात में गिरवी रखकर हाथ से जाता रहे, मगर उसको अपनी ख़ुशी से अल्लाह के यहाँ जमा करना, इसका कहीं ज़िक्र नहीं। इसी हाल में उसको छोड़कर मर जाती हैं। फिर वह वारिसों में तक़सीम होकर निहायत सस्ता जाता है। लेकिन उनको इससे कुछ ग़र्ज़ नहीं, यह घड़ाई के दाम बिल्कुल बेकार जा रहे हैं, उनको बनवाते रहने से ग़र्ज़ है, यह तुड़वा कर वह बनवा लिया, वह तुड़वा कर यह बनवा लिया। और अपने काम आने वाला न वह है न यह है, और बार-बार तुड़वाने में माल की बर्बादी के अलावा घड़ाई की उजरत भी बेकार होती रहती है।

सदके की फ़ज़ीलत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मशहूर इरशाद है:-

जहन्नम की आग से बचो, चाहे आधी खजूर ही से क्यों न हो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है- सदक़ा ख़ताओं को ऐसा बुझा देता है जैसा कि पानी आग को बुझा देता है। (इत्तिहाफ़)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि क़ियामत के दिन हर शख़्स अपने सदक़े के साये में होगा। (इत्तिहाफ़)

यानी जिस क़द्र आदमी के सदक़े की मिक़दार (मात्रा) बढ़ी हुई होगी उतना ही गहरा साया उस सख़्त दिन में होगा जिसमें गर्मी की शिद्दत से मुँह तक पसीना आया हुआ होगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि "सदक़ा हक़ तआला शानुहू के गुस्से को भी रोकता है और बुरे ख़ात्मे (बुरी मौत) से भी हिफ़ाज़त का सबब है"। (मिश्कात)

हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम की अपने बेटे को वसीयत है कि जब तुझसे कोई ख़ता और ग़लती हो, सदक़ा किया कर। (इहया)

इसी तरह एक वाक़िआ है कि एक बदकार फ़ाहिशा औरत की कुत्ते को पानी पिलाने से मग़फ़िरत हो गई। इबाद बिन उमर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैदाने हश्र में लोग इन्तिहाई भूखे होंगे, इन्तिहाई प्यासे और बिल्कुल नंगे होंगे, लेकिन जिस शख़्स ने अल्लाह के वास्ते किसी को खाना खिलाया होगा, उसको हक़ तआला शानुहू खाना खिलाएँगे और जिसने अल्लाह के वास्ते किसी को पानी पिलाया होगा उसको सैराब करेंगे, और जिसने अल्लाह के वास्ते किसी को कपड़ा दिया होगा उसको लिबास पहनाएँगे। (इहया)

क़ियामत के दिन जहन्नमी एक क़तार में खड़े किये जाएँगे, उन पर एक (कामिल वली) मुसलामन का गुज़र होगा, उस सफ़ में से एक शख़्स कहेगा तू मेरे लिए हक़ तआला शानुहू के यहाँ सिफ़ारिश कर दे। वह पूछेगा तू कौन है? वह जहन्नमी कहेगा तू मुझे नहीं जानता? मैंने दुनिया में फुलाँ वक़्त तुझे पानी पिलाया था।

दूसरी हदीस में गुज़रा कि क़ियामत के दिन जब जन्नती और जहन्नमी लोगों की सफ़ें लग जाएँगी तो जहन्नमी सफ़ों में से एक शख़्स की नज़र जन्नती सफ़ों में से एक शख़्स पर पड़ेगी। और वह याद दिलाएगा कि मैंने दुनिया में तेरे साथ फुलाँ एहसान किया था। इस पर वह शख़्स उसका हाथ पकड़ कर हक़ तआला शानुहू की बारगाह में ले जाएगा और अर्ज़ करेगा कि या अल्लाह! इसका मुझ पर फुलाँ एहसान है, हक़ तआला अपनी रहमत से उसको बख़्श देंगे।

एक और हदीस में गुज़रा कि, क़ियामत के दिन ऐलान होगा कि उम्मते मुहम्मदिया के फ़क़ीर लोग कहाँ हैं? उठो और लोगों को मैदाने क़ियामत में से तलाश कर लो। जिस शख़्स ने मेरे लिए तुम में से किसी को एक लुक़्मा दिया हो या मेरे लिए एक घूँट भी पानी पिलाया हो या नया पुराना कपड़ा दिया हो, उसका हाथ पकड़कर जन्नत में दाख़िल कर दो। इस पर उम्मत के फ़क़ीर उठेंगे और उनको चुन-चुनकर जन्नत में दाख़िल कर देंगे। इसलिए मुसलमान बीवी को चाहिए कि कंजूसी छोड़ दे और फ्रिज को बार-बार भरकर न रखे। जो चीज़ अपनी ज़रूरत से ज़ायद हो तो फ़ौरन दे दे, यह तो कम से कम दर्जा है, आला और ऊँचा दर्जा यह है कि अपनी ज़रूरत छोड़कर दूसरे की ज़रूरत को पूरा किया जाए।

कितने अफ़सोस की बात है कि बचा हुआ खाना भी हम फ्रिज में डाल देते हैं, यह नहीं कि किसी मुसाफ़िर को, चौकीदार को, ड्राईवर को, मज़दूर को जो आस-पास हों, तक़सीम कर दें।

याद रखिए! अगर ग़रीबों मिस्कीनों से बचा-बचाकर हमने उसको संभाला तो हो सकता है कि फ्रिज में वह ख़राब न हो, लेकिन वह खाना पेट में जाकर ज़रूर ख़राब हो जाएगा। पेट में बीमारियों का सबब बनेगा पेट में पत्थर बन जाएगा।

ग़रीबों से बचा-बचाकर फ्रिज में, अलमारियों या बैंकों में रखना

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में किसी शख़्स ने गोश्त का एक टुकड़ा पका हुआ हदिये के तौर पर पेश किया। चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोश्त खाना पसन्द था इसलिए हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़ादिमा से फ़रमाया कि इसको अन्दर रख दे शायद किसी वक़्त हुज़ूरे पाक तनावुल फ़रमा (खा) लें।

ख़ादिमा ने उसको अन्दर ताक़ में रख दिया। उसके बाद एक साईल

(माँगने वाला) आया और दरवाज़े पर खड़े होकर सवाल किया कि कुछ अल्लाह के वास्ते दे दो, अल्लाह तुम्हारे यहाँ बरकत फ़रमाए। घर में से जवाब मिला कि अल्लाह तुझे बरकत दे। यह इशारा था कि कोई चीज़ देने के लिए मौजूद नहीं। वह साईल चला गया। इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया: उम्मे सलमा! मैं कुछ खाना चाहता हूँ कोई चीज़ तुम्हारे यहाँ है?

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़ादिमा से फ़रमाया कि जाओ वह गोश्त हुज़ूरे पाक की ख़िदमत में पेश करो। वह अन्दर गई और जाकर देखा कि ताक़ में गोश्त तो है नहीं सफ़ेद पत्थर का एक टुकड़ा रखा हुआ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वाक़िआ मालूम हुआ तो हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया: तुमने वह गोश्त चूँकि साईल (फ़क़ीर) को न दिया इसलिए वह गोश्त पत्थर बन गया।

हज़रत शैखुल-हदीस साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं:-

बड़ी इब्रत का मक़ाम है कि ज़रूरतमन्द से बचाकर और इनकार करके जो शख़्स खाता है वह असर और फल के एतिबार से ऐसा है जैसा कि पत्थर खा लिया हो, कि इससे उस चीज़ का असल फ़ायदा हासिल न होगा बल्कि सख़्त-दिली होगी और लाभ से मेहरूमी होगी। यही वजह है कि हम लोग अल्लाह तआला शानुहू की दी हुई बहुत सी नेमतें खाते हैं, लेकिन उनसे वे फ़ायदे बहुत कम मिलते हैं जो मिलने चाहिएँ। और कहते हैं कि चीज़ों में असर नहीं रहा, हालाँकि हक़ीक़त में अपनी नीयतें ख़राब हैं इसलिए बुरी नीयत से फ़वायद में कमी होती है।

इसलिए मेरी माँ बहनो! देने की ख़ूब आदत डालो और इस तरह दो कि सीधे हाथ से दो तो बाएँ हाथ को पता न चले। फ्रिज में जमा करके मत रखो कि कल काम आएगा, बल्कि अल्लाह के बन्दों को ख़ूब खिलाओ ताकि कल मौत के बाद उसका अज्र मिले।

इसी तरह अलमारियों में बैंकों में जमा मत करो, ख़ूब ख़र्च करो। अल्लाह के बन्दों पर अल्लाह का दिया हुआ माल ख़ूब लगाओ। और

सदक़ा सिर्फ़ यही नहीं है कि बक्री या मुर्ग़ी दे दी, बल्कि हर वह चीज़ जो अल्लाह की रिज़ा के लिए मिस्कीनों को दी जाए वह सदक़ा है। और जो अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, पड़ोसियों को दिया जाए वह हदिया है।

अगर अल्लाह तआ़ला ने आपको नया जोड़ा दिया, अब उसका शुक्र करने का तरीक़ा यह है कि पुराने जोड़े को सदक़ा कर दें। आपके शौहर के पास साईकिल थी, अल्लाह ने मोटर साईकिल दे दी या मोटर साईकिल थी, अल्लाह तआ़ला ने गाड़ी दे दी तो उसका सही शुक्रिया यह है कि अगर गुन्जाईश और हैसियत हो तो पुरानी नेमत अल्लाह की राह में सदक़ा दे दें या दोस्तों को हदिया दे दें।

कितने अफ़सोस की बात है कि अल्लाह तआ़ला ने नया फ़्रिज दिया पन्द्रह हज़ार रुपये का पुराना फ़्रिज एक हज़ार रुपये का बेच रहे हैं, हालाँकि होना यह चाहिए था कि मासी को घर की ख़ादिमा को चौकीदार को मुलाज़िम मज़दूर को किसी को भी ढूँढ़ें जिसके घर में फ़्रिज न हो, उसको दे दें तो जब तक उसके घर में फ़्रिज रहेगा और वह उससे फ़ायदा उठाएगा, आपको दुआ़ देता रहेगा, उसके छोटे मासूम बच्चे जब ठंडा पानी पिएँगे तो आपको दिल से दुआ़ देंगे।

इसी तरह कितने सदमे की बात है कि बाज़ औरतें अपने पुराने कपड़े पुराने बरतन यहाँ तक कि घर में रंग करवाया तो रंग के डिब्बे भी यह सब बेचने की फ़िक्र में होती हैं, हालाँकि अल्लाह तआ़ला अपने ख़ज़ानों से उनको बहुत ही दिया हुआ होता है, फिर भी ये सब चीज़ें बेचती हैं। अगर इसके बजाय वे अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए सदक़ा कर दें, या अपने रिश्तेदारों में ऐसे लोग जिनको उनकी ज़रूरत हो, उन रिश्तेदारों को हदिये की नीयत से दे दें, तो इससे अल्लाह तआ़ला भी ख़ुश होंगे और रिश्तेदारों से मुहब्बत भी बढ़ेगी।

ख़र्च करने की सबसे बेहतर तदबीर यह है कि हर हफ़्ते या दो हफ़्ते बाद या कम से कम एक महीने के बाद अपनी अलमारी साफ़ कर लें, जो चीज़ अपनी ज़रूरत में फ़िलहाल न हो उसको फ़ौरन किसी और

को दे दें, ताकि अल्लाह तआ़ला के यहाँ आपके मुक़द्दर से जो आपको मिलने वाला होगा वह उसको न देने की वजह से कहीं रुक न जाए। जब आप उसको रवाना कर देंगी तो उधर से एक के बदले दस मिलेगा, फिर आप दस ख़र्च कर देंगी तो **100** और फिर इसी तरह बढ़ता जाएगा।

यूँ समझिए कि यह अल्लाह तआ़ला की दी हुई आपके पास अमानत है, आपको तक़सीम के लिए दिया गया है। जितनी आपको ज़रूरत है उतना रख लें बाक़ी फ़ौरन किसी को दे दें। अगर आप अपने इस्तेमाल में भी न ला सकें और किसी और को भी न दिया और आपकी मौत आ गई तो आप सोच लें कि कल क़ियामत के दिन आप क्या जवाब देंगी।

इसी तरह जो भी घर में पका हुआ हो उसमें से कुछ पड़ोसियों को (मुहब्बत बढ़ाने के लिए और हदीस पर अ़मल करने की नीयत से) भेजना चाहिए।

एक हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें नसीहत फ़रमाई है कि सालन में पानी ज़्यादा डाल दो ताकि उसका शोरबा ज़्यादा हो जाए और पड़ोसी को दे दो।

इसका फ़ायदा दूसरी हदीस में गुज़र चुका है कि वह मुहब्बत को पैदा करेगा और कीना, हसद, दुश्मनी को दूर करेगा। यह अल्लाह की कितनी बड़ी नेमत है कि पड़ोसियों के घर खाना भेजना या किसी क़िस्म का हदिया भेजना, इससे एक तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशाद पर अ़मल हो जाएगा दूसरे दो मुसलमान ख़ानदानों में मुहब्बत बढ़ेगी।

ज़रूरी नहीं कि बिरयानी ही पकाकर भेजें बल्कि जो भी आपके घर में पका है अल्लाह को राज़ी करने की ख़ातिर और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म बजा लाने की ख़ातिर भेज दें और हम इस बात को रिवाज में डालें तो अल्लाह की बेशुमार रहमतें बरकतें

हमारी तरफ़ मुतवज्जह होंगी।

मक्का मुकर्रमा में रहने वाले हमारे एक दोस्त कहने लगे कि हमारे घर में अल्हम्दु लिल्लाह रोज़ाना दस्तरख़्वान पर तीन मुल्कों के खाने होते हैं, इसलिए कि हमारे एक पड़ोसी शामी (सीरिया के रहने वाले) हैं और एक हिन्दी हैं और मैं खुद मिस्री हूँ। तो मेरे घर में जो भी पकता है वहाँ जाता है और उनके घरों में जो पकता है वे भेजते हैं, तो हमारे यहाँ तीन क़िस्म के खाने जमा हो जाते हैं।

इस्लाम यह चाहता है कि मुसलमानों का ऐसा समाज हो जिसमें समाज के लोग गोया एक ख़ानदान, एक क़बीले, एक कुनबे के लोग हों। गोया एक ही माँ हव्वा और एक ही बाप आदम के बेटे हों। भाईचारे की ऐसी फ़िज़ा हो कि पूरे मौहल्ले और पूरे समाज में मुहब्बत, इख़्लास, वफ़ा व ईसार और सहयोग व ख़ैरख़्वाही की बुनियादें क़ायम हों तो इस मुस्लिम समाज में एकता व सलामती और स्थिरता व अमन की बुनियादें मज़बूत होंगी। और अ़दूल व इन्साफ़ और बराबरी व भाईचारे की फ़िज़ा पूरी दुनिया और सारी सरज़मीन में फैल जाएगी। क्यों? इसलिए कि जब मुसलमानों ने इस्लामी अख़्लाक़ का ज़िन्दा नमूना अपने अख़्लाक़ व आदात चाल-चलन और मामले व बर्ताव के ज़रिये हर समझदार के सामने पेश कर दिया होगा तो इस समाज में अगर कोई काफ़िर आएगा तो वह इन हालात को देखकर और ख़ास कर मुसलमानों का आपस में मुहब्बत व उलफ़त वाला रहन-सहन देखकर वह इस सच्चे मज़हब को क़बूल कर लेगा और इस्लाम उसके दिल में जगह बना लेगा।

पड़ोसी का हक़

तरबियत करने वालों को जिन हुक़ूक़ का बहुत एहतिमाम करना चाहिए और बहुत ख़्याल रखना चाहिए उनमें से पड़ोसी का हक़ भी है। लेकिन पड़ोसी कौन है? हर वह शख़्स जो तुम्हारे दाएँ-बाएँ ऊपर-नीचे चालीस घर तक पड़ोस में रहता हो। इसलिए यह सब के सब आपके पड़ोसी हैं और उन सबके आपके ऊपर कुछ हुक़ूक़ हैं और आपके ज़िम्मे

उनके कुछ फ़राईज़ हैं।

पड़ोस के यह मायने उस हदीस से मालूम हुए हैं जो हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इमाम तबरानी ने रिवायत की है। वह फ़रमाते हैं कि एक साहिब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आए और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मैं फ़ुलाँ हज़रात के मौहल्ले में ठहरा था, उनमें से सबसे ज़्यादा तकलीफ़ मुझे उससे पहुँची जो मुझसे सबसे ज़्यादा क़रीब था।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को हुक्म दिया कि मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर ज़ोर से ऐलान करें कि सुन लो! चालीस घर तक पड़ोसी होता है, और जन्नत में वह शख़्स दाख़िल नहीं होगा जिसका पड़ोसी उसके शर (बुराई और बुरे सुलूक) से डरता रहता हो।

इस्लाम की नज़र में पड़ोसी के हुक़ूक़ के चार बुनियादी उसूल हैं:

1. यह कि इन्सान अपने पड़ोसी को तकलीफ़ न पहुँचाए।

2. और उसको उस शख़्स से बचाए जो उसे तकलीफ़ पहुँचाना चाहता हो।

3. और उसके साथ अच्छा बर्ताव करे।

4. और उसकी बदमिज़ाजी और अक्खड़पन का बुर्दबारी व दरगुज़र से बदला दे।

पड़ोसी के आदाब

पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करने के बारे में असल बुनियाद वह हदीस है जिसे ख़राईती और तबरानी ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया है कि आपने इरशाद फ़रमाया:

जिस शख़्स ने अपने अहल व अ़याल (घर वालों और बाल-बच्चों) और माल की हिफ़ाज़त के लिए अपने पड़ोसी पर अपने घर के दरवाज़े बन्द कर दिये तो वह मोमिन कामिल नहीं, और वह शख़्स भी मोमिन

नहीं जिसका पड़ोसी उसके शर (बुराई) से महफ़ूज़ व बेख़तर न हो।

क्या तुम जानते हो पड़ोसी का क्या हक़ है?

1. जब वह तुम से मदद माँगे तो तुम उसकी मदद करो।

2. और जब क़र्ज़ माँगे तो उसे क़र्ज़ दो।

3. और जब बीमार हो तो उसकी बीमारी का हाल पूछो।

4. और जब वह किसी चीज़ का मोहताज हो तो उसकी हाजत पूरी करो।

5. और जब उसे कोई मुसीबत पहुँचे तो उसके ग़म में शरीक रहो।

6. और जब उसका इन्तिक़ाल हो जाए तो उसके जनाज़े में शरीक हो।

7. और अपना मकान उसके मकान से ऊँचा न बनाओ ताकि उसकी हवा न रुक जाए, मगर यह कि वह इजाज़त दे दे (तो कोई हर्ज नहीं)।

8. और तुम उसे हाँडी की भाप से तकलीफ़ न पहुँचाओ, मगर यह कि तुम उसमें से उसे भी दे दो।

9. और अगर तुम कोई फल ख़रीदो तो उसको भी उसमें से हदिया कर दिया करो, और अगर ऐसा न कर सको तो चुपके से छुपा कर ले जाओ, और ऐसा न हो कि तुम्हारा बेटा फल बाहर ले जाए और उसे देखकर पड़ोसी के लड़के को तकलीफ़ हो। (फ़ज़ाईले सदक़ात)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पड़ोसी के इकराम को ईमान की आदतों और निशानियों में से शुमार किया है। चुनाँचे आपने इरशाद फ़रमाया:

من كان يومن بالله و اليوم الاخر فليكرم جاره (بخاری ومسلم)

तर्जुमाः जो शख़्स अल्लाह और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखता हो तो उसे चाहिए कि वह अपने पड़ोसी का इकराम करे।

नेक पड़ोसी

नेक पड़ोसी का अन्दाज़ा आप इस वाक़िए से भी लगा सकती हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि का पड़ोसी यहूदी था। जब अपना मकान बेचने का इरादा किया तो उसकी क़ीमत दो हज़ार दीनार माँगी। लोगों ने कहा तुम्हारे मकान की क़ीमत तो एक हज़ार दीनार है? वह कहने लगा सही है, एक हज़ार मकान की क़ीमत और एक हज़ार अ़ब्दुल्लाह के पड़ोसी होने की क़ीमत है।

नेक पड़ोसी मिल जाना भी अल्लाह की एक बहुत ही बड़ी नेमत है। अल्लाह तआ़ला हमें और हमारे पड़ोसियों को एक दूसरे के लिए सुलझा हुआ और नेक बना दे। इसकी ख़ातिर हमें ऐसी मेहनत करनी होगी कि ख़ुदा न करे अगर पड़ोसी ग़ैर-मुस्लिम है तो हमारी हिक्मत व बसीरत (समझदारी और अ़क्लमन्दी) वाले काम करने के ढंग से वह इस्लाम की तरफ़ मायल हो जाए। और अगर वह घराना अल्हम्दु लिल्लाह मुसलमान है तो सौ फ़ीसद दीनदार, जमाअ़त की नमाज़ों और ज़िक्र व तिलावत और मसनून आमाल का एहतिमाम करने वाला हो जाए। और इससे बढ़कर यह कि इस फ़िक्र और मेहनत में भी वह घराना हमारा शरीक हो जाए कि सारी दुनिया के इनसान किस तरह जहन्नम वाले रास्ते से बचकर जन्नत वाला रास्ता इख़्तियार करने वाले हो जाएँ। यह भी एक अहम हक़ है। अल्लाह तआ़ला हम सबको अपने पड़ोसियों को दीनदार बनाने की फ़िक्र करने वाला बना दे। आमीन

पड़ोसियों के बीच पर्दे का ख़ास ख़्याल रखें

लेकिन पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध रखने में दो बातों का ख़ूब ख़्याल रखा जाए- अगर इन बातों का ख़्याल न रखा गया तो यह भी एक मुसीबत और अ़ज़ाब बन जाती है।

1. उनके मर्दों और लड़कों से अपना और अपनी लड़कियों का

मुकम्मल और बहुत सख़्त पर्दा होना चाहिए। उनके यहाँ का 12 साल की उम्र का बच्चा भी बिना इजाज़त अन्दर न आए। उनके बच्चों के अपनी बच्चियों से चाहे छोटे ही हों बिल्कुल सम्बन्ध न रखने दिये जाएँ। उनकी औरतें जब आपके पास आएँ तो वे ख़ाली हाथ न जाएँ। फ़ज़ाईले आमाल या बहिश्ती ज़ेवर या रियाजुस्सालिहीन किताबों से कुछ पढ़कर सुनाएँ ताकि उन तक दीनी बात पहुँच जाए। और किसी तरह उनको दीनदार बनाने की कोशिश करें।

और इसी तरह अपने मर्दों और बेटों को उनकी औरतों से पर्दे का ख़ूब एहतिमाम करवाईए। ऐसा न हो कि आपस में बेतकल्लुफ़ी और बात-चीत के ज़रिये शैतान को आने को मौक़ा मिल जाए।

2. इस बात का भी ख़ूब ख़्याल रखिए कि बच्चे उनके घरों में जाकर टी. वी. न देखने पाएँ और चुपके-चुपके चले जाएँ तो बच्चों को ख़ूब समझा-बुझाकर उनको वहाँ से दूर रखें कि टी. वी. का ज़हर बच्चों और बड़ों सबके अख़्लाक़ तबाह व बर्बाद कर देता है और समाज में जरायम व अश्लीलता का कैन्सर फैला देता है। खुद अपने घर में भी टी. वी. न रखिए और बच्चों को पड़ोसियों के घरों में भी न भेजिए।

इसलिए इन दो बातों का ख़ूब ख़्याल रखें वरना अगर यह पड़ोसी आपके बच्चों के दीन ख़राब करने का सबब बने तो फ़िर उनसे ताल्लुक़ कम कर दें और उनके लिए ख़ूब दुआएँ माँगें। उनकी हिदायत के लिए ख़ूब कोशिश करें।

बीवी और नमाज़

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर औरत पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़े, रमज़ान के रोज़े रखे, अपनी इज़्ज़त व आबरू को बचाए रहे यानी पाकदामन रहे और अपने शौहर की इताअत (नेक कामों में) करे तो उसको इख़्तियार है कि जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में चली जाए।

(मिश्कात शरीफ़ पेज 281)

यहाँ सबसे पहली बात हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नमाज़ के मुताल्लिक़ बयान फ़रमाई है। गोया औ़रत के लिए जन्नत कमाना बहुत आसान हो गया। औ़रतें अगर नमाज़ का एहतिमाम कर लें, अज़ान सुनते ही सब कामों को छोड़ दें। जब अल्लाह मियाँ के मुनादी मुअज़्ज़िन ने "हय्-य अ़लस्सलाह्, हय्-य अ़लल् फ़लाह्" कह दिया तो अब समझ लें कि मेरी कामयाबी सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने में है। अब नमाज़ के अ़लावा जो भी काम होगा उसमें मेरी कामयाबी नहीं, बल्कि और परेशानी बढ़ेगी और काम भी ख़त्म नहीं होंगे।

तजुर्बा करके देख लीजिए जो औ़रतें यह सोचती हैं, अभी अज़ान हुई है, यह काम हो जाएगा फिर नमाज़ पढ़ लूँगी, तो काम ख़त्म होते ही नहीं और नमाज़ देर से पढ़ने यानी मक्रूह वक़्त तक पहुँचाने का गुनाह भी होता है, और वक़्त में बरकत भी ख़त्म हो जाती है।

इसलिए ख़ूब हिम्मत से काम ले कि मेरी नमाज़ वक़्त पर अदा हो जाए और नमाज़ जितनी अपने वक़्त पर ध्यान के साथ अच्छी तरह पढ़ी जाएगी उतनी ही दुआ़एँ क़बूल होंगी और सबसे ज़्यादा पसन्दीदा अ़मल अल्लाह के नज़दीक वह नमाज़ है जो वक़्त पर पढ़ी जाए।

हदीस में आता है कि जो शख़्स एक फ़र्ज़ नमाज़ अदा करे अल्लाह जल्ल शानुहू के यहाँ उसकी एक दुआ़ मक़बूल होती है।

अब औ़रतें अपनी मुश्किलों और मुसीबतों के लिए कितनी परेशान होती हैं, हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने हम मुसलमानों को नमाज़ दी है। हम फ़र्ज़ नमाज़ अच्छी तरह पढ़कर अल्लाह तआ़ला से माँगें, फिर हमें तावीज़ों और दम किये हुए पानी वग़ैरह हासिल करने के लिए इतनी परेशानी नहीं होगी बल्कि फ़र्ज़ नमाज़ पढ़कर दुआ़ माँगकर ख़ुद औ़रतें पानी पर दम कर सकती हैं।

अल्लाह तआ़ला से शौहर और सास के लिये दुआ़एँ करके उनके दिलों को नरम करवा सकती हैं, उनके दिलों में मुहब्बत पैदा करवा सकती हैं, अपनी सारी परेशानियाँ दूर करवा सकती हैं।

और नमाज़ न पढ़ने से दीन और दुनिया का बहुत बड़ा नुक़सान होता है। इससे बढ़कर और क्या नुक़सान होगा कि बेनमाज़ी का हश्र काफ़िरों के साथ होगा।

नमाज़ में चोरी

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि बदतरीन चोरी करने वाला शख़्स वह है जो नमाज़ में से भी चोरी कर ले। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! नमाज़ में से किस तरह चोरी करेगा? इरशाद फ़रमाया कि उसका रुकूअ़ और सज्दा अच्छी तरह से न करे। (दारमी शरीफ़)

फ़ायदा: यह मज़मून कई हदीसों में आया है। अव्वल तो चोरी खुद ही किस क़द्र ज़िल्लत की चीज़ है और चोर को कैसी गिरी हुई नज़रों से देखा जाता है। फिर चोरी में भी इस हरकत को बदतरीन चोरी इरशाद फ़रमाया गया है कि रुकूअ़-सज्दे को अच्छी तरह न करे। एक हदीस में आया है कि हक़ तआला शानुहू उस नमाज़ की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं फ़रमाते जिसमें रुकूअ़-सज्दा अच्छी तरह न किया जाए।

एक हदीस में इरशादे नबवी है कि आदमी साठ वर्ष तक नमाज़ पढ़ता है मगर एक नमाज़ भी क़बूल नहीं हुई कि कभी रुकूअ़ अच्छी तरह करता है तो सज्दा पूरा नहीं करता, सज्दा करता है तो रुकूअ़ पूरा नहीं करता। हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने अपने मकातीब (ख़ुतूत) में नमाज़ के एहतिमाम पर बहुत ज़ोर दिया है और बहुत से ख़तों में विभिन्न मज़ामीन पर बहस फ़रमाई है। एक ख़त में लिखते हैं कि सज्दे में हाथों की उंगलियों को मिलाने का और रुकूअ़ में उंगलियों को अलग अलग करने का एहतिमाम भी ज़रूरी है।

शरीअ़त ने उंगलियों को मिलाने का खोलने का हुक्म बेफ़ायदा नहीं फ़रमाया है, यानी ऐसे मामूली आदाब की रियायत भी ज़रूरी है।

इसी सिलसिले में तहरीर फ़रमाते हैं कि नमाज़ में खड़े होने की

हालत में सज्दे की जगह निगाह का जमाए रखना और रुकूअ़ की हालत में पाँव पर निगाह रखना और सज्दे में जाकर नाक पर रखना और बैठने की हालत में हाथों पर निगाह रखना नमाज़ में ख़ुशूअ़ को पैदा करता है और इससे नमाज़ में दिलजमई नसीब होती है। जब ऐसे मामूली आदाब भी इतने अहम फ़ायदे रखते हैं तो बड़े आदाब और सुन्नतों की रियायत तुम समझ लो कि किस क़द्र फ़ायदा बख़्शेगी।

(फ़ज़ाईले आमाल पेज 253)

नमाज़ पढ़ने में कुछ दूसरी कोताहियाँ

बाज़ी मुसलमान बहनें नमाज़ पढ़ती हैं मगर अफ़सोस है कि वे रुकूअ़-सज्दा ठीक नहीं करतीं, बड़ी जल्दी करती हैं, हालाँकि 'तादीले-अरकान' वाजिब है, बल्कि कुछ उलेमा के नज़दीक फ़र्ज़ है। यानी नमाज़ के हर रुक्न को इत्मीनान और सुकून के साथ अदा किया जाए। इसलिए नमाज़ को बेहतर और अच्छी से अच्छी बनाने के लिए इन बातों का ख़ास ख़्याल रखें।

1. सूरः फ़ातिहा धीरे-धीरे हर आयत पर ठहर करके पढ़ी जाए। इसी तरह जो भी सूरत हो धीरे-धीरे पढ़ी जाए।

2. रुकूअ़ की कम से कम तीन तस्बीहात धीरे-धीरे पढ़ी जाएँ, अगर ज़्यादा की तौफ़ीक़ हो तो 5, 7, 9, 11 वग़ैरह तादाद में ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ी जाएँ।

3. रुकूअ़ से उठने और 'समिअ़ल्लाहु लिमन् हमिदह्' के बाद 'रब्बना लकल् हम्दु' ठहर-ठहर कर कहा जाए और कोशिश करके यह दुआ़ याद कर ली जाए- "रब्बना लकल् हम्दु हम्दन् कसीरन् तय्यिबन् मुबारकन् फ़ीहि" ताकि क़ौमा (रुकूअ़ के बाद सीधे खड़े होने की हालत) अच्छी तरह अदा हो जाए।

4. इसी तरह सज्दे में बहुत ही आराम से "सुब्हा-न रब्बियल् अअ़्ला" कम से कम तीन बार पढ़े, अगर ज़्यादा पढ़ने की तौफ़ीक़ हो तो बहुत अच्छा है।

5. सज्दे से उठने के बाद बैठना जिसे 'जलसा' कहते हैं, उसमें कम से कम एक बार "अल्लाहुम्मग़फ़िर् ली" कहे। और यह दुआ याद हो जाए तो इस दुआ को दो सज्दों के बीच माँगे ताकि जलसा भी अच्छी तरह हो जाए।

"अल्लाहुम्मग़फ़िर् ली वर्‌हम्‌नी व आफ़िनी वह्‌दिनी"

इन दुआओं को याद करने के लिए किताब 'हिस्ने हसीन' अपने पास रखें और उसमें से याद कर लें।

6. इसी तरह कुछ औरतें नमाज़ की पाबन्दी तो करती हैं मगर नमाज़ का वक़्त टाल देती हैं, शैतान यह धोखा देता है कि जब इस काम से फ़ारिग़ हो जाओ फिर सुकून से पढ़ लेना, हालाँकि उसमें इतनी देर हो जाती है कि समय ख़त्म होने वाला होता है और नमाज़ क़ज़ा के क़रीब हो जाती है, और ज़ोहर की नमाज़ असर के वक़्त, असर की मग़रिब के वक़्त हालाँकि औरतों के लिए तो सब नमाज़ें शुरू वक़्त में पढ़ना बेहतर है मर्दों के लिए कुछ वक़्तों में तो देर करना सुन्नत भी है।

इसलिए इसका एहतिमाम करें कि सवाब कम न हो, नमाज़ अच्छी तरह और वक़्त पर पाबन्दी के साथ पढ़ने से अल्लाह तआला ज़्यादा राज़ी होंगे, और दुआओं को क़बूल करेंगे और मुसीबतों और बलाओं को दूर फ़रमा देंगे।

दुल्हन जब तक दुल्हन रहती है नमाज़ पढ़ने में शर्म महसूस करती है हालाँकि उस दिन ज़्यादा नमाज़ का एहतिमाम करना चाहिए, कि आज ज़िन्दगी के सफ़र का पहला दिन है, इसमें ख़ूब अल्लाह तआला से अपने पिछले गुनाहों की माफ़ी माँगनी चाहिए और फ़र्ज़ नमाज़ को एहतिमाम से पढ़ना चाहिए। किसी से शर्माना नहीं चाहिए। बेनमाज़ी औरतों को शर्म आनी चाहिए न कि नमाज़ी दुल्हन को।

7. कभी-कभी माहवारी से पाक होने के बाद जल्दी नमाज़ शुरू नहीं करतीं, एक दो वक़्त टाल देती हैं, फिर नमाज़ शुरू कर देती हैं।

इसका शरई हुक्म यह है कि पाकी आने के बाद एक वक़्त की भी

नमाज़ क़ज़ा करना जायज़ नहीं और यही हुक्म रोज़े का है।

हाँ अगर तीन दिन पूरे होने से पहले पाक हो जाए तब तो नमाज़ के आख़िर वक़्ते मुस्तहब तक इन्तिज़ार करना वाजिब है, अगर आख़िर वक़्त तक पाक ही रही तो गुस्ल करके नमाज़ पढ़ना वाजिब है। और अगर तीन दिन के बाद मगर आदत से पहले पाक हुई तो आख़िर वक़्त तक इन्तिज़ार करना मुस्तहब है, फिर गुस्ल करके नमाज़ पढ़ना वाजिब है। मगर इस सूरत में शौहर से मुलाक़ात (संभोग) हलाल होने में कुछ और मसला है। ग़र्ज़ ख़ूब समझ लीजिए पाकी नज़र आने के बाद एक वक़्त की भी नमाज़ क़ज़ा करना जायज़ नहीं। इन मसाईल के लिए औरतों को चाहिए कि बहिश्ती ज़ेवर को बार-बार पढ़ें।

8. कुछ औरतें बच्चे की पैदाईश के बाद चाहे तीस दिन बाद भी पाक हो गई हों फिर भी चालीस दिन तक नमाज़ नहीं पढ़तीं, हालाँकि औरत जब भी शरई तौर तरीक़े पर पाक हो जाए, चाहे चालीस रोज़ से कम दिनों में पाक हुई तो गुस्ल करके नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है, और अगर न पढ़ सकी ग़फ़लत और सुस्ती कोताही की तो उसकी क़ज़ा वाजिब है।

9. औरतों को चाहिए कि कुरआन मजीद पढ़ना भी सही कर लें। जो कुरआन मज़ीद पढ़ने की कोशिश करेगा, मौत तक उस पर मेहनत करेगा, अल्लाह तआला की ज़ात से उम्मीद है कि उसका सही पढ़ने वालों में हश्र होगा।

अगर कुरआन मजीद ग़लत हुआ तो नमाज़ पर भी उसका असर होगा इसलिए अपने शौहर से, भाई, वालिद, किसी मेहरम से जिसका कुरआन मजीद सही हो या किसी मुअल्लिमा (उस्तानी) से कुरआन मजीद सही करवाने की कोशिश करें। छोटी 'ह' बड़ी 'ह' 'सीन' 'सॉद' छोटा 'काफ' बड़ा 'क़ाफ' वग़ैरह हुरूफ़ में फ़र्क़ करना ज़रूरी है, वरना मायने बदल जाने का ख़तरा है। इन हुरूफ़ में फ़र्क़ करने की मश्क़ किसी अच्छी उस्तानी से करे।

अपनी नमाज़ भी सुनाएँ बचपन से जो नमाज़ पढ़ रही हैं उसका क्या हाल है। जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ा करते थे क्या वैसी ही नमाज़ है? अगर नहीं तो वैसी नमाज़ बनाने की कोशिश करे। नमाज़ की किताबों का मुताला करे। उलेमा किराम से ख़त लिख कर उसका तरीक़ा मालूम करे।

10. कुछ औरतें यह कोताही करती हैं कि उन नमाज़ों की क़ज़ा नहीं करतीं जो हर महीने माहवारी से पाक होने के बाद नहाने में देर करने की वजह से छूट जाती हैं। अगर एहतियात करें और मसला अच्छी तरह मालूम कर लें तो अव्वल तो ऐसी नौबत भी न आए और जो ग़लती से ऐसा हो जाए तो जल्द ही क़ज़ा करना चाहिए।

कुछ औरतें खुद नमाज़ की पाबन्दी करती हैं मगर सात साल या इससे बड़ी उम्र के बच्चों को न नमाज़ सिखलाती हैं न पढ़वाती हैं, और इसी तरह शौहर या बड़े बेटे को मस्जिद में भेजने की कोशिश नहीं करतीं।

इसी तरह बच्चियों, नौकरानियों, मासियों को भी नमाज़ पढ़वाने की फ़िक्र करनी चाहिए। यह भी एक मुसलमान नेक औरत की ज़िम्मेदारी है कि अपने घर में ऐसी कोशिश करे कि कोई बेनमाज़ी न रहे।

इसी तरह इस बात की नीयत और फ़िक्र करना और ख़ूब गिड़गिड़ा कर अल्लाह तआला से दुआ माँगना चाहिए कि ऐ अल्लाह! दुनिया में जितनी मुसलमान औरतें हैं मर्द हैं उनको सही नमाज़ पढ़ने वाला बना दे। मेरे मौहल्ले में रिश्तेदारों में कोई औरत बेनमाज़ी न रहे। मैं तो नमाज़ पढ़कर जन्नत में चली जाऊँ मगर मेरे रिश्तेदारों में कई औरतें, बहनें, बच्चे, बेनमाज़ी बनकर दुनिया में अल्लाह तआला के गुस्से में मुब्तला हों। और ऐसा न हो कि आख़िरत में अल्लाह तआला की तरफ़ से सज़ा के हक़दार हों।

अगर औरतें इस बात की कोशिश करें कि पूरा घर नमाज़ी बन जाए तो बहुत आसान है। इसके लिए घर में रोज़ाना किताब 'फ़ज़ाईले

आमाल', 'रियाज़ुस्सालिहीन' की तालीम करें। जिसे घर के सारे लोग बैठ कर सुनें। एक शख़्स हदीस की किताब पढ़े बाक़ी सुनें, लेकिन उसमें नामेहरम मर्द जैसे देवर, जेठ, ख़ालाज़ाद, मामूँज़ाद भाई वग़ैरह साथ न बैठें, वे अलग तालीम कर लें और औ़रतें अलग तालीम कर लें। इस अ़मल से घर में अल्लाह तआ़ला की ख़ुसूसी रहमतें बरकतें नाज़िल होंगी और घर में हर फ़र्द नमाज़ी बन जाएगा और तिलावत व ज़िक्र की फ़िज़ा घर में क़ायम हो जाएगी।

हमने नमाज़ के बारे में कुछ बातें किताब "इस्लाहे ख़्वातीन" मवाइज़ व मलफ़ूज़ात हज़रत हकीमुल उम्मत रहमतुल्लाहि अ़लैहि से ली हैं। मुसलमान औ़रतों को चाहिए कि इस किताब का भी ज़रूर मुताला करें (पढ़ें)। अब हम औ़रतों के नमाज़ से शौक़ व ताल्लुक़ के दो वाक़िआत "फ़ज़ाईले सदक़ात" से नक़ल करते हैं।

नमाज़ से मुहब्बत करने वाली दो औ़रतें

1. हज़रत हबीबा अ़दविया रहमतुल्लाहि अ़लैहा जब इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जातीं तो अपने कपड़ों को अपने ऊपर अच्छी तरह लपेट कर छत पर खड़ी हो जातीं और दुआ़ में मशग़ूल हो जातीं और कहतीं कि या अल्लाह! सितारे छट गए और लोग सो गए। बादशाहों ने अपने दरवाज़े बन्द कर दिये और हर शख़्स अपने महबूब के साथ तन्हाई में चला गया। और मैं तेरे सामने खड़ी हूँ। यह कहकर नमाज़ शुरू कर देतीं और सारी रात नमाज़ें पढ़तीं। जब सुबह सादिक़ हो जाती तो कहतीं: या अल्लाह! रात चली गई और दिन का चाँदना हो गया। काश! मुझे यह मालूम हो जाता कि मेरी यह रात तूने क़बूल फ़रमा ली, ताकि मैं अपने आपको मुबारकबाद दूँ। या तूने रद्द कर दी ताकि मैं अपनी ताज़ियत करूँ (यानी इस नाकामी पर अपने को तसल्ली दूँ)।

तेरी इज़्ज़त की क़सम! तूने मुझे अपने दरवाज़े से धकेल भी दिया तब भी तेरे करम और तेरी बख़्शिश का जो हाल मुझे मालूम है उसकी

वजह से तेरे दर से नहीं हटूँगी।

2. हज़रत अज़रा रहमतुल्लाहि अलैहा नाबीना (अन्धी) थीं। सारी रात जागतीं और जब सेहर का समय होता तो बहुत ग़मगीन आवाज़ से कहतीं या अल्लाह! आबिदों की जमाअत ने तेरी तरफ़ चलकर रात के अन्धेरे को तय किया। वे तेरी रहमत और तेरी मग़फ़िरत की तरफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते रहे।

या अल्लाह ! मैं सिर्फ़ तुझ ही से माँगती हूँ। तेरे अलावा किसी दूसरे से मेरा सवाल नहीं कि तू मुझे साबिक़ीन (नेकियों में आगे बढ़ने वालों) के गिरोह में शामिल कर ले और आला इल्लिय्यीन तक पहुँचा दे और अपने ख़ास बन्दों के दर्जे में दाख़िल कर दे। और अपने नेक बन्दों में शामिल कर दे। तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। हर ऊँचे दर्जे वाले से बुलन्द है, सारे करीमों से ज़्यादा करीम है। ऐ करीम मुझ पर करम कर।

यह कहकर सज्दे में गिर जातीं और इस क़द्र आहें भर कर रोती थीं कि उनके रोने की आवाज़ सुनाई देती और सुबह तक रोती रहतीं और दुआएँ करती रहतीं।

औरतों की नमाज़ का तरीक़ा

ये बातें याद रखिए और इन पर अमल करने की पाबन्दी कीजिये:

1. आपका रुख़ क़िब्ले की तरफ़ होना ज़रूरी है।

2. आपको सीधा खड़ा होना चाहिए और आपकी निगाह सज्दे की जगह पर होनी चाहिए। गर्दन को झुकाकर ठोड़ी सीने से लगा लेना मकरूह है, और बिना वजह सीने को झुकाकर खड़ा होना भी सही नहीं, इसलिए इस तरह सीधी खड़ी हों कि नज़र सज्दे की जगह पर रहे।

3. आपके पाँव की उंगलियों का रुख़ भी क़िब्ले की जानिब रहे और दोनों पाँव सीधे क़िब्ले की तरफ़ रहें। (पाँव को दाएँ-बाएँ तिरछा रखना ख़िलाफ़े सुन्नत है) दोनों पाँव क़िब्ले की तरफ़ होने चाहिएँ।

4. दोनों पाँव के बीच कम से कम चार उंगली की दूरी रखनी चाहिए।

5. ख़्वातीन किसी मोटी और बड़ी चादर से अपने सारे जिस्म को अच्छी तरह ढाँप लें, जिसमें सर, सीना, बाज़ू, बाँहें, पिंडलियाँ, मोंढे, गर्दन वग़ैरह सब ढके रहें। हाँ अगर चेहरे या क़दम या गट्टों तक हाथ खुले रहें तो नमाज़ हो जाएगी क्योंकि ये तीनों चीज़ें सतर (नमाज़ में छुपाने की चीज़ों) से अलग हैं। और अगर यह भी ढकी रहें तब भी नमाज़ हो जाएगी।

नमाज़ के लिए ऐसा बारीक दुपट्टा इस्तेमाल करना जिसमें सर, गर्दन, हलक़ और हलक़ के नीचे का बहुत सा हिस्सा नज़र आता रहे, इसी तरह बाज़ू कोहनियाँ और कलाईयाँ न छुपें या पिंडलियाँ खुली रहें तो ऐसी सूरत में नमाज़ बिल्कुल नहीं होगी। इसलिए नमाज़ के वक़्त सारे जिस्म को छुपाने का ख़ास एहतिमाम करें। इस मक़सद के लिए मोटा दुपट्टा इस्तेमाल करें।

6. अगर नमाज़ के बीच चेहरे, हाथ और पाँव के अलावा बदन का कोई हिस्सा भी चौथाई के बराबर इतनी देर खुला रह गया जिसमें तीन बार "सुब्हा-न रब्बियल् अअ्ला" कहा जा सके तो नमाज़ ही नहीं होगी और इससे कम खुला रह गया तो नमाज़ हो जाएगी मगर गुनाह होगा।

7. ऐसे कपड़े पहनकर नमाज़ में खड़ा होना मकरूह है जिन्हें पहन कर इनसान लोगों के सामने न जाता हो। (यानी ऐसे मैले-कुचैले या ऐसे ख़राब कपड़े पहन कर कहीं न जा सकती हो, तो तमाम हाकिमों के हाकिम रब्बुल-आलमीन की बारगाह में ऐसे कपड़े पहन कर जाना बहुत बुरी बात है। जिस क़द्र गुंजाईश हो साफ़-सुथरे कपड़े पहन कर नमाज़ पढ़नी चाहिए)।

नमाज़ शुरू करते वक़्त

1. दिल में नीयत कर लें कि फ़ुलाँ नमाज़ पढ़ रही हूँ। ज़बान से

नीयत के अलफ़ाज़ कहना ज़रूरी नहीं।

2. दोनों हाथ दुपट्टे से बाहर निकाले बिना कन्धों तक इस तरह उठाएँ कि हथेलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ हो और उंगलियाँ ऊपर सीधी हों। औरतें कानों तक हाथ न उठाएँ।

3. ऊपर ज़िक्र हुए तरीक़े पर हाथ उठाते समय "अल्लाहु अक्बर" कहें। दोनों हाथ सीने पर बिना दायरा बनाए इस तरह रखें कि दाहने हाथ की हथेली बाएँ हाथ की पुश्त पर आ जाए। औरतों को मर्दों की तरह नाफ़ पर हाथ न बाँधने चाहिएँ।

खड़े होने की हालत में

1. अकेले नमाज़ पढ़ने की हालत में पहली रकअत में पहले "सुब्हा-नकल्लाहुम्-म" आख़िर तक पढ़ें। उसके बाद "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम" पढ़ें उसके बाद "बिस्मिल्लहिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़ें। उसके बाद सूरः फ़ातिहा पढ़ें और जब "वलज़्ज़ॉल्लीन" कहें उसके बाद फ़ौरन 'आमीन' कहें। उसके बाद "बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़कर कोई सूरत पढ़ें या कहीं से भी कम से कम तीन आयतें पढ़ें।

2. अगर इत्तिफ़ाक़न इमाम के पीछे हों तो सिर्फ़ "सुब्हान-कल्लाहुम्-म" पढ़कर ख़ामोश हो जाएँ और इमाम की क़िराअत को ध्यान लगा कर सुनें। अगर इमाम ज़ोर से न पढ़ रहा हो तो ज़बान हिलाए बिना दिल ही में सूरः फ़ातिहा का ध्यान किए रखें।

3. जब ख़ुद क़िराअत कर रही हों तो सूरः फ़ातिहा पढ़ते समय बेहतर यह है कि हर आयत पर रुककर साँस तोड़ें, फिर दूसरी आयत पढ़ें। कई-कई आयतें एक साँस में न पढ़ें। जैसे- "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" पर साँस तोड़ दें फिर "अर्रह्मानिर्रहीम" पर फिर "मालिकि यौमिद्दीन" पर। इसी तरह पूरी सूरः फ़ातिहा पढ़ें। लेकिन इसके बाद की क़िराअत में एक साँस में एक से ज़्यादा आयतें भी पढ़ लें तो कोई हर्ज नहीं। और औरतों को हर नमाज़ में अल्हम्दु शरीफ़

और सूरत वग़ैरह सारी चीज़ें आहिस्ता पढ़नी चाहिएँ।

4. बिना किसी ज़रूरत के जिस्म के किसी हिस्से को हरकत न दें, जितने सुकून के साथ खड़ी हों उतना ही बेहतर है। अगर खुजली वग़ैरह की ज़रूरत हो तो सिर्फ़ एक हाथ इस्तेमाल करें और वह भी सख़्त ज़रूरत के वक़्त और कम से कम।

5. जिस्म का सारा ज़ोर एक पाँव पर देकर दूसरे पाँव को इस तरह छोड़ देना कि उसमें ख़म (झुकाव) आ जाए नमाज़ के अदब के ख़िलाफ़ है। इससे परहेज़ करें। या तो दोनों पाँव पर बराबर ज़ोर दें या एक पाँव पर ज़ोर दें तो इस तरह कि दूसरे पाँव में ख़म पैदा न हो।

6. जमाई आने लगे तो उसको रोकने की पूरी कोशिश करें। अगर कोशिश के बाद न रोक सकें तो क़्याम (खड़े होने की) हालत में दायाँ हाथ वरना बायाँ हाथ मुँह पर रखें।

7. खड़े होने की हालत में नज़रें सज्दे की जगह पर रखें, इधर-उधर या सामने देखने से परहेज़ करें।

रुकूअ़ में

1. जब क़्याम से फ़रागत हो जाए तो रुकूअ़ करने के लिए "अल्लाहु अक्बर" कहें। जिस वक़्त रुकूअ़ करने के लिए झुकें उसी वक़्त तकबीर कहना भी शुरू कर दें और रुकूअ़ में जाते ही तकबीर ख़त्म कर दें।

2. ख़्वातीन (औरतें) रुकूअ़ में मामूली झुकें कि दोनों हाथ घुटनों तक पहुँच जाएँ, मर्दों की तरह ख़ूब अच्छी तरह न झुकें।

3. ख़्वातीन घुटनों पर हाथ की उंगलियाँ मिलाकर रखें, मर्दों की तरह कुशादा (खोल) करके घुटनों को न पकड़ें और घुटनों को (ज़रा आगे) को झुका लें और अपनी कोहनियाँ भी पहलू से ख़ूब मिलाकर रखें।

4. कम से कम इतनी देर रुकूअ़ में रुकें कि इत्मीनान से तीन बार "सुब्हा-न रब्बियल् अज़ीम" कहा जा सके। और फ़ुर्सत हो, सेहत साथ

दे तो सात बार, नौ बार, ग्यारह बार, या ताक़ (यानी बेजोड़) अ़दद में ज़्यादा से ज़्यादा बार पढ़े।

5. रुकूअ़ की हालत में नज़रें पाँव की तरफ़ होनी चाहिएँ।

6. दोनों पाँव पर ज़ोर बराबर रहना चाहिए और दोनों पाँव के टख़्ने एक दूसरे के क़रीब रहने चाहिएँ।

रुकूअ़ से खड़े होते वक़्त

1. रुकूअ़ से खड़े होते वक़्त इस क़द्र सीधी हो जाएँ कि जिस्म में कोई ख़म (झुकाव और लचक) बाक़ी न रहे।

2. इस हालत में भी नज़र सज्दे की जगह पर रहनी चाहिए।

3. कुछ औरतें खड़े होते वक़्त खड़ी होने के बजाय खड़े होने का सिर्फ़ इशारा कर देती हैं और जिस्म के झुकाव की हालत ही में सज्दे के लिए चली जाती हैं, उनके ज़िम्मे नमाज़ का लौटाना वाजिब हो जाता है। इसलिए इससे सख़्ती के साथ परहेज़ करें। जब तक सीधे होने का इत्मीनान न हो जाए, सज्दे में न जाएँ।

4. कम से कम इतनी देर सीधी खड़ी रहें कि "रब्बना लकल् हम्दु" आराम से पढ़ लें और अगर तौफ़ीक़ हो तो- "रब्बना व लकल् हम्दु हम्दन् कसीरन् तय्यिबन् मुबारकन् फ़ीहि"

(ऐ हमारे रब! आप ही के लिए सब तारीफ़ है, बहुत ज़्यादा तारीफ़ है पाकीज़ा बरकत वाली तारीफ़)।

यह दुआ़ याद कर लें और इसको पढ़ें तो सवाब भी बहुत ज़्यादा बढ़ जाएगा और नमाज़ भी इत्मीनान वाली हो जाएगी।

सज्दे में जाते वक़्त

सज्दे में जाते वक़्त इस तरीक़े का ख़्याल रखें कि:

1. ख़्वातीन (औरतें) सीना आगे को झुका कर सज्दे में जाएँ। पहले अपने घुटने ज़मीन पर रखें, घुटनों के बाद पहले हाथ ज़मीन पर रखें, फिर नाक, फिर पेशानी।

2. सज्दे में औ़रतें ख़ूब सिमट कर और दब कर इस तरह सज्दा करें कि पेट रानों से बिल्कुल मिल जाए। बाज़ू भी पहलुओं से मिले हुए हों, और पाँव को खड़ा करने के बजाय उन्हें दाईं तरफ़ निकाल कर बिछा दें। जहाँ तक हो सके उंगलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ रखें।

3. ख़्वातीन को कोहनियों समेत पूरी बाँहें भी ज़मीन पर रख देनी चाहिएँ।

4. सज्दे की हालत में कम से कम इतनी देर गुज़ारें कि तीन बार "सुब्हा-न रब्बियल् अअ्ला" इत्मीनान के साथ कह सकें। पेशानी (माथा) टेकते ही फ़ौरन उठा लेना मना है। (और अगर तौफ़ीक़ हो और वक़्त में गुंजाईश हो तो सज्दे में पाँच बार सात बार नौ बार ताक़ (बेजोड़) अ़दद में जितनी ज़्यादा हो सके अल्लाह की तस्बीह बयान करें। और नवाफ़िल में तस्बीह के बाद क़ुरआन व हदीस की दुआएँ सज्दे में माँगें।

कम से कम सज्दे में "रब्बिग़्फ़िर् ली" वाली दुआ़ तीन बार तो माँगें। ऐ अल्लाह मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा। इसके अ़लावा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सज्दों में जो दुआएँ माँगी हैं, उनको किताब "हिस्ने हसीन" में से याद करके माँगें।

दोनों सज्दों के बीच

1. एक सज्दे से उठकर इत्मीनान से बैठ जाएँ फिर दूसरा सज्दा करें। ज़रा सा सर उठाकर सीधे हुए बिना दूसरा सज्दा कर लेना गुनाह है और इस तरह करने से नमाज़ का लौटाना वाजिब हो जाता है।

2. ख़्वातीन पहले सज्दे से उठकर बाएँ कूल्हे पर बैठें और दोनों पाँव दाहिनी तरफ़ को निकाल दें और दाईं पिन्डली को बाईं पिन्डली पर रखें और दोनों हाथ रानों पर रख लें और उंगलियाँ ख़ूब मिलाकर रखें।

3. बैठने के वक़्त नज़रें अपनी गोद ही पर होनी चाहिएँ।

4. इतनी देर तक बैठें कि उसमें कम से कम एक बार "सुब्हानल्लाह" कहा जा सके। और अगर इतनी देर तक बैठें कि

उसमें- "अल्लाहुम्मग़फ़िर् ली वर्हम्नी व आफ़िनी वह्दिनी वर्ज़ुक़्नी वज्बुर्नी वर्फ़अ्नी"

(ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे आफ़ियत दे और मुझे हिदायत पर रख और मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा और मेरी बुरी हालत और कमज़ोरी को अच्छे हाल से बदल दे और मुझे बुलन्द फ़रमा)।

पढ़ा जा सके तो बहुत बेहतर है।

दूसरा सज्दा और उससे उठना

1. दूसरे सज्दे में भी इस तरह जाएँ कि पहले दोनों हाथ ज़मीन पर रखें फिर नाक, फिर पेशानी।

2. दूसरे सज्दे की हैयत (शक्ल) वही होनी चाहिए जो पहले सज्दे में बयान की गई।

3. सज्दे से उठते वक़्त पहले पेशानी ज़मीन से उठाएँ, फिर नाक, फिर हाथ, फिर घुटने।

4. उठते वक़्त ज़मीन का सहारा न लें तो बेहतर है, लेकिन अगर जिस्म भारी हो या बीमारी या बुढ़ापे की वजह से मुश्किल हो तो सहारा लेना भी जायज़ है।

5. उठनें के बाद हर रकअत के शुरू में सूरः फ़ातिहा से पहले "बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़ें।

क़अ़दे (दोनों सज्दों के बीच बैठने) में

1. क़अ़दे (दोनों सज्दों के बीच) में बैठने का तरीक़ा वही होगा जो सज्दों के बीच में बैठने का ज़िक्र किया गया है।

2. "अत्तहिय्यात" पढ़ते समय जब "अश्हदु अल्ला" पर पहुँचें तो शहादत की उंगली उठाकर इशारा करें और "इल्लल्लाहु" पर गिरा दें।

3. इशारे का तरीक़ा यह है कि बीच की उंगली और अंगूठे को

मिलाकर हलका (गोल दायरा) बनाएँ। छंगुली और उसके बराबर वाली उंगली को बन्द कर लें और शहादत की उंगली को इस तरह उठाएँ कि उंगली क़िब्ले की तरफ़ झुकी हुई हो, बिल्कुल सीधी आसमान की तरफ़ न उठानी चाहिए।

3. "इल्लल्लाहु" कहते समय शहादत की उंगली तो नीचे कर लें लेकिन बाक़ी उंगलियों की जो शक्ल इशारे के वक़्त बनाई थी, उसको आख़िर तक बरक़रार रखें।

सलाम फेरते वक़्त

1. दोनों तरफ़ सलाम फेरते वक़्त गर्दन को इतना मोड़ें कि पीछे बैठने वाली औ़रत को आपके रुख़्सार (गाल) नज़र आ जाएँ।

2. सलाम फेरते वक़्त नज़रें कन्धे की तरफ़ होनी चाहिएँ। जब दाईं तरफ़ गर्दन फेरकर "अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि" कहें तो यह नीयत करें कि दाईं तरफ़ जो फ़रिश्ते हैं उनको सलाम कर रही हूँ और बाईं तरफ़ सलाम फेरते वक़्त बाईं तरफ़ मौजूद फ़रिश्तों को सलाम करने की नीयत कर लें।

दुआ़ का तरीक़ा

1. दुआ़ का तरीक़ा यह है कि दोनों हाथ इतने उठाए जाएँ कि वो सीने के सामने आ जाएँ। दोनों हाथों के बीच मामूली सा फ़ासला हो, न हाथों को बिल्कुल मिलाएँ और न दोनों के बीच फ़ासला रखें।

2. दुआ़ करते वक़्त हाथों के अन्दरूनी हिस्से को चेहरे के सामने रखें।

एक मसलाः औ़रतों का जमाअ़त करना मक्रूह है। उनके लिए अकेले नमाज़ पढ़ना ही बेहतर है, अलबत्ता अगर घर के मेहरम लोग घर में जमाअ़त कर रहे हों तो उनके साथ जमाअ़त में शामिल होने में कुछ हर्ज नहीं। लेकिन इस सूरत में मर्दों के बिल्कुल पीछे खड़ा होना ज़रूरी है, बराबर में हरगिज़ खड़ी न हों।

नोटः नमाज़ का यह तरीक़ा मुख़्तसर तौर पर कुछ बदलाव के साथ मुफ़्ती अब्दुर्रऊफ़ साहिब सख्खरवी की किताब 'ख़्वातीन का तरीक़ा-ए-नमाज़'' से लिया गया है। तफ़सील के लिए बहिश्ती ज़ेवर का मुताला करना चाहिए।

नेक बीवी फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ माँगे

1. हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ ज़रूर क़बूल होती है इसलिए फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एहतिमाम से दुआ माँगनी चाहिए।

2. दुआ शुरू करने से पहले अल्लाह मियाँ की ख़ूब-ख़ूब तारीफ़ करे, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ़ भेजे फिर अपने लिए, घर वालों के लिए, मौहल्ले वालों के लिए, फिर सारी दुनिया के मुसलमानों के लिए दुआ माँगे। फिर काफ़िरों की हिदायत के लिए माँगे, जहाँ-जहाँ मुसलमान परेशानियों व बलाओं, मुसीबतों में हैं उनके लिए भी ख़ूब आफ़ियत व सुकून की दुआएँ माँगे।

3. कम से कम रोज़ाना बीस मिनट दुआ माँगे। अगर एक साथ न हो सके तो तक़सीम कर ले। ऐसे समय पर जो ज़्यादा मसरूफ़ियत के न हों जैसे फ़जर व असर की नमाज़ों के बाद पाँच-पाँच मिनट, इशा की नमाज़ के बाद दस मिनट, तहज्जुद में उठने की तौफ़ीक़ हो तो उसमें भी ख़ूब माँगे।

कितने अफ़सोस की बात है कि सहेलियों से बहनों से फ़ोन पर बात करते हुए कितना समय लग जाता है, शादी दावतों महफ़िलों में कितना समय हम अपना खो देते हैं लेकिन बीस मिनट दो हाथ फैलाए हुए अपने मालिक रहीम व करीम आक़ा से माँगते हुए उकताते हैं हालाँकि वह आक़ा ऐसा है कि माँगने वाले थक जाएँ लेकिन वह देते-देते न थके। दुनिया में जिससे भी माँगा जाए वह नाराज़ होता है और अल्लाह तआ़ला से न माँगा जाए तो वह नाराज़ होता है। इसलिए शुरू में घड़ी देखकर ज़बरदस्ती अपने आप को पन्द्रह-बीस मिनट बैठाए रखें और

अल्लाह से माँगने की आदत डालें।

4. तय कर लें कि कभी भी अल्लाह के सिवा किसी से नहीं माँगूँगी। किसी भी चीज़ की ज़रूरत हो तो अल्लाह ही से माँगे। शौहर से, भाई से, बेटों से किसी से भी कुछ न माँगे। इनसान सारे के सारे खुद ही मोहताज और फ़क़ीर हैं, वे किसी को क्या देंगे। जिसके पास जो कुछ है उसी अल्लाह का दिया हुआ है। अल्लाह की ज़ात ग़नी है उसी से माँगना चाहिए, यहाँ तक कि पानी की प्यास लगे तो भी पहले अल्लाह से माँगे।

ऐ अल्लाह! मुझे प्यास लगी है, आप मुझे पानी दीजिए। बेशक प्यास के बुझाने वाले आप ही हैं। फिर फ्रिज की तरफ़ जाए और पानी लेकर पी ले। इसी तरह हर चीज़ हर दिल की ख़्वाहिश, अल्लाह ही से माँगे और चलते-फिरते भी माँगती ही रहे।

औ़रतों के लिए एक प्यारी दुआ़

اَللّٰھُمَّ اھْدِنِی لِاَحْسَنِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ وَالْاَقْوَالِ فَاِنَّہٗ لَا یَھْدِیْ
لِاَحْسَنِھَا اِلَّا اَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّیْ سَیِّئَھَا فَاِنَّہٗ لَا یَصْرِفُ عَنِّیْ سَیِّئَھَا اِلَّا اَنْتَ.

अगर अ़रबी याद न हो सके तो उर्दू ही में माँग ले।

ऐ अल्लाह! मुझे अच्छे अख़्लाक़ नसीब फ़रमा, अच्छे आमाल और अच्छी बातों का ढंग अ़ता फ़रमा। क्योंकि बेशक आपके सिवा भलाईयाँ कोई दे नहीं सकता। और बुरे अख़्लाक़ मुझसे दूर कर दे क्योंकि बेशक आपके सिवा बुरे अख़्लाक़ कोई दूर नहीं कर सकता।

अच्छे रिश्ते के लिए दुआ़

माँ-बाप बड़े भाई-बहन को चाहिए कि बच्चों और छोटे भाई-बहनों को जवान होने के बाद ऐसी दुआ़एँ याद करवा देनी चाहिएँ जिनमें अच्छे रिश्ते की और आ़फ़ियत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने की दुआ़ तलब की गई है। चूँकी ये दुआ़एँ खुद अल्लाह ही ने बतलाई हैं, गोया आक़ा खुद

ही बतला रहे हैं कि हमारे दरबार में हम से इस तरह माँगो। इसलिए वे दुआएँ क़बूलियत से ज़्यादा क़रीब हैं।

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا.

(الاية سورة الفرقان)

रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र-त अअ्युनिंव्-व जअ़ल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा।

तर्जुमाः ऐ हमारे रब! इनायत फ़रमा हमको हमारी बीवियों और औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक, और कर हमको परहेज़गारों का पेशवा (यानी हमारे ख़ानदान को नेक व मुत्तक़ी)।

(तर्जुमा अज़ मौलाना सैयद मुहम्मद बदरे आ़लम रह०)

अल्लाह तआ़ला ने यह दुआ अपने ख़ास बन्दों की दुआ फ़रमाई है।

नोटः अगर यह दुआ औ़रत पढ़े तो "हमारी बीवियों" की जगह "हमारे शौहरों" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करे और यह दुआ हर मर्द व औ़रत को ज़िन्दगी भर माँगते ही रहना चाहिए। बहुत ही मुबारक दुआ है। इसमें शौहर, बीवी, बच्चे, ख़ानदान सब के लिए दुनिया व आख़िरत दोनों की दुआएँ आ गईं।

इसी तरह अपने अलफ़ाज़ में नेक शौहर के लिए भी ख़ूब माँगे।

जैसे ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा नेक शौहर दे जो ख़ुद भी पूरे दीन पर चलने वाला हो और मेरे लिए भी दीन पर चलने में मददगार और मुआ़विन हो। नरम-दिल हो, नेक बीवी की क़द्र करने वाला हो, उसके मुक़द्दर में नेक औलाद हो, दीन को दुनिया में फैलाने और अल्लाह की राह में जिहाद का शौक़ रखने वाला हो। उसके दिल में आपकी मुहब्बत बस चुकी हो, ईमान उसके दिल की तह में बैठ चुका हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की मुहब्बत सबसे ज़्यादा उसके दिल में हो, दुनिया की बेरग़बती और आख़िरत की मुहब्बत उसके दिल में हो।

और ऐ अल्लाह! मुझे उस नेक शौहर के लिए आँखों की ठंडक और तस्कीन का सामान, और आराम की चीज़ बना। आमीन!

दूसरी दुआ: इसी तरह शुरू और अख़ीर में दुरूद शरीफ़ पढ़कर माँगती रहे "या वह्हाबु हब् ली ज़ौजन् सालिहन्" (ऐ बहुत देने वाले मुझे नेक शौहर दे)।

इस ज़माने में कुछ औरतों का साथ रहना ही फ़सादात (लड़ाई-झगड़ों) की जड़ है इसलिए भी ख़ूब दुआएँ माँगनी चाहिएँ।

ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा घर दे जो कुछ मुक़द्दर हो शौहर की हलाल कमाई से, वह सुकून से खाने और उस पर आपका शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ दे। ऐसी ज़िन्दगी जिसमें पैसा बहुत हो, चीज़ें बहुत हों, लेकिन रोज़ देवरानी जेठानी के झगड़े, सास नन्द के गिले-शिकवे हों, ऐसे बड़े घर से और ऐसे माल से पनाह चाहती हूँ।

ऐ अल्लाह! अगर सास को ख़िदमत की ज़रूरत हो तो मेरे लिए इस तरह उसकी ख़िदमत आसान फ़रमा दे कि मेरा बावर्चीख़ाना अलग हो, मैं सास को पकाकर रोज़ाना दे दूँ। मेरे घर व बावर्चीख़ाने में सास नन्द देवरानी जेठानी का कोई दख़ल न हो।

ऐसी सास हो जो बहू की ख़िदमत करे, जो बहू को बेटी समझे, ग़ीबत और झूठ, तोहमत से बचने और बचाने वाली हो। ऐ अल्लाह! ऐसी नेक सास दे। ऐ अल्लाह ऐसा घर दे जिसमें देवर जेठ, नन्दोई से शरई पर्दा करना आसान हो, जिस घर में टी. वी. और तस्वीर की लानत से बचना आसान हो। ऐ अल्लाह! आप अपनी हर छोटी से छोटी नाफ़रमानी से बचना आसान फ़रमा दें। गुनाहों से बचने और समझ के साथ बचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। दीन पर अमल करने और उसको फैलाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

शादी के बाद की दुआ

दुल्हन को चाहिए कि मंगनी व शादी के बाद पिछली दुआओं के

साथ यह दुआ भी माँगे।

(۱) اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنِي وَبَيْنَ زَوْجِي كَمَا اَلَّفْتَ بَيْنَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَخَدِيْجَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا. اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنِي وَبَيْنَ زَوْجِي كَمَا اَلَّفْتَ بَيْنَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا.

(1) अल्लाहुम्-म अल्लिफ़ बैनी व बै-न ज़ौजी कमा अल्लफ़्त बै-न मुहम्मदिन् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल-म व ख़दीज-त रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा। अल्लाहुम्-म अल्लिफ़ बैनी व बै-न ज़ौजी कमा अल्लफ़्त बै-न मुहम्मदिन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म व आ़यश-त रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे शौहर के दिलों को मुहब्बत और उलफ़त से भर दे जैसे आपने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दिलों को मिला दिया था।

और ऐ अल्लाह मेरे और मेरे शौहर के दिलों को ऐसा मिला दे जैसे आपने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दिलों को उलफ़त व मुहब्बत से मिला दिया था।

(۲) اَللّٰهُمَّ كَمَا جَمَعْتَنَا فِي الدُّنْيَا فَاجْمَعْ بَيْنِي وَبَيْنَ زَوْجِي فِي الْجَنَّةِ.

(2) अल्लाहुम्-म कमा जमअ़्तना फ़िद्दुन्या फ़ज्मअ़् बैनी व बै-न ज़ौजी फ़िल्-जन्नति।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह जैसे आपने अपने करम से हमें दुनिया में इकट्ठा कर दिया, जन्नत में भी हम दोनों को इकट्ठा फ़रमा।

(۳) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِي لِزَوْجِي قُرَّةَ اَعْيُنٍ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ.

(3) अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी लिज़ौजी कुर्र-त अअ़्युनिन् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे अपने शौहर के लिए दुनिया व आख़िरत दोनों में आँखों की ठंडक बना दे।

(۴) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ تُعِیْنُهٗ عَلٰی اِیْمَانِهٖ۔

(4) अल्लाहुम्मज्अल्नी तुईनुहू अला ईमानिही।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी बीवी बना जो शौहर के नेक कामों में उसकी मदद करने वाली हो।

(۵) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مُطِیْعَةً وَّصَالِحَةً وَّاجْعَلْنِیْ سَارَةً وَّحَافِظَةً لِّلْغَیْبِ۔

(5) अल्लाहुम्मज्अल्नी मुतीअतन् व सालि-हतन् वज्अल्नी सारतन् व हाफ़ि-ज़तन् लिल्-ग़ैबि।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तू मुझे अपनी इताअत और अपने शौहर की जायज़ बातों में इताअत करने वाली बना और नेक बना। और ऐ अल्लाह! कर मुझको खुश करने वाली शौहर को जब वह मुझे देखे, और शौहर के माल व इज़्ज़त और राज़ की हिफ़ाज़त करने वाली बना।

ऐ अल्लाह मेरी इन दुआओं को क़बूल फ़रमा। आमीन।

ये दुआएँ तहज्जुद की नमाज़ के बाद और हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद, इसी तरह रमज़ान मुबारक में इफ़्तारी के समय उमरा व हज के मुबारक मक़ामात पर और चलते-फिरते ख़ूब-ख़ूब दुआएँ माँगनी चाहिएँ। अगर अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व करम से मुसलमान बीवी को ये नेमतें अता फ़रमा दीं तो पूरे ख़ानदान को दुनिया व आख़िरत की भलाई मिल गई।

बुरे शौहर
और बुरी सास से पनाह चाहने की दुआएँ

यह दुआ लड़की खुद भी माँगे और लड़की के माँ-बाप भी बच्ची के लिए दुआ माँगते रहें कि ऐ अल्लाह! बुरे शौहर, बुरी सास, बुरे ख़ानदान से इस बच्ची की हिफ़ाज़त फ़रमा। बल्कि माँ-बाप को तो चाहिए कि बचपन से बच्चों के लिए दुआएँ शुरू कर दें। हर बच्चे का नाम लेकर उसकी हिदायत, आफ़ियत, दीन पर जमाव, रिज़्क़े हलाल व तय्यिब अधिक मात्रा में मिलने और अच्छे जोड़े के लिए दुआ माँगते रहें।

दुआ यह है:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ خَلِیْلٍ مَّاكِرٍ عَیْنَاهُ تَرَیَانِیْ وَقَلْبُهٗ یَرْعَانِیْ اَنْ رَّاٰی حَسَنَةً دَفَنَهَا، وَاَنْ رَّاٰی سَیِّئَةً اَذَاعَهَا.

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन् ख़लीलिन् माकिरिन् अ़ैनाहु त-रयानी व क़ल्बुहू यर्आनी। इन् रआ ह-स-नतन् द-फ़-नहा व इन् रआ सय्यिअतन् अज़ाअ़हा।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेती हूँ ऐसे मक्कार दोस्त (इसमें बुरा शौहर भी शामिल है) से जिसकी आँखें मुझको देखे और उसका दिल मेरी टोह में लगा रहे (मेरे ऐब ढूँढने की हर वक़्त फ़िक्र सवार हो)। अगर कोई नेकी देखे तो उसको छुपा ले, और बुराई देख पाए तो उसको फैलाता फिरे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ صَاحِبٍ یُّؤْذِیْنِیْ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन् कुल्लि साहिबिन् यूज़ीनी।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं पनाह चाहती हूँ हर ऐसे शौहर से जो मुझे तकलीफ़ दे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ صَاحِبَةٍ تُؤْذِیْنِیْ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन् कुल्लि साहिबतिन् तूज़ीनी।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं हर ऐसी सास व नन्द से पनाह चाहती हूँ जो मुझको सताए और तकलीफ़ दे।

اَللّٰهُمَّ لَا تُسَلِّطْ عَلَیَّ بِذُنُوْبِیْ مَنْ لَّا یَخَافُكَ فِیَّ وَلَا یَرْحَمُنِیْ.

अल्लाहुम्-म ला तुसल्लित् अ़लय्-य बिज़ुनूबी मन् ला यख़ाफ़ु फ़िय्-य व ला यर्हमुनी।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझ पर मेरे गुनाहों की वजह से कोई ऐसा (शौहर) मुसल्लत न फ़रमाईयो जो मेरे बारे में आपसे न डरे और न मुझ पर तरस खाए। ऐसे ज़ालिम (शौहर) से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा।

इसी तरह हदीस शरीफ़ में और भी बहुत ही प्यारी दुआएँ नेक औलाद व शौहर के लिए आई हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कोई उम्दा आदत और अच्छा तरीक़ा ऐसा बाक़ी नहीं छोड़ा जिसकी दुआ न की हो।

और कोई बुरा काम और ख़राब आ़दत ऐसी बाक़ी नहीं रखी जिससे पनाह न माँगी हो। अल्लाह तआ़ला आपके मरातिब और बुलन्द से बुलन्द फ़रमाए। और अल्लाह तआ़ला हम सबको हुज़ूरे पाक की बतलाई हुई दुआएँ माँगने की तौफ़ीक़ दे।

ये दुआएँ क़बूलियत में ऐसी हैं जैसे खुद हाकिमे आला की बताई हुई दरख़्वास्त का मज़मून हाकिमे आला के रू-ब-रू पेश करना, जिसकी मन्ज़ूरी में कोई शक व तरद्दुद ही नहीं होता। इसलिए इन दुआओं का ख़ूब एहतिमाम रखे। और इसके लिए हर मुसलमान औ़रत को चाहिए कि "मुनाजाते मक़बूल" या "अल-हिज़्बुल-आज़म" किताबों में से रोज़ाना एक मन्ज़िल की दुआएँ माँगने का मामूल बनाए। और भी दुआओं की किताबें आती हैं, उनमें से मोतबर किताबों को पढ़ने की पाबन्दी करें।

अल्लाह करे हमारी मुसलमान बहनें इन किताबों की एक-एक मन्ज़िल की दुआएँ रोज़ाना माँग लें या हर नमाज़ के बाद एक मन्ज़िल की दुआएँ माँग लें तो हमारे घरों में कितनी रहमतें बरसें और हमारी औलादें जो उन नेक माँओं की गोदों में पलें वे ज़रूर इन्शा-अल्लाह तआ़ला आ़लमे इस्लाम की आँखों के तारे बनें। और घरों में बहुत सी परेशानियाँ व बलाएँ, मुसीबतें उन दुआओं की बरकत से दूर हो जाएँ। आज ही से इन किताबों को ख़रीद कर रोज़ाना इन दुआओं को माँगना शुरू कर दें।

रात को उठकर अल्लाह से दुआ माँगना

मियाँ-बीवी में मुहब्बत पैदा करने का आसान नुस्ख़ा यह है कि दोनों

एक दूसरे के लिए दुआएँ करते रहें। इन्शा-अल्लाह तआला कुछ दिनों में ऐसी अजीब मुहब्बत पैदा हो जाएगी कि जिसका दोनों को वहम व गुमान भी नहीं होगा।

याद रखिए! ईंट को ईंट से मिलाने के लिए सीमेंट की ज़रूरत है, लकड़ी को लकड़ी से मिलाने के लिए कील की ज़रूरत है, कागज़ को कागज़ से मिलाने के लिए गोंद की ज़रूरत है, लेकिन दो दिलों को मिलाने के लिए अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़्ल की ज़रूरत है। इसके लिए ज़ाहिरी तदबीर बीवी की तरफ़ से "इताअत" शौहर की हर बात पर "जी हाँ" "अच्छा" "अच्छा आईन्दा नहीं होगा" "आईन्दा नहीं होगा" "जैसे आप कहेंगे वैसे ही करूँगी" "जैसे आप कहेंगे वैसे ही करूँगी" इस तरह कहना।

और अन्दरूनी तदबीर दोनों मियाँ-बीवी एक दूसरे के लिए दिल से दुआएँ करें। एक दूसरे को ख़ूब माफ़ करके, एक दूसरे को अपने हालात से मजबूर समझकर बेक़सूर समझें। उसकी ग़लतियों पर दिल में उसके ख़िलाफ़ उठने वाले ग़म व ग़ुस्से के जज़्बात को प्यार व मुहब्बत और शफ़क़त व रहमत की थपकी देकर सुला दें।

और उसके लिए दुआएँ माँगें और यह सोचें कि "यह भी अल्लाह का बन्दा है" हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उम्मती है। अगर इसको छोड़कर चली भी गई तो कोई और मुसलमान बहन इसके निकाह में आएगी तो वह भी परेशान होगी, क्यों नहीं अल्लाह से दुआ करके इसको नेक बनवा लूँ अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करके उसको नरम-मिज़ाज, नेक, दीनदार शौहर बना लूँ।

इसलिए फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ख़ूब लम्बी-लम्बी दुआएँ माँगें और रात को उठकर जबकि सब सो रहे हों, अल्लाह और उसके फ़रिश्तों के सिवा आपको कोई न देख रहा हो, उस समय ध्यान से दो रकअत नफ़िल पढ़कर अपने शौहर और सारी मुसलमान बहनों के शौहरों की हिदायत के लिए अल्लाह से दुआएँ माँगें।

हम आपको तहज्जुद में उठकर माँगने के लिए अल्लाह के एक वली की बतलाई हुई दुआ बतलाते हैं कि इस तरह आप भी माँगकर आजिज़ी व विनम्रता इख़्तियार करके और अपनी आँखों से आँसू बहाकर अल्लाह तआ़ला की रहमत को मुतवज्जह कर सकती हैं। वह अल्लाह के वली रात को उस समय उठते जब सब सोये हुए होते और अपने दिल की ज़बान से यूँ कहते थे।

एक हूक सी दिल में उठती है		एक दर्द सा दिल में होता है
हम रात को उठकर रोते हैं		जब सारा आ़लम सोता है

वह दुआ़ यह है।

اِلٰهِیْ أَغْلَقَتِ الْمُلُوْكُ اَبْوَابَهَا وَبَابُكَ مَفْتُوْحٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ .

اِلٰهِیْ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَنَامَتِ الْعُيُوْنُ وَاَنْتَ الْحَیُّ الْقَيُّوْمُ الَّذِیْ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ.

اِلٰهِیْ فُرِشَتِ الْفُرُشُ وَخَلَا كُلُّ حَبِيْبٍ بِحَبِيْبِهٖ وَاَنْتَ حَبِيْبُ الْمُجْتَهِدِيْنَ وَاَنِيْسُ الْمُسْتَوْحِشِيْنَ .

اِلٰهِیْ اِنْ عَذَّبْتَنِیْ فَاِنِّیْ مُسْتَحِقُّ الْعَذَابِ وَالنِّقَمِ وَاِنْ عَفَوْتَ عَنِّیْ فَاَنْتَ اَهْلُ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ.

اِلٰهِیْ اِنْ طَرَدْتَّنِیْ عَنْ بَابِكَ فَاِلٰی بَابِ مَنْ اَلْتَجِیْ وَاِنْ قَطَعْتَنِیْ عَنْ خِدْمَتِكَ فَخِدْمَةَ مَنْ اَرْتَجِیْ، يَا جَمِيْلَ الْعَفْوِ اَذِقْنِیْ بَرْدَ عَفْوِكَ وَحَلَاوَةِ مَغْفِرَتِكَ، وَاِنْ لَّمْ اَكُنْ اَهْلًا لِّذٰلِكَ فَاَنْتَ اَهْلُ التَّقْوٰی وَالْمَغْفِرَةِ .

अल्लाहुम्-म अग़्लक़तिल् मुलूकु अब्वाबहा व बाबु-क मफ़्तूहुन् लिस्साईलीन।

इलाही ग़ारतिन्नुजूमु व नामतिल् उयूनु व अन्तल् हय्युल् क़य्यूमुल्लज़ी ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्- व ला नौम।

इलाही फ़ुरिशतिल् फ़ुरूशु व ख़ला कुल्लु हबीबिन् बि-हबीबिही व अन्-त हबीबुल् मुज्तहिदी-न व अनीसल् मुस्तौहिशीन।

इलाही इन् अ़ज़्ज़ब्तनी फ़-इन्नी मुस्तहिक्कुल् अ़ज़ाबि वन्नि-क़मि व इन् अफ़ौ-त अ़न्नी फ़-अन्-त अहलुल्-जूदि वल्-करम।

इलाही इन् तरत्तनी अ़न् बाबि-क फ़-इला बाबिन् मन् अल्तजी व इन् क़तअ्तनी अ़न् ख़िद्मति-क फ़-ख़िद्मतु मन् अर्तजी। या जमीलल् अ़फ़्वि अज़िक़्नी बर्-द अ़फ़्वि-क व हलाव-त मग़फ़ि-रति-क। व इल्लम् अकुन् अह्लन् लिज़ालि-क फ़-अन्-त अहलुत्तक़्वा वल्-मग़फ़ि-रति।

और आप अ़रबी न समझ सकें तो उर्दू का तर्जुमा ध्यान से समझकर माँगें।

तर्जुमाः ऐ मेरे अल्लाह! बादशाहों ने अपने दरवाज़े बन्द कर लिए लेकिन तेरा दरवाज़ा माँगने वालों के लिए खुला हुआ है।

ऐ मेरे प्यारे अल्लाह! सितारे छुप गए और दुनिया वालों की आँखें सो चुकीं, लेकिन तू ऐसा हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और सारी मख़्लूक़ की हस्ती को क़ायम रखने वाला है, जिसको ऊँघ और नींद नहीं आती।

ऐ मेरे अल्लाह! बिस्तरे बिछ गए और हर महबूब अपने दोस्त के साथ तन्हाई में चला गया लेकिन तू इबादत करने वालों और मेहनत करने वालों का दोस्त है।

ऐ मेरे अल्लाह! अगर आपने मुझे अ़ज़ाब दिया तो बेशक मैं अपने गुनाहों की वजह से अ़ज़ाब और बलाओं की पात्र हूँ और अगर आपने मुझे माफ़ कर दिया तो आप ही बड़े सख़ी और करम करने वाले हैं।

ऐ मेरे अल्लाह! अगर आपने मुझे अपने दरवाज़े से धुतकार दिया तो मैं किसके दरवाज़े पर जाकर पनाह पकड़ूँगी?

ऐ मेरे अल्लाह! अगर अपने मुझे अपने दीन की ख़िदमत के लिए क़बूल न फ़रमाया तो मैं किस दरवाज़े से उम्मीद रखूँगी।

ऐ माफ़ी को पसन्द करने वाले, मुझे मेरे गुनाहों की माफ़ी देकर ठंडक दे और माफ़ी देने के बाद गुनाहों के बख़्श देने की हलावत

(मिठास) नसीब फ़रमा।

अगरचे मैं इसकी अहलियत नहीं रखती लेकिन बेशक आप ही की ज़ात है जिससे डरा जाए। आप ही से माफ़ी तलब करना आपकी शायाने शान है।

इसके बाद जो जी चाहे अपने लिए, शौहर के लिए, औलाद के लिए, और सारे आ़लम भर के मुसलमानों के लिए माँगें। और तजुर्बा है कि जब यक़ीन के साथ माँगें उस समय दुआ़एँ बहुत ज़्यादा और बहुत ही जल्दी क़बूल होती हैं। अब हम आपको एक दुआ़ बतलाते हैं इसको भी पाबन्दी से माँगते रहिए।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا سَامِعِيْنَ مُطِيْعِيْنَ وَاَوْلِيَآءَ مُخْلِصِيْنَ وَرُفَقَاءَ مُصَاحِبِيْنَ.

अल्लाहुम्मज्अ़ल्ना सामिअ़ी-न मुतीअ़ी-न व औलिया-अ मुख़्लिसी-न व रुफ़क़ा-अ मुसाहिबी-न।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तू हम मियाँ-बीवी दोनों को ऐसा बना दे कि तेरे हुक्मों को सुनने वाले, और उनके मानने वाले बन जाएँ और आपस में सच्चे मुख़्लिस दोस्त और पक्के साथी और रफ़ीक़ बन जाएँ।

औ़रतें और हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दस सुन्नतें

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम जहानों के लिये रहमत थे। मर्दों के लिए भी रहमत थे, औ़रतों के लिए भी रहमत थे। इसलिए औ़रतें भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की प्यारी और मुबारक सुन्नतें अपनाएँगी तो घरों में रहमत और बरकत नाज़िल होगी और मुहब्बत क़ायम होगी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत बढ़ेगी और इससे अल्लाह की मुहब्बत भी दिलों में बढ़ेगी।

और जब मुसलमान बन्दे या बन्दी के दिल में अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला की और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत

पैदा हो जाए और उन दोनों की मुहब्बत सारी मुहब्बतों पर ग़ालिब आ जाए तो उस मुसलमान का ईमान कामिल हो जाता है। और फिर उसके दिल में एक अल्लाह ही की मुहब्बत रच-बस जाती है और फिर दीन पर क़ायम रहने के मामले में किसी की परवाह नहीं रहती। दिल में किसी का ख़ौफ़ बाक़ी नहीं रहता, कि क़ौम वाले क्या कहेंगे? रिश्तेदार क्या कहेंगे? बिरादरी में नाक कट जाएगी।

इन सारी चीज़ों से उसका दिल साफ़ हो जाता है, मुत्मईन हो जाता है। सिर्फ़ एक ही फ़िक्र होती है कि मेरा अल्लाह नाराज़ न हो जाए। वह राज़ी हो जाए, चाहे दुनिया वाले जो कुछ भी कहें। जो कुछ भी समझें, जो कुछ भी सोचें, और फिर वह ज़बाने हाल से कहता है।

अगर एक तू नहीं मेरा तो कोई शै नहीं मेरी
जो तू मेरा तो सब मेरा फ़लक़ मेरा ज़मीं मेरी

इसलिए मुसलमान बहनों को चाहिए कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों को मालूम करके एक-एक सुन्नत पर अ़मल करने की कोशिश करें जैसे हमारे हुज़ूरे पाक ने ज़िन्दगी गुज़ारी वैसे ही हम गुज़ारें। हर काम करने से पहले यह देखें कि हमारे नबी करीम ने इसको कैसे किया।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हर अदा हर क़ौल हर अ़मल हर फ़ेल हमारी निगाह में महबूब हो जाए और उसके मुक़ाबले में सारे जहाँ वालों के तरीक़े हमारी निगाह में ना-पसन्दीदा हो जाएँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक-एक तरीक़ा हमारी निगाह में सारी दुनिया की दौलत और सातों आसमानों और सातों ज़मीनों से ज़्यादा क़ीमत वाला हो जाए। दुनिया चली जाए तो जाये, इज़्ज़त जाए तो ख़ैर से जाये, जान जाए जो जाये, महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा हाथ से न छूटने पाये।

इसलिए हम कुछ सुन्नतें लिखते हैं जिनको हमारी मुसलमान बहनें अपना लें तो दुनिया और आख़िरत में बहुत से फ़ायदे मिलें और सबसे

बड़ी बात अल्लाह तआला का राज़ी होना है, यह सबसे बड़ी बात है। महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों पर अमल करने से अल्लाह तआला की रिज़ा मिलेगी यह सबसे बड़ा इनाम है। इन सुन्नतों पर अमल करने से अल्लाह मियाँ राज़ी हो जाएँगे।

1. मिस्वाक की पाबन्दी करें। ख़ास तौर से नमाज़ के लिए वुज़ू करते समय दिन में पाँच बार और तहज्जुद के समय, खाने के बाद, नफ़्ली वुज़ू करते वक़्त, तिलावत करते वक़्त, सोते वक़्त मिस्वाक का एहतिमाम (पाबन्दी) करें।

अच्छा यह है कि कम से कम एक हफ़्ते बाद, नई मिस्वाक बदल लें। अगर गन्दी हो गई हो तो जल्दी बदल लें, वरना उसका ब्रश गन्दा होने के बाद फ़ौरन नया बना लें।

2. सुबह और शाम की दुआएँ, खाना खाने के बाद की दुआएँ, सोने से पहले और उठने के बाद की दुआएँ, कपड़े पहनने, आईना देखने, बच्चों को शौहर को हंसता देखते वक़्त की दुआएँ, बुख़ार सिरदर्द आँखों की तकलीफ़, नज़रे बद से बचने की दुआएँ। वुज़ू के बीच की दुआ, अज़ान के बाद की दुआ, जब किसी के यहाँ दावत खाए जब नया कपड़ा पहने या बच्चों को पहनाए या किसी को पहना हुआ देखे, नया चाँद देखे, जो घर से बाहर जाए उसको रुख़्सत करने की दुआ। नमाज़े हाजत और नमाज़े-इस्तिख़ारा की दुआएँ, नमाज़े जनाज़ा और दुआ-ए-कुनूत की, ये सब याद करें और बच्चों को याद करवाएँ।

जितनी दुआएँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक पर जारी हुई हैं उनको हम अपनी ज़बानों पर भी लाएँगे, बच्चों को भाई-बहनों को और घर की औरतों को याद करवाएँगे तो हमारी ज़बानें भी पाक होंगी और वह काम पूरा का पूरा आख़िरत में हमें बेइन्तिहा अज्र व सवाब दिलाने वाला बन जाएगा।

3. इसी तरह कोई चीज़ टूट जाए, बिजली चली जाए, किसी क़िस्म का छोटा बड़ा नुक़सान हो जाए, फ़ौरन ज़बान से कहे-

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ.

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

तर्जुमाः हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ लौटकर जाएँगे।

यानी कोई चीज़ हमारी है ही नहीं, हम खुद अल्लाह ही के हैं और हम यहाँ हमेशा रहने के लिए नहीं आए। जब हम ही चले जाएँगे तो यह चीज़ चली गई तो क्या हुआ? हमें यह सोचकर जाने की तैयारी में लग जाना चाहिए। इसी तरह छींक की आवाज़ किसी से सुने या मेहरम मर्दों से सुने तो कहे "यरहमुकल्लाहु"। अगर किसी मुसलमान बहन को छींक आए तो 'काफ़' के ज़ेर के साथ कहे "यरहमुकिल्लाहु"।

खुद को छींक आए तो कहे "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन अला कुल्लि हालिन्"।

कोई चीज़ शौहर दे या बाहर से कोई चीज़ लाए फ़ौरन कहे "जज़ाकल्लाहु ख़ैरन्"।

4. बच्चे को पेशाब वग़ैरह के लिए बैठाने में बहुत ही ज़्यादा सख़्ती से एहतियात करें कि क़िब्ले की तरफ़ न बैठे। अगर बैतुल-ख़ला (लैट्रीन) ग़लत बना हुआ है तो उसको सही करवाने की कोशिश करें और जब तक सही न हो बच्चे को सही बैठाएँ। पेशाब-पाख़ाने की ज़रूरत पूरी करने के समय क़िब्ले की तरफ़ पीठ या मुँह करना बहुत ही बुरी बात है। इसलिए इससे भी बचने का एहतिमाम करें।

5. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदत मुबारक यह थी कि आपको जब भी कोई सख़्त काम पेश आता था यानी कोई परेशानी कोई तकलीफ़ आती थी तो आप नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते थे।

इसलिए बच्चा बीमार हो, घर में कोई बीमारी आए तो फ़ौरन पहले दो रक्अत नफ़िल पढ़े और अल्लाह तआला से दुआ माँगे कि या अल्लाह! यह बीमारी आप ही के हुक्म से आई है, आप ही शिफ़ा देने वाले हैं। जिस दवा को मैं इस्तेमाल कर रही हूँ या करवा रही हूँ आप

अपने हुक्म से उसमें शिफ़ा डाल दीजिए। फिर सदक़ा करें जो भी हो सके, इस तरह कोशिश करें कि सीधे हाथ से दें तो बाएँ हाथ को पता न चले। फिर ज़रूरत हो तो डॉक्टर के पास या हकीम के पास जाएँ।

इसी तरह किसी चीज़ की घर में ज़रूरत हो, पैसा हो या न हो, पहले फ़ौरन शौहर से न कहे बल्कि पहले अल्लाह तआ़ला से दुआ़ माँगे। फ़ौरन दो रक्अ़त नफ़िल पढ़ ले और अल्लाह से माँगे। अगर नफ़िल नहीं पढ़ सकती किसी भी उज़्र (मजबूरी) की बिना पर, तो वुज़ू करके ध्यान के साथ थोड़ा सा ज़िक्र करके दुरूद शरीफ़ पढ़े। अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ बयान करे। तीसरा कलिमा, या सूरः फ़ातिहा और "सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीम" सौ बार पढ़कर और आयते करीमा जितनी बार हो सके पढ़कर अल्लाह से दुआ़ माँगे।

या अल्लाह! मुझे इस चीज़ की ज़रूरत है, आप मुहैया फ़रमा दीजिए। ऐ अल्लाह! हमारे घर में यह परेशानी है आप ही इस परेशानी इस ग़म, इस मुसीबत को दूर कर सकते हैं, आप ही दूर फ़रमा दीजिए।

ग़र्ज़ यह कि इस सुन्नते नब्वी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को ज़िन्दा कीजिए और अपना ताल्लुक़ अपने मालिक व आक़ा से ख़ूब-ख़ूब बढ़ाईए।

हर चीज़ का लेन-देन सीधे हाथ से करें। किसी से कोई चीज़ लें तो सीधे हाथ से लें और दें तो सीधे हाथ से दें। और बच्चों को भी यह सिखाएँ। इसी तरह रात को बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम कहकर दरवाज़ा बन्द करें और बरतनों को भी ढाँप कर रख लें।

6. घर में आते-जाते, कहीं अ़ज़ीज़ रिश्तेदारों के घर में जाएँ तो औ़रतें आपस में एक दूसरे को "अस्सलामु अ़लैकुम" कहें।

अक्सर ऐसा होता है कि यह सुन्नत भी हमारे समाज में औ़रतों से छूटी रहती है। आपस में बात शुरू करने से पहले सलाम के बजाय यह कहती हैं- अरे कैसी हो? क्या हाल है? बच्चे कैसे हैं? या फिर हाथ के इशारे से सलाम हो जाता है।

याद रखिए इस सुन्नत को ज़िन्दा कीजिए! और बच्चों को भी सिखाईए कि मुलाक़ात के वक़्त सलाम करें।

सलाम का तरीक़ा

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपनी किताब मआ़रिफ़ुल-क़ुरआन में लिखते हैं "इस आयत में इरशाद है कि जब तुम्हें सलाम किया जाए तो उसका जवाब उससे अच्छे लफ़्ज़ों में दो या कम से कम वैसे ही लफ़्ज़ कह दो। इसकी तशरीह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने अ़मल से इस तरह फ़रमाई कि एक बार नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास एक साहिब आए और कहा: "अस्सलामु अ़लै-क या रसूलल्लाह" आपने जवाब में एक कलिमा बढ़ाकर फ़रमाया: "व अ़लैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि"। फिर एक साहिब आए और उन्होंने सलाम में ये अलफ़ाज़ कहे: "अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में एक और कलिमा बढ़ाकर फ़रमाया: "व अ़लैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"।

फिर एक साहिब आए और उन्होंने अपने सलाम ही में तीनों कलिमे बढ़ाकर कहा: "अस्सलामु अ़लै-क या रसूलल्लाहि व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में सिर्फ़ एक कलिमा "व अ़लै-क" इरशाद फ़रमाया। उनके दिल में शिकायत पैदा हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान, पहले जो हज़रत आए आपने उनके जवाब में कई कलिमात दुआ़ के इरशाद फ़रमाए, और मैंने उन सब अलफ़ाज़ से सलाम किया तो आपने "व अ़लै-क" कहने पर ही इक्तिफ़ा फ़रमाया?

आपने फ़रमाया कि तुमने हमारे लिए कोई कलिमा छोड़ा ही नहीं कि हम जवाब में बढ़ाते। तुमने सारे कलिमात अपने सलाम ही में जमा कर दिये, इसलिए हमने क़ुरआ़नी तालीम के मुताबिक़ तुम्हारे सलाम का

जवाब सिर्फ सलाम से देने पर इक्तिफ़ा कर लिया। इस रिवायत को इब्ने जरीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि और इब्ने हातिम रह० ने मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ नक़ल किया है।

उक्त हदीस में एक बात तो यह मालूम हुई कि सलाम का जवाब उससे अच्छे अलफ़ाज़ में देने का जो हुक्म आयते मज़कूरा मे आया है उसकी सूरत यह है कि सलाम करने वाले के अलफ़ाज़ से बढ़ाकर जवाब दिया जाए, जैसे उसने कहा: "अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि" तो आप जवाब में कहें " व अ़लैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"।

सलाम का फ़ायदा

एक बुज़ुर्ग का इरशाद है कि अगर हर मुसलमान दूसरे मुसलमान को और हर मौहल्ले वाले दूसरे मौहल्ले वालों को हर गाँव, शहर, मुल्क वाले, दूसरे गाँव वालों को रोज़ाना सिर्फ यह कह दें:

"अस्सलामु अ़लैकुम"

तो सारी दुनिया घर से लेकर मुल्क तक अमन का गहवारा बन सकती है।

आज पूरी दुनिया में नफ़रत व मुसीबत की आग इसी वजह से फैली हुई है कि हमने सलाम छोड़ दिया।

मियाँ-बीवी में मुहब्बत पैदा करने और बढ़ाने का और बच्चों में आपस में मुहब्बत बरक़रार रहे, इसका भी आसान तरीक़ा घर में:

"अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"

"व अ़लैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"

की सदा (आवाज़) को आ़म करना है।

एक कमरे से दूसरे कमरे में जाएँ, बात शुरू करने से पहले "अस्सलामु अ़लैकुम" कहिए और छोटे बच्चों से कहलवाईए....।

सुबह उठें दुआ़ पढ़ने के बाद बात करने से पहले बीवी शौहर को सलाम करे, शौहर बीवी को सलाम करे, बच्चे माँ बाप को सलाम करें,

फिर माँ-बाप उनसे बात करें।

सलाम का दर्जा इस्लाम में इतना अहम है कि जन्नत में भी मुसलमान एक दूसरे को सलाम करेंगे। फ़रिश्ते सलाम करेंगे, और जन्नत में एक बहुत ही बड़ी नेमत यह मिलेगी कि अल्लाह जन्नत वालों को सलाम करेंगे। कुरआन में है:

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ

कि जन्नत वालों पर उनके रब की तरफ़ से सलाम पेश किया जायेगा।

अल्लाह तआ़ला हमको इसकी क़द्र अ़ता फ़रमाए और सलाम आ़म करने की तौफ़ीक़ दे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बाज़ार तशरीफ़ ले जाते, छोटे बड़े दुकानदारों और मुसाफ़िरों को सलाम करते। हज़रत तुफ़ैल रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया: आप बाज़ार जाते हैं, ख़रीदते कुछ नहीं? फ़रमाया सिर्फ़ सलाम करने के लिए बाज़ार जाता हूँ और कुछ मेरा मक़सद नहीं होता।

सलाम करते और जवाब देते वक़्त यह यक़ीन रखें और बच्चों को भी याद दिलवाएँ कि मेरे आमाल-नामे में इतनी नेकियाँ लिखी गईं और हर मुसलमान औ़रत दूसरी मुसलमान बहन को सलाम करे। जानने वाली को भी और जिसको न जानती हो उसको भी।

सलाम के मायने

सलाम दुआ़ है एक मुसलमान की तरफ़ से दूसरे के लिए कि मैं आपके लिए सलामती और अमन की चाहने वाली हूँ। आप पर अल्लाह तआ़ला की रहमतें और बरकतें बरसें।

ग़ौर कीजिए! कितनी प्यारी दुआ है। अगर माँ दिन में कई बार बच्चों को यह दुआ़ दे तो कितनी बार अल्लाह पाक की रहमतें बरकतें बच्चों को ढाँप लेंगी। फिर शैतानी आफ़तें उनको कैसे घेर सकती हैं?

दूसरे मायने

एक मुसलामन मुलाक़ात के समय दूसरे से कहता है "अस्सलामु अ़लैकुम" कि देखना खुदा की ज़ात तुम पर क़ाबू रखती है, कोई ग़लत काम न करना। तो दूसरा भी अल्लाह की बड़ाई की याददेहानी कराता है "व अ़लैकुमुस्सलाम" कि ऐ मेरे भाई वह ज़ात तुझपर भी क़ाबू रखती है। अफ़सर, मातहत, ग़रीब, अमीर, शाह व गदा सबके सब इस्लामी समाज में हर समय खुदा को सामने रखकर चलते हैं और ग़ाफ़िल नहीं होते।

इसलिए कहीं भी जाएँ औरतें हों या अपने मेहरम रिश्तेदार, तो पहले "अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" कहे ताकि तीस नेकियाँ मिल जाएँ फिर बात शुरू करें। इसी तरह औरतों को चाहिए कि छोटे बच्चों को सलाम करने में खुद पहल करें ताकि बच्चे उनसे यह आ़दत सीखें, और इसी तरह आ़दी हों और साथ ही हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा भी हो जाए कि नबी करीम सल्ल० जब बच्चों के पास से गुज़रते थे तो उन्हें सलाम किया करते थे।

इस्लामी सलाम दुनिया की दूसरी तमाम क़ौमों के सलाम से बेहतर है

दुनिया की हर मुहज़्ज़ब (सभ्य) क़ौम में इसका रिवाज है कि जब आपस में मुलाक़ात करें तो कोई कलिमा आपस के ताल्लुक़ और इज़्हारे मुहब्बत के लिए कहें, लेकिन मुवाज़ना (तुलना) किया जाए तो मालूम होगा कि इस्लामी सलाम जितना जामे है कोई दूसरा ऐसा जामे नहीं। क्योंकि इसमें सिर्फ़ इज़्हारे मुहब्बत ही नहीं, बल्कि साथ-साथ मुहब्बत का हक़ अदा करना भी है, कि अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ करते हैं कि आपको सारी आफ़तों और मुसीबतों से सलामत रखें।

फिर दुआ़ भी अ़रब के तर्ज़ पर सिर्फ़ ज़िन्दा रहने की नहीं, बल्कि

अच्छी और पाक ज़िन्दगी की दुआ है। यानी सारी आफ़तों और परेशानियों से महफ़ूज़ रहने की। इसी के साथ इसका भी इज़हार है कि हम और तुम सब अल्लाह तआला के मोहताज हैं, एक दूसरे को कोई नफ़ा बिना उसकी इजाज़त के नहीं पहुँचा सकता। इस मायने के एतिबार से यह कलिमा एक इबादत भी है, और अपने भाई मुसलमान को ख़ुदा तआला की याद दिलाने का ज़रिया भी।

इसी के साथ अगर यह देखा जाए कि जो शख़्स अल्लाह तआला से यह दुआ माँग रहा है कि हमारे साथी को सारी आफ़तों और तकलीफ़ों से महफ़ूज़ फ़रमा दे तो उसके ज़िम्न में वह गोया यह वादा भी कर रहा है कि तुम मेरे हाथ और ज़बान से सुरक्षित और महफ़ूज़ हो। तुम्हारी जान, माल, आबरू का मैं मुहाफ़िज़ हूँ। इब्ने अरबी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अहकामुल-कुरआन में इमाम इब्ने उयैना रह० का यह कौल नक़ल किया है:

اتدری ماالسلام؟ یقول انت آمن منی۔

यानी तुम जानते हो कि सलाम क्या चीज़ है? सलाम करने वाला यह कहता है कि तुम मुझसे सुरक्षित हो।

ख़ुलासा

ख़ुलासा यह है कि इस्लामी सलाम एक आलमगीर (विश्वव्यापी) जामिईयत रखता है:

1. इसमें अल्लाह का भी ज़िक्र है।

2. याददेहानी भी।

3. अपने भाई मुसलमान से इज़हारे ताल्लुक़ व मुहब्बत भी।

4. उसके लिए बेहतरीन दुआ भी।

5. और उससे यह मुआहदा भी कि मेरे हाथ और ज़बान से आपको कोई तकलीफ़ न पहुँचेगी। जैसा कि हदीस पाक में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इरशाद आया है:

المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده (بخاری جلد اول ص ٦)

"यानी मुसलमान तो वही है जिसके हाथ और ज़बान से सब मुसलमान महफ़ूज़ रहें, किसी को तकलीफ़ न पहुँचे।

काश मुसलमान इस कलिमे को आम लोगों की रस्म की तरह अदा न करे, बल्कि इसकी हक़ीक़त को समझकर इख़्तियार करे तो शायद पूरी क़ौम की इस्लाह के लिए यही काफ़ी हो जाए। यही वजह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों के आपसी सलाम को रिवाज देने की बड़ी ताकीद फ़रमाई, और उसको अमलों में सबसे बेहतर अमल क़रार दिया, और इसके बेशुमार फ़ज़ाईल व बरकात और अज्र व सवाब बयान फ़रमाए। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हदीस नक़ल की गयी है कि रसूले करीम ने फ़रमायाः

"तुम जन्नत में उस समय तक नहीं जा सकते जब तक मोमिन न हो। और तुम्हारा ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता जब तक आपस में एक दूसरे से मुहब्बत न करो। मैं तुमको ऐसी चीज़ बताता हूँ कि अगर तुम उस पर अमल कर लो तो तुम्हारी आपस में मुहब्बत क़ायम हो जाएगी। वह यह कि आपस में सलाम को आम करो, यानी हर मुसलमान के लिए चाहे उससे जान पहचान हो या न हो"।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि इस्लाम के आमाल में सबसे बेहतर क्या है? आपने फ़रमाया कि तुम लोगों को खाना खिला दो और सलाम को आम करो, चाहे तुम उसको पहचानते हो या न पहचानते हो। (बुख़ारी शरीफ़)

मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद ने हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा क़रीब वह शख़्स है जो सलाम करने में पहल करे।

मुस्नदे बज़्ज़ार और मोजम कबीर तबरानी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन

मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि सलाम अल्लाह तआ़ला के नामों में से है, जिसको अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर उतारा है। इसलिए तुम आपस में सलाम को आ़म करो, क्योंकि मुसलमान आदमी जब किसी मजलिस में जाता है और उनको सलाम करता है तो उस शख़्स को अल्लाह तआ़ला के नज़दीक फ़ज़ीलत का एक बुलन्द मक़ाम हासिल होता है। क्योंकि उसने सबको सलाम, यानी अल्लाह तआ़ला की याद दिलाई।

अगर मजलिस वालों ने इसके सलाम का जवाब न दिया तो ऐसे लोग उसको जवाब देंगे जो उस मजलिस वालों से बेहतर हैं यानी अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते।

और एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि बड़ा बख़ील है वह आदमी जो सलाम में बुख़्ल (कन्जूसी) करे। (तबरानी, अबू हुरैरह रज़ि०)

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन इरशादात का सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम पर जो असर हुआ उसका अन्दाज़ा इस रिवायत से होता है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु अक्सर बाज़ार में सिर्फ़ इसलिए जाया करते थे कि जो मुसलमान मिले उसको सलाम करके इबादत का सवाब हासिल करें। कुछ ख़रीदना या फ़रोख़्त करना मक़सूद न होता था। यह रिवायत इमाम मालिक ने इपनी किताब में तुफ़ैल बिन उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़ल की है। (मारिफ़ुल क़ुरआन पेज **503** जिल्द **2**)

ज़रूरी मसला

हाँ यह ज़रूर है कि नामेहरम मर्द चाहे वह देवर हो या ख़ालाज़ाद, फूफीज़ाद भाई, या बहनोई, नन्दोई, जो भी हो उनसे मुसाफ़ा करना बेपर्दा उनसे बात करना जायज़ नहीं है। अल्लाह तआ़ला की खुली नाफ़रमानी है। और अल्लाह तआ़ला के गुस्से को दावत देना है और दुनिया व आख़िरत दोनों के अ़ज़ाब में अपने आपको मुब्तला करना है।

7. हर काम में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ निस्बत करे कि अल्लाह के हुक्म से यह हुआ। बच्चा अल्लाह के हुक्म से बीमार हुआ, यह नहीं कि सर्दी लग गई इसलिए बीमार हुआ। फुलाँ डॉक्टर की दवा ली उससे फ़ायदा हुआ, यूँ न कहे बल्कि यूँ कहे! अल्लाह के हुक्म से सर्दी लगने की वजह से बीमार हो गया, फुलाँ डॉक्टर से दवा ली अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह के हुक्म से फ़ायदा हुआ।

किसी काम में शौहर को नुक़सान हुआ तो बीवी साहिबा यह न कहेः मैंने तो मना किया था आप माने नहीं इसलिए ऐसा हुआ। नहीं बिल्कुल नहीं! बल्कि अल्लाह की ज़ात पर पूरा भरोसा रखने वाली औ़रत यूँ कहेगीः अल्लाह ने यूँ चाहा था, अल्लाह ही के हुक्म से ऐसा हुआ, अब हमें अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखते हुए सब्र करना चाहिए।

हम लोग बातों में इत्तिफ़ाक़ का लफ़्ज़ अक्सर इस्तेमाल करते हैं। जैसे चीज़ कहाँ से आई? आज इत्तिफ़ाक़न मेरी बहन आ गई तो वह यह ले आई।

नहीं! बल्कि यूँ कहिये! अल्लाह के हुक्म से मेरी बहन आज आई थी वह यह ले आई। याद रखिए! इत्तिफ़ाक़ कोई चीज़ नहीं होती, कायनात का एक-एक ज़र्रा एक-एक क़तरा· एक-एक पत्ता गिरने में, बहने में, हिलने और इस्तेमाल होने में नफ़ा नुक़सान पहुँचाने में अल्लाह के हुक्म का मोहताज है। जो कुछ हुआ वह अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हुआ और जो कुछ अब हो रहा है वह अल्लाह ही के हुक्म से हो रहा है, और जो कुछ आईन्दा होगा वह भी अल्लाह तआ़ला ही के हुक्म से होगा।

इसलिए मुसलमान औ़रत को चाहिए कि हर काम की निस्बत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ करे। बा-यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बुज़ुर्ग हैं, उनकी मौत के बाद किसी को ख़्वाब में उनकी ज़ियारत हुई तो पूछने पर फ़रमाया कि मैंने अल्लाह तआ़ला के इस सवाल पर कि क्या लाए हो? जवाब में कहाः कोई और अ़मल तो नहीं लेकिन सिर्फ़

एक तौहीद का सरमाया लाया हूँ।

तो मुझसे कहा गया एक दिन तुम्हारे पेट में सुबह दर्द हुआ था तो तुमने कहा था रात दूध पीने की वजह से पेट में दर्द हो गया। तो तुम्हारी तौहीद उस सुबह कहाँ गई? पेट का दर्द दूध पीने की वजह से हुआ था या हमारे हुक्म की वजह से?

ख़ैर इस तरह कहना भी कोई नाजायज़ नहीं था जबकि दूध को मुअस्सिरे हक़ीक़ी (वास्तव में प्रभावी) नहीं समझा था लेकिन एक मक़बूल बन्दे की ज़बान से किसी चीज़ की तरफ़ ज़ाहिरी निस्बत किया जाना ही अल्लाह के नज़दीक पूछे जाने के क़ाबिल हुआ। इसलिए हमारे ईमान की ताज़गी के लिए भी यह तदबीर है कि:

हर काम की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करना चाहिए। अपनी तरफ़ से निस्बत हटा देनी चाहिए। मैंने पकाया बहुत अच्छा, पका नहीं।

मैंने पकाया अल्लाह तआ़ला ने उसमें लज़्ज़त डाल दी। अल्लाह के हुक्म से अच्छा हो गया, मेरे मश्विरे से ऐसा हुआ, मेरी बात मानी तो ऐसा हुआ, मैंने तो पहले ही कह दिया था, ये सब बातें नामुनासिब हैं, न अपनी तरफ़ निस्बत करें न किसी इनसान की तरफ़ बल्कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ निस्बत करे। इसी तरह बच्चो की ईमान तर्बियत करें।

बच्चे कहें हमें यह चीज़ चाहिए वह चीज़ चाहिए। तो यह न कहें अब्बू से कहो बल्कि उनको समझाएँ कि अल्लाह तआ़ला से माँगो अल्लाह ही देंगे। अच्छी तरह वुज़ू करके अल्लाह तआ़ला के ध्यान के साथ बहुत ही सुकून के साथ दो रकअ़त नमाज़ पढ़कर अल्लाह तआ़ला से माँगो। फिर कहें अब अब्बू से कहो ताकि उन्हें तुम्हारी ज़िम्मेदारी पूरी करने पर सवाब मिले।

जब अल्लाह तआ़ला देना चाहेंगे तो अब्बू के दिल में बात डाल देंगे या किसी और ज़रिये से दे देंगे। बच्चों का यक़ीन भी अल्लाह की ज़ात पर बढ़ेगा, और फिर यह बच्चे बड़े होकर किसी के आगे हाथ नहीं फैलाएँगे बल्कि दिल में भी अल्लाह के अ़लावा किसी से उम्मीद नहीं

रखेंगे। और हर ज़रूरत के वक़्त दो रक्अ़त नमाज़ पढ़कर अपने मसाईल (समस्सयायें) अल्लाह ही से हल करवा लेंगे।

और हर हाल में चाहे ख़ुशी हो ग़मी हो, राहत हो तकलीफ़ हो, और अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ मुतवज्जह होंगें। हर हाल में उनकी अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त और मुहब्बत में तरक़्क़ी का सबब होगी।

जो खुद पे हम उनका करम देखते हैं
तो दिल को बह् अज़ जामे जम देखते हैं

हर तकलीफ़ व परेशानी सब्र और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहने के अज्र व सवाब् का सबब होगी। दर्जात के बुलन्द होने का ज़रिया होगी।

ख़ुशा हवादिसे पैहम ख़ुशा यह अश्क रवाँ
जो ग़म के साथ हो तुम भी तो ग़म का क्या ग़म है

रज़ा-ए-दोस्त की ख़ातिर यह हौसले उनके
जिगर पर ज़ख़्म हैं फिर भी यह मुस्कुराते हैं

उनके दिल का हर गोशा व किनारा अल्लाह ही से उम्मीदें बाँधे रखेगा और अल्लाह ही से डरेगा। उनकी पेशानी तो बहुत दूर की बात, उनके ख़्यालात व तसव्वुरात का हज़ारवाँ हिस्सा भी अल्लाह के सिवा किसी के आगे नहीं झुकेगा। माँ की बचपन की तर्बियत उनके ईमान व यक़ीन को पचपन तक और फिर मौत तक बढ़ाती रहेगी और यह ख़ुश क़िस्मत बच्चे होंगे जो ऐसी ईमानी तर्बियत देने वाली माँओं की गोदों में पले होंगे।

8. एक अहम बात पर्दे के सिलसिले में यह है कि जिस तरह औरतों का पर्दा अजनबी मर्दों से है इसी तरह ग़ैर-मेहरम रिश्तेदारों से भी है चाहे मामूँज़ाद, चचाज़ाद, फूफीज़ाद भाई हो और चाहे देवर हो, जेठ हो, चाहे शौहर के रिश्तेदार हों, उन सबसे पर्दा है। मुँह बोले बेटे, मुँह बोले भाई से भी पर्दा है जैसा कि अजनबी से पर्दा है।

अगरचे नीयत साफ़ हो और किसी गुनाह में पड़ने का डर भी न

हो मगर यह बेपर्दगी खुद एक हराम काम है। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि उनके सारे अहकामात को हक़ मान कर उन पर पूरी तरह अमल की जद्दोजहद की जाए। इसमें शर्म करने के बजाय अल्लाह तआला की खुशनूदी को सामने रखकर और न करने पर अल्लाह की नाराज़गी और आख़िरत का अज़ाब सोचकर हिम्मत से नफ़्स व शैतान का मुक़ाबला करना चाहिए और अल्लाह तआला से मदद माँगते रहना ज़रूरी है।

9. औरतों को चाहिए कि अज़ान का जवाब दें। हदीस शरीफ़ में है जो शख़्स मुअज़्ज़िन का जवाब दिल के यक़ीन के साथ दे तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। (हिस्ने हसीन) जो मेरे लिए वसीले का सवाल करे उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब होगी

(मुस्लिम, अब्दुल्लाह बिन उमर पेज 64)

एक और हदीस में है कि अज़ान की आवाज़ सुनकर जो शख़्स उसको पढ़े उसके गुनाह बख़्श दिये जाएँगे। (मुस्लिम)

इसलिए औरतों को भी चाहिए कि अज़ान के वक़्त बातें न करें उसका जवाब दें। मुअज़्ज़िन जो कहे यह भी उसी तरह कहे मगर जब मुअज़्ज़िन "हय्-य अलस्सलाह्" और "हय्-य अलल् फ़लाह्" कहे तो उसके जवाब में 'ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह' कहे।(मिश्कात)

और अज़ान ख़त्म होने के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़कर बिना हाथ उठाए यह दुआ माँगे:

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّامَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَائِمَۃِ اٰتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ۔ (مشکوۃ)

अल्लाहुम्-म रब्-ब हाज़िहिद्दअ्वतित्ताम्मति वस्सलातिल् क़ाइ-मति आति मुहम्म-द निल्वसील-त वल्-फ़ज़ील-त वब्अस्हु मक़ामम् महमू-द निल्लज़ी वअत्तहू इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल् मीआद।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह इस पूरी दावत के रब और क़ायम होने वाली

नमाज़ के रब! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वसीला दे (जो जन्नत का एक दर्जा है) और उनको फ़ज़ीलत दे और उनको मक़ामे महमूद पर पहुँचा जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान फ़रमाया कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यह दुआ अज़ाने मग़रिब के बाद पढ़ने के लिए तालीम फ़रमाई थी। (मिश्कात पेज 66)

जब मग़रिब की अज़ान हो तो यह दुआ माँगे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَائِكَ فَاغْفِرْلِىْ.

(مشکوۃ ٦٦:اول)

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! यह तेरी रात के आने और तेरे दिन के जाने का और तेरे पुकारने वालों की आवाज़ों का वक़्त है, सो आप मुझे बख़्श दीजिये।

इस तरह अज़ान का जवाब देना यह मुस्तहब व मस्नून है। लेकिन अगर शरई उज़्र न हो तो मर्दों के लिए क़दम से जवाब देना और मस्जिद की तरफ़ जाना वाजिब है और औरतों को फ़ौरन नमाज़ की तैयारी में लग जाना चाहिए। अज़ान सुनते ही हर काम बन्द कर दिया जाए। अगर बावर्चीख़ाने में है तो फ़ौरन चूल्हा बुझा दे कि अब मेरे मालिक की तरफ़ से बुलावा आ चुका है, अब मुअज़्ज़िन ने ऐलान कर दिया कि इस वक़्त कामयाबी सिर्फ़ और सिर्फ़ नमाज़ में है।

इसलिए अब सबसे पहले नमाज़ पढ़ूँगी। बाद में काम करेंगे, काम तो ख़त्म होंगे नहीं, इसलिए ऐसा न हो कि नफ़्स व शैतान धोखा दे कि यह छोटा सा काम कर लें फिर इत्मीनान के साथ नमाज़ पढ़ लूँगी और होता यह है कि वह छोटा सा काम इतना लम्बा और बड़ा हो जाता है कि नमाज़ का जो पसन्दीदा मुस्तहब वक़्त होता है वह निकल जाता है और बहुत सी बार नमाज़ क़ज़ा होने के क़रीब हो जाती है।

इसलिए मुसलमान बहनों को चाहिए कि अज़ान का जवाब ज़बान से भी दें और घर में भाई, वालिद, शौहर या दस वर्ष के क़रीब या इस उम्र से बड़े लड़के जो हों उनको तर्ग़ीब के साथ (प्यार व मुहब्बत के लहजे में) अज़ान होते ही मस्जिद में भेजने की फ़िक्र करें। और सात वर्ष और इससे ज़ायद वालों को घर में नमाज़ पढ़वाएँ। ख़ुद भी एहतिमाम करें और बहनों, भानजियों, वालिदा, घर की मासी नौकरानी वग़ैरह में ऐसा माहौल बनाएँ हिक्मत के साथ कि अज़ान होते ही घर की सारी औरतें नमाज़ की तैयारी में लग जाएँ।

यह तो कम से कम दर्जा है, वरना औरतों के लिए हर नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल है। जैसे ही जिस नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो, उस नमाज़ को पढ़ ले। औरत को अज़ान का इन्तिज़ार करने की भी ज़रूरत नहीं है, उनको मस्जिद में जाकर नमाज़ अदा नहीं करनी, इसलिए नमाज़ का वक़्त शुरू होते ही नमाज़ पढ़ लेनी चाहिए और अगर अभी तक नमाज़ नहीं पढ़ी और अज़ान हो गई तो अब अज़ान के बाद तो फ़ौरन नमाज़ की तैयारी में लग जाएँ अब बिल्कुल देर न करें।

सादगी

मोहतरम बहनो! हम आपके सामने एक अहम सुन्नत "सादगी" के मुताल्लिक़ बयान करते हैं। इस पर अल्लाह तआला सबको अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

हदीस शरीफ़ में आया है कि सुन्नत तरीक़ा मिट जाने के बाद जो कोई उस सुन्नत तरीक़े को ज़िन्दा कर देता है उसको सौ शहीदों का सवाब मिलता है। इसलिए जिस तरह हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में सादगी से सीधे-सादे तौर पर काम हुआ करते थे उसके मुवाफ़िक़ अब फिर होने लगें। जो मर्द और जो औरतें इसकी कोशिश करेंगे इसको वजूद में लाएँगे उनको बड़ा सवाब मिलेगा।

अगर औरतें इस सुन्नत पर अमल करना शुरू कर लें, और इस

बात का फ़ैसला कर लें कि हम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली सादी और मुबारक ज़िन्दगी को अपने घर में और तमाम मुसलमान औ़रतों के घरों में पैदा करने की कोशिश करेंगी तो यह सुन्नत पूरे आ़लम में वजूद में आ सकती है।

जितनी हमारी ज़िन्दगी हुज़ूरे पाक की ज़िन्दगी से मिलती होगी और मेल खाएगी उतनी ही ख़ैर व बरकत और मुहब्बतें हमारी ज़िन्दगी में पैदा होंगी और रहमतें बरसेंगी। अगर औ़रतें फ़ैसला कर लें तो बहुत जल्दी समाज में सादगी पैदा हो सकती है।

हमारी औ़रतें खुसूसन तीन कामों में इस सुन्नत को ज़िन्दा कर लें फिर देखें इन्शा-अल्लाह तआ़ला मियाँ-बीवी में आपस में मुहब्बत और घर के सारे लोगों में मुहब्बत और सुकून की फ़िज़ा कैसे क़ायम होती है। इसलिए अगर औ़रतें तीन कामें में ख़ास ख़्याल रखें और इस सुन्नत को ज़िन्दा करें तो बहुत से गुनाहों और बहुत सी बुराईयों से समाज पाक हो सकता है। मर्द हराम नाजायज़ कमाई से बच सकते हैं, आज बहुत से मर्द हराम कमाईयों में सिर्फ़ इसलिए मुब्तला हैं कि औ़रतें उनको मजबूर करती हैं कि यह होना चाहिए यह होना चाहिए।

फ़ुज़ूलख़र्ची, दिखलावा, शोहरत, नाम-नमूद के लिए चीज़ें जमा करना मर्दों की कमाईयों को बर्बाद करना बल्कि उनको क़र्ज़ पर मजबूर करना यह सब औ़रतों के इसरार ही की बदौलत है।

हज़रत हकीमुल-उम्मत मौलाना थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं: ये औ़रतें इस फ़न की इमाम हैं और ऐसी माहिर और तजुर्बेकार हैं कि बहुत ही आसानी से मर्दों को तालीम देकर उनकी भी अ़क़्लों पर पर्दा डाल देती हैं।

अब उनसे पूछा जाए कि ब्याह-शादी में क्या-क्या करना चाहिए एक ज़रा सा कलिमा छोटा सा बोल चुटकुला सा समझा देती हैं कि:

"ज़्यादा नहीं अपनी शान के मुवाफ़िक़ तो कर लो।"

ज़्यादा नहीं थोड़ा सा तो कर ही लो। ये तो इतना सा जुमला कह

कर अलग हो गईं, करने वालों ने जब इसकी शरह (व्याख्या) पूछी तो इतनी लम्बी हुई कि हज़ारों बातें इसमें से निकल आईं। जिनसे दुनिया की भी बर्बादी हुई और आख़िरत के ख़सारे से भी इनसान नहीं बचा।

इन्होंने सिर्फ़ एक लफ़्ज़ कह दिया था कि अपनी शान के मुवाफ़िक़ कर लो जिसको मर्दों ने अपनी नादानी से उन्हें औरतों से इसकी शरह पूछ कर इतना बढ़ा लिया कि घर के घर तबाह व बर्बाद हो गए।

(इस्लाहे ख़वातीन पेज 130)

क़र्ज़ों के बोझ ने उनकी गर्दनों को हमेशा के लिए झुका दिया और उसकी अदायगी के ग़म ने बुढ़ापे से पहले उनको बूढ़ा कर दिया। और कई बड़े गुनाह उनसे हुए। इसलिए मुसलमान औरतों को चाहिए कि सादगी इख़्तियार करें, हर काम सादगी से करने की कोशिश करें। सादगी इस्लाम का अहम हिस्सा है। खुसूसन इन तीन कामों में औरतें सादगी इख़्तियार कर लें तो दीन व दुनिया के बहुत से फ़ायदे हासिल हो जाएँगे, बहुत सी परेशानियों से लोग बच जाएँगे।

1. मकान बनाने में बिल्कुल सादगी का एहतिमाम करें। ऐसा मकान बनाएँ जो बिल्कुल सादा हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के मकानात के बारे में सोचें कि उनके मकानात कैसे थे? छत खजूर के पत्तों की थी, मिट्टी व गारे से बनी हुई दीवारें थीं, न क़ालीन थे, न बेशुमार बरतन थे, न सोने के लिए आ़लीशान पलंग कुर्सियाँ न मेज़ व अलमालिरियाँ, लेकिन सुकून था, मुहब्बतें थीं, सेहत थी, हमदर्दी थी, ग़मख़्वारी थी। सबसे अहम बात शराफ़त व इनसानियत थी, मुसलमान को काफ़िर से और काफ़िर को मुसलमान से ख़ौफ़ नहीं था, चैन व सुकून, राहत व इत्मीनान की ज़िन्दगी थी।

हमारे एक अ़रबी दोस्त ने अपनी बीवी के सहयोग से अपना घर बिल्कुल सादा बनाया है, हालाँकि उनके पास पैसा बहुत है, लेकिन इस नीयत से कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा हो

जाए कि मेरा मकान हुज़ूरे पाक के मकान की तरह सादा हो जाए। हम रात दिन देखते हैं कि जिसको जिससे मुहब्बत हो जाती है उसकी हर अदा हर तरीक़ा उसकी निगाह में दुनिया की सारी बादशाहत से ज़्यादा क़ीमती हो जाता है, अल्लाह करे हमारे भाई-बहनों के दिलों में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सच्ची मुहब्बत उतर जाए और उनकी मुबारक सादी ज़िन्दगी को हम अपनाने वाले बन जाएँ।

2. मकान सादा बनाने के बाद अब मकान में चीज़ें भी कम से कम हों, जो बहुत ही ज़रूरी हों वो रखी जाएँ और ज़रूरत के मायने भी समझ लेने चाहिएँ- ज़रूरत 'ज़रर' से बना है, जिसके मायने नुक़सान के हैं। यानी ऐसी चीज़ जिसके न होने से ज़रर (नुक़सान) हो वह ज़रूरी है।

तो घर में हर चीज़ लाने में, रखने में सादगी का एहतिमाम रखें। अगर सर्दी के लिए क़ालीन लेना ही है तो बिल्कुल सादा क़ालीन लें, मेहमान ख़ाने में सिर्फ़ गाव-तकिया रखें। अगर बहुत ही ज़्यादा ज़रूरत हो तो सादी कुर्सियाँ रख लें।

पर्दे, अलमारियाँ, टाईलें, बावर्चीख़ाने, बाथरूम यह सब चीज़ें ऐसी सादा बनाएँ कि कम से कम शौहर की हलाल आमदनी पर गुज़ारा हो जाए और बाक़ी जो माल बचे वह अल्लाह के बन्दों पर लगाएँ कि हमें अल्लाह तआ़ला ने माल इसी लिए दिया था कि हम अपनी ज़रूरत पर कम से कम लगाकर बाक़ी दूसरों पर लगाएँ, ताकि आख़िरत में हमें उसका अज्र मिल सके।

और दूसरा फ़ायदा इस सादगी का यह होगा कि घर में जो आएगा इस सादगी को देखकर उसे भी अपने घर मे सादा ज़िन्दगी गुज़ारने की हिम्मत और हौसला होगा। अल्लाह करे हमारी औ़रतें सादगी पर आ जाएँ और यह न सोचें कि औ़रतें क्या कहेंगी? समाज क्या कहेगा? बेटी की सास क्या कहेगी? बेटे की सास क्या कहेगी? फुलानी क्या कहेगी? बिरादरी मे नाक कट जाएगी। बल्कि यह सोचें कि अल्लाह तआ़ला और

उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम से कैसे खुश होंगे। इस दुनिया से हम क्या लेकर जाएँगे? हम तो यहाँ कुछ दिनों के मेहमान हैं।

शादी में सादगी का ख़्याल रखें

शादी में सादगी का एहतिमाम (पाबन्दी) करें। अगर आप किसी की बहन हैं तो भाई को सादगी से शादी करने पर आमादा करें, भाभी से और भाई के ससुराल वालों से किसी चीज़ का मुतालबा न करें। बल्कि उनको भी कहिये! खाने की दावत आप लोग न करें कि इस्लाम में सिर्फ़ दूल्हा की तरफ़ से वलीमा होता है और वह हम बहुत ही आसान और मुख़्तसर कर लेंगे और दहेज सादा दें। जिसमें दिखलावा, नाम नमूद न हो। अगर आप लम्बा-चौड़ा बहुत ही महंगा दहेज देना चाहते हैं तो बेटी के नाम कोई जायदाद कर दें या कोई मकान उसे दिलवा दें, जो बेटी को उम्र भर काम आएगा।

याद रखिये! आप माँ होते हुए, बहन होते हुए सास और नन्द होते हुए किसी भी रूप में जितनी सादगी से शादी अन्जाम देंगी या इसका ज़रिया बनेंगी उतना ही आपका शुमार अल्लाह तआ़ला की नेक बन्दियों में होगा। और आपके उस भाई की शादी का अन्जाम मुहब्बत व प्यार ख़ैर व बरकात पर ख़त्म होगा, इसलिए कि अल्लाह के सच्चे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है:

ان اعظم النكاح بركة ايسره موونة. (مسند احمد)

तर्जुमाः वह निकाह सबसे ज़्यादा बरकत वाला है, जिसमें ख़र्चे कम से कम हों।

जिस दिन लड़की का पैग़ाम आया उस दिन से लेकर रुख़्सती तक सबका हिसाब लगाया जाए जितना कम से कम ख़र्चा होगा उतना ही वह निकाह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की निगाह में बरकत वाला होगा, उसके फ़ायदे मियाँ-बीवी को हमेशा पहुँचते रहेंगे और यह निकाह दुनिया व आख़िरत की भलाई का ज़रिया होगा।

दोनों ख़ानदानों को ऐसे निकाहों से राहत व सुकून होगा, न कर्ज़ लेना होगा न रातों की नींदें ख़त्म करनी होंगी, न निकाह को मुसीबत समझा जाएगा। न लड़ाई-झगड़े होंगे, सारी मुसीबतों से बच जाएँगे। ज़्यादा ख़र्च करेंगे और महफ़िले मेहंदी वग़ैरह मायूं की हिन्दुवानी रस्मों पर अमल करेंगे उतना ही आपका सुकून बर्बाद हो जाएगा।

शादी के बाद बड़ी नन्द आकर कहेगी भाभी! आपने मुझपर तो मेहंदी वाली तक़रीब में कोई तवज्जोह नहीं दी, छोटी नन्द कहेगी मुझे तो फुलाँ हार नहीं दिखाया, सास कहेगी मेरा मान नहीं रखा, मेरा इकराम नहीं किया, देवरानी कहेगी जोड़ा नहीं दिखाया।

ऐसे ही इतने सारे झगड़े उसी के यहाँ होते हैं जहाँ बहुत ज़्यादा दावतें होती हैं। कोई कहेगा अच्छा नहीं पका था, कोई कहेगा तेल बहुत ज़्यादा था, कोई कहेगा मिर्च ज़्यादा थी, कोई कहेगा चावल ठण्डे हो गए थे। लोगों को खुश करने के लिये इतनी बड़ी दावत का एहतिमाम किया लेकिन फिर भी लोग खुश नहीं हुए। इतने सारे ख़र्चे करवाने के बाद भी जितने मुँह उतनी ही बातें।

हमारे प्यारे रसूल, सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद भी शादियाँ करवाईं यह शादियाँ बहुत सादगी के साथ अन्जाम पाईं।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सफ़र में निकाह और वलीमा

आपने एक बार सफ़र में निकाह किया, और वहीं रुख़्सती और वलीमा हुआ। न बक्री ज़िबह हुई, न क़ोरमा पका, न कार्ड छपे बल्कि दस्तरख़्वान बिछा दिये गए, उन पर कुछ घी, कुछ खजूरें, कुछ पनीर के टुकड़े रख दिये गए। मौजूद लोगों ने उसमें से खा लिया।

यह हम सब की माँ हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह का वाक़िआ है। जो माँ अपने बेटे या बेटी का निकाह इस तरह करेगी और जो सास अपनी बहू को इस तरह सादगी से घर में लाएगी कल

क़ियामत के दिन वह ज़रूर इस अ़मल में हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ मुशाबह हो जाएगी। अगर कोई और चीज़ रोक न बनी तो उम्मीद है कि इसी अ़मल पर अल्लाह तआ़ला ख़ुश जाएँ। और यह एक अ़मल सब गुनाहों के बख़्शवाने का ज़रिया बन जाए और इस सुन्नत की अदाएगी अल्लाह को पसन्द आ जाए कि इस निकाह की बरकत से उस घर में कोई सलाहुद्दीन अय्यूबी, जुनैद बग़दादी, शिबली नोमानी रह० जैसा नेक लड़का पैदा हो और वह दुनिया में ईमान फैलाने और करोड़ों इनसानों को जहन्नम की आग से बचाकर जन्नत की तरफ़ लाने का ज़रिया बने। लेकिन ऐसे फल उन्हीं दरख़्तों की टहनियों पर हुआ करते हैं जो हर क़िस्म की गरमी को सह जायें और सख़्त से सख़्त तपिश और लू वाली धूप बरदाश्त कर लें, कि दुनिया जो कुछ कहे, कहती जाये, हमें तो अल्लाह के महबूब की सुन्नत अदा करनी है, अल्लाह को राज़ी करना है।

1......

मुहम्मद की मुहब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना-मुकम्मल है

2......

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या लोह-व-क़लम तेरे हैं

3......

सारा जहाँ नाराज़ हो परवाह न चाहिये
मद्दे-नज़र तो मर्ज़ी-ए-जानानाँ चाहिये

4......

बस इस नज़र से देखकर तू कर यह फ़ैसला
क्या क्या तो करना चाहिये क्या क्या न चाहिये

5......

अगर इक तू नहीं मेरा तो कोई शै नहीं मेरी
जो तू मेरा तो सब मेरा फ़लक मेरा ज़मीं मेरी

6......

तौहीद तो यह है कि ख़ुदा हश्र में कह दे
यह बन्दा दो-आलम से ख़फ़ा मेरे लिये था

सास ज़ालिम है ..... आने वाली बहू के लिये

अगर आज लड़कों की मायें यह फ़ैसला कर लें कि हम आने वाली मासूम लड़की के लिये जो हमारी बहू बन रही है, ज़ालिम नहीं बनेंगी, तो बहुत सी लड़कियाँ जो घरों में बैठी हैं उनका रिश्ता हो जाये। और बहुत सी लड़कियों के माँ-बाप जो हैरान व परेशान फिर रहे हैं उनको सुकून की नींद मयस्सर हो। और अल्लाह तआला ने जो बन्दों के लिये निज़ाम बनाया है वह रिवाज में आ जाये और शादियाँ ज़्यादा से ज़्यादा आसान हो जायें। और बदकारी, अश्लीलता, नंगापन, बुराई और बुरी निगाह डालना मुश्किल और नामुम्किन हो जाये।

लेकिन सब से ज़्यादा रुकावट डालने वालियाँ और शादी को सादी बनाने के लिये तैयार न होने वालियाँ, मासूम लड़कियों पर जुल्म करने वालियाँ, रियासत की रियासत ग़ारत व तबाह करने वालियाँ, घरों के घर गिर्वी और क़र्ज़ रखवाने वालियाँ, गुनाहे कबीरा में सबको मुब्तला करने वालियाँ, अगर आप हमें माफ़ करें तो इन सब गुनाहों का सहरा सास के और फिर सास की प्रधान मन्त्री बड़ी नन्द के और उसकी सिक्रैट्री मंझली नन्द के और उसकी सलाहकार छोटी नन्द के और उसकी तकमील करने वाली घर की उस बड़ी भाभी के सर है जो इन रिवाजों से सबसे ज़्यादा वाक़िफ़ होती है और वह माँगने के लिए नये-नये तरीक़े और रिवाज लेकर आती है, जो आने वाली दुल्हन को मजबूर करती है यह भी लाओ, यह भी लाओ। और लड़की के माँ-बाप ऐसे मजबूर व बेबस होते हैं कि जो ससुराल वाले कहते हैं उसको किसी तरह पूरा करने की कोशिश करते हैं, कहीं ऐसा न हो कि हमारी बेटी को उसकी सास ये ताने दे (ऐसे ताने जो पत्थर के जिगर में भी सुराख़ कर दें) कि

तेरे बाप ने दिया ही क्या है? तू ख़ाली हाथ आई है। तेरे बाप ने हमारे बेटे को खाना ही नहीं खिलाया। तेरी माँ ने हमें सोने का हार ही नहीं पहनाया।

अगर लड़की के बाप ने दूल्हे की और उसके साथ रिश्तेदारों की होटल या कलब में बड़ी दावत न की तो यह सास एक ही जुमला ऐसा सुनाती है जो नयी-नवेली दुल्हन् के कलेजे में नश्तर बनकर ऐसा चुभता है कि बग़ैर तीर व तलवार के यह एक ही वार ख़ून के क़तरे उसकी आँखों से पानी की धारों की शक्ल में बहा देता है।

लड़की का बाप दसयों जगह ज़लील होता है, क़र्ज़ माँगता है, लोगों की ठोड़ियों में हाथ रख-रखकर भीख माँगता है कि मुझे अपनी बेटी को सास के तीर व तलवार से ज़्यादा तेज़ तानों से बचाना है, मुझे इतना दहेज देना है, इतनी दावतें करनी हैं, इतनी महफ़िलें करनी हैं और फिर जुल्म पर जुल्म लड़की की सास मेरे घर जब आयेगी और जितने रिश्तेदारों को साथ लायेगी उन सब को एक सौ एक रुपये का लिफ़ाफ़ा बन्द करके ज़ालिमाना टैक्स के तौर पर देना है, वरना वह मेरी बच्ची पर जुल्म करेगें, उम्र भर उसको सतायेगें। या फिर इस टैक्स को मैंने अदा न किया तो उसको तलाक़ देने या मायके में बिठा देने के वारंट जारी हो जायेगें और मेरी तीन बच्चियाँ अभी बाक़ी हैं।

अगर इस पहली बच्ची की सास और नन्द का पेट न भरा तो यह ख़ानदान भर में ढिन्ढोरा पीट देगी कि इसने बेटी को कुछ नहीं दिया, इसने बेटी को ख़ाली हाथ भेज दिया और फिर मेरी बाक़ी बेटियों का रिश्ता नहीं आयेगा। इसलिए ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात, फ़िदया, कफ़्फ़ारा, कोई भी माल मुझे दो चाहे सूद का हो रिश्वत का हो, डकैती का हो, चोरी का हो, मुझे दो ताकि मैं दहेज दूँ और बेटी की ज़ालिम सास और नन्द का मुतलबा पूरा हो जाये, और ये मेरी बेटी को तकलीफ़ें न दें।

ऐसी सासों को अल्लाह तआ़ला के आ़ज़ाब से डरना चाहिये और याद रखना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला की लाठी बे-आवाज़ है, ऐसी

सासें आख़िर उम्र में ऐसी बिमारियों में मुब्तला होती हैं कि अल्लाह ही हम सब की ऐसी बिमारियों से हिफ़ाज़त करे। यह तो दुनिया का आज़ाब है, किसी मज़लूम की आह लेने पर उसकी सज़ा दुनिया में ही मिल जाती है और आख़िरत में अल्लाह ही हमारी औरतों की हिफ़ाज़त फ़रमाये।

सास बहू को न अपनी बेटी समझती है न आज की बहू अपनी सास को वालिदा (अम्मी) समझती है। इसलिए शादी होते ही दोनों को अलग रखा जाये इसी में वालिदैन (माँ-बाप) की ख़िदमत भी हो सकती है और दोनों की भलाई है, इसी में सास व नन्द के तानों से बचा जा सकता है।

इसलिए हकिमुल्-उम्मत फ़रमाते थे कि मियाँ-बीवी का शादी के बाद से बावर्चीख़ाना अलग होना चाहिये, या अलग रहें, अलग पकायें, इसलिए कि चूल्हा ही ज़्यादातर आग भड़काता है, जिससे दोनों मियाँ बीवी की दीन व दुनिया तबाह व बरबाद हो जाती है। इसकी तफ़सील आगे आयेगी इन्शा-अल्लाह।

अगर बहू ख़ाली हाथ आयी जैसा कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लेहि व सल्लम का हुक्म है कि बहू पर कोई चीज़ लाज़िमी नहीं कि वह बाप के घर से लाये, बल्कि शौहर पर लाज़िम है कि बीवी को लाने के लिये मेहर का इन्तिज़ाम करे, तो सास नन्द अक्सर बहू को सुकून से नहीं रहने देतीं। लिहाज़ा आप अगर नन्द हैं तो अपनी भाभी पर जुल्म न होने दीजिए। अपने घर से इस लम्बे-चौड़े दहेज के ग़लत रिवाज को ख़त्म करने की कोशिश कीजिए। अपने भाई, माँ-बाप को समझाईये कि हम अल्लाह ही से लेंगे, हम भाभी और उनके घर वालों को तकलीफ़ में नहीं डालेंगे।

आज का दहेज एक मुसीबत है

अक्सर जगह दहेज भी लड़के और उसके वालिद नहीं माँगते, यह

और बात है कि मर्द की सोच भी औरतों की तरह हो चुकी हो, दूल्हा या लड़के का मुतालबा अक्सर दहेज का नहीं होता। वह अच्छी ख़ूबसुरत, ख़ूबसीरत, सलीक़ेमन्द, वफ़ादार, ग़मगुसार, दिलदार, दुख-दर्द में शरीक, भला चाहने वाली और अमानतदार लड़की चाहता है, लेकिन लड़के की माँ, बहन, बड़ी भाभी मजबूर करती हैं कि आने वाली दुल्हन पर जुल्म करो, और थोड़ा-सा भी नहीं बल्कि बहुत ज़्यादा करो।

लिस्ट और फ़ेहरिस्त लिखकर भिजवाओ कि ये चीज़ें चाहियें और अब तो लिस्ट में तरक़्क़ी हो गई है कि फ़र्नीचर फ़ुलाँ कम्पनी का जो सबसे ज़्यादा महंगी है, और फ़्रिज और ऐ. सी. फ़ुलाँ कम्पनी का। यह सारा मिलकर क्या होगा?

दहेज दर असल लड़की का बाप होने के जुर्म की सज़ा है। यह लड़के वालें की लालची ज़ेहनियत का प्रतीक है और एक तरह से उनका भीख माँगना है। बस अगर भीख माँगने वालों की शान के मुताबिक़ उन्हें भीख न मिले तो वे लड़की पर जुल्म ढाकर न सिर्फ़ उस एक जान को परेशान करते हैं बल्कि उसके माँ-बाप की ज़िन्दगी में भी ज़हर घोल देते हैं। और उन्हें एक रोग लग जाता है जो उनका जीना हराम कर देता है। जिससे उनकी ज़िन्दगी भी बरबाद हो जाती है।

देखा आपने पहले सीधा-सादा इनसान था, शादी-ब्याह में उसके नज़दीक असल चीज़ दुल्हन थी, मगर अब दहेज है। दुल्हन कितनी ही अच्छी हो, दहेज के बग़ैर बेकार हो जाती है। दुल्हन कितनी ही ख़राब हो, दहेज अच्छा हो तो क़ाबिले क़बूल बन जाती है। चुनाँचे पहले ज़माने में मौहल्ले और बिरादरी की औरतें दुल्हन देखने और मुबारकबाद देने के लिये आती थीं, अब दहेज और कपड़े देखने आती हैं। पूछा जाता है कि वाशिंग मशीन आई या नहीं? फ़्रिज फ़ुलाँ कम्पनी का है या नहीं? फिर जाते वक़्त औरतें कहती हैं लड़का ख़ुशनसीब है कि उसको इतना अच्छा दहेज मिला। पहले ज़माने में दहेज के मायने यूँ थे:

लड़का इस बात पर यक़ीन रखता था कि लड़की का असली दहेज

घरेलू कामों और चीज़ों का सलीक़ा व तरीक़ा है, माँ-बाप की तरफ़ से क़ीमती तोहफ़ा तरबियत व दीन की तालीम है, ताकि उसे अल्लाह और बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने, घर को संभालने, ससुराल वालों को खुश रखने, औलाद की परवरिश करने और रिश्तेदारों व पड़ोसियों के साथ अच्छे सुलूक का सलीक़ा आ जाए।

उसके दहेज में सबसे ज़्यादा अहम चीज़ इस्लाम का लिबास है, अल्लाह की फ़रमाँबरदार बन्दी हो, उसके रसूल को खुश करने वाली हो, इबादत का ज़ेवर पहने हुए हो, सुन्नत का इत्र लगाया हुआ हो, रज़ा व तवक्कुल, अल्लाह के ऊपर भरोसा और अल्लाह के ख़ौफ़ का सिंगार हो, अच्छे अख़्लाक़ से भरा हुआ सन्दूक़ हो।

शौहर की इताअ़त और फ़रमाँबरदारी का ए. सी. हो, फ़लैश और नेशनल के फ़्रिज के मुक़ाबले में ज़बान में मिठास और मुस्कुराहट से खुशियाँ बिखेरने वाला चेहरा हो, इल्म व अ़मल का सरमाया और शर्म व हया का पर्दा हो। इल्मे दीन और सहाबियात रज़ि० के हालात वाक़िआ़त और उनकी मुबारक सीरतों की मालूमात का बड़ी मात्रा में फ़र्निचर हो, ये चीज़ें असली दहेज थीं।

लेकिन आज उल्टी गंगा बह रही है। पहले चिराग़ तले अन्धेरा था अब बल्ब के ऊपर अन्धेरा है। अगर तन्दुरुस्त बूढ़ा भीख माँगता था तो लोग डाँटते थे कि माज़ूर तो नहीं हो। क्यों भीख माँगते हो? लेकिन आज नौजवान नये तरीक़ों से भीख माँगते हैं और उसको फ़न बनाकर पेश करते हैं और जो जितना माँगने में कामयाब होता है बेवकूफ़ लोग उसको मुबारकबाद देते हैं। जो जितना ज़्यादा दौलतमन्द होता है वह उतना ही हरीस और लालची होता है, उसको भीख माँगने के ढंग भी नये-नये माडर्न तरीक़ों से आते हैं। ऐसा ससुराल चाहते हैं कि लड़की के साथ जितनी ज़्यादा दौलत आ सकती हो वह आ जाए। क्योंकि मौजूदा दौर में दूसरों की कमाई पर हाथ साफ़ करने का यह एक बेहतरीन तरीक़ा है। इनकी नज़र में लड़की से ज़्यादा कार, फ़्रिज, टी.वी. वग़ैरह की अहमियत होती है।

इसी तरह दुनियावी तालीम-याफ़्ता लड़के की माँ फ़ख़्र के साथ भीख माँगती है और आपने देखा होगा कि आम भीख माँगने वाले लोग मर्द या औरतें कहती हैं: "जो दे उसका भी भला जो न दे उसका भी भला" लेकिन सास तो अपने बेटे के लिये डंके की चोट पर भीख माँगती है और गोया लड़का नीलाम होता है, बोलियाँ लगती हैं और जहाँ ज़्यादा की बोली लगती है वहाँ पर यह सौदा तोल-मोल कर तय हो जाता है। तक़रीबन इसमें तमाम औरतें बराबर हैं लेकिन हमारी बिरादरी में बान्टवा मैमन जमाअ़त की औरतें इसमें ज़्यादा आगे हैं।

अल्लाह इन लालची ज़ालिम सासों को मौत से पहले-पहले हिदायत दे दें। ऐ अल्लाह! आप ही सासों और नन्दों को नफ़्स व शैतान की चालों से निकाल दें। कितनों के घर इन्होंने बर्बाद किये, कितनों के सुहाग उजाड़ दिये, कितनों की मेहंदियाँ रंग आने से पहले धुलवा दीं, कितनों की चूड़ियाँ वक़्त आने से पहले तुड़वा दीं। कितनों को ज़िन्दा होते हुए ज़िन्दगी की ख़ुशियों से मेहरूम कर दिया। अपनी एक ख़ुशी के लिये ज़िन्दगी भर के लिये लड़की के वालिद के गले में क़र्ज़ों के तौक़ डाल दिया, उनकी बनी-बनाई इमारत को जलाकर उसकी राख से अपनी एक दिन की ख़ुशी पूरी की।

ये काफ़िरी तो नहीं, काफ़िरी से कम भी नहीं
कि मर्द हो गिरफ़्तारे हाज़िर व मौजूद
दुनिया गले का हार है दीन नज़र में ख़ार है
गर इसी का नाम बहार है तो आग लगे बहार में

दहेज मौजूदा समाज की एक लानत है

इस मामले में सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी उन लोगों पर आयद होती है जो खाते-पीते, अमीर और दौलतमन्द घराने कहलाते हैं। इस अ़ज़ाब से निजात उस वक़्त तक नहीं हो सकती जब तक खाते-पीते और अमीर कहलाने वाले लोग इस बात की पहल न करें कि हम अपने ख़ानदान में

शादियाँ और निकाह सादगी के साथ करेंगे, और इन ग़लत रस्मों को ख़त्म करेंगे। उस वक़्त तक कोई तब्दीली नहीं आयेगी।

इसलिये कि एक ग़रीब आदमी तो यह सोचता है कि मुझे अपनी सफ़ेद-पोशी बरक़रार रखते हुए और अपनी नाक ऊँची रखने के लिये यह काम करना ही है। इसके बग़ैर मेरा गुज़ारा नहीं होगा। अगर लड़की को दहेज नहीं देंगे तो ससुराल वाले ताने दिया करेंगे कि क्या लेकर आई थी? आज दहेज को शादी का एक लाज़िमी हिस्सा समझ लिया गया है।

घर-गृहस्ती का सामान मुहैया करना जो शौहर के ज़िम्मे वाजिब था, वह आज बीवी के बाप के ज़िम्मे वाजिब है। गोया कि वह बाप अपनी बेटी अपने जिगर का टुकड़ा भी शौहर को दे दे, और उसके साथ लाखों रुपया भी दे। घर का फ़र्निचर मुहैया करके और इस तरह वह दूसरे का घर आबाद करे।

अगर कोई बाप अपनी बेटी को कोई चीज़ देना चाहता है तो वह सादगी के साथ दे दे। बहरहाल जो मालदार और खाते-पीते घराने कहलाते हैं उन पर यह ज़िम्मेदारी ज़्यादा आयद होती है कि वह जब तक सादगी को नहीं अपनाएँगे और उसको एक तहरीक (आंदोलन) की शक्ल में नहीं चलाएँगे उस वक़्त तक इस अज़ाब से निजात मिलनी मुश्किल है। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से यह बात हमारे दिलों में डाल दे। आमीन

दहेज की मौजूदा रस्म हिन्दुओं का रिवाज है

हिन्दुओं का रिवाज मुसलमानों में आ गया है। और याद रखिये! इस्लामी शरीअ़त और अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए क़ानून में मर्द की यह ज़िम्मेदारी है कि वह दहेज का मुख़्तसर सामान जो ज़रूरी हो वो सामान जमा करे। यह ज़िम्मेदारी अल्लाह तआ़ला ने मर्दों के ज़िम्मे रखी है। मर्दों को औरतों पर बड़ाई और बरतरी की एक अहम वजह औरतों पर अपने माल को ख़र्च करना है। इस्लामी शरीअ़त में निकाह का कोई

ख़र्च औरत के ज़िम्मे नहीं रखा गया, बल्कि उल्टा निकाह में औरत को मर्द की तरफ़ से मेहर मिलेगा। औरत पर ख़र्च किया जाए न यह कि उससे माँगा जाए।

अल्लाह तआला सूरः निसा में फ़रमाते हैं:

اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ. (سوره نساء)

यानी मर्द हाकिम हैं औरतों पर इस वास्ते कि फ़ज़ीलत दी अल्लाह ने बाज़ों को (यानी मर्दों को) बाज़ों पर (यानी औरतों पर क़ुदरती फ़ज़ीलत दी है) और (दूसरे) इस वास्ते कि मर्दों ने (औरतों पर) अपने माल (मेहर में और नान-नफ़्के में) ख़र्च किये हैं। (और ख़र्च करने वालों का हाथ ऊँचा और बेहतर होता है उससे कि जिस पर ख़र्च किया जाए)। (खुलासा तफ़सीर मआरिफ़ुल क़ुरआन पेज394 जिल्द 3 सूरः निसा 4/35)

इस आयत की तफ़सीर में इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं: यानी मर्द औरत से अफ़ज़ल है, क्योंकि वह उसका मेहर देता है और उसका नफ़्क़ा (ख़र्च) अदा करता है। (तफ़सीर कबीर पेज 88 जिल्द 10)

इसी तरह आम मुफ़स्सिरीन ने माल ख़र्च करने से मुराद उमूमन यही दो बातें बयान की हैं कि इससे मुराद मेहर और नफ़्क़ा है।

तहरीर के अन्दाज़ और उसके आम होने के लिहाज़ से इसमें तमाम क़िस्म के माली इख़राजात चाहे वो निकाह से मुताल्लिक़ हों या घरेलू ख़रीद व फ़रोख़्त से, जो उमूमन दहेज के दायरे में आते हैं, वे सब के सब इस "माल के ख़र्च करने" में शामिल व दाख़िल हो सकते हैं।

क्योंकि नफ़्क़े के साथ औरत के लिये रिहाईश की जगह, रहने का मकान उपलब्ध कराना भी मर्द पर वाजिब है।

मकान के साथ मकान से संबन्धित चीज़ों की फ़राहमी भी शौहर के ज़िम्मे वाजिब है। उन चीज़ों की फ़राहमी (उपलब्ध कराने) पर दुल्हन या उसके सरपरस्तों को मजबूर नहीं किया जा सकता है। लिहाज़ा मर्द की

ज़िम्मेदारी है कि घर और घर का सामान तैयार करे।

कुरआन और हदीस में कहीं भी इसका इशारा तक नहीं मिलता कि इस क़िस्म की चीज़ों की फ़राहमी लड़की या उसके बाप की ज़िम्मेदारी है, कि जब तुम अपनी लड़की की शादी करो तो रुख़सत करते वक़्त उसको कुछ सामान बतौर दहेज ज़रूर दो, क्योंकि यह एक ख़िलाफ़े अक़्ल और ख़िलाफ़े फ़ितरत बात है। चूँकि हिन्दुओं के यहाँ लड़की को बाप की मीरास में से कुछ नहीं मिलता, इसलिये बाप निकाह के वक़्त जो कुछ हो सकता है वो दे देता है। गोया निकाह से उनके यहाँ बच्ची बाप से बिल्कुल जुदा हो गई, और बाप की मीरास में उसका कोई हक़ नहीं लिहाज़ा यह दहेज हिन्दुओं की रस्म है। हम सब को इससे बचना और बचाना चाहिए।

इसलिये आप अपने भाई या बेटे की शादी में लड़की वालों से दहेज न माँगे, अपने भाई और बेटे को समझायें कि तुम खुद इन्तिज़ाम करो, यह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।

एक ग़लत-फ़हमी का इज़ाला

मगर इस सिलसिले में बाज़ लोगों को यह ग़लत-फ़हमी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी लाडली बेटी और ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को कुछ चीज़ें रुख़सती के वक़्त दी थीं। अगर दहेज ज़रूरी नहीं था फिर ऐसा क्यों हुआ?

इसका जवाब तो मानने वालियों और नसीहत सुनने वालियों के लिये है, लेकिन जो औरतें इसका फ़ैसला ही कर चुकी हैं कि समाज को बरबाद करेंगी, नई-नवेली दुल्हन पर जुल्म करेंगी, ग़रीबों की बच्चियों की शादी होने ही नहीं देंगी, भीख माँग-माँगकर लड़की के बाप से दहेज वसूल करेंगी, वरना लड़की के बाप को बेटी के आईन्दा तलाक़ की धमकी, रोज़ाना के झगड़े-फ़साद की वारनिंग देंगी। ऐसी औरतों को समझाना अपना वक़्त ही ज़ाया करना है और भैंस के आगे बीन बजाना

है। लिहाज़ा हमारी मुख़ातब तो वे औरतें हैं जो इसको समझना चाहती हैं और फिर इसपर अ़मल करना और पूरे समाज में इसको वजूद में लाना चाहती हैं।

उनके लिए यह जवाब है कि आप सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी बेटी को जो चीज़ें इनायत फ़रमाईं थीं वो अपनी तरफ़ से नहीं थीं बल्कि दर असल हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से "मेहर-ए-मुअ़ज्जल" (वो मेहर जो फ़ौरी तौर पर अदा किया जाए) लेकर उससे वो चीज़ें ख़रीद कराई थीं। चुनाचें अ़ल्लामा ज़रक़ानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने 'शरहे मवाहिब' में लिखा है कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लहु अ़न्हु के पास एक 'ज़िरह' थी जिसको उन्होंने मेहर मे पेश किया था। हुज़ूरे अकरम सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसको बेचने का हुक्म दिया और उससे 480 दिर्हम हासिल हुए। (देखिये अ़रबी किताब 'शरहे मवाहिब' या 'अह्सनुल फ़तावा जिल्द 5 पेज 31)

फिर हुज़ूरे अकरम सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया कि इस रक़म से कुछ ख़ुशबू, कपड़े और फुलाँ-फुलाँ चीज़ें ख़रीद लाओ। चुनाँचे इस फ़ेहरिस्त में बिस्तर और तकिया भी था। (इस्लाम में जहेज़ की हक़ीक़त)

यह है हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दहेज की हक़ीक़त।

ज़ाहिर है कि अव्वल तो यह सिरे से दहेज नहीं है, लेकिन अगर इसको दहेज तस्लीम भी कर लिया जाये तो वह लड़की के बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि दामाद से हासिल किये हुए मेहर के पैसों से है। लिहाज़ा इसको दहेज और वह भी फ़रमाईशी दहेज से क्या निस्बत है?

दूसरा जवाब यह है कि अगर यह बतौर दहेज के सामान के होता तो यह किसी तरह मुम्किन ही न था कि हुज़ूरे अकरम सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तो देते और किसी दूसरी बेटी को न देते, हालाँकि ख़ुद हुज़ूर सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है:

سَوُّوا بَيْنَ اولادكُم.

यानी अपनी औलाद के साथ बराबरी करके इन्साफ़ का बर्ताव करो।

अगर यह फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का दहेज होता तो दूसरी बेटियों को भी ऐसा ही दिया जाता, लेकिन यह दहेज बाप की तरफ़ से नहीं था बल्कि होने वाले दूल्हे की रक़म से था।

तीसरी बात यह है कि अगर दहेज शरीअ़त की नज़र में अहम होता तो फिर आक़ा-ए-नामदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी तमाम साहिबज़ादियों को दहेज देते। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की चार बेटियाँ थीं मगर तारीख़ व इतिहास और रिवायात से यह बात साबित नहीं है कि आपने सिवाय हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के किसी दूसरी साहिबज़ादी (बेटी) को इसी क़िस्म की चीज़ें दी हों। लिहाज़ा लड़की के लिये दहेज शरअ़न ग़ैर-ज़रूरी है।

चौथी बात यह है कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पाले हुए थे और आप ही के साथ रहते थे। इसलिये आपने कोई चीज़ दी तो बतौर दहेज नहीं दी बल्कि हज़रत अ़ली रज़ि० के एक सरपरस्त होने की हैसियत से दी थी और वह भी मेहर की रक़म से। ज़ाहिर है कि एक सरपरस्त होने की हैसियत से बेटी दामाद के लिये कुछ न कुछ इन्तिज़ाम तो करना ही पड़ता है।

पाँचवीं बात यह है कि इसमें हमारे लिये बड़ी इब्रत है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसमें अपने दामाद को कुछ भी नहीं दिया, न जोड़ा, न घोड़ा, न सोने का सिक्का न चाँदी की कोई चीज़, और दामाद ने भी अपने ससुर से किसी चीज़ का मुतालबा नहीं किया, न घोड़े का, न ऊँट का, न सोने का और न चाँदी का। ये सारी चीज़ें मक़सदे निकाह से मेल नहीं खातीं।

ज़ाहिर है कि यह सुन्नते रसूल का सबसे ज़्यादा रोशन पहलू है, जो मौजूदा ज़माने के लिये एक इब्रत का कोड़ा है। तो आज के मुसलमान अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस प्यारी सुन्नत पर

अ़मल क्यों नहीं करते? जिसमें उनकी ज़िन्दगी की ज़मानत है। ज़ाहिर है कि एक मुसलमान की सआ़दत (नेकबख़्ती) के लिये इससे बड़ा नमूना और क्या हो सकता है?

जिस दहेज को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ग़ैर-ज़रूरी क़रार दिया है उस पर इसरार क्यों है? यही वजह है कि शरीअ़त की नज़र में इस क़िस्म के मुतालबे चाहे ज़बान से हों चाहे अ़मल से हों या इशारे से हों, नाजायज़ और हराम हैं।

मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन नदवी अपनी किताब "जहेज़ एक ग़ैर इस्लामी तसव्वुर" में लिखते हैं कि जो लोग अपनी अ़य्याशियों के लिए नाजायज़ तरीक़ों से लड़की के माँ-बाप को लूटने की कोशिश करते हैं वे दर असल डाकू हैं जो एक जोंक की तरह ससुराली रिश्तेदारों का ख़ून चूसते रहते हैं।

और अगर न दिया तो अपनी बहू को सताना कि तुम्हारी माँ ने कुछ नहीं दिया, क्या आख़िरत में इस पर कोई पकड़ नहीं होगी? क्या सास जो माँ के दर्जे में होती है उसके लिए बेटी से भीख माँगना कि मेरे लिए यह दो, मेरी फुलाँ बेटी के लिए यह दो, देवर के लिए यह दो, मेरी बेटी के ससुराल वालों के लिए यह दो, क्या यह माँ होने के नाते मुनासिब है? इस तरह से माँगना तो लफ़्ज़ 'माँ' की पवित्रता का ख़ाक में मिलाना है। और ऐसे लोग दर असल वे हैं जिनके दिलों से ख़ौफ़े ख़ुदा पूरी तरह रुख़्सत हो गया है।

और इस लूट-खसोट में वे लोग भी कुछ पीछे नहीं हैं जो मस्जिदों में तो अगली सफ़ों में दिखाई देते हैं, मगर दहेज की फ़रमाईश को गुनाह नहीं समझते। दहेज की फ़रमाईश को भीख माँगना ही नहीं समझते हालाँकि दहेज की फ़रमाईश भीख माँगने की सबसे ज़्यादा बुरी और नाजायज़ क़िस्म है। यह ज़बरदस्ती का टैक्स है। इस्लामी शरीअ़त में भीख माँगना सिर्फ़ उसी वक़्त जायज़ हो सकता है जबकि कोई शख़्स 'नाने शबीना' यानी एक वक़्त के खाने तक का मोहताज हो।

مـنْ سَـأَلَ مَسْـأَلَة عَـنْ ظهـرِغَنِيٍ استكثربها من رضف جهنّمُ قالُوا يا رسول الله وَما ظهر الغنى؟ قال عَشاء ليلة.

तर्जुमाः जिस शख़्स ने अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ मौजूद होने के बावजूद कोई सवाल क्या तो गोया कि उसने जहन्नम के गरम पत्थरों को जमा करने में ज़्यादती की। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि "ज़रूरत के मुताबिक़" से मुराद क्या है? आपने फ़माया कि रात का खाना। (सु-नने दारे कुतनी 2/121)

इस जैसी हदीसें और भी हैं जिनका ख़ुलासा यह है कि इस्लामी शरीअत में माँगने की मज़म्मत (निंदा) और बुराई आई है, तो खाते-पीते घरानों के लिए एक कमज़ोर मख़्लूक़ ग़रीब की लड़की, या चाहे मालदार की लड़की हो लेकिन इस ज़लील हरकत के लिए एक कमज़ोर मख़्लूक़ पर हाथ उठाना बुज़दिली की इन्तिहा है। अल्लाह तआला के अहकाम की ख़िलाफ़-वर्ज़ी है, फ़ितरत के उसूल के ख़िलाफ़ है, ज़बरदस्ती का चन्दा है, कि अगर तुमने नहीं दिया तो हम तुम्हारी बेटी को तलाक़ दिलवादेंगे या समाज में तुमको बदनाम करवा देंगे, आईन्दा तुम्हारी बेटियों से कोई शादी नहीं करेगा।

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ कमज़ोर ईमान वालो
तुम्हारी दास्ताँ तक न रहेगी दास्तानों में

सास का बहू की माँ से सोने का हार माँगना

हमारी बिरादरी में एक हिन्दुवानी रिवाज यह भी है कि शादी के दिन लड़के की माँ ज़बाने हाल से यह कहती है:

"बेटे की माँ रानी और बेटी की माँ बाँदी" "जिसकी बेटी उसकी गर्दन ऐंठी" यानी नीची।

मैंने "लड़के की माँ ने" तुम पर एहसान किया कि तुम्हारी लड़की ली है, लिहाज़ा इस एहसान का बदला यह है कि तुम मुझे एक सोने का हार पहनाओ, और जितना भीख माँगकर ज़कात का पैसा जमा करके

क़र्ज़ लेकर महंगा हार दोगी तो उतना ही तुम्हारी बेटी को अच्छी तरह रखूँगी। तुम्हारी शोहरत का ढिंढोरा शहर में पीटूँगी, इस तरह तुम्हारी बाक़ी बेटियों के रिश्ते जल्दी आ जायेंगे।

अब आप ठंडे दिल से ग़ौर कीजिए! क्या आप औ़रत होकर भी औ़रत के लिए ज़ालिम नहीं हैं? क्या आपके इस अ़मल से ज़माना जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) की याद ताज़ा नहीं हो रही कि लड़की के माँ-बाप अपने आपको गुनाहगार या मुजरिम समझ रहे हैं? क्या लड़की का पैदा होना घर में बला व मुसीबत है, लड़की मन्हूस व क़ाबिले नफ़रत हस्ती है? क्या आपका यह बोल "बेटे की माँ रानी, बेटी की माँ नौकरानी" हिन्दुओं का नारा नहीं है?

दूसरी बात यह कि आपके बेटे की सास चाहे कितनी ही मालदार हो, वह कभी भी ख़ुशी से आपको कोई चीज़ नहीं देगी, कहाँ यह कि क़ीमती सोने का हार वह आपको तोहफ़े में दे? बिल्कुल नहीं! कभी भी नहीं! और अगर आप समझती हैं कि मैं माँगती नहीं वह ख़ुशी से दे रही है तो उसकी ख़ुशी मालूम करने के लिए शरीअ़त ने थर्मा मीटर यह दिया है कि आप उससे कह दें कि अगर तुम मुझे हार नहीं दोगी तो मैं उसके ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं करूँगी। तुम्हारी बेटी को सताऊँगी भी नहीं, तुम्हारी बदनामी नहीं करूँगी, तुम्हें या तुम्हारी बेटी को ताना नहीं दूँगी।

और अगर तुम्हें देना ही है तो बेटी को दे दो, मुझे ज़रूरत नहीं। आपके इस कहने के बाद बच्ची की माँ पहले तो दो रकअ़त शुकराने के नफ़िल पढ़ेगी, फिर आपको दिल से दुआ़ देगी कि कितनी अच्छी नेक औ़रत है कि मुझ पर ज़ालिमाना टैक्स नहीं लगाया और अगर वह समाज, बिरादरी और क़ौम के ख़ौफ़ से कहे कि मुझे तो देना ही है तो आप कहिये:

अगर तुमको देना ही है, तुम्हारे शौहर के पास इतने फ़ालतू पैसे हैं तो शादी के चन्द महीनों के बाद चुपके से दे देना, किसी को ख़बर न हो। यह हम दोनों की आपस की बात होगी। फिर आप देखियेगा आपको

कैसे यह हार मिलता है।

तीसरी बात यह सोचे कि सोने का या क़ीमती ज़वाहिरात से भरा हुआ हार तो आपको यानी लड़के की माँ को देना चाहिए बहू की माँ को खुशी के तौर पर या शुक्रिया अदा करने के तौर पर। अक़्ल से देखें तो लड़की की माँ इसकी हक़दार थी कि वह ले और आप दें।

आजकी गंगा उलटी बहती है। पहले चिराग़ तले अन्धेरा होता था, अब बल्ब के ऊपर अन्धेरा है।

जिस माँ ने इस दुल्हन को बीस साल तक पाला, तर्बियत की, इस पर अपना माल, अपना वक़्त, अपनी मुहब्बत, अपनी सलाहियत ख़र्च करके अपनी बेटी को इस क़ाबिल बनाया कि वह दूसरे के घर की ज़ीनत बन सके, आज वह अपने जिगर के टुकड़े, नूरे नज़र, जिसको नौ माह पेट में उठा-उठाकर, फिर दो साल तक अपना ख़ूने जिगर दूध के क़तरें की शक्ल में पिला-पिलाकर जिसको पाला, और बाप है तो अपने कन्धों पर बैठा-बैठाकर, अपने से ख़ूब हिला-हिलाकर, जिसको पाला, परवान चढ़ाया, हर क़िस्म का तरीक़ा व सलीक़ा सिखाया, अब वे आपके बेटे के लिए इस अमानत को अल्लाह के भरोसे पर हवाले कर देते हैं, ज़िन्दगी भर के लिए यह लड़की सारा कुनबा व ख़ानदान, वतन, माँ-बाप, भाई-बहन सबको छोड़कर आपके बेटे के पास हमेशा के लिए उसकी बीवी बनकर आ जाती है, आपके घर को बसाने के लिए इतनी कुर्बानी देती है।

लिहाज़ा अक़्ल के एतिबार से, दुनिया की सोच व समझ के लिहाज़ से वह पूरी हक़दार है कि उसको क़ीमती हीरों से भरा हुआ हार दें, अंगूठी पहनायें, जोड़े दें। उसको और उसके ख़ानदान को बेटे के वलीमे में बुलाएँ। न यह कि आप उसका हार क़बूल करें, उस पर बोझ डालें और कहें कि मेरे बेटे की पाँच सौ मर्द और पाँच सौ औरतों के साथ दावत करो।

कहाँ तो इस्लामी शरीअत की रू से यह भी जायज़ नहीं कि लड़की

के माँ-बाप दूल्हा से कुछ रक़म या ज़ेवरात लें, इसके बदले में कि उन्होंने बेटी उसके निकाह में दी है, और कहाँ यह कि लड़के के माँ-बाप ख़ास कर माँ (सास) के लिए कैसे जायज़ होगा कि मुतालबा कर-करके लड़की की माँ से ज़ेवरात माँगे।

फ़तावा आलमगीरी में यह मसला मज़कूर है कि:

"अगर लड़की वालों ने रुख़्सती के वक़्त शौहर से कोई रक़म ली है तो शौहर को इख़्तियार होगा कि उसे वापस ले ले, क्योंकि यह रिश्वत है।" (आलमगीरी) और फ़तावा शामी में ऐसी रक़म को हराम कहा गया है, चाहे देने वाले ने खुशदिली ही से क्यों न दी हो। (जिल्द 5 पेज 13)

जब लड़के से कुछ लेना, जैसा कि यह रिवाज आज भी पठानों में और बाज़ अरब मुल्कों में पाया जाता है, रिश्वत और हराम है, तो फिर लड़की या उसके माँ-बाप से भी कुछ लेना यह सिर्फ़ रिश्वत नहीं बल्कि ज़ुल्म और जबरिया टैक्स है, और न देने पर तलाक़ या उम्र भर तीर व तलवार से ज़्यादा तेज़ तानों की धमकी देकर इस तरह से जो दहेज माँगा जाए या लड़के के लिये जो जोड़ा और घड़ी वग़ैरह या इसी तरह निकाह के मौक़े पर यह सब मुतालबा करके माँगना तो और भी ज़्यादा नाजायज़ और हराम है। और किसी का माल नाहक़ खाने के जैसा है।

चौथी बात जो सबसे ज़्यादा अहम है उन औरतों के लिये जो अपने आपको दीनदार समझती हैं कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की सास (जिनका नामे नामी फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहु अन्हा था, उन) को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी बेटी के निकाह में कोई चीज़ नहीं दी, न सोने की अंगूठी, न हार न कपड़ों का जोड़ा, न चाँदी का सिक्का। ग़रज़ यह कि इस्लाम में लड़के की माँ को कोई चीज़ देने की अहमियत होती तो इसकी सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की सास होतीं। जब उनको नहीं मिला, न उन्होंने कोई मुतालबा किया, न बहू को ताने दिये, आज हमारे ज़माने की सासें ख़ासकर जो अपने आपको दीनदार समझती हैं, उनके लिये कैसे जायज़ होगा कि वे

ज़बरदस्ती माँगें, या न देने पर झगड़ें, ताने दें।

और बग़ैर माँगे अगर कोई दे तो उनको कहिये कि शादी के बाद चुपके से देना, और बेहतर यही है कि मुझे न ही दो अपनी बेटी ही को दे दो। फिर देखें कौनसी इस ज़माने की राबिआ बसरिया है जो देती है?

अल्लाह करे सासों को ये बातें समझ में आ जायें और वे समाज में इस रिवाज के ख़िलाफ़ जिहाद कर दें। यह लड़कियों के माँ-बाप के लिये मुसीबत है, बला है, इसको ख़त्म करें। जिसके यहाँ दो-चार लड़कियाँ हैं वह तो गोया ज़िन्दा दरगोर हो गया है। वह न तो लड़के वालों के मुतालबे पूरे कर सकता है और न जवान लड़कियों को अपने घर में रखकर चैन की नींद सो सकता है। जवान लड़कियाँ उसके गले का फन्दा बन चुकी हैं।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
नादान सास व नन्द पर कलामे नर्म व नाज़ुक है बे-असर

बेटी के ससुराल वालों को खाना खिलाना

किसी भी हदीस से यह साबित नहीं होता कि शादी के मौक़े पर हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दामाद और बेटी के ससुराल वालों की दावत की हो या वलीमा करना लड़की के बाप के ज़िम्मे हो, बल्कि खुद लड़के के ज़िम्मे है कि वह वलीमा शरीअत में बताये गये तरीक़े पर करे।

ग़ौर कीजिए! आप क्यों मजबूर कर रहें हैं लड़की के बाप को कि वह दामाद को पाँच सौ या हज़ार आदमियों के साथ खाना खिलाए। आप उसको मना करके एक मुश्किल चीज़ एक हिन्दुवाना रिवाज को और एक समाजी अख़्लाकी जुर्म, लड़की के माँ-बाप की कमर झुकाने वाला बोझ क्यों ख़त्म नहीं करते? आप अगर लड़के की माँ हैं या बहन हैं तो आप उनको क्यों नहीं रोकतीं? कि यह दावत का पैसा ग़रीबों फ़क़ीरों बेवाओं पर लगा दो और अगर अपनी बेटी पर ही लगाना है तो

चुपके से कोई जायदाद या इतनी रक़म का ज़ेवर लेकर बेटी को दे दो उसके काम आएगा।

हुज़ूर सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने चार बेटियों की शादियाँ कीं, किसी रिवायत से यह साबित नहीं कि बेटी के ससुराल वालों को या दामाद को खाना खिलाया हो। इसी तरह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की शादियाँ हुईं कहीं भी इस बात का सुबूत नहीं मिलता कि दामाद और उसके साथ उसके कुनबे व ख़ानदान वाले ससुराल वालों के यहाँ खाना खाने गए हों।

न उन्होंने भीख माँगी कि हमे खिलाओ वरना हम बेटी को हमेशा के लिए ताने देंगे कि "दामाद को पाँच सौ आदमियों के साथ एक वक़्त भी खाना नहीं खिलाया" और न बेटी के माँ-बाप ने इसको ज़रूरी समझा।

जब हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दावत नहीं की बेटी के ससुराल वालों की, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने नहीं की तो फिर क्यों मजबूर कर रहे हैं अपने बेटे की ससुराल वालों को कि दावत करो? और सिर्फ़ दामाद की नहीं बल्कि आप लिस्ट बनाकर भेजती हैं कि हमारे पाँच सौ मर्द पाँच सौ औ़रतें खाना खाने आयेंगे?

क्या यह भीख माँगना नहीं है? क्या आप इसे शरीफ़ाना अन्दाज़ में ज़हरीला, गर्दन तोड़, कमर तोड़, भीख माँगना नहीं कहेंगे?

क्या आप लड़के के बाप की उम्र भर की जमा की हुई पूँजी पर डाका नहीं डाल रही हैं? क्या आप एक वक़्त का ख़ाना खाकर उसकी बनी बनाई इमारत को नहीं तोड़ रही हैं? अपनी एक दिन की ख़ुशी के लिए उसके घर में सालों साल की तंगी का दरवाज़ा नहीं खोल रही हैं?

दूसरा सवाल हम उन पाँच सौ मर्दों और औ़रतों से करेंगे कि आप क्यों खाने की इस रिवाजी रस्म को नहीं रोकते? क्या आप इस बेटी के माँ-बाप की हालत से वाक़िफ़ नहीं हैं? क्या वे इस क़ाबिल हैं कि दावत कर सकें?

मान लो अगर वह इस क़ाबिल हैं भी तो वह ग़रीब दूसरी लड़कियों के बाप के लिए मुसीबत का दरवाज़ा नहीं खोल रहा? अगर अमीर लोग ही दावत की इस मुरव्वजा रस्म के ख़िलाफ़ जिहाद करें तो ग़रीबों के लिए आसानी हो जाये।

और जिस दावत का इस्लाम में, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में सुबूत ही नहीं, अगर होता तो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी लाडली और आख़िरी बेटी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के ससुराल वालों की दावत ज़रूर करते, लेकिन उन्होंने नहीं की तो आप क्यों ज़बरदसती करवा रही हैं? आप क्यों रोक नहीं रहीं? इससे अच्छा यह है कि इस दावत पर जितना ख़र्च हो वो अल्लाह की राह में दीन को सारी दुनिया में फैलाने पर, लोगों को जहन्नम की आग से बचाने पर, काफ़िरों को मुसलमान बनाने पर लगाया जाए। बेवाओं मिस्कीनों फ़क़ीरों यतीमों पर लगा दिया जाए और अगर इसकी भी हिम्मत न हो और माल भी ज़्यादा है तो बेटी के नाम कोई मकान, कोई फ़्लेट, कोई छोड़ा प्लाट, कोई ज़ेवर ही ख़रीद कर दे दें जो उसको और उसकी औलाद को बुरे वक़्त पर काम आए।

आसान और सुन्नत के मुवाफ़िक़ वलीमा और रुख़सती

और वलीमा करने के लिए ज़रूरी नहीं कि गोश्त रोटी ही खिलाई जाए, बल्कि सिर्फ़ खजूर खिला देना, शर्बत वग़ैरह पिला देना भी काफ़ी है। क्योंकि इसकी हक़ीक़त एक शुकराने की है।

और एक हदीस की तालीम तो इस हक़ीक़त पर भरपूर रोशनी डालती है कि शादी-विवाह बहुत ही सादगी के साथ और अपनी हैसियत के मुताबिक़ करनी चाहिए। क्योंकि वह ख़ाना-आबादी का ज़रिया होती है न की ख़ाना-बरबादी का।

चुनाँचे इस सिलसिले में खुद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम की लख़्ते-जिगर और ख़ातूने-जन्नत की शादी व रुख़्सती जिस सादगी के साथ और हर क़िस्म के तकल्लुफ़ात से ख़ाली होकर अमल में आई थी, वह सारी उम्मत के लिए एक सबक़ और पूरी इनसानी दुनिया के लिए एक यादगार नमूना व मिसाल है।

चुनाँचे हज़रत आयशा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको हुक्म दिया कि हम फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को तैयार करके हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुँचा दें। लिहाज़ा हम घर गए और उसमें बतहा की नरम मिट्टी बिछा दी "गोया कि यही फ़र्श था"।

फिर हमने दो तकिये रख दिये जिनमें खजूर की छाल भरी हुई थी। उनको हमने अपने हाथों से ठीक किया। फिर हमने वलीमे में खजूर और मुनक़्क़ा खिलाया और ठन्डा पानी पिलाया। फिर हमने एक लकड़ी लेकर उसे कमरे में एक तरफ़ लगा दिया ताकि उस पर कपड़े टाँगे जा सकें और मश्क वग़ैरह लटकाया जा सके। और फ़रमाया कि हमने फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी से अच्छी कोई शादी नहीं देखी।

(इब्ने माजा 1/616)

अल्लाहु अक्बर! सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाडली बेटी और मिट्टी का फ़र्श! और तकिये काहे के? खजूर की छाल भरे और वलीमे में क्या? महज़ खजूर, मुनक़्क़ा और ठन्डा पानी! हद हो गई सादगी की। और फिर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह कहना क्या मायने रखता है कि हमने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी से बेहतर शादी किसी की नहीं देखी?

गोया उन्होंनें दर असल यह कहना चाहा है कि जिस किसी की शादी में इतनी चीज़ें भी मयस्सर आ जायें वह भी अपने आपको खुश-क़िस्मत समझे। लेकिन आज हमने शादी-ब्याह को बद-आमालियों के सबब ख़्वाह-मख़्वाह एक मुसीबत की चीज़ बना लिया है, हालाँकि शादी

दीगर ज़रूरियाते ज़िन्दगी की तरह एक बिल्कुल आसान चीज़ है।

ग़र्ज़ आपने देखा कि ख़ातूने जन्नत रज़ियल्लाहु अ़न्हा के मुबारक निकाह में न डोली है और न बारात! न जुलूस है और न इज़्हारे-शान व सरदारी, न लोगों का जमघटा और न मेला व मजमा, न मख़्मल और न हरीर व दीबाज, न मसेहरी, न नर्म व नाज़ुक गद्दे और न रेशमी तकिये और चादरें, न बिरयानी और न पुलाव! न मुतंजन और न फ़ीरनी व शीरमाल।

बल्कि फ़र्श है तो मिट्टी का, और तकिये खजूर की छाल भरे, और वलीमे में सिर्फ़ खजूर और पानी। यह है ताजदारे मदीना की सबसे ज़्यादा चहेती और लाडली बेटी का ''पुर तकल्लुफ़'' निकाह और वलीमा। क्या इसमें हमारे लिये कोई सबक़ नहीं है?

क्या आजके उम्मतियों को कोई निस्बत है अपने रसूल के इस तरीक़े और अ़मल से? क्या आज किसी को इस क़द्र सादगी और बे-तकल्लुफ़ी के साथ अपनी लड़कियों का निकाह करने में शर्म आती है या आ़र महसूस होती है? क्या रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अगर चाहते तो अपनी लख़्ते-जिगर की शादी निहायत दर्जा ठाठ-बाट के साथ नहीं कर सकते थे? फिर आपने ऐसा बखेड़ा क्यों नहीं किया? महज़ इसलिये कि अपनी उम्मत के लिये आसानियाँ पैदा हों और आपकी उम्मत बिला वजह मशक़्क़त में न पड़ जाये। मगर आज हम अपने रसूल की इस सुन्नत पर अ़मल करने में आ़र और शर्म क्यों महसूस करते हैं?

क्या किसी की लड़की रुतबे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बेटी से बढ़कर हो सकती है? आज हमने जिस झूटे तर्ज़ को, इज़्ज़त और शान व शौकत और वक़ार का मेयार समझ लिया है वो महज़ एक दिखावा और नुमाईश है, जो ख़ुदा और रसूल की नज़र में ज़रा भी पसन्दीदा नहीं है। जो लोग यूँ माल व दौलत नाम व नमूद के लिये ख़र्च करते हैं वे क़ुरआन की नज़र में शैतानों के भाई हैं।

(सूरः नबी इस्राईल)

अल्लाह तआला जब किसी को माल व दौलत देता है तो वह आज़माईश की ख़ातिर देता है। जिसका हिसाब किताब हर इनसान से वह आख़िरत में लेगा कि उसने अल्लाह तआला के दिये हुए माल को दुनिया में किस तरह ख़र्च किया? लिहाज़ा इनसान को माल व दौलत पाकर मग़रूर नहीं हो जाना चाहिये बल्कि अल्लाह तआला के बताये हुए तरीक़े के मुताबिक़ उस माल को ख़र्च करना चाहिये। वरना दीन व दुनिया दोनों की तबाही है।

ग़र्ज़ शादी-ब्याह के सिलसिले में ख़्वाह-मख़्वाह फ़ुज़ूलख़र्ची से काम लेना न सिर्फ़ शरीअ़त ही की नज़र में क़ाबिले निंदा है बल्कि ख़ुद सामाजिक और सभ्यता की हैसियत से भी यह चीज़ बरबादी का पहला क़दम है। शादी का तरीक़ा आसान से आसान तर होना चाहिये जो हर अमीर व ग़रीब के लिये यकसाँ तौर पर क़ाबिले-अ़मल हो सके। वरना ज़िन्दगी एक अ़ज़ाब बनकर रह जायेगी। खाने पीने की तरह वैवाहिक ज़िन्दगी भी इनसानी फ़ितरत का एक ख़ास्सा है। अगर उसको हासिल करना आसान तरीक़े से नहीं होता तो फिर वह इनसानी तहज़ीब की तरक़्क़ी की राह में न सिर्फ़ रोक हो जाता है बल्कि समाज में फ़साद और ख़राबी का भी सबब बन जाता है।

लिहाज़ा इनसानी सआ़दत और इनसानी रहन-सहन की तरक़्क़ी फ़ुज़ूलख़र्ची और बेजा पाबन्दियों में नहीं बल्कि सादगी और आसानियों में है। इसी वजह से रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी साहिबज़ादी का निकाह इन्तिहाई सादगी के साथ करके पूरी दुनिया के लिये एक नमूना और मिसाल क़ायम की है, ताकि एक ग़रीब से ग़रीब आदमी भी अपनी लड़की की शादी बग़ैर मशक़्क़त के कर सके।

इस एतिबार से यह सुन्नते रसूल हर अमीर व ग़रीब के लिये एक रहमत है कि वह बग़ैर क़र्ज़दार बने, या बग़ैर अपने आपको नीलाम किये इस फ़रीज़े की अदायगी से फ़ारिग़ हो सकता है। और यह बात अ़क़्ली व शरअ़ी दोनों हैसियतों से बईद है कि कोई शख़्स अपनी लड़की

या लड़के की शादी के लिये अपने घर-बार को फ़रोख़्त कर दे या भारी सूदी क़र्ज़ा लेकर अपने आपको हमेशा के लिये गिर्वी रख दे। यह ज़िन्दगी नहीं मौत है और आजकल "मौत के सौदागरों" दूल्हा के माँ-बाप भाई-बहनों, रिश्तेदारों को कोई परवाह ही नहीं कि अपनी "एक दिन की बादशाही" के लिये दूसरों के घरों को आग लगा दी जाये, गोया कि एक दिन की खुशी (शादी) दूसरे के लिये पैग़ामे-मौत हो।

और इस एतिबार से गोया कि आज एक शख़्स दूसरे का घर जला कर राख के ढेर पर अपनी इमारत की तामीर करता है। मगर क्या उसकी यह इमारत महफ़ूज़ व क़ायम रह सकेगी? बल्कि जल्द या देर में उसको भी इसी मन्ज़िल से गुज़रना पड़ेगा जिस मन्ज़िल में वह दूसरों को रोने-पीटने में मुब्तला छोड़कर आगे बढ़ गया था। यानी "जैसी करनी वैसी भरनी"। मगर वह अपने इस बुरे अन्जाम से आज ग़ाफ़िल क्यों है और इस हक़ीक़त को क्यों नहीं समझता?

ग़र्ज़ हमारी नेक-बख़्ती और ख़ुश-क़िस्मती इसी में है कि हम इस्लाम की अ़ता की हुई इस सादगी को एक रहमत तसव्वुर करते हुए इससे फ़ायदा उठायें और सारी दुनिया को रोशनी की नई राह दिखायें। जब तक यह इन्क़िलाबी क़दम उठाया न जाये उस वक़्त तक बिगड़े हुए मुआ़शरे की इस्लाह बहुत मुश्किल है। उम्मते मुस्लिमा तो हमेशा दुनिया में इन्क़िलाब बरपा करने और बिगड़ी हुई रस्मों व खुराफ़ात के ख़िलाफ़ जिहाद का झन्डा बुलन्द करने के लिये भेजी गई है।

जिसमें न हो इन्क़िलाब, मौत है वह ज़िन्दगी
रूहे उमम् की हयात कश्मकशे इन्क़िलाब

वाज़ेह रहे कि उम्मते मुस्लिमा की हैसियत इस दुनिया में तमाशा करने वाले की-सी हरगिज़ नहीं है बल्कि उसे दुनिया के सुधार का फ़रीज़ा सौंपा गया है। लिहाज़ा उसे फ़ौरी तौर पर मैदाने अ़मल में कूदना चाहिये। जब अल्लाह की कुछ नेक बन्दियाँ समाज के सुधार के लिये उठ खड़ी हों तो फिर इन्शा-अल्लाह तआ़ला आसानियाँ खुद-ब-खुद पैदा हो

जायेंगी और एक नई लीडर-शिप उभरने लगेगी। वाक़िआ यह है कि आज उम्मत और समाज के सुधार के लिये एक नये ख़ून और एक नई क़यादत (लीडर शिप) की सख़्त ज़रूरत है। और शायर के दृष्टिकोण से उसके लिये निम्नलिखित तीन खुसूसियतें काफ़ी हैं:

निगह बुलन्द, सखुन दिल-नवाज़, जाँ पुरसोज़
यही है रख़्ते-सफ़र मीरे-कारवाँ के लिये

ख़ुलासा-ए-बहस

बहस का ख़ुलासा यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमूना और आपकी तालीम आज उम्मते रसूल को आवाज़ दे रही है और पुकार-पुकार कर कह रही है कि अगर तुम अपनी सामाजिक भलाई चाहते हो तो अपनी झूटी शान व शौकत, अपने झूटे वक़ार और अपनी झूटी नुमाईश व रियाकारी को छोड़ करके नबी-ए-पाक के तरीक़े और रास्ते को इख़्तियार करो। जिसमें न सिर्फ़ तुम्हारी पाकीज़ा ज़िन्दगी का प्याम पोशीदा है बल्कि उसमें अमीर व ग़रीब सब की सआदत और भलाई का सामान भी मौजूद है।

वरना अगर तुम हमारी सुन्नत को छोड़ करके ग़ैरों की चौखटों ही की क़दम चूमते रहोगे और जाहिली रस्मों व ख़ुराफ़ात ही पर मरने में अपनी शान समझोगे तो तुम्हारी बरबादी को कोई रोक नहीं सकता, और आसमानी फ़रिश्ते भी तुम्हारी मदद नहीं कर सकते।

क्योंकि ये सारी ख़राबियाँ ख़ुद तुम्हारी अपनी पैदा की हुई हैं और इसमें अल्लाह और उसके रसूल का कोई क़सूर नहीं है। मिसाल मशहूर है कि अपने किये हुए का कोई इलाज नहीं। लिहाज़ा जब तक तुम इन ख़ुराफ़ात को नहीं छोड़ोगे ख़ुदा की रहमतें तुम पर हरगिज़ नहीं नाज़िल हो सकतीं। क्या है कोई अपने नबी की सुन्नत पर अमल करने वाला? बक़ौल शायर इस्लाह व तब्दीली के लिये जुर्रत व हिम्मत ज़रूरी है।

यह बन्दगी ख़ुदाई, वह बन्दगी गदाई
या बन्दा-ए-ख़ुदा बन, या बन्दा-ए-ज़माना

अगर औरतें मिलकर इस ग़लत रिवाज को ख़त्म करने की कोशिश करें तो बहुत आसानी से ख़त्म हो सकता है। और यह बहुत ही बड़ा जिहाद होगा और उन औरतों को (नन्द और सास को) बहुत ही सवाब मिलेगा।

शौहर के तमाम हुकूक़ का मुख़्तसर तौर पर खुलासा पढ़ लीजिये अल्लाह तआला हर मुसलमान बीवी को इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

बीवी के ज़िम्मे शौहर के हुकूक़

शौहर के हुकूक़ ये हैं:

1. शरई क़ानून और ज़ाबतों के तहत हर बात में उसकी इताअत करना, बशर्ते कि वह किसी गुनाह की बात का हुक्म न करे। यानी उसकी इताअत और अदब व ख़िदमत में कोताही न करे, दिलजोई व खुश करने वाले काम पूरे तौर से बजा लाये, अलबत्ता नाजायज़ बात और मामले में उज़्र कर दे।

2. उसकी गुन्जाईश (हैसियत) से ज़्यादा ख़र्चा न माँगना, यानी उसकी माली गुन्जाईश से ज़्यादा उससे फ़रमाईश न करना।

3. शौहर की इजाज़त के बग़ैर किसी को घर में न आने देना।

4. उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके माल में से किसी को कोई चीज़ न देना, यानी उसका माल उसकी इजाज़त के बग़ैर ख़र्च न करना।

5. उसकी इजाज़त के बग़ैर घर से न निकलना।

6. उसकी इजाज़त के बग़ैर नफ़िल रोज़ा न रखना।

7. अगर सोहबत के लिये बुलाये तो शरई बाधाओं के बग़ैर उससे इनकार न करना।

8. अपने शौहर को उसके तंग हालात गुर्बत या बदसूरती की वजह से, या अपने आप से इल्म व हुनर में कमी की वजह से हक़ीर (ज़लील और कम-दर्जा) न समझना।

9. अगर कोई बात ख़िलाफ़े शरीअ़त शौहर में देखे तो अदब से मना करना।

10. उसका नाम लेकर न पुकारना कि यह अदब के ख़िलाफ़ है।

11. किसी के सामने शौहर की बुराई न करना।

12. उसके रूबरू आमने सामने ज़बान-दराज़ी न करना।

13. शौहर के रिश्तेदारों के साथ सख़्ती न करे। जिससे शौहर को तकलीफ़ पहुँचे। ख़ास कर शौहर के माँ-बाप (सास-ससुर) को अपना मख़दूम (सम्मानित और एहतिराम के क़ाबिल) समझकर उनके साथ अदब व ताज़ीम से पेश आये।

दुल्हन की रुख़सती और दुआ

ऐ बिछुड़ने वाली अल्लाह की बन्दी और ख़ुद रो-रोकर घर भर को रुलाने वाली अल्लाह की अमानत! सुन और समझ अपनी और हम सब की माँ आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की हिकायत को।

इस वक़्त से बचने की कोई सूरत मुम्किन नहीं। अगर होती तो उम्मत की लड़कियों में इसकी हक़दार सबसे बढ़कर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बेटी हो सकती थीं और या फिर उनसे भी बढ़कर अबू बक्र के आक़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की साहिबज़ादी हो सकती थीं। और फिर जब आ़यशा और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को इसी राह पर चलना और इसी मन्ज़िल से गुज़रना पड़ा तो दुनिया की किसी और लड़की की मजाल क्या कि वह इससे बचने की कोशिश करे।

उनकी पैरवी और गुलामी तेरे लिये बाइसे फ़ख़्र और जो क़दम भी उनकी पैरवी में उठ सकें, तेरे लिये सरमाया-ए-निजात हैं।

आँसू रंज के नहीं ख़ुशी के बहा, कि आज पैरवी किसी की नसीब हो रही है। सिद्दीक़ा आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहाँ से किस मर्तबे पर पहुँचीं। औरत ज़ात की सरदार व सरताज बनकर रहीं। मुबारक हैं उम्मत की वे लड़कियाँ, मुसलमान शौहरों की वे बीवियाँ जिन पर उनका

और ख़ातूने जन्नत (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) का साया भी पड़ जाये।

खुशनसीब लड़की! निकाह कोई मुसीबत नहीं, न दुनिया वालों का निकाला हुआ कोई ज़ालिमाना दस्तूर है। यह तो एक इबादत है, ऐन इबादत। परवर्दिगार की रिज़ा हासिल करने का एक ज़रिया, मालिक से ताल्लुक़ क़ायम करने का एक तरीक़ा। आक़ा-ए-नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

النكاح سنة الانبياء

यानी निकाह नबियों की सुन्नत है। यानी यह तरीक़ा पैग़म्बरों का है और यह मालूम है कि हज़राते अम्बिया अलैहिमुस्सलाम कौन होते हैं? अल्लाह के सब से महबूब बन्दे। सो जिसने निकाह किया, उसने एक क़दम अल्लाह के महबूबों के नक़्शे क़दम पर रख ही दिया, और जिसने अल्लाह के महबूबों वाला रूप इख़्तियार कर लिया वह भी अल्लाह को महबूब होगा और अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से फिर मियाँ-बीवी में और उसके आगे ख़ानदानों में मुहब्बतों की फ़िज़ा पैदा करेगा, इसी को सहाबी अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि:

عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لم تر للمتحابين مثل النكاح. (ابن ماجه)

तर्जुमाः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि दो मुहब्बत करने वालों के लिये निकाह से बढ़कर तुमने कोई चीज़ नहीं देखी।

तशरीहः दुनिया में मुहब्बत की अदायें भी हैं और बुग़्ज़ की फ़िज़ायें भी, इनके असबाब विभिन्न होते हैं। मुहब्बत का जोड़ लगने वाली चीज़ों में निकाह का जोड़ सबसे ज़्यादा मज़बूत है और मुहब्बत को बढ़ाने और बाक़ी रखने में निकाह से बढ़कर कोई चीज़ नहीं।

किसी ख़ानदान का मर्द किसी ख़ानदान की औरत, एक अरबी

दूसरा अजमी, एक ऐशियाई दूसरा अफ़्रीक़ी, जब शरई निकाह हो जाता है तो हर एक दूसरे पर निसार होता है और उलफ़त व मुहब्बत वह रंग लाती है कि उम्र भर साथ नहीं छूटता। निकाह के अलावा भी बाज़ मर्द व औरत नफ़्सियात के लिये नाम-निहाद मुहब्बत कर लेते हैं, मगर यह मुहब्बत नहीं होती बल्कि नफ़्स का मतलब निकालने के लिये एक जोड़ होता है, जिसका नाम मुहब्बत रख दिया जाता है। जब मतलब निकल जाता है या मक़सद में नाकामी हो जाती है तो फिर यह कहाँ और वह कहाँ? कैसी मुहब्बत और कैसी उलफ़त? सब भाड़ में डाल दी जाती है।

निकाह के ज़रिये जो ताल्लुक़ पैदा होता है वो वक़्ती नहीं होता बल्कि ज़िन्दगी भर निभाने की नीयत से एक दूसरे से रिश्ता जोड़ा जाता है। निकाह का मक़सद सिर्फ़ नफ़्स की ख़्वाहिश का तक़ाज़ा पूरा करना ही नहीं होता बल्कि उसके ज़रिये मर्द की हैसियत बढ़ जाती है। वह आल व औलाद और घर-बार बसाने वाला हो जाता है। औरत भी एक घर की मालिका बन जाती है। औरत मर्द दोनों ज़िन्दगी भर के लिये एक दूसरे के हमदर्द और दुख-सुख के साथी और आराम व तकलीफ़ के शरीक हो जाते हैं। यह बात बे-निकाही झूठी मुहब्बत में कहाँ? फिर मज़ीद यह कि शौहर बीवी के ख़ानदानों में मुहब्बत व उलफ़त का ज़रिया बन जाते हैं, जिन ख़ानदानों में कभी जोड़ न था, ऐसे ख़ानदान एक दूसरे के हमदर्द बन जाते हैं।

समधी (संबन्धी) समधी की ज़ियारत के लिये जा रहा है, और औरत का भाई अपनी बहन के शौहर की तीमारदारी में लगा हुआ है। ससुर दामाद को दुकान खोलने के लिये रक़म दे रहा है, वग़ैरह वग़ैरह, ये मुहब्बतें और ख़िदमतें एक शरई निकाह ही की वजह से हुईं।

(हदिया-ए-जौजैन)

दो मुहब्बत और चाहत करने वालों में निकाह से बढ़कर जोड़ और दोस्ती पैदा करने वाली चीज़ नहीं है। यानी जो लगाव और मुहब्बत निकाह के ज़रिये दो मियाँ-बीवी में पैदा हो जाती है, दूसरी कोई दोस्ती

और रिश्तेदारी, उसकी मिसाल नहीं है। लड़की अपना घर छोड़कर आती है और देखते ही देखते दूसरे घर में छोटी सी सल्तनत की रानी बन जाती है।

देस से परदेस में आ जाती है और वही परदेस वतन बन जाता है। अपने माँ-बाप को छोड़कर आती है, यहाँ सास-ससुर माँ-बाप बन जाते हैं। तर्बियत के, तालीम के, अच्छे अख़्लाक़ और नफ़्स के सुधार के, ख़ुदा जाने कितने मर्तबे और कितने मरहले हैं जो इसी निकाह के ज़रिये बातों-बातों में हासिल और तय हो जाते हैं और दो शख़्स नहीं दो ख़ानदान आपस में मिल जाते हैं, एक हो जाते हैं और सबकी कोशिशें और उद्देश्य इन्हीं आसान सूरतों में इसी ज़रिये से तय और पूरे होते चले जाते हैं। बेहतरीन इबादतों में से एक इबादत इससे बढ़कर और क्या होगी।

दुआ

بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ وَبَارَكَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِيْ خَيْرٍ. (ابن حبان)

अल्लाह तुम्हारे लिये बरकत फ़रमाये और तुम पर बरकतें नाज़िल फ़रमाये, और तुम दोनों को ख़ैर व बरकत और आफ़ियत से यकजा रखे। (और तुम दोनों का ख़ूब निबाह करे)।

ऐ अल्लाह! आज तेरे एक कमज़ोर बन्दे और कमज़ोर बन्दी पर तेरे ही हुक्म व हिदायत के मुताबिक़, तेरे ही क़ानून के मातहत, तेरी ही रिज़ा के हासिल करने के लिये वह भार रखा जा रहा है, जो आज से पहले तेरे बेशुमार नेक बन्दों और नेक बन्दियों पर रखा जा चुका है। तेरी ही रिज़ा की ख़ातिर रिश्ता क़ायम हुआ है जो आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम से लेकर अब तक बेशुमार नेक बन्दों और नेक बन्दियों के दरमियान क़ायम हो चुका है।

ऐ अल्लाह! उन सब के तुफ़ैल इन दोनों को भी इस इम्तिहान में पूरा उतार, आज़माईश में साबित-क़दम रख, इनके नफ़्सों को हर क़िस्म

की आलाईश से गन्दगियों से पाक कर दे। इनकी दुनिया सुधार दे, इनकी आख़िरत संवार दे। ये दोनों अपनी मर्ज़ी को तेरी मर्ज़ी में गुम कर दें, इन्हें इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम और हज़रत सारा के, इब्राहीम ख़लीलुल्लाह और हज़रत हाजरा के, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के नक़्शे-क़दम पर चलना नसीब हो। इन्हें अपनी पनाह में रख। गुनाहों के हर फ़ितने से, ज़हरीली हवा की हर लपट को उनके हक़ में सुबह की ठंडी हवा का झोंका बना दे। नमरूद की आग के हर शोले में इनके लिये गुलज़ारे-ख़लील के फूल खिला दे। आमीन

ऐ अल्लाह! ये दोनों मिलकर अपने दीन की तकमील करें, अपने दीन की मुहब्बत इनके दिल में जमा दे। तेरे दीन की ख़िदमत में जवानी गुज़ार दें, बुढ़ापे की मन्ज़िलें तय करें। जब वक़्त आये कि उनके चेहरों पर झुर्रियाँ पड़ चुकी हों और ये खुद अपनी औलाद और औलाद दर औलाद की सुन्नत के मुवाफ़िक़ रुख़्सती की फ़िक्रों में लगे हों, और एक के सर की एक-एक लट और दूसरे की दाढ़ी का एक एक बाल सफ़ेद हो चुका हो, उस वक़्त भी एक दूसरे की मुहब्बत इनके दिलों में रची एक दूसरे का साथ व मुहब्बत रूह में बसी हुई हो, और इससे बढ़कर यह कि दोनों अपने ईमान में जमे हुए और तेरे दीन की ख़िदमत में सर्गरम (लगे हुए) हों। अपने दीन की ख़िदमत का वलवला और जोश इनकी रूह में बसा दे।

अपने दीन की मदद और उसको पूरी दुनिया में फैलाने और सारी दुनिया में आपके अहकामात और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नूरानी तरीक़े को रिवाज डालने का जज़्बा, वलवला इनके अन्दर जगा दे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़त्मे-नुबुव्वत की बरकत से जो हम सब पर ज़िम्मेदारी आयद होती है यानी हमारे मर्दों और औरतों पर, दीन को फैलाने और उस पर जान माल वक़्त

लगाने खपाने की, इस ज़िम्मेदारी का एहसास इनको अ़ता फ़रमा दे। इस पर कुरबानियाँ हम सब के लिये आसान फ़रमा दे।

ऐ अल्लाह! महफ़ूज़ रख इनको और इनकी नस्ल को मौजूदा ज़माने के सारे फ़ितनों से, और आने वाले ज़माने के फ़ितनों से, चाहे वो कैसे ही खुशनुमा नक़ाब अपने चेहरों पर डालकर आयें, कैसे ही नज़रों को धोखा देने के पर्दों में अपने आपको छुपाएँ।

ऐ अल्लाह! जब वह वक़्त आये कि जब तेरे ही रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दी हुई सच्ची ख़बरों के मुताबिक़ कुफ़्र व निफ़ाक़ का ग़लबा खुल्लम-खुल्ला इस्लाम पर होने लगे, जब सुबह का मोमिन शाम को काफ़िर और शाम का मोमिन सुबह को मुनाफ़िक़ नज़र आने लगे, जब तेरी किताब तेरे दीन और तेरे दिये हुए क़ानून का खुलेआ़म मज़ाक़ उड़ाया जाने लगे, आवाज़ें कसी जाने लगें, जब तेरे इस्लाम से बग़ावत आ़म हो जाये, ऐसे वक़्त में भी इनके क़दमों में लग़ज़िश (फिसलना और लड़खड़ाहट) न होने पाये। जब तक इस दुनिया में आबाद रहें इस्लाम के हथियार से अपने जिस्म को सजाये हुए हों, और जब तेरे दरबार में हाज़िर हों तो ईमान का ताज सर पर सजाये हुए हों। जब तेरे यहाँ से बुलावा आये, तो इनके दिल तेरे दीदार की आरज़ू बसाये हुए और इनके चेहरे तुझसे मुलाक़ात के शौक़ व तमन्ना की चमक से जगमगाते हुए हों। इनके दिलों को अपनी मुहब्बत और ज़ौक़े-इताअ़त से भर दे। इनके अन्जाम को संवार दे।

इनकी ज़िन्दगियाँ तेरे ही नाम की बरकत का सहारा लेकर जोड़ी जा रही हैं, इस सहारे को क़ायम रख, जब तक ये तेरी ज़मीन पर बसें। जब अपनी ज़िन्दगी की सारी मन्ज़िलें तेरे फ़ज़्ल व करम के साये में तय करके अपने वक़्त पर तेरे हुज़ूर में हाज़िर हों तो न इन्हें एक दूसरे से शर्मिन्दा कर और न ही ये तुझसे और तेरे रसूल से शर्मिन्दा हों। ये आपकी खुशनूदी की जगह जन्नत के लिये हों और जन्नत इनके लिये हो। ऐ अल्लाह! तू अपनी पसन्द की चीज़ों की जन्नत में कातिबे कुदरत

के क़लम से लिखा हुआ "व ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून" (कि तुम जब इस ज़िन्दगी के ख़ात्मे पर जाओ यानी तुमको मौत आये तो याद रहे कि तुम्हारी मौत मुसलमान होने की हालत में होनी चाहिए)। का तुग़रा (तमग़ा और परवाना) इनके और हम सबके लिये मुक़द्दर फ़रमा। अगरचे दुनिया ग़द्दार भी हो जाये मगर हम सबको मरते दम तक वफ़ादार रख। अपने खिले हुए चेहरों के साथ, हंसते हुए जलवों के साथ, चमकते हुए चेहरों के साथ, दमकते हुए चेहरों के साथ, और इनके साथ हम सब दुआ करने वालों के लिये भी। फ़क़त

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

और लाखों दुरूद व सलाम हो मख़्लूक़ में सब से बेहतरीन, नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आपकी आल और आपके तमाम सहाबा किराम पर। आमीन

जवाब साफ़ दीजिये

अगर औरत बोलने में सलीक़ा रखती हो, अपने दावे को साबित करने और दलीलें देने में साफ़ गोई का एहतिमाम करे तो घरों में बहुत से झगड़े ख़त्म हो जायें। अपने दिल की बात को पूरी मज़बूती और वज़ाहत के साथ बयान करने की कोशिश करे, तो इन्शा-अल्लाह तआला बहुत सी नाचाक़ियाँ और बहुत सी उलझनें सलवटों में ही ख़त्म हो जायें। इसके लिये हम कुछ मुफ़ीद तदबीरें पेश करते हैं। हर मुसलमान मर्द और औरत "ख़ास कर" मुसलमान मियाँ-बीवी को चाहिये कि गुफ़्तगू करने के दौरान इन बातों का ख़ास ख़्याल रखें।

1. अगर शौहर कोई बात पूछे तो उस पर ग़ौर करे और सवाल का मक़सद समझने की कोशिश करे कि शौहर के इस सवाल का क्या मक़सद है? वह क्या पूछना चाहते हैं।

2. जितनी बात पूछी जाये सिर्फ़ उसका जवाब दिया जाये, सवाल का मक़सद समझ कर सिर्फ़ उसी का जवाब दिया जाये। जवाब देने में

सवाल के मक़सद से हटकर कोई फ़ुज़ूल बात न की जाये, कि जिससे बात आगे बढ़ जाये और असल जवाब के साथ फ़ुज़ूल मिलाने का नुक़सान होता है कि शौहर को उन ऐबों (कमियों) की भी ख़बर हो जाती है जिनको आप बताना नहीं चाहती हैं।

याद रखिये! एक अक़्लमन्द का क़ौल है कि दुनिया में हर इनसान से ग़लतियाँ सादिर होती हैं लेकिन अक़्लमन्द शख़्स वह है जो अपनी ग़लतियाँ छुपाने में कामयाब हो सके, और बेवक़ूफ़ वह है जो अपने ऐब खुद ही खोल दे।

इसलिये अपने ऐबों पर पर्दा डालने के लिये यह ज़रूरी है कि बात अधूरी भी न की जाये और ज़रूरत की बात में फ़ुज़ूल बात न मिलाई जाये। जैसे शौहर ने आप से सुबह ही कह दिया था कि शाम को मेहमान आयेंगे कस्टर्ड बनाकर रखना, अब शाम को जब शौहर घर पहुँचे आप से पूछा कस्टर्ड बन गया?

इसका सही जवाब तो यह है कि आप यूँ कहें कि कस्टर्ड नहीं बन सका उसके बदले मैंने पिडंग बना ली है। फिर आपको शौहर की तरफ़ से जवाब मिलेगा "जज़ाकल्लाहु ख़ैरन्" बहुत अच्छा किया अल्लाह तुमको जज़ा-ए-ख़ैर दे। अच्छा हुआ कि कुछ तो बना लिया, मेहमान बाहर के आये हैं और फिर जमाअत में निकले हुए हैं, अल्लाह के रास्ते के मेहमान हैं, इसलिये हमें उनका अच्छा इकराम करना चाहिये था।

देखा आपने! सलीक़े की गुफ़्तगू से कैसे उम्दा और अच्छे तरीक़े पर बात रफ़ा-दफ़ा हो गई।

अब इसका ग़लत जवाब ग़ौर से पढ़िये और आईन्दा ऐसे जवाबात देने से बचिये, उम्मीद है कि आप इस तरह जवाब नहीं देती होंगी। अल्लाह न करे अगर आपके अन्दर यह मर्ज़ है कि साफ़ जवाब नहीं देतीं या फ़ुज़ूल बात मिला देती हैं, या अधूरी बात करती हैं तो आज से आदत बना लीजिये कि मैं सही और साफ़ जवाब दूँगी, गोल-मोल या ऐसा जवाब कि जो बात न समझा सके बल्कि दूसरे और तीसरे सवाल

पर मजबूर करे, ऐसे जवाब से बचूँगी। जैसे शौहर ने पूछा कस्टर्ड बन गया?

बीवीः जी नहीं।

शौहरः भई क्यों नहीं पकाया? तुम्हें पहले से बता दिया था कि पका देना, फिर क्यों नहीं पकाया?

बीवीः रात को दूध गर्म करना भूल गई थी, सुबह दूध फट गया था, इसलिये नहीं बना सकी।

शौहरः तुम हो ही ऐसी लापरवाह। रात को क्यों गर्म नहीं किया था? चलो गर्म नहीं किया था तो मुझे बता देतीं मैं दूसरा दूध मंगवा देता, या तुम किसी और से मंगवा लेतीं। इसपर इतना लम्बा-चौड़ा झगड़ा हुआ कि पूछिये नहीं।

अब शौहर को फ़िक्र है कि मैं मेहमानों का किस तरह इकराम करूँगा। अब इस झगड़े की वजह से दोनों के दिलों में और ज़्यादा दूरी बढ़ेगी, और इख़्तिलाफ़ात बढ़ेंगे। लिहाज़ा समझदार बीवी को चाहिये कि जो शौहर ने कहा है वह ज़रूर पूरा करने की कोशिश करे। अगर वह काम नहीं हो सका तो उसकी जगह उसी जैसा कोई और काम करने की कोशिश करे ताकि शौहर का मक़सद पूरा हो जाये। अगर इसके बावजूद कोई सूरत समझ में नहीं आती तो शौहर को किसी तरह इत्तिला दे दे कि आपने जो कहा था वह शाम तक नहीं हो सकेगा।

जैसे अगर किसी भी वजह से तीन-चार चीज़ें एक साथ नहीं पका सकती तो दफ़्तर में फ़ोन करके उनको इत्तिला दे दें कि मैं स्वीट-डिश तैयार नहीं कर सकूँगी, या रोस्ट नहीं कर सकूँगी ताकि वह आते वक़्त बाज़ार से आईसक्रीम ख़रीद कर ले आयें, या कोई और हल सोच लें, या वह ज़ेहनी तौर पर तैयार हों, कि यह काम नहीं हुआ होगा।

लेकिन यह ग़लती कभी भी न कीजिये कि आप इन्तिज़ार करें कि शौहर जब मुझे पूछेंगे तो उस वक़्त कह दूँगी कि यह न हो सका। जैसे ऐन इशा के बाद वह सख़्त भूख की हालत में खाना खाने के लिये बैठने

लगे तो उस वक़्त इत्तिला दी कि हाय मैं भूल ही गई कि आटा तो ख़त्म हो चुका था, आप जल्दी से बाज़ार से रोटियाँ ले आयें, बस खाना तैयार है। याद रखिये! इससे बहुत ज़्यादा नुक़सान होता है, मामूली सी बात बड़े झगड़े का सबब बन जाती है।

इसलिये कि एक बार घर आने के बाद दोबारा दो तीन मन्ज़िलों से उतर कर बाज़ार जाना या गाड़ी पार्क कर देने के बाद दोबारा निकालना और फिर दुकान पर जाकर रोटी की लाईन में लगना, आप ख़ुद ही सोचिये शौहर पर किस क़द्र भारी गुज़रेगा।

अगर ख़ुदा न करे आप वह काम शाम तक भी नहीं कर सकीं, या उनको इत्तिला भी न दे सकीं, अब उनके आने का वक़्त है तो दो रकअ़त नफ़िल पढ़कर अल्लाह से दुआ़ माँग लें या उज़्र की हालत में सिर्फ़ तस्बीह पढ़कर दुआ़ माँग लें कि या अल्लाह मुझसे यह ग़लती हो गई आप ही मेरे शौहर को मुत्मईन कर दें। उसके बाद शौहर को सफ़ाई के साथ कह दें कि यह न हो सका इन-इन मजबूरियों की वजह से, लेकिन आईन्दा से इन्शा-अल्लाह तआ़ला ज़रूर हो जायेगा।

अल्लाह तआ़ला आपको और तमाम मुसलमान बहनों को बात करने और जवाब देने का सलीक़ा अ़ता फ़रमाये और शौहरों को औ़रतों की रियायत करने वाला यानी भूल-चूक पर उनसे दरगुज़र करने वाला और उनपर रहम करने वाला और अच्छा सुलूक करने वाला बनाये। आमीन

अपने बच्चों पर रहम कीजिये

मिसाल के तौर पर एक कोताही यह भी है कि शौहर के पुकारने पर बीवी की तरफ़ से जवाब जल्दी नहीं दिया जाता, आप शौहर की दिली दुआ़यें लेना चाहती हैं तो इस बात का बहुत एहतिमाम करें कि शौहर की पुकार पर फ़ौरन जवाब दें। सिर्फ़ इस बिना पर देर हरगिज़ न करें कि शौहर ख़ुद भी वह काम कर लेंगे जिसके लिये आवाज़ दे रहे हैं- जैसे शौहर थके-हारे आये और आते ही सलाम करके जूते उतार कर बिस्तर पर लेट गये।

अब जब बीवी को पुकारा तो बीवी साहिबा अपने तौर पर यह गुमान करके ख़ामोश बैठी हैं और उनके पुकारने पर जाती नहीं कि कोई मामूली काम होगा, मिसाल के तौर पर पंखा तेज़ या हलका करवाना होगा, या अख़बार उठाकर देना होगा, या पानी का गिलास मंगवाना होगा। अब उसके लिये दूसरे चार काम छोड़कर क्यों जाऊँ।

ख़ूब समझ लें! बाज़ दफ़ा बीवी की तरफ़ से सिर्फ़ इतनी सी लापरवाही बहुत बड़े झगड़े का सबब बनती है और फिर मज़ीद सितम यह कि बाद में शौहर ने पूछा- भई क्यों नहीं आईं? या इतनी देर क्यों लगाई या कम से कम फ़ौरन जवाब क्यों नहीं दे दिया? मैं तो चीख़-चीख़कर थक गया। बाज़ नादान औरतें (अल्लाह तआला आपको उनमें से न बनाये, आमीन) इन सारी कोताहियों की वजह भी शौहर ही को क़रार दे देती हैं।

मिसाल के तौर पर- आप ही के लिये तो रोटियाँ पका रही थी। या आप ही के आराम की ख़ातिर मुन्ने को भाभी के पोरशन में ले गई थी। या आप ही को चूँकि फ़ौरन वलीमे में कहीं जाना है, तो दूसरे जोड़े पर प्रेस करने गई थी।

अगर आप चाहती हैं कि पूरे तौर से शौहर आपसे मुहब्बत करें और उनका दिल कभी भी आपकी तरफ़ से मैला न हो, वह हमेशा आपको दुआयें देते रहें और या वह आपसे अपने दोस्तों की बीवियों की सलीक़ेमन्दी से ख़िदमत के हालात और वाक़िआत का हसरत से तज़किरा न करें और आपकी लापरवाहियों बद-नज़मियों और ग़फ़लतों पर यूँ ताना न दें कि तुम्हारी माँ ने तुम्हारी सही तर्बियत नहीं की, वग़ैरह। तो आप ख़ुसूसियत के साथ नज़्म व तरतीब का एहतिमाम रखें कि हर काम उसी तरह तरतीब से हो कि शौहर को तकलीफ़ भी न हो और आपकी ख़िदमत की पूरी-पूरी क़द्र भी की जाये।

मिसाल के तौर पर जिस शौहर के लिये आप रोटी पका रही हैं और उसने आपको पुकारा तो अक़्लमन्दी और समझदारी की बात तो

यह है कि या तो उनके पुकारने पर चूल्हे से किसी तरीक़े से तवा हटाकर फ़ौरन जाकर उन्हें जवाब दें या रोटी पकाने या दीगर किसी काम में मशग़ूल होने से पहले ही उनको इत्तिला देकर फिर मशग़ूल हों।

जैसे मुझे इशा की नमाज़ पढ़नी है, आपको पहले खाना दे दूँ या कुछ देर बाद खायेंगे? या यह कि मैंने आप ही के जोड़े पर स्टोर-रूम में प्रेस करने जा रही हूँ आपको फ़िलहाल कोई ज़रूरत तो नहीं?। इस सलीक़ेमन्दी से बहुत से फ़ायदे हासिल होंगे।

1. इस सूरत में घरों में वो झगड़े जो मामूली-मामूली बातों पर उठते हैं, वो नहीं होंगे।

2. आपको जो शिकवा रहता है कि बावजूद यह कि मैं दिन भर उन्हीं की ख़िदमत में लगी रहती हूँ फिर भी मेरी ख़िदमत की तो क़द्र नहीं और बात बे-बात अपने दोस्तों की बीवियों, अपनी और मेरी भाभियों या अपनी शादीशुदा बहनों की ख़िदमात की मिसालें दे-देकर मुझे जलाते हैं, वह फिर ऐसा नहीं करेंगे बल्कि आप ही की क़द्र करेंगे।

3. शौहर की डाँट या चीख़ने पर जो आपको धड़का रहता है कि मेरी भाभियाँ सुनेंगी, सास और नन्दें सुनेंगी और मासियों को न सिर्फ़ बातें बनाने बल्कि दूसरों के घर जाकर बात करने का मौक़ा लगाने का मौक़ा मिलेगा कि ज़ैनब की शादी को छह साल हो गये मगर शौहर से उसकी एक दिन भी नहीं बनी है, कभी वक़्त पर शौहर की कोई चीज़ ही तैयार करके नहीं दे सकी, शौहर की कंपनी की वैन वापस चली जाती है और शौहर का टिफ़िन या नाश्तेदान ही तैयार नहीं होता।

या यह कि बेचारी ज़ैनब का क़सूर ही क्या, उसकी माँ ने भी तो अपने शौहर को यूँ ही जलाया था, कभी रोटी पर चटनी लगाकर भी सुकून से खाने न दी। बेचारे भाई साहिब इसी ग़म में घुल-घुलाकर अल्लाह मियाँ को प्यारे हो गये, वग़ैरह।

जब आपकी सलीक़ेमन्दी से इन झगड़ों की जड़ ही ख़त्म हो जायेगी तो न ही शौहर को आप पर गुस्सा करने और चीख़ने का मौक़ा मिलेगा

न ही उन बेदीन औरतों को बातें बनाने का मौक़ा मिलेगा।

4. आप हमेशा शौहर की दुआयें लेती रहेंगी और शौहर हमेशा आपका क़द्रदान रहेगा। आपकी ज़िन्दगी में भी आपकी मौत के बाद भी, और इस सलीक़ेमन्दी का आपकी बच्चियों पर भी बहुत नेक असर पड़ेगा, वे भी ऐसे ही अच्छे गुणों वाली बनकर जब पराये घर जायेंगी तो आपकी नेकनामी का ज़रिया होंगी।

5. सबसे बड़ा फ़ायदा यह कि आपकी तरफ़ से अच्छा तर्ज़े-अमल सामने आने की बिना पर शौहर से होने वाली हर वक़्त की तू-तू मैं-मैं दुर-दुर बक-बक जब ख़त्म हो जायेगी तो ये मासूम से फूलों (यानी बच्चों) पर बहुत बड़ा रहम होगा कि वे इस मुहब्बत और सुकून की फ़िज़ा में परवान चढ़कर एतिमाद वाले बनेंगे, तमाम मानसिक बीमारी और उलझनों से दूर रहेंगे।

वरना झगड़ों के माहौल में घुट-घुटकर पलने वाले बच्चे सहमे-सहमे रहते हैं, खुद-एतिमादी से मेहरूम हो जाते हैं, अपने दिल की बात माँ-बाप दोनों ही से नहीं कह सकते। चाहे माँ को बेबस समझकर या बाप को ज़ालिम समझ कर, कि जो हमारी माँ को ही रुलाते हैं वह अब्बू हमारी बात क्या मानेंगे। और माँ-बाप को झगड़ता देखकर या माँ को हर वक़्त दादी, फूफी से डरता देखकर उन बच्चियों की फ़ितरी सलाहियतें और क़ाबलियतें (जिनसे वे न जाने दीन व दुनिया के आला से आला क्या-क्या काम कर जाते) ख़त्म हो जाती हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह मुल्की और ग़ैर-मुल्की स्कूलों और मदरसों के मुख़्तलिफ़ बच्चों से चूँकि तालीमी और तरबियती बुनियाद पर हमारा वास्ता पड़ता है, जिससे यह बात देखने में आती है कि:-

किसी बच्चे के बार-बार नाकाम (फ़ेल) होने, पढ़ाई में बहुत ज़्यादा ग़ैर-हाज़िर होने, या क्लास और दर्सगाह में भी गुम- सुम रहने, या खेलकूद में हिस्सा न लेने और उस्ताद के पूछने पर जवाब मालूम होने के बावजूद और सबक़ याद कर लेने के बावजूद ज़बान से दिल की बात

न बता सकने की वजह वही सहम और घुटन और खुद-एतिमादी से मेहरूमी या एहसासे-कमतरी की बीमारी है। जो माँ-बाप की तरफ़ से घर की फ़िज़ा ख़राब कर देने की वजह से उनको लगी है।

और हकीकत भी यही है कि जिस मासूम ज़ेहन पर हर वक़्त बाप का तमाँचा और माँ के बहते हुए आँसुओं का तसव्वुर तारी रहता हो, या जिस मासूम के कानों में अब्बा दादी और फूफी से झिड़की खाने के बाद रोती हुई माँ की सिस्कियों की आवाज़ें गूँजती रहें, या जिसके ज़ेहन पर अब्बा और दादी से छुपकर अम्मी को तन्हाई में मुसल्ले पर घन्टों रोता हुआ देखने का मन्ज़र छाया रहे, वह बच्चा कभी भी दूसरे खिलते हुए बच्चों के बराबर नहीं हो सकता।

लिहाज़ा आप अल्लाह के वास्ते अपने बच्चों पर ही रहम खाते हुए इस बात का एहतिमाम रखें कि आपकी किसी ग़फ़लत और लापरवाही से शौहर को गुस्सा न आये और अगर गुस्सा आ ही गया तो आप बच्चों ही की तरबियत की ख़ातिर उन्हीं पर रहम करते हुए ख़ामोश हो जायें। अपनी ग़लती का इकरार कर लें और बात को रफ़ा-दफ़ा करने की कोशिश कर लें। चाहे आपकी ग़लती न हो फिर भी अपनी ग़लती मान लें।

अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमान बहनों को ऐसी हकीकत पहचानने और दीन की समझ नसीब फ़रमाये कि वे ऐसा तर्ज़े-ज़िन्दगी इख़्तियार करें कि घर में बद-लिहाज़ी न होने पाये और आने वाली नई नस्ल किसी मेहरूमी का शिकार न हो।

मैं ख़फ़ा होकर अपने मैके चली आई

जुमा की रात थी, भाई और वालिद साहिब सब शबे-जुमा के लिये गये हुये थे। घर में कोई मर्द न था सिर्फ़ छोटे भाई जो दारुल-उलूम में पढ़ते हैं वह थे। उस रात मेरे नसीब का सियाह पर्दा हट गया। वह इस तरह कि आजकी रात मेरी परेशानीयों और उलझनों की कोई हद न थी,

तरह-तरह के ख़्यालात दिमाग़ के अन्दर उभर रहे हैं, दिल में हमाहमी थी, इसी हालत में आँख लग गई।

ख़्वाब में क्या देखती हूँ कि क़ियामत क़ायम हो चुकी है, सब मुर्दे ज़मीन से उठ रहे हैं। सब लोग मैदाने हश्र में जमा हो रहे हैं, सबको अपनी-अपनी ज़िन्दगी के हिसाब-किताब देने की फ़िक्र है।

दाहिनी तरफ़ देखा तो कुछ लोग बग़ैर हिसाब व किताब के आज़ादी से महलों की तरफ़ बढ़ रहे हैं जहाँ ख़ुशनुमा आलीशान बाग़ हैं और उन बाग़ों में तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। ठंडी-ठंडी हवा की लहरें चल रही हैं, भीनी-भीनी और मधुर ख़ुशबू से पूरा माहौल जन्नत नुमा बना हुआ है। बाग़ में तमाम क़िस्म के और हर तरह के ऐश व आराम का सामान मौजूद है। अजीब दिलकश मन्ज़र है। मर्दों और औरतों का हुजूम चारों तरफ़ से ख़ुशी व मुसर्रत में मस्त होकर उस बाग़ में दाख़िल हो रहा है। मैं भी दौड़कर उस दरवाज़े पर पहुँची।

मैंने अन्दर दाख़िल होने का इरादा किया और जूँ ही अन्दर दाख़िल होने की ग़रज़ से आगे बढ़ी तो दरबान ने मुझको रोक लिया और दाख़िले का इजाज़त नामा तलब किया, मैंने चिन्ता के अन्दाज़ में पूछा:

अरे! दाख़िले के लिये क्या टिकट लेना पड़ता है?

दरबान! जी हाँ! बिना टिकट के दाख़िला मना है। वरना हिसाब की लाईन में चले जाईये।

"अच्छा टिकट कितने में मिलता है" यह कहकर मैंने परस में हाथ डाला तो दरबान ने कहा:

मोहतरमा! यह टिकट पैसों से नहीं मिला करता। मैंने ताज्जुब से पूछा कि इसके लिये फिर किस चीज़ ही ज़रूरत है? दरबान ने कहा: मुसलमान मर्द के लिये माँ-बाप की ख़ुशी का परवाना चाहिये और मुसलमान औरत के लिये उसके शौहर की ख़ुशी का परवाना चाहिये, उसके बग़ैर इस जन्नत में कोई दाख़िल नहीं हो सकता।

तो क्या मेरे माँ-बाप की ख़ुशी का परवाना नहीं चल सकता? मैंने

उम्मीद भरी नज़रों से दरबान की तरफ़ देखते हुए कहा।

"नहीं! शादीशुदा औरत के लिये उसके शौहर की रज़ामन्दी और ख़ुशी का परवाना चाहिये" यह सुनकर मैं मायूस हो गई। शर्म की वजह से मैं पसीने में शराबोर हो गई। मेरी शर्मिन्दगी और हसरत की कोई हद नहीं रही और मैं मायूसाना निगाहों से अन्दर दाख़िल होने वाली औरतों को देखती ही रह गई। कितनी ही मेरी सहेलियाँ ख़ालाज़ाद बहनें बेझिझक बेहिसाब जन्नत में अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ दाख़िल हो रही थीं और मैं कलेजा थामकर उनको तक रही थी।

ख़ुदाया! यह कैसी मेरी तौहीन, कैसी मेरी बेइज़्ज़ती है। अगर ज़मीन जगह देती तो मैं उसमें समा जाती, ऐसी कैफ़ियत मुझपर तारी हो गई। मेरी दो-चार सहेलियों को मुझ पर रहम आया उन्होंने मुझे पुकार कर कहा: ज़ैनब...... अन्दर आ जाओ, हम दरबान से कह देते हैं।

लेकिन जब मैं न जा सकी तो वे मुझे लेने आ गईं, मगर जब उन्होंने भी मेरे पास मेरे शौहर की ख़ुशी का परवाना न देखा तो मुझे छोड़कर अफ़सोस करती हुई चली गईं। और सलमा तो वैसे भी बहुत तेज़ थी, उसने मुझे वहीं सुना दी-

देखा ज़ैनब! हम तुम्हें कहा नहीं करते थे कि देखो दुनिया की ज़िन्दगी तो बहुत थोड़ी है, इसमें शौहर को राज़ी रखकर चलो, वरना मौत के बाद पछताना पड़ेगा। मगर ज़ैनब तुम कभी शौहर की बात मानती ही न थी, वह तुम्हें कितना कहते थे बेपर्दा मत फिरो, शादियों में अपनी मूवी मत बनवाओ, नमाज़ों को क़ज़ा मत करो, मुझे अल्लाह के रास्ते में जाने से बिला उज़्र मत रोको, मगर तुमने एक न सुनी।

मैं वहीं हैरान होकर अपनी ग़लतियों पर पछता रही थी कि काश मेरे पास भी अपने शौहर की ख़ुशी का परवाना होता तो आज मैं भी दूसरे लोगों की तरह जन्नत में जाकर बहारें और ख़ुशियाँ लूटती और इस शर्मिन्दगी का यह दिन मुझे देखना न पड़ता।

इतने में मेरे ख़्यालात का सिलसिला टूट गया कि जाओ दूर हो

जाओ "जगह दो" "रास्ता छोड़ो" वग़ैरह की आवाज़ दी गई तो मैंने निगाह उठाकर देखा तो एक ख़ातून की सवारी बड़े दबदबे से आती हुई नज़र आई। राहगीर रास्ता देने लगे, सब झुक-झुककर सलाम व आदाब करने लगे।

दरबान बेहद अदब व एहतिराम से सलाम व आदाब बजा लाया। वह ख़ातून सवारी से उतर कर सीधी जन्नत में चली गई। मैंने दरबान से पूछाः यह दबदबे वाली ख़ातून कौन है?

दरबान ने कहाः यह ख़ातून अपने शौहर की आशिक़ है। इसने अपने शौहर की ऐसी ताबेदारी और फ़रमाँबरदारी की कि उसका शौहर उसको दुआयें देने लगा, सिर्फ़ आठ साल शौहर की ख़िदमत में रहकर यह मर्तबा हासिल किया है।

दरबान की बात ने मेरे दिल को बहुत प्रभावित किया, मेरी वैवाहिक ज़िन्दगी पुरसुकून न थी। बात-बात में मेरी शौहर के साथ नाचाक़ी और लड़ाई झगड़ा होता था, मैं शौहर से ख़फ़ा होकर मैके चली आई थी। जब वही मुझे ख़ातिर में नहीं लाये तो मैं क्यों उसको ख़ातिर में लाऊँ? मैं उससे दबती न थी, शौहर हुए तो क्या हुआ......क्या मैं उसकी लौंडी बन गई थी? मेरे माँ-बाप मुझे पाल पोस और परवरिश कर सकते थे तो मैं क्यों उससे दबकर रहूँ? और गंवार औरतें ही मर्द की गुलामी पसन्द करती हैं, मुझे तो इसके ख़्याल से ही कपकपी आती है। मर्दों की गुलामी जैसे अलफ़ाज़ से तो मेरी रूह फ़ना हो जाती है।

मर्दों की गुलामी का वक़्त और दौर ख़त्म हो चुका है, यह तो अपने ख़्यालात व अमल की आज़ादी का ज़माना है। साँप निकल गया मगर उसके निशानात बाक़ी रह गये। मर्दों को चाहिये कि आँख और कान के पर्दे खोल डालें, अमेरिका और यूरोप से आज़ादी का सबक़ सीखें। ये मेरे ग़लत ख़्यालात थे।

लेकिन उस बुलन्द रुतबे वाली ख़ातून की कहानी सुनकर मुझ पर वहशत का भूत सवार हुआ। मेरा दिल मेरे क़ाबू में न था, मुझे उस पर

हसद पैदा हुआ। मैं उलझन की आग में जलने लगी, कि मैंने शौहर की ख़िदमत क्यों नहीं की? मैं क्यों बुलन्द रुतबा हासिल नहीं कर सकी? मैं एक दम से दम-बख़ुद हो गई और मुझसे बरदाश्त न हो सका और चीख़ उठी, बेइख़्तियार हिचकियाँ ले-लेकर कुढ़ने लगी। मेरी माँ मेरी चीख़ सुनकर जाग गई, मेरे दोनों बेटे अदनान, फ़ौज़ान उठ गये, माँ ने कहा बेटी! बेटी! क्या हुआ? क्यों रो रही हो?

मैं घबराकर बेदार हो गई और चौंक कर उठ गई। माँ ने कहा बेटी होश में आ, ला हौल और अऊज़ु बिल्लाह पढ़ ले। वुज़ू करके बाईं तरफ़ थूक दे। तूने क्या ख़्वाब देखा है? वह मेरी चारपाई के पास आ गईं। मुझे अपने सीने से लगाकर तसल्ली देने लगी और बोली क्या डर गई? अल्लाह ख़ैर करे।

तूने ख़्वाब में क्या देखा? मैंने ख़्वाब में जो कुछ देखा माँ को कह सुनाया। अब न तो मैदाने हश्र था न वह जन्नत का मन्ज़र, न वह दरबान था न वह ख़ातून थी। मैं ख़्वाब बयान कर रही थी और ख़ौफ़ज़दा होकर चारों तरफ़ देख रही थी।

माँ ने मुझे सीने से लगाते हुए कहा: बेटी! ख़्वाब की बातें सच थोड़ा ही होती हैं। तूने एक शैतानी ख़्वाब देखा है ऐसी बातों का असर नहीं लेना चाहिये। दोबारा सो जा। मेरा दिमाग़ ठिकाने पर नहीं था, तरह तरह के ख़्यालात में ग़ोते खाते हुई लेट गई और दोबारा ख़्वाबों की दुनिया में पहुँच गई। क्या देखती हूँ कि शादी की महफ़िल जमी हुई है, और उसी की चहल-पहल है। बारात चलने की तैयारी है। मैंने अपने शौहर को देखा तो वह दूल्हा बने हुए हैं। मैं दौड़कर उनके पास पहुँच गई और उनका हाथ पकड़ लिया और गुस्से में पूछा: मैं यह क्या तमाशा देख रही हूँ?

लेकिन उन्होंने मेरी तरफ़ आँख उठाकर भी न देखा। मेरा हाथ बड़ी बेरहमी से झटक दिया और मुझे वहाँ से धुतकार दिया। मैं अपने टूटे हुए दिल के साथ रोती-बिलकती हुई माँ-बाप के घर आ गई और मुझे

वह जुमला याद आ गया जो मेरे शौहर मुझे अक्सर औक़ात कहा करते थे: देखो ज़ैनब...... अगर तुमने मुझे सताया तो मैं दूसरी शादी कर लूँगा। फिर तुम बहुत पछताओगी। और देखो ज़ैनब तुमसे शादी से पहले मैं दुनिया का काम भी सही कर लेता था और दीन का काम भी, अपनी मस्जिद में रोज़ाना ढाई घन्टे देता था, तिलावते कुरआने करीम व ज़िक्र की भी पाबन्दी करता था, मौहल्ले के मर्दों, औरतों को दीन पर लाने के लिये मेहनत करता था, लेकिन जब से तुम आई हो ना! मैं न दीन का काम अच्छी तरह कर सकता हूँ न दुनिया का।

अब मेरी उलझन की कोई हद न रही। मैं कलेजा थाम कर रह गई। मेरे मुँह से चीख़ निकल गई और फ़ौरन चौंक कर बैठ गई। माँ ने बहुत समझाया बेटी! तेरा शौहर नाराज़ थोड़ा ही है कि तुझे छोड़कर दूसरा निकाह कर ले, तू लड़ाई करके थोड़ा ही आई है, इस वक़्त तो उसकी नाराज़गी इसलिये है कि तू उसके पूछे बग़ैर आ गई, यह इतना बड़ा क़सूर नहीं है कि वह तुझे छोड़ दे। बेटी अब बहुत हो गया जा आराम से सो जा। तू तो हमेशा से ही वहमी सी है। यह सिर्फ़ तेरा वहम है, जब इतना सोचती रहेगी तो ऐसे ही ख़्वाब आयेंगे बेकार फ़िक्र न कर, जा सो जा। वहम न कर आयतुल्-कुर्सी पढ़ ले।

यह सब मुझे तसल्ली देने के लिये और मेरा दिल बहलाने के लिये अम्मी कह रही थीं। उस वक़्त तो मैं ख़ामोश हो गई लेकिन इन दो ख़्वाबों ने मेरा आराम मेरी नींद हराम कर दी, मेरे इरादों में ज़बरदस्त इन्क़िलाब आ गया। दिल एक दम बदल गया। मैंने दिल में तय कर लिया कि अब कभी भी शौहर की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं करूँगी। जो-जो उनको मुझसे शिकायतें थीं उनका जायज़ा लेने लगी और दिल ही दिल में अल्लाह तआला से माफ़ी माँगने लगी।

मिसाल के तौर पर मैं हमेशा यह ख़्याल करती थी कि शौहर मुझे सताते हैं, अपनी माँ और अपनी बहनों की पढ़ाई हुई पट्टी पर हर्फ़-ब-हर्फ़ चलते हैं और वह मुझे कहते थे कि तुम मुझे सताती हो, अब जब

मैंने ग़ौर किया तो मुझे एहसास हुआ कि दर हक़ीक़त मैं ही उनको सताती थी।

मुझे अफ़सोस है कि वह अक्सर होटलों में खाना खाने चले जाते, मैं उनके लिये कभी अच्छा खाना न पका सकी। वह हमेशा मुझे डाँटते थे कि तुम अच्छा खाना नहीं पका सकती। वह जब भी अपने दोस्तों की दावत करते तो उनको शर्मिन्दगी उठानी पड़ती और मैं समझती थी कि उसमें मेरा कुसूर नहीं, इसलिये कि मेरे ससुराल में सब लोग अच्छे से अच्छे बेहतरीन से बेहतरीन उम्दा ज़ायक़े के खाने के शौक़ीन थे और मेरी जेठानियाँ भी एक से एक क़िस्म के खाने पकाने की माहिर थीं।

और मेरी अम्मी के घर में हर एक जो दस्तरख़्वान पर जैसा भी पका हुआ खाना रखा जाता उसको ख़ुशी से खाकर अल्लाह तआला शुक्र अदा करता। लेकिन अब मुझे मालूम हुआ कि इसमें मेरी ही ग़लती थी। और अफ़सोस यह हुआ कि मेरी और बहनों ने भी मुझे यह नहीं समझाया कि इसमें तुम्हारी ही ग़लती है, और सच्ची बात तो यह है कि मैंने उनके सामने ये बातें रखी ही नहीं थीं। अपनी ग़लतियाँ तो बताई नहीं, जिन ग़लतियों की वजह से शौहर गुस्सा होते थे। वह गुस्सा और नाराज़गी बतलाती लेकिन उसका सबब नहीं बतलाया था।

दूसरी उनको मुझसे यह शिकायत थी कि तुम ख़ूबसूरत नहीं हो हालाँकि अल्लाह तआला ने मुझे हुस्न व जमाल से भी नवाज़ा था, और माल व दौलत से भी, लेकिन मैं बेपरवाह और ग़ाफ़िल रहती थी। कभी भी शौहर के सामने अपने हुस्न व जमाल ज़ैब व ज़ीनत का ख़्याल नहीं रखा। बच्चों और उनको अच्छे कपड़े पहनाने में मुझसे बहुत कोताही हुई हालाँकि अल्लाह तआला ने मुझें अपने फ़ज़्ल व करम से चाँद के टुकड़े जैसे दो बेटे अदनान और फ़ौज़ान अता फ़रमाये थे, लेकिन मैंने उनको साफ़-सुथरा रखने में बहुत ही सुस्ती इख़्तियार की।

तीसरी मेरी ग़लती यह थी कि जब भी शौहर ने मुझसे प्यार और मुहब्बत का इज़हार किया तो मेरा दिल बर्फ़ के टुकड़े के मानिंद रहा।

बल्कि अल्लाह मुझे माफ़ करे कभी-कभी उन्होंने मुझे अपने तक़ाज़े के लिये बुलाया तो मैंने सोते बच्चे को उठा दिया, उसके रोने की वजह से उनकी बात पूरी न हो सकी। इसमें भी मैं ही क़सूरवार थी। इन ख़्यालात में मैं ग़ोता खा रही थी कि यकायक मैंने वुज़ू किया, दो रकअ़त नमाज़ तहज्जुद की नीयत से पढ़ी, तौबा की, अपनी ग़लती का एतिराफ़ किया और दुआ माँगी।

ऐ अल्लाह! मैं अपनी ग़लती का एतिराफ़ करती हूँ अपने करतूतों पर शर्मिन्दा हूँ। बेशक मैं हर तरह से ख़तावार हूँ। सब क़सूर मेरा ही है। शौहर को नाराज़ करना मुझे किसी भी हाल में शोभा नहीं देता, वह तो मेरा ख़ाविन्द है। मेरे बच्चों का बाप है, मेरे सर का ताज है, मेरा जीवन-साथी है। औरत अपने शौहर के ज़ख़्मों को अपनी ज़बान से चाटती भी रहे तो उसका हक़ पूरा न कर सके। ख़ुदा के अलावा किसी को सज्दा करना जायज़ होता तो औरत को हुक्म दिया जाता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे।

जिस औरत से उसका शौहर नाराज़ हो तो उसपर अल्लाह की और उसके फ़रिश्तों की और तमाम इनसानों की लानत होती है। और फिर इस तरह मुझे एक के बाद एक रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें याद आने लगीं जिनको मैंने तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन और तोहफ़ा-ए-दुल्हन किताबों में पढ़ी थीं। मैंने सच्चे दिल से ख़ुदा की बारगाह में तौबा की, वैसे भी तहज्जुद का वक़्त क़बूलियत का होता है, मैंने नफ़िल पढ़कर तौबा व इस्तिग़फ़ार करके क़लम और काग़ज़ लिया और लिखना शुरू किया।

ऐ मेरे सरताज! ख़ुदा आपको सलामत रखे। अब तक मेरी तरफ़ से जो कुछ भी आपको बर्दाश्त करना पड़ा उसको एक तकलीफ़देह ख़्वाब समझकर भूल जायें और इस वक़्त जो कुछ मैं लिख रही हूँ इसको एक वाक़िआ और हक़ीक़त समझें। मैं आपकी एक अदना बाँदी और लौंडी हूँ। अब मैं अपनी ग़लतियों पर पछता रही हूँ। अल्लाह तआ़ला भी

अपने बन्दों को माफ़ कर देता है और उनके गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है। आप भी अपनी इस गुनाहगार बाँदी और कनीज़ को माफ़ कर दें। मैं आपके रहम व करम की भीख माँग रही हूँ। अल्लाह के वास्ते मुझपर तरस खायें, मुझे रहम की भीख से मेहरूम न करें। मेरी ख़ताओं को दरगुज़र फ़रमायें, मुझे आप अपने घर आने की इजाज़त अता फ़रमायें, मैं आपके हुक्म का इन्तिज़ार कर रही हूँ। मैं वहाँ आने को हर वक़्त तैयार हूँ। अगर मेरे पर होते तो उड़कर आती।

अगर आपने इस ख़त का जवाब न दिया तो हो सकता है कि मैं कोई जहालत वाला काम कर बैठूँगी। मैं आपके क़दमों में आपकी निगाहों के सामने रो-रोकर जान दे दूँगी। मैंने आप पर कुरबान हो जाना तय कर रखा है। मेरी इतनी सारी नाफ़रमानियों के बावजूद अगर आपके दिल में मेरे लिये मुहब्बत की एक किरन और झलक बाक़ी हो तो अल्लाह के वास्ते मुझे माफ़ फ़रमा करके अपने यहाँ आने की इजाज़त दे दें। दोनों बच्चे अदनान फ़ौज़ान भी आपको बहुत याद कर रहे हैं। बस आख़िरी बात कहती हूँ आपको आईन्दा कोई शिकायत का मौक़ा नहीं मिलेगा। याद रखिये कि मेरी ज़िन्दगी आपके हाथ में है। फ़क़त

आपकी नाफ़रमान बीवी
ज़ैनब बिन्ते यासिर

शौहर की तरफ़ से जवाब

ख़त पहुँचते ही शौहर ने जवाब लिखा:-

मेरी नादान बैगम और बेसमझ बैगम ख़ुदा-ए-पाक तुझे नेक हिदायत अता फ़रमाये। लम्बे समय के बाद तुम्हारा ख़त मिला कुछ समझ में नहीं आता कि तू और ऐसा तेरा ख़त? सिर्फ़ तेरे वालिद की दुआ होगी या मेरे वालिद की दुआ, जिसने तेरी हिदायत के असबाब पैदा फ़रमा दिये।

तेरे ख़्यालात की तब्दीली देखकर बेइन्तिहा ताज्जुब हुआ और हैरत की कोई हद न रही। अगर इन तेरे कलिमात और अलफ़ाज़ में सच्चाई

है तो मैं ख़ुदा-ए-पाक का शुक्र अदा करता हूँ।

अगरचे देर ही में समझी, तुझे नेक व बद की तमीज़ महसूस हो गई। तू सिर्फ़ मेरी ही गुनाहगार नहीं बल्कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की भी गुनाहगार है। मेरे दिल में तेरी बातों और तेरी हरकतों की वजह से जो ज़ख़्म हैं वे अब नासूर बनते जा रहे हैं। वे ग़म अब तेरे अच्छे और बेहतर बर्ताव ही से भर सकते हैं। ख़ुदा-ए-पाक गवाह है कि मेरे दिल में तेरी कितनी मुहब्बत है, और इसलिये भी कि तू अल्हम्दु लिल्लाह पर्दे वाली औरत है, और तेरे वालिद एक दीनदार शख़्स हैं।

मैं तुझे यक़ीन दिलाता हूँ कि मेरे दिल में तेरे सिवाय किसी का भी गुज़र नहीं, और मुझे तुझसे बेपनाह मुहब्बत व प्यार है। मैं अपने दिल की गहराईयों से तेरे क़सूर माफ़ कर देता हूँ और ख़ास कर इसलिये भी कि तेरी ज़िन्दगी का दारोमदार मेरी माफ़ी पर है।

मेरा माज़ी (गुज़रा ज़माना) अगर एक बुरा ख़्वाब था तो आजकी तेरी आ़जिज़ी और इन मुहब्बत भरे कलिमात ने ग़म व रंज से पुर ख़्वाबों को भुला दिया है। मैं दिल व जान से माज़ी (गुज़री हुई बातों) को भूल जाने पर तैयार हूँ।

यहाँ तुझे आने के लिये इजाज़त की क्या ज़रूरत है? तुझे जाने की ही कहाँ इजाज़त थी कि आने के लिये मना करूँ। यह तेरा ही घर है, तू ही इस घर की मलिका है। ये बच्चे इस घर के गुलाब और चंबेली हैं, जब जी में आये चली आ, लेकिन यहाँ आकर इस तरह रहना कि वाक़ई मैं माज़ी को एक ख़्वाब समझकर भूल जाऊँ। और यह याद रखना......

1. जब तक तू अल्लाह तआ़ला को राज़ी नहीं करेगी किसी बन्दे को राज़ी नहीं कर सकती। जब तुझसे अल्लाह तआ़ला राज़ी हो जायेंगे तो वह मुझे भी राज़ी कर देंगे। इसलिये किसी एक नमाज़ को भी वक़्त से देर करके मत पढ़ना।

2. इसी तरह उन शादियों में मुझे बिल्कुल मत जाने को कहना जिनमें खुल्लम-खुल्ला अल्लाह की नाफ़रमानी हो।

3. इसी तरह ज़बान-दराज़ी की आदत बिल्कुल ख़त्म कर देना और जितनी बातें पूछी जायें सिर्फ़ उसी का जवाब देना। खुसूसन जब मैं काम से वापस आऊँ तो फ़ौरन बच्चों को डाँटने या चिल्लाने वग़ैरह से बिल्कुल बचना। बच्चे भी शोर मचायें और तू भी चिल्लाने लग जाये तो घर आसमान से बातें करने लगता है। बच्चों का तो शोर समझ में आता है लेकिन तेरा शोर बिल्कुल समझ में नहीं आता। कितनी बेवक़ूफ़ी की बात है कि बच्चों को शोर से रोकने के लिये खुद भी शोर मचाना और बच्चों को लड़ाई-झगड़े से रोकने के लिये खुद लड़ना-झगड़ना। बच्चों को प्यार व मुहब्बत से समझाना चाहिए।

4. और मेरी माँ-बहनों की शिकायत मुझसे बिल्कुल मत करना।

उम्मीद है कि तुम इन चार बातों का ख़्याल रखोगी तो हमारा रिश्ता अच्छा चलेगा। मेरी तरफ़ से अदनान व फ़ौज़ान को प्यार। वस्सलाम

तुम्हारा शौहर

मैं ख़त के जवाब का इन्तिज़ार करती रही यहाँ तक कि अल्हम्दु लिल्लाह डाकिया एक दिन ख़त लेकर आया। मैं उसके जवाब में तड़प रही थी। इन्तिज़ार की आग में जल रही थी। मेरी एक-एक घड़ी सख़्त बैचेनी में गुज़र रही थी। बेसब्री के अन्दाज़ में जल्दी-जल्दी ख़त खोलकर पढ़ा और खुशी से पागल हो गयी। मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। दिल भर आया, मेरी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे।

उसी वक़्त सज्दे में गिर गई और अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त का शुक्र अदा किया। वक़्त ज़ाया किये बग़ैर छोटे भाई से टैक्सी मंगवाई और किसी से पूछे बग़ैर ही भाई के साथ ससुराल की तरफ़ रवाना हो गई। घर में सब हाय-हाय करते रह गये। सब एक ही ज़बान में होकर बोल उठे कि लो! इस बेवकूफ़ लड़की को देखा, कि कोई तो बुलाने आया नहीं

और यह बेशर्म और बेहया बनकर खुद ही जा रही है।

लेकिन मैंने किसी की भी परवाह नहीं की, ये सब अगर बकवास करते हैं तो करते रहें, मैं तो चली। माँ चिल्लाने लगी, अरे ओ बेशर्म मूई! तू कहाँ चली? यह सब क्या अन्धेर हो रहा है? और यह सब क्या तूफ़ान मचा रखा है। हमारी इज़्ज़त व आबरू पर पानी फैर रही है। हम मना कर रहे हैं फिर भी बेशर्म बनकर जा रही है। आज तक तो शौहर की ज़ात में सौ कीड़े पड़े हुए थे, वे सब बुराईयाँ कहाँ चली गईं। क्या सब भूल गई। गोया कि कुछ हुआ ही नहीं?

हम तो चाहते थे कि चार आदमियों को बीच में डालें और फिर उन लोगों की बराबर ख़बर लें। उसके बाद तुझे खुशी-खुशी इज़्ज़त व एहतिराम के साथ रुख़्सत करें। इस तरह रुख़्सत करने और जाने में कुछ और ही मज़ा होता। इस तरह से जाने को इज़्ज़त व एहतिराम और शान व शौकत से जाना कहते हैं और वह भी सुधर जाते और उन्हें भी पता चल जाता कि हमारी बच्ची उनके टुकडों की मोहताज नहीं। अब तो हमारी नाक ही कट जायेगी, तू खुद नकटी बनकर हम सबको भी नक्टा बनायेगी। वे लोग तुझे बात-बात में ताना देगें कि देखो बेशर्म बनकर गई और नक्टी बनकर वापस आई। यह तो उनकी आन बान और शान की बात हो गई और हम मुफ़्त में बदनाम होंगे।

ख़ैर मैंने माँ को तसल्ली दी और छोटे भाई के साथ निकल गई। मैं अपने शौहर के घर अचानक पहुँची, घर में अनोखी चहल-पहल नज़र आती थी। दाख़िल होते ही मैं अपने शौहर के क़दमों में गिर पड़ी और ख़ूब रो-रोकर अपनी गलतियों की माफ़ी माँगने लगी। मैं रोती रही यहाँ तक कि मेरे सरताज का दिल पिघल कर मोम हो गया। मैं उनके क़दमों में पड़ी रही तो उनका दिल भी भर आया, उन्होंने मुझे दिल व जान और दिल की गहराई से माफ़ कर दिया। उनकी आखों से भी टप-टप आँसू बह रहे थे। उसके बाद मैंने घर के तमाम लोगों से भी माफ़ी माँगी और फिर सब सुकून और इत्मीनान, खुशी व मुसर्रत से रहने लगे। फिर

तो क्या था, एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ हुआ, हर दिन ईद का दिन और रात शबे-बराअत की मानिंद हो गई।

अब मैंने एक उसूल बना लिया कि घर में सबसे पहले सवेरे ही उठ जाती, फ़जर की नमाज़ पढ़कर काम शुरू करती और रात को सबको खिला-पिलाकर और सब काम-काज से फ़ारिग़ होकर सबसे आख़िर में सोती। घर का सारा निज़ाम और इन्तिज़ाम मेरी निगरानी में अच्छी तरह चलने लगा। यह वही घर था जो पहले जहन्नम जैसा लगता था और अब यही घर जन्नत का नमूना बन गया।

मेरे सलीक़े और अच्छे इन्तिज़ाम से घर का सारा नक़्शा ही बदल गया। यह घर अब एक दीनदार घर की तरह बन गया। आस-पास से जो लोग आते तो घर के इस अच्छे इन्तिज़ाम और घर के रख-रखाव और सजावट को देखकर माशा-अल्लाह कह उठते।

मेरी हुनरमन्दी और अच्छे इन्तिज़ाम को देखकर अब मेरे शौहर हर वक़्त मुझसे ख़ुश रहते हैं। घर में क़दम रखते ही उनका दिल बाग़-बाग़ हो जाता है और अब वह पुरसुकून तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। आराम की नींद सोते हैं। किसी काम के लिये ज़बान से कहने की ज़रूरत पेश नहीं आती। हर काम और हर चीज़ उसके वक़्त पर तैयार रहती है और वह अब मुझपर जान निछावर कर रहे हैं। हर वक़्त उनकी ज़बान पर मेरे लिये दुआ के कलिमात रहते हैं। मैं उनकी ख़िदमत भी इस तरह करती हूँ जैसा कि एक मुलाज़िमा किया करती है।

ख़ुदा-ए-पाक का दिया हुआ सब कुछ मौजूद है। एक बात की कमी थी वो भी अब अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से पूरी हो गई। देखने वाले वाह-वाह करते हैं और दुआयें देते हैं कि ख़ुदा-ए-पाक इनका जोड़ा क़ायम व सलामत रखे। इनका सुहाग क़ायम व दायम रहे। बाल-बच्चे ज़िन्दा सलामत रहें, फलें-फूलें और आबाद रहें।

ज़िन्दगी की काया पलट गई, ख़्यालात का रुख़ पलट गया, मिज़ाज में तब्दीली आ गई, ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ पैदा हो गया। अब

न तो वह पुरानी बात है और न वह मिज़ाज, अब तो एक नया दौर है और एक नई ज़िन्दगी। मियाँ और बीवी को दुनिया में जन्नत का लुत्फ़ हासिल हो गया। इन दो ख़्वाबों से ऐसा ख़ौफ़ और ऐसी इब्रत हासिल हुई कि पिछली तमाम हरकतें एक दम काफ़ूर हो गईं। अल्हम्दु लिल्लाह ये दो ख़्वाब मेरी हिदायत का ज़रिया बन गये।

पहले सबकी ज़बान पर बुराई ही बुराई रहती थी और अब सबकी ज़बान पर भलाई ही भलाई की आवाज़ें बुलन्द हैं। अड़ोस-पड़ोस और मोहल्ले की औरतें मेरे पास बैठने को, मेरे साथ मेल-जोल को फ़ख़्र का सबब समझती हैं और मुझे बार-बार आकर कहती हैं कि तुम 'फ़ज़ाइले आमाल' और 'बहिश्ती ज़ेवर' से पढ़कर हमको सुनाओ और हमारी नमाज़ सही करा दो।

यह सच है कि अगर औरत हुनरमन्द और दीनदार हो, कम से कम 'बहिश्ती ज़ेवर' समझकर पढ़ ले और माँ-बाप की दुआयें ले तो ख़ाक के घर को पाक कर दे। उसमें चार चाँद लगा दे। जहाँ-जहाँ उसके क़दम पड़ें वहाँ उजाला और रोशनी फैला दे। सलीक़ेमन्द और पर्दे वाली नेक औरत इस दुनिया का नूर है, एक ऐसी अनमोल दौलत है जो दीन और दुनिया में इज़्ज़त व कामयाबी की दौलत से मालामाल कर देती है। ख़ुदा करे मेरी तमाम बहनें ऐसी ही नेक बन जायें और इसी तरह ख़ुशगवार ज़िन्दगी बसर करने लगें।

बहनों को मेरी नसीहत

मैं अपनी बहनों को अपने तर्जुबे की बिना पर नसीहत करती हूँ कि मर्द के अख़्लाक़, मर्द की तन्दुरुस्ती, उसका सुख, ख़ानदान की बेहतरी, इसी तरह इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त और औलाद की बेहतरी यह सब औरत के इख़्तियार में है। वह चाहे तो अपने घर को जन्नत का नमूना बना सकती है।

समझदार बीवी को चाहिये कि कभी तो वह अपने शौहर के लिये

एक नई–नवेली दुल्हन की तरह पेश आये तो किसी वक़्त जाँनिसार साथी की तरह उसके रंज व ग़म में शरीक हो। और किसी वक़्त एक बहादुर मुहाफ़िज़ की तरह उसको दुनियावी उलझनों से बचाने की कोशिश करे तो कभी एक शफ़ीक़ उस्ताद की तरह उसको इस फ़ानी दुनिया की नाजायज़ ख़्वाहिशों और गुनाहों में मुलव्वस होने से बचाये।

मेरी बहनो! याद रखना शौहर ख़ूबसूरत औरत का गुलाम नहीं बनता बल्कि ख़िदमत का जज़्बा रखने वाली औरत का गुलाम बनता है। दिन भर का थका–मांदा शौहर जब शाम को घर आता है तो अपनी ख़िदमत–गुज़ार बीवी को देखकर उसकी सारी थकान ख़त्म हो जाती है। अक़्लमन्द औरत ख़िदमत करके ही अपने शौहर को मरऊब कर सकती है। मरऊब हुआ शौहर अपनी बीवी की हर ख़्वाहिश की क़द्र करता है और उसके किसी मुतालबे को रद्द नहीं करता। ऐसी ही औरतें सुख की ज़िन्दगी बसर करती हैं।

दूसरी मेरी नसीहत यह है कि हदीस शरीफ़ में आता है:

تَهَادُوْا تَحَابُّوْا

हदिया दिया लिया करो तो इससे आपस में मुहब्बत बढ़ेगी।

लिहाज़ा बीवी को चाहिये कि कभी–कभी अपने शौहर को हदिया (यानी तोहफ़े में कोई चीज़) भी दिया करे। मिसाल के तौर उनको पैन पसन्द है तो अपने भाई के ज़रिये मंगवा लिया, और भाई की तरफ़ से या माँ की तरफ़ से हदिया दे दिया। इससे दिलों का कीना दूर होगा और मुहब्बत बढ़ेगी।

मेरी तीसरी नसीहत यह है कि शौहर के दफ़्तर जाते वक़्त और वापसी में आते वक़्त इन दो वक़्तों में अगर औरत होशियारी और सलीक़ेमन्दी से शौहर का साथ दे तो पूरे दिन का निज़ाम सही चलता है। ऐसी बीवी से शौहर बहुत खुश होता है। ऐसी बीवी की शौहर तमन्ना पूरी करता है। अक्सर बहनें इन दो वक़्तों में ग़फ़लत इख़्तियार करती हैं जिसकी वजह से घरों में लड़ाई–झगड़े की फ़िज़ा बन जाती है।

इम्तिहानी पर्चा

आप इन सवालों को ग़ौर से पढ़िये.....कम से कम हर सवाल को तीन बार पढ़िये फिर उसका जवाब दीजिये। अगर जवाब "हाँ" की सूरत में है तो दस नम्बर लगा दीजिये। फिर अपना नतीजा ख़ुद देख लीजिये कि आप "नेक बीवी" के इम्तिहान में पास हुईं (या अल्लाह न करे) फ़ेल हुईं?

1. क्या आप सुबह अपने शौहर से पहले उठकर फ़जर की नमाज़ पढ़कर अपने शौहर और बालिग़ बच्चों को मस्जिद में भेजने के लिये हिक्मत और अच्छे तरीक़े से कोशिश और दुआ करती हैं? कि वे सब मस्जिद में जाकर फ़जर की नमाज़ जमाअत से अदा करें, ताकि अल्लाह तआला की नाराज़गी से पूरा घर बच जाये?

2. क्या आप रात ही को सुबह के लिये शौहर के कपड़े प्रेस वग़ैरह करके तैयार रखती हैं ताकि उनको काम पर जाने से पहले तैयार मिल जायें और सुबह ऐन ज़रूरत के वक़्त ज़रूरत की चीज़ों की तलाश या तैयारी में वक़्त न लगे? या सुबह के वक़्त ऐसी हड़बोंग तो नहीं मची हुई होती कि दफ़्तर जाकर शौहर साहिब को मालूम हुआ कि चश्मा तो मेज़ पर ही भूल गया हूँ। या दुकान पहुँचकर यह याद आया कि दुकान की चाबी तो घर में मेज़ की दराज़ में भूल गया हूँ। लिहाज़ा क्या आप वक़्त से पहले ही तैयारी कर लेती हैं?

3. शौहर जब अल्लाह के रास्ते में दीन फैलाने के लिये और अपनी इस्लाह के लिये जाते हैं तो आप उनका बिस्तर-बैग वग़ैरह तैयार रखती हैं या जब भी वह सफ़र पर जाने का इरादा करते हैं तो आप उनकी सफ़र की ज़रूरियात की तमाम चीज़ें तैयार रखती हैं? या ख़ुदा न करे एयरपोर्ट पर जाकर पता चलता है कि टिकट जिस लिफ़ाफ़े में रखे हैं वो घर में दराज़ में छोड़ आये हैं, या तीन दिन के लिये जमाअत में गये पता चला कि मिस्वाक, सुर्मे की शीशी घर ही भूल आये। लिहाज़ा

आप सफ़र पर जाने से पहले ही उनकी सब चीज़ें तैयार कर लेती हैं?

4. क्या आप अपने बच्चों के मदरसे और स्कूल का घरेलू काम (होम वर्क) खुद करा देती हैं ताकि बच्चों को ट्यूशन की ज़रूरत न पड़े? और माँ की शफ़क़त भी हासिल होती रहे और बच्चे की पढ़ाई और मदरसे में हाज़िरी के एहतिमाम के बारे में भी पता चलता रहे, या सिर्फ़ रोटी-हाँडी में लगकर बच्चों के ज़रूरी मामूलात की जाँच भी शौहर के ज़िम्मे डाल देती हैं, या खुद ही एहतिमाम से इन कामों को अन्जाम दे देती हैं?

5. क्या आप खाने की ऐसी चीज़ें भी तैयार करती हैं जो शौहर को बहुत पसन्द हैं और आपको बिल्कुल पसन्द नहीं। या शौहर और बच्चों को तो पसन्द हैं मगर आपको वे चीज़ें तैयार करते हुए चूँकि देर लगती है इसलिये आप टाल जाती हैं। या शौहर के पास उनके दोस्त व अहबाब बार-बार आते रहते हैं, या वे खुदा की राह में फिरने वाले मेहमानों की दावत करते रहते हैं तो आप उनका पूरा साथ देती हैं?

यानी आप उनको इत्मीनान दिलाती हैं कि आप फ़िक्र न करें मेहमानों को खिलाना बहुत बड़े सवाब की बात है, ख़ास कर अल्लाह की राह में फिरने वाले मेहमानों के लिये खाना पकाना तो मेरी सआदत (सौभाग्य) है। मैं ज़रूर पका लूँगी। क्या आप इसी तरह उनको मुत्मईन करती हैं?

6. क्या आप अपनी सफ़ाई-सुथराई व बनाव-सिंगार का एहतिमाम करती हैं? ख़ास कर जब शौहर घर में हों।

इसी तरह जब शौहर थककर घर में आयें क्या आप इस बात का एहतिमाम रखती हैं कि मेंज़ पर साफ़ गिलास में चाहे सादा पानी ही रखा हो मगर हो ज़रूर, ताकि घर में आते ही किसी बात पर गुस्सा करने से पहले वह सादा ठंडा पानी या रूह-अफ़ज़ा कूइस का शर्बत पियें तो उससे उनके काम की परेशानियाँ ख़त्म हो जायें और उससे उनको खुशी भी हासिल हो कि मेरे लिये कुछ तो एहतिमाम था जो इस बात का

सुबूत है कि मेरा इन्तिज़ार था।

7. आपको शौहर ख़बर दें कि आज मेरी माँ और बहनें घर पर खाना खाने आयेंगी, मैं उनको ज़म-ज़म का नये डिज़ाईन वाला प्रिंट हदिया दे रहा हूँ तो आप फ़ौरन ख़ुशदिली से "मुबारक हो" "बहुत अच्छा" कहती हैं या नहीं? ख़ुदा न करे चुभने वाला जवाब तो नहीं देतीं या कहीं कपड़ों से ज़्यादा सलवटें आपकी पेशानी पर तो नहीं पड़ जातीं?

8. क्या जून-जौलाई में बच्चों की स्कूल की छुट्टियों में या हफ़्ते की छुटियों में आप इस बात का एहतिमाम करती हैं कि ख़ुद जल्दी उठ जायें ताकि शौहर की नींद के वक़्तों में बच्चे ख़लल न डालें या वह किसी गहरी सोच में हैं या परेशानी की हालत में है या दफ़्तर का काम कर रहे हैं या दीनी किताबों का मुताला कर रहे हैं, या ज़िक्र और तिलावते कुरआने करीम कर रहे हैं, कि इन कामों में ख़लल न आये। इसके लिये आप कुछ फ़िक्र करती हैं कि वह ये काम सुकून से अन्जाम दे सकें?

9. बच्चों की सख़्त तकलीफ़देह चीज़ों पर या उनकी बेहूदा हरकतों पर बजाय ज़ोर से चीख़ने या डाँटने या उनको वालिद साहिब से डराने के बजाय क्या उस वक़्त आप सब्र के साथ उनके सर पर हाथ रखकर प्यार से समझाती हैं और ख़ूब उनके लिये दुआ करती हैं, ताकि उनको यक़ीन हो जाये कि यह शफ़ीक़ माँ हमारी इस्लाह ही चाहती है, न कि हम पर ज़ुल्म करना चाहती है। हमको तहज़ीब सिखाना चाहती है, न यह कि हमको दुख देना और सताना चाहती है। या हम पर शफ़क़त व ख़ैर-ख़्वाही ही चाहती है, न यह कि अपना गुस्सा उतारना चाहती है?

10. क्या आप इतनी बहादुर बन चुकी हैं कि शौहर साहिब के नाजायज़ गुस्से के वक़्त आप ख़ामोश रहकर "आईन्दा नहीं होगा, ग़लती हो गई, माफ़ी चाहती हूँ" कहने की हिम्मत रखती हैं? चाहे आपकी ग़लती न हो?

11. क्या आप इस बात का एहतिमाम करती हैं कि शौहर ने जो

कुछ एक बार कह दिया दोबारा कहने की ज़रूरत न पड़े, या उनको शिकायत का मौक़ा न मिल सके कि मैंने यह कहा था क्यों नहीं किया। अगर आपने किसी उज़्र (मजबूरी) की वजह से वह काम नहीं किया तो उनके पूछने से पहले ही बता देती हैं कि मैं इस वजह से नहीं कर सकी, अब कर लूँगी। जैसे उन्होंने कहा था शाम में भिंडी पकाकर रखना, अब ऐन जिस वक़्त भूख की हालत में दस्तरख़्वान पर बैठे और उन्होंने भिंडी माँगी अब आप माज़िरत कर रही हैं। इसके बजाय पहले ही बता दिया कि फ़ुलाँ मजबूरी की वजह से नहीं पका सकी कल इन्शा-अल्लाह पका लूँगी? क्या इस तरह बात करने का सलीक़ा आप जानती हैं?

12. क्या आप अपने बच्चों के सर पर हाथ रखकर उनको दुआयें देती हैं कि अब्दुल्लाह! अल्लाह तुमको हाफ़िज़ व आलिम बनाये। अल्लाह तुमसे ख़ूब दीन का काम ले। अल्लाह तुम्हें हर बला हर मुसीबत से बचाये। अल्लाह तुम्हें हिदायत-याफ़्ता बनाये और दूसरों की भी हिदायत के लिये कोशिश और दुआयें करने वाला बनाये।

फ़रहाना बेटी! अल्लाह तेरी क़िस्मत अच्छी करे। जहाँ जाये अल्लाह तुझे दुनिया व आख़िरत की ख़ुशियाँ दिखाये। अल्लाह तुझे दुनिया व आख़िरत में हमारी आँखों की ठंडक बनाये। क्या आप इस तरह बच्चों को बार-बार दुआयें देती रहती हैं, ताकि ये बच्चे शौहर की निगाह में भी आँखो की ठंडक नूरे-नज़र बनें।

या ख़ुदा न करे आप हर वक़्त डाँटती हैं या तंग आकर बद-दुआयें दे दीं, तो माँ की बद-दुआ से फिर ये बच्चे बाप की निगाह में भी ज़लील शुमार होंगे और समाज में भी ये बच्चे कोई मक़ाम पैदा न कर सकेंगे। लिहाज़ा आप क्या दुआयें देने का एहतिमाम करती हैं?

13. आपको अगर शौहर से कोई बात मनवानी हो जैसे वह बच्चों को वक़्त नहीं देते, उनकी तरबियत का एहतिमाम नहीं करते, सुबह से लेकर शाम तक ज़रिया-ए-रोज़गार की फ़िक्र में लगे रहते हैं,

तो आप उनको समझाने के लिये सलीक़े और हिक्मत से प्यार व मुहब्बत के लहजे में मुनासिब वक़्त और मौक़े का इन्तिज़ार करती हैं या तन्ज़ या डाँटते हुए कहती हैं? और उस वक़्त कहती हैं जब वह आप पर किसी बात पर गुस्सा हुए हों या बच्चा फ़ेल हुआ हो, या वह दुकान से परेशान ही आये हों, अभी घर में क़दम ही रखा हो कि बात और बिगड़ जाये। क्या आप मौक़ा देखकर और मिज़ाज पहचान करके बात करती हैं?

14. अगर आप हामिला (गर्भवती) हैं तो कोशिश करती हैं कि हमल (गर्भ) की सूरत में कोई गुनाह न हो, ख़ुसूसन इस ज़माने में बेपर्दा फिरने और टी. वी. देखने से बहुत ज़्यादा बचती हैं, ताकि इन गुनाहों की नहूसत बच्चे के दिल व दिमाग़ पर न पड़े और पाँच वक़्त की नमाज़ का एहतिमाम करती हैं ताकि इसकी नेकी का असर आने वाली नस्ल पर पड़े और इसी तरह अपने आपको हर ग़म व फ़िक्र से बचाने की पूरी कोशिश करती हैं ताकि उम्मते मुस्लिमा में एक ख़ूबसूरत, सेहतमन्द, ताक़तवर और बहादुर बच्चे का इज़ाफ़ा हो?

15. क्या आप अपने बच्चों के लिये ऐसे खिलौने ख़रीदने का एहतिमाम करती हैं जिनसे उनका शौक़ भी बढ़े और समझ भी बढ़े और उसमें जानदार की तस्वीर और दूसरी कोई शरअन् मना की हुई चीज़ न हो कि जिसके बनाने वाले पर अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान से लानत फ़रमाई है और ख़बरदार किया है कि रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं आते जिसमें तस्वीरें हों?

16. क्या आप अपनी देवरानी जैठानी और भाभी वग़ैरह की ग़ीबत करने से और उनकी आपस की बातें मालूम करने से या अपना दर्जा सास और नन्द के यहाँ बढ़ाने के लिये झूठ बोलने से इसलिये बचती हैं कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त नाराज़ न हो जायें? और इस बात पर ख़ुद भी यक़ीन रखती हैं और दूसरों का भी यक़ीन बन जाये इसकी कोशिश और दुआ करती हैं कि जिससे अल्लाह मियाँ नाराज़ हो जायें

उसकी दुनिया व आख़िरत दोनों बिगड़ती हैं चाहे वह कितना ही राहत व सुकून के साधन और चीज़ों का मालिक हो, लेकिन उसकी ज़िन्दगी परेशानियों और बलाओं, मुसीबतों का मजमूआ बन जाती है। क्या आप अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी से बचने की कोशिश करती हैं? ख़ुसूसन ग़ीबत, हसद, झूठ, चुग़ल-ख़ोरी, नया कपड़ा-ज़ेवर आये तो जान-बूझकर देवरानी जेठानी को जलाने के लिये पहनना, वग़ैरह, इन गुनाहों से बचने का एहतिमाम करती हैं?

17. (!) क्या आपको शौहर जिस वक़्त बुलाये आप उसके पुकारने पर फ़ौरन जी हाँ, जी हाँ कहकर जवाब देती हैं या जान-बूझकर टाल-मटोल करती हैं, या ग़फ़लत व लापरवाही इख़्तियार करती हैं कि अभी आई, अभी आई। या बच्चे को चुप करवाने के बहाने आधा घन्टा लगा दिया, यहाँ तक कि शौहर को नींद आ गई और वह आप से नाराज़ होकर रात गुज़ारते हैं।

(!!) क्या आप बता सकती हैं कि जिस बीवी को शौहर बुलाये और वह न आये तो उसपर कौन लानत भेजता है और कब तक भेजता है?

18. अगर आप ग़ैर-शादीशुदा हैं तो क्या आप इस बात की रोज़ाना दुआ़ करती हैं कि ऐ अल्लाह! मुझे नेक शौहर अ़ता फ़रमा और ऐसा घर अ़ता फ़रमा जिसमें देवरानी, जेठानी, नन्द, सास के साथ रहना न पड़े। इसलिये कि आज के फ़ितने व फ़साद के ज़माने में चन्द औरतों का इकट्ठा रहना ही फ़साद का सबब होता है जिसकी बिना पर न कोई दीन का काम हो सकता है न दुनिया का। हाँ अगर सास-ससुर ख़िदमत के मोहताज हों तो ऐसा मकान नज़दीक हो कि सास-ससुर के लिये खाना तीनों वक़्त भेज सकें। लेकिन बावर्चीख़ाना अलग ही हो इसलिये कि यह चूल्हा ही घरों में आग भड़काता है, तो सास-ससुर की ख़िदमत भी हो जाये और लड़ाई-झगड़े से भी बच जायें। और अगर आप शादीशुदा हैं तो यही दुआ़ अब भी अपने लिये माँगती हैं?

इन सवालात को ख़ूब ग़ौर से पढ़िये फिर इनके जवाबात अपनी

कापी में लिखिये। अगर आपने सब सवालात के जवाबात "हाँ" में दिये तो अल्लाह का शुक्र अदा कीजिये कि अल्लाह तआला ने आपके अन्दर "नेक बीवी" वाली सिफ़ात पैदा फ़रमा दी हैं। अब अल्लाह इसपर इस्तिक़ामत (जमाव) अता फ़रमाये। अब इन सिफ़ात को सारे आलम की मुसलमान बहनों में पैदा करने की कोशिश भी कीजिये और दुआ भी कीजिये कि अल्लाह ये सिफ़ात तमाम मुसलमान बहनों में पैदा फ़रमाये।

और अल्लाह न करे अगर इस इम्तिहान में कोई औरत नाकाम हुई तो यक़ीन रखिये ऐसी औरत जिसमें ये सिफ़ात न हों उससे पनाह माँगी गई है। ऐसी औरत मर्द को बुढ़ापे की उम्र से पहले बुढ़ापे तक पहुँचाने वाली है। लिहाज़ा आज से आप फ़ैसला कर लें कि मुझे अच्छी सिफ़ात अपने अन्दर पैदा करनी हैं।

इसके लिये ख़ूब रो-रोकर अल्लाह तआला से दुआयें माँगें कि ऐ अल्लाह! मेरे अन्दर अच्छी सिफ़ात पैदा फ़रमा दीजिये और जो आपने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बानी औरतों के लिये खुशख़बरी सुनाई है कि जिस औरत का इस हाल में इन्तिक़ाल होगा कि उसका शौहर उससे राज़ी हो, वह जन्नत में जायेगी, तो ऐ अल्लाह! मुझे भी उन खुशनसीब औरतों में से बना कि जिससे आप भी राज़ी हो जायें और मेरा शौहर भी मुझसे राज़ी हो जाये।

✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪

अच्छे अख़्लाक़ को बुरा मत समझो, चाहे वह इसी क़द्र हो कि तुम अपने शौहर से हंसते चेहरे से मिलो।

वसीयत का बयान

हर मुसलमान मर्द व औरत को चाहिये कि वह अपनी वसीयत ज़रूर लिखकर रखे। हदीस शरीफ़ में इसके मुताल्लिक़ ख़ास ताकीद आई है। ख़ास कर अगर किसी के ज़िम्मे नमाज़ें क़ज़ा हैं, हज वाजिब है, सालों से सोने की ज़कात अदा नहीं की तो इस सूरत में वसीयत-नामा न लिखना एक मुस्तक़िल गुनाह है। जब तक वसीयत नामा न लिखेगा उस वक़्त तक यह गुनाह होता रहेगा। इसलिये फ़ौरन आज ही हम लोगों को अपना वसीयत-नामा लिख लेना चाहिये।

वसीयत लिखने की तफ़सील और इसका लिखने का तरीक़ा "तरीक़ा-ए-वसीयत" में देख लीजिये। बीवी अपने शौहर के लिये कैसे वसीयत लिखें और शौहर अपनी बीवी के लिये कैसे वसीयत लिखे, यहाँ हम यह ज़िक्र करते हैं, ताकि अल्लाह तआला हम सबको बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी की पाबन्दी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और मौत आने से पहले मौत की तैयारी नसीब फ़रमाये। आमीन

नेक शौहर की अपनी बीवी को वसीयत

ग़ाज़ी अनवर पाशा, तुर्की के उन बुलन्द-रुतबा मुजाहिदों में से थे जिन्होंने अपनी सारी उम्र इस्लाम के दुश्मनों के साथ जिहाद में ख़र्च की, और आख़िरकार रूसी बालशोयाकें से लड़ते हुए शहादत का जाम नोश किया। उन्होंने अपनी शहादत से सिर्फ़ एक दिन पहले एक ख़त अपनी बीवी शहज़ादी बख़िया सुल्ताना के नाम रवाना किया था जो उन्होंने तुर्की के अख़बारों में शाया करा दिया, और वहीं से तर्जुमा होकर 22 अप्रैल 1923 ई० के हिन्दुस्तानी अख़बारों में शाया हुआ। यह ख़त इस क़द्र वल्वला पैदा करने वाला और सबक़-आमोज़ है कि हर नौजवान को पढ़ना चाहिये। नीचे हम उसका तर्जुमा पेश करते हैं:

"मेरी जीवन-साथी और सरमाया-ए-ऐश व सुरूर प्यारी बख़िया!

ख़ुदा-ए-बुज़ुर्ग व बरतर तुम्हारा निगहबान है। तुम्हारा आख़िरी ख़त

इस वक़्त मेरे सामने है। यक़ीन रखो तुम्हारा यह ख़त हमेशा मेरे सीने से लगा रहेगा। तुम्हारी सूरत तो देख नहीं सकता, मगर ख़त की सतरों और हुरूफ़ में तुम्हारी उंगलियाँ हरकत करती नज़र आ रही हैं। जो कभी मेरे बालों से खेला करती थीं। ख़ैमे के इस धुंधलके में कभी-कभी तुम्हारी सूरत भी निगाहों में फिर जाती है।

आह! तुम लिखती हो कि मैं तुम्हें भूल बैठा हूँ और तुम्हारी मुहब्बत की कुछ परवाह नहीं की! तुम कहती हो कि मैं तुम्हारा मुहब्बत भरा दिल तोड़कर इस दूर-दराज़ मक़ाम में आग और ख़ून से खेल रहा हूँ और ज़रा परवाह नहीं करता कि एक औरत मेरी जुदाई में रात भर तारे गिनती रहती है।

तुम कहती हो कि मुझे जंग से मुहब्बत है और तलवार से इश्क़, लेकिन यह लिखते वक़्त तुमने बिल्कुल न सोचा कि तुम्हारे ये लफ़्ज़ जो यक़ीनन तुम्हारी सच्ची मुहब्बत ने लिखवाये हैं, मेरे दिल का किस तरह ख़ून कर डालेंगे। मैं तुम्हें किस तरह यक़ीन दिला सकता हूँ कि दुनिया में मुझे तुमसे ज़्यादा कोई महबूब नहीं। तुम ही मेरी तमाम मुहब्बतों की आख़िरी हद हो, मैंने कभी किसी से मुहब्बत नहीं की, लेकिन एक तुम ही हो जिसने मेरा दिल मुझसे छीन लिया है।

फिर मैं तुमसे जुदा क्यों हूँ राहते जान! यह सवाल तुम बजा तौर कर सकती हो।

सुनो! मैं तुमसे इसलिये जुदा नहीं हूँ कि माल व दौलत का तालिब हूँ। इसलिये भी जुदा नहीं हूँ कि अपने लिये एक तख़्ते शाही क़ायम कर रहा हूँ जैसा कि मेरे दुश्मनों ने मश्हूर कर रखा है। मैं तुमसे सिर्फ़ इसलिये जुदा हुआ हूँ कि अल्लाह तआला का फ़र्ज़ मुझे यहाँ खींच लाया है। जिहाद-फ़ी-सबीलिल्लाह (अल्लाह के रास्ते में जिहाद) से बढ़कर कोई फ़रीज़ा नहीं। यही वह फ़र्ज़ है जिसकी अदायगी की नीयत ही इनसान को फ़िरदौसे बरीं (जन्नत) का हक़दार बना देती है।

अल्हम्दु लिल्लाह कि मैं फ़र्ज़ की महज़ नीयत ही नहीं रखता बल्कि

उसे अमली तौर पर अन्जाम दे रहा हूँ। तुम्हारी जुदाई हर वक़्त मेरे दिल पर आरे चलाया करती है, लेकिन मैं इस जुदाई से बेहद खुश हूँ क्योंकि तुम्हारी मुहब्बत ही एक ऐसी चीज़ है जो मेरे अ़ज़्म व इरादे के लिये सबसे बड़ी आज़माईश हो सकती है। अल्लाह तआ़ला का हज़ार हज़ार शुक्र है कि मैं इस आज़माईश में पूरा उतरा और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत और हुक्म को अपनी मुहब्बत और नफ़्स पर मुक़द्दम रखने में कामयाब हो गया। तुम्हें भी खुश होना और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिये कि तुम्हारा शौहर इतना मज़बूत ईमान रखता है कि खुद तुम्हारी मुहब्बत को भी अल्लाह की मुहब्बत पर कुरबान कर सकता है। तुम पर तलवार से जिहाद फ़र्ज़ नहीं, लेकिन तुम भी फ़रीज़ा-ए-जिहाद से अलग नहीं हो।

कोई मुसलमान मर्द हो या औ़रत, जिहाद से अलग और बाहर नहीं। तुम्हारा जिहाद यह है कि तुम भी अपने नफ़्स व मुहब्बत पर उसकी मुहब्बत को मुक़द्दम रखो। अपने शौहर के साथ हक़ीक़ी मुहब्बत के रिश्ते को और भी मज़बूत करो।

देखो! यह दुआ़ हरगिज़ न माँगना कि तुम्हारा शौहर मैदाने जिहाद से किसी तरह सही व सलामत तुम्हारी आग़ोशे मुहब्बत में वापस आ जाये। यह दुआ खुदग़र्ज़ी की दुआ़ होगी और खुदा को पसन्द नहीं आयेगी। अलबत्ता यह दुआ़ करती रहो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे शौहर का जिहाद क़बूल फ़रमाये, उसे कामयाबी के साथ वापस लाये वरना शहादत का जाम उसके लबों से लगाये। वे लब जो तुम जानती हो शराब से कभी नापाक नहीं हुए बल्कि हमेशा तिलावत व ज़िक्रे इलाही से सरशार रहे हैं।

प्यारी बख़्रिया! आह वह घड़ी कैसी मुबारक होगी जब अल्लाह तआ़ला की राह में यह सर जिसे तुम ख़ूबसूरत बताया करती थीं, तन से जुदा होगा। वह तन जो तुम्हारी मुहब्बत की निगाहों में सिपाहियों का नहीं नाज़नीनों का सा है। अनवर की सबसे बड़ी आरज़ू यह है कि

शहीद हो जाये और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ उसका हश्र हो। दुनिया चन्द रोज़ा है, मौत यक़ीनी है, फिर मौत से डरना कैसा? जब मौत आने ही वाली है तो फिर आदमी बिस्तर पर पड़े-पड़े क्यों मरे? शहादत की मौत, मौत नहीं ज़िन्दगी है। कभी ख़त्म न होने वाली ज़िन्दगी!

बख़िया! मेरी वसीयत सुन लो! अगर मैं शहीद हो जाऊँ तो तुम अपने देवर नूरी पाशा से शादी कर लेना, तुम्हारे बाद मुझे सबसे ज़्यादा अज़ीज़ (प्यारा) नूरी है। मैं चाहता हूँ कि मेरे सफ़रे आख़िरत के बाद वह ज़िन्दगी भर वफ़ादारी से तुम्हारी ख़िदमत करता रहे।

मेरी दूसरी वसीयत यह है कि तुम्हारी जितनी औलाद हो सबको मेरी ज़िन्दगी के हालात सुनाना और सबको मैदाने जिहाद में इस्लाम व वतन की ख़िदमत के लिये भेज देना। अगर तुमने यह न किया तो याद रखो मैं जन्नत में तुमसे रूठ जाऊँगा।

मेरी तीसरी वसीयत यह है कि मुस्तफ़ा कमाल पाशा की हमेशा ख़ैरख़्वाह रहना। उनकी हर मुम्किन मदद करती रहना, क्योंकि इस वक़्त वतन की निजात अल्लाह ने उनके हाथ में रख दी है।

अच्छा प्यारी बख़िया रुख़सत! न मालूम क्यों मेरा दिल कहता है कि इस ख़त के बाद तुम्हें फिर कभी ख़त न लिख सकूँगा। क्या अजब है कि कल ही शहीद हो जाऊँ, देखो सब्र करना......मेरी शहादत पर ग़म खाने के बजाय खुश होना कि मेरा अल्लाह की राह में काम आ जाना तुम्हारे लिये गर्व और फ़ख़्र का सबब है।

बख़िया! रुख़सत होता हूँ और अपने ख़्याल की दुनिया में तुम्हें गले लगाता हूँ। इन्शा-अल्लाह जन्नत में मिलेंगे और फिर कभी जुदा न होंगे।

तुम्हारा अनवर

(तुर्काने अहरार से नक़ल किया गया)

यहाँ यह स्पष्ट रहना ज़रूरी है कि इस ख़त के लिखने के वक़्त मुस्तफ़ा कमाल पाशा सिर्फ़ एक मुजाहिदे इस्लाम की हैसियत से मशहूर

थे और उन्होंने तुर्की में वो इस्लाम के ख़िलाफ़ क़दम नहीं उठाये थे जो बाद में पेश आये।

नेक बीवी की अपने शौहर के लिये वसीयत

1. इसी तरह मुसलमान बीवी को चाहिये कि अपने शौहर से माफ़ी माँगे और शौहर को जितना सताया है या उसका दिल दुखाया है, या उसके हुक़ूक़ अदा करने में कोताही की है उससे ज़्यादा उसको खुश करने की सआदत हासिल करे। इसलिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है-

"जिस औरत का इस हाल में इन्तिक़ाल हो कि उसका शौहर उससे राज़ी है तो वह जन्नत में दाख़िल होगी"।

लिहाज़ा वैवाहिक ज़िन्दगी में जो बीवी होने की हैसियत से ग़लतियाँ कोताहियाँ हुईं उनकी माफ़ी तलब करके शौहर से माफ़ी माँगे, और आईन्दा शौहर को खुश करने की भरपूर कोशिश करे। हाँ जिन चीज़ों को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है, अगर शौहर उनके करने का, या जिन कामों के करने का उन्होंने हुक्म दिया है, शौहर उनसे रोके तो शौहर की हरगिज़ बात न माने, और शौहर के हुक़ूक़ पहचाने और अदा करने के लिये बहिश्ती ज़ेवर व तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन इन दो किताबों का ज़रूर मुताला करे।

2. इसी तरह अल्हम्दु लिल्लाह नाखुन पालिश लगाने की मुझे आदत नहीं है, और अगर कभी लगाई भी तो वुज़ू और गुस्ल से पहले पालिश साफ़ कर लेती हूँ लेकिन अगर मेरी मौत इसी हालत में आ जाये तो गुस्ल देने से पहले नाखुन पालिश छुड़ा देना। इसलिये कि बग़ैर नाखुन पालिश छुड़ाये न गुस्ल सही होगा और न ही नमाज़े जनाज़ा सही होगी, इसलिये इसका ख़ास ख़्याल रखना।

नेक बीवी अपने बेटों, पोतों, नवासों वग़ैरह को हाफ़िज़े कुरआन और आलिमे बा-अमल बनाने की और लड़कियों, पोतियों, नवासियों को

भी दीनदार बनाने की और अ़रबी ज़बान सीखने और सिखाने की तरग़ीब देती रहे और अपनी वसीयत में यह बात ज़रूर लिखे।

अपने बेटों और बेटियों को अगर वे बड़े हो चुके हैं तो वसीयत कर जायें कि मैं ख़ुद तुमको आ़लिम-हाफ़िज़ न बना सकी, यह मेरी ग़लती थी, अब तुम अपनी औलाद को ज़रूर हाफ़िज़ और आ़लिम बनाना। दीन का दाई और उसका सच्चा ख़ादिम बनाना।

और अगर ख़ुद अपनी औलाद में भी अभी छोटे बेटे हैं तो उनको हाफ़िज़ बनाने की कोशिश करें और वसीयत लिखकर छोड़ जायें कि तुम लोग जब बड़े हो जाओ और मैं दुनिया में न रहूँ तो इसको पढ़कर माँ की वसीयत पर अ़मल करना और ख़ुद हाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिम, मुफ़्ती, दीन का दाई (दावत देने वाला) मुजाहिद बनना, और दीन को सारे आ़लम में फैलाने और चमकाने वाला बनना।

और बेटा! अल्लाह का कलिमा सारे कलिमों पर बुलन्द हो जाये इसके लिये ज़िन्दगी भर मेहनत करना और यही मेहनत करते-करते तुम्हारी मौत भी वाक़ेअ़ हो तो भी यह बहुत मुबारक है। अल्लाह करे कि दीन फैलाते-फैलाते तुम्हारी क़ब्रें भी दुनिया के दूर-दराज़ इलाक़ों में बनना मुक़द्दर हों। आमीन

3. मेरी वफ़ात के बाद आप दिल के सुकून और घर के इन्तिज़ाम की ख़ातिर दूसरा निकाह ज़रूर कर लीजियेगा और ख़ास कर गुनाह के ख़तरे से बचने के लिये तो ज़रूर इसका एहतिमाम कीजियेगा।

"मगर यह याद रखियेगा कि मेरे बच्चे नई आने वाली के फ़िक्री टेढ़ेपन का निशाना बनकर ज़ुल्म व सितम का शिकार न होने पायें और यह तो आप मुझसे ज़्यादा समझते हैं।"

4. मेरे लिये मसनून तरीक़े पर दुआ़ओं और ईसाले सवाब करने की कोशिश करना।

5. मेरे शनाख़्ती कार्ड या पासपोर्ट के फ़ोटो ज़ाया कर दीजियेगा या लापरवाही से मैंने किसी और मौक़े पर अपनी तस्वीर खिंचवाई हो तो

उसको भी ज़ाया कर दें ताकि मेरी वफ़ात के बाद मेरा गुनाह ज़िन्दा न रहे।

6. बच्चे निकाह की उम्र को पहुँच जायें तो ख़ानदान के बड़ों के मश्विरे से और बच्चों की रज़ामन्दी का भी ख़्याल रखकर और इस्तिख़ारा करके सादगी से निकाह कर देना, और लड़कियों के बारे में ख़ुसूसन कुछ तर्जुबा व सलीक़ा देखकर निकाह करना।

और याद रखिये! हमारे दामाद दीनदार होने चाहियें इसलिये कि जिसका अल्लाह से ताल्लुक़ सही हो उसकी दुनिया व आख़िरत संवर जाती हैं, इसलिये दीनदार दामाद ढूँढ़ने की कोशिश कीजियेगा।

हाँ एक बात याद रखियेगा, बहुओं के लिये तो उनकी शादी के फ़ौरन बाद ही अलग रिहाईश का बन्दोबस्त कर दीजियेगा कि इस ज़माने में बहू का सगी सास से ही निबाह एक मुश्किल मर्हला है, कहाँ यह कि आने वाली बहू की सास भी अगर सौतेली हो तो बिल्कुल ही मिज़ाज न मिलने की बिना पर न दिन का चैन रहेगा और न रात का आराम, और इस चक्की में पिसने वाला हमारा लख़्ते-जिगर ही होगा।

लिहाज़ा निकाह की सादी तक़रीब आयोजित करके और दीगर फ़ुज़ूल चीज़ों से रक़म बचाकर यही रक़म बेटे बहू के लिये अ़लैहदा रिहाईश का बन्दोबस्त करने पर इस्तेमाल कर दीजियेगा, इसके बेहतर नतीजे को आप ख़ुद भी देखेंगे। वस्सलाम

आपकी बीवी

आख़िरी गुज़ारिश

हर मुसलमान मर्द व औरत को चाहिए कि किताब "तरीक़ा-ए-वसीयत" पढ़कर अपनी वसीयत ज़रूर लिखें।

बेटी की रुख़सती

अभी कल तक थीं जिन माँ-बाप की लख़्ते जिगर बेटी
वही करते हैं अब रुख़सत तुम्हें बा-चश्मे तर बेटी
नज़र का नूर थीं, आँखों की ठंडक चाँदनी घर की
तुम्हें कहते थे जाने मादर व जाने पिदर बेटी
भुला दो दिल से अब माँ-बाप के घर की मुहब्बत को
न जाओ इस तरह से तुम मैके से बा-चश्मे तर बेटी
ख़ुशी से अपने घर जाकर फूलो-फलो
नसीहत बाप की यह याद रखो मगर बेटी
अज़ल से शेवा-ए-सब्र व रज़ा बेटी की फ़ितरत है
न टपके आँख से हर चन्द हो ख़ूने-जिगर बेटी
जो कुछ इस ज़िन्दगी में पेश आये उसको सह लेना
अभी तक तो ग़मे हस्ती से तुम बेख़बर थी बेटी
ख़ुशी से सब्र से बारे-ग़म व कुलफ़त उठा लेना
बना लेना मुहब्बत से दिलों में सबके घर बेटी
रहे पेशे-नज़र हर वक़्त, हर शै पर मुक़द्दम हो
रज़ा-जोई रफ़ीक़े ज़िन्दगी की उम्र भर बेटी
बना लेना दिल व जान से उसी को उस्वा-ए-हस्ती
मिले हैं मक्तबे मादर से जो दर्से हुनर बेटी
वतन में जिसकी इज़्ज़त का हमेशा पास रहता था।

(यह्या आज़मी)

बाप की तड़प बेटी के लिये

ऐ लख़्ते-जिगर ऐ मेरे माह पारे
ऐ बेटी मेरे दिल के रोशन सितारे
तेरी वालिदा की यह हालत है बेटी
कि रोती है छुप-छुपके घर में अकेली

नहीं दिल बहलता है बहलायें क्योंकर
रखें किस तरह कलेजे पे पत्थर

यहाँ तूने पहने फटे और पुराने
कि गुज़रे हैं ऐसे भी अक्सर ज़माने

कभी भूखा-प्यासा भी रहना पड़ा है
कभी सख़्त और सुस्त तुझको कहा है

हर इक बार ख़िदमत का तूने उठाया
मगर तेरे चेहरे पे बल तक न आया

खुदा के लिये अपना दिल साफ़ रखना
जो गुज़री हैं तक़लीफ़ें वो माफ़ करना

मगर अब शरीअ़त से मजबूर हैं हम
यह हुक्मे खुदा है कि माज़ूर हैं हम

तुझे आज कुदरत ने यह दिन दिखाया
तुझे तेरी बहनों ने बापर्दा दुल्हन बनाया

मुबारक हो ससुराल जाना मुबारक
शरीअ़त से शौहर को पाना मुबारक

मगर चन्द बातें मेरी याद रखना
कभी उफ़ न करना अगर दुख भी सहना

न घबराना तूफ़ाने-बातिल से डरकर
क़दम हक़ की जानिब तू रखना संभल कर

कभी हुक्मे शौहर से ग़फ़लत न करना
सदाक़त से जीना शरीअ़त पे मरना

मुहम्मद के पैग़ाम पे दिल से चलना
ग़रीबों फ़क़ीरों से नफ़रत न करना

नमाज़ और रोज़ा वो फ़रमान हक़ के
न छूटे कभी जान कर बेटी तुझसे

शिकायत का मौक़ा किसी को न देना
कभी भूलकर भी तू चुग़ली ग़ीबत न करना

रहेगा तेरे दर पे दामाने रहमत
तेरी गोद बच्चों से भर देगी कुदरत

तेरे साये में जब ये बच्चे पलेंगे
तो मज़हब की राह के मुजाहिद बनेंगे

ये दीन और दुनिया में उजाला करेंगे
ये तौक़ीरे मिल्लत दोबाला करेंगे

मुबारक हो तुझको अपना घर बनाना
मुबारक हो शौहर की गलियाँ बसाना

जुदा तुझको करना गवारा नहीं है
मगर हुक्मे-कुदरत में चारा नहीं है

(यह्या आज़मी)

हज़रत सैयद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की बेटी की बिदाई

ग़मगीन माँ की ज़बान से

ऐ लख़्ते दिल! लख़्ते जिगर		माँ बाप की नूरे नज़र
ऐ मेरे घर की चाँदनी		आँखों की ठंडी रोशनी
ना-आशना-ए-दर्द व ग़म		परवुर्दा-ए-नाज़ व निअ़म
इफ़्फ़त के ख़ातम की नगीं		लख़्ते दिल जन्नत नशीं
जान सैयदे मरहूम की		और मादरे मग़मूम की
पाती थी तुझको तस्कीने-जान		तुमसे मगर ग़मदीदा माँ
घर भर की दिल आरा थीं तुम		और आँख का तारा थीं तुम
करते हैं अब रुख़्सत तुम्हें		ऐ माया-ए-राहत तुम्हें
यह सेहन यह घर छोड़ कर		जाती हो तुम अब और घर
तुम पर ख़ुदा की ख़ैर हो		अब तुम मताअ़े ग़ैर हो
उफ़ वक़्ते रुख़्सत आ गया		हंगामे फ़ुर्क़त आ गया
आँखों में है सैलाबे ग़म		है आस्तीं अश्कों से नम
उफ़ है यही रस्मे जहाँ		क्या कीजिये ऐ लख़्ते जाँ
बेटी यही दस्तूर है		हर माँ बाप मजबूर है
तुम हो पराये घर की शै		ऐ दुख़्तरे फ़रख़न्दा पै

अल्लाह तआ़ला बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमाये हर मुसलमान बहन को जो इस किताब को ख़ुद भी पढ़े और पढ़ने के बाद दूसरी बहनों को भी इसको पढ़ने की तरफ़ तवज्जोह दिलाये।

बेटी को बाप की दुआ

बेटी! तुझे हस्ती के ये अय्याम मुबारक
इक ज़िन्दगी-ए-नौ का यह पैग़ाम मुबारक
जिनसे है तेरे एक दौर का आग़ाज़
तुझको वो नई सुबह नई शाम मुबारक
तेरे लिये युम्न-व-सआदत की है तम्हीद
तुझको वो तक़रीब ख़ुश-अन्जाम मुबारक
दर असल है तक़दीरे इलाही का यह फ़ैज़ान
तक़दीरे इलाही का यह पैग़ाम मुबारक
सद शुक्र है क़िस्मत तेरी वाबस्ता-ए-इस्लाम
ऐ जाने पिदर हो तुझे इस्लाम मुबारक
हर चन्द जुदाई की यह साअ़त है ग़म-अंगेज़
माँ-बाप से रुख़सत का यह हंगाम मुबारक
हसरत से हर एक ज़र्रा तुझे देख रहा है
यह फ़ुर्क़ते दीवार व दर-व-बाम मुबारक
बा-दीदा-ए-नम जिसमें क़दम तूने है रखा
उस मन्ज़िले हस्ती का हर एक गाम मुबारक
कल तक जो तेरा घर था वो छूट रहा है
तुझको नये घर के दर-व-बाम मुबारक
मैके की हर शफ़क़त-व-उलफ़त भुलाकर
इस घर की हर एक कुल्फ़त व आराम मुबारक
माँ-बाप की इज़्ज़त का रहे लख़्ते-जिगर पास
फ़ितरत तेरी मासूम, तेरा नाम मुबारक
रास आये तेरी ज़ीस्त को यह रिश्ता-ए-इस्लाम
या रब हो इस आग़ाज़ का अन्जाम मुबारक

रुख़सत अब ये दीवार व दर		जाओ खुशी से अपने घर
तुमपर अभी तक लख़्ते जाँ		सदके थे भाई और माँ
यह घर तुम्हारा घर रहा		मामूर बाम व दर रहा
अब तुम हो इदराके ग़म नया		दुनिया नई आलम नया
सुन लो इसे ऐ लख़्ते जाँ		कहती है जो नाशाद माँ
हो नक़्शे-दिल पे जाविदाँ		इसको बना लो हिरज़े जाँ
है जो रफ़ीके ज़िन्दगी		और हम तरीके ज़िन्दगी
लाज़िम है अब उसकी रज़ा		बाद अज़ रज़ाहा-ए-खुदा
कहते हैं हम ख़िदमत जिसे		हमदर्दी-ए-उलफ़त जिसे
है हासिले इन्सानियत		है ज़ेवरे निस्वानियत
इसका पेशा पास हो		इस फ़र्ज़ का एहसास हो
मद्देनज़र हो रोज़ व शब		हुस्ने अदब हुस्ने अमल
उस पर रहे हर दम नज़र		सीखे हैं जो इल्म व हुनर
ताअ़त में सरगर्मी रहे		अख़्लाक़ में नर्मी रहे
हो शिकवा-ए-ग़म ना-रवा		सीरत में हो सब्र व रज़ा
शीरीं नवाई की हो ख़ू		हो नरम तर्ज़े गुफ़्तगू
पेशे नज़र हो जाविदाँ		ख़ुशनूदी -ए- ख़ुर्द-व-कलाँ
हर लहज़ा हर दम जब रहे		है फ़ख़्र के क़ाबिल यही
बस ख़त्म अब यह दास्ताँ		लो अब दुआ ऐ हफ़्सा व फ़रहान
फूलो-फलो और शाद, रहो		घर जाके तुम आबाद रहो

बीवी शौहर की कब्र पर

निहायत बेतकल्लुफ़ थे निहायत बेवफ़ा निकले
मसीहा-ए-दिल बीमार थे पीके कज़ा निकले

खड़ी हूँ मैं सरे-मद्फ़न मगर ज़ेरे-ज़मीं तुम हो
मेरी पर्दा-नशीनी के एवज़ पर्दा नशीं तुम हो

मुझे ताने दिया करते थे मेरी बेवफ़ाई के
नहीं सुनते मगर शिकवे भी अपनी कज्अदाई के

चलो बस हो चुका छोड़ो भी आदत रूठ जाने की
मुझे भी आज़माया मैं तो ख़ूगर थी मनाने की

मुझे इल्ज़ाम देते थे निज़ामे ख़ानादारी पर
ज़रा देखो तो चलकर घर का सारा हाले अब्तर

मुझे हर सुबह बच्चों के लिये करते थे फ़हमाईश
नहीं ऐ भूलने वाले अब उनकी फ़िक्रे आसाईश

किसी बच्चे के रोने की अगर आवाज़ पाते थे
अगर मौजूद होते थे परेशाँ होकर आते थे

तुम्हारे गुस्सा-ए-बेजा पर हंस देती थी मैं अक्सर
चले जाते थे तुम झेंपे हुए कुछ यूँही फ़रमा कर

कभी पूछो कि अब क्या हाल है उन नाज़नीनों का
हुआ क्या रंग व रूप उन लाडले ज़ोहरा जबीनों का

तुम्हारे सामने बच्चे बिगड़कर लौट जाते थे
उठाकर साफ़ करते और सीने से लगा लेते थे

वही बच्चे हैं लेकिन आह ख़ाक-आलूद रहते हैं
गिरेबाँ चाक है दामन पे अश्क आँखों से बहते हैं

तुम्हें कितना शग़फ़ रहता था बच्चों की सफ़ाई का
कभी देखो भी उठकर हाल उनकी बेनवाई का

तुम्हें सूझा है किस मौक़े से सोना कुंजे-उज़लत में
यही नींदें अगर ठहरीं तो जागोगे क़ियामत में

न तुमको सोके उठना है न जागेगा नसीब अपना
तुम्हारे पायंती मर्क़द बनेगा अन्क़रीब अपना

मेरा गुस्सा तुम्हारा ज़ब्त करना याद आता है
तसव्वुर है! कि पहरों ख़ून के आँसू रुलाता है

निगाहें याद हैं जो इल्तिजायें साथ लायी थीं
तमन्नाओं की दुनिया दिल-नशीं होकर जगाई थीं

कहाँ हो! हाय तुम, अच्छा नहीं लगता कहीं मुझको
जो आँखें मूँद लीं तुमने नज़र आता नहीं मुझको

मेरी आँखें मुनव्वर थीं तुम्हारी आँख के ज़ू से
क़मर ताबाँ है जैसे नय्यरे-ताबाँ के प्रतव से

मेरी रंगीनियाँ सौ-सौ तरह से तुमने देखी हैं
वही मैं हूँ! मगर बेरंगियाँ अब बेवगी की हैं

रुका जाता है दम, राज़े-नहानी कह नहीं सकती
लगी है आग कुछ ऐसी कि चुप भी रह नहीं सकती।

✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪

अब हम अपनी किताब को ख़त्म करते हैं और आपसे गुज़ारिश करते हैं कि इस किताब से आपको जो भी फ़ायदा हासिल हुआ तो आप हमें भी अपनी दुआओं में ज़रूर याद रखिये। और सारी मुसलमान बहनों के लिये भी दुआयें करें कि उनको ऐसा बना दे जैसा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया है। और इस किताब को पढ़ने के बाद अपनी बहनों, सहेलियों को बच्चियों को भी इन्हीं सिफ़ात की तर्ग़ीब दीजिये, और इस किताब को पढ़ने के बाद दूसरी किसी मुसलमान बहन को दे दीजिये कि उसको भी फ़ायदा हो।

ऐसा न हो कि अलमारी में रखे-रखे बोसीदा हो जाये और किसी मुसलमान बहन के काम न आये। अब मज्लिस ख़त्म होने की यह दुआ पढ़ लीजिये और इसको याद भी कर लीजिये। हर मज्लिस से उठने के बाद यह दुआ पढ़ लेने से उस मज्लिस में जो ग़लती कोताही हो गई हो तो उसका कफ़्फ़ारा (गुनाह को धोने वाला) हो जायेगा।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ نَسْتَغْفِرُكَ

اَللّٰهُمَّ وَنَتُوْبُ اِلَيْكَ.

सुब्हानकल्लाहुम्-म व बि-हम्दि-क नश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त नस्तग़फ़िरु-क अल्लाहुम्-म व नतूबु इलैक।

व सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अला आलिही व अस्हाबिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यातिही अज्मईन।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आपकी ज़ात तमाम ऐबों से पाक है। आप ही तमाम तारीफ़ों के मुस्तहिक़ हैं। हम गवाही देते हैं कि आपके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और आप ही से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं, और आप ही की तरफ़ रुजू करते हैं। और ऐ अल्लाह! रहमत फ़रमा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी आल पर और उनके तमाम सहाबा पर।

अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

ऐ मेरी समीरा बताती हूँ तुझे
चन्द बातें सुनाती हूँ तुझे
ज़ख़्मे दिल अपना दिखाती हूँ तुझे
क़ौल ज़र्री हैं ब-वक़्ते अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

परवरिश करते हैं माँ-बाप ही
मुश्किलें भी झेलते हैं वे सभी
पर जुदाई की घड़ी रुकती नहीं
दिल पे पत्थर रखकर कहते हैं अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

तू समझना सास को माँ आज से
रखना खुश तुम अपने काम और काज से
ज़िक्र जब भी हो तेरा हो नाज़ से
है मेरा कहना ब-वक़्ते अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

तुम खुसर के मत अदब को भूलना
सामने उनके न मुँह को खोलना
मीठी बोली हर किसी से बोलना
कह रही हूँ मैं ब-वक़्ते अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

एला-ए-कलिमतुल्लाह को अपना मक़सदे ज़िन्दगी बनाना
अपने शौहर और बेटों को राहे खुदा में भेजना
खुद भी मेहरम मस्तूरात की जमाअतों में जाना
कह रही हूँ मैं ब-वक़्ते अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

ज़िन्दगी का मक़सद होता है तमाम
कर सके गर तू शौहर का एहतिराम
उसकी हाँ में हाँ मिलाना नेक-नाम

करती हूँ यह इल्तिजा, जा! अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

सीरत व अस्मत तेरे ज़ेवर रहें
ख़न्दा-ज़न हर दम तेरे तैवर रहें
ख़ुश तेरी सब नन्दें और भाभियाँ रहें

दिल में सारी बातें लिख ले, अलविदा
अलविदा ऐ ज़ाने मादर अलविदा

तू समझना उनकी इज़्ज़त शान को
तोड़ना हरगिज़ न उनके मान को
कम न करना जेठानी की शान को

देवरानी तुझको हो प्यारी सदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

प्यार से करते रहे वह परवरिश
की अदा हज़रत ने इस्लामी रविश
आया आख़िर वक़्त, सुन ऐ महविश

फ़ातिमा को कह दिया घर से अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

ऐ मेरी प्यारी दुलारी लाडली
बाप की इज़्ज़त है तेरे हाथ में
लाज रखना माँ के इस उपदेश की

इन उम्मीदों पर हूँ कहती अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

हफ़्सा! दुनिया व आख़िरत में फूलती-फलती रहो
आक़िला व दीनदार बनकर हमेशा ख़ुश रहो
ख़ुश रखो तुम सास, शौहर, ख़ुसर को
तेरी माँ भी कह रही है अलविदा
अलविदा ऐ जानें मादर अलविदा

ऐ मेरी फ़रहाना! सुन ग़ौर से
न मिलेगी बात यह कहीं और से
पढ़ती रहना तुम नमाज़ें सही तौर से
तेरी माँ भी कह रही है अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

मर्दाना महफ़िल, फ़ोटो मूवी से रहना हमेशा जुदा
नामेहरमों और ग़ैरों से करना पर्दा सदा
नजूमी, झूठे पीरों से बचना ख़ुदा रा
तेरे अब्बा भी कह रहे हैं अलविदा
अलविदा ऐ जाने मादर अलविदा

✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪✪

हमारी कुछ हिन्दी किताबें

फ़रिश्तों के अज़ीब हालात

इस किताब के अन्दर फ़रिश्तों की तारीख़, उनकी ज़िम्मेदारियों, उनकी इबादात, उनके जिस्मानी आकार, दिलचस्प वाक़िआत को बहुत ही उम्दा अन्दाज़ में बयान किया गया है। फ़रिश्तों के मोतबर हालात जानने के इच्छुक हज़रात के लिये यह किताब एक तोहफ़ा है।

फ़रीद बुक डिपो देहली ने इस किताब का उर्दू से हिन्दी में तर्जुमा कराया है ताकि हिन्दी जानने वाले हज़रात इतनी अहम और मालूमाती किताब से मेहरूम न रहें।

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

तोहफ़ा-ए-ख़्वातीन

यह किताब औरतों के लिये निहायत ज़रूरी है। हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद आशिक़ इलाही साहिब (मुहाजिरे मदनी) ने इस किताब को लिखा है। हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी ने इस किताब को औरतों के लिये एक बहुत ही मुफ़ीद किताब क़रार दिया है। इस किताब के अन्दर ईमान, पाकी, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और सदक़े वग़ैरह के ज़रूरी मसाईल को असाना अन्दाज़ बयान किया गया है।

औरतों से संबन्धित तमाम दीनी और दुनियावी मसाईल और बातों के जानने के लिये यह इस ज़माने की बहुत ही मक़बूल किताब है।

फ़रीद बुक डिपो देहली ने इस किताब की ज़रूरत व अहमियत को देखते हुए उर्दू से हिन्दी में इसका तर्जुमा कराया है ताकि हिन्दी जाननी माँ-बहनें इतनी अहम और मालूमाती किताब से फ़ायदा उठा सकें।

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी